इस्लामी उपदेशों का लाभदायक संग्रह

इस्लाम धर्म के सिद्धांतों एवं मूलाधार, गुण एवं ख़ूबियां, विशेषताएं एवं इस्लाम भंजक बातों पर आधारित उपदेशों का अति सुंदर संकलन

लेखकः

शैख़ माजिद बिन सुलैमान अल-रस्सी

الغيث الهامع من الخطب الجوامع

مجموع خطب في أصول الدين ومحاسنه وفضائله ومزاياه ونواقضه

(مترجم إلى اللغة الهندية)

تأليف:

فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي

شوال ١٤٤٣ هجري

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد:

इस सुंदर संग्रह में मैंने उन ख़ुत्बात (उपदेशों) को संग्रहीत किया है जो इस्लाम धर्म के सिद्धांत एवं मूलाधार, इस्लाम की मूल शिक्षाएं, इसकी खूबियां, गुण और विशेषताओं को शामिल हैं, इसके अतिरिक्त इन उपदेशों में उन मुद्दों को भी समझाया गया है जो इस्लाम के विरुद्ध हैं और इसकी पूर्णता को खण्डित करने वाले हैं, इसी प्रकार वर्ष भर में आने वाले शुभ समयों पर भी प्रकाश डाला गया है।

मैंने इन ख़ुत्बों की व्यवस्था में तीन विशेष बातों का ध्यान रखा है, जो मेरे विचार में पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खुतबों को प्रतिबिंबित करते हैं। पहली बात यह कि अक़ीदा (आस्था) के अध्याय पर अधिक ध्यान दिया गया है, इसलिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ुत्बात (उपदेश, भाषण) अल्लाह के पुरस्कारों पर अल्लाह की प्रशंसा, उसके संपूर्ण गुणों का उल्लेख, इस्लाम के सिद्धांतों और मूलाधारों की शिक्षा, स्वर्ग, नरक एवं परलोक का वर्णन, अल्लाह से डरने का आदेश, अल्लाह के क्रोध एवं उसकी प्रसन्नता व ख़ुशी के कारणों के उल्लेख पर आधारित हुआ करते थे, जैसाकि इब्नुल क़ैयिम रहिमहुल्लाह ने (ज़ाद उल मआद) में उल्लेख किया है।

दूसरी एवं तीसरी बात यह कि मैंने संक्षिप्तता के साथ-साथ व्यापकता को भी ध्यान में रखा है, क्योंकि यह पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का तरीका था कि आप उपदेश संक्षिप्त देते एवं नमाज़ लम्बी पढ़ाया करते थे।

जुमुआ में दिये जाने वाले उपदेशों का समाज पर बहुत अधिक आमंत्रणात्मक और शैक्षणिक प्रभाव पड़ता है, और इस प्रकार के उपदेश संग्रह से वक्ताओं और उपदेशकों को जुमुआ की तैयारी करने में मदद मिलती है। इन्ही उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए मैंने उपदेशों का यह सुंदर संग्रह संकलन किया है जो ६४ उपदेशों पर आधारित है। अल्लाह तआला इसे लेखक, पाठक एवं प्रकाशक सभी के लिये लाभदायक बनाए।

وصلى الله وبارك على نبينا محمد، وآله وصحبه وسلم تسليما كثيرا.

लेखः शैख़ माजिद बिन सुलैमान अल-रस्सी

Majed.alrassi@gmail.com

पुस्तक का विवरण

पुस्तक	:	इस्लामी उपदेशों का लाभदायक संग्रह
लेखक	:	शैख़ माजिद बिन सुलैमान अल-रस्सी
अनुवाद	:	फ़ैज़ुर्रहमान तैमी - तारिक़ बद्र सनाबिली
प्रकाशन वर्ष	:	१४४४ हिज्री - २०२३ ईस्वी
टेलीग्राम चैनल	:	https://t.me/khutbat_hindi
ईमेल	:	binhifzurrahman@gmail.com
वाट्सएप	:	00966538944845

इस पुस्तक के प्रकाशन एवं प्रचार-प्रसार का अधिकार सभी मुसलमानों को प्राप्त है

उपदेशों की सूची

उपदेशों की कुल संख्या ६४ है

१- ईमान के अरकान पर आधारित उपदेश – १७ उपदेश [10 – 169]

(१)- अल्लाह पर ईमान

क- अल्लाह तआला के अस्तित्व पर ईमान

ख- अल्लाह के पालनहार होने में विश्वास

ग- पूजा में अल्लाह को एक मानना अनिवार्य है

घ- अल्लाह के नामों एवं विशेषणों पर ईमान

(२) देवतूतों पर ईमान

(३) आकाशीय पुस्तकों पर ईमान

(४) संदेशवाहकों पर ईमान लाने के तक़ाज़े – २ उपदेश

(५) आख़िरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े – ८ उपदेश

(६) भाग्य में विश्वास रखने का अर्थ

****

२- मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान को दृढ़ करने वाली बातों से संबंधित उपदेश – १२ उपदेश [170 – 278]

(१) मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गवाही देने की शर्तें एवं उसे तोड़ने वाली चीज़ें

(२) पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने के तक़ाज़े

(३) मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महानता के दस साक्ष्य

(4) मुस्तफा सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम का एक अधिकार आज्ञाकारीता भी है

(५) मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक अधिकार आप से प्रेम करना भी है

(6) मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक अधिकार आप की अवज्ञा से बचना भी है

(७) मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक अधिकार यह है कि आपके सहाबा का सम्मान किया जाए

(८) मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक अधिकार अहले बैत का सम्मान भी है

(९) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक अधिकार यह है कि: आपकी पत्नियों का सम्मान किया जाए

(१०) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ह़क़ूक़ में से आप पर दुरूद व सलाम भेजना भी है

(११) मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजने के फ़ायदे

(१२) नबवी प्रवासन से व्युत्पन्न १६ सीख एवं लाभ

****

३- इस्लाम भंजक दस चीज़ों पर आधारित उपदेश – १० उपदेश [279 – 392]

(१) प्रथम भंजक: अल्लाह के साथ शिर्क करना

(२) द्वितीय भंजक: जो मुशरिकों को काफिर न माने,अथवा उन के कुफ्र में संदेह करे अथवा उन के धर्म को सही़ माने

(३) तृतीय भंजक: जो व्यक्ति यह आस्था रखे कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिवा किसी और का मार्ग आप के मार्ग से अच्छा है,तो उस ने कुफ्र किया,इसी प्रकार से वह व्यक्ति (भी काफिर है जो) यह आस्था रखे कि गैरुल्लाह (अल्लाह के सिवा) का आदेश (निर्णय) अल्लाह के आदेश (निर्णय) से अच्छा है,जैसे वे लोग जो ताग़ूतों (असुर-धर्म विरोधी शक्तियों) के निर्णय को और स्वनिर्मित नियमों को अल्लाह के निर्णय पर प्राथमिकता देते हैं

(४) चौथा भंजक: रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाई हुई शरीअ़त की किसी चीज़ में घृणा रखना

(५) पांचवां भंजक: धर्म के किसी आदेश का उपहास करना

(६) छठवां विच्छेद: जादूगरी

(७) सातवां विच्छेद: भविष्यवाणी करना

(८) आठवां भंजक: मुसलमानों के विरुद्ध काफिरों की सहायता करना

(९) नौवां भंजक: इस्लामी शरीअ़त से निकलने के जवाज़ का आस्था

(१०) दसवां भंजक: इस्लाम धर्म से मुँह फेरना,न उस का ज्ञाप प्राप्त करना और न उस पर अ़मल करना

****

४- इस्ल इस्लामी शरीअत की चालीस उत्कृष्ट विशेषताओं पर आधारित उपदेश – ८ उपदेश [393 – 438]

****

५- नमाज़ के महत्व पर आधारित उपदेश – ४ उपदेश [439 – 468]

(१) नमाज़ का महत्व

(२) नमाज़ के लिए जल्दी करने का महत्व

(३) सामूहिक रूप में नमाज़ के अनिवार्य होने एवं व्यापार व अन्य चीज़ों में व्यस्त रहने के कारण इससे लापरवाह होने की अवैधता के १० साक्ष्य।

(४) जुमा की नमाज़ की विशेषताएं एवं महत्व

****

६- वर्ष भर के विभिन्न समयों के महत्व से संबंधित उपदेश – ९ उपदेश [469 – 570]

(१) मोहर्रम के महीने का सम्मान एवं आशूरा के उपवास की श्रेष्ठता

(२) शुक्रवार के दिन की विशेषताएँ

(३) रमज़ान की विशेषताएं

क- रमज़ान की दस हिकमतें

ख- रमज़ान के महीने की २० विशेषताएँ!

ग- रमज़ान में अधिक क़ुरान पढ़ने पर प्रोत्साहित करना

घ- शबे क़दर की दस विशेषताएं

ङ- ईदुलफ़ित़र से संबंधित दस महत्वपूर्ण बिन्दुऐं

(४) ज़िलहिज्जा के १० दिनों की विशेषताएं एवं श्रेष्ठताऐं!

(५) अरफा के दिन की विशेषताएं

(६) ईद उल अज़्हा – बीस महत्वपूर्ण बिंदु

****

७- बैतुलमक़दिस की दस विशेषताओं पर आधारित उपदेश [571 – 582]

****

८- ईमान में वृद्धि करने वाली बातों पर आधारित उपदेश [583 – 609]

(१) - धरती में फसाद व्याप्त करने की मनाही

(२) - कोरोना- रोग एवं उपचार

शीर्षक: अल्लाह तआला के अस्तित्व पर ईमान

إن الحمد لله، نحمده ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

﴿ يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِۦ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴾ [آل عمران: ١٠٢]

﴿ يَـٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱتَّقُوا۟ رَبَّكُمُ ٱلَّذِى خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَٰحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَآءً ۚ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ٱلَّذِى تَسَآءَلُونَ بِهِۦ وَٱلْأَرْحَامَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ﴾[النساء: ١]

﴿ يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَقُولُوا۟ قَوْلًا سَدِيدًا ۝ يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَـٰلَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَمَن يُطِعِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ﴾ [الأحزاب: ٧٠ – ٧١]

अल्लाह की प्रशंसा और उस के नबी ﷺ पर दरूदो सलाम के बाद :

सब से उत्तम कलाम अल्लाह का कलाम है और सब से उत्तम मार्ग मुहम्मद ﷺ का मार्ग है,सब से बुरी चीज़ दीन में घड़ी गई बिदअतें हैं और (दीन में) हर घड़ी गई चीज़ बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम में ले जाने वाली है।

ए मुस्लमानो!अल्लाह से डरो और उस को सदेव अपना पर्यवेक्षक जानो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसके अवज्ञा से बचो,जान लो कि अल्लाह पर ईमान लाने के चार तक़ाज़े हैं: प्रथमःउस पवित्र व सर्वोत्तम हसती के अस्तित्व पर ईमान लाना,द्वितीयःउसके रब होने पर ईमान लाना,तृतीयःउसके अल्लाह होने पर ईमान लाना,चौथाःउसके नाम व विशेषण पर ईमान लाना,इस उपदेश में केवल अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व पर चर्चा कंरेगे।

पवित्र व सर्वोत्तम अल्लाह के अस्तित्व पर ईमान लाने के प्रत्येक प्रकार के प्राकृतिक,तार्किक,धार्मिक प्रमाण हैं।

रही बात प्रकृति का अल्लाह के अस्तित्व पर प्रमाण होने की तो यह बात जान लेनी चाहिए कि प्रत्येक जीव बेगैर पूर्व सोच एवं शिक्षा के अपने विधाता पर ईमान के साथ ही पैदा होता है,अल्लाह के पुस्तक में इस बात का प्रमाण है:

﴿ وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِيٓ ءَادَمَ مِن ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۖ قَالُواْ بَلَىٰ شَهِدْنَآ ﴾ [الأعراف: ١٧٢]

अर्थात: जब आप के रब ने मनु के पीठ से उन के संतान को निकाला और उन से उन ही के प्रति करार लिया कि क्या में तुम्हारा रब नहीं हूं?सब ने उत्तर दियाःक्यों नहीं!हम सब गवाह बनते हैं।

यह आयत इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य के स्वभाव में अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व पर ईमान लाना दाखिल है,इस स्वभाव के तक़ाज़े से वही व्यक्ति मूंह फेर सकता है जिस का हृदय खारजी प्रभाव से प्रभावित होता है,क्योंकि पैगम्बर सल्लाहु अलैहे वसल्लम का कथन है:प्रत्येक शिशु प्रकृति पर जन्म लेता है फिर उस के माता पिता उसे यहूदी अथवा ईसाई अथवा मजूसी बना देते हैं'' बोखारी 1359

यही कारण है कि हम देखते हैं कि मनुष्य को जब हानी पहुंचता है तो वह अपने स्वभाव अनुसार फौरन पुकार उठता हैःए अल्लाह! पैगम्बर सल्लाहु अलैहे वसल्लम के काल में बहुदेववादी भी अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व को स्वीकार करते थे,जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने उन के प्रति फरमायाः

﴿ وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ ٱللَّهُ ﴾ [لقمان: ٢٥]

अर्थात: यदि आप उन से पूछें कि उनको किस ने पैदा किया? तो वह निसंदेह यही उत्तर देंगे कि अल्लाह ने। इस बारे में अनेक आयतें हैं।

जहां तक तर्क से अल्लाह के अस्तित्व के प्रमाणित होने की बात है तो यह सत्य है कि उन समस्त पूर्व एवं पश्चात में आने वाले जीवों का कोई न कोई विधाता अवश्य है जिस ने उन्हें पैदा किया,क्यिोंकि यह असंभव है कि जीव अपने आप जन्म लेले,क्यिोंकि अनस्तित्व अपने आप को पैदा नहीं कर सकता,क्यिोंकि वह अपने अस्तित्व से पूर्व अनस्तित्व था,तो वह अपने अलावा दूजे जीव का रचनाकार कैसे हो सकता है?

इसी प्रकार उन जीवों का बेगैर निर्माता के अचानक से अस्तित्व में आना दो कारण से असंभव है।

प्रथम कारण:प्रत्येक घटने वाले वसतु के लिए घटना को अस्तित्व में लाने वाला होना अनिवार्य है,इस पर तर्क और धर्म दोनों साक्ष्य हैं,अल्लाह का कथन है:

﴿ أَمۡ خُلِقُواْ مِنۡ غَيۡرِ شَيۡءٍ أَمۡ هُمُ ٱلۡخَٰلِقُونَ ۝٣٥ ﴾ [الطور: ٣٥]

अर्थात:अथवा यह बेगैर किसी पैदा करने वाले के खुद से पैदा हो गए है? अथवा यह खुद पैदा करने वाले हैं?

द्वितीय कारण:उन जीवों का इस बेमिसाल तंत्र,आपसी मेलमिलाप और सबस व मोसबब्ब के मध्य आपसी संबंध के साथ अस्तित्व में आना और संसार के समस्त जीव का आपस में इस प्रकार जूड़ा हुआ होना कि उस में किसी प्रकार का टकड़ाव नहीं,यह इस बात का कठोड़ खंडन करता है कि यह जीव बेगैर किसी निर्माता के अचानक अस्तित्व में आगईं,क्योंकि कि अचानक अस्तित्व में आने वाला वस्तु अपने सत्य अस्तित्व में किसी प्रणाली पर स्थ्रि नहीं होती,तो भला अपनी स्थिरता व विकास की स्थिति में एतना नियमित केसे हो सकता है?अल्लाह तआ़ला के कथन को गौर से सुनें:

﴿ لَا ٱلشَّمۡسُ يَنۢبَغِي لَهَآ أَن تُدۡرِكَ ٱلۡقَمَرَ وَلَا ٱلَّيۡلُ سَابِقُ ٱلنَّهَارِۚ وَكُلّٞ فِي فَلَكٖ يَسۡبَحُونَ ۝٤٠ ﴾ [يس: ٤٠]

अर्थात:सूर्य की यह मजाल है कि चॉद को पकड़े और न रात दिन पर आगे बढ़ जाने वाली है,और सब के सब आकाश में तैरते फिरते हैं।

किसी देहाती से पूछा गया कि तुम ने अपने रब को कैसे जाना?

तो उसने उत्तर दिया:मेंगनी ऊटनी का प्रमाण देती है,लीद गदहे का प्रमाण देती है,पैर के निंशान यात्री के होने का प्रमान देते हैं,तो क्या सितारों से सजे आकाश,चौड़े रास्तों से सजे पृथ्वी,ठाठे मारते समुद्र,सुन्ने और देखने वाले रचनाकार पर का प्रमाण नहीं हैं?

मच्छड़ अल्लाह तआ़ला का एक अजीब जीव है,अल्लाह तआ़ला ने उस के अंदर भी अनेक तथ्यों को छुपा रखा है,अल्लाह तआ़ला ने उस के अंदर स्मरण शक्ति,विचार विमर्श की क्षमता,छूने,देखने और सूंघने की क्षमता प्रदान फरमाई है, उस के अंदर खाना पहूंचने की जगह बनाई है, उसके अंदर पेट, रगें और हडियॉ बनाई हैं,पवित्र है वह हस्ति जिस ने अंदाज़ा किया और फिर मार्ग दिखाया और कोई भी वस्तु बेकार नहीं बनाई।

एक कवी ने अपनी कवीता में यह पंक्तियां लिखी हैं:

يا من يرى مدَّ البعوض جناحها   في ظلمة الليل البهيم الأليل
ويرى مناط عروقها في نحرها   والمخ من تلك العظام النحّل
ويرى خرير الدم في أوداجها   متنقلا من مفصل في مفصل
ويرى وصول غذى الجنين ببطنها   في ظلمة الأحشا بغير تمقّل
ويرى مكان الوطء من أقدامها   في سيرها وحثيثها المستعجل
ويرى ويسمع حِس ما هو دونها   في قاع بحر مظلم متهوّل
امنن علي بتوبة تمحو بها   ما كان مني في الزمان الأول[1]

अर्थातः ए वह पालनहार जो अत्यंत अंधेरे रात में भी मच्छर के पर फेलाने को देखता है।ए वह पालनहार जो इस मच्छर की गरदन में रगों के संगम को देखता है और उस की बारीक हडडीयों पर चढ़े मास को भी देखता हैं। उसकी रगों के अंदर दौड़ रहे रक्त को देखता है जो शरीर के एक भाग से दूसरे भाग की ओर जाता है। जब वह चलता है और तेज़ भागता है तो उस के पैर के रखने के स्थान को भी देखता है,उस से भी अधिक बारीक जीव को देखता और सुनता है जो अंधेरे और भयावक समुद्र की गहराईयों में होता है,ए पालनहार !मेरी तौबा को स्वीकार फरमा और मेरे समस्त पूर्व पापों को क्षमा प्रदान फरमा।

तातपर्य यह कि जब जीव खुद को पैदा नहीं कर सकते और न अचानक बेगैर रचनाकार के अस्तित्व में आ सकते हैं तो यह निश्चित हो गया कि उसका एक रचनाकार अवश्य है,जो कि अल्लाह तआ़ला है।

अल्लाह तआ़ला ने इस तार्किक एवं धार्मिक प्रमाण को सूरह तूर में उल्लेख किया है,अल्लाह का कथन है:

﴿ أَمۡ خُلِقُواْ مِنۡ غَيۡرِ شَيۡءٍ أَمۡ هُمُ ٱلۡخَٰلِقُونَ ۝٣٥ ﴾ [الطور: ٣٥]

अर्थातःक्या यह बेगैर किसी पैदा करने वाले के अपने आप पैदा हो गए हैं?अथवा यह खुद पैदा करने वाले हैं?

[1]इन पंक्तिओं को शहाबुददीन अहमद अलअबशही ने अपनि पुस्तक ''अल मुसतरफ फी कुल्ले फन्निन मुसतजरफ पृष्ठ संख्या 347''ने उल्लेख किया है,प्रकाशकःदारुलकुतुब अल इलमिया,बैरूत,प्रकाशनःप्रथम,1413

अर्थातःवह बेगैर निर्माता के नहीं पैदा हूए हैं,और न ही खूद अपने आप को पैदा किये हैं,इस प्रकार ज्ञात हुआ कि उन का रचनाकार अल्लाह तआ़ाला हैं।

यही कारण है कि जब ज़ोबैर बिन मुतइम रजिअल्लाहु अनहु ने रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को सूरह तूर की तिलावत करते हूए सुना और आप इन आयात तक पहूंचेः

﴿ أَمۡ خُلِقُواْ مِنۡ غَيۡرِ شَيۡءٍ أَمۡ هُمُ ٱلۡخَٰلِقُونَ ۝٣٥ أَمۡ خَلَقُواْ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضَۚ بَل لَّا يُوقِنُونَ ۝٣٦ أَمۡ عِندَهُمۡ خَزَآئِنُ رَبِّكَ أَمۡ هُمُ ٱلۡمُصَۜيۡطِرُونَ ۝٣٧ ﴾ [الطور: ٣٥ – ٣٧]

उस समय जोबैर बहुदेववाद थे,उन्होंने कहाः''निकट था कि मेरा हृदय उड़ जाए, यह प्रथम अवसर था जब मेरे हृदय में ईमान ने स्थान बनाई'' ''बाखारी 4853''

अल्लाह तआ़ाला मूझे और आप को कुरआन की बरकत से माला माल करे,मूझे और आप सब को उस की आयतों और हिकमतों पर आधारित प्रामर्शों से लाभ पहूंचाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए छमा प्राप्त करता हूॅं,आप भी उस से छमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति छमा प्रदान करने वाला और कृपा करने वाला है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد:

ए मुसलमानो! रही बात अल्लाह तआ़ाला के अस्तित्व के धार्मिक प्रमाण की तो समस्त आकाशीय पुस्तकें इस के प्रमाण हैं,चूंकि यह पुस्तकें एसे आदेशों के साथ अवतरित हूई हैं जो जीव के हित पर आधारित हैं,इस लिए यह इस बात का प्रमाण है कि वह एसे परवरदिगार की ओर से हैं जो हिकमत वाला है और अपने जीव के कलयाण व हित से अवगत है,इसी प्रकार उस के अंदर संसार के एसे समाचार दिए गए हैं कि वास्तव स्थिति इस की पुष्टि करती है,यह भी इस बात का प्रमाण है कि वह एसे परवरदिगार की ओर से है जो हर उस वसतु को पैदा करने पर समर्थ है जिस की उस ने सूचना दी है।

तथा कुरआन का आपसी मेलमिलाप,उस में स्वेच्छाचार का न पाया जाना और उस के बाज भागों का बाज भागों की पुष्टि करना इस बात का ठोस प्रमाण है कि वह हिकमत और ज्ञान वाले प्रवरदिगार की ओर से है,अल्लाह का कथन हैः

﴿ أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ ٱلْقُرْءَانَ ۚ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِندِ غَيْرِ ٱللَّهِ لَوَجَدُوا۟ فِيهِ ٱخْتِلَٰفًا كَثِيرًا ﴿٨٢﴾ ﴾ [النساء: ٨٢]

अर्थातःक्या ये लोग कुरआन में विचार नहीं करते? यदि यह अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की ओर से होता तो इस में अवश्य ही बहुत विरोध पाये जाते।

यह उस हस्ति के अस्तित्व का प्रमाण है जिस ने कुरान के माध्यम से वार्ता किया और वह अल्लाह की हस्ति है।

रही बात अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व के हिस्सी प्रमाण की तो इस के दो प्रकार हैं:

प्रथम यह किः हम सुनते और देखते हैं कि अल्लाह तआ़ला पुकारने वालों की पुकार को सुनता और पीड़ितों की सहायता करता है,जो अल्लाह के अस्तित्व की एक ठोस प्रमाण है,क्योंकि प्रार्थना की स्वीकृति से पता चलता है कि एक पालनहार है जो अपने पूकारने वालों की पूकार सुनता और उसे पूरा करता है,अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿ وَنُوحًا إِذْ نَادَىٰ مِن قَبْلُ فَٱسْتَجَبْنَا لَهُۥ ﴾ [الأنبياء: ٧٦]

अर्थातःनूह़ के उस समय को याद कीजिए जबकि उसने इस से पहले प्रार्थना की हम ने उस की प्रार्थना स्वीकार किया।

इस के अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

﴿ إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَٱسْتَجَابَ لَكُمْ ﴾ [الأنفال: ٩]

अर्थातःउस समय को याद करो जब कि तुम अपने रब से फरयाद कर रहे थे,फिर अल्लाह ने तुम्हारी सुन ली।

अनस बिन मालिक रजिअल्लाहु अनहु से वर्णित है कि एक व्यक्ति मिंबर के सामने वाले दरवाजे से शुक्रवार के दिन मस्जिदे नबवी में आया। रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रामर्श प्रस्तुत कर रहे थे,उसने भी खड़े खड़े रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहाःया रसूलल्लाह! वर्षा ना होने के कारण से पशू मर गए और रास्ते बन्द हो गए।आप अल्लाह से वर्षा के लिए दूआ फरमा दिजिए।वह कहते हैं कि रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम यह कहते ही हाथ उठा दिए। आप सलल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने प्रार्थना की: «اللهم اسقنا، اللهم اسقنا، اللهم اسقنا» हे अल्लाह हमें सैराब कर!हे अल्लाह हमें सैराब कर! हे अल्लाह हमें सैराब कर!

अनस रजिअल्लाहु अनहु ने कहा:अल्लाह की क़सम कहीं दूर दूर तक आकाश पर बादल का कोई टुकड़ा नज़र नहीं आ रहा था और न कोई चीज''हवा आदि जिस से यह बोध हो कि वर्षा होगी'' और हमारे और सिला पहाड़ी के मध्य में कोई स्थान भी न था''कि हम बादल होने के बावजूद न देख सकते हों'' पहाड़ी के पीछे से ढाल के बराबर बादल निकल आया और बीच आकाश तक पहुंच कर चारों ओर फेल गया और वर्षा आरंभ हो गया,अल्लाह की क़सम! हम ने सूर्य एक सप्ताह तक नहीं देखा।फिर एक व्यक्ति दूसरे शूक्रवार उसी दरवाजे से आया,आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े उपदेश प्रस्तुत कर रहे थे, उस व्यक्ति ने आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से खड़े खड़े ही संबोधित किया कि या रसूलल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम! र्वषा के कारण माल व जाएदाद बरबाद हो रहे हैं रासते बंद हो गए हैं,अल्लाह से प्रार्थना किजीए कि वर्षा रुक जाए। फिर आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हाथ उठा कर यह दूआ की:

«اللهم حوالينا ولا علينا، اللهم على الآكام والجبال والآجام والظراب والأودية ومنابت الشجر»

अर्थात: ''या अल्लाह अब हमारे इर्द गिर्द वर्षा भेज हम से इस को रोक दे। टिलों,पहाड़ों,पहाड़ियों,वादियों और बागों को सैराब कर।उन्होंने कहा कि उस प्रार्थना से वर्षा रुक गई और हम निकले तो धूप निकल चूकी थी।'' ''बोखारी 1019,मुसलिम 897''

प्रार्थना स्वीकार होने का दृश्य आज भी देखा जा सकता है मगर शर्त है कि सच्चे दिल से अल्लाह से लौ लगाए और प्रार्थना स्वीकार होने के कारण को अपनाए।

द्वितीय प्रकार यह है: पैगम्बरों की वह निशानियॉ जिसे मोजेज़ात''चमत्कार'' कहते हैं जिनहें लोग देखते या सुनते हैं,वह भी उनके भेजने वाले अर्थात अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व का ठोस प्रमान है,क्योंकि यह ऐसी चीज़ें हैं जो मनुष्य के बस से बाहर है,उन्हें अल्लाह तआ़ला ने अपने संदेशवाहकों की सहायता के लिए बनाया है।

इसका उदाहरण: मूसा अलैहिस्सलाम की निशानी,जब अल्लाह तआ़ला ने यह आदेश दिया कि वह अपनी लाठी से समुद्र पर दे मारें तो उन्होंने दे मारा,जिस से बारह सूखे रास्ते निकल पड़े और उन के बीच पानी पहाड़ के जैसे ठहरा था,अल्लाह का कथन है:

﴿ فَأَوۡحَيۡنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنِ ٱضۡرِب بِّعَصَاكَ ٱلۡبَحۡرَۖ فَٱنفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرۡقٖ كَٱلطَّوۡدِ ٱلۡعَظِيمِ ۝٦٣ ﴾ [الشعراء: ٦٣]

अर्थात: हम ने मूसा की ओर वहय् भेजी कि दरया पर अपनी लाठी मार,और उसी समय दरया फट गया और पानी का हर एक भाग बड़े पहाड़ के जेसा हो गय।

ए मुसलमानो! अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व को स्वीकारना एक सवभाविक चीज़ है जिस पर प्रकृति और एहसास दोनों साक्ष्य हैं,इस लिए आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने समुदाय से कहा:

﴿ أَفِي ٱللَّهِ شَكّٞ فَاطِرِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ﴾ [إبراهيم: ١٠]

अर्थात: क्या अल्लाह तआ़ला के प्रति तुम्हें संदेह है?जो आकाश एवं धर्ती का रचनाकार है।

इन सारी बातों का सार यह है कि अल्लाह के अस्तित्व पर ईमान लाना स्वभाव में रची बसी है,तर्क,एहसास और धर्म में एक ज्ञात चीज है,इस का खंडन कोई नास्तिक ही कर सकता है जिस का हृदय सत्य मार्ग से फिर गया हो,अलहमदोल्लिाह एसे लोग कम हैं।

आप यह भी याद रखें—अल्लाह आप पर कृपा करे—कि अल्लाह ने आपको एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ۝٥٦ ﴾ [الأحزاب: ٥٦]

अर्थात: अल्लाह और उसके देवदूत उस पैगम्बर पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो! तुम भी उन पर परामर्श भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

अल्लाह तू अपने बंदे व रसूल (दास एवं संदेशवाहक) मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दया, कृपा एवं शांति भेज तू उनके ख़ुलफ़ा (मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उत्तराधिकारीयों) ताबेईन (समर्थक) एवं क़यामत तक आने वाले समस्त आज्ञाकार्यों से प्रसन्न हो जा!

ए अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर! बहुवाद, एवं बहुवादियों को अपमानित कर दे! तू अपने एवं इस्लाम के शत्रुओं एवं विरोधीयों को नाश कर दे! तू अपने मुवह्हिद बंदों (अव्दैतवादियों) को सहायता प्रदान कर!

ए अल्लाह! तू हमारे देशों को शांतिपूर्ण बना दे, हमारे इमामों (प्रतिनिधियों), शासकों को सुधार दे, उन्हें हिदायत (सही मार्ग) का निर्देश दे, और हिदायत पर चलने वाला बना, ए अल्लाह! तू समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने एवं अपने धर्म के उत्थान की तौफ़ीक़ प्रदान कर, उनको उनके प्रजा के लिए रहमत (दया) का कारण बना दे! ए अल्लाह हमारे प्रति इस्लाम और मुसलमानों के प्रति जो बुराई का भाव रखते हैं, उसे तू अपनी ज़ात में व्यस्त कर दे और उसके फ़रेब व चाल को उलटा उसके के लिए वबाल बना दे!

ए अल्लाह! मुद्रास्फीति, महामारी, ब्याज बलात्कार, भूकंप एवं आज़माइशों को हमसे दूर कर दे और प्रत्येक प्रकार के आंतरिक एवं बाह्य फ़ित्नों (उत्पीड़नों) को हमारे ऊपर से उठा ले सामान्य रूप से समस्त मुस्लिम देशों से और विशेष रुप से हमारे देश से! ए दोनों जहां के पालनहार! ए अल्लाह! हमारे ऊपर से महामारी को दूर कर दे, नि: संदेह हम मुसलमान हैं।

ए हमारे रब! हमें दुनिया और आख़िरत में हर प्रकार की अच्छाई दे, और नरक की यातना से हम को मुक्ति प्रदान कर!

سبحان ربك رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين.

शीर्षक: अल्लाह के पालनहार होने में विश्वास

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वश्रेष्ठ मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है एवं सबसे दुष्ट चीज़ धर्म में अविष्कार किए गए नवोन्मेष हैं प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ नवाचार है, हर नवाचार गुमराही है एवं हर गुमराही नरक की ओर ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो! अल्लाह से भयभीत रहो एवं उसका डर अपनी बुद्धि एवं हृदय में जीवित रखो, उसके आज्ञाकार बने रहो एवं अवज्ञा से वंचित रहो, ज्ञात रखो कि अल्लाह तआला में विश्वास रखने में चार बातें सम्मिलित हैं, प्रथम: सर्वोच्च एवं सर्वश्रेष्ठ अल्लाह की उपस्थिति में विश्वास रखना, द्वितीय: उसके के पालनहार होने में विश्वास रखना, तीसरा: उसके पूज्य होने में विश्वास रखना, चौथा: उसके नामों एवं विशेषताओं में विश्वास रखना।

इस उपदेश में हम केवल अल्लाह के पालनहार होने में विश्वास रखने के संबंध में कुछ बातें करेंगे।

अल्लाह के दासो! अल्लाह के पालनहार होने में विश्वास रखने का अर्थ यह है कि इस बात में आस्था रखी जाए की अल्लाह तआला तने तन्हा पालनहार है, इसमें उसका कोई साझी एवं संगी नहीं है, एवं ना कोई उसका सहयोगी एवं सहायक, (रब) पालनहार होने का अर्थ: जिसके हस्त में पैदा करने की शक्ति है, जो पूर्णतः महाराज है एवं जिसका आदेश चलता है, अर्थात जिस के आदेश से ब्रह्मांड का समाधान होता है, इस कारणवश उसके अतिरिक्त कोई पैदा करने वाला नहीं, कोई महाराज नहीं एवं कोई आदेश देने वाला नहीं, अल्लाह तआला ने अपने निर्माण में अपने अकेले होने का उल्लेख करते हुए फ़रमाया:

﴿أَلَا لَهُ ٱلْخَلْقُ وَٱلْأَمْرُ﴾ [الأعراف: ٥٤]

अर्थात: सावधान! अल्लाह ही के लिए विशेष है पैदा करना एवं शासक होना।

﴿ بَدِيعُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ﴾ [البقرة: ١١٧]

अर्थात: वह प्रथम स्वरूप (इबतेदाअन) आकाश एवं पृथ्वी का निर्माण करने वाला है।

﴿ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ﴾ [فاطر: ١]

अर्थात: समस्त प्रशंसाएं उस अल्लाह हेतु हैं जो प्रथम स्वरूप (इबतेदाअन) आकाश एवं पृथ्वी का निर्माण करने वाला है।

ए विश्वासियो! अल्लाह ने जितनी सृष्टि का निर्माण किया उनमें सर्वश्रेष्ठ ये दस हैं: आकाश एवं पृथ्वी, सूर्य एवं चंद्रमा, रात्रि एवं दिन, मनुष्य एवं पशु, वर्षा एवं वायु। अल्लाह तआला ने कुरआन के अधिकतम स्थानों पर इनके निर्माण का उल्लेख करके अपनी प्रशंसा की है, विशेष स्वरुप कुछ अध्यायों के प्रारंभिक श्लोकों में, उदाहरण स्वरूप: सूरतुल्- जासियह में अल्लाह का कथन है:

﴿ حمٓ ۝١ تَنزِيلُ ٱلْكِتَٰبِ مِنَ ٱللَّهِ ٱلْعَزِيزِ ٱلْحَكِيمِ ۝٢ إِنَّ فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ لَءَايَٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝٣ وَفِى خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِن دَآبَّةٍ ءَايَٰتٌ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۝٤ وَٱخْتِلَٰفِ ٱلَّيْلِ وَٱلنَّهَارِ وَمَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مِن رِّزْقٍ فَأَحْيَا بِهِ ٱلْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيفِ ٱلرِّيَٰحِ ءَايَٰتٌ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝٥﴾ [الجاثية: ١ – ٥]

अर्थात: ह़ामीम! यह पुस्तक अल्लाह प्रमुख एवं बुद्धिमत्ता वाले की ओर से अवतरित की गई है, नि: संदेह आकाशों एवं पृथ्वी में विश्वासियों हेतु अनेक संकेत हैं एवं स्वयं तुम्हारे जन्म में एवं पशुओं के जन्म में जिन्हें वह फैलाता है आस्था रखने वाले समुदाय हेतु बहुत से संकेत हैं, एवं रात्रि व दिवस के परिवर्तन में और जो कुछ रोज़ी-रोटी अल्लाह तआला आकाश से अवतरित कर के पृथ्वी को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवन प्रदान करता है, इसमें एवं वायुओं के परिवर्तन में उन व्यक्तियों हेतु संकेत हैं जो बुद्धि रखते हैं।

शासन में अल्लाह के अकेले होने का साक्ष्य; अल्लाह का कथन है:

﴿وَقُلِ ٱلۡحَمۡدُ لِلَّهِ ٱلَّذِي لَمۡ يَتَّخِذۡ وَلَدٗا وَلَمۡ يَكُن لَّهُۥ شَرِيكٞ فِي ٱلۡمُلۡكِ وَلَمۡ يَكُن لَّهُۥ وَلِيّٞ مِّنَ ٱلذُّلِّۖ وَكَبِّرۡهُ تَكۡبِيرَۢا ١١١﴾ [الإسراء: ١١١]

अर्थात: यह कह दीजिए कि समस्त प्रशंसाऐं अल्लाह ही हेतु हैं, जो ना ही संतान रखता है एवं ना ही अपने शासन में कोई संगी व साझी एवं ना ही वह दुर्बल है कि उसे किसी सहायक की आवश्यकता हो, और तू उसकी प्रशंसा का उल्लेख करता रह।

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

﴿ذَٰلِكُمُ ٱللَّهُ رَبُّكُمۡ لَهُ ٱلۡمُلۡكُۚ وَٱلَّذِينَ تَدۡعُونَ مِن دُونِهِۦ مَا يَمۡلِكُونَ مِن قِطۡمِيرٍ ١٣﴾ [فاطر: ١٣]

अर्थात: अल्लाह ही तुम सब का पालन-पोषण करने वाला है, उसी का शासन है, उसके अतिरिक्त जिन्हें तुम पुकार रहे हो वह खजूर के बीज के छिलके के भी मालिक नहीं हैं।

आदेश (एवं ब्रह्मांड के समाधान) में अल्लाह के अकेले होने का साक्ष्य अल्लाह का यह कथन है:

﴿ أَلَا لَهُ ٱلۡخَلۡقُ وَٱلۡأَمۡرُ﴾ [الأعراف: ٥٤]

अर्थात: सावधान! अल्लाह ही के लिए विशेष है पैदा करना एवं शासक होना।

इसके अतिरिक्त यह कि:

﴿إِنَّمَا قَوۡلُنَا لِشَيۡءٍ إِذَآ أَرَدۡنَٰهُ أَن نَّقُولَ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ ٤٠ ﴾ [النحل: ٤٠]

अर्थात: हम जब किसी बात की इच्छा करते हैं तो केवल हमारा यह कथन पर्याप्त होता है; हो जा! तो वह हो जाती है।

इसके अतिरिक्त यह कि:

﴿ وَإِلَيۡهِ يُرۡجَعُ ٱلۡأَمۡرُ كُلُّهُۥ ﴾ [هود: ١٢٣]

अर्थात: संपूर्ण प्रकरण उसी की ओर पलटने वाले हैं।

ए मुसलमानो! आदेश के दो भाग हैं: पहला धार्मिक आदेश द्वितीय ब्रह्मांडीय आदेश, धार्मिक आदेश का अर्थ वह आदेश है जिसका संबंध धर्म एवं सन्पदेश पहुंचाने वालों (नुबूव्वत) से है, इस कारणवश अल्लाह महान एवं सर्वोच्च अपने बुद्धिमत्ता के आवश्यकता अनुसार जिन आज्ञाओं (अहकाम) का आदेश देने की इच्छा करता है, देता है एवं जिन्हें स्थगित करना चाहता है कर देता है, वही मनुष्य हेतु ऐसी शरीयतों कोई स्थित करता है जो उनके लिए उचित एवं उनके स्थितियों को ठीक करने वाली होती हैं, एवं ऐसी उपासनाओं व कर्मों को वैध स्थित करता है जो उसकी दृष्टि में स्वीकार्य हों, क्योंकि वह दासों की स्थितियों से भलीभांति अवगत है एवं उसके हित का भी ज्ञानी है और वह उन पर कृपालु भी है।आदेश का दूसरा भाग ब्रह्मांडीय आदेश है, इसका संबंध ब्रह्मांडीय घटनाओं के समाधान से है, अल्लाह तआला ही बादलों के उड़ने, वर्षा के अवतरित होने, मृत्यु एवं जीवन, रोज़ी-रोटी एवं निर्माण, भूकंप, बलाओं के टालने ब्रह्मांड के नष्ट होने स्वरूप समस्त घटनाओं का आदेश देता है जो इस ब्रह्मांड में घटित होते हैं, जब अल्लाह तआला इन घटनाओं में से किसी का आदेश देता है तो वह अवश्य घटित होकर रहती है न उसे कोई पराजित कर सकता है और ना ही टाल सकता है, अल्लाह का कथन है:

﴿ إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَآ أَرَدْنَٰهُ أَن نَّقُولَ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ ﴾ [النحل: ٤٠]

अर्थात: हम जब किसी बात की इच्छा करते हैं तो केवल हमारा यह कथन होता है; हो जा! तो वह हो जाती है।

﴿ وَمَآ أَمْرُنَآ إِلَّا وَٰحِدَةٌ كَلَمْحٍۭ بِٱلْبَصَرِ ﴾ [القمر: ٥٠]

अर्थात: हमारा आदेश केवल एक बार (एक वाक्य) ही होता है जैसे नेत्र का झपकना।

अर्थात: जब हम किसी घटना को घटित करना चाहते हैं तो केवल हमारा एक बार कह देना ही पर्याप्त होता है कि (होजा) तो वह पलक झपकते ही प्रदर्शित हो जाती है, एक क्षण के लिए भी उसके घटित होने में विलंब नहीं होता।

सारांश यह कि अल्लाह के आदेश के दो पाठ हैं: ब्राह्मांडीय आदेश एवं धार्मिक आदेश, जिसके आधार पर प्रलय के दिन लाभ एवं यातना का निर्णय होगा।

अल्लाह तआला हमें एवं आपको सर्वश्रेष्ठ क़ुरआन के लाभों से लाभार्थी करे, मुझे एवं आपको क़ुरआन के श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाहों से लाभार्थी करे, मैं अपनी यह बात कहते हए अपने लिए एवं आप संपूर्ण के लिए अल्लाह से क्षमा मांगता हूं, आप भी उस से क्षमा प्रार्थी हों। निः संदेह वह अधिक क्षमा स्वीकार करने वाला एवं अधिकतम दया करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد!

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के दासो! आप अल्लाह से डरें एवं ज्ञात रखें इस बात से कोई भी अवगत नहीं कि किसी सृष्टि ने अल्लाह के पालनहार होने को नकारा हो उन लोगों के अतिरिक्त जो अभिमान एवं अहंकार में डूबा हुआ हो, एवं अपनी बात को भी सत्य नहीं मानता हो जैसा कि फ़िरऔन ने किया जब कि उसने अपने समुदाय के लोगों से कहा:

﴿أَنَا۠ رَبُّكُمُ ٱلۡأَعۡلَىٰ ٢٤﴾ [النازعات: ٢٤]

अर्थात: तुम समस्त का पालनहार मैं ही हूं।

﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلۡمَلَأُ مَا عَلِمۡتُ لَكُم مِّنۡ إِلَٰهٍ غَيۡرِي ﴾ [القصص: ٣٨]

अर्थात: ए दरबारियो! मैं तो स्वयं के अतिरिक्त किसी को तुम्हारा पूज्य जानता ही नहीं।

परंतु उसने अपनी आस्था के आधार पर ऐसा नहीं कहा बल्कि अभिमान व अहंकार एवं अत्याचार के आधार पर कहा:

﴿ وَجَحَدُواْ بِهَا وَٱسۡتَيۡقَنَتۡهَآ أَنفُسُهُمۡ ظُلۡمٗا وَعُلُوّٗا﴾ [النمل: ١٤]

अर्थात: उन्होंने नकार दिया, हालांकि उनके हृदय विश्वास कर चुके थे, केवल अत्याचार एवं अहंकार के आधार पर।

-अल्लाह आप पर दया करे- आप यह भी ज्ञात रखें कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग में बहुदेववादी भी अल्लाह के पालनहार होने को स्वीकार करते थे, उन्हें इस बात में आस्था थी कि अल्लाह ही पैदा करने वाला, रोज़ी-रोटी देने वाला एवं ब्रह्मांड का समाधान करने वाला है परंतु फिर भी वह पूजा में मूर्तियों एवं असत्य पूज्यों को अल्लाह का साझी (शरीक) स्थित करते थे, उनके लिए विभिन्न प्रकार की पूजा करते थे, उदाहरण स्वरूप: प्रार्थना करना, बलिदान देना, मनोकामना करना एवं चढ़ावा चढ़ाना (नज़्र व नियाज़ मानना) एवं शीश झुकाना आदि, इस कारणवश वे काफ़िर घोषित हुए। अल्लाह के पालनहार होने में आस्था रखने का उन्हें कोई लाभ नहीं मिला, क्योंकि उन्होंने अल्लाह के पालनहार होने में आस्था रखने (तौहीद-ए-रुबूबीय्यत) की जो आवश्यकताएं हैं उनको विश्वसनीय नहीं समझा जोकि अल्लाह के अकेले पूज्य होने में आस्था रखना (तौहीद-ए-उलूहीय्यत) है, यह बात प्रसिद्ध है कि केवल अल्लाह के पालनहार होने को स्वीकार करना इस्लाम में प्रवेश करने हेतु पर्याप्त नहीं है जब तक की इसके साथ पूजा-पाठ में भी अल्लाह के अकेले होने में भी आस्था ना रखा जाए, अल्लाह तआला ने क़ुरआन में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है बहुदेववादी इस बात को स्वीकार करते थे अल्लाह ही समस्त सृष्टि को पैदा करने वाला एवं पालनहार है:

﴿قُل لِّمَنِ ٱلۡأَرۡضُ وَمَن فِيهَآ إِن كُنتُمۡ تَعۡلَمُونَ ﴿٨٤﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِۚ قُلۡ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٨٥﴾ قُلۡ مَن
رَّبُّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ ٱلسَّبۡعِ وَرَبُّ ٱلۡعَرۡشِ ٱلۡعَظِيمِ ﴿٨٦﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِۚ قُلۡ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٨٧﴾ قُلۡ مَنۢ بِيَدِهِۦ مَلَكُوتُ
كُلِّ شَيۡءٖ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيۡهِ إِن كُنتُمۡ تَعۡلَمُونَ ﴿٨٨﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِۚ قُلۡ فَأَنَّىٰ تُسۡحَرُونَ ﴿٨٩﴾﴾[1]

अर्थात: प्रश्न तो कीजिए कि पृथ्वी एवं उसकी समस्त वस्तुएं किसकी हैं? बतलाओ यदि अवगत हो? तुरंत उत्तर देंगे कि अल्लाह की, कह दीजिए कि तुम सलाह क्यों नहीं प्राप्त करते, प्रश्न कीजिए कि सातों आकाशों का एवं महान सिंहासन का पालनहार कौन है? वे उत्तर देंगे कि अल्लाह ही है, फिर कहिए कि तुम भयभीत क्यों नहीं होते, प्रश्न कीजिए कि समस्त चीज़ों का नियंत्रण किसके हस्त में है? जो शरण देता है एवं जिसकी तुलना में कोई शरण नहीं दी

[1] (इन श्लोकों के उल्लेख में इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह ने जो बातें कही हैं उनका अध्ययन कीजिए, इसी प्रकार शनक़ीती रहिमहुल्लाह ने सूरह-ए-यूनुस: ३१, सूरह-ए-यूसुफ़: १०६ एवं सूरह-ए-इसरा: ९ के उल्लेख में जो बातें लिखी हैं उनका भी अध्ययन करना लाभदायक होगा।)

जाती, यदि तुम ज्ञानी हो तो बतलाओ? यही उत्तर देंगे कि अल्लाह ही है, फिर कह दीजिए कि तुम किधर से जादू कर दिए जाते हो?

(इन श्लोकों के उल्लेख में इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह ने जो बातें कही हैं उनका अध्ययन कीजिए, इसी प्रकार शनक़ीती रहिमहुल्लाह ने सूरह-ए-यूनुस: ३१, सूरह-ए-यूसुफ़: १०६ एवं सूरह-ए-इसरा: ९ के उल्लेख में जो बातें लिखी हैं उनका भी अध्ययन करना लाभदायक होगा।)

● आप यह भी ज्ञात रखें -अल्लाह आप के संग दया पूर्वक व्यवहार करे- कि अल्लाह ने आपको बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य का आदेश दिया है, अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [الأحزاب: ٥٦]

अर्थात: अल्लाह एवं उसके देवदूत उस नबी पर दुरूद भेजते हैं, ए विश्वासियो! तुम (भी) उस नबी पर दुरुद भेजो एवं ख़ूब सलाम (भी) भेजते रहा करो।

● हे अल्लाह! तू अपने दास एवं दूत मुहम्मद पर दया एवं सुरक्षा अवतरित कर, उनके पश्चात आने वाले शासकों (ख़ुलफ़ा) एवं उनके महान आज्ञाकारियों और प्रलय के दिन तक शुद्धता के साथ उनकी आज्ञा करने वालों से प्रसन्न हो जा।

● हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को श्रेष्ठता एवं सर्वोच्चता प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित कर दे, अपने धर्म की रक्षा कर, तू अपने एवं इस्लाम के शत्रुओं को नष्ट कर दे, अद्वैतवादियों को सहायता प्रदान कर।

● हे अल्लाह! हमें अपने देशों में अम्न एवं शांति वाला जीवन प्रदान कर, हे अल्लाह! हमारे इमामों एवं शासकों को ठीक कर दे, उन्हें दिशा-निर्देश देने वाला एवं उस पर चलने वाला बना दे।

● हे अल्लाह! मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक लागू करने की शक्ति प्रदान कर, अपने धर्म को सर्वोच्च करने की शक्ति दे एवं उन्हें अपने प्रजाओं हेतु दया एवं कृपा का कारण बना दे।

● हे अल्लाह! हम तुझसे संसार एवं प्रलय की संपूर्ण भलाईयों हेतु प्रार्थना करते हैं जिनसे हम अवगत हैं अथवा अज्ञानी हैं, एवं तेरा शरण चाहते हैं संसार एवं प्रलय के दिन के संपूर्ण बुराइयों से, जिनसे हम अवगत हैं अथवा अज्ञानी हैं।

● हे अल्लाह! हम तेरा शरण चाहते हैं तेरी नेमत के छिन जाने से, तेरे (प्रदान किए गए) स्वास्थ्य के हट जाने से, तेरी अचानक आने वाली यातना से एवं तेरे प्रत्येक प्रकार के क्रोध से।

● हे अल्लाह! हमें क्षमा प्रदान कर, एवं हमारे उन भाइयों को भी जो हम से पूर्व ईमान स्वीकार कर चुके हैं, एवं विश्वासियों की ओर से हमारे हृदय में द्वेष (एवं शत्रुता) मत डाल, हे हमारे पालनहार नि: संदेह तू बड़ा ही दयालु एवं कृपालु है।

● हे हमारे पालनहार हमें सांसारिक जीवन में पुण्य दे एवं प्रलय में भलाई प्रदान कर और नरक की यातना से हमें सुरक्षित रख।

سبحان ربنا رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين

उपदेश का शीर्षक: पूजा में अल्लाह को एक मानना अनिवार्य है

प्रथम उपदेश:

إن الحمد لله، نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، ومن سيئات أعمالنا من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدًا عبده ورسوله

प्रशंसाओं के पश्चात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है। दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्करित बिदअ़त (नवाचार) हैं और प्रत्येक बिदअ़त (नवोन्मेष) गुमराही है और हर गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो! अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय रखो उसकी आज्ञाकारिता करो और उसकी अवज्ञा से बचो और यह जान लो कि अल्लाह तआ़ला का सबसे बड़ा आदेश तौही़द (एकेश्वरवाद) है तौही़द का (अर्थ) है उपासना में अल्लाह को एक जानना और मानना (इस प्रकार कि) आप केवल उसी की पूजा करें उसके साथ किसी को साझी ना बनाएं वह ऐसा उद्देश है जिसके कारण ही अल्लाह ने मनुष्य एवं जिन्न को पैदा किया, अल्लाह रब्बुल आ़लमीन का कथन है:

﴿وَمَا خَلَقْتُ ٱلْجِنَّ وَٱلْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ۝٥٦﴾ [الذاريات: ٥٦]

अर्थात: "मैंने मनुष्य एवं जिन्न को केवल अपनी पूजा के लिए पैदा किया।"

इब्ने तैमिया रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं:

" नमाज़, ज़कात,(दान दक्षिणा) रोज़ा (उपवास) ह़ज, सच बोलना, अमानत को पूरा करना, माता पिता के साथ सुंदर व्यवहार करना, परिजनों के साथ उत्तम व्यवहार करना, पुण्य का आदेश देना, और पाप से रोकना, काफ़िर एवं कपटीयों से जिहाद करना, पड़ोसी, ग़रीब, यात्री और ग़ुलामों के साथ सुंदर व्यवहार करना, पशुओं के साथ अच्छा व्यवहार करना,

प्रार्थना, ज़िक्र व अज़कार, पवित्र क़ुरआन का सस्वर पाठ और इस प्रकार के अन्य कार्य पूजा में शामिल होते हैं।

इसी प्रकार अल्लाह और उसके रसूल (संदेशवाहक) से प्रेम करना, अल्लाह का भय रखना, और उसकी निकटता प्राप्त करना, अल्लाह के धर्म को शुद्ध करना, उसके आदेश पर सब्र करना, उसकी नेमत (कृपा) का धन्यवाद करना, उसके निर्णय से प्रसन्न होना, उस पर विश्वास करना, उसकी कृपा का आशा करना, उसकी यातना का भय रखना भी अल्लाह की पूजा में शामिल हैं।"

इब्न-ए-तैमिया रहमतुल्लाहि अलैहि का कथन समाप्त हुआ।

ए अल्लाह के बंदो (दास)! नि: संदेह पैग़बर और संदेशवाहकों की दावत तौहीद के इसी प्रकार अर्थात एकेश्वरवाद में शामिल थी।, अल्लाह का कथन है:

﴿وَمَآ أَرۡسَلۡنَا مِن قَبۡلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِيٓ إِلَيۡهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعۡبُدُونِ ٢٥﴾ [الأنبياء: ٢٥]

अर्थात: " इससे पूर्व जो भी रसूल (संदेशवाहक) हम ने भेजा उसकी ओर यही वह्य अवतरित की कि मेरे अतिरिक्त कोई सत्य परमेश्वर नहीं है, इसलिए तुम सब केवल मेरी ही पूजा करो।"

समस्त पैग़ंबर (संदेशवाहक) अपने समुदाय से यही कहा करते थे:

﴿ٱعۡبُدُواْ ٱللَّهَ مَا لَكُم مِّنۡ إِلَٰهٍ غَيۡرُهُۥٓ﴾ [الأعراف: ٥٩]

अर्थात: "अल्लाह की पूजा करो और उसके अतिरिक्त कोई तुम्हारा परमेश्वर नहीं।"

ए मोमिनो! समस्त असत्य पर मेश्वरों की अतिरिक्त अल्लाह ही पूजा व उपासना का पात्र है, इसका सबसे बड़ा साक्ष्य यह है कि उसने अकेले इस संसार को पैदा किया इसमें कोई उसका साझी एवं सहायक नहीं, रुबूबीयत के अंदर रचना, राजशाही, उपाय और रिज़्क़ प्रदान करना भी शामिल है। रचनाकार एवं पालनहार रोज़ी प्रदान करने वाला, आदेश देने वाला, और उपाय करने वाला केवल अल्लाह ही है।

अल्लाह तआला रचना में अपने अकेलेपन का उल्लेख करते हुए फ़रमाया:

﴿ٱللَّهُ خَٰلِقُ كُلِّ شَيۡءٖۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ وَكِيلٞ ۝٦٢﴾ [الزمر: ٦٢]

अर्थात: " अल्लाह हर वस्तु को पैदा करने वाला और हर चीज़ का ज़िम्मा लेने वाला है।"

राजशाही में अपने अकेलेपन को स्पष्ट करते हुए फ़रमाया:

﴿ذَٰلِكُمُ ٱللَّهُ رَبُّكُمۡ لَهُ ٱلۡمُلۡكُۚ وَٱلَّذِينَ تَدۡعُونَ مِن دُونِهِۦ مَا يَمۡلِكُونَ مِن قِطۡمِيرٍ ۝١٣﴾ [فاطر: ١٣]

अर्थात: "वह अल्लाह तुम्हारा रब है, उसी की बादशाही है, उससे हटकर जिनको तुम पुकारते हो वह एक खजूर की गुठली के छिलके का भी मालिक नहीं।"

"क़ितमीर" सफ़ेद पतले छिलके को कहते हैं, जो खजूर की गुठली पर होता है।

आदेश लागू करने और उपाय करने में उसके अकेले होने का साक्ष्य यह है:

﴿وَإِلَيۡهِ يُرۡجَعُ ٱلۡأَمۡرُ كُلُّهُۥ﴾ [هود: ١٢٣]

अर्थात: "और हर मामला उसी की ओर पलट ता है।"

संसार का संचालन, जिसमें जीवन एवं मृत्यु देना, वर्षा एवं सूखा उत्पन्न करना, धनी एवं गरीब बनाना, स्वस्थ एवं रोगी करना, शांति प्रदान करना एवं भय उत्पन्न करना और इनके अतिरिक्त वे समस्त चीज़ें शामिल हैं, जो इस संसार में घटती हैं, वे समस्त अल्लाह के आदेश से ही घटते हैं।

रोज़ी प्रदान करने में अल्लाह के अकेले होने का साक्ष्य अल्लाह का यह कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلرَّزَّاقُ ذُو ٱلۡقُوَّةِ ٱلۡمَتِينُ ۝٥٨﴾ [الذاريات: ٥٨]

अर्थात: "निश्चय अल्लाह ही रोज़ी देने वाला शक्तिशाली दृढ़ है।"

ए मुसलमानो! एकेश्वरवाद का विपरीत अल्लाह के साथ बहुदेववाद करना है। बहुदेववाद यह है कि: किसी भी पूजा को अल्लाह के अतिरिक्त के लिए करना इस प्रकार के मनुष्य अल्लाह के लिए कोई ऐसा साझी बना ले जिसकी वह उसी प्रकार पूजा करे जिस प्रकार

अल्लाह की पूजा करता है, उससे उसी प्रकार डरे जिस प्रकार वह अल्लाह से डरता है, किसी भी उपासना के माध्यम से उसी प्रकार उसकी निकटता प्राप्त करे जिस प्रकार अल्लाह की निकटता प्राप्त करता है, उन लोगों के जैसा जो क़ब्रों की पूजा करते हैं, उनके लिए बलि चढ़ाते हैं उनका तवाफ़ (चक्कर) करते हैं, उनके चौखट को चूमते हैं, और उनसे बरकत प्राप्त करते हैं, उनका यह विश्वास होता है कि यह क़ब्र वाले रोज़ी-रोटी प्रदान करते हैं अथवा लाभ हानि पहुंचाते हैं इसी प्रकार अन्य कार्य पूरा करते हैं।

यह ऐसे बहुदेववादी कार्य हैं जो दासों के लिए विश्वास प्रबल कर देते हैं की असत्य परमेश्वर के अतिरिक्त अल्लाह ही समस्त प्रकार की पूजाओं का पात्र है।

अल्लाह के दासो! बहूदेववाद वह सबसे बड़ी अवज्ञा है जिससे अल्लाह ने रोका है अल्लाह तआला ने अपने पैग़ंबर से फ़रमाया:

﴿وَلَقَدۡ أُوحِيَ إِلَيۡكَ وَإِلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكَ لَئِنۡ أَشۡرَكۡتَ لَيَحۡبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ ٱلۡخَٰسِرِينَ ٦٥﴾ [سورة الزمر:٦٥]

अर्थात: "तुम्हारी ओर और जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं उनकी ओर भी वह्य की जा चुकी है कि यदि तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा किया धरा अनिवार्यत: अकारत हो जाएगा और तुम अवश्य ही घाटे में पड़ने वालों में से हो जाओगे,बल्कि अल्लाह ही की बंदगी करो और कृतज्ञता दिखाने वालों में से हो जाओ।"

नि: संदेह अल्लाह ने बहूदेववाद के लिए बड़ी यातना निश्चित की है अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّهُۥ مَن يُشۡرِكۡ بِٱللَّهِ فَقَدۡ حَرَّمَ ٱللَّهُ عَلَيۡهِ ٱلۡجَنَّةَ وَمَأۡوَىٰهُ ٱلنَّارُۖ وَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنۡ أَنصَارٖ ٧٢﴾ [المائدة: ٧٢]

अर्थात: "जो कोई भी अल्लाह का साझी ठहराएगा उस पर अल्लाह ने स्वर्ग को ह़राम कर दिया कर दिया है और उसका ठिकाना नरक है अत्याचारों का कोई सहायक नहीं।"

ऐ विश्वासियो ! अल्लाह ने बहूदेववाद को असत्य घोषित कर दिया है जिसके अनेक इस्लामी एवं तार्किक प्रमाण हैं, जहां तक इस्लामी साक्ष्य की बात है तो उसका उदाहरण अल्लाह का यह कथन है:

﴿إِنَّهُۥ مَن يُشۡرِكۡ بِٱللَّهِ فَقَدۡ حَرَّمَ ٱللَّهُ عَلَيۡهِ ٱلۡجَنَّةَ وَمَأۡوَىٰهُ ٱلنَّارُۖ وَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنۡ أَنصَارٖ ٧٢﴾ [المائدة: ٧٢]

अर्थात: "जो कोई भी अल्लाह का साझी ठहराएगा उस पर अल्लाह ने स्वर्ग को ह़राम कर दिया है और उसका ठिकाना नरक है अत्याचारों का कोई सहायक नहीं।"

जहां तक बहुदेववाद को असत्य कर देने वाले तार्किक साक्ष्य की बात है तो वे अनेक हैं सबसे महत्वपूर्ण यह दो साक्ष्य साक्ष्य हैं:

१-प्रथम साक्ष्य यह है कि बहुदेववादी जिन परमेश्वरों की पूजा करते हैं उनके अंदर एकेश्वरवाद का कोई लक्षण नहीं पाया जाता है वे ऐसे जीव हैं जो रचना नहीं कर सकतीं, अपने पूजने वालों को लाभ पहुंचा सकतीं और न ही हानि पहुंचा सकतीं न उनकी मृत्यु व जीवन उनके हाथ में है, ना ही आकाश और पृथ्वी की कोई अन्य चीज़, और न ही वह अल्लाह को अपनी संपत्ति में साझी कर सकती हैं अल्लाह का कथन है:

﴿وَٱتَّخَذُواْ مِن دُونِهِۦٓ ءَالِهَةٗ لَّا يَخۡلُقُونَ شَيۡـٔٗا وَهُمۡ يُخۡلَقُونَ وَلَا يَمۡلِكُونَ لِأَنفُسِهِمۡ ضَرّٗا وَلَا نَفۡعٗا وَلَا يَمۡلِكُونَ مَوۡتٗا وَلَا حَيَوٰةٗ وَلَا نُشُورٗا ٣﴾ [الفرقان: ٣]

अर्थात: "फिर भी उन्होंने उससे हटकर ऐसे इष्ट-पूज्य बना लिए जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते, बल्कि वे स्वयं पैदा किए जाते हैं, उन्हें ना तो अपनी हानि का अधिकार प्राप्त है और ना लाभ का और ना उन्हें मृत्यु का अधिकार प्राप्त है और ना ही जीवन का और ना दोबारा जीवित होकर उठने का।"

अल्लाह तआ़ला ने इसके अतिरिक्त फ़रमाया:

﴿قُلِ ٱدۡعُواْ ٱلَّذِينَ زَعَمۡتُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ لَا يَمۡلِكُونَ مِثۡقَالَ ذَرَّةٖ فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَلَا فِي ٱلۡأَرۡضِ وَمَا لَهُمۡ فِيهِمَا مِن شِرۡكٖ وَمَا لَهُۥ مِنۡهُم مِّن ظَهِيرٖ ۝٢٢ وَلَا تَنفَعُ ٱلشَّفَٰعَةُ عِندَهُۥٓ إِلَّا لِمَنۡ أَذِنَ لَهُۥۚ حَتَّىٰٓ إِذَا فُزِّعَ عَن قُلُوبِهِمۡ قَالُواْ مَاذَا قَالَ رَبُّكُمۡۖ قَالُواْ ٱلۡحَقَّۖ وَهُوَ ٱلۡعَلِيُّ ٱلۡكَبِيرُ ۝٢٣﴾ [سبأ: ٢٢ – ٢٣]

अर्थात: "कह दो, अल्लाह को छोड़कर जिनका तुम्हें (उपास्य होने का) दावा है उन्हें पुकार कर देखो वे ना आकाश में कण भर चीज़ के मालिक हैं और ना ही धरती में और ना उन दोनों में उनका कोई साझी है और उनमें से कोई उसका सहायक है। और उसके यहां कोई सिफारिश काम नहीं आएगी किंतु उसी की जिसे उसने (सिफारिश करने की) अनुमति दी हो, यहां तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर हो जाएगी तो वे कहेंगे: तुम्हारे रब ने क्या किया? वे कहेंगे: सर्वथा सत्य, और वह अत्यंत उच्च महान है जब उन परमेश्वर की यह स्थिति हो तो उनको परमेश्वर मानना प्रलय स्तर की मूर्खता और प्रलय स्तर की निराधार बात है।"

२-अल्लाह के दासो! बहुदेववाद के असत्य होने का द्वितीय साक्ष्य यह है कि यह बहुदेववादी इस बात को मानते हैं कि नि: संदेह अल्लाह ही केवल पालनहार एवं रचनाकार है जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाहत है, वही मुक्ति प्रदान करता है, उसकी यातना से कोई मुक्ति देने वाला नहीं (बहुदेववादीयों के इस विचार से) यह बात आवश्यक रूप से समझ में आती है कि वह एकेश्वरवाद में अल्लाह को एक मानते थे जिस प्रकार रुबूबीयत (पालनहार मानना) में अल्लाह को एक मानते थे जैसा कि अल्लाह का कथन है:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱعۡبُدُواْ رَبَّكُمُ ٱلَّذِي خَلَقَكُمۡ وَٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ۝٢١ ٱلَّذِي جَعَلَ لَكُمُ ٱلۡأَرۡضَ فِرَٰشٗا وَٱلسَّمَآءَ بِنَآءٗ وَأَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءٗ فَأَخۡرَجَ بِهِۦ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ رِزۡقٗا لَّكُمۡۖ فَلَا تَجۡعَلُواْ لِلَّهِ أَندَادٗا وَأَنتُمۡ تَعۡلَمُونَ ۝٢٢﴾ [البقرة: ٢١ – ٢٢]

अर्थात: "ए लोगो! बंदगी करो अपने रब की जिस ने तुम्हें और तुम से पहले के लोगों को पैदा किया ताकि तुम परहेज़गार बन सको वही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श और आकाश को छत बनाया और आकाश से पानी उतारा फिर उसके द्वारा हर प्रकार की पैदावार की और फल तुम्हारी रोज़ी के लिए पैदा किया अत: जब तुम जानते हो तो अल्लाह के लिए सहकर्मी ना ठहराओ।"

इन समस्त प्रमाणों के आधार पर हर वह चीज़ जिसे परमेश्वर मानकर अल्लाह के अतिरिक्त अथवा अल्लाह के साथ उसकी पूजा की जाए, उसकी पूजा असत्य एवं निराधार है, जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है:

﴿ذَٰلِكَ بِأَنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِ ٱلْبَٰطِلُ وَأَنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْعَلِيُّ ٱلْكَبِيرُ ۝٣٠﴾ [لقمان: ٣٠]

अर्थात: "यह इसलिए कि अल्लाह ही सत्य है और जिसे वे उसको छोड़ कर पुकारते हैं वह सब असत्य हैं और यह कि अल्लाह ही सर्वोच्च महान है।"

अल्लाह मेरे और आपके लिए पवित्र क़ुरआन में बरकत डाल दे, मुझे और आपको आयत व ह़िकमत पर आधारित परामर्श के माध्यम से लाभ पहुंचाए, मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सबके लिए क्षमा प्राप्त करता हूं, आप भी उस से क्षमा प्राप्त करें, नि: संदेह वह अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने वाले को अति क्षमा प्रदान करने वाला वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى أما بعد !

प्रशंसाओं के पश्चात:

आप याद रखें -अल्लाह आप पर कृपा करे- कि उपासनाओ में सबसे अधिक जिनमें लोग अल्लाह और उसके जीव को एक दूसरे का साझी बनाते हैं, वह प्रार्थना है,क़ुरआन एवं ह़दीस के अंदर प्रार्थना को मात्र अल्लाह के लिए शुद्ध करने के महत्व और अल्लाह के अतिरिक्त से प्रार्थना करने से रुकने पर ज़ोर दिया गया है अल्लाह का कथन है:

﴿ٱدْعُواْ رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً﴾ [الأعراف: ٥٥]

अर्थात: "अपने रब को गिड़गिड़ा कर और चुपके चुपके पुकारो।"

अल्लाह ने इसके अतिरिक्त फ़रमाया:

﴿أَمَّن يُجِيبُ ٱلْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ ٱلسُّوٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ ٱلْأَرْضِ﴾ [النمل: ٦٢]

अर्थात: "या वह जो व्यग्र की पुकार सुनता है जब वह उसे पुकारे और तकलीफ़ दूर करता है और तुम्हें धरती में अधिकारी बनाता है।"

अल्लाह का कथन है:

﴿وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ﴾ [البقرة: ١٨٦]

अर्थात: "और जब तुमसे मेरे बंदे मेरे संबंध में पूछे तो में तो निकट ही हूं पुकार का उत्तर देता हूं जब वह मुझे पुकारता है।"

अल्लाह तआला का यह भी कथन है:

﴿وَسْـَٔلُوا۟ ٱللَّهَ مِن فَضْلِهِۦٓ﴾ [النساء: ٣٢]

अर्थात: "अल्लाह से उसका उदार दान चाहो।"

अनेक रूप एवं सूत्रों में क़ुरआन के अंदर ३०० विभिन्न स्थानों पर प्रार्थना के अंदर अल्लाह के अकेलेपन का साक्ष्य आया है।

ए अल्लाह के दासो! प्रार्थना में इख़्लास (शुद्धता) को अपनाओ, तुम्हें सफ़लता मिलेगी। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

مَنْ مَاتَ وَهُوَ يَدْعُو مِنْ دُونِ اللَّهِ نِدًّا دَخَلَ النَّارَ. (البخاري:٤٤٩٧)

अर्थात: "जिस व्यक्ति की मृत्यु इस स्थिति में हो कि वह अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को भी अल्लाह का साझी बनाता रहा तो वह नरक में जाता है।" 1{ इसे बुख़ारी(४४९७)ने विवरण किया है।}

सह़ीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रश्न किया गया कि अल्लाह तआला के निकट सबसे बड़ा पाप क्या है? पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

أَنْ تَجْعَلَ لِلَّهِ نِدًّا وَهُوَ خَلَقَكَ. (البخاري:٤٧٦١، مسلم:٨٦)

अर्थात: "यह कि तुम अल्लाह के साथ किसी को बराबर मानो जबकि अल्लाह ही ने तुमको पैदा किया है।"

2{इसे बुख़ारी(४७६१) एवं मुस्लिम(८६) ने इब्ने मसऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु से वर्णन किया है।}

"निद" का अर्थ समान और बराबर के हैं। हर वह व्यक्ति जिसने अल्लाह के अतिरिक्त से प्रार्थना की अथवा उससे सहायता मांगी अथवा उसके लिए बलि चढ़ाई अथवा उसके लिए किसी प्रकार की पूजा की मानो उसने उसे अल्लाह के साथ बराबर माना चाहे जिसे (सामान्य स्थान दिया जा रहा है) वह कोई पैग़ंबर हो, अथवा वली, कोई राजा हो,अथवा जिन्न, कोई मूर्ति हो अथवा कोई अन्य जीव।

क़ुरआन में दो स्थानों पर अल्लाह ने अपने अतिरिक्त अन्य से प्रार्थना करने को असत्य और निराधार घोषित कर दिया है, प्रथम स्थान सुरह-ए-हज के अंदर है, अल्लाह का कथन है:

﴿ذَٰلِكَ بِأَنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِۦ هُوَ ٱلْبَٰطِلُ﴾ [الحج: 62]

अर्थात: "यह इसलिए कि अल्लाह ही सत्य है और जिसे वे उसको छोड़ कर पुकारते हैं वह सब असत्य हैं।"

द्वितीय स्थान सूरह-ए-लुक़मान के अंदर है, अल्लाह का कथन है:

﴿ذَٰلِكَ بِأَنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِۦ هُوَ ٱلْبَٰطِلُ﴾ [لقمان: ٣٠]

अर्थात: "यह इसलिए कि अल्लाह ही सत्य है और जिसे वे उसको छोड़ कर पुकारते हैं वह सब असत्य हैं।"

ऐ मुसलमानो! प्रार्थना के अंदर बहुदेववाद प्राचीन काल में भी पाया गया और आधुनिक काल में भी पाया जाता है, चाहे यह बहुदेववाद मूल बहुदेववादीयों के मध्य हो जैसे इसाई जिन्होने मसीह से प्रार्थना की, अथवा भारतीय धर्मों के मानने वालों में हो जो गाय को पुकारते हैं तथा अपने हाथों से बनाए हुए प्रतिमाओं और बुतों से प्रार्थना करते हैं,इनके अतिरिक्त भी अनेक लोग हैं जो प्रार्थना में बहुदेववाद करते हैं। इसी प्रकार कुछ ऐसे दलों के यहां भी

प्रार्थना के अंदर बहुदेववाद पाया जाता है जो अपना संबंध इस्लाम की ओर करते हैं,जैसे वह अतिशयोक्तिपूर्ण सूफ़ी गण जो अपने बुज़ुर्गों को पुकारते हैं और उनसे शुभकामनाएं प्राप्त करते हैं, इसी प्रकार वे रवाफ़िज़ (अस्वीकार करने वाला) जो अहल-ए-बैत (आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के परिवार) को पुकारते हैं, इसी प्रकार क़ब्र पूजने वाले लोग जो क़ब्र वाले को पुकारते हैं यह समस्त लोगों का इस प्रकार के बहुदेववाद के बावजूद यह भ्रम रखते हैं कि वह मुसलमान हैं और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम करने वाले हैं जबकि इस्लाम उनके बहुदेववाद से मुक्त है, हम इस प्रकार की अंधभक्ति से अल्लाह का शरण चाहते हैं और अल्लाह से यह प्रार्थना करते हैं कि वह हमारे ऊपर एकेश्वरवाद व सुन्नत का कृपा अंत तक बनाए रखे आप याद रखें -अल्लाह आप पर दया करे- कि अल्लाह ने आपको एक बड़े कार्य का आदेश दिया है अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [الأحزاب: ٥٦]

अर्थात: "अल्लाह तआला एवं उसके देवदूत उस पैग़ंबर पर रहमत (कृपा) भेजते हैं ए विशवासियो! तुम भी उन पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजते रहा करो।"

पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने समुदाय को शुक्रवार के दिन अपने ऊपर अधिक से अधिक दुरूद (इभिादन) भेजने का अ ादेश दिया है आपका कथन है:

अर्थात: " तुम्हारे पवित्र दिनों में से शुक्रवार का दिन है इसीलिए उस दिन तुम लोग मुझ पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजा करो, क्योंकि तुम्हारा दुरूद मुझ पर प्रस्तुत किया जाता है।"

हे अल्लाह तू अपने बंदे व रसूल (दास एवं संदेशवाहक) मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दया, कृपा एवं शांति भेज, तू उनके ख़ुलफ़ा (मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उत्तराधिकारीयों) ताबेईन (समर्थक) एवं क़यामत तक आने वाले समस्त आज्ञाकार्यों से प्रसन्न हो जा!

हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित कर दे,तू अपने एवं इस्लाम के शत्रुओं एवं विरोधीयों को नाश कर दे,तू अपने मुवह्हिद बंदों (अव्दैतवादियों) को सहायता प्रदान कर। हे अल्लाह! तू हमारे देशों

को शांतिपूर्ण बना दे, हमारे इमामों (प्रतिनिधियों), शासकों को सुधार दे, उन्हें हिदायत (सही मार्ग) का निर्देश दे, और हिदायत पर चलने वाला बना दे।

हे अल्लाह! तू समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने एवं अपने धर्म के उत्थान की तौफ़ीक़ प्रदान कर, उनको उनके प्रजा के लिए रह़मत (दया) का कारण बना दे।

हे अल्लाह ! जो हमारे प्रति, इस्लाम और मुसलमानों के प्रति बुराई का भाव रखते हैं, उसे तू अपनी ही ज़ात में व्यस्त कर दे और उसके फ़रेब व चाल को उलटा उसके के लिए वबाल बना दे।

हे अल्लाह! मुद्रास्फीति, महामारी, ब्याज बलात्कार, भूकंप एवं आज़माइशों को हमसे दूर कर दे और प्रत्येक प्रकार के आंतरिक एवं बाह्य फ़ित्नों (उत्पीड़नों) को हमारे ऊपर से उठा ले ,सामान्य रूप से समस्त मुस्लिम देशों से और विशेष रूप से हमारे देशों से ऐ दोनों जहां के पालनहार! हे अल्लाह! हमारे ऊपर से महामारी को दूर कर दे, नि: संदेह हम मुसलमान हैं।

हे हमारे रब! हमें दुनिया और आख़िरत में समस्त प्रकार की अच्छाई दे, और नरक की यातना से हम को मुक्ति प्रदान कर।

ए अल्लाह के दासो! निःसंदेह अल्लाह तआला न्याय का, अच्छाई का एवं परिजनों के साथ सुंदर व्यवहार का आदेश देता है, अशिष्ट गतिविधियों एवं क्रूरता व दुरुपयोग से रोकता है। वह स्वयं तुम्हें परामर्श देता है कि तुम नसीहत प्राप्त करो।

तुम अल्लाह का ज़िक्र (याद)करो वह तुम्हें याद करेगा उसकी नेमतों पर उसके आभारी रहो वह तुम्हें अधिक नेमतें (आशीर्वाद) देगा अल्लाह का ज़िक्र बहुत बड़ी चीज़ है, अल्लाह तुम्हारे समस्त कार्यों एवं गतिविधियों से अवगत है।

शीर्षक: अल्लाह के नामों एवं विशेषणों पर ईमान

إن الحمد الله، نحمده ونستعينه،ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا،من يهده الله فلا مضل له،ومن يضلل فلا هادي له،وأشهد أن لا إله الإ الله وحده لا شريك له وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रशंसाओं के पश्चात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त(नवाचार)है और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो! अल्लाह का तक़्वा अपनाओ और उस्से डरो उसकी आज्ञाकारी करो और उसके अवज्ञा से बचो,और जानलो कि अल्लाह के नामों और विंशेषणों पर ईमान लाने का इस्लामी आस्था में बड़ा महत्व है,अल्लाह ने अपने पवित्र पुस्तक में अपने नामों और विशषणों की बड़ी प्रशंसा की है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ كَانَ سَمِيعًۢا بَصِيرًا ۝٥٨﴾ [النساء: ٥٨]

अर्थात:अल्लाह अति सुन्ने वाला,अति देखने वाला है।

अथवा अल्लाह ने फरमाया:

﴿ وَكَانَ ٱللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝٩٦﴾ [النساء: ٩٦]

अर्थात: अल्लाह अति छमा प्रदान करने वाला,कृपा करने वाला है।

और इस प्रकार के अनेक प्रमाण हैं।

- जैसा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ह़दीस में अनेक स्थान पर अपने रब की प्रशंसा की है अैर उसके जलाल व कमाल के विशेषण का उल्लेख किया है।
- अल्लाह के नामों एवं विशेषणों पर ईमान लाने से बंदों के अंदर अल्लाह का डर उत्पन्न होता है,जिसके फलस्वरुप बंदा अल्लाह की उसी प्रकार

पूजा करता है जिस्से अल्लाह प्रसन्न होता है,क्योंकि तथ्य यही है जैसा कि कहा गया है:(जो अल्लाह को अधिक जानता है वह उस्से अधिक डरता है)।

(इसे मोह़म्मद बिन नसर अलमरवज़ी ने (ताजीमो क़ुदरतिस्सलात) :786 में अह़मद बिन आसिम अलअनताकी से रिवायत किया है।) इसी लिए अल्लाह के नामों व विशेषणों को जान्ने वाले लोग अल्लाह से अधिक डरते हैं,जैसा कि अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّمَا يَخْشَى ٱللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ ٱلْعُلَمَٰٓؤُا۟ۗ﴾ [فاطر:٢٨]

अर्थात:अल्लाह से उसके वही बंदे डरते हैं जो ज्ञान रखते हैं।

- चूंकि अल्लाह के नामों एवं विशेषणों पर ईमान लाने का यह महत्व है,इस लिए बंदा पर अनिवार्य है कि वह इसी प्रकार उसे पूरा करे जिस प्रकार धर्म में आया है,और वह इस प्रकार कि अल्लाह ने अपनी पुस्तक में और पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी सुन्नत में जिन नामों और विशषणों को प्रमाणित किया है,उन्हें उसी प्रकार प्रमाणित किया जाए जैसा अल्लाह के अभिमान के याग्य है।
- ए मोमिनो! अल्लाह के नामों एवं विशेषणों पर ईमान लाने के दो तक़ाज़े हैं:जिस प्रकार वह अवतरित हुए हैं उसी प्रकार उनके जाहेरि अर्थ को समझा जाए,बेगैर किसी हैर फैर,इनकार,गुणवक्ता एवं उदाहरण के,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿وَلِلَّهِ ٱلْمَثَلُ ٱلْأَعْلَىٰ﴾ [النحل: ٦٠]

अर्थात:अल्लाह के लिए तो ही उच्च विशेषण है।

अर्थात उसके लिए संपूर्ण विशषण है,अल्लाह का कथन है:

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِۦ شَىْءٌۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْبَصِيرُ ۝١١﴾ [الشورى: ١١]

अर्थात: उस जैसी कोई चीज नहीं वह सुन्ने और देखने वाला है।

अल्लाह पर ईमान लाने का दूसरा तक़ाजा यह है कि जो नाम और विशेषण कुरान व ह़दीस में अवतरित हूए हैं,उन पर ही बस किया जाए,और कोई ऐसा नाम एवं विशेषण न अविश्कार किया जाए जो कि कुरान व ह़दीस में न हो,इमाम अह़मद फरमाते हैं:अल्लाह तआ़ला ने अपनी पवित्र हस्ती के लिए जिन विशेषणों का उल्लेख किया है,उस्से अधिक उसका विशेषण बयान नहीं किया जा सकता।

(काज़ी अबू याली ने(तबक़ातुल हनाबिला)1/386के अंतर्गत हंबल बिन इसहाक़ के जीवनी में यह कथन उल्लेख किया है)

- ए अल्लाह के बंदो! अल्लाह के नामों एवं विंशेषणों पर ईमान लाने का विपरीत यह है कि उनमें नास्तिकता किया जाए,शब्दकोश में नास्तिकता का अर्थ झुकने और माएल होने के हैं,इसी से क़बर में जो लहद होती है,उसे लहद का नाम दिया जाता है,क्योंकि वह क़बर के एक ओर झुकी होती है,इस आधार पर नामों और विशेषणों में नास्तिकता का अर्थ यह है कि उनके अर्थ एवं सार को समझने में इस सत्य समझ से बचा जाए जो अ़रबी भाषा पूर्वजों के विचार का तक़ाजा है।

नास्तिकता के अनेक प्रकार हैं,उन सब का आधार इस पर है कि या तो सत्य अर्थ को ऐसे अर्थ की ओर फेर दिया जाए जो उसका उद्देश न हो,या इसे पूर्ण रूप से व्यर्थ कर दिया जाए,यह दोनों ही अल्लाह के नामों एवं विशेषणों पर ईमान लाने के विरुद्ध हैं,यह बेगैर ज्ञान के अल्लाह की ओर किसी बात को फेरना है,उन नवाचारों में से है जिन के मानने वालों को धार्मिक पूर्वजों और उनके अनुयायियों ने कठोर खंडन किया है,और यह उन पापों में से है जिन पर अल्लाह ने यातना बताई है,अल्लाह का शरण,अल्लाह का कथन है:

﴿وَلِلَّهِ ٱلْأَسْمَآءُ ٱلْحُسْنَىٰ فَٱدْعُوهُ بِهَا ۖ وَذَرُوا۟ ٱلَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِىٓ أَسْمَٰٓئِهِۦ ۚ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿١٨٠﴾﴾
[الأعراف: ١٨٠]

अर्थातः अच्छे अच्छे नाम अल्लाह के लिए हैं इसलिए उन नामों से केवल अल्लाह ही को पुकारा करो और ऐसे लोगों से संबंध भी न रखो जो उसके नामों का खंडन करते हैं,उन लोगों को इनके लिए अवश्य यातना मिलेगी।

﴿وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِۦ عِلْمٌ ۚ إِنَّ ٱلسَّمْعَ وَٱلْبَصَرَ وَٱلْفُؤَادَ كُلُّ أُو۟لَٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْـُٔولًا ﴿٣٦﴾﴾ [الإسراء: ٣٦]

अर्थातःजिस बात का तुझे पता न हो उसके पीछे मत पड़ो,क्योंकि कान और आंख और दिल उनमें से प्रत्येक से पूछताछ की जाने वाली है।

ए मुसलमानो! अल्लाह के नामों और विशषणों में नास्तिकता का सबसे प्रसिद्ध प्रकार यह है कि उनमें हेरफेर किया जाए,अर्थात उनके अर्थ को उन वास्तव अर्थों से फेर दिया जाए जिनका तक़ाजा अ़रबी भाषा और सलफे सालेहीन (धार्मिक पूर्वजों) की समझ करती है,जैसे सहा़बा और नेकनीयती के साथ उनके अनुयायियों,जिन्हों ने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से समझ प्राप्त की,उनकी समझ का क्या कहना,खुद पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी अच्छाई की गवाही दी है,आप पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस है:''सबसे अच्छे और बेहतर लोग हमारे युग के लोग हैं,फिर वे लोग हैं जो उनके बाद के होंगे,फिर वे लोग जो उनके बाद के होंगे''

(इसे बोखारी 2652 और मुस्लिम 2533 ने अबदुल्लाह बिन मसऊद रज़िअल्लाहु अनहु से रिवायत किया है।)

हर वह बात जो सहाबा की समझ के विरुद्ध हो उसका इसलाम धर्म से कोई संबंध नहीं,बल्कि वह धर्म में अविश्कारित मनघड़त तरिक़ा है,इसलाम से उसका कोई संबंध नहीं।

● अल्लाह के नामों व विशेषणों में हेरफेर का एक उदाहरण यह है कि अ़रश पर अल्लाह के मुस्तवी होने की तफसीर यह कीजाए कि वह उस पर हावी व प्रभावित है,और इसका इनकार किया जाए कि उसका अर्थ अल्लाह का अ़रश पर बोलंद होना है,अल्लाह तआ़ला उच्च व महान है।

● अल्लाह के नामों एवं विशेषणों में नास्तिकता का एक प्रकार यह है कि उनमें तकयीफ(कैफियत बयान कया जाए),अर्थात अल्लाह के किसी विशेषण की तकयीफ व माहियत मालूम किया जाए,जो कि ह़राम है,इस लिए कि अल्लाह ने इस बात का इनकार किया है कि उसके बंदे उसके किसी गुण को सिमित करें,अल्लाह का कथन हैः

﴿وَلَا يُحِيطُونَ بِهِۦ عِلۡمٗا ١١٠﴾ [طه: ١١٠]

अर्थातःजीवों का ज्ञान उस पर हावी नहीं हो सकता।

इस आयत में अल्लाह ने इस बात का कठिन शब्दों में खंडन किया है कि उसके गुणों,कैफियत व प्रकृति जान्ने की चाहत रखी जाए।

सलफे सालेही़न (धार्मिक पुर्वजों)ने उस व्यक्ति को कठोर नकारा है जो इस ज्ञान को प्राप्त करना चाहता है,एक व्यक्ति इमाम मालिक बिन अनस रह़िमहुल्लाह के पास आया और पूछाःए अबू अबदुल्लाह! रह़मान अ़रश पर मुस्तवी (स्थ्रि) है,वह कैसे मुस्तवी है?

रावी कहते हैंःइमाम मालिक ने सर झुका लिया यहां तक कि पसिने में डूब गये,फिर फरमायाः"इस्तेवा का अर्थ प्रसिद्ध है,इसकी कैफियत मनुष्य के बुद्धि से परे है,उसपर ईमान लाना अनिवार्य है,उसके प्रति प्रश्न करना नवाचार है,मुझे तो तुम बिदअ़ति लगते हो"और आप ने उन्हें बाहर निकालने का आदेश दिया।

(इसे बैहक़ी ने "अलअसमा व अलसिफात":866.867 में रिवायत किया है।)

- इब्ने ओसैमीन रहिमहुल्लाह ने इमाम मालिक के कथन पर टिप्पनी करते हुए जो बात कही है उसका सार यह है कि:मालिक का कथन समस्त गुणों कासंतुलन है,जो लोग अल्लाह के गुणों की कैफियत के बारे में प्रश्न करते हैं,उनका प्रश्न करना नवाचार है,क्योंकि सहाबा अच्छाई और अल्लाह के जिन गुणों को प्रमानित करना अनिवार्य है,उनका ज्ञान प्राप्त करने के सबसे अधिक जिज्ञासी थे,इसके बावजूद कभी भी उन्हों ने अल्लाह तआला के किसी विशेषण के बारे में प्रशण नहीं किया''। आप का कथन समाप्त हुआ।

- अल्लाह के नामों एवं विशषणों में नास्तिकता का एक प्रकार तशबीह (समानता)देना है,अल्लाह तआला अपने बंदों की समानता से उच्च है।

नईम बिन हमाद अलखेजाई रहिमहुल्लाह.जो बोखारि के शिक्षक हैं वह कहते हैं:जिसने अल्लाह को उसके जीव से समानता दिया वह काफिर है,जिसने उनके गुणों का इनकार किया जिनका उल्लेख अल्लाह ने अपने प्रति किया है तो वह भी काफिर है,अल्लाह और उसके रसूल ने अल्लाह के जिन गुणों का उल्लेख किया है,उनमें कोई समानता नहीं पाई जाता। (अलओलूम:464)

- ए मोमिनों! अल्लाह के नामों एवं विशेषणों को बेगैर किसी तहरीफ (हेरफेर) के उसी प्रकार समझना जैसे वह अवतरित हुऐ हैं,उन आसथाओं में से है जिन पर चारों पंथों आदि की आम सहमति है,इमाम अहमद बिन हसन अलशैबानी.जो कि इमाम अबू हनीफा के क्षात्र हैं.का कथन है:पूर्व से लेकर पश्चिम तक के समस्त विधिवेत्ताओं का इस बात पर सहमति है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से विश्वसनीय वर्णनकर्ताओं के माध्यम से जो कोरान व अहादीस हम तक पहुंची हैं,उन में अल्लाह तआला के जो विशेषण हैं,उन पर बेगैर किसी तफसीर,तौसीफ और तशबीह के ईमान लाना अनिवार्य है,जिस ने उनमें से किसी का मनचाही व्याख्या की वो पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मार्ग इसलाम से बाहर है,क्योंकि उन्हों ने उन विशषणों की मनचाही व्याख्या नहीं की है,बल्कि कोरान व हदीस में जो कुछ आया है, उन पर ही बस किया और उसके पश्चात खामोशी अपनाई है। (अलकालकाई की पुस्तक"शरहो उसूले एतेक़ादे अहलुस सुन्नत व अलजमाअत" :3/480)

- ईमाम शाफेई रहिमहुल्लाह का कथन है:में अल्लाह पर उसकी मुराद के अनुसार और पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उनके मुराद के अनुसार ईमान लाता हूं।(इस कथन को अबदुल्लाह बिन अहमद बिन क़ोदामा(620)ने अपनी पुस्तक "ज़मु अलतावील"पृष्ठ संख्या(:222.256) में उल्लेख किया है।)

इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाह फरमाते हैं:कुरान में अल्लाह के विशेषणों पर आधारित जितनी भी आयते हैं,उन की व्याख्या में सहाबा के बीच कोई विरोध नहीं पाया जाता है,में ने सहाबा से वर्णित समस्त व्याख्याओं और ह़दीसों का अध्ययन किया,इस विषय में छोटी बड़ी सो से अधिक व्याख्याओं का मेंने अल्लाह की इच्छा से समीक्षा किया,मेंने अब तक किसी सहाबी के बारे में यह नहीं पाया कि उन्हों ने अल्लाह के विशषणों पर आधारित किसी भी आयत अथवा ह़दीस की ऐसी व्याख्या की हो जो उसके प्रसिद्ध अर्थ और तक़ाजे के विरुद्ध हो,बल्कि उन आयात व अह़ादीस में वर्णित विशेषणों को सिद्ध करने में उनसे अनेक कथन वर्णित हैं जिन से व्याख्या करने वालों का विरोध और खंडन होता है।("मजमूउलफतावा":6/394)आप रहि़महुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।

- इब्ने कसीर रही़महुल्लाह अल्लाह तआ़ला के कथन

﴿ ثُمَّ ٱسۡتَوَىٰ عَلَى ٱلۡعَرۡشِ﴾ [الأعراف: ٥٤]

की व्याख्या में लिखते हैं:रही बात अल्लाह तआ़ला के फरमानः ﴿ ثُمَّ ٱسۡتَوَىٰ عَلَى ٱلۡعَرۡشِ﴾ की तो इस विषय में लोगों के एतने कथन हैं कि इस स्थान पर उन्का उल्लेख नहीं किया जा सकता,बल्कि इस स्थान पर सलफे सालेह़ी (नधारिर्मक पुर्वजों) का मार्ग अपनाया जाए,जैसे मालिक,औजाई,सौरी,लैस बिन साद,शाफेई,अह़मद,इसहाक़ बिन राहवैय और उन जैसे दिगर नए व पुराने इमामों का मार्ग,वह मार्ग यह है कि उन नामों व विशषणों को उसी प्रकार प्रमाणित किया जाए जिस प्रकार वे आए हैं,उनमें कोई तकयीफ,समानता और इनकार न किया जा जाए,उन नामों व विशेषणों का जो जाहेरी अर्थ समानता बताने वालों के दिल में आता है,वह अल्लाह से उस अर्थ का नकीर करते हैं,कोई भी जीव अल्लाह के जैसा नहीं हो सकता:

﴿ لَيۡسَ كَمِثۡلِهِۦ شَيۡءٞۖ وَهُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلۡبَصِيرُ ١١﴾ [الشورى: ١١]

अर्थात:उस जैसी कोई चीज नहीं वह सुन्ने और देखने वाला है।

बल्कि सत्य वह है जिस का वर्णन इमामों ने की है जिन में इमाम बाखारी के शिक्षक नई़म बिन ह़म्माद बिन अलखोजा़इ भी हैं, वह कहते हैं:"जिस ने अल्लाह को जीव से समानता दी उसने कुफर किया,जिसने किसी विशेषण का इनकार किया जिस्से अल्लाह ने खुद को संबेधित किया है,उसने कुफर किया है,अल्लाह और रसूलुल्लाह ने जिन विशेषणों को अल्लाह के लिए प्रमाणित किया है,उनमें कोई समानता नहीं पाई जाती",तो जो व्यक्ति अल्लाह तआ़ला के लिए उन विशेषणों को

जो स्पष्ट आयतों और ह़दीसों में आई हैं,उसी प्रकार प्रमाणित करे जो उसकी महानता के याग्य है,तथा अल्लाह तआ़ला से प्रत्येक प्रकार के दोषों एवं अवगुणों का खंडन करे तो वह सत्य मार्ग पर है।आप रह़िमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।

- अबदुर्रह़मान बिन अलक़ासिम रह़िमहुल्लाह(आप इमाम अबदुर्रह़मान बिन अलक़ासिम हैं,उनके बारे में इमाम ज़हबी ने "तारीखुल इसलाम":4/1149 में लिखा है:वह बड़े विद्धानों में से हैं,और इमाम मालिक के उन महान छात्रों में से हैं जिन्हों ने उनके पंथ को बढ़ावा दिया.... उनका निधन 191 हिजरी में हूआ।) फरमाते हैं:किसी मनुष्य के लिए यह उचित नहीं कि वह किसी एसे गुन को अल्लाह से जोड़े जिस्से अल्लाह ने अपनी हस्ती को क़ुरान में उल्लख नहीं किया है,और न उसके हाथों को किसी चीज से समानता दे,बल्कि यह कहे कि:"उसके दो हाथ हैं,जैसा कि क़ुरान में उसने अपनी हस्ती के गुन बताए हैं,और उसका एक चेहरा है जैसा कि उसने अपना यह गुन बयान किया है"।अल्लाह ने क़ुरान में अपने जो विशेषण बयान किये हैं,उन पर ही बस करे,क्योंकि कोई अल्लाह तआ़ला के सामान नहीं,बल्कि वह अल्लाह है जिसके सेवा कोई सत्य परमेश्वर नहीं,जैसा कि उसने अपना यह गुन बयान किया है,उसके दोनों हाथ खुले हुए हैं,जैसा कि अल्लाह ने अपने हाथों का गुन बयान किया है और यह भी गुन बयान किया है कि:

﴿وَٱلْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُۥ يَوْمَ ٱلْقِيَـٰمَةِ وَٱلسَّمَـٰوَٰتُ مَطْوِيَّـٰتٌۢ بِيَمِينِهِۦ﴾ [الزمر: ٦٧]

अर्थात: सारी धरती क़ेयामत के दिन उसकी मुठठी में होगी और सारे आकाश उसके दाहने हाथ में लिपटे हुए होंगे।

आप रह़िमहुल्लाह का कथन समाप्त हूआ। ("ओसूलुस्सुन्न":42,अनुसंधान:अह़मद बिन अ़ली अलको़फैली,प्रकाशक:दारुलफ़ुरक़ान,मिस्त्र)

अल्लाह तआ़ला क़ुरान की बरकतों से हमें और आप को लाभ पहुंचाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और ह़िकमतों पर आधारित प्रामर्शों ले लाभ पहुंचाए,में अपनी यह बात हकते हुए अल्लाह तआ़ला से आप सब के लिए समस्त प्रकार के पापों से छमा प्राप्त करता हूं,आप भी उस्से छमा प्राप्त करे,निसंदेह वह अति तौबा स्वीकारने वाला और छमा प्रदान करने वाला है।

द्धितीय उपदेश:

الحمدلله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد:

ए मुसलमानो! मनुष्य की बुद्धि, ह्रदय और उसके शरीर के अंगों के लिए अल्लाह तआ़ला के नामों व विशेषणों के अर्थ को जानने के अनेक लाभ हैं, इब्नुलकय्यूम रहि़महुल्लाह लिखते हैं:(अल्लाह तआ़ला के)सुंदर नामों और उच्च गुनों,पूजा पाठ एवं जीवन के मामलों पर इन्हीं प्रभावों का तक़ाजा करते हैं, जो प्रभाव रचना एवं निर्मान पर लागू होते हैं,प्रत्येक विशेषण की एक विशेष बंदगी है,जिस्से यह अनिवार्य होता है कि उसको जाना जाए और उसका ज्ञान प्राप्त किया जाए,और यह चीज ह्रदय और शरीर के भागों एवं अंगों से पूरी की जाने वाली पूजा के समस्त प्रकारों में समान है,इसलिए बंदा यह जानले कि अल्लाह तआ़ला लाभ व हानी,प्रदान व वंचन,रचना व रिज्क़,जीवन और मृत्यु देने में अकेला है,उसको जानने का यह लाभ यह होता है कि उसके आंतरिक में अल्लाह पर विश्वास करने का जज़्बा पैदा होता है और जाहिर में तवक्कुल(विश्वास) के आव भाव एवं परिणाम जाहिर होते हैं।

बंदा का अल्लाह तआ़ला के देखने व सुन्ने और ज्ञान का अवज्ञत होना और यह जान लेना कि आकाशों एवं धर्ती में राई के दाने के बराबर भी कोई चीज उससे छुपी नहीं,वह समस्त छुपी और खुली चीजों को जानता है,वह आंखों कि ख्यानत और दिल के भेद से अवज्ञत है,इसको जानने का लाभ यह होता है कि बंदा अपने जीभ,शरीर के अंगों और हृदय के ख्यालात को ऐसी बातों से सुरक्षित रखता है जो अल्लाह को पसंद नहीं,तथा उन अंगों को ऐसे कामों में लगा के रखता है जो अल्लाह को पसंद हैं,इसका लाभ यह होता है कि उसके आंतरिक में ह़या पैदा होती है,और यह ह़या उसे ह़राम और बुरे कामों से दूर रखता है।

इसी प्रकार बंदा का अल्लाह की महानता और प्रतिष्ठा से अवज्ञत होना,उसके अंदर विनर्मता एवं प्रेम को जन्म देता है और जाहेरि प्रार्थना के एसे प्रकारों से उनके जीवन को भर देता है जो अल्लाह के ज्ञान से ही उत्पन्न होती है।इसी प्रकार बंदा का अल्लाह के संपुर्ण एवं उच्च गुनों से अवज्ञत होना उसके अंदर ऐसा प्रेम पैदा करता है जो प्रार्थना के साथ खास होती है।

इसी प्रकार समस्त प्रकार की पूजा पाठ नामों एवं विशेषणों के तक़ाजों के ओर ही लोटती हैं और उनसे उसी प्रकार संबंध रखती हैं जिस प्रकार जीव उनसे संबंधित हैं,अल्लाह तआ़ला का पैदा करना और(प्रत्येक प्रकार का)आदेश देना इस संसार में उसके नामों व विशेषणों के लवाजेमात,प्रभाव और तक़ाजे हैं।("मिफताहो दारिस्सआ़दा":2/510.511)आप रहि़महुल्लह का कथन समाप्त हूआ।

- तथा यह भी जान लें.अल्लाह आप पर कृपा करे.कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़ी चीज का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦ ﴾ [الأحزاب: ٥٦]

अर्थात:अल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो! तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

ए अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्माद पर रह़मत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़ेयामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

ए अल्लाह! प्रत्येक कठिनाई पापों के कारण अवतरित होती है और तौबा के माध्यम से ही दूर होती है,हम पापों को स्वीकारते हुए तेरे द्वार में अपने हाथ फैलाए हुए हैं,हमारे सर तौबा के साथ तेरे द्वार पे झुके हूए हैं।

ए अल्लाह! यमन,इराक़,सीरया,फलसतीन और लीबिया और दूसरे इसलामी देशों में शांति फैला दे।

ए हमारे रब! हमें दुनिया मे पुण्य दे और आखिरत में भलाई प्रदान कर,और नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين

शीर्षक: देवतूतों पर ईमान

प्रथम उपदेष

إن الحمد لله نحمده، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रषंसाओं के पष्चात!

सर्वश्रेश्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुश्टतम चीज़ धर्म में अविश्कारित बिदअ़त;नवाचारद्धहै और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

- *ए मुसलमानो! में आपको और स्वयं को अल्लाह से डरने का प्रामर्ष करता हूं, यह पूर्व एवं पष्चात के समस्त समूदायों का प्रामर्ष है,अल्लाह का कथन है:*

﴿وَلَقَدۡ وَصَّيۡنَا ٱلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلۡكِتَٰبَ مِن قَبۡلِكُمۡ وَإِيَّاكُمۡ أَنِ ٱتَّقُواْ ٱللَّهَ﴾ [النساء: ١٣١]

अर्थातःनिसंदेह हमने उन लोगों को जो तुमसे पष्चात पुस्तक दिये गऐ थे और तुम को भी यही आदेष किया है कि अल्लाह से डरते रहो।

इस लिऐ आप अल्लाह का तक़्वा अपनाऐं और उससे डरते रहें,उसकी आज्ञाकारी करें और उसके अवज्ञा से बचते रहें,और जानलें कि देवदूतों पर ईमान लाने का इस्लाम में बड़ा स्थान है,और वह इस्लाम का द्वितीय स्तंभ है,रसूलों;संदेषवाहकोंद्ध और अन्य लोगों के मध्य वे माध्यम हैं,देवदूत अल्लाह के ऐसे जीव हैं जो गैब की दुनिया से संबंध रखते हैं,वे अल्लाह की पूजा करते हैं,उनके अंदर उलूहियत एवं रुबूबियत *का कोई गुण नहीं पाया जाता,अल्लाह तआ़ला ने उन्हें नूर;आलोकद्ध से पैदा फरमाया है,उनके अंदर अपना आदेष मानने का संपूर्ण गुण और उसको लागू करने की संपूर्ण* शक्ति *रखी है,अल्लाह का कथन है:*

﴿لَّا يَعۡصُونَ ٱللَّهَ مَآ أَمَرَهُمۡ وَيَفۡعَلُونَ مَا يُؤۡمَرُونَ ٦﴾ [التحريم: ٦]

अर्थातःजो आदेष अल्लाह तआ़ला देता है उसका अवज्ञा नहीं करते बल्कि जो आदेष दिया जाऐ पूरा करते हैं।
अल्लाह ने अधिक फरमाया:

﴿وَمَنْ عِندَهُۥ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِۦ وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ۝١٩ يُسَبِّحُونَ ٱلَّيْلَ وَٱلنَّهَارَ لَا يَفْتُرُونَ ۝٢٠﴾ [الأنبياء: ١٩ – ٢٠]

अर्थातःजो उसके पास हैं वे उसकी पूजा से न सरकषी करते हैं और न थकते हैं।वे दिन–रात तसबीह बयान करते हैं और थोड़ा भी आलस नहीं करते।

देवदूतों की संख्या इतनी अधिक है कि अल्लाह तआ़ला ही उन्हें गिन सकता है,अल्लाह का कथन है:

﴿وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ﴾ [المدثر: ٣١]

अर्थातःतेरे रब के सेनाओं को उसके ऐलावा कोई नहीं जानता।

अर्थातःअल्लाह तआ़ला के ऐलावा कोई उनकी संख्या और घनत्व से अवगत नहीं।

सह़ीहैन;बोखारी एवं मुस्लिमद्ध में ह़ज़रत अनस रज़ीअल्लाहु अंहु से मेराज के घटना में यह उल्लेख है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बैते मामूर तक लेजाया गया,आपने;इसके प्रतिद्ध जिबरईल से पूछा तो उन्हों ने कहाः यह बैते मामूर है,इसमें प्रत्येक दिन सत्तर हजार देवदूत नमाज़ पढ़ते हैं,जब वे इससे बाहर निकलते हैं तो फिर दोबारा उसमें वापस नहीं होते,यही उन्का अंतिम प्रवेष होता है।1;बोखारी 3207 मुस्लिम 164द्ध

- *ऐ मोमिनो! देवदूतों पर ईमान लाने के छह तक़ाज़े हैं:*

प्रथमः उनके अस्तित्व पर ईमान लाना।

द्वितीयः उनसे प्रेम रखना,जो उनसे षत्रुता रखता है वह काफिर है,अल्लाह का कथन है:

﴿ مَن كَانَ عَدُوًّا لِّلَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَرُسُلِهِۦ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَىٰلَ فَإِنَّ ٱللَّهَ عَدُوٌّ لِّلْكَٰفِرِينَ ۝٩٨ ﴾ [البقرة: ٩٨]

अर्थातःजो व्यक्ति अल्लाह का और उसके देवदूतों और उसके रसूलों;संदेषवाहकोंद्ध और जिबरईल और मीकाईल का षत्रु हो,ऐसे काफिरों का षत्रु स्वयं अल्लाह है।

तृतीयःउनमें से जिनके नाम हम जानते हैं,उनपर ईमोन लाना,जैसे जिबरईल,और जिनके नाम से हम अवगत नहीं,उनपर हम पूर्णरूप से ईमान रखते हैं।

चौथाः उनमें से जिनके व्यक्तिगत गुण से हम अवगत हैं,उनपर ईमान लाना,जैसे जिबरईल के गुण/विषेशण जिनके बारे में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सूचना दी कि आपने उन्हें इस गुण के साथ देखा जिसपर उनकी रचना हुई है,उनके छह सो पंख थे जो आकाष के सारे किनारों को घेरे हुऐ थे।2;बोखारी 3232.3233,और मुस्लिम 174.177 ने इब्ने मसऊद रजीअल्लाहु अंहु से वर्णन किया है।द्ध

देवदूत अल्लाह के आदेष से मानवीय रूप भी धारण कर सकता है,जैसा कि जिबरईल अलैहिस्सलाम ने किया,जब अल्लाह तआला ने उन्हें मरयम के पास भेजा तो वह उनके सामने मानवीय रूप में आख़ड़े हूऐ,इसी प्रकार जब ह़ज़रत जिबरईल पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आऐ,जबकि आप अपने सह़ाबा के मध्य विराजमान थे,वह आपके निकट ऐसे व्यक्ति के रूप में आऐ जिसका वस्त्र अत्यंत सफेद और बाल अत्यंत काले थे,उसपर न तो यात्रा के कोई संकेत दिखाई दे रहा था,और न ही कोई सह़ाबी उनको पहचानते थे,यहां तक कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकट जा कर बैठ गऐ,उन्हों ने अपने घुटने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घुटनों से मिला दिया,और अपनी हथेली को आपके जांघों पर रख लिया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस्लाम,ईमान,एहसान,क़ियामत और उसकी निषानियों के प्रति प्रष्न किया और आपने उनकाउत्तरदिया,फिर वे चले गऐ,जब सह़ाबा ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उनके प्रति पूछा तो आपने फरमायाःवह जिबरईल थे,तुम्हें तुम्हारा धर्म सिखाने आऐ थे।3;इस ह़दीस को मुस्लिम9 ने उमर बिन अलख़त्ताब से वर्णित किया है।द्ध

इसी प्रकार वे देवदूत जिनको अल्लाह ने इब्राहीम और लूत़ के पास भेजा था वे भी मनुश्य के रूपमें ही आऐ थे।4;इब्ने ओसैमीन की पुस्तकःषरहो सलासतिल ओसूलःद्ध90.91 से थोड़े हेरफेर के साथ लिया गया है।द्ध

देवदूतों के सरदार ह़ज़रत जिबरईल हैं,वे रचना के गुणों में समस्त देवदूतों से बड़े हैं,अल्लाह ने अपनी पुस्तक में दो ओयतों में उनकी पांच गुणों का उल्लेख किया हैः

﴿إِنَّهُۥ لَقَوۡلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ١٩ ذِي قُوَّةٍ عِندَ ذِي ٱلۡعَرۡشِ مَكِينٍ ٢٠﴾ [سورة التكوير:١٩-٢٠]

अर्थातः वे एक प्रतिश्ठित संदेषवाहक हैं।जो शक्ति वाला है,अ़रष वाले;अल्लाहद्ध के निकट उच्च स्थान है।

इस आयत में अल्लाह ने उनके अच्छे अखलाकों का उल्लेख किया है,उनके अच्छे गुणों का उल्लेख किया है और कहा है कि वह मकीन अर्थात अपने अल्लाह के पास उच्च स्थान रखते हैं|

फिर फरमायाः

﴿مُّطَاعٖ ثَمَّ أَمِينٖ ٢١﴾ [التكوير: ٢١]

अर्थातः जिसकी ;आकाषों मेंद्ध आज्ञा कि जाती है विष्वसनीय है।

अर्थातःसमस्त देवदूत उनकी आज्ञा मानते हैं और वह वह्य के अमीन;रक्षक द्धहैं।

जैसा कि अल्लाह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रति इस कथन में उनको शक्तिशाली जीव बतलाया हैः

﴿عَلَّمَهُۥ شَدِيدُ ٱلْقُوَىٰ ۝٥ ذُو مِرَّةٍ فَٱسْتَوَىٰ ۝٦﴾ [سورة النجم:٥-٦]

अर्थातः उसे अति शक्तिशाली देवदूत ने सिखाया है जो बलवान है फिर वह सीधा खड़ा हो गया।

अर्थात जिसने मोहम्मद को वह्य सिखाई वे जिबरईल हैं,अल्लाह ने उनका यह गुण बताया कि वे शक्तिशाली हैं,अर्थातःआंतरिकएवंबाह्यशक्ति से लैस हैं,अल्लाह के आदेष को लागू करने पर सक्षम हैं,रसूलों तक वह्य पहुंचाने की शक्ति रखते हैं,और इस बात पर भी सक्षम हैं कि वह्य को षैतानों के उचकने से,अथवा उसमें कोई बाह्य चीज षामिल करने से सुरक्षित रखें,यह अल्लाह की ओर से वह्य की सुरक्षा ही है कि उसने ने इस वह्य को इस षक्तिषाली और अमानतदार देवदूत के माध्यम से भेजा।5; देखें उल्लेखित आयतों की व्याख्या षैख अबदूर्रहमान बिन सादी की पुस्तकःतैसीरूलकरीम अर्रहमान फी तफसीरे कलामुलमन्नान में।द्ध

अल्लाह तआला का कथनः(ذُو مِرَّةٍ)में مِرَّة का अर्थः आंतरिक एवं बाह्य *आपदाओं एवं कठिनाईयों से सुरक्षा है,जिससे यह अनिवार्य होजाता है कि वे अपने निर्माण में संपूर्ण और सुंदरता से लैस थे,ये ऐसी शक्ति है जिस में स्वास्थ्य और सुंदरता दोनों षामिल हैं।6;ये* इब्नुलकय्यिम *का कथन हैःएगासतुल्लहफान2/129,षोधःअलफिक्ही मेंद्ध*

देवदुतों पर ईमान लाने का पांचवा तक़ाजा यह है कि हमें उनके जिन नैतिक गुणों का ज्ञान है,उनपर ईमान लाया जाऐ,जैसे हया;लज्जाद्धका गुण,इसका प्रमाण पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस है जो आपने उसमान रजीअल्लाहु अंहु के प्रति फरमायाःक्या में ऐसे व्यक्ति से ह़या न करूं जिससे देवदूत ह़या करते हैं। 7;इसे मुस्लिम/2401 ने आ़यषा रजीअल्लाहु अंहा से वर्णन किया है।द्ध

देवदूत उन चीजों से घृना करते हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला नापसंद फरमाते हैं,अतः वे उस घर में प्रवेष नहीं करते जिसमें कुत्ताअथवा प्रतिमा हो,आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन हैःदेवदूत उस घर में नहीं जाते जिस में कुत्ता हो तथा उसमें भी नहीं जाते जिस में जीवित का प्रतिमा हो8;इसे बोखारीः3225 और मुस्लिम :2106 ने अबू तलहा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णन किया है और उल्लेखित ष्ब्द बोखारी के हैं।द्ध

देवदूतों को उन चीजों से भी दिक्कत होती है जिनसे मनुश्यों को दिक्कत होती है,आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस व्यक्ति को मस्जिद में प्रवेष होने से मना फरमाया जिसने पियाज,अथवा लहसुन,अथवा गंदना खाई हो,अन्य समस्त दुर्गंध चीजों का भी यही आदेष है जैसे सिगरेट, पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन हैःजिसने पियाज,लहसन तथा गंदना खाया हो,वह हरगिज मस्जिद के निकट न आऐ क्योंकि

देवदूत ;भीद्धउन चीजों से तकलीफ महसूस करते हैं जिनसे मनु के संतान तकलीफ महसुस करते हैं9;इसे मुस्लिम:564 ने जाबिर रजीअल्लहु अंहु से वर्णन किया है।द्ध
छटा:अल्लाह तआ़ाला के आदेष से वे देवदूत जो सामान्य और विशेष कार्य करते हैं,उन पर ईमान लाना,सामान्य कार्यों का उदाहरण:अल्लाह की पवित्रता बयान करना और बेगैर किसी उकताहट और आलसा के दिन.रात उसकी पूजा करना,अल्लाह तआ़ाला उनके प्रति फरमाता है:

﴿ فَٱلتَّٰلِيَٰتِ ذِكۡرًا ٣ ﴾ [الصافات: ٣]

अर्थात: फिर उनकी जो जिक्र का पाठ करने वाले हैं।
उनमें से कुछ देवदूतों के कुछ विशेष कार्य हैं,जैसे जिबरईल अमीन जो वह्यके लिऐ नियुक्त हैं,उन्हें अल्लाह तआ़ाला वह्य ले कर पैगंबरों व रसूलों के पास भेजते हैं,यह भी संभव है कि अन्य देवदूत भी वह्य का कोई भाग ले कर भेजे जाऐं,अल्लाह का कथन है:

﴿فَٱلۡمُلۡقِيَٰتِ ذِكۡرًا ٥ عُذۡرًا أَوۡ نُذۡرًا ٦﴾ [المرسلات: ٥ – ٦]

अर्थात: वह्य लाने वाले देवदूतों की कसम!जो;वह्यद्ध आरोप उतारने अथवा अवगत करदेने के लिऐ होती है।
अर्थात:वे देवदूत पैगंबरों पर जिक्र;अल्लाह का वह्यद्धउतारते हैं ताकि वे–इसके प्रचार के माध्यम–बहाने को समाप्त करदें,अथवा डराऐं।
देवदूतों में एक उदाहरण मीकाईल भी हैं जो वर्शा बरसाने पर नियुक्त हैं।10;यह एक ह़दीस में आया है जिसे नेसाई ने ®अलसोनन अलकुबरा¤9024 में और अह़मद:1/274 ने इब्ने अब्बस रजीअल्लहु अंहु से रिवायत किया है और ®अलमुस्नद¤ के षाधकर्ताओं ने इसे ह़सन कहा है।द्ध
देवदूतों में इसी प्रकार वे देवदूत भी जो सूर फूंकने पर नियक्त हैं, प्रसिद्ध है कि उनका नाम इसराफील है,सूर का मतलब वो सूर है जिसमें फूंक मारा जाऐगा,जैसा कि ह़दीस में आया है,यह उस समय होगा जब कयामत होगी और लोग कबरों से उठ खाड़े होंगे।
यह तीन सबसे बड़े देवदूत हैं,और तीनों ऐसी चीज पर नियुक्त हैं जिसमें जीवन है,इस प्रकार जिबरईल वह्य पर नियुक्त हैं जिसमें ह्रदय का जीवन है,मीकाईल वर्शा पर नियुक्त हैं जिसमें पृथ्वी का जीवन है,और इसराफील सूर फूंकने पर नियुक्त हैं,जिससे कयामत के दिन;मृत्यु द्धषवों में जीवन लौट आऐगी।
एक देवदूत मलेकुलमौत हैं,जो आत्मा निकालने पर नियुक्त होते हैं,अल्लाह तआ़ाला का कथन है:

﴿قُلْ يَتَوَفَّىٰكُم مَّلَكُ ٱلْمَوْتِ ٱلَّذِى وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ﴿١١﴾﴾ [السجدة: ١١]

अथर्तःकह दिजीऐ!कि तुम्हें मौत का देवदूत फना करदेगा जो तुम पर नियुक्त किया गया है फिर तुम सब अपने रब की ओर लौटाऐ जाओगे।

मलेकुलमौत को इज़राईल का नाम देना कुरान व ह़दीस से प्रमानित नहीं है,बल्कि कुरान में उनको मलेकुलमौत से पूकारना प्रमानित है जैसा कि उपरोक्त*आयत में आया है।*

मलेकुलमौत के कुछ सहायक देवदूत भी हैं,अल्लाह का कथन है:

﴿وَهُوَ ٱلْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِۦ ۖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَ أَحَدَكُمُ ٱلْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ ﴿٦١﴾﴾ [الأنعام: ٦١]

अर्थातःवही अपने दासों के ऊपर*प्रभावी है उच्च है और तुम पर संरक्षक को भेजता है यहां तक कि जब तुम से किसी का मृत्यु हो जाता है,उसकी आत्मा हमारे भेजे हूऐ देवदूत निकाल लेते हैं और वह थोड़ा भी आलसा नहीं करते।इस आयत में (رُسُلُنَا) का मतलब देवदूत हैं,और यही देवदूत मलेकुलमौत के सहायक हैं,और अल्लाह के कथन (لَا يُفَرِّطُونَ) का अर्थ यह है कि उन्हें जो काम व कर्तव्य दिया गया है,उसमें आलसा नहीं करते।*

कुछ देवदूत ऐसे हैं जो पृथ्वी में घूमते रहते हैं,वे ज्ञान व जिक्र के सभा की खोज में रहते हैं,जब ज्ञान एवं जिक्र का कोई सभा उन्हें मिलता है तो वे एक.दूसरे को आवाज देते हैं और उस सभा में बैठ जाते हैं और सभा वालों को अपने पंखों से ढांप लेते हैं।11;देखें:सही बोखारी:6408 और सही मुस्लिम:2689।द्ब

कुछ देवदूतों को मां के कोख में पलने वाले बच्चों पर नियुक्त किया गया है,जब बच्चा मां के कोख में चार महीने का हो जाता है तो उस समय अल्लाह तआला उसके पास एक देवदूत को भेजता है और उसे आदेष देता है कि वह उसकी रोजी,मौत,कर्म और उसका अच्छा अथवा बुरा होना लिख डाले।12;देखें:सही बोखारी:3208 और सही मुस्लिम:2643 जिसे इब्नेमसऊद*ने रिवायत किया है।द्ब*

कुछ देवदूतों को मनुश्य के कार्यों को सुरक्षित करने और उन्हें लिखने पर नियुक्त किया गया है,प्रत्येक व्यक्ति*के साथ दो देवदूत होते हैं,एक उसके दाऐं और दूसरा उसके बाऐं,जैसा कि अल्लाह का कथन है:*

﴿إِذْ يَتَلَقَّى ٱلْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ ٱلْيَمِينِ وَعَنِ ٱلشِّمَالِ قَعِيدٌ ﴿١٧﴾ مَّا يَلْفِظُ مِن قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ﴿١٨﴾﴾ [ق: ١٧ – ١٨]

अर्थातः जिस समय दो लेने वाले जालेते हैं एक दाऐं ओर और एक बाऐं ओर बैठा हुआ है।मूंह से कोई षब्द निकाल नहीं पाता मगर उसके पास संरक्षक तैयार है। अल्लाह ने अधिक फरमायाः

﴿وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ ۝ كِرَامًا كَاتِبِينَ ۝ يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ۝﴾ [الانفطار: ١٠ – ١٢]

अर्थातः निसंदेह तुम पर संरक्षक सम्मान वाले लिखने वाले नियुक्त हैं जो कुछ तुम करते हो वे जानते हैं।

कुछ देवदूतों का काम यह है कि जब षव को क़बर में रखा जाता है तो वह उससे प्रष्न करते हैं,वह उससे उसके रब,धर्म और नबी के प्रति प्रष्न करते हैं।13;देखेंःअनस बिन मालिक से वर्णित बोखारी की ह़दीसः1374।द्ध

कुछ देवदूत ऐसे हैं जो स्वर्ग वासियों के सेवा के लिऐ नियुक्त हैं,अल्लाह तआ़ला स्वर्ग वासियों के प्रति फरमाता हैः

﴿ وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِم مِّن كُلِّ بَابٍ ۝ سَلَامٌ عَلَيْكُم بِمَا صَبَرْتُمْ ۚ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ۝ ﴾ [الرعد: ٢٣ – ٢٤]

अर्थातःउनके पास देवदूत प्रत्येक दरवाजे से आऐंगे।कहेंगे कि तुम पर षांति हो,धैर्य के बदले,किया ही अच्छा ;बदलाद्ध है इस आखेरत का।

कुछ देवदूत नरक पे नियुक्त हैं,उनके सरदार का नाम मालिक है जो नरक का दरोगा है,अल्लाह नरक वासियों के भाशे में फरमाते हैंः

﴿وَنَادَوْا يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ قَالَ إِنَّكُم مَّاكِثُونَ ۝﴾ [الزخرف: ٧٧]

अर्थातःवे पूकार कर कहैंगे कि ऐ मालिकःतेरा रब हमारा काम ही तमाम करदे,वह कहेगा कि तुम्हें तो;सवैदद्ध रहना है।

एक देवदूत पहाड़ों पर भी नियुक्त हैं,जो पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास उस समय आऐ जब आप को अपने समुदाय से अत्यंत दुख पहुंची,फिर आपसे कहाःयदि आप चाहैं तो मक्का के दोनों ओर जो पहाड़ हैं उन पर रख दूं पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः;नहींद्ध बल्कि में आषा करता हूं कि अल्लाह तआ़ला इन के वंष से ऐसे लोगों को पैदा करेगा जो केवल अकेला अल्लाह की पूजा करेंगे और उसके साथ किसी को साझी नहीं करेंगे।14;बोखारीः 3231 और मुस्लिम :1795 ने आयषा रजीअल्लाहु अंहा से वर्णन किया है।द्ध

कुछ देवदूत बादलों को हांकने पर नियुक्त हैं जो उन्हें अल्लाह के ऐरादे के अनूसार;एक स्थान से दूसरे स्थान की ओरद्ध हांकते रहते हैं,अल्लाह का कथन हैः

(فَالزَّاجِرَاتِ زَجْرًا)

अर्थातःसंपूर्ण रूप से डांटने;बादलों को हांकनेद्धवालों की ;कसम! द्ध।

देवदूत मोमिनों;विष्वासियोंद्ध से प्रेम करते,उनके लिऐ क्षमा की प्रार्थना करते हैं,अल्लाह तआ़ला अ़रष को उठाने वाले देवदूतों के प्रति फरमाता हैः

﴿ٱلَّذِينَ يَحۡمِلُونَ ٱلۡعَرۡشَ وَمَنۡ حَوۡلَهُۥ يُسَبِّحُونَ بِحَمۡدِ رَبِّهِمۡ وَيُؤۡمِنُونَ بِهِۦ وَيَسۡتَغۡفِرُونَ لِلَّذِينَ ءَامَنُواْۖ رَبَّنَا وَسِعۡتَ كُلَّ شَيۡءٖ رَّحۡمَةٗ وَعِلۡمٗا فَٱغۡفِرۡ لِلَّذِينَ تَابُواْ وَٱتَّبَعُواْ سَبِيلَكَ وَقِهِمۡ عَذَابَ ٱلۡجَحِيمِ ۝٧ رَبَّنَا وَأَدۡخِلۡهُمۡ جَنَّٰتِ عَدۡنٍ ٱلَّتِي وَعَدتَّهُمۡ وَمَن صَلَحَ مِنۡ ءَابَآئِهِمۡ وَأَزۡوَٰجِهِمۡ وَذُرِّيَّٰتِهِمۡۚ إِنَّكَ أَنتَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ ۝٨ وَقِهِمُ ٱلسَّيِّـَٔاتِۚ وَمَن تَقِ ٱلسَّيِّـَٔاتِ يَوۡمَئِذٖ فَقَدۡ رَحِمۡتَهُۥۚ وَذَٰلِكَ هُوَ ٱلۡفَوۡزُ ٱلۡعَظِيمُ ۝٩﴾ [غافر: ٧ – ٩]

अर्थातःअ़रष के उठाने वाले और उसके आस पास के ;देवदूतद्धअपने रब की तसबीह प्रषंसा के साथ साथ करते हैं और उस पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों के लिऐ क्षमा प्राप्त करते हैं,कहते हैं कि ऐ हमारे रब!तू ने हर चीज को अपने क्षमा और ज्ञान से घेरे रखा है,अतः तू उन्हें क्षमा प्रदान कर जो तौबा करें और तेरे मार्ग पर चलें और तू उन्हें नरक की यातना से बचाले।ऐ हमारे रब!तू उन्हें सवेद वाले स्वर्ग में लेजा जिन का तूने उनसे वादा किया है और उनके बाप दादाओं और पत्नियों और संतानों में से ;भीद्धउन;सबद्धको जो पुण्य के कार्य किये हैं।निसंदेह तू तो प्रबल व बुद्धिमत्ता वाला है।उन्हें पापों से भी सुरक्षित रख,सत्य तो यह है कि उस दिन तूने जिसे पापों से बचा लिया उस पर तूने कृपा करदी और बहुत बड़ी सफलता तो यही है।

देवदूत उस व्यक्ति के लिऐ क्षमा का प्रार्थना करते हैं जो मस्जिद में नमाज का इंतजार कर रहा होता है,वे कहते हैंःऐ अल्लाह!इसे क्षमा प्रदान कर,ऐ अल्लाह इसपर कृपा फरमा।15;इसे अबूदाऊदः *469,तिरमिजीः330,इब्ने माजाः799,ने अबूहोरैरा रजीअल्लहु अंहु से रिवायत किया है और अल्बानी रहिमहुल्लाह ने इसे सही कहा है।द्ध*

देवदूत उस व्यक्ति *के लिऐ भी क्षमा और कृपा की प्रार्थना करते हैं जो मस्जिद के अंदर प्रथम सफों में नमाज़ पढ़ते हैं,जैसा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन हैःऽअल्लाह तअ़ला प्रथम सफों में आने वालों पर कृपा नाजिल करता है और देवदूत उनके लिऐ प्रार्थना करते हैं* अर्थात वे उनके लिए *क्षमा और कृपा की प्रार्थना करते हैं ऽ16;इस ह़दीस को* अबूदाऊद*:674,नेसाईः646,और इब्ने माजाः997 ने बरा बिनआ़जिब रजीअल्लहु अंहु से रिवायत किया है और अल्बानी रहिमहुल्लाह ने इसे सह़ी कहा है।द्ध*

देवदूत उनके लिऐ भी प्रार्थना करते हैं जो लोगों को पुण्य व कलयाण का षिक्षा देते हैं,अबू अमामा बाहेली रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःऽअल्लाह और उसके देवदूत और आकाष और पृथ्वी वाले यहां तक कि चूंटियॉ अपने बिलों में और मछलियॉ उस व्यक्ति *के लिऐ जोपुण्य एवं कलयाण का षिक्षा देता है,अच्छाई व बरकत का प्रार्थना करती हैंऽ17;सोनन तिरमिजीः2685द्ध*

देवदूत उस व्यक्ति पर श्राप भेजते हैं जो अपने मुसलमान भाई पर लोहे का कोई हथियार उठाता है,अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि अबूलक़ासिम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः॰जिसने अपने भाई की ओर लोहे के किसी हथियार से ईषारा किया तो उस पर देवदूत श्राप भेजते रहते हैं यहां तक कि वह उस काम को छोड़दे,चाहे वह उसके सगा भाई ही क्यों न हो॰18;मुस्लिमः2616द्ध

देवदूत मोमिनों के साथ फज्र की नमाज़ में उपस्थित होते हैंः

﴿وَقُرْءَانَ ٱلْفَجْرِ ۖ إِنَّ قُرْءَانَ ٱلْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ﴿٧٨﴾﴾ [الإسراء: ٧٨]

अर्थातः फज्र का कुरान;पढ़द्ध।निसंदेह फज्र के समय का कुरान पढ़ना उपस्थित किया गया है।

कुराने फज्र का अर्थ नमाजे फज्र है,इसे कुरान इस लिऐ कहा गया है कि उसमें अन्य नमाज़ों की तुलना में लंबी तेलावत करना मषरू ;धार्मिक़द्ध है,तथा इस नमाज़ में की जाने वाली तेलावत का महत्व भी अधिक है,क्योंकि इस नमाज़ में रात और दिन के देवदूत जमा होते हैं।19;यह षैख इब्ने सादी रहिमहुल्लाह ने अपनी व्याख्या में लिखा है,जिसे संक्षेप और हेरफेर के साथ यहां उल्लेख किया गया है.।द्ध

सारांष यह कि देवदूतों को अल्लाह ने संसार के कार्यों की तदबीर;संचालनद्ध के लिऐ जिन कार्यों का भार दिया है,वे उन्हें पूरा करते हैं,इसी लिऐ अल्लाह तआ़ला ने देवदूतों को संदेषवाहक व रसूल का नाम दिया है,क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें जिन कर्तव्यों के साथ भेजा है,वे उन्हें पूरा करते हैं,अल्लाह तआ़ला सुरह फातिर में फरमाता हैः

﴿ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ جَاعِلِ ٱلْمَلَٰٓئِكَةِ رُسُلًا أُو۟لِىٓ أَجْنِحَةٍ﴾ [فاطر: ١]

अर्थातः समस्त प्रषंसाऐं उस अल्लाह के लिऐ पात्र हैं जो ;सर्वप्रथमद्धआकाषों एवं पृथ्वी को पैदा करने वाला है और पंखों वाले देवदूतों को अपना संदेषवाहक बनाने वाला है।

ज्ञात हुआ कि देवदूतों को वह्य के साथ,आत्मा निकालने के लिऐ,हवाओं और बादलों को मोसख्खर–अर्थात उन्हें हांकने–के लिऐ और मनु के संतानों के कार्यों को लिखने और उन जैसे अन्य कार्यों को पूरा करने के लिऐ भेजा जाता है।

इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाह लिखते हैंःदेवदूतों का मामला बड़ा उच्च है,वे संसार की तदबीर करने के लिऐ अल्लाह के भेजे हुऐ संदेषवाहक हैं,जैसा कि अल्लाह तआ़ला का कथन हैः

﴿فَٱلْمُدَبِّرَٰتِ أَمْرًا ﴿٥﴾﴾ [النازعات: ٥]

अर्थातःफिर काम की तदबीर करने वालों की क़सम!

तथा फरमायाः

﴿فَٱلۡمُقَسِّمَٰتِ أَمۡرًا ۝٤﴾ [الذاريات: ٤]

अर्थातःफिर काम को बांटने वालियां।

अल्लाह तआ़ला ने अपनी पुस्तकों में देवदूतों से संबंधित एतनी सूचनाऐं और एतने प्रकारों का उल्लेख किया है कि उन सब को यहां पर लिखना संभव नही,किंतु उनकी नीषानियां संसार के अंदर मौजूद हैं।20;अलजवाब अलसही लेमन बददला दीनल मसीहः6 / 25.26द्ध

देवदूतों और उनके कार्यों व कर्त्वयों की महानता ही है कि अल्लाह ने उनकी क़सम खाते हुऐ फरमायाः ﴿فَٱلۡمُدَبِّرَٰتِ أَمۡرًا ۝٥﴾ यह आयत उनकी महानता व श्रेश्ठता का प्रमाण है।

कुछ देवदूत ऐसे हैं जो सवेद अल्लाह तआ़ला की पूजा में लगे रहते हैं,आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन हैःﬂनिसंदेह आकाष चरचरा रहा है और उसे चरचराने का अधिकार भी है,इसलिऐ कि उसमें चार ऊंगलीका भी स्थान खाली नहीं है,मगर कोई न कोई देवदूत अपनी पैषानी अल्लाह के दरबार में रखे हूआ है‹21;इसे तिरमिजीः2312,इब्ने माजाः4190,अह़मदः5 / 173 ने वर्णन किया है और अल्बानी ने ﬂअलसही‹1722 में और ''अलमुस्नद'' के षोधकर्ताओं ने ह़सन कहा है।द्ध

मोमिन के लिऐ चिंता का स्थान है कि आकाष एतना विषाल होने के बावजूद पूजारी देवदूतों के लिऐ कम पड़ रही है,पवित्र है वह महान अल्लाह।22;इस विष्य पर अधिक विस्तृत ज्ञान के लिऐ इब्ने अबी अलउज़ ह़नफी ने देवदूतों पर ईमान के अध्याय में अपनी पुस्तकﬂषरहुल अकीदा अलतहावीया‹पृश्ठ संख्या 299.301,प्रकाषकःअलमकतब अलइस्लामी,बैरूत,के अंदर जो बातें लिखी हैं,उन्हें पढ़ें।द्ध

देवदूतों पर ईमान लाने के संबंध से यह मौलिक बातें थीं जो अपके सामने प्रस्तुत की गईं,अल्लाह तआ़ला हमें और आप को कुरान मजीद की बरकतों से माला.माल करे,मुझे और आपको उसकी आयतों और पाज्ञता;बुद्धिमत्ताद्ध
पर आधारित प्रामर्षों से लाभ पहुंचाऐ,में अपनी यह बात कहतें हूऐ अल्लाह तआ़ला से अपने लिऐ और आप सब के लिऐ समस्त पापों से क्षमा की प्रार्थना करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति तौबा स्वीकारने वाला और अति क्षमा प्रदान करने वाला है।

द्वितीय उपदेषः

الحمد لله وكفى، وصلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد:

जान लीजिऐ–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि देवदूतों पर ईमान लाने के बड़े लाभ हैं,जिन में से कुछ यह हैं: 23; यह अध्याय इब्ने ओसैमीन की पुस्तक"षरहो ओसूलिस्सलासा"से हलके हेरफेर के साथ उल्लेख किया गया हैद्ध

प्रथमःअल्लाह तआ़ला की महानता व शक्तिऔर प्रभुत्व व साम्राज्य का ज्ञान,क्योंकि जीव की महानता,रचनाकार सर्वोच्च अल्लाह तआ़ला की महानता पर साक्ष्य होता है।

द्वितीयःमनु के संतानों के प्रति अल्लाह का प्रदान एवं कृपा पर उसका आभार होना,क्योंकि उसने कुछ देवदूतों को उनकी सुरक्षा करने,उनके कार्यों को लिखने और उनके अन्य नीतियों का पालन करने पर नियुक्तकर रखा है।

तृतीयःदेवदूत जिस प्रकार अल्लाह तआ़ला की पूजा करते हैं,उस पर उनसे प्रेम रखना। इसके अतिरिक्तआप यह भी जानलें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि नेक व आज्ञाकारी मनु के संतान देवदूतों से अधिक उच्च हैं,यह अहले सुन्नत व अलजमाअत का कथन है,क्योंकि मनु के संतान के अंदर स्वाभाविक रूपसे काम.वासना रखी गई है जिससे वह तुलना करता और उस पर लगाम लगाता है,उसके अंदर नफसे अम्मारह;बुरा भाव द्धहै जो पाप का आदेष देता है,उस''की रगों में''षैतान दौड़ता है जो उसे बहकाता रहता है,देवदूतों के विपरीत,क्योंकि उनके स्वभाव में यह रखा गया है कि वे अल्लाह का आज्ञा मानें और उसके आदेष पर डटे रहें,षैतान उन्हें पराजित नहीं कर सकता,इस लिऐ मनु के संतानों में से जो व्यक्तिअल्लाह के आज्ञा पर स्थिर रहे और अपने आप पर काबू रखे वह देवदूतों से अधिक अच्छा है।

अथवा यह भी जान लें कि षाबान के महीने के रोज़े रखना अधिक मुसतहब है,आयषा रजीअल्लाहु अंहा से वर्णित है:"पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नफली रोज़े एतना अधिक रखते थे कि हम कहतेःअब आप कभी रोज़ा नहीं छोड़ेंगे और जब छोड़ देते तो हमें ऐसा लगता कि अब आप कभी नहीं रखेंगे,और मेंने सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रमज़ान के अतिरिक्तकसी और महीने के पूरे रोज़े रखते हूऐ नहीं देखा।और मेंने आपको षाबान से अधिक कसी और महीने में नफली रोज़े रखते हूऐ नहीं देखा"24;बोखारी 1833,मुस्लिम 1956।द्ध

ह़ज़रत ओसामा बिन ज़ैद रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि मेंने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहाःऐ अल्लाह के रसूल!मेंने आपको किसी महीने में एतने रोज़े रखते नहीं देखा जेतने आप षाबान में रखते हैं।"क्या कारण है?"आपने फरमायाः"यह वह महीना है कि रजब और रमज़ान के मध्य आने के कारण से लोग इससे गाफिल रहजाते हैं,जब्कि यह वह महीना है कि इसमें अल्लाह के यहां मनुश्यों के कार्य प्रस्तुत किये जाते हैं।में चाहता हूं कि मेरे कार्य;आमालद्धप्रस्तुत हों तो में रोज़े से रहूं"25;इसे

अह़मदः 5/201 आदि ने रिवायत किया है और ‹अलमुसनद›के षोधकर्ताओं नेः12752 इसे ह़सन कहा है।)

- *आप यह भी जान लें–अल्लाह आप पर अपनी कृपा नाज़िल कर–कि अल्लाह तआ़ला ने आपको एक बड़ी चीज का आदेष दिया है,अल्लाह का कथन हैः*

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [الأحزاب: ٥٦]

अर्थातःअल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन हैः›तुम्हारे सबसे अचछे दिनों में से षुक्रवार का दिन है,उसी दिन मनु पैदा किये गऐ,उसी दिन उनकी आत्मा निकाली गई,उसी दिन सूर फूंका जाएगा,26 ;अर्थात सूर में दूसरी बार फूंक मारा जाएगा,इस्का मतलब वह सूर है जिसमें इसराफील फूंक मारेंगे,यह वह देवदूत हैं जिनको सूर में फूंक मारने पर नियुक्तकिया गया है,जिसके पष्चात समस्त मुर्दे अपनी कबरों से उठ खड़े होंगे।) उसी दिन चीख होगी,27;अर्थात जिससे दुनियावी जीवन के अंत में लोग बेहोष होकर गिर पड़ेंगे और सब के सब मर जाऐंगे,यह बेहोषी उस समय उत्पन्न होगी जब सूर में बहली बार फूंक मारा जाऐगा,दो फूंक के मध्य में चालीस साल का अंतर होगा)।इसलिऐ तुमलोग उस दिन मुझ पर अधिक से अधिक दरूद भेजा करो,क्योंकि तुम्हारा दरूद मुझ पर प्रस्तुत किया जाता है› ।28;इसे नेसाईः1373, अबूदाऊदः1047,इब्ने माजाः1085 और अह़मः 4/8 ने रिवायत किया है और अल्बानी ने सहीअबूदाऊदमें और मुस्नद के षोधकर्ताओं ने''ह़दीसः16162 ''के अंतर्गत इसे सह़ी कहा है।)

ए अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेषवाहक मोह़म्माद पर रह़मत एवं षांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़यामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिश्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के षत्रुओं को नश्ट करदे,और अपने एकेष्वरवादी बंदों की सहायता फरमा।

हे अल्लाह हमारे इमामों और हमारे हाकिमों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेषक और हिदायत पर चलने वाला बना।हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम षासकों को अपनी पुस्तक लागू करने और अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक प्रदान कर, उन्हें उनके प्रजाओं के लिऐ रह़मत बना दे।हे अल्लाह!हर जगह मुसलमानों की स्थिती सही करदे।हे

अल्लाह तू उनपर होने वाले पीड़ाओं एवं कठिनाइयों को दूर फरमादे,हे अल्लाह!तू हमसे महामारी को दूर करदे,निसंदेह हम मुसलमान हैं।हे प्रवर्दिगाा!हमें दुनिया में नेकी दे और आखेरत में अच्छाई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين

शीर्षक: आकाशीय पुस्तकों पर ईमान

إن الحمد لله نحمده، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रशंसाओं के पश्चात!ए मुसलमानों!में आप लोगों को और स्वयं को अल्लाह का तक़्वा अपनाने की वसीयत करता हूं और अल्लाह का यह आदेश समस्त पूर्व एवं पश्चात के लिए है।अल्लाह का कथन है:

﴿وَلَقَدْ وَصَّيْنَا ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَٰبَ مِن قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنِ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ﴾ [سورة النساء:١٣١]

अर्थात:"और निसंदेह हमने उन लोगों को जो तुम से पूर्व पुस्तक दिए थे और तुमको भी यही आदेश किया है कि अल्लाह से डरते रहो"

अल्लाह का तक़्वा(धर्मनिष्ठा) अपनाओ और उससे डरते रहो,उसकी आज्ञाकारिता करो और उसके अवज्ञा से बचो,जानलो कि आकाशीय पुस्तकों पर ईमान लाना इस्लाम धर्म के सिद्धांतों एवं नियमों का मौलिक भाग है और ईमान का तृतीय स्तंभ है और अल्लाह तआ़ला ने अपने जीव जंतुओं पर कृपा करते हुए और उनके मार्गदर्शन के लिए प्रत्येक संदेशवाहकों के साथ एक पुस्तक भेजी ताकि वह दुनिया एवं आखिरत की शुभकामनाओं को प्राप्त कर सकें,अल्लाह का कथन है:

﴿لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِٱلْبَيِّنَٰتِ وَأَنزَلْنَا مَعَهُمُ ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْمِيزَانَ﴾ [الحديد: ٢٥]

अर्थात:"निसंदेह हमने अपने संदेशवाहकों को स्पष्ट प्रमाण देकर भेजा और उनके साथ पुस्तक और मीज़ान(तराजु)नाजिल फरमाया"।

- निसंदेह अल्लाह तआ़ला ने नाजिल की गई समस्त पुस्तकों पर ईमान लाने को वाजिब(अनिवार्य) कर दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿قُولُوٓا۟ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَآ أُنزِلَ إِلَىٰٓ إِبْرَٰهِـۧمَ وَإِسْمَٰعِيلَ وَإِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ وَٱلْأَسْبَاطِ وَمَآ أُوتِىَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَآ أُوتِىَ ٱلنَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُۥ مُسْلِمُونَ ﴿١٣٦﴾﴾ [البقرة: ١٣٦]

अर्थातः"ए मुसलमानो!तुम कहो कि हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस चीज पर जो हमारी ओर उतारी गई और जो चीज इब्राहीम,इस्माईल,इस्हा़क़,याकू़ब (अलैहिमुस्सलाम),और उनके संतानों पर उतारी गई,और जो कुछ अल्लाह की ओर से मूसा एवं ईसा(अलैहिमास्सलाम) और अन्य संदेशवाहकों(अलैहिमुस्सलाम) को दिए गए,हम उनमें से किसी के बीच कोई अंतर नहीं करते और हम अल्लाह के आज्ञाकारी हैं।"

- **ए मोमिनों!पुस्तकों पर ईमान लाना सात मामलों पर निर्मित हैः**(इब्ने ओसेमीन रहीमहुल्लाह की पुस्तक"शरहो सलासते अलउसूल"पृष्ठः94 को देखें।)

प्रथमःइस बात पर ईमान लाना कि अल्लाह की ओर से जो पुस्तकें नाजिल कि गई हैं वे सत्य हैं जैसा कि अल्लाह ने मोमिनों के गुण बताते हुए कहा हैः

﴿ ءَامَنَ ٱلرَّسُولُ بِمَآ أُنزِلَ إِلَيۡهِ مِن رَّبِّهِۦ وَٱلۡمُؤۡمِنُونَۚ كُلٌّ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ ﴾ [البقرة: ٢٨٥]

अर्थातः"रसूल ईमान लाया उस चीज पर जो अल्लाह की ओर से उसकी ओर उतरी और मोमिन भी ईमान लाए,यह सब अल्लाह तआ़ला,उसके देवदूतों,उसकी पुस्तकों और उसके संदेशवाहकों पर ईमान लाए।"

पुस्तकें वह्य के माध्यम से नाजिल होती थीं,निसंदेह अल्लाह तआ़ला ने आकाश से धर्ती पर वह्य लाने के लिए विशेष देवदूत को पुस्तकों की वह्य की और वह जिबरईल अलैहिस्सलाम हैं।फिर जिबरईल अलैहिस्सलाम ने प्रत्येक संदेशवाहक को उनकी विशेष पुस्तक वह्य की।

2.पुस्तकों पर ईमान लाने में जो चीज़ें शामिल हैं उनमें दूसरी चीज यह है कि उन पस्तकों पर ईमान लाना जिन के नाम हमें मालूम हैं,और वह छे हैंःइब्राहीम व मूसा के गग्रथों,तौरैत जो मूसा अलैहिस्सलाम पर नाजिल हुई,इन्जील जो ईसा अलैहिस्सलाम पर नाजिल हुआ,ज़बूर जो ईसा अलैहिस्सलाम को दिया गया और कुरान जो मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाजिल हुआ।कुछ विद्धानों का कहना है कि मूसा के गग्रथ का मतलब तौरात है,तो प्रकार पांच हो जाएंगे।और रही वे पुस्तकें जिन के नामों का उल्लेख नहीं आया है तो उन पर हम पूर्ण रूप से ईमान लाते हैं।

3.**तीसरी वह चीज जो पुस्तकों पर ईमान लाने में शामिल है वह यह** कि पैगंबरों पर नाजिल कि हुई असल पुस्तकों पर ईमान लाना,न कि उन पुस्तकों पर जिन में हैरफैर कर दी गई। उदाहरण स्वरूप हम उस तौरात पर ईमान लाते हैं जो अल्लाह तआ़ला ने मूसा अलैहिस्सलाम पर नाजिल फरमाई और उस इन्जील पर ईमान लाते हैं जो मसीह़ ईसा बिन मरयम अलैहिमस्सलाम पर नाजिल फरमाई अतः यही असल तौरात और असल इन्जील है,और जो

पुस्तकें अभी यहूदी एवं ईसाई के हाथों में हैं वे असली तौरात एवं इन्जील नहीं हैं जो अल्लाह तआ़ला ने मूसा और ईसा अलैहिमस्सलाम पर नाजिल पर नाजिल फरमाईं,अगरचे उनलोगों ने उन पुस्तकों के नाम भी वही रख दिए,बल्कि अहले किताब(यहूदी एवं ईसाई)के हाथों में अभी जो पुस्तकें हैं वे उन लोगो के लेख हैं जिनको उन्होंने अपने से पूर्व लोगों से सुन रखा है और उनमें कुछ सही और कुछ बातें गलत हैं।फिर बाद के लोगों ने उन लेखों को असली तौरात और इन्जील की ओर संबंधित करदिया है।फिर वर्षों तक लोगों ने इसी आस्था को माना अतः यह लोग स्वयं भी गुमराह हुए और दुसरों को भी गुमराह किया हालांकि निश्चित रूप से यह असली तौरात और इन्जील नहीं हैं और जब पूर्व के पैगंबरों की पुस्तकें बेकार होगईं और सुरक्षित न रह सकीं तो अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहिस्सलाम को पवित्र कुरान के साथ भेजा और इसको हैरफैर और नष्ट होने से अचा सुरक्षित रखा जैसा कि अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا ٱلذِّكۡرَ وَإِنَّا لَهُۥ لَحَٰفِظُونَ ۝٩﴾ [الحجر: ٩]

अर्थातः"हमने ही इस कुरान को नाज़िल किया और हम ही इसके रक्षक हैं।"

(इस आयत में)जिक्र का मतलब कुरान ही है।

4.**चौथी चीज जो पस्तकोंपर ईमान लाने को शामिल है वह यह** कि जो भी सूचना और जानकारी उन पुस्तकों में आई हैं उनको सत्य जाना जाए,जैसा कि कुरान की सूचना और जानकारी इसी प्रकार पूर्व की पुस्तकों की वे जानकारियां जो हैरफैर से सुरक्षित हैं और रही बात कि जिस के सत्य अथवा झूट होने की गवाही कुरान और सुन्नत ने नहीं दी है तो हम न उसे सत्य कहते हैं और न झूट,मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसलाम की इस ह़दीस पर अ़मल करते हुए कि:"जो कुछ अहले किताब(यहूद व ईसाई)तुम्हें बतलाऐं उनको सच्चा अथवा झूटा मत कहो और कहो कि हम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाचुके हैं।अतःयदी उनकी बात गलत होगी तो तुमने उसकी पुष्टि नहीं की और यदी सच होगी तो तुमने उसको नहीं झुटलाया"(इसको अबूदाऊद:3644 ने अबू नमला अंसारी रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है और शोऐब अरनाऊत ने सोनन के अनुसंधान में इसे ह़सन कहा है,और इसकी असल बोखारी:4485 के नजदीक अबू होरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है।)

5.**पंचवी चीज जोपुस्तकों पर ईमान लाने का भाग है वह यह** कि उन पुस्तकों के जो आदेश और निदेश मनसूख(निरस्त) नहीं हुए हैं उन पर अ़मल किया जाए,जैसा कि अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿يُرِيدُ ٱللَّهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمۡ وَيَهۡدِيَكُمۡ سُنَنَ ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ وَيَتُوبَ عَلَيۡكُمۡ﴾ [النساء: ٢٦]

अर्थातः"अल्लाह तआ़ला चाहता है कि तुम्हारे लिए खूब खोल कर बयान करे और तुम्हें तुमसे पूर्व के (नेक)लोगों के मार्ग पर चालाए और तुम्हारी तौबा स्वीकार करे,और अल्लाह तआ़ला जनने वाला हि़कमत वाला है"

अल्लाह ने अधिक फरमायाः

﴿أُوْلَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ هَدَى ٱللَّهُۖ فَبِهُدَىٰهُمُ ٱقۡتَدِهۡ﴾ [الأنعام: ٩٠]

अर्थातः"जिनको अल्लाह ने हिदायत की थी,तो आप भी उन्हीं के मार्ग पर चलये"

इन आदेश में केसास(बदला)के भी निर्देश हैं,जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने तौरात के बारे में फरमायाः

﴿وَكَتَبۡنَا عَلَيۡهِمۡ فِيهَآ أَنَّ ٱلنَّفۡسَ بِٱلنَّفۡسِ وَٱلۡعَيۡنَ بِٱلۡعَيۡنِ وَٱلۡأَنفَ بِٱلۡأَنفِ وَٱلۡأُذُنَ بِٱلۡأُذُنِ وَٱلسِّنَّ بِٱلسِّنِّ وَٱلۡجُرُوحَ قِصَاصٞ﴾ [المائدة: ٤٥]

अर्थातःऔर हमने यहूदियों के जिम्मे(तौरात में)यह बात निश्चय करदी थी कि प्राण के बदले प्राण और आंख के बदले आंख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत और विशेष घावों का भी बदला है।

यह एक ऐसा आदेश जिस पर हमारे धर्म में अ़मल किया जाता है क्योंकि हमारे धर्म इसके विरुद्ध नहीं आया,और न ही यह निरस्त हुआ है।

6.**छटी चीज जोपस्तकों पर ईमान लाने को शामिल है**,वह यह कि इस बात पर ईमान लाना कि समस्त पुस्तकें केवल और केवल एक आस्था की ओर बोलाती हैं और वह तौही़द(एकेश्वरवाद)है जो तीन प्रकार के हैंः1तौही़द उलूहियत 2 तौही़द रुबूबियत 3 तौही़द असमा व सिफात।

7.सातवीं चीज जो पुस्तकों पर **ईमान लाने का भाग है वह यह** कि इस बात पर ईमान लाना कुरान पाक पूर्व के समस्त पुस्तकों पर हाकिम है और वह समस्त पुस्तकों का सुरक्षक है,पूर्ण रूप से पूर्व की समस्त पुस्तकें पवित्र कुरान के माध्यम से निरस्त हो चूकी हैं।अल्लाह तआ़ला का फरमान हैः

﴿وَأَنزَلۡنَآ إِلَيۡكَ ٱلۡكِتَٰبَ بِٱلۡحَقِّ مُصَدِّقٗا لِّمَا بَيۡنَ يَدَيۡهِ مِنَ ٱلۡكِتَٰبِ وَمُهَيۡمِنًا عَلَيۡهِۖ﴾ [المائدة: ٤٨]

अर्थातःऔर हमने आप की ओर सत्य के साथ यह पुस्तक नाजिल की है जो अपने से पूर्व की पूस्तकों की पुष्टि करने वाली है और उनकी सुरक्षक है।

अर्थात कुरान पाक समस्त पुस्तकों पर हाकिम है,और इस निरसन से आसथा और वे समस्त चीजें अपवाद हैं जिनको कुरान एवं सुन्नत ने प्रमानित किया है जैसा कि गुजर चूका है।

इब्ने तैमिया रह़िमहुल्लाह ने फरमायाः"इसी प्रकार पवित्र कुरान है इसलिए अल्लाह और क़्यामत के प्रति पूर्व की पुस्तकों में जो सूचना आई हुई हैउनको प्रमानित माना है और अति स्पष्ट और विसतार से उनका उल्लेख किया है,और उन बातों पर स्पष्ट प्रमाण और साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं।इसी प्रकार समस्त पैगंबरों की पैगंबरी और संदेशवाहकों की संदेशवाहन को माना है साथ ही उन समस्त शरीअ़तों का भी संक्षेप रूप में इकरार किया है जिनके साथ संदेशवाहक भेजे गए,और विभिन्य प्रमाणों एव स्पष्ट साक्ष्यों के माध्यम से संदेशवाहकों और पुस्तकों के झुटलाने वालों से वाद-विवाद किया है। इसी प्रकार अल्लाह ने उनके लिए जो दण्ड तै किए हैं और पुस्तकों के अनुगमन करने वालों के लिए अल्लाह का जो सहयोग है उनका भी उल्लेख किया है, और उन पुस्तकों में जो हेरफैर हुआ है और यहूद एवं ईसाई ने पूर्व की पुस्तकों के साथ जो करतूत किए हैं उनका उल्लेख भी किया है,इसी प्रकार अल्लाह के जिन आदेशों को उन लोगों ने छिपाया था उनका भी उल्लेख किया है।और प्रत्येक उस अति सूक्ष्म मार्ग एवं शरीअ़त का उल्लेख किया है जिनको अंबिया अलैहिमस्सलाम ले कर आए और जिनके साथ कुरान भी नाज़िल किया गया।अतःकुरान को अनेक दृष्टिकोण से पूर्व की पुस्तकों पर प्राथमिकता प्राप्त हुई।यह उन पुस्तकों के सत्य होने पर गवाह है और उन पुस्तकों में जो हेरफैर हुईं उनके झूटे होने पर गवाह है और अल्लाह ने उन पुस्तकों के जिन अहकाम को प्रमाणित माना है उपके लिए यह निर्णय है और जिन अह़काम को अल्लाह ने निरस्त कर दिया है उनका निरसन करने वाला है और यह खबरों का भी गवाह है और
अवामिर(आदेशों)का आदेश देने वाला भी है"(मजमूउलफतावाः17/44।) समाप्त हुआ।

उन्होंने और फरमायाः"और रहा कुरान तो यह एक स्वायत्तशासी पुस्तक है इसके मानने वालों को किसी और पुस्तक की आवश्यकता नहीं।यह पुस्तक पूर्व के समस्त पुस्तकों के गुणों का संग्रह है और तथा अनेक एसे गुणों पर निर्मित है जो अन्य पुस्तकों में नहीं हैं।इसी लिए यह पुस्तक पूर्व के समस्त पुस्तकों की पुष्टि करने वाली है और उन सब पर हावी है।पूर्व की पुस्तकों में मोजूद सत्य को प्रमाणित करती है और उनमें जो उलट-फैर हुई है उन का खण्डन करदेती है और अल्लाह ने जिन अह़काम को निरस्त कर दिया है उनको निरस्त करती है इस प्रकार यह सत्य धर्म को प्रमाणित करती है जो कि पूर्व की पुस्तकों का प्रमुख भाग है,तथा यह पुस्तक उस बदले हुए धर्म को असत्य कर देती है जो उन पुस्तकों में नहीं था और बहुत कम एसी बातें हैं जो उन पुस्तकों में निरस्त की गईं हैं,अतः प्रमाणित और ठोस के तुलना में निरस्त अह़काम बहुत कम हैं।"समाप्त हुआ।(मजमूउलफतावाः19/184-185)

- **ए मुसलमानो!आकाशीय पुस्तकें छे बातों पर सहमत हैं:**

1.**समस्त पुस्तकें एक ही चीजओर बोलाती हैं और वह है** केवल अल्लाह की पूजा करना और उसके सेवा सब की पूजा को छोड़ देना,अगरचे वे प्रमेश्वर मूरत हों,व्यक्ति हों,पैगंबर हों,पत्थर हों अथवा उनके अतीरिक्त कुछ और हों।इस प्रकार से अंबिया अलैहिमस्सलाम का धर्म एक ही है केवल अल्लाह की प्रार्थना करना।

2.**द्वितीय चीज जिसपर समस्त आकाशीय पुस्तकेंसहमत हैं वह है** आस्था के सिद्धांतों पर ईमान लाना और वह है अल्लाह पर,देवदूतों पर,पुस्तकों पर,संदेशवाहकों पर,आखिरत के दिन पर और भहग्य के अच्छे अथवा बुरे होने पर ईमान लाना।

3.**तृतीय वह चीज जिस पर आकाशीयपुस्तक सहमतहैं वह यह** कि विशेष प्रार्थनाओं के माध्यम से अल्लाह की प्रार्थना को वाजिब मानना,जैसे नमाज़,रोजा और ह़ज़ किंतु कुछ प्रार्थनाऐं बजालाने के रूप के लेहाज से उन लोगों के हिसाब से एक दूजे से अलग हैं जिनकी ओर वह नबी भेजेगए,उदाहरण स्वरूप तौरात नमाज का आदेश देती है उसी प्रकार इन्जील और कुरान में भी यह आदेश आया है किंतु नमाज की गुणवक्ता और उसको बजालाने का समय तीनों धर्मों में भिन्य भिन्य है।इसी प्रकार रोजा़ आदि के प्रति भी यही बात कही जाती है।

जहां तक शरीअ़त के विस्तृत अह़काम(आदेश)की बात है तो सामान रूप से समस्त पुस्तकें इस बारे में सहमत है किंतु कभी-कभी वह अल्लाह तआ़ला की ह़िकमत(नीति)और उसके अधिकार के तकाजे के अनुसार विस्तृत रूप से विभिन्य होते है(क्योंकि अल्लाह तआ़ला वही इखतियार करता है जिसे वह)अपने बंदों के लिए उचित समझता है जिनके लिए वह शरीअ़त गठन की गई है,जैसाकि अल्लाह ने फरमाया:

﴿وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ مَا كَانَ لَهُمُ ٱلْخِيَرَةُ﴾ [القصص: ٦٨]

अर्थात:"और आपका रब जो चाहता है पैदा करता है और जिसे चाहता है चुन लेता है,उनमें से किसी को कोई अधिकार नहीं"

और फरमाया:

﴿لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا﴾ [المائدة: ٤٨]

अर्थात":तुम मे से हमने प्रत्येक के लिए कानून और मार्ग निश्चत कर दिया है"।

इसलिए है कुछ शुद्ध भोजन जिनको अल्लाह तआ़ला ने मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत के लिए वैध कर रखा है,जब्कि कुछ शुद्ध भोजन अल्लाह तआ़ला ने

अपनी हिकमत(नीति)और इच्छा के आधार पर बनी इस्राईल पर अवैध कर दिया था जब्कि वे पहले वैध थे,अल्लाह का कथन है:

﴿فَبِظُلۡمٖ مِّنَ ٱلَّذِينَ هَادُواْ حَرَّمۡنَا عَلَيۡهِمۡ طَيِّبَٰتٍ أُحِلَّتۡ لَهُمۡ وَبِصَدِّهِمۡ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ كَثِيرٗا ١٦٠﴾ [النساء: ١٦٠]

अर्थात:"जो सुहावना चीजें उनके लिए वैध की गई थीं वे हमने उन पर अवैध करदीं उनके अत्याचार के कारण और अल्लाह तआ़ला के मार्ग से अधिकांश लोगों को रोकने के कारण"

4.**चौथी वह चीज जिस पर समस्त आकाशीय पुस्तकें सहमत हैं**वह है न्याय का आदेश,अल्लाह का कथन है:

﴿لَقَدۡ أَرۡسَلۡنَا رُسُلَنَا بِٱلۡبَيِّنَٰتِ وَأَنزَلۡنَا مَعَهُمُ ٱلۡكِتَٰبَ وَٱلۡمِيزَانَ لِيَقُومَ ٱلنَّاسُ بِٱلۡقِسۡطِ﴾ [الحديد: ٢٥]

अर्थात:निसंदेह हमने अपने पैगंबरों को स्पष्ट प्रमाणों को देकर भेजा और उनके साथ पुस्तक और तराजु नाजिल फरमाया ताकि लोग **न्याय**पर जमे रहैं।

5.**पांचवी वह चीज जिस पर समस्तआकाशीय पुस्तकेंसहमत हैं** वह है सुंदर नैतिकता का आदेश और बुरे चरित्र से रोक।उदाहरण स्वरूप समस्त पुस्तकें माता.पिता के साथ सुंदर व्यवहार,परिजनों के साथ अच्छे संबंध रखना,अतिथियों का सम्मान,गरीबों एवं मिसकीनों के साथ दया और मधु भाषा बोलना आदि का आदेश देती हैं।इसी प्रकार पापों से रोकती हैं जैसे अत्याचार,सरकशी,माता.पिता का अवज्ञा,किसी के सम्मान के साथ खेलवाड़,चुगली करना,झूट और चोरी आदि।

यह कुछ बातें थीं जो आकाशीय पुस्तकों पर ईमान लाने से संबंधित लाभदायक प्राक्कथन की तरह हैं।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुरान मजीद की बरकत से माला.माल करे,हिकमत और प्रामर्श पर आधारित क़ुरानी आयतों के माध्यम से हमें लाभ पहुंचाए।में अपनी यह बात कहते हुए अपने लिए और आप सब के लिए अल्लाह के दरबार में प्रत्येक प्रकार के पापों से क्षमा प्राप्त करता हूं।आप लोग भी अल्लाह से क्षमा प्राप्त करें।निसंदेह वह बहुत अधिक तौबा स्वीकारने वाला और अति क्षमा प्रदान करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمدلله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى أما بعد!

जान लें-अल्लाह आप पर कृपा करे-कि अल्लाह तआ़ला ने अपनी पुस्तक में उल्लेख किया है कि आकाशीय पुस्तकों में से सबसे महत्वपूर्व पुस्तक दो हैं:तौरात एवं क़ुरान।क़ुरान मजीद

में अनेक एसे स्थान हैं जहां इन दोनों पुस्तकों का उल्लेख एक साथ आया है क्योंकि यह दोनों श्रेष्ठतर पुस्तकें हैं और इन दोनों की शरीअ़त सबसे पूर्ण शरीअ़ते हैं।(यह कथन शैख अबदुर्रह़मान बिन सादी रहीमहुल्लाह का है जो उन्होंने अपनी तफसीर के अंदर सूरह अलईसरा की व्याख्या में उल्लेख किया है।)

- ए अल्लाह के बंदो!निसंदेह क़ुरान करीम सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक है।इसी कारण से इसको अन्य आकाशीय पुस्तकों पर अल्लाह ने सरदारी एवं वरिष्ठता प्रदान किया है और इस पुस्तक में वे मोजेज़ा(चमत्कार),बयान,ज्ञयान मौजूद है जो अन्य पुस्तकों में नहीं है।
- क़ुरान मजीद अल्लाह का कलाम है जिस के माध्यम से अल्लाह तआ़ला ने सत्य में वार्ता किया,फिर इसको जिबरईल नामक देवदूत ने पैगंबर सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लाम तक पहुंचाया,फिर इसे सीनों में सुरक्षित किया गया,फिर इसे पत्तों और कागजों पर सुरक्षित किया गया,फिर इसे खलीफा.ए.राशिद ह़ज़रत उसमान बिन अ़फ्फान रजीअल्लाहु अंहु के साशन काल में एक पुस्तक में जमा किया गया,फिर इसी प्रति को आधार बना कर आज तक प्रतिलिपि करके पेति तैयार किए गए।अल्लाह ने सत्य फरमायाः

﴿إِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا ٱلذِّكۡرَ وَإِنَّا لَهُۥ لَحَٰفِظُونَ ۝٩﴾ [الحجر: ٩]

अर्थातः"हमने ही इस **क़ुरान** को नाजिल किया और हम ही इस के रक्षक हैं"।

- ए मुसलमानों!सबसे अंतिम पुस्तक जो कि क़ुरान मजीदहै [1] इसको नाजिल करने की अल्लाह तआ़ला ने कुछ ह़िकमतें(नितीयां) बतलाई हैं,उन नितीयों में से एक निती क़ुरान की आयतों में विचार करना है ताकि बुद्धिमानों को इससे प्रामर्श प्राप्त हो और उनके अंदर तक़वा(ईश्वर भक्ति)भी पैदा हो,इसका प्रमाण अल्लाह का कथन है:

﴿كِتَٰبٌ أَنزَلۡنَٰهُ إِلَيۡكَ مُبَٰرَكٞ لِّيَدَّبَّرُوٓاْ ءَايَٰتِهِۦ وَلِيَتَذَكَّرَ أُوْلُواْ ٱلۡأَلۡبَٰبِ ۝٢٩﴾ [سورة ص:٢٩]

अर्थातः"यह बरकत वाली पुस्तक है जिसे हमने आप की ओर इस लिए नाजिल किया कि लोग **इसकी आयतों पर विचार करें,और बुद्धिमान इससे प्रामर्श प्राप्त करें"**

---

[1](यह भाग मेंने"अज़वाउलबयान" (أضواء البيان)में सूरह साद(ص)की आयत ﴿كِتَٰبٌ أَنزَلۡنَٰهُ إِلَيۡكَ مُبَٰرَكٞ لِّيَدَّبَّرُوٓاْ ءَايَٰتِهِۦ وَلِيَتَذَكَّرَ أُوْلُواْ ٱلۡأَلۡبَٰبِ ۝٢٩﴾ व्याख्या से लिया है।

अल्लाह ने और फरमाया:

﴿وَكَذَٰلِكَ أَنزَلْنَٰهُ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا وَصَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ ٱلْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾﴾ [طه: ١١٣]

अर्थातः"इसी प्रकार हमनें तुझ पर अ़रबी कुरान नाजिल फरमाया है और तरह तरह से इसमें डर का उल्लेख किया है **ताकि लोग प्रहेजगार बन जाऐं** अथवा उनके दिल में **सोच समझ** को पैदा किरे"।

कुरान करीम को नाजिल करने के पीछे अल्लाह की एक ह़िकमत(निती)यह भी है:प्रहेजगारों को पुण्य की खुशखबरी देना और खण्डन अथवा इन्कार करने वालों को यातना की धमकी देना।अल्लाह का कथन:

﴿فَإِنَّمَا يَسَّرْنَٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ ٱلْمُتَّقِينَ وَتُنذِرَ بِهِۦ قَوْمًا لُّدًّا ﴿٩٧﴾﴾ [مريم: ٩٧]

अर्थातः"हमने इस कुरान को तेरे भाषा में बहुत ही सरल कर दिया है कि तू इसके माध्यम से **प्रहेजगारों को खुशखबरी** दे और झगड़ालू लोगों को **डरा** दे।"

कुरान मजीद को नाजिल करने में अल्लाह की एक ह़िकमत(निती)यह भी है:धार्मिक आदेशों को लोगों के लिए बयान करना।अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿وَأَنزَلْنَآ إِلَيْكَ ٱلذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٤﴾﴾ [النحل: ٤٤]

अर्थातः"यह जिक्र(पुस्तक)हमने आप की ओर उतारा है कि लोगों की ओर नाजिल फरमाया गया है आप इसे खोल खोल कर बयान करदें,शायद कि वे चिंता करें"

और अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿وَمَآ أَنزَلْنَا عَلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ إِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ ٱلَّذِى ٱخْتَلَفُوا۟ فِيهِ﴾ [النحل: ٦٤]

अर्थात":इस पुस्तक को हमने आप पर इस लिए उतारा है कि **आप उनके लिए हर उस चीज को स्पष्ट करदें जिस में वे विरोध कर रहे हैं"**

कुरान करीम को नाजिल करने में अल्लाह की एक ह़िकमत(निती)यह भी है:मोमिनों का ईमान और हिदायत पर स्थिर रखना,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

﴿قُلْ نَزَّلَهُۥ رُوحُ ٱلْقُدُسِ مِن رَّبِّكَ بِٱلْحَقِّ لِيُثَبِّتَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿١٠٢﴾﴾ [النحل: ١٠٢]

अर्थात":कह दिजिए कि इसे आपके रब की ओर से जिबरईल सत्य के साथ ले कर आए हैं **ताकि ईमान वालों को अल्लाह तआ़ला स्थिरता प्रदान फरमाए** और मुसलमानों के निदेशन और खुशखबरी हो जाए"

क़ुरान को नाजिल करने में अल्लाह की एक ह़िकमत(निती)यह भी है:लोगों के मध्य क़ुरान के माध्यम से निर्णय करना,अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿إِنَّآ أَنزَلْنَآ إِلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ بِٱلْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ ٱلنَّاسِ بِمَآ أَرَىٰكَ ٱللَّهُ﴾ [النساء: ١٠٥]

अर्थात:"निसंदेह हमने तुम्हारी ओर सत्य के साथ अपनी पुस्तक नाजिल फरमाई है ताकि तुम लोगों में इस चीज के अनुसार **निर्णय करो** जिसे अल्लाह ने तुमको दिखलाया है और ख्यानत करने वालों के सहयोगी न बनो"।

अर्थात:इन ज्ञानों के माध्यम से जो अल्लाह तआ़ला ने इस क़ुरान में आप को सिखाया है।

- आप यह भी जान लें-अल्लाह आप पर कृपा करे-कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़ी चीज का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّ ۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ صَلُّوا۟ عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا۟ تَسْلِيمًا ﴿٥٦﴾﴾ [الأحزاب: ٥٦]

अर्थात:अल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

हे अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्माद पर रह़मत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़ेयामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

- हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट करदे,और अपने एकेश्वरवादी बंदों की सहायता फरमा।
- हे अल्लाह तू हमें हमारे देशों में शांति प्रदान कर,हमारे इमामों और हमारे हाकिमों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक और हिदायत पर चलने वाला बना।

- हे अल्लाह! समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के लिए रह़मत का कारण बना।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भलाई अता फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

शीर्षक: संदेशवाहकों पर ईमान लाने के तक़ाज़े १/२

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

प्रशंसाओं के पश्चात!
सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त(नवाचार)है और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

1.ए मुस्लमानों!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने ह्रदय में जीवित रखो,उसकी अज्ञाकारिता करो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जान लो कि बंदों के प्रति अल्लाह का कृपा ही है कि उसने उनकी ओर संदेशवाहक भेजे ताकि उनकी धार्मिक एवं संसारिक मामलों में जो चीजें उनके लिए लाभदायक हैं,उनका ज्ञान उन तक पहुंचाऐं,उन्हें संसार की अच्छाई एवं आखिरत की मोक्ष का मार्ग दिखाऐं,क्योंकि मनुष्यिों के पास चाहे जितना भी ज्ञान एवं बुद्धिमत्ता हो उनकी बुद्धि ऐसी संयुक्त एवं सामान्य शरीअ़त तक पहुंच प्राप्त नहीं कर सकतीं जिससे उम्मत के समस्त मामले ठीक रूप से संपन हो सकें,क्योंकि मनुष्य की बुद्धि अधूरी हैं,किंतु अल्लाह तआ़ला निती रखने वाला एवं अवज्ञत है और वह अपने जीवों की आवश्यकता से अति अवज्ञत है,अल्लाह का कथन है:

﴿أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ ٱللَّطِيفُ ٱلْخَبِيرُ ۝١٤﴾ [سورة الملك:١٤]

अर्थात:क्या वही न जाने जिसने पैदा किया?फिर वह बरीकबीं और अवज्ञत भी हो।

अत:संदेशवाहक अल्लाह और जीव के मध्य अल्लाह के धर्म को पहुंचाने के लिए दूत और माध्यम हैं,अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿۞ يَٰٓأَيُّهَا ٱلرَّسُولُ بَلِّغْ مَآ أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ﴾ [سورة المائدة:٦٧]

अर्थात: ए संदेशवाक जो कुछ भी आप की ओर आपके रब की ओर से नाज़िल किया गया है, पहुंचा दें।

संदेशवाहकों का स्थान इस प्रकार उच्च था इस लिए उनपर ईमान लाना समस्त शरीअ़तों में धर्म का महत्वपुर्ण स्तंभ रहा,इस्लामी शरीअ़त में भी उनका यही स्थान है,जो यह सुनिश्चित करती है कि संदेशवाहकों पर ईमान लाना ईमान का एक स्तंभ **है**,और इसके बिना बंदे का ईमान सही नहीं हो सकता,अल्लाह का कथन है:

﴿ءَامَنَ ٱلرَّسُولُ بِمَآ أُنزِلَ إِلَيۡهِ مِن رَّبِّهِۦ وَٱلۡمُؤۡمِنُونَۚ كُلٌّ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ لَا نُفَرِّقُ بَيۡنَ أَحَدٖ مِّن رُّسُلِهِۦۚ﴾ [سورة البقرة:٢٨٥]

अर्थातः संदेशवाहक ईमान लाया उस चीज पर जो उसकी ओर अल्लाह की ओर से उतरी और मोमिन भी ईमान लाए,यह सब अल्लाह तआ़ला और उसके देवदूतों पर और उसकी पुस्तकों पर और उसके संदेशवाहकों पर ईमान लाए, उसके संदेशवाहकों में से किसी में हम भेद भाव नहीं करते।

2.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह भी है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि नूह़ अलैहिस्सलाम सबसे प्रथम संदेशवाहक हैं, अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّآ أَوۡحَيۡنَآ إِلَيۡكَ كَمَآ أَوۡحَيۡنَآ إِلَىٰ نُوحٖ وَٱلنَّبِيِّـۧنَ مِنۢ بَعۡدِهِۦۚ﴾ [سورة النساء:١٦٣]

अर्थातः निसंदेह हमने आपकी ओर उसी प्रकार वह़्य की है जैसे कि नूह़ (अलैहिस्सलाम) और उनके पश्चात के पैगंबरों की ओर की।

अनस बिन मालिक रजीअल्लाहु अंहु से अनुशंसा वाली ह़दीस में वर्णित है कि लोग(क़्यामत के दिन) मनु के पास आएंगे ताकि वह अनुशंसा करें,किंतु वह क्षमा चाहते हुऐ कहेंगे:नूह़ के पास जाओ,क्योंकि वह सर्वप्रथम संदेशवाहक हैं जिनको अल्लाह तआ़ला ने धरती पर भेजा।[1]

3.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाज़ा यह है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि मोह़म्मद सल्लाहु अलैहि वसल्लम सबसे अंतिम संदेशवाहक और नबी हैं, अल्लाह का कथन है:

﴿مَّا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَآ أَحَدٖ مِّن رِّجَالِكُمۡ وَلَٰكِن رَّسُولَ ٱللَّهِ وَخَاتَمَ ٱلنَّبِيِّـۧنَۗ﴾ [سورة الأحزاب:٤٠]

[1] इसे बोखारी:4476 और मुस्लिम:193 ने वर्णित किया है,मुस्लिम के श्बद यह हैं:और वे लोग नूह़ अलैहिस्सलाम के पास आएंगे और कहेंगे:ए नूह़ आप धरती पर भेजे जाने वाले सर्वप्रथम संदेशवाहक हैं.......।

अर्थातः तुम्हारे पुरूषों में से किसी के पिता मोह़म्मद नहीं,किंतु आप अल्लाह तआ़ला के संदेशवाहक हैं और समस्त पैगंबरों के समाप्त करने वाले हैं।

4.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि प्रत्येक समुदाय में अल्लाह ने कोई न कोई संदेशवाहक भेजा जो अपने समुदाय की ओर स्थायी शरीअ़त ले कर भेजे गए,अर्थात नबी भेजा जिनकी ओर उनसे पूर्व की शरीअ़त वह़्य की गई ताकि वह पूर्णरूपेन इसका प्रचार व प्रसार करें,अल्लाह का कथन है:

﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ﴾ [سورة النحل:٣٦]

अर्थातः हमने प्रत्येक उम्मह में संदेशवहक भेजा कि (लोगो!) केवल अल्लाह की पूजा करो और उसके अतिरिक्त समस्त देवताओं से बचो।

अल्लाह ने अधिक फरमायाः

﴿وَإِن مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ﴾ [سورة فاطر:٢٤]

अर्थातः कोई उम्मह एसी नहीं हुई जिसमें कोई डर सुनाने वाला न गुजरा हो।

5.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि संदेशवाहकों की शरीअ़तें यधापि विभिन्य थीं किंतु उनकी दावत एक थी,वह है तौह़ीदे उलूहियत की दावत,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ﴿٢٥﴾﴾ [سورة الأنبياء:٢٥]

अर्थातः तुझसे पूर्व जो संदेशवाहक हमने भेजा उसकी ओर यही वह़्य नाज़िल फरमाई कि मेरे अतिरिक्त कोई सत्य प्रमेश्वर नहीं,तुम सब मेरी ही पूजा करो।

अल्लाह ने अधिक फरमायाः

﴿لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا﴾ [سورة المائدة:٤٨]

अर्थातः तुममें से प्रत्येक के लिए हमने एक नियम और एक मार्ग स्थिर कर दिया है।

6.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि संदेशवाहक भी मनुष्य थे जिनका अल्लाह तआ़ला ने संदेशवाहन के लिए चयन किया,उन्हें संदेशवाहन के कर्तव्य को पूरा करने और इस मार्ग में आने वाली

कठिनाइयों पर धैर्य रखने की क्षमता प्रदान की,विशेस रूप से उूलूलअ़ज़्म संदेशवाहकों को इसका विशेस गुण प्रदान किया,अल्लाह का कथन हैः

﴿ٱللَّهُ يَصۡطَفِي مِنَ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةِ رُسُلٗا وَمِنَ ٱلنَّاسِۚ﴾ [سورة الحج:٧٥]

अर्थातःदेवदूतों में से और मनुष्यों में से संदेश पहुंचाने वालों को अल्लाह ही चयन कर लेता है।

7.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह भी है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि संदेशवाहक भी मनुष्य एवं जीव हैं,उनके अंदर रूबूबियत एवं उूलूहियत की कोई विशेषता नहीं पाई जाती,अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी मोह़म्माद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाया,जो कि समस्त संदेशवाहकों के सरदार और अल्लाह के निकट उनमें सबसे महान स्थान एवं सर्वोच्च स्थान पर स्थिर थेः

﴿قُل لَّآ أَمۡلِكُ لِنَفۡسِي نَفۡعٗا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَآءَ ٱللَّهُۚ وَلَوۡ كُنتُ أَعۡلَمُ ٱلۡغَيۡبَ لَٱسۡتَكۡثَرۡتُ مِنَ ٱلۡخَيۡرِ وَمَا مَسَّنِيَ ٱلسُّوٓءُۚ إِنۡ أَنَا۠ إِلَّا نَذِيرٞ وَبَشِيرٞ لِّقَوۡمٖ يُؤۡمِنُونَ ۝١٨٨﴾ [سورة الأعراف:١٨٨]

अर्थातः आप फरमा दें कि में स्वयं अपने आपके लिए किसी लाभ का अथवा हानी की शक्ति नहीं रखता,किंतु इतना ही जितना कि अल्लाह ने चाहा और यदि में गैब की बात जानता होता तो में अधिक लाभ प्राप्त कर लेता और मुझे कोई हानी नहीं पहुंचता,में तो केवल डराने वाला और शुभ संदेश सुनाने वाला हूं उन लोगों को जो ईमान रखते हैं।

8.संदेशवहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह भी है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि संदेशवाहकों को वे समस्त रोग होते हैं जो मनुष्यों को होते हैं,अर्थात रोगी,मृत्यु,खाने पीने की आवश्यकता आदि।अल्लाह तआ़ला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम के प्रति फरमाया कि उन्होंने अपने रब की विशेषता इस प्रकार बयान फरमाईः

﴿وَٱلَّذِي هُوَ يُطۡعِمُنِي وَيَسۡقِينِ ۝٧٩ وَإِذَا مَرِضۡتُ فَهُوَ يَشۡفِينِ ۝٨٠ وَٱلَّذِي يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحۡيِينِ ۝٨١﴾ [سورة الشعراء:٧٩-٨١]

अर्थातः वही है जो मुझे खिलाता पिलाता है। और जब में रोगी हो जाता हूं तो मुझे स्वास्थ्य प्रदान करता है।और वही मुझे मार डालेगा फिर जिवित करदेगा।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः में भी तुम्हारे जैसा एक मनुष्य हूं जिस प्रकार तुम भूल जाते हो में भी भूल जाता हूं।इस लिए जब में भूल जाऊं तो मूझे याद दिलाया करो।[1]

9.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का तक़ाजा यह भी है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि संदेशवाहक अल्लाह के बंदे हैं, अल्लाह तआला ने अपने चयनित संदेशवाहकों की प्रशंसा करते हुए उन्हें उबूदियत से चित्रित किया, अतः नूह अलैहिस्सलाम के प्रति फरमायाः

अर्थातःवह बड़ा आभार व्यक्त करने वाला बंदा था।

﴿إِنَّهُۥ كَانَ عَبۡدٗا شَكُورٗا ۝٣﴾ [سورة الإسراء:٣]

इब्राहीम, इस्ह़ाक और याकूब अलैहिस्सलाम के प्रति फरमायाः

﴿وَٱذۡكُرۡ عِبَٰدَنَآ إِبۡرَٰهِيمَ وَإِسۡحَٰقَ وَيَعۡقُوبَ أُوْلِي ٱلۡأَيۡدِي وَٱلۡأَبۡصَٰرِ ۝٤٥﴾ [سورة ص:٤٥]

अर्थातःहमारे बंदों इब्राहीम,इसहाक और याकूब(अलैहिस्सलाम)का भी लोगों से उल्लेख करो जो हाथों और आंखों वाले थे।

ईसा बिन मरयम के प्रति फरमायाः

﴿إِنۡ هُوَ إِلَّا عَبۡدٌ أَنۡعَمۡنَا عَلَيۡهِ وَجَعَلۡنَٰهُ مَثَلٗا لِّبَنِيٓ إِسۡرَٰٓءِيلَ ۝٥٩﴾ [سورة الزخرف:٥٩]

अर्थातः ईसा भी केवल बंदे ही थे, जिस पर हमने कृपा किया और उसे बनी इसराईल के लिए एक चिन्ह बना दिया।

और मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रति फरमायाः

﴿تَبَارَكَ ٱلَّذِي نَزَّلَ ٱلۡفُرۡقَانَ عَلَىٰ عَبۡدِهِۦ لِيَكُونَ لِلۡعَٰلَمِينَ نَذِيرًا ۝١﴾ [سورة الفرقان:١]

अर्थातःअति बरकत वाला है वह अल्लाह तिसने अपने बंदे पर फ़ुरक़ान उतारा ताकि वह समस्त लोगों के लिए डराने वाला बन जाए।

ज्ञात हुआ कि समस्त रसूल अल्लाह के बंदे थे, इस लिए उनके लिए किसी भी प्रकार भी पूजा करना वैध नहीं, न ही प्रार्थना करना, न पशू की बली देना, न ही चढावा

[1] इसे बोखारीः401 और मुस्लिमः572 ने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

चढाना और न सजदे जैसी अन्य पूजाएं करना,बल्कि इन समस्त प्रार्थनाओं का पात्र केवल अल्लाह ही है,इस बात पर समस्त आकाशीय शरीअ़तों की एकजुटता एवं एकता है,जैसा कि अल्लाह ने फरमायाः

﴿وَمَآ أَرۡسَلۡنَا مِن قَبۡلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِيٓ إِلَيۡهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعۡبُدُونِ ۝٢٥﴾ [سورة الأنبياء:٢٥]

अर्थातःतुझसे पूर्व जो संदेशवाहक हमने भेजा उसकी ओर यही वह़्य की कि मेरे अतिरिक्त कोई सत्य परमेश्वर नहीं,तुम सब मेरी ही पूजा करो।

- अल्लाह तआ़ला हमें और आप सबको कुरान की बरकतें प्रदान करे,मुझे और आप को इसकी आयतों और ह़िकमत(निती) पर आधारित प्रामर्शों से लाभ पहुचाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सबके लिए क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा करने वाला अति कृपा करने वाला है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد:

10.आप जानलें-अल्लाह आप पर अपनी कृपा नाजिल करे-कि संदेशवाहकों पर ईमान लाने का तक़ाजा यह भी है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि अल्लाह तआ़ला ने कुछ पैगंबरों को कुछ पर प्राथमिकता दी है,अल्लाह का कथन हैः

﴿ وَلَقَدۡ فَضَّلۡنَا بَعۡضَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ عَلَىٰ بَعۡضٍۖ﴾ [سورة الإسراء:٥٥]

अर्थातःहमने कुछ पैगंबरों को कुछ पर प्राथमिक्ता दी है।

समस्त रसूलों में श्रेष्ठतर उलूलअ़ज्म(महत्त्वाकांक्षी)रसूल हैं,उनकी संख्या पांच है,नूह़,इब्राहीम,मूसा,ईसा और मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम,अल्लाह तआ़ला ने कुरान में दो स्थान पर इनका उल्लेख किया है,एक सूरह अह़ज़ाब और दूसरा सूरह शूरा,अल्लाह का कथन हैः

﴿وَإِذۡ أَخَذۡنَا مِنَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ مِيثَٰقَهُمۡ وَمِنكَ وَمِن نُّوحٖ وَإِبۡرَٰهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَى ٱبۡنِ مَرۡيَمَۖ﴾ [سورة الأحزاب:٧]

अर्थातःजबकि हमने समस्त पैगंबरों से वचन लिया और (विशेष रूप से) आपसे और इब्राहीम से,मूसा से और मरयम के बेटे ईसा से।

अल्लाह ने अधिक फरमाया:

﴿ شَرَعَ لَكُم مِّنَ ٱلدِّينِ مَا وَصَّىٰ بِهِۦ نُوحًا وَٱلَّذِىٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِۦٓ إِبْرَٰهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَىٰٓ أَنْ أَقِيمُوا۟ ٱلدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا۟ فِيهِ ﴾ [سورة الشورى:١٣]

अर्थात: अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिए वही धर्म निश्चित कर दिया है जिसको स्थापित करने का उसने नूह़ (अलैहिस्सलाम) को आदेश दिया था और जो (वह्य के माध्यम से) हमने तेरी ओर भेज दी है,और जिसका बलपुर्वक आदेश हमने इब्राहीम और मूसा और ईसा (अलैहिस्सलाम) की दिया था कि उस धर्म को स्थापित रखना और उसमें फूंट न डालना।

- ए मोमिनों!संदेशवाहकों पर ईमान लाने के यह दस तक़ाजे हैं जिनको जानना और उनका ठोस ज्ञान रखना मोमिन पर अनिवार्य है ताकि वे इन तक़ाजो़ं से अवज्ञत रहे और उसके पैर ईमान के मार्ग पर स्थिर रहे,उपदेश के संक्षेप को ध्यान में रखते हुए बाकी दस तक़ाजो़ं पर हम अगले उपदेश में आलोक डालेंगे इनशाअल्लाह।
- आप यह जानलें-अल्लाह आप पर कृपा कर-कि अल्लाह तआ़ला ने आपको यह आदेश दिया है,अल्लाह का फरमान है:

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِىِّ ۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ صَلُّوا۟ عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا۟ تَسْلِيمًا ﴿٥٦﴾ ﴾ [الأحزاب: ٥٦]

अर्थात:अल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

हे अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्माद पर रह़मत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़्यामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

- हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट करदे,और अपने एकेश्वरवादी बंदों की सहायता फरमा।
- हे अल्लाह तू हमें हमारे देशों में शांति प्रदान कर,हमारे इमामों और हमारे हाकिमों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक और हिदायत पर चलने वाला बना।

- हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के प्रति कृपा का कारण बना दे।
- हे अल्लाह!हम तुझसे दुनिया एवं आखिरत की समस्त भलाई की दूआ मांगते हैं,जो हमको मालूम है और जा हमको मालूम नहीं,और हम तेरी शरण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत की समस्त पापों से जा हमको मालूम है और जा हमको मालूम नहीं।
- हे अल्लाह! हम तुझसे स्वर्ग के स्वाली हैं और उस कथन एवं कार्य के भी जो स्वर्ग से निकट करदे,अैर तेरी शरण चाहते हैं नरक से और उस कथन एवं कार्य से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह! हमारे रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान कर,हमारे मृत्युों पर कृपा कर और आज़माइशों से जूझ रहे हमारे भाइयों से आज़माइश को दूर करद।
- हे अल्लाह!हमारे धर्म को सूधार दे जो हमारे मामलों का रक्षक है,हमारी दुनिया को सूधार दे जहां हमारा जीवन गुज़रता है,हमारे आखिरत को दुरुस्त करदे,जो हमारा अंतिम ठेकाना है,प्रत्येक पुण्य के कार्य में हमारे लिए जीवन को बढ़ादे,और मोत को हमारे लिए शांति का वस्तू बना।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भलाई प्रदान कर,और नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।
- ए अल्लाह के बंदो!निसंदेह अल्लाह तआ़ला न्याय का,कलयाण का एवं परिजनों के साथ सुंदर व्यवहार का आदेश देता है और अश्लीलता के कार्यों,अशिष्ट गतिविधियों और कूरता व निर्दयता से रोकता है वह स्वयं तुम्हें प्रामर्श कर रहा है कि प्रामर्श प्राप्त करो।इस लिए तुम अल्लाह शक्तिशाली का जिक्र करो वह तुम्हारा जिक्र करेगा,उसके आशीर्वादों पर उसका आभारी रहो वह तुम्हें और अधिक आशीर्वाद प्रदान करेगा,अल्लाह का जिक्र बहुत बड़ी चीज है,तुम जो कुछ भी करते हो वह उससे अवज्ञत है।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

शीर्षक: संदेशवाहकों पर ईमान के तक़ाज़े: २/२

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِله إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रषंसाओं के पष्चात!
सर्वश्रेश्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुश्टतम चीज़ धर्म में अविश्कारित बिदअ़त;नवाचारद्धहै और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

1.ए मुस्लमानों!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने ह्रदय में जीवित रखो,उसकी अज्ञाकारिता करो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जान लो कि बंदों के प्रति अल्लाह का कृपा ही है कि उसने उनकी ओर संदेषवाहक भेजे ताकि उनकी धार्मिक एवं संसारिक मामलों में जो चीजें उनके लिए लाभदायक हैं,उनका ज्ञान उन तक पहुंचाऐं,उन्हें संसार की अच्छाई एवं आखिरत की मोक्ष का मार्ग दिखाऐं,क्योंकि मनुश्यिों के पास चाहे जितना भी ज्ञान एवं बुद्धिमत्ता हो उनकी बुद्धि ऐसी संयुक्त एवं सामान्य षरीअ़त तक पहुंच प्राप्त नहीं कर सकतीं जिससे उम्मत के समस्त मामले ठीक रूप से संपन हो सकें,क्योंकि मनुश्य की बुद्धि अधूरी हैं,किंतु अल्लाह तआ़ला निती रखने वाला एवं अवज्ञत है और वह अपने जीवों की आवष्यकता से अति अवज्ञत है,अल्लाह का कथन है:

﴿أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۝١٤﴾ [الملك: ١٤]

अर्थातःक्या वही न जाने जिसने पैदा किया?फिर वह बरीकबीं और अवज्ञत भी हो।

अतः संदेषवाहक अल्लाह और जीव के मध्य अल्लाह के धर्म को पहुंचाने के लिए दूत और माध्यम हैं,अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿يَٰٓأَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَآ أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ﴾ [المائدة: ٦٧]

अर्थातःए संदेषवाक जो कुछ भी आप की ओर आपके रब की ओर से नाज़िल किया गया है,पहुंचादें।

संदेषवाहकों का स्थान इस प्रकार उच्च था इस लिए उनपर ईमान लाना समस्त षरीअ़तों में धर्म का महत्वपुर्ण स्तंभ रहा,इस्लामी षरीअ़त में भी उनका यही स्थान है,जो यह सुनिष्चित करती है कि संदेषवाहकों पर ईमान लाना ईमान का एक स्तंभ है,और इसके बिना बंदे का ईमान सही नहीं हो सकता,अल्लाह का कथन है:

﴿ءَامَنَ ٱلرَّسُولُ بِمَآ أُنزِلَ إِلَيۡهِ مِن رَّبِّهِۦ وَٱلۡمُؤۡمِنُونَۚ كُلٌّ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَمَلَٰٓئِكَتِهِۦ وَكُتُبِهِۦ وَرُسُلِهِۦ لَا نُفَرِّقُ بَيۡنَ أَحَدٖ مِّن رُّسُلِهِۦ﴾ [البقرة: ٢٨٥]

अर्थातःसंदेषवाहक ईमान लाया उस चीज पर जो उसकी ओर अल्लाह की ओर से उतरी और मोमिन भी ईमान लाए,यह सब अल्लाह तआ़ला और उसके देवदूतों पर और उसकी पुस्तकों पर और उसके संदेषवाहकों पर ईमान लाए,उसके संदेषवाहकों में से किसी में हम भेद भाव नहीं करते।

2.संदेषवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह भी है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि समस्त संदेषवाहकों में सर्वश्रेश्ठ इब्राहीम खलील और मोहम्मद अलैहिमस्सलाम हैं,क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने इन दोनों अलैहिमस्सलातो वस्सलाम के अतिरिक्त किसी को अपना खलील ;मित्रद्ध नहीं बनाया।

2.संदेषवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि दोनों खलीलों ;मित्रोंद्ध में मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमसर्वश्रेश्ठ हैं,क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने समस्त प्राचीन एवं आधुनिक जीवों एवं समस्त पैगंबरों आदि पर प्राथमिकता प्रदान की,अतःआप उन सब के इमाम और सरदार हैं,जैसा कि मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वयं फरमायाःष्में क़्यामत के दिन समस्त मनु के संतानों का प्रधान रहूंगाष्।[1]

इसके अतिरिक्त अल्लाह तआ़ला ने आपको बहुत सी ऐसी चिन्हें एवं प्रतीकें प्रदान की थीं जो अन्य पैगंबरों के मोजेज़ों;चमत्कारोंद्ध से बढ़ कर थीं,उन चिन्हों एवं प्रतीकों पर सबसे अधिक लोगों ने ईमान लाया,उनमें सबसे बड़ा चिन्ह और सर्वश्रेश्ठ चमत्कार क़ुरान है,यह भी ज्ञात है कि पैगंबरों के चमत्कार उनकी मृत्यु के साथ समाप्त होगए,किन्तु क़ुरान सवेद रहने वाला मोजेज़ा ;चमत्कारद्ध है।

समस्त पैगंबरों पर आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की श्रेश्ठता एवं उच्चता का एक प्रमाण यह भी है कि अल्लाह तआ़ला ने आप के अंदर वे समस्त गुण इकटठा कर दिए जो विभिन्य पैगंबरों को प्रदान किए गए थे,अर्थात मित्रता,वार्तालाप,नबूवत एवं संदेषवाहन,जहां तक मित्रता की बात है.जो कि प्रेम का सर्वोच्च श्रेणी है.तो आप

---

[1]इसे मुस्लिमः2278 ने अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

अल्लाह के खलील ;मित्रद्ध और अल्लाह आपका खलील;मित्रद्धहै,आप इस गुण में इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साझी हैं,आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःष्तुम्हारे साथी ;सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमद्ध को अल्लाह तआला ने अपना खलील ;मित्रद्ध बनाया हैष्[1] अर्थात आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना मत्र बनाया है। इसी प्रकार वार्तालाप,अल्लाह तआला ने मेराज की रात आपसे आकाष पर वार्तालाप किया और आप पर पांच समय की नमाज़ फरज़ की गई,आप इस गुण में मूसा अलैहिस्सलाम के साझी हैं।

रही बात नबूवत एवं संदेषवाहन से आपको चितित्र करने की तो इसका उल्लेख अनेक आयतों में आया है,उदाहरण स्वरूप अल्लाह का यह कथनः

﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلرَّسُولُ بَلِّغۡ مَآ أُنزِلَ إِلَيۡكَ مِن رَّبِّكَ ﴾ [المائدة: ٦٧]

अर्थातः ए रसूल!जो कुछ भी आपकी ओर आपके रब की ओर से नाज़िल किया गया है,पहुंचा दें।

﴿ وَأَرۡسَلۡنَٰكَ لِلنَّاسِ رَسُولٗاۚ ﴾ [النساء: ٧٩]

अर्थातःहमने तुझे समस्त लोगों को संदेष पहुंचाने वाला (रसूल) बना कर भेजा है। यह चार गुण एवं विषेशताएंःमित्रता,वार्तालाप,नबूवत एवं संदेषवाहन,कभी किसी नबी के अंदर इकट्ठा नहीं हूई,केवल हमारे नबी मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के,यह इस बात का प्रमाण है कि आप समस्त पैगंबरों में सर्वश्रेश्ठ हैं।

पैगंबरों के मध्य श्रेश्ठता एवं उच्चता के अध्याय में यह भी एक महत्वपूर्ण बिंदु है कि वे पैगंबर जिनका उल्लेख कुरान में आया है,वे उन पैगंबरों से श्रेश्ठतर हैं जिनकी सूचना कुरान में नहीं दी गई है,इसका कारण कुरान का उच्च स्थान एवं प्रतिश्ठा है,अतः अल्लाह ने कुरान में जिन पैगंबरों का उल्लेख किया है वे उनसे श्रेश्ठतर स्थान एवं प्रतिश्ठा रखते हैं जिनका उल्लेख कुरान में नहीं आया है।

3.संदेषवाहकों पर ईमान लाने का एक तकाजा यह भी है कि बेगैर किसी भेद भाव के समस्त पैगंबरों पर ईमान लाया जाए,इसका विपरीत यह है कि कुछ पैगंबरों पर ईमान लाया जाए और कुछ का खंडण किया जाए,चाहे वह एक नबी ही क्यों न हो,अल्लाह तआला ने समस्त पैगंबरों पर ईमान लाने के अनिवार्यता के प्रति फरमायाः

﴿قُولُوٓاْ ءَامَنَّا بِٱللَّهِ وَمَآ أُنزِلَ إِلَيۡنَا وَمَآ أُنزِلَ إِلَىٰٓ إِبۡرَٰهِـۧمَ وَإِسۡمَٰعِيلَ وَإِسۡحَٰقَ وَيَعۡقُوبَ وَٱلۡأَسۡبَاطِ وَمَآ أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَآ أُوتِيَ ٱلنَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمۡ لَا نُفَرِّقُ بَيۡنَ أَحَدٖ مِّنۡهُمۡ وَنَحۡنُ لَهُۥ مُسۡلِمُونَ ١٣٦﴾ [البقرة: ١٣٦]

[1]इसे मुस्लिमः2383 में इब्ने मसऊद रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

अर्थातः ए मुसलमानो!तुम सब कहो कि हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस चीज पर जा हमारी ओर उतारी गई और जो चीज इब्राहीम,इस्माईल,इस्हाक़ और याक़ूब अलैहिमुस्सलाम और उनके संतान पर उतारी गई और जो कुछ अल्लाह की ओर से मूसा और ईसा अलैहिमस्सलाम और अन्य पैगंबर अलैहिमुस्सलाम को दिए गए।हम उनमें से किसी के मध्य अंतर एवं भेद भाव नहीं करते।हम अल्लाह के आज्ञाकारी हैं।

इब्ने जरीर रह़ीमहुल्लाहु अल्लाह के कथनः ﴿لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ﴾ *हम उनमें से किसी के मध्य अंतर एवं भेद भाव नहीं करतेद्ध की व्याख्या करते हुए लिखते हैंःहम एसा नहीं करते कि कुछ पैगंबरों पर ईमान लाएं और कुछ का इन्कार करें,कुछ पैगंबरों से बराअत व्यक्त करें और कुछ से मित्रता निभाएं,जैसा कि यहूदियों ने ईसा और मोह़म्मद अलैहिमस्सलाम से बराअत व्यक्त की और अन्य पैगंबरों का इकरार किया,और जिस प्रकार नसरानियों ने मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बराअत;मुक्तिद्ध प्रकट की और अन्य पैगंबरों पर ईमान लाया,बल्कि हम उन समस्त के प्रति गवाही देते हैं कि वे अल्लाह के रसूल एवं नबी थे,जो सत्य और हिदायत के साथ भेजे गए थे।समाप्त*

4.संदेषवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह भी है कि उन संदेषवाहकों पर ईमान लाया जाए जिनके नाम कुरान और सत्य ह़दीसों में आए हुए हैं,कुरान में छब्बीस;26द्ध पैगंबरों के नाम आए हैंः आदम, नूह, इब्राहीम, इस्ह़ाक, याक़ूब, इस्माईल, दाऊद, सोलेमान, अय्यूब, इल्यास, यूनुस, यसअ़, लूत़, इदरीस, हूद, षोऐब, सालेह़, ज़ूलकिफल, यूसुफ, मूसा, हारून, खिजर, ज़करया, ईसा और मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

ह़दीस में भी एक नबी का नाम आया है जिनका उल्लेख कुरान में नहीं आया है,वह हैं यूषा बिन नून बिन अफरीहीम बिन यूसुफ बिन याक़ूब बिन इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम खलील अलैहिमुस्सलाम,यह बनी इस्राईल के पैगंबरों में से थे,मूसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु के पष्चात उन्हों ने ही बनी इस्राईल का नतृत्व किया।

सारांष यह कि कुरान एवं ह़दीस में जिन पैगंबरों एवं संदेषवाहकों का उल्लेख आया है उनकी संख्या सत्तइस;27द्ध है।

रही बात उन पैगंबरों की जिनके नाम से अवज्ञत नहीं हैं,तो हम उनपर संपूर्ण रूप से ईमान लाते हैं,कुरान ने अल्लाह के इस कथन में उनकी ओर संकेत दिया हैः

﴿وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ مِنْهُم مَّن قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُم مَّن لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ﴾ [غافر: ٧٨]

अर्थातःनिसंदेह हम आपसे पूर्व भी अनेक संदंषवाहक भेज चुके हैं जिनमें से कुछ के ;वाकेएद्ध हम आपको ब्यान कर चूके हैं और उनमें से कुछ के (किस्स) तो हमने आप को ब्यान ही नही किए।

5.संदेषवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह भी है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि अल्लाह के संदेषवाहकों की संख्या 315 है,उनमें वे संदेषवाहक भी षामिल हैं जिनके नाम स्पश्ट रूप से कुरान एवं ह़दीस में आए हैं,जैसा कि गुजर चूका है,बाकी अन्य संदेषवाहकों के नाम से हम अवज्ञत नहीं,उनकी संख्या का परिसीमन अबू अमामा रजीअल्लाहु अंहु की इस रिवायत से होता है कि एक व्यक्ति ने सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछाःए अल्लाह के रसूल क्या मनु नबी थे?

आपने फरमायाःहां,;अल्लाह नेद्ध आपको ज्ञान दिया और आपसे वार्तालाप किया।

पूछाःउनके और नूह़ के मध्य कितना कालावधि था?

आपने फरमायाःबीस षताब्दी।

पूछ गयाःक्या नूह़ और इब्राहीम के मध्य कितना कालावधि था?

आपने फरमायाःबीस षताब्दी।

सह़ाबा ने पूछाःए अल्लाह के रसूल!रसूल कितने थे?

आपने फरमायाः315 का बड़ा समूह।[1]

6.संदेषवाहकों पर ईमान लाने का तक़ाजा यह भी है कि उनके प्रति जो भी सत्य सूचना प्राप्त हूई है,उसकी पुश्टि कि जाए,उनके किस्सों एवं विषेशताओं पर आधारित सूचनाएं पवित्र कुरान,सुन्नह एवं सीरत व इतिहास की पुस्तकों में आई हूई हैं,रही वे सूचनाएं जो संदेषवाहकों के प्रति अहले किताब;यहूद व इसाईद्ध की पुस्तकों में आई हुई हैं और जिनकी पुश्टि मुसलमानों की पुस्तकों की सत्य रिवायतों से नहीं होती,तो एसी सूचनाओं की पुश्टि एवं खण्डन करना मुसलमान पर अनिवार्य नहीं,हां यदि वे मुसलमानों की सत्य पुस्तकों के विरुध हों तो उस समय उनका खण्डन करना अनीवार्य है,इसका प्रमाण आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह ह़दीस हैःषुम अहले किताब;यहूद व नसाराद्धकी पुश्टि अथवा खण्डन न करो बल्कि यूं कहोःहम अल्लाह पर ईमान लाए और उस चीज पर जो हमारी ओर तुम्हारी ओर उतारी गईष।[2]

उनकी ओर जो पुस्तकें उतारी गईं वे मूल तौरैत व इंजील हैं जिन्हें अल्लाह ने मूसा एवं ईसा पर उतारे गए,न कि वे जो हैरफैर किए हूए यहूद व इसाई के हाथों में हैं।

7.संदेषवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह भी है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि वह जिस संदष के साथ भेजे गए,उसको उन्हों ने अल्लाह के आदेष के अनूसार;अपने समुदाय तकद्ध पहुंचा दिया,उन्होंने इस संदेष को इस प्रकार स्पश्ट रूप से ब्यान कर दिया कि जिनकी ओर वह भेजे गए थे उनमें से कोई भी उससे अज्ञात न रहा,अल्लाह तआ़ला ने फरमायाः

---

[1]*इसे ह़ाकिम नेष्मुसतदरकष्;2/262द्ध में रिवायत किया है और उपरोक्त षब्द इसे के हैं,ज़हबी ने कहाःयह ह़दीस मुस्लिम की षर्त पर है,तथा इसे तबरानी नेष्अलकबीरष्; 9/118.119द्ध में रिवायत किया है और इसमें ष्313ष्का षब्द आया है,इस ह़दीस को अल्बानी ने ष्अलसिलसिला अलसह़ीहाष्;2668द्ध में सह़ी कहा है।*

[2]इसे बोखारीः7362 ने अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

﴿ فَهَلۡ عَلَى ٱلرُّسُلِ إِلَّا ٱلۡبَلَٰغُ ٱلۡمُبِينُ ٣٥ ﴾ [النحل: ٣٥]

अर्थातःसंदेषवाहकों पर केवल खुल्लम खुल्ला संदेष पहुंचा देना है।
इस प्रकार अल्लाह के संदेषवाहक लोगों पर अल्लाह का प्रमाण हूए,अल्लाह का कथन है:

﴿رُّسُلٗا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى ٱللَّهِ حُجَّةُۢ بَعۡدَ ٱلرُّسُلِۚ وَكَانَ ٱللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمٗا ١٦٥﴾ [النساء: ١٦٥]

अर्थातःहमने उन्हें संदेषवाहक बनाया है,षुभसंदेष सूनाने वाले और अवज्ञत करने वाले ताकि लोगों को कोई तर्क एवं आरोप संदेषवाहकों को भेजने के पष्चात अल्लाह तआ़ला पर रह न जाए,अल्लाह तआला बड़ा प्रभावी और बड़ा निती वाला है।
8.संदेषवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह भी है कि उन मोजेज़त;चमत्कारोंद्ध एवं चिन्हों पर भी ईमान लाया जाए जिनके माध्यम से अल्लाह ने उनकी पुश्टि की,उन मोजेज़ात;चमत्कारोंद्ध को प्रमाण एवं साक्ष्य से भी जाना जाता है,इनसे तात्पर्य वे अनहोनी घटनाएं हैं जो अल्लाह तआ़ला पैगंबरों एवं संदेषवाहकों के संदेषवाहन के प्रमाण एवं साक्ष्य के रूप में उनके हाथों अस्तित्व में लाता है,ताकि उनका मामला लोगों के लिए उलझन का कारण न रहे,क्योंकि लोग जब देखते हैं कि संदेषवाहकों का समर्थन एसे चीजों से किया जाता है जो मानव षक्ति से उपर की बात है,तो उनको विष्वास होजाता है कि वे अल्लाह की ओर से भेजो गए संदेंषवाहक हैं,अतःउनकी बातों पर उन्हें विष्वास हो जाता है,वे उनपर ईमान ले आते और धर्म पर उनका दिल स्थिर रहता।

- *अल्लाह तआ़ला हमें और आप सबको कुरान की बरकतें प्रदान करे,मुझे और आप को इसकी आयतों और ह़िकमत;नितीद्ध पर आधारित प्रामर्षों से लाभ पहुचाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सबके लिए क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा करने वाला अति कृपा करने वाला है।*

द्वितीय उपदेषः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد:

9.आप यह जान लें.अल्लाह आप पर कृपा करे.कि संदेषवाहकों पर ईमान लाने का एक तकाजा यह है कि उनकी आज्ञाकारिता की जाए,क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने संदेषवाहकों को षरीअ़तों के साथ भेजा,प्रत्येक संदेषवहक के साथ एक षरीअ़त नाजिल फरमाई ताकि लोग उनकी आज्ञाकारी करें,प्रत्येक षरीअतें ऐसी षिक्षाओं पर निर्मित थी जो लोगों के आस्था,प्रार्थना एवं चरित्र के सूधार का ज़ामिन थीं,अल्लाह ने अंतिम संदेषवाहक मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस्लाम धर्म के साथ भेजा,जोकि

समस्त षरीअतों से सर्वश्रेश्ठ एवं संपूर्ण है,लोगों को आपकी आज्ञाकारिता का आदेष दिया और आपकी आज्ञाकारिता को अपनी आज्ञाकारिता बतलाई,अल्लाह ने फरमायाः

﴿ مَّن يُطِعِ ٱلرَّسُولَ فَقَدۡ أَطَاعَ ٱللَّهَ﴾ [النساء: ٨٠]

अर्थातःउस संदेषवाहक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जो आज्ञाकारिता करे उसी ने अल्लाह की आज्ञाकारिता की।
और फरमायाः

﴿ وَإِن تُطِيعُوهُ تَهۡتَدُواْ﴾ [النور: ٥٤]

अर्थातःहिदायत तो तुम्हें उसी समय प्राप्त होगी जब संदेषवाहक की आज्ञाकारिता करो।
10.संदेषवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह भी है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि संदेषवाहक स्वेद प्रभावी रहते हैं,जैसा कि अल्लाह का कथन हैः

﴿ كَتَبَ ٱللَّهُ لَأَغۡلِبَنَّ أَنَا۠ وَرُسُلِيٓۚ إِنَّ ٱللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٞ ٢١ ﴾ [المجادلة: ٢١]

अर्थातःअल्लाह तआ़ला लिख चूका है कि निसंदेह में और मेरे संदेषवाहक प्रभावी रहेंगे।
तथा यह भी फरमायाः

﴿إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ فِي ٱلۡحَيَوٰةِ ٱلدُّنۡيَا وَيَوۡمَ يَقُومُ ٱلۡأَشۡهَٰدُ ٥١ ﴾ [غافر: ٥١]

अर्थातःनिसंदेह हम अपने संदेषवहकों की और ईमान वालों की सहायता संसारिक जीवन में भी करेंगे और उस दिन भी जब गवाही देने वाले खड़े होंगे।
षंक़ीती़ रही़महुल्लाहु इस आयत की व्याख्या में लिखते हैंःयह आयत इस बात का प्रमाण है कि अल्लाह के संदेषवाहकों को स्वेद आपने षत्रुओं पर प्रभाव प्राप्त रहता है, प्रभुत्व दो प्रकार के हैंःप्रमाण एवं साक्ष्य का प्रभुत्व जो कि समस्त संदेषवाहकों के लिए सिद्ध है,हथियार एवं अस्त्र.षस्त्र का प्रभुत्व जो कि विषेश रूप से उन संदेषवाहकों के लिए सिद्ध है जिनको युद्ध का आदेष दिया गया।[1] समाप्त
(इस विष्य में)इब्ने तैमिया रही़महुल्लाह का जो कथन है,उसका सार यह है किः संदेषवाहकों को अपने विरोधियों पर तर्क एवं ज्ञान के आधार पर जो प्रभुत्व प्राप्त हुआ वह उस मोजाहिद;धार्मिक योद्धाद्ध के श्रेणी से है जो अपने षत्रु को प्राजित करता है,और पैगंबरों को अपने विराधियों पर हथियार एवं अस्त्र.षस्त्र का जो प्रभुत्व प्राप्त

[1]देखेंःअज़वाउलब्यान

हुआ वह उस मोजाहि़द;धार्मिक योद्धाद्धके श्रेणी से है जिसने अपने षत्रु की हत्या करदी।[1]

आपने यह भी फरमाया:कोई नबी एसा नहीं जिनकी जिहा़द के मध्य में हत्या करदी गई हो।[2]

- *ए मोमिनो!संदेषवाहकों पर ईमान लाने के यह बीस तक़ाजे हैं जिनका जानना और विष्वास रखना मोमिन पर अनीवार्य है ताकि वे उन तकाजों से संपूर्ण रूप से अवज्ञत रहे और उनके पैर ईमान के मार्ग पर स्थिर रहें।*
- *आप यह जानलें.अल्लाह आप पर कृपा कर.कि अल्लाह तआ़ला ने आपको यह आदेष दिया है,अल्लाह का फरमान है:*

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ﴿٥٦﴾﴾ [الأحزاب: ٥٦]

अर्थात:अल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

हे अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेषवाहक मोह़म्माद पर रह़मत एवं षांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़यामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

- *हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिश्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के षत्रुओं को नश्ट करदे,और अपने एकेष्वरवादी बंदों की सहायता फरमा।*
- *हे अल्लाह तू हमें हमारे देषों में षांति प्रदान कर,हमारे इमामों और हमारे हाकिमों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेषक और हिदायत पर चलने वाला बना।*
- *हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम षासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के प्रति कृपा का कारण बना दे।*
- *हे अल्लाह!हम तुझसे दुनिया एवं आखिरत की समस्त भलाई की दूआ मांगते हैं,जो हमको मालूम है और जा हमको मालूम नहीं,और हम तेरी षरण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत की समस्त पापों से जा हमको मालूम है और जा हमको मालूम नहीं।*

---

[1]देखें:"अलनबूव्वात":209

[2]अलफतावा:1 / 59

- *हे अल्लाह! हम तुझसे स्वर्ग के स्वाली हैं और उस कथन एवं कार्य के भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और तेरी षरण चाहते हैं नरक से और उस कथन एवं कार्य से जो नरक से निकट करदे।*
- *हे अल्लाह! हमारे रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान कर,हमारे मृत्युों पर कृपा कर और आज़माइषों से जूझ रहे हमारे भाइयों से आज़माइष को दूर करद।*
- *हे अल्लाह!हमारे धर्म को सूधार दे जो हमारे मामलों का रक्षक है,हमारी दुनिया को सूधार दे जहां हमारा जीवन गुज़रता है,हमारे आखिरत को दुरुस्त करदे,जो हमारा अंतिम ठेकाना है,प्रत्येक पुण्य के कार्य में हमारे लिए जीवन को बढ़ादे,और मोत को हमारे लिए षांति का वस्तू बना।*
- *हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भलाई प्रदान कर,और नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।*
- *ए अल्लाह के बंदो!निसंदेह अल्लाह तआला न्याय का,कलयाण का एवं परिजनों के साथ सुंदर व्यवहार का आदेष देता है और* अश्लीलता *के कार्यों,अषिश्ट गतिविधियों और कूरता व निर्दयता से रोकता है वह स्वयं तुम्हें प्रामर्ष कर रहा है कि प्रामर्ष प्राप्त करो।इस लिए तुम अल्लाह षक्तिषाली का जिक्र करो वह तुम्हारा जिक्र करेगा,उसके आषीर्वादों पर उसका आभारी रहो वह तुम्हें और अधिक आषीर्वाद प्रदान करेगा,अल्लाह का जिक्र बहुत बड़ी चीज है,तुम जो कुछ भी करते हो वह उससे अवज्ञत है।*

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

शीर्षक: आख़िरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े – क़िस्त १

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रसंशा के पशचात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कार की गई बिदअ़त(नवाचार)हैं,प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ बिदअ़त है,प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने मन और हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा मानो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जानलो कि अल्लाह तआ़ला अपने धर्म के निर्माण में,अपनी दक़दीर(भाग्य)में और बदला एवं दंड में महान नीति वाला है और अल्लाह तआ़ला की एक निति यह भी है कि उसने इस मख़्लूक़(जीव)के लिए एक अवधि निश्चित किया है जिस में उन्हें उन आ़माल(कार्यों)का बदला देगा जिनका उसने अपने संदेशवाहक द्धारा उन्हें मोकल्लफ(उत्तरदायी)बनाया है,अल्लाह का कथन है:

﴿ أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾ ﴾ [المؤمنون: ١١٥]

अर्थात:क्या तुम यह सोचते हो कि हमने तुम्हें यूंही बेकार पैदा किया है और यह कि तुम हमारी ओर लौटाए ही न जाओगे।
आखितर के दिन को योमुल मीआ़द इस लिए कहा गया है कि उसके बाद कोई दिन न होगा,वह इस प्रकार कि स्वर्ग वासी अपना स्थान ग्रहण करलेंगे और नरक वासी अपने स्थान पे पहुंच जाएंगे,यह दिन क़्यामत के दिन से भी जाना जाता है क्योंकि उस दिन लोग अल्लाह के समक्ष खड़े होंगे।

ए मोमिनो!आखिरत के दिन पर ईमान लाने में छ कार्य सम्मिलित हैं:1-सूर में फूंक लगाना, २-क़्यामत की भयावहताओं का प्रकट होना,3-मख़्लूक़ो(जीवों)का दोबारा उठाया जाना,4-क़्यामत के अन्य चिंहों का उतपन्न होना,5-लोगों का ह़शर के मैदान में जमा होना,6हिसाब व किताब एवं जज़ा व सज़ा,स्वर्ग एवं नरक में प्रवेश।

1.अल्लाह के बंदो!सूर में फूंक लगाना क़यामत की विशाल चिन्हों में से प्रथम चिन्ह होगी,इसी के माध्यम से क़यामत के घटित होने की सूचना दी जाएगी,सूर का अर्थ वह सींग है जिसमें सूर के देवदूत–अर्थात इसराफील–दो बार फूंक मारेंगे-इस सूर को घबरोहट एवं सदमे का सूर कहा गया है-जिससे समस्त जीव मर जाएंगे,यस एक लंबी फूंक होगी जिसे इसराफील लगाएंगे जिससे पूरे संसार के लोग मर जाएंगे,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿وَمَا يَنظُرُ هَٰٓؤُلَآءِ إِلَّا صَيۡحَةً وَٰحِدَةً مَّا لَهَا مِن فَوَاقٍ ١٥﴾ [سورة ص:١٥]

अर्थात:उन्हें केवल एव चीज की प्रतीक्षा है जिसमें कोई ढील नहीं है।

अर्थात:उसके पश्चात न उन्हें होश आएगा और न वह दुनिया में लौट पाएंगे,फिर द्धितीय बार सूर फूंका जाएगा जिस से समस्त शव अपने अपने कब्रों से उठ खड़े होंगे,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿فَإِنَّمَا هِيَ زَجۡرَةٞ وَٰحِدَةٞ فَإِذَا هُمۡ يَنظُرُونَ ١٩﴾ [سورة الصافات:١٩]

अर्थात:वह तो केवल एक जो़र की झिड़की है कि अचानक यह देखने लगेंगे।
ज्ञात हुआ कि प्रथम बार फूंक मारने से जीव मर जाएंगे एवं द्धितीय बार फूंक मारने से शव जीवित हो जाएंगे।
क़ुरान में सूर को الناقور भी कहा गया है,जैसा कि सूरह अलमुद्दसिर में आया है:

﴿ فَإِذَا نُقِرَ فِي ٱلنَّاقُورِ ٨ ﴾ [المدثر: ٨]

अर्थात: जब कि सूर में फूंक मारी जाएगी।
2.आखिरत के दिन पर ईमान लाने में क़यामत के विशाल चिन्हों पर ईमान लोने भी शामिल है,जैसे क़यामत की भयावहताओं का प्रकट होना, भूमि में भूकंप का आना,जैसा कि अल्लाह का कथन है:

﴿ إِذَا زُلۡزِلَتِ ٱلۡأَرۡضُ زِلۡزَالَهَا ١ ﴾ [الزلزلة: ١]

अर्थात:जब भूमि पूरी तरह से झिनझोड़ दी जाएगी।
तथा यह कि:

﴿ إِذَا رُجَّتِ ٱلۡأَرۡضُ رَجّٗا ٤ ﴾ [الواقعة: ٤]

अर्थात:जबकि भूमि भूकंप के साथ हिला दी जाएगी।
क़यामत का एक विशाल चिन्ह एवं भयावहता यह है कि आकाश फट जाएगा,जैसा कि अल्लाह का कथन है:

﴿ فَإِذَا ٱنشَقَّتِ ٱلسَّمَآءُ فَكَانَتۡ وَرۡدَةٗ كَٱلدِّهَانِ ٣٧ ﴾ [الرحمن: ٣٧]

अर्थात:जबकि आकाश फट कर लाल हो जाए जैसे कि लाल त्वचा।

अर्थातःलाल त्वचा के जैसा हो जाएगा,क्योंकि وردة का अर्थ लाल है और الدِّهانका अर्थ त्वचा होता है।

द्धितीय आयत में अल्लाह ने उस दिन आकाश को तरल वस्तु के समान कहा है,अल्लाह का कथन है:

﴿ يَوْمَ تَكُونُ ٱلسَّمَآءُ كَٱلْمُهْلِ ۝٨ ﴾ [المعارج: ٨]

अर्थातःजिस दिन आकाश तेल की तेलछट जैसे हो जाएगा।

उस दिन पहाड़ टुकड़े–टुकड़े कर दिए जाएंगे यहां तक कि वे उड़ती रेत के जैसे अथवा धुने हुए ऊन के जैसे हो जाएंगे।ये दोनों ही विशेषताएं लगभग मिलती जुलती है,पहाड़ के टुकड़े–टुकड़े होने का उल्लेख अल्लाह तआ़ला के इस कथन में है:

﴿ وَبُسَّتِ ٱلْجِبَالُ بَسًّا ۝٥ ﴾ [الواقعة: ٥]

अर्थातःपहाड़ के (धुने हुए ऊन के जैसे हवाओं में)उड़ने का उल्लेख इस आयत में आया है:

﴿وَتَكُونُ ٱلْجِبَالُ كَٱلْعِهْنِ ٱلْمَنفُوشِ ۝٥ ﴾ [القارعة: ٥]

अर्थातःपहाड़ धुने हुए रंगीन ऊन के जैसे हो जाएंगे।

तथा अल्लाह के इस कथन में:

﴿ وَكَانَتِ ٱلْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ۝١٤ ﴾ [المزمل: ١٤]

अर्थातःपहाड़ भुड़भुड़ी रेत के टीलों जैसे हो जाएंगे।

उस दिन पहाड़ों को उनके स्थानों से उखाड़ कर चला दिया जाएगा यहां तक कि वे सराब(वे रेत जो दूर से पानी जैसा लगता है)के जैसे हो जाएंगे,अल्लाह का कथन है:

﴿وَسُيِّرَتِ ٱلْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۝٢٠﴾ [النبأ: ٢٠]

अर्थातःपहाड़ चलाए जाएंगे तो वे सराब हो जाएंगे।

अल्लाह ने अधिक फरमायाः

﴿ وَتَرَى ٱلْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَهِىَ تَمُرُّ مَرَّ ٱلسَّحَابِ ۚ صُنْعَ ٱللَّهِ ٱلَّذِىٓ أَتْقَنَ كُلَّ شَىْءٍ﴾ [النمل: ٨٨]

अर्थातःआप पहाड़ों को देख कर अपने स्थान पर स्थिर मानते हैं किंतु वे भी बादल के जैसे उड़ते फिरेंगे।यह है अल्लाह का निर्माण जिसने प्रत्येक वस्तु को मजबूत बनाया है।

क़्यामत का एक विशाल चिन्ह एवं भयावहता यह है कि सूर्य लपेट लिया जाएगा,अल्लाह का कथन है:

﴿إِذَا ٱلشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝١ ﴾ [التكوير: ١]

अर्थातःजब सूर्य को लपेट लिया जाएगा।
सूर्य को लपेटने का अर्थ यह है कि उसे पगड़ी के जैसे लपेट कर फेंक दिया जाएगा जिस से उसका आलोक समाप्त हो जाएगा।[1]

क़्यामत का एक बड़ा चिन्ह एवं भयावहता यह भी है कि सितारे टूट जाएंगे,अर्थात आकाश की बोलंदी से टूट कर एक के बाद एक भूमि पर गिर जाएंगे,अल्लाह ने फरमायाः

﴿وَإِذَا ٱلنُّجُومُ ٱنكَدَرَتۡ ۝٢﴾ [التكوير: ٢]

अर्थातःजब सितारे प्रकाशहीन हो जाएंगे।
क़्यामत का एक विशाल चिन्ह एवं भयावहता यह भी है कि समुद्र में आग का भोंचाल आजाएगा,जैसा कि अल्लाह ने फरमायाः

﴿وَإِذَا ٱلۡبِحَارُ سُجِّرَتۡ ۝٦﴾ [التكوير: ٦]

अर्थातःजब समुद्र भर जाएंगे।
पवित्र है वह (अल्लाह) जिसके हाथ में यह शक्ति है कि वह प्रकृति के नियमों को अपने कौनी एवं क़दरी आदेश से उलट–पलट करदेगा,अल्लाह ने फरमायाः

﴿إِنَّمَا قَوۡلُنَا لِشَيۡءٍ إِذَآ أَرَدۡنَٰهُ أَن نَّقُولَ لَهُۥ كُن فَيَكُونُ ۝٤٠﴾ [النحل: ٤٠]

अर्थातःहम जब किसी चीज का सोचते हैं तो केवल हमारा यह कह देना होता है कि होजा,और वह हो जाता है।
3.आखिरत के दिन पर ईमान लाने में यह भी सम्मिलित है कि बास बाद अलमौत(मृत्यु पश्चात पुनःजीवित किया जाना) पर ईमान लाया जाए,इस का अर्थ यह है कि जब सूर में द्वितीय बार फूंक मारी जाएगी तो मृत्यु जीवित हो जाएंगे,पुनः जीवित होना सत्य एवं सिद्ध है,इस पर कुरान व हदीस एवं मुसलमानों की सर्व सहमति प्रमाणित हैं,अल्लाह ने फरमाया हैः

﴿ثُمَّ إِنَّكُم بَعۡدَ ذَٰلِكَ لَمَيِّتُونَ ۝١٥ ثُمَّ إِنَّكُمۡ يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِ تُبۡعَثُونَ ۝١٦﴾ [المؤمنون: ١٥ – ١٦]

अर्थातःउसके पश्चात फिर तुम सब निसंदेह मर जाने वाले हो।फिर क़्यामत के दिन निसंदेह तुम सब उठाए जाओगे।
उस समय लोग अल्लाह के समक्ष खड़े होंगे,नंगे पॉव एवं निर्वस्त्र होंगे,उनका ख्तना नहीं किया होगा,वे सबके सब बिल्कुल सही होंगे,अर्थात संसार में उनके अंदर जो अवगुण थे,वे उनसे पवित्र होंगे,जैसे लंगड़ापन और अंधापन आदि।अल्लाह का कथन हैः

﴿كَمَا بَدَأۡنَآ أَوَّلَ خَلۡقٖ نُّعِيدُهُۥۚ وَعۡدًا عَلَيۡنَآۚ إِنَّا كُنَّا فَٰعِلِينَ ۝١٠٤﴾ [الأنبياء: ١٠٤]

---

[1]देखेंःतफसीर इब्ने जरीर में उपरोक्त आयत का विवरण।

अर्थातःजैसे कि हमने प्रथम बार पैदा किया था उसी प्रकार पुनःकरेंगे।यह हमारे ऊपर वचन है और हम इसे अवश्य करके ही रहेंगे।
अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको कु़रान की बरकतों से मालामाल फरमाए,अल्लाह मुझे और आपको कु़रान की आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभान्वित फरमाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा की प्रार्थना करता हूं,अतःआप भी उससे क्षमा प्राप्त कीजिए,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला एवं अति कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

4.आप जान लें—अल्लाह के बंदो अल्लाह से डरो और जान लो—कि आखिरत के दिन पर ईमान लाने का एक तक़ाज़ा यह भी है कि मख़्लूकों(जीवों)को ह़श्र के मैदान(वह स्थान जहां मृत्यु उपरांत सबको जमा किया जाएगा)में जमा करने पर ईमान लाया जाए,ह़श्र का अर्थ है जीवों को उनके कब्रों से उठा कर मह़शर के मैदान में जमा करना,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन हैः

﴿ هُوَ ٱلَّذِى ذَرَأَكُمْ فِى ٱلْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴾ [الملك: ٢٤]

अर्थातःवही है जिसने तुम्हें पैदा करके भूमि में फैला दिया और उसी के ओर तुम जमा किए जाओगे।
इब्ने अ़ब्बास रज़ीअल्लाहु अंहुमा से वर्णित है,वह कहते हैंःहमारे बीच नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उपदेश प्रस्तुत करने के लिए खड़े हुए और आपने फरमायाःतुम अल्लाह तआ़ला से इस अवस्था में मिलोगे कि नंगे पॉव,निर्वस्त्र एवं बिना ख्तने होगे।[1]
क़्यामत के दिन लोगों को सफेद गंद़मि रंग की(हमवार)भूमि पर जमा किया जाएगा,उसमें किसी भी मनुष्य के लिए कोई सड़क चिन्ह न होगा,[2]एक पुकारने वाले की आवाज़ सबके कानों तक पहुंच सकेगी[3]और एक नजर सबको देख सकेगी।[4]जैसा कि सह़ी बोखारी[5]में अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है।

[1]इसे बोखारी(6526)एवं मुस्लिम(2860)ने वर्णित किया है।
[2]देखेंःसह़ी बोखारी(6521)एवं सह़ी मुस्लिम(2790)सहल बिन सअ़द रज़ीअल्लाहु का वर्णन।
[3]क्योंकि पृथ्वी पर कोई एसी दीवार आदि न होगी जो ध्वनी फैलने में बाधा बन सके।
[4]अर्थात पृथ्वी एतनी हमवार होगी कि नजर उनके प्रथम मनुष्य से अंतिम मनुष्य तक पहुंच रही होगी,देखेंःफत्हुलबारी,(4712)ह़दीस का विवरण।
[5]ह़दीस संख्याः(3361)

उस दिन मनुष्यों,जिन्नातों,देवदूतों एवं मवेशियों को इकट्ठा किया जाएगा,मनुष्य एवं जिनों के इकट्ठाहोने का प्रमाण पूर्व आयतों में आए समानता का अर्थ है,रही पशुओं के इकट्ठाहोने का प्रमाण तो अल्लाह तआ़ला का यह कथन उसका प्रमाण है:

﴿ وَمَا مِن دَآبَّةٍ فِى ٱلْأَرْضِ وَلَا طَٰٓئِرٍ يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّآ أُمَمٌ أَمْثَالُكُم ۚ مَّا فَرَّطْنَا فِى ٱلْكِتَٰبِ مِن شَىْءٍ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ ﴿٣٨﴾ ﴾ [الأنعام: ٣٨]

अर्थातःजितने प्रकार के जीव पृथ्वी पर चलने वाले हैं और जितने प्रकार के पक्षी जो अपने दोनों पंखों से उड़ते हैं उनमें कोई प्रकार ऐसी नहीं जो कि तुम्हारे प्रकार के दल न हों,हमने पंजी में कोई चीज नहीं छोड़ी,फिर सब अपने रब की ओर जमा किए जाएंगे।

तथा अल्लाह तआ़ला का यह कथन भी इसका प्रमाण है:

﴿ وَإِذَا ٱلْوُحُوشُ حُشِرَتْ ﴿٥﴾ ﴾ [التكوير: ٥]

अर्थातःजब वह़शी जानवर इकट्ठे किए जाएंगे।

रही बात देवदूतों को इकट्ठा करने की तो इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿ وَجَآءَ رَبُّكَ وَٱلْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿٢٢﴾ ﴾ [الفجر: ٢٢]

अर्थातःतेरा रब(स्वयं)आजाएगा और देवदूत पंक्तियों में(आजाएंगे)।

अतः देवदूत अपने रब के समक्ष पंक्तियों में खड़े होंगे,किंतु उनका हिसाब व किताब न होगा,क्योंकि यह उनके स्वभाव में है कि वे अल्लाह के आदेशों का पालन करते और रब की अवज्ञा नहीं करते हैं,जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने अपने इस कथन में उनकी यह विशषता बताई है:

﴿لَّا يَعْصُونَ ٱللَّهَ مَآ أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ﴿٦﴾ ﴾ [التحريم: ٦]

अर्थातःजो आदेश अल्लाह देता है उसकी अवज्ञा नहीं करते बल्कि जो आदेश दिया जाए उसका पालन करते हैं।

अल्लाह के बंदो!आखिरत के दिन पर ईमान लाने के ये चार तक़ाज़े हैं जिन का उल्लेख हुआ,आखिरत पर ईमान उस समय तक पूरा नहीं हो सकता जब तक कि पूर्ण रूप से इन तक़ाजों पर ईमान न लाया जाए,पॉचवा एवं छटे तक़ाज़े के विषय में आगामी उपदेशों में चर्चा होगी।इन्शा अल्लाह

*आप यह भी जान ले–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि शुक्रवार के दिन और रात में आपका सर्वश्रेष्ठ कार्य यह है कि आप नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजें,हे अल्लाह!अपने दास एवं संदेशवाहक मोहम्मद पर दरूद नाज़िल कर,आपके उत्तराधिकारी से प्रसन्न होजा,जो सत्य मार्ग पर स्थिर एवं मुसलमानों के ईमाम थे,तथा उनके

अनुयायियों एवं क़्यामत तक सत्य निष्ठा के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

*हे अल्लाह!इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित करदे,और अपने धर्म की रक्षा कर,हे अल्लाह!इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित करदे,तू अपने और इस्लाम के शत्रुओं को नाश करदे,और अपने एकेश्वरवाद बंदों की सहायता फरमा।

*हे अल्लाह!हमें अपने देशों में शांति का जीवन प्रदान कर,हे अल्लाह!हमारे इमामों एवं हमारे शासकों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक एवं हिदायत पर चलने वाला बना दे।

*हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक़(शक्ति)प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के लिए कृपा का कारण बना।

*हे अल्लाह!हम तुझ से दुनिया एवं आखिरत की समस्त भलाई की प्रार्थना करते हैं जो हमको मालूम है और जो नहीं मालूम,और हम तेरा शर्ण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत की समस्त बुराइयों से जो हमको मालूम है और मालूम नहीं।

*हे अल्लाह!हम तुझसे स्वर्ग मांगते हैं और वे कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कथन एवं कार्य से भी जो नरक से निकट करदे।

*हे अल्लाह!हमारे रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान कर,हमारे मृतकों पर कृपा फरमा एवं हम में से जो संकट ग्रस्त हैं,उन्हें मुक्ति प्रदान कर।

*हे अल्लाह!हमारे धर्म को सुधार दे,जो हमारे(दीन व दुनिया के)प्रत्येक कार्य की रक्षा का माध्यम है और हमारी दुनिया को सुधार दे जिस में हमारी जीविका है और हमारी आखिरत को सुधार दे जिसमें हमारा(अपने गंतव्य की ओर)लौटना है और हमारे जीवन को हमारे लिए प्रत्येक भलाई में वृद्धि का कारण बना दे और हमारी मृत्यु को हमारे लिए सब विपत्तियों से छुटकारा बना दे।

*हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भी भलाई दे और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

عباد الله! إن الله يأمر بالعدل والإحسان وإيتاء ذي القربى، وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغي، يعظكم لعلكم تذكرون، فاذكروا الله العظيم يذكركم، واشكروه على نعمه يزدكم، ولذكر الله أكبر، والله يعلم ما تصنعون.

शीर्षक: आख़िरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े – क़िस्त २

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रसंशा के पशचात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कार की गई बिदअ़त(नवाचार)हैं,प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ बिदअ़त है,प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने मन और हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा मानो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जानलो कि अल्लाह तआ़ला अपने धर्म के निर्माण में,अपनी दक़दीर(भाग्य)में और बदला एवं दंड में महान नीति वाला है और अल्लाह तआ़ला की एक निति यह भी है कि उसने इस मख़्लूक़(जीव)के लिए एक अवधि निश्चित किया है जिस में उन्हें उन आ़माल(कार्यों)का बदला देगा जिनका उसने अपन संदेशवाहक द्वारा उन्हें मोकल्लफ(उत्तरदायी)बनाया है,अल्लाह का कथन है:

﴿ أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾ ﴾ [المؤمنون: ١١٥]

अर्थात:क्या तुम यह सोचते हो कि हमने तुम्हें यूं ही बेकार पैदा किया है और यह कि तुम हमारी ओर लौटाए ही न जाओगे।

ए मोमिनो! पिछले दो उपदेशों में आखेरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े से संबंधित बात की गई,जो कि यह हैं:सूर में फूंक लगाना,क़्यामत की विशाल चिंह,मख़्लूकों(जीवों) का दोबारा उठाया जाना,लोगों को महशर के मैदान(जहां मरणोपरांत पुनः इकट्ठा किया जाएगा)में जमा करना,और आज हम इन्शा अल्लाह चर्चा करेंगे महशर के मैदान में घटने वाले घटनाओं के कुछ विवरणों के विषय में।

अल्लाह के बंदो!महशर के मैदान में चार चीजें घटित होंगी:

1.लोग घबराए हुए होंगे,इसका प्रमाण सूरह अलहज के आरंभ में अल्लाह तआ़ला का यह कथन है:

﴿إِنَّ زَلْزَلَةَ ٱلسَّاعَةِ شَىْءٌ عَظِيمٌ ۝١ يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى ٱلنَّاسَ سُكَـٰرَىٰ وَمَا هُم بِسُكَـٰرَىٰ وَلَـٰكِنَّ عَذَابَ ٱللَّهِ شَدِيدٌ ۝٢﴾ [الحج: ١ – ٢]

अर्थातः निसंदेह क़्यामत का भूकंप बड़ी चीज़ है जिस दिन तुम उसे देख लोगे हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी,और सारे गर्भवतियों का गर्भ गिर जाएंगे और तू देखेगा कि लोग मदहोश दिखाई देंगे,जब्कि वे वास्तव में बेहोश न होंगे लेकिन अल्लाह की यातना बड़ा कठोर है।

उसकी कठोरता एवं क्रूरता का यह आलम होगा कि लोगों की सोच समझ असंतुलित हो जाएगी और उनके लिए यह जानना कठिन हो जाएगा कि वे दुनिया में कितने काल तक रहे,कोई कहेगा

﴿إِن لَّبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ۝١٠٣﴾ [طه: ١٠٣]

अर्थातःहम तो दुनिया में मात्र दस दिन ही रहे।

और कोई कहेगाः

﴿لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْـَٔلِ ٱلْعَآدِّينَ ۝١١٣﴾ [المؤمنون: ١١٣]

अर्थातःएक दिन अथवा एक दिन से भी कम,गिनती गिनने वालों से भी पूछ लीजिए।

एक अन्य आयत में अल्लाह तआ़ला उनके प्रति फरमाता हैः

﴿وَيَوْمَ تَقُومُ ٱلسَّاعَةُ يُقْسِمُ ٱلْمُجْرِمُونَ مَا لَبِثُوا۟ غَيْرَ سَاعَةٍ﴾ [الروم: ٥٥]

अर्थातःजिस दिन क़्यामत आऐगी पापी लोग कसमें खाएंगे कि(दुनिया मेंदुनिया में)एक घड़ी के सिवा नहीं ठहरे।

उस दिन की कठोरता एवं भीषण भयानकता का आलम यह होगा कि लोग एक दूसरे से ग़ाफिल होंगे,अल्लाह का कथन हैः

﴿يَوْمَ يَفِرُّ ٱلْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ۝٣٤ وَأُمِّهِۦ وَأَبِيهِ ۝٣٥ وَصَـٰحِبَتِهِۦ وَبَنِيهِ ۝٣٦ لِكُلِّ ٱمْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ۝٣٧﴾ [عبس: ٣٤ – ٣٧]

अर्थातःउस दिन मनुष्य अपने भाई से और अपनी माता और पिता से,और अपनी पत्नी और अपनी औलाद से भागंगे।उनमें से प्रत्येक को उस दिन ऐसी चिंता होगी जो उसके लिए प्रयाप्त होगी।

अल्लाह के बंदो!क़्यामत के दिन जिन लोगों को घबराहट होगी वे पापी होंगे जैसे काफिर,बिदअ़ति(नवाचारी)और अवज्ञाकारी मोमिन,अल्लाह का कथन हैः

﴿وَكَانَ يَوْمًا عَلَى ٱلْكَـٰفِرِينَ عَسِيرًا ۝٢٦﴾ [الفرقان: ٢٦]

अर्थातःयह दिन काफिरों पर बड़ा भारी होगा।

किंतु जो पक्के ईमान वाले होंगे तो वे उससे निर्भय होंगे,वे ऐसे लोग होंगे जिन्होंने अल्लाह की आज्ञा की और अल्लाह के ह़राम किए हुए चीजो से स्वयं को बचाए रखा,अतःजो व्यक्ति संसार में अल्लाह से डरता है,अल्लाह उसे आखिरत में निर्भय कर देगा,और जो व्यक्ति संसार में अल्लाह से निर्भय रहता है,उसे क़्यामत के दिन भयभीत कर देगा,यह अल्लाह तआ़ला के न्याय का तक़ाज़ा है कि वह बंदा को न दोनों संसार में शांति देता है और न दोनों दुनिया में भय में रखता है,अतःजो(स्वयं को)अल्लाह से दुनिया में निर्भय समझे उसे आखिरत के दिन अल्लाह तआ़ला भय में रखता है,अल्लाह तआ़ला सत्य मोमिनों के प्रति फरमाता है:

﴿ لَا يَحۡزُنُهُمُ ٱلۡفَزَعُ ٱلۡأَكۡبَرُ وَتَتَلَقَّىٰهُمُ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ ﴾ [الأنبياء: ١٠٣]

अर्थातः वह बड़ी घबराहट भी उन्हें उदास न कर सकेगी और देवदूत उन्हें हाथों हाथ लेंगे।

अल्लाह ने अधिक फरमाया:

﴿ وَهُم مِّن فَزَعٍ يَوۡمَئِذٍ ءَامِنُونَ ﴿٨٩﴾ ﴾ [النمل: ٨٩]

अर्थातःवे उस दिन की घबराहट से निर्भय होंगे।

तथा अल्लाह का कथन है:

﴿ أَفَمَن يُلۡقَىٰ فِي ٱلنَّارِ خَيۡرٌ أَم مَّن يَأۡتِيٓ ءَامِنًا يَوۡمَ ٱلۡقِيَٰمَةِ ﴾ [فصلت: ٤٠]

अर्थातः(बतलाओ तो)जो आग में डाला जाएगा वा अच्छा है अथवा जो शांति के साथ क़्यामत के दिन आए?

2.मेह़शर के मैदान में जो घटना घटेंगे उनमें एक यह भी कि सूर्य जीवों से निकट हो जाएंगा,यहां तक कि एक मील की दूरी पर होगा,एक कथन है कि उसका अर्थ सुरमेदानी का मील(सलाई)है,और अन्य कथन है कि उसका अर्थ एक मील की दूरी ह,चाहे इसका अर्थ यह हा अथव वह हर स्थिति में सूर्य सरों से बिल्कुल निकट हो जाएगा।[1]

यदि पूछा जाए किःक्या कोई ऐसा भी होगा जो सूर्य की गर्मी से सुरक्षित रहेगा?तो उत्तर है किःहां,कुछ ऐसे लोग भी होंगे जिन को अल्लाह तआ़ला उस दिन सूर्य की गर्मी से सुरक्षित रखेगा,उनमें से वे सात प्रकार के लोग होंगे जिन को अल्लाह तआ़ला अपने(अ़र्श के)छाए में स्थान देगा,उस दिन जब उस(अ़र्श)के छाए के

[1] देखेंःसही़ मुस्लिम(2864)

अतिरिक्त कोई छाया न होगा,इसका अर्थ वह छाया है जिसे अल्लाह तआ़ला पैदा करेगा,वह अ़र्श का छाया होगा,उसके माध्यम से अनेक लोग उस दिन सूर्य से बच जाएंगे,अल्लाह तआ़ला हमें भी उन स्वभागियों में शामिल फरमाए।वे न्याय प्रिय इमाम होगा,अथवा वह युवा होगा जिसकी जवानी अल्लाह की आज्ञा में गुजरी होगी,दो ऐसे लोग होंगे जिन्हों ने अल्लाह के लिए आपस में प्रेम की होगी,उसी प्रेम के लिए इकट्ठा हुए होंगे और उसी प्रेम अलग हुए होंगे,और एक ऐसा व्यक्ति होगा जिस का दिल मस्जिद से लगा रहता है,मस्जिद के बाहर आने से ले कर वापस जाने तक मस्जिद से ही उसका दिल अटका होता है,और एक वह व्यक्ति होगा जिस ने अकेला में अल्लाह को याद किया होगा और उसकी आंखें बह पड़ी होंगी, और वह व्यक्ति जिसे किसी पद वाली एवं खांदानी सुन्दर युवती ने अपने साथ पाप करने का न्योता दिया होगा किंतु उसने यह कह कर टाल दिया होगा किः(में अल्लाह से डरता हूं)और एक वह व्यक्ति होगा जिसने एतना छिपा कर सदक़ा(दान)किया होगा कि दाएं हाथ स जो कुछ खर्च किया,बाएं हाथ को भी उसकी भनक न लगी होगी।[1]

3.ह़शर के मैदान में जो दृश्य होंगे,उन में यह भी है कि लोग पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हौ़ज़(कुंड)पर आएंगे जो मह़शर के मैदान में होगा,उससे वे मोमिन बंदे सैराब होंगे जो इस्लाम पर स्थिर रहते हैं,और उस हो़ज़ से दो प्रकार के लोगों को दूर भगा दिया जाएगाःएक वे जो इस्लाम लाने के पश्चात मुर्तद(नास्तिक)हो गया,जैसे वे लोग जो पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मृत्यु के पश्चात मुर्तद हो गए,और उन्हीं के जैसे वे लोग भी होंगे जो क़्यामत तक इर्तेदाद(नास्तिकता)के शिकार होंगे।द्वितीय प्रकार बिदअ़तियों(नवाचारों)की होगी,चाहे को़ली(कथनी)बिदअ़त हो अथवा अ़मली(कार्य),उन्हें भी हौ़ज़ से दूर रखा जाएगा जैसे अनरिचित ऊंटनी को पनघट से दूर भगाया जाता है।[2]

उस हौ़ज़ में स्वर्ग की कौसर नहर से दा प्रणाले गिर रहे हैं,कौसर का अर्थ होता है अति अच्छाई एवं भलाई,उस हौ़ज़ की लंबीई एक महीने की दूरी के बराबर है,उस पर आकाश के सितारों की संख्यिा में पियाले हैं,उसका पानी दूध से अधिक सफेद है,उसकी खुशबू मुश्क से अधिक उत्तम है,उसका स्वाद मधु से अधिक मीठा है,तो व्यक्ति एक बार उसको पीलेगा उसे कभी प्यास नहीं लगेगी,उसमें स्वर्ग से दो प्रणाले गिर रहे

[1] इस ह़दीस को बोखारी(660)और मुस्लिम(1013)ने अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्णित किया है।
[2] देखेंःसही़ मुस्लिम(2302)

हैं,एक सोने का और दूसरा चांदी का,उसकी चौड़ाई उसकी लंबाई के जैसा है,जितनी सना और मदीना के बीच की दूरी है।[1]

अल्लाह के बंदो!नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हौज़ अभी भी अस्तित्व में है,जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन हैःअल्लाह की क़सम!में अभी भी अपने हौज़ को देख रहा हूं।[2]

हौज़ के प्रति एक रिवायत यह भी है कि प्रत्येक संदेशवाहक का एक हौज़ है,जैसा कि पैगन्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"क़्यामत के दिन प्रत्येक पैगंबर के लिए एक हौज़ होगा,और वे आपस में एक दूसरे पर गर्व करेंगे कि किस के हौज़ पर पानी पीने वालों की अधिक भीड़ होगी,और मुझे आशा है कि मेरे हौज़ पर(अल्लाह के कृपा से)सबसे अधिक लोग जमा होंगे"।[3]

यह अल्लाह तआ़ला की नीति एवं बंदों के प्रति उसकी दया का एक दृश्य है,ताकि पूर्व(मिल्लतों के)मोमिन भी उन पैगंबरों के हौज़ से सैराब हो सकें जिनका उन्हों ने अनुगमन किया,ताकि उनको पूरा पूरा बदला मिले।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको क़ुरान की बरकतों से मालामाल फरमाए,अल्लाह मुझे और आपको क़ुरान की आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभान्वित फरमाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा की प्रार्थना करता हूं,अतःआप भी उससे क्षमा प्राप्त कीजिए,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला एवं अति कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

4.आप जान लें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि क़्यामत के दिन ह़श्र के मैदान में जो दृश्य होंगे उनमें शिफाअ़ते उ़ज़मा(भव्य अनुशंसा)भी होगी,वह इस प्रकार कि क़्यामत के दिन सारे लोग,चाहे वे मोमिन हों अथवा काफिर,बहुत दैर तक खड़ो रहेंगे,अतः(थक

---

[1] हौज़ से संबधित आई ह़दीस के लिए देखें:"सह बोखारी",किताबुल रिक़ाक़,अलहौज़ खण्ड में,इसी प्रकार से"सही मुस्लिम",किताबुल फज़ाइल,खण्ड इस्बाते हौज़े नबीयेना(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)व सिफातेहि।

[2] इसे बोखारी(6590)और मुस्लिम(2296)ने उ़क़्बा बिन आ़मिर रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

[3] इसे ह़दीस को तिरमिज़ी(2443)ने सुमरा रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्णित किया है और अल्बानी ने इसे सही कहा है जैसा कि"अस्सहीहा"(1589)में है।

हार कर)पैगंबरों के पास जाएंगे कि वे उनके रब के पास हिसाब व किताब को आरंभ करने की अनुशंसा करें,ताकि सारे लोग अपनी अपनी मंजिल तक पहुंच सकें,अथवा तो स्वर्ग की नेमत(आशीर्वादों)में जाएं अथवा नरक में,किंतु पॉच संदेशवाहक उनसे क्षमा लेलेंगेःआदम,नूह़,इब्राहीम,मूसा एवं ईसा अलैहिमुस्सलाम,फिर ईसा अलैहिस्सलाम उनको मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भेजेंगे,अतःवे आपके पास जाएंगे और फरमाएंगेः(में अनुशंसा के लिए आया हूं) ।फिर आप अ़र्श के नीचे स्जदे में गिर जाएंगे और जब तक अल्लाह चाहेगा आप स्जदा ही में रहेंगे,फिर अल्लाह तआ़ला आपको अपनी प्रशंसा एवं उत्तम स्तुति के शब्दों का इल्हाम करेगा जो आप से पूर्व किसी को नहीं दिए गए,फिर आपसे कहा जाएगाः(ए मोह़म्मद!अपना सर उठाओ,जो कहो वह सुना जाएगा,जो मांगो वह प्रदान किया जाएगा,जो अनुशंसा करो स्वीकार किया जाएगा),फिर आप अल्लाह के निकट मह़शर के मैदान में खड़े हुए बंदों के लिए हिसाब व किताब की सिफारिश करेंगे,अतःअल्लाह तआ़ला आपकी सिफारिश स्वीकार फरमा कर हिसाब व किताब को आरंभ करेगा और अपने बंदों के समक्ष निर्णय करेगा,चाहे वे मोमिन हों अथवा काफिर,आदम से लेकर क़यामत होने तक के(समस्त बंदों का निर्णय करेगा)।

यही वह शिफाअ़त(अनुशंसा)है जिसे अल्लाह तआ़ला के इस कथन में मक़ामे मह़मूद (प्रशस्त स्थान)कहा गया हैः

﴿ عَسَىٰٓ أَن يَبۡعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامٗا مَّحۡمُودٗا ۝٧٩ ﴾ [الإسراء: ٧٩]

अर्थातःनिकट ही आपका रब आपको मक़ामे मह़मूद में खड़ा करेगा।

वह ऐसा स्थान है जिस पर पदस्थापित होने के पश्चात क़यामत के दिन समस्त पूर्व एवं पश्चात में आने वाले लोग आपकी प्रशंसा करेंगे और उसके कारण आप पर ईर्ष्या करेंगे,क्योंकि हिसाब व किताब को आरंभ करने में समस्त मख़लूक़ों(जीवों)पर आप का कृपा होगा,चाहे वे मोमिन हों अथवा काफिर,मनुष्य हो अथवा जिन्न।

इस शिफाअ़त(अनुशंसा)के महत्व के कारण विद्वानों ने इसे शिफाअ़ते उ़ज़्मा(भव्य अनुशंसा)का नाम दिया है,और क़यामत के दिन की जाने वाली यह स्र्वप्रथम शिफाअ़त होगी।

ए अल्लाह के बंदो! ये चार कार्य जिनका उल्लेख हुआ,क़यामत के दिन ह़श्र के मैदान में घटित होने वाले दृश्य हैं,मुस्लिम बंदे को चाहिए कि स्वेद इन दृश्यों को सामने रखे ताकि अल्लाह का भय बना रहे,फलस्वरूप पुण्य के कार्यों के लिए त्यार हो और अल्लाह तआ़ला को नाराज़ करने वाले कार्यों से स्वयं को बचाके रखे।

*आप यह भी जान लें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि शुक्रवार के दिन और रात में आपका सर्वश्रष्ठ कार्य यह है कि आप नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजें,हे अल्लाह!अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्मद पर दरूद नाज़िल कर,आपके उत्तराधिकारी से प्रसन्न होजा,जो सत्य मार्ग पर स्थिर एवं मुसलमानों के ईमाम थे,तथा उनके

अनुयायियों एवं क़्यामत तक सत्य निष्ठा क साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

*हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित करदे,और अपने धर्म की रक्षा कर,हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित करदे,तू अपने और इस्लाम के शत्रुओं को नाश करदे,और अपने एकेश्वरवाद बंदों की सहायता फरमा।

*हे अल्लाह! हमें अपने देशों में शांति का जीवन प्रदान कर,हे अल्लाह!हमारे इमामों एवं हमारे शासकों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक एवं हिदायत पर चलने वाला बना दे।

*हे अल्लाह! समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक़(शक्ति)प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के लिए कृपा का कारण बना।

*हे अल्लाह! हम तुझ से दुनिया एवं आखिरत की समस्त भलाई की प्रार्थना करते हैं जो हमको मालूम है और जो नहीं मालूम,और हम तेरा शर्ण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत की समस्त बुराइयों से जो हमको मालूम है और मालूम नहीं।

*हे अल्लाह! हम तुझसे स्वर्ग मांगते हैं और वे कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कथन एवं कार्य से भी जो नरक से निकट करदे।

*हे अल्लाह! हमारे रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान कर,हमारे मृतकों पर कृपा फरमा एवं हम में से जो संकट ग्रस्त हैं,उन्हें मुक्ति प्रदान कर।

*हे अल्लाह! हमारे धर्म को सुधार दे,जो हमारे(दीन व दुनिया के)प्रत्येक कार्य की रक्षा का माध्यम है और हमारी दुनिया को सुधार दे जिस में हमारी जीविका है और हमारी आखिरत को सुधार दे जिसमें हमारा(अपने गंतव्य की ओर)लौटना है और हमारे जीवन को हमारे लिए प्रत्येक भलाई में वृद्धि का कारण बना दे और हमारी मृत्यु को हमारे लिए सब विपत्तियों से छुटकारा बना दे।

*हे हमारे रब! हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भी भलाई दे और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

عباد الله! إن الله يأمر بالعدل والإحسان وإيتاء ذي القربى، وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغي، يعظكم لعلكم تذكرون، فاذكروا الله العظيم يذكركم، واشكروه على نعمه يزدكم، ولذكر الله أكبر، والله يعلم ما تصنعون.

शीर्षक: आख़िरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े – क़िस्त ३

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रसंशा के पश्चात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कार की गई बिदअ़त(नवाचार)हैं,प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ बिदअ़त है,प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने मन और हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा मानो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जानलो कि अल्लाह तआ़ला अपने धर्म के निर्माण में,अपनी दक़दीर(भाग्य)में और बदला एवं दंड में महान नीति वाला है और अल्लाह तआ़ला की एक निति यह भी है कि उसने इस मख़्लूक़(जीव)के लिए एक अवधि निश्चित किया है जिस में उन्हें उन आ़माल(कार्यों)का बदला देगा जिनका उसने अपने संदेशवाहक द्धारा उन्हें मोकल्लफ(उत्तरदायी)बनाया है,अल्लाह का कथन है:

﴿ أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾ ﴾ [المؤمنون: ١١٥]

अर्थात:क्या तुम यह सोचते हो कि हमने तुम्हें यूं ही बेकार पैदा किया है और यह कि तुम हमारी ओर लौटाए ही न जाओगे।

ए मोमिनों!पिच्छले दो उपदोशों में आखिरत पर ईमान लाने के तक़ाज़े से संबंधित चर्चा की गई,जो कि यह हैं:सूर में फूंक मार ने पर ईमान लाना,क़्यामत की भयावहताओं पर ईमान लाना,मख़्लूक़ों(जीवों)को पुण: उठाया जाना,लोगों को मह़शर के मैदान में जमा करना,और आज हम इन्शा अल्लाह जज़ा व सज़ा एवे हिसाब व किताब के विषय में चर्चा करेंगे।

1–अल्लाह के बंदो!हिसाब व किताब एवं जज़ा व सज़ा सत्य हैं जो क़ुरान व ह़दीस एवं मुस्लमानों को र्स्वसम्मति से सिद्ध हैं,इसके सिद्ध होने का प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿ إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ﴿٢٦﴾ ﴾ [الغاشية: ٢٥ – ٢٦]

अर्थातःनिसंदेह हमारी ओर उन को लौटना है,फिर निसंदेह हमार ऊपर उनसे ह़िसाब लेना है।

तथा अल्लाह का यह कथन भी इसका प्रमाण हैः

﴿مَن جَآءَ بِٱلۡحَسَنَةِ فَلَهُۥ عَشۡرُ أَمۡثَالِهَاۖ وَمَن جَآءَ بِٱلسَّيِّئَةِ فَلَا يُجۡزَىٰٓ إِلَّا مِثۡلَهَا وَهُمۡ لَا يُظۡلَمُونَ ١٦٠﴾ [الأنعام: ١٦٠]

अर्थातःजो व्यक्ति पुण्य का काम करेगा उसको उसके दस गुणा मिलेंग,और जो व्यक्ति पाप का कार्य करेगा,उसको उसके समान ही दंड मिलेगी और उन लोगों पर अन्याय न होगा।

1.और अल्लाह का यह कथन भी इसका प्रमाण हैः

﴿وَنَضَعُ ٱلۡمَوَٰزِينَ ٱلۡقِسۡطَ لِيَوۡمِ ٱلۡقِيَٰمَةِ فَلَا تُظۡلَمُ نَفۡسٞ شَيۡـٔٗاۖ وَإِن كَانَ مِثۡقَالَ حَبَّةٖ مِّنۡ خَرۡدَلٍ أَتَيۡنَا بِهَاۗ وَكَفَىٰ بِنَا حَٰسِبِينَ ٤٧﴾ [الأنبياء: ٤٧]

अर्थातःक़्यामत के दिन हम बीच में ला रखेंगे ठीक ठीक तौलने वाली तराजू।फिर किसी पर कुछ भी अन्याय न किया जाएगा,और यदि एक राई के दाने के समान भी अ़मल होगा हम उसे उपस्थित करेंगे,और प्रयाप्त हैं हिसाब करने वाले।

2.हिसाब व किताब एवं जज़ा व सज़ा(पुण्य एवं पाप का बदला)अल्लाह की नीति का तक़ाज़ा भी है,क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने पुस्तकें उतारीं,संदेशवाहकों को भेजा,और बंदों पर यह फर्ज़ कर दिया कि वे उन संदेशवाहकों के लाए हुए संदेश को स्वीकार करें,जिस पर अ़मल करना अनिवार्य है,उस पर अ़मल करें,तथा अल्लाह के मार्ग में रोड़े एवं बाधा डालने वालों से युद्ध करना अनिवार्य है,उनका,उनकी संतान का और उनकी पत्नियों का रक्त एवं उनके धन को ह़लाल(वैध)बनाया,यदि हिसाब व किताब एवं जज़ा व सज़ा(उपकार एवं दंड)न होता तो यह शरीअ़त बेकार एवं व्यर्थ होती जिस से नीति वाला पालनहार पवित्र एवं उच्च है।

3.अल्लाह के बंदो!हिसाब व किताब दो प्रकार के हैंःएक हिसाब व किताब जो केवल(कार्यों की)प्रस्तुति से निहित होगी।दूसरा हिसाब व किताब जिसमें पूछ गछ एवं यातना होगा,उसका प्रमाण पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह ह़दीस हैःक़्यामत के दिन जिसके भी हिसाब में खोद कुरेद की गई उसको निश्चित रूप से यातना मिलेगी।

आ़यशा रज़ीअल्लाहु अंहा ने कहाःए अल्लाह के रसूल!क्या अल्लाह तआ़ला ने स्वयं नहीं फरमायाः

﴿فَأَمَّا مَنۡ أُوتِيَ كِتَٰبَهُۥ بِيَمِينِهِۦ ٧ فَسَوۡفَ يُحَاسَبُ حِسَابٗا يَسِيرٗا ٨﴾ [سورة الانشقاق:٧-٨]

कि"जिसका नामाए अ़ामाल(कार्य सूची)उसके दाएं हाथ में दिया गयाा तो जल्द ही उससे एक आसान हिसाब लिया जाएगा"।उस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि यह तो केवल प्रस्तुति होगी।(अल्लाह तअ़ाला के कहने का तात्पर्य यह है कि)क़्यामत के दिन जिस के भी हिसाब व किताब में खोद कुरेद की गई उसको निश्चित रूप से यातना मिलेगी।[1]

अल्लाह के बंदो,प्रथम प्रकार उन लोगों का होगा जिन के समझ उनके पाप रखे जाएंगे,जिनके पापों को अल्लाह ने दुनिया में छिपा रखा था,फिर क़्यामत के दिन उनके पापों को छमा प्रदान किया जाएगा,इन दोनों प्रकार के हिसाब व किताब का उल्लेख इब्ने उ़मर रज़ीअल्लाहु अन्हुमा की इस ह़दीस में आया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

अल्लाह तअ़ाला मोमिन को अपने निकट बोला लेगा और उस पर अपना पर्दा डाल देगा[2]और उसे छुपा लेगा।अल्लाह तअ़ाला उससे फरमाएगाःक्या तुझको अमुक पाप याद है?क्या अमुक पाप तुझको याद है?वह मोमिन कहेगा हां,ए मेरे रब।अंतः जब वह अपने पापों को स्वीकार करलेगा और वह सुनिश्चित हो जाएगा कि अप वह बर्बाद हो गया तो अल्लाह फरमाएगा कि में ने दुनिया में तेरे पापों पर पर्दा डाला।और आज भी में तुझे क्षमा प्रदान करता हूं,अतःउसे उसके पुण्यों की पुस्तक दे दी जाएगी।[3]

2. 4–उस दिन लोगों के अ़ामाल(कार्यों)तराजू में तौले जाएंगे ताकि लोगों के सामने अल्लाह तअ़ाला का न्याय प्रकट होसके,अल्लाह का कथन हैः

﴿وَنَضَعُ ٱلْمَوَٰزِينَ ٱلْقِسْطَ لِيَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ۖ وَإِن كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا ۗ وَكَفَىٰ بِنَا حَٰسِبِينَ ﴿٤٧﴾﴾ [سورة الأنبياء:٤٧]

अर्थातःक़्यामत के दिन हम सामने ला रखेंगे ठीक ठीक तौलने वाली तराजू।फिर किसी पर कुछ भी अन्याय नहीं किया जाएगा,और यदि एक राई के दाने के बराबर भी अ़मल(कार्य)होगा हम उसे उपस्थित करेंगे,और हम प्रयाप्त हैं हिसाब करने वाले।

- यदि कोई यह प्रश्न किःपुण्य एवं पाप कैसे नापे जाएंगे जबकि वे मानवी(अस्पृश्य)वस्तु हैं?

तो इसका उत्तर यह है किःअ़ामाल(कार्य)अल्लाह की ईच्छा से शारीरिक वस्तु में परिवर्तित हो जोएंगे,इसी प्रकार कार्यों के अतिरिक्त अन्य चीजें भी शारीरिक वस्तु का

---

[1]इसे बोखारी(6537)और मुस्लिम(2876)ने आयशा नज़ीअल्लाहु अंहा से वर्णित किया है।
[2]अपना पर्दा डाल देगा,एक कथन यह है किःअपना कृपा एवं दया से उसे ढ़ांप लेगा।देखेंः"अलनेहाया"
[3]इसे बोखारी(2441)और मुस्लिम(2768)ने वर्णित किया है।

रूप धार लेंगे,उदाहरण स्वरूप मृत्यु को लेलें,वह एक अस्पृश्य वस्तु है,स्पृश्य नहीं,किन्तु क़्यामत के दिन उसे एक मेंढ़े के रूप में लाया जाएगा और स्वर्ग एवं नरक के बीच उसकी हत्या कर दी जाएगी,फिर पुकारा जाएगाः ए स्वर्ग वालो!तुमको स्वेद रहना है कभी मृत्यु नहीं है और नरक वालो!तुमको स्वेद रहना है कभी मृत्यु नहीं है।[1]

- और यदि कोई यह प्रश्न करे कि क्या समस्त मोमिनों एवं काफिरों के आ़माल(कार्यों)को तौला जाएगा,अथवा केवल मोमिनों के कार्यों को?तो इसका उत्तर यह है किःआखिरत में केवल मोमिनों के कार्यों को ही तौला जाएगा,अतःयदि मोमिन के नामाए आ़माल(कार्य सूची)में पाप नहीं पाए गए तो उसे आरंभ ही में स्वर्ग में दाखिल कर दिया जाएगा,और यदि उसके नामाए आ़माल में पाप पाए गए तो उसे उन पापों की यातना दी जाएगी,उसके पश्चात अल्लाह तआ़ला उसे स्वर्ग में दाखिल करदेगा,अथवा आरंभ ही में उसे क्षमा प्रदान कर देगा और बिना किसी यातना के स्वर्ग में दाखिल कर देगा,जिसक कारण अथवा शिफाअ़त(परामर्श)करने वालों का परामर्श होगा अथवा मात्र अल्लाह का कृपा एवं दया होगा।रही बात काफिर की तो उसके अ़मलों को नहीं तौला जाएगा,क्योंकि अल्लाह तआ़ला उसके कार्यों का बदला दुनिया ही में स्वास्थ्य अथवा जीविका में बढ़ोतरी आदि करके देदेता है,किन्तु जब आखिरत में अल्लाह के सामने होगा तो उसके लिए नरक की यातना के अतिरिक्त कुछ और न होगा,चाहे उसने दुनिया में कितनी ही भलाई एवं पुण्य ही क्यों न किए हों,जैसा कि अल्लाह का कथन हैः

﴿أُوْلَٰٓئِكَ ٱلَّذِينَ لَيۡسَ لَهُمۡ فِي ٱلۡأٓخِرَةِ إِلَّا ٱلنَّارُۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُواْ فِيهَا وَبَٰطِلٞ مَّا كَانُواْ يَعۡمَلُونَ ١٦﴾

[سورة هود:١٦]

अर्थातःहां यही वे लोग हैं जिन के लिए आखिरत में सिवाए आग के और कुछ नहीं और जो कुछ उन्हों ने यहां किया होगा वहां सब बैकार है और जो कुछ उनके कार्य थे सब बरबाद होने वाले हैं।

तथा अल्लाह ने फरमायाः

﴿وَقَدِمۡنَآ إِلَىٰ مَا عَمِلُواْ مِنۡ عَمَلٖ فَجَعَلۡنَٰهُ هَبَآءٗ مَّنثُورًا ٢٣﴾ [سورة الفرقان:٢٣]

अर्थातःऔर उन्हों ने जो जो कार्य किए थे हम ने उनकी ओर बढ़ कर उन्हें बिखरे हुए धूल एवं गर्दों के जैसा बना दिया।

अल्लाह ने और यह भी फरमायाः

---

[1]देखेंःसही़ बोखारी(4730)और मुस्लिम(2849)।

﴿مَّثَلُ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ بِرَبِّهِمْۖ أَعۡمَٰلُهُمۡ كَرَمَادٍ ٱشۡتَدَّتۡ بِهِ ٱلرِّيحُ فِي يَوۡمٍ عَاصِفٖۖ لَّا يَقۡدِرُونَ مِمَّا كَسَبُواْ عَلَىٰ شَيۡءٖۚ﴾ [سورة إبراهيم:١٨]

अर्थातः उन लोगों का उदाहरण जिन्हों ने अपने पालने वाले से कुफ किया,उनके कार्य उस राख के जैसे हैं जिस पर आंधी वाले दिन तेज़ हवा चले।जो भी उन्हों ने किया उसमें से किसी भी चीज पर समर्थ न होंगे।

एक और स्थान पर अल्लाह ने फरमायाः

﴿وَٱلَّذِينَ كَفَرُوٓاْ أَعۡمَٰلُهُمۡ كَسَرَابِۭ بِقِيعَةٖ يَحۡسَبُهُ ٱلظَّمۡـَٔانُ مَآءً حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَهُۥ لَمۡ يَجِدۡهُ شَيۡـٔٗا﴾ [سورة النور:٣٩]

अर्थातः और काफिरों के आ़माल(कार्य)उस चमकती हुई रेत के जैसे हैं जो चटयल मैदान में हो जिसे प्यासा व्यक्ति दूर से पानी समझता है किन्तु जब उसके निकट पहुंचता है तो उसे कुछ भी नहीं पाता।

सार यह कि काफिरों एवं मोनाफिक़ों(कपठियों)का हिसाब व किताब पापों एवं पुण्य में तुलना के लिए न होगा,बल्कि उनसे उनके पापों को स्वीकार कराया जाएगा और उनको डांटा फिटकारा जाएगा,जैसा कि इब्ने उ़मर रज़ीअल्लाहु अंहुमा की ह़दीस में गुजरा,अतः उनसे उनके कार्यों को स्वीकार कराया जाएगा और उन्हें उनसे अवगत कराया जाएगा,यदि उन्हों ने अस्वीकार तो उनके शरीर के अंग उनके विरुद्ध गवाही देंगे,फिर भरे भीर में उन्हें पुकार कर कहा जाएगाः

﴿هَٰٓؤُلَآءِ ٱلَّذِينَ كَذَبُواْ عَلَىٰ رَبِّهِمۡۚ أَلَا لَعۡنَةُ ٱللَّهِ عَلَى ٱلظَّٰلِمِينَ ١٨﴾ [سورة هود:١٨]

अर्थातः ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार पर झूट कहा,सचेत रहो कि निर्दयों पर अल्लाह की लानत(श्राप)है।

उसके पश्चात उन्हें नरक में ढ़केल दिया जाएगा,अल्लाह का शरण।इससे यह ज्ञात होता है कि अल्लाह तआ़ला मोमिन के पापों पर पर्दा डाल देगा और काफिरों को(सरेआम)अपमानित करेगा।

5.मोमिनो!हिसाब व किताब का एक दृश्य यह भी होगा कि लोगों को जब हिसाब व किताब के लिए बोलाया जाएगा तो वे उदासी एवं निराशा से घुटनों के बल गिर जाएंगे,अल्लाह तआ़ला ने सूरह अलजासिया में फरमायाः

﴿وَتَرَىٰ كُلَّ أُمَّةٖ جَاثِيَةٗۚ كُلُّ أُمَّةٖ تُدۡعَىٰٓ إِلَىٰ كِتَٰبِهَا ٱلۡيَوۡمَ تُجۡزَوۡنَ مَا كُنتُمۡ تَعۡمَلُونَ ٢٨ هَٰذَا كِتَٰبُنَا يَنطِقُ عَلَيۡكُم بِٱلۡحَقِّۚ إِنَّا كُنَّا نَسۡتَنسِخُ مَا كُنتُمۡ تَعۡمَلُونَ ٢٩﴾ [سورة الجاثية:٢٨-٢٩]

अर्थातःऔर आप देखेंगे कि प्रत्येक उम्मत घुटनों के बल गिरी होगी।प्रत्येक समूह अपने नामाए अ़ामाल की ओर बोलाए जाएंगा,आज तुम्हें अपने किए का बदला दिया जाएगा।यह है तुम्हारी पुस्तक जो तुम्हारे प्रति सत्य सत्य बोल रही है,हम तुम्हारे कार्यों को लिख्वाते जाते थे।

ए मोमिनो!स्र्वप्रथम बंदा से नमाज़ के प्रति हिसाब लिया जाएगा,यदि नमाज़ सही रही तो उसके समस्त कार्य सही होंगे,और यदि उसमें गड़बड़ी पाई गई तो समस्त कार्य बिगड़े हुए होंगे।

6.मानवों के अधिकारों में बंदा से रक्त के संबंध में स्र्वप्रथम हिसाब लिया जाएगा,इसका प्रमाण पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह ह़दीस हैः"क़्यामत क दिन स्र्वप्रथम लोगों में रक्त का निर्णय किया जाएगा"।[1]

7.उस दिन मनुष्य यदि अपने बुरे कार्यों का इन्कार करेगा,तो उसके शरीर के अंग उसके विरुद्ध गवाही देंगे,अतःउसके कान,उसकी ऑखें और उसका त्वचा उसके विरुध गवाही देंगे,अल्लाह का कथन हैः

﴿وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَآءُ ٱللَّهِ إِلَى ٱلنَّارِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿١٩﴾ حَتَّىٰٓ إِذَا مَا جَآءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصَٰرُهُمْ وَجُلُودُهُم بِمَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿٢٠﴾ وَقَالُوا۟ لِجُلُودِهِمْ لِمَ شَهِدتُّمْ عَلَيْنَا ۖ قَالُوٓا۟ أَنطَقَنَا ٱللَّهُ ٱلَّذِىٓ أَنطَقَ كُلَّ شَىْءٍ ۚ وَهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢١﴾﴾ [سورة فصلت:١٩-٢١]

अर्थातःऔर जिस दिन अल्लाह के शत्रु नरक के ओर लाए जाएंगे और उन(सब)को जमा कर दिया जाएगा।यहां तक कि जब बिल्कुल नरक के निकट आजाएंगे और पर उनके कान और उनकी ऑखें और उनके त्वचे उनके कार्यों की गवाही देंगी।यह अपने त्वचों से कहेंगे कि तुम ने हमारे विरुद्ध गवाही क्यों दी,वे उत्तर देंगे कि हमें उस अल्लाह ने बोलने की शक्ति प्रदान की जिसने प्रत्येक वस्तु को बोलने की शक्ति प्रदान की है,उसी ने तुम्हें पहली बार पैदा किया और उसी के ओर तुम सब लौटाए जाओगे।

ह़सन बसरी अल्लाह के इस कथनः

﴿ٱقْرَأْ كِتَٰبَكَ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ ٱلْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ﴿١٤﴾﴾ [سورة الإسراء:١٤]

की व्याख्या में फरमाते हैंःए इब्ने आदम!तेरे रचनाकार ने तेरे साथ न्याय किया,तेरी हस्ती को ही तेरा समीक्षक बना दिया।इब्ने जरीर त़बरी ने अपनी तफसीर के अंदर उपरोक्त आयत की व्याख्या में क़तादा का यह कथन अंकित किया है किःउस दिन वह भी पढ़ने लगेगा जो दुनिया में पढ़ना नहीं जानता था।

8.ए मुसलमानो!उस दिन सत्तर हजार लोग हिसाब व किताब से अपवादित होंगे,उनसे न हिसाब व किताब होगा और न उन्हें यातना दी जाएगी–अल्लाह तअ़ाला हमें भी उनमें सम्मिलित फरमाए–वे पक्के ईमान वाले होंगे,जिन्हों ने वे समस्त आज्ञा का

[1]इसे बोखारी(6533)और मुस्लिम(1678)ने इब्ने उ़मर रज़ीअल्लाहु अन्हुमा से वर्णित किया है।

पालन किया जो अल्लाह ने उन पर अनिवार्य किया,पुण्य एवं भलाई के कार्यों में जल्दी की,वर्जित एवं अनुचित कार्यों से बचे रहे।
अबू अमामा रज़ीअल्लाहु अंहु की ह़दीस में इस बात का प्रमाण है कि उस प्रभुता से सम्मानित होने वाले लोगों की संख्या इससे अधिक होगी,आप रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"मेरे रब ने मुझसे वादा किया है कि वह मेरी उम्मत में से सत्तर हजार लोगों को स्वर्ग में दाखिल करेगा,न उनका हिसाब होगा और न उन पर कोई यातना,(फिर)प्रत्येक हजार के साथ सत्तर हजार होंगे,और उनके अतिरिक्त मेरे रब की मुठ्ठियों में से तीन मुठ्ठियों के बराबर भी होंगे"।[1]

अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको कुरान की बरकतों से मालामाल फरमाए,अल्लाह मुझे और आपको कुरान की आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभान्वित फरमाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा की प्रार्थना करता हूं,अतःआप भी उससे क्षमा प्राप्त कीजिए,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला एवं अति कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

9.अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो और यह जानलो कि हिसाब व किताब मनुष्य एवं जिन्नात दोनों में सम्मिलित है,क्योंकि जिन्नात भी संदेशवाहण की समानता के संबोधित हैं,जैसा कि ज्ञात है,वह भी (शरीअ़त के)मोकल्लफ हैं,अल्लाह तआ़ला फरमाता हैः

﴿قَالَ ٱدۡخُلُواْ فِيٓ أُمَمٖ قَدۡ خَلَتۡ مِن قَبۡلِكُم مِّنَ ٱلۡجِنِّ وَٱلۡإِنسِ فِي ٱلنَّارِۖ﴾ [سورة الأعراف:٣٨]

अर्थातःअल्लाह तआ़ला फरमाएगा कि जो समुदाय तुम से पश्चात गुजर चूके हैं जिन्नों में से भी एवं मनुष्यों में से भी,उनके साथ तुम भी नरक में जाओ।
तथा अल्लाह तआ़ला स्वर्ग के हूरो के प्रति फरमायाः

﴿لَمۡ يَطۡمِثۡهُنَّ إِنسٞ قَبۡلَهُمۡ وَلَا جَآنّٞ ٧٤﴾ [سورة الرحمن:٧٤]

[1]इसे तिरमिज़ी इत्यादि ने वर्णित किया है,और उपरोक्त शब्द तिरमिज़ी के हैंः(2437),इसकी सनद को अल्बानी रह़ीमहुल्लाहु ने सह़ी कहा है,जैसा कि "अस्सह़ीह़ा"में है।

अर्थातःइससे पहले किसी मनुष्य अथवा जिन्न ने उनको हाथ नहीं लगाया।
यह आयत साक्ष्य है कि स्वर्ग में जिन्न भी होंगे जो मनुष्यों के जैसे उसमें प्रवेश करेंगे,जब उन्हों ने संदेशवाहकों का कहा माना होगा।

10.अल्लाह के बंदो!उस दिन अल्लाह तआ़ला पशुओं को एक दूसरे से क़िसास(बदला)दिलाएगा,अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"(क़्यामत के दिन)हक़दारों को उनका पूरा पूरा अधिकार दिया जाएगा,यहां तक कि सींग वाली बकरी से बिना सींग वाली बकरी का बदला लिया जाएगा"।[1]

मतलब यह कि बिना सींग की बकरी का क़िसास उस सींग वाली बकरी से लिया जाएगा जिसने उसे सींग मारा होगा,पवित्र है वह अल्लाह जिसने अपने न्याय एवं नीति से हमारे बुद्धियों हो हैरान कर दिया।

ए अल्लाह के बंदो!ये वे दस चीजे हैं जो क़्यामत के दिन के हिसाब व किताब एवंज जज़ा व सजा पर ईमान लोने में शामिल हैं,अल्लाह तआ़ला हमें उन लोगों में शामिल फरमाए जो अपना नामाए आ़माल(कार्य सूची) दाएं हाथ से प्राप्त करें और उनका हिसाब व किताब आसान होगा।

*आप यह भी जान लें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि शुक्रवार के दिन और रात में आपका सर्वश्रेष्ठ कार्य यह है कि आप नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजें,हे अल्लाह!अपने दास एवं संदेशवाहक मोहम्मद पर दरूद नाज़िल कर,आपके उत्तराधिकारी से प्रसन्न होजा,जो सत्य मार्ग पर स्थिर एवं मुसलमानों के ईमाम थे,तथा उनके अनुयायियों एवं क़्यामत तक सत्य निष्ठा के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

*हे अल्लाह!इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित करदे,और अपने धर्म की रक्षा कर,हे अल्लाह!इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित करदे,तू अपने और इस्लाम के शत्रुओं को नाश करदे,और अपने एकेश्वरवाद बंदों की सहायता फरमा।

*हे अल्लाह!हमें अपने देशों में शांति का जीवन प्रदान कर,हे अल्लाह!हमारे इमामों एवं हमारे शासकों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक एवं हिदायत पर चलने वाला बना दे।

---

[1]इसे मुस्लिम(2582)ने रिवायत किया है।

*हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक़(शक्ति)प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के लिए कृपा का कारण बना।

*हे अल्लाह!हम तुझ से दुनिया एवं आखिरत की समस्त भलाई की प्रार्थना करते हं जो हमको मालूम है और जो नहीं मालूम,और हम तेरा शर्ण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत की समस्त बुराइयों से जो हमको मालूम है और मालूम नहीं।

*हे अल्लाह!हम तुझसे स्वर्ग मांगते हैं और वे कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हं नरक से और उन कथन एवं कार्य से भी जो नरक से निकट करदे।

*हे अल्लाह!हमारे रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान कर,हमारे मृतकों पर कृपा फरमा एवं हम में से जो संकट ग्रस्त हैं,उन्हें मुक्ति प्रदान कर।

*हे अल्लाह!हमारे धर्म को सुधार दे,जो हमारे(दीन व दुनिया के)प्रत्यक कार्य की रक्षा का माध्यम है और हमारी दुनिया को सुधार दे जिस में हमारी जीविका है और हमारी आखिरत को सुधार दे जिसमें हमारा(अपने गंतव्य की ओर)लौटना है और हमारे जीवन को हमारे लिए प्रत्येक भलाई में वृद्धि का कारण बना दे और हमारी मृत्यु को हमारे लिए सब विपत्तियों से छुटकारा बना दे।

*हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भी भलाई दे और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

शीर्षक: प्रलय के दिन पर विश्वास करने हेतु आवश्यकताएं – क़िस्त ४
(स्वर्ग की विशेषताएं)

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वश्रेष्ठ मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है एवं सबसे दुष्ट चीज़ धर्म में अविष्कार किए गए नवोन्मेष हैं प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ नवाचार है, हर नवाचार गुमराही है एवं हर गुमराही नरक की ओर ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!

अल्लाह से भयभीत रहो एवं उसका डर अपनी बुद्धि एवं हृदय में जीवित रखो, उसके आज्ञाकार बने रहो एवं अवज्ञा से वंचितर हो, ज्ञात रखो कि अल्लाह तआला अपने विधान में, अपने भाग्य (वितरण करने) में और अपने बदले एवं यातना में सर्वश्रेष्ठ बुद्धिमान है एवं अल्लाह तआला की एक बुद्धिमत्ता यह भी है कि उसने अपने सृष्टि हेतु एक समय स्थित किया है जिसमें उन्हें उन कर्मों का बदला देगा जिनको अपने भविष्यवक्ताओं के माध्यम से उन पर अनिवार्य किया, अल्लाह तआला का कथन है :

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾﴾ [سورة المؤمنون:١١٥]

अर्थात: क्या तुम्हें यह भ्रम है कि हमने तुम्हें निरर्थक पैदा किया है एवं यह की तुम हमारी ओर नहीं लौटाए जाओगे?

ए मोमिनो!

पूर्व के उपदेशों में प्रलय के दिन पर विश्वास करने हेतु आवश्यकताओं के संबंध में कुछ बातें वर्णित की गईं जैसे सूर में फूंक मारने पर ईमान लाना, क़यामत की भयावहताओं पर ईमान लाना, सृष्टि के उठाए जाने, न्याय के मैदान में मनुष्यों के एकत्रित होने एवं लाभ-व-यातना (जैसी बातों) आधारित पर थीं, एवं आज हम इन्-शा-अल्लाह स्वर्ग से संबंधित कुछ बातों का उल्लेख करेंगे जिसको अल्लाह तआला ने मोमिनों हेतु तैयार किया है:

१. स्वर्ग एवं नरक में विश्वास रखना प्रलय के दिन पर विश्वास रखने में सम्मिलित है, और ये दोनों सृष्टि का शाश्वत निवास है, स्वर्ग आनंदो का गृह है, इसे अल्लाह तआला ने उन विश्वासियों एवं धर्म निष्ठ मनुष्यों हेतु तैयार किया है जिन्हों ने हर उस आदेश पर विश्वास किया जिन पर अल्लाह ने विश्वास करना अनिवार्य किया है, इसी प्रकार उन्हों ने अल्लाह एवं उसके दूत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आज्ञाकारीता की, एवं स्वर्ग के अंदर विभिन्न प्रकार की ऐसी ऐसी विलासिताएं हैं जिनको न किसी नेत्र ने देखा, न किसी कान ने सुना एवं ना ही किसी के हृदय पर उसके संबंध में कोई विचार आया, अल्लाह का कथन है :

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ أُوْلَٰٓئِكَ هُمۡ خَيۡرُ ٱلۡبَرِيَّةِ ۞ جَزَآؤُهُمۡ عِندَ رَبِّهِمۡ جَنَّٰتُ عَدۡنٖ تَجۡرِي مِن تَحۡتِهَا ٱلۡأَنۡهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدٗاۖ رَّضِيَ ٱللَّهُ عَنۡهُمۡ وَرَضُواْ عَنۡهُۚ ذَٰلِكَ لِمَنۡ خَشِيَ رَبَّهُۥ ۞﴾ [سورة البينة:٧-٨]

अर्थात: नि:संदेह जिन्हों ने विश्वास किया एवं पुण्य-कर्म किए, यही सर्वश्रेष्ठ मनुष्य हैं, उनका बदला उनके पालनहार के निकट शाश्वत स्वर्ग हैं, जिनके नीचे दरिया बह रही है। अल्लाह तआला इनसे प्रसन्न हुआ और यह अल्लाहसे प्रसन्न हुए, यह उसके लिए है जो अपने पालनहार से भयभीत रहे।

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है :

﴿فَلَا تَعۡلَمُ نَفۡسٞ مَّآ أُخۡفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعۡيُنٖ جَزَآءَۢ بِمَا كَانُواْ يَعۡمَلُونَ ۞﴾ [سورة السجدة:١٧]

अर्थात: किसी को ज्ञात नहीं जो कुछ हमने उनके नेत्रों के ठंडक हेतु छुपा कर रखा है, यह जो कुछ पुण्य-कर्म करते थे इसी का बदला है।

२. ए विश्वासियों की मण्डली! स्वर्ग के १०० स्थान हैं, ऊबादह बिन सामित रज़िअल्लाहु अन्हू से रिवायत है वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया: स्वर्ग के १०० स्थान हैं, हर दो स्थान के बीच एक वर्ष की दूरी है, एवं अ़फ़्फान कहते हैं: उदाहरण स्वरूप आकाश एवं पृथ्वी के बीच की दूरी, और फ़िरदौस सर्वश्रेष्ठ स्थान है, एवं इसी से चार दरिया बहते हैं, एवं सिंहासन (अ़र्श) इसके ऊपर है, इस कारणवश अल्लाह से जब भी मांगो फ़िरदौस मांगो।

(अहमद: ३१६/५, मुसनद के शोधकर्ताओं ने इसे सहीह कहा है।)

३. ए मुसलमानो! स्वर्ग किसी एक बाग़ीचे का नाम नहीं बल्कि अनेक बग़ीचों का नाम है, इसी प्रकार इसकी विलासिता भी एक समान नहीं बल्कि विभिन्न प्रकार की हैं, एवं स्वर्ग के अंदर

स्वर्ग वासी भी अपने पुण्य-कर्मों के आधार पर अलग-अलग स्थानों में होंगे। इस कारण वश दो बाग़ीचे एवं उनके अंदर उपस्थित विलासिता की संपूर्ण सामग्री स्वर्ण की हैं एवं दो बाग़ीचे एवं उनके अंदर उपस्थित विलासिता की संपूर्ण सामग्री चांदी की हैं, जैसाकि प्रथम २ बाग़ीचों के संबंध में अल्लाह का कथन है :

﴿وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِۦ جَنَّتَانِ ﴿٤٦﴾﴾ [سورة الرحمن:٤٦]

अर्थात: उस व्यक्ति के लिए जो अपने पालनहार के समक्ष खड़ा होने से भयभीत हुआ; दो स्वर्ग हैं।

फिर उन दो बाग़ीचों के संबंध में अल्लाह का कथन है जिनका स्थान उपरोक्त दो बाग़ीचों की तुलना में विलासिता के संदर्भ में कुछ कम है :

﴿وَمِن دُونِهِمَا جَنَّتَانِ ﴿٦٢﴾﴾ [سورة الرحمن:٦٢]

अर्थात: उनके अतिरिक्त (उनसे कम स्थान के) दो स्वर्ग और हैं।

अल्लामा इब्ने जरीर तबरी रहिमहुल्लाह इन दोनों श्लोकों के उल्लेख में अबू मूसा अशअ़री रज़िअल्लाहु अन्हू मरफ़ूअ़न रिवायत करते हैं कि स्वर्ण के दो बाग़ीचे अल्लाह से निकट रहने वालों के लिए हैं एवं चांदी के दो बग़ीचे यमीन वालों के लिए हैं ,

अब्दुल्लाह बिन क़ैस (अबू मूसा अंशअ़री रज़िअल्लाहु अन्हू) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "दो बग़ीचे चांदी के हैं एवं उन दोनों के बर्तन व अन्य सामग्री भी चांदी के होंगे, दो बग़ीचे स्वर्ण के हैं एवं उन दोनों के बर्तन व अन्य सामग्री भी स्वर्ण के होंगे, सदैव वाले स्वर्ग में स्वर्गवासी एवं उनके पालनहार के भेंट के कुछ भी ओट नहीं होगा, परंतु सर्वोच्च पालनहार के मुखड़े पर सर्वोच्चता की चादर अवश्य होगी"। (बुख़ारी: ७४४४, मुस्लिम: १८०)

अल्लाह के दासो!

उचित होगा कि सर्वप्रथम व्यक्तियों एवं यमीन वालों के बीच जो अंतर है उसका उल्लेख कर दिया जाए, तो सर्वप्रथम व्यक्तियों का अर्थ वह लोग हैं जो अनिवार्य आदेशों एवं नवाफ़िल का कठोरता से पालन करते हैं, एवं अवज्ञा के कार्यों व दुष्कर्मों से वंचित रहते हैं, रही बात यमीन वालों की (जिनको अबरार भी कहा जाता है) तो यह लोग भी अनिवार्य आदेशों का पालन करते हैं एवं दुष्ट कार्य से वंचित रहते हैं किंतु नवाफ़िल का कठोरता से पालन नहीं करते हैं एवं कभी-कभार घृणित (मकरूह) कामों में पड़ जाते हैं, परंतु दोनों प्रकार के लोग अवज्ञा से पूर्णत: वंचित रहते हैं, चाहे उनका संबंध महापापों से हो या फिर छोटे पापों से, और फिर ये सारे

व्यक्ति क्षमा प्राप्त करने में शीघ्रता को अपनाते हैं, इस कारण वश इनकी स्थिति पूर्व की तुलना में अधिक उत्तम हो जाती है, फिर भी प्रथम व्यक्तियों की शीलता यमीन वालों की तुलना में हर प्रकार से सर्वोच्च है, सवाब के संदर्भ में अबरार व्यक्तियों की तुलना में प्रथम व्यक्तियों की श्रेष्ठता का कारण प्रसिद्ध है, वह इस कारण वश की प्रथम व्यक्तियों ने अल्लाह की आज्ञाकारी में, अवज्ञा से वंचित रहने में अधिक से अधिक परिश्रम का प्रदर्शन किया है, इसी प्रकार उन्हों ने इस्लाम के प्रचार-प्रसार की अनिवार्यता को पूरा करके, लोगों को भलाई का आदेश एवं पापों से वंचित रखने के दायित्व को संभाल कर के, युद्ध एवं दान-पुण्य के माध्यम से, दो (झगड़ते हुए) व्यक्तियों के बीच शांति उत्पन्न कर के, मस्जिद के निर्माण एवं पुण्य-कर्मों में बढ़-चढ़ कर भागीदारी लेकर के अन्य व्यक्तियों के हित में लाभदायक भी हुए हैं, रही बात अबरार की तो उपरोक्त चीज़ों में प्रथम व्यक्तिगण उनसे कहीं आगे हैं। अबरार पर प्रथम व्यक्तियों की श्रेष्ठा का एक साक्ष्य यह भी है, अल्लाह तआला का प्रथम व्यक्तियों के संबंध में कथन है :

﴿يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ﴾ [سورة الكهف:٣١]

अर्थात: जहां वो स्वर्ण के कंगन पहनाए जाएंगे।

एवं अबरार के संबंध में अल्लाह का कथन:

﴿وَحُلُّوٓاْ أَسَاوِرَ مِن فِضَّةٍ﴾ [سورة الإنسان:٢١]

अर्थात: एवं उन्हें चांदी के आभूषण पहनाए जाएंगे।

एवं अल्लाह तआला ने सूरह -ए- वाक़िअह के प्रारंभिक एवं अंतिम भाग में प्रथम व्यक्तियों एवं अबरार व्यक्तियों की विलासिताओं के बीच जो अंतर है उसकी ओर संकेत दियाहै।

४. अल्लाह के दासो! एक ही विशेषता वाले स्वर्गवासी भी आपस में विभिन्न स्थानों में होंगे, प्रथम व्यक्तिगण अपने पुण्य-कर्मों के आधार पर अलग-अलग विलासिताओं में होंगे, एवं यही बात यमीन वालों अर्थात अबरार व्यक्तियों के संग होगी, अबू सईद ख़ुदरी रज़िअल्लाहु अन्हू से रिवायत है वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया: "स्वर्गवासी अपने से उच्च स्थान वालों की ओर उसी प्रकार देखेंगे जिस प्रकार लोग पश्चिमी या पूर्वी किनारों पर चमकते हुए सितारों को देखते हैं, क्योंकि स्वर्ग वासियों का स्थान आपस में आवश्यक रूप से विभिन्न होगा, लोगों ने प्रश्न किया: हे अल्लाह के दूत! ये तो दूतों के अस्थान हैं, इनके स्थान तक कोई नहीं पहुंच सकता? आपने (उत्तर देते हुए) कहा: क्यों नहीं, उस जीव की क़सम जिस के हस्त में मेरा प्राण है! जिन्होंने अल्लाह पर विश्वास किया एवं अपने

दूत का सत्यापित किया, (नि: संदेह वो इन स्थानों को प्राप्त कर लेंगे।)" (बुख़ारी: ३२६५, मुस्लिम: २८३१)

५. ए मुसलमानो! स्वर्ग वासियों की विलासिताएं अधिक से अधिक श्रेष्ठ होती चली जाएंगे, परंतु वे पुरानी नहीं होंगी, अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "स्वर्ग में एक बाज़ार है जिसमें प्रत्येक शुक्रवार को (स्वर्ग वासी) आया करेंगे, उस दिन उत्तर की ओर से ऐसी हवा चलेगी जो उनके मुखड़ो एवं वस्त्रों पर फैल जाएगी, एवं वो लोग सुंदरता में अधिक हो जाएंगे, अपने परिवार के पास लौट कर आएंगे तो वह भी सुंदरता में बढ़े हुए होंगे, उनके परिवार वाले उनसे कहेंगे: अल्लाह की क़सम! हमारे पास से जाने के बाद तुम्हारी सुंदरता अधिक बढ़ गई है, वो कहेंगे: और तुम भी अल्लाह की क़सम! हमारे पीछे तुम लोग भी अधिक सुंदर हो गए हो। (मुस्लिम: २८३४)

६. ए अल्लाह के दासो! स्वर्ग के श्रेष्ठ विलासिताओं में से स्वर्ग की महिलाएं भी हैं, धार्मिक तथ्य इस बात को दर्शाते हैं कि प्रत्येक विश्वासियों के संग दो हूरें होंगी, साथ ही वो महिलाएं भी जो सांसारिक जीवन में उनकी पत्नियां हुआ करती थीं, एवं अल्लाह तआला विश्वासियों के पुण्य-कर्मों के अनुसार जितना चाहेगा अधिक हूरें प्रदान करेगा, हूर की विलासिता के संबंध में कई एक क़ुरआन के श्लोक एवं नबी के कथन स्थित हैं, उदाहरणस्वरूप अल्लाह का कथन है :

﴿وَحُورٌ عِينٌ ﴿٢٢﴾ كَأَمْثَالِ ٱللُّؤْلُؤِ ٱلْمَكْنُونِ ﴿٢٣﴾﴾ [سورة الواقعة:٢٢-٢٣]

अर्थात: एवं बड़ी-बड़ी नेत्रों वाली हूरें हैं जो छुपे हुए मोतियों के समान हैं।

सअ़दी का कथन है: "इस श्लोक का अर्थ वह महिलाएं हैं, जिनके नेत्रों में सुरमा होगा, वो अति सुंदर एवं परिचित होंगी, एवं (عِين) का अर्थ अधिकतम सुंदर एवं बड़ी-बड़ी नेत्र हैं, एवं स्त्रीलिंग की नेत्रों की सुंदरता उनके अति सुंदर होने का साक्ष्य हुआ करती है, एवं अल्लाह का कथन : ﴿كَأَمْثَالِ ٱللُّؤْلُؤِ ٱلْمَكْنُونِ ﴿٢٣﴾﴾(जो छुपे हुए मोती के समान हैं) अर्थात: मानो कि वह उजला चमाचम पारदर्शिता पूर्ण एवं सुंदर मोतियां हों (ٱلْمَكْنُون) ,अर्थात: वह अन्य व्यक्तियों के दृष्टि से हवाओं एवं तापमान से सुरक्षित हो, जिसका रंग अत्यंत सुंदर एवं किसी भी प्रकार की त्रुटि ना हो, जिनके अंदर किसी भी प्रकार की कोई कमी ना होगी, बल्कि पूर्णतः गुणवत्ता वाली एवं अति सुंदर होंगी, आप उनके संबंध में जितनी भी बुद्धि लगाएंगे, आपको वही मिलेगा जो आप के हृदय को प्रसन्नता एवं आपके नेत्रों को ठंडक प्रदान करेगा।" सअ़दी रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।

एक दूसरा श्लोक भी उनकी गुणवत्ता का उल्लेख करता है, अल्लाह का कथन है:

﴿كَأَنَّهُنَّ ٱلْيَاقُوتُ وَٱلْمَرْجَانُ ۝٥٨﴾ [سورة الرحمن:٥٨]

अर्थात: वो हूरें याक़ूत की एवं मूंगे के होंगी। मानो कि वह पारदर्शिता में याक़ूत की तरह एवं उजलेपन में मरजान की तरह होंगी।

(इस सम्मान पूर्वक श्लोक का यह उल्लेख इब्ने जरीर तबरी रहिमहुल्लाह ने इब्ने ज़ैद से रिवायत किया है।)

स्वर्ग वासी महिलाओं के संबंध में अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّآ أَنشَأْنَٰهُنَّ إِنشَآءً ۝٣٥ فَجَعَلْنَٰهُنَّ أَبْكَارًا ۝٣٦ عُرُبًا أَتْرَابًا ۝٣٧﴾ [سورة الواقعة:٣٥-٣٧]

अर्थात: हमने (उनकी पत्नियों) को विशेष रूप से बनाया है, एवं हमने उन्हें कवारियां बना दिया है, प्रेम करने वालियों एवं एक ही आयु की हैं।

अल्लाह का कथन (عُرُبًا) :का अर्थ यह है कि वो अपने पतियों से अत्यंत प्रेम करने वाली होंगी, एवं (أَتْرَابًا) अर्थात: सभी का आयु एक ही अर्थात ३३ वर्ष का होगा।

इसी प्रकार अल्लाह ने उनकी पारदर्शिता का उल्लेख करते हुए फ़रमाया :

﴿وَلَهُمْ فِيهَآ أَزْوَٰجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ﴾ [سورة البقرة:٢٥]

अर्थात: उनके लिए स्वच्छता पूर्वक पत्नियां हैं एवं वे उन स्वर्गों में सदैव रहने वाले हैं।

इब्ने क़य्यिम रहिमहुल्लाह का कथन है: "अर्थात वो महिलाएं माहवारी, मलमूत्र एवं प्रत्येक उन चीज़ों से पारदर्शितापूर्ण होंगी जो उनके लिए सांसारिक जीवन में दुखद हुआ करती थीं, इसी प्रकार उनका भीतरी भाग लज्जा से, अपने पतियों की क्रूरता से, उन पर निराधार आरोप लगाने से एवं अपने पतियों के अतिरिक्त अन्य पुरुषों की इच्छा से स्वच्छ होगा।" इब्ने क़य्यिम रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।

(रौज़तुल्-मुहिब्बीन)

इसी प्रकार अल्लाह ने उनकी एक गुणवत्ता यह बताई कि वह अपने पतियों के अतिरिक्त (अन्य व्यक्तियों से) अपनी निगाहें नीची रखेंगी, अल्लाह का कथन है :

﴿فِيهِنَّ قَٰصِرَٰتُ ٱلطَّرْفِ﴾ [سورة الرحمن:٥٦]

अर्थात: वहां (संकोची) नेत्रों वाली हूरें हैं।

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है :

﴿حُورٌ مَّقْصُورَٰتٌ فِى ٱلْخِيَامِ ۝٧٢﴾ [سورة الرحمن:٧٢]

अर्थात: गोरी रंगत की हूरें स्वर्ग के तंबू में रहने वालीयां हैं।
इब्ने क़य्यिम रहिमहुल्लाह का कथन है: "उनका यह गुण कि वह (स्वर्ग के तंबू में रहने वालीयां हैं) अर्थात: वह अपने पतियों के अतिरिक्त किसी अन्य के लिए श्रृंगार नहीं करेंगी बल्कि वो अपने पतियों हेतु ही विशेष होंगी, वह उनके गृहों से बाहर नहीं निकलेंगी, स्वयं को अपने पतियों हेतु इस प्रकार घेर लेंगी कि उनके अतिरिक्त (अपने पास) किसी को फटकने तक नहीं देंगी, अल्लाह पाक ने उन्हें इस प्रकार वर्णित किया है कि (तंबू में रहने वालीयां हैं) यह गुण पूर्व के गुण से कहीं अधिक अच्छा एवं पूर्ण है, इस कारण वश उनमें से एक महिला अपने पति से अथाह प्रेम एवं उनसे अपनी सहमति का प्रदर्शन करने हेतु अपने नयनों को झुकाए रखेंगी एवं उसके अतिरिक्त किसी अन्य पर उसकी निगाह नहीं पड़ेगी।" इब्ने क़य्यिम रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ। (रौज़तुल्-मुहिब्बीन)
नबी की हदीसों में उनकी गुणवत्ता एवं सुंदरता के संबंध में जिन बातों का उल्लेख किया गया है उन से बुद्धियां अचंभित रह जाती हैं, उदाहरण स्वरूप: अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु अन्हू से रिवायत है वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया: सर्वप्रथम मण्डली जो स्वर्ग में प्रवेश करेगी उनके मुख चमकते हुए चंद्रमा की तरह प्रकाशित होंगी, उनके पश्चात जो मण्डली प्रवेश करेगी उनके मुख आकाश में चमकते सितारों की तरह दीप्तिमान होंगे, संपूर्ण के हृदय एक समान होंगे, उनमें आपस में ना तो घृणा एवं बिगाड़ होगा और ना ही ईर्ष्या द्वेष (ह़सद) एवं शत्रुता (इ़नाद) होगी, प्रत्येक स्वर्ग वासी हेतु हूर -ए- ईन में से दो पत्नियां होंगी, वह इस प्रकार सुंदर होंगी के उनकी पिंडलियों का गूदा हड्डी एवं मांस के ऊपर से देखा जा सकेगा। (बुख़ारी: ३२४६, मुस्लिम: २८३४)
इब्ने ह़जर रहिमहुल्लाह का कथन है: "हूर वो हैं जिन्हें देखने के पश्चात नयन अचंभित रह जाएंगे, उनके वस्त्रों के पीछे से उनकी पिंडलियों के मांस दिखाई देंगे, देखने वाले को उनके कलेजे में पतले चमड़े एवं अति सुंदर रंगत के कारण अपना मुखड़ा आईने की तरह दिखाई पड़ेगा।" (फ़तहुल्-बारी)
अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "यदि स्वर्ग की महिलाओं में से कोई महिला पृथ्वी की ओर झांके तो आकाश से लेकर धरती तक दीप्तिमान हो जाए, एवं उसे सुगंध से भर दे, उस महिला का दुपट्टा संसार एवं उसमें उपस्थित संपूर्ण चीज़ों से अधिक अच्छा है"। (बुख़ारी: २७९६)

● लाभ हेतु एक प्रश्न: इब्ने उ़सैमीन रहिमहुल्लाह से प्रश्न किया गया: वह गुण जिनका उल्लेख हूर के लिए किया गया है; क्या वह गुण सांसारिक महिलाओं को भी सम्मिलित हैं?
उत्तर: आप रहिमहुल्लाह ने उत्तर देते हुए कहा: "जहां तक मुझे लगता है वह यह कि सांसारिक महिलाएं हूर -ए- ईन से भी अधिक श्रेष्ठ हैं यहां तक कि प्रदर्शित गुणवत्ता में भी"।
७. पेय भी स्वर्ग की विलासिता को सम्मिलित है, जिनके ४ पाठ हैं, जल, दुग्ध, दारू एवं मधु, ये संपूर्ण पेय दरियाओं में बहती हैं, जिनको विश्वासीगण पिएंगे, अल्लाह का कथन है :

﴿مَّثَلُ ٱلْجَنَّةِ ٱلَّتِى وُعِدَ ٱلْمُتَّقُونَ ۖ فِيهَآ أَنْهَٰرٌ مِّن مَّآءٍ غَيْرِ ءَاسِنٍ وَأَنْهَٰرٌ مِّن لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُۥ وَأَنْهَٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشَّٰرِبِينَ وَأَنْهَٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۖ﴾ [سورة محمد:١٥]

अर्थात: उस स्वर्ग की विशेषता जिसका धर्मनिष्ठ व्यक्तियों को वचन दिया गया है, यह है कि उसमें जल के दरिया हैं जिसमें गंध नहीं होगा एवं दूध के दरिया हैं जिसके स्वाद में परिवर्तन नहीं हुआ, दारू के दरिया हैं जो पीने वालों हेतु अधिकतम स्वादिष्ट है, एवं मधु के दरिया हैं जो कि स्वच्छ हैं।

जल के संबंध में अल्लाह का कथन (غَيْرِ ءَاسِنٍ) :इस का अर्थ है: लंबे समय तक पानी के रुकने के कारण उसमें किसी तरह का (गंध) परिवर्तन नहीं होगा,एवं अल्लाह का कथन (من غير من لبن لم يتغير طعمه طعمه بحموضة) कि खटास के कारण उसका स्वाद परिवर्तित नहीं होगा क्योंकि वह किसी पशु से नहीं निकाला गया होगा कि जिसका स्वाद बदल जाए बल्कि अल्लाह ने उसकी अलग से रचना की होगी जो स्वैद वैसा ही रहेगा, एवं अल्लाह का कथन

(مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشَّٰرِبِينَ) : इस श्लोक में इस बात की ओर संकेत है कि स्वर्ग का दारू सांसारिक दारू की तरह कड़वी नहीं होगी बल्कि मिष्ठ होगी इस दारू के संबंध में एक दूसरे श्लोक में है कि इस में (غول) नहीं है, अर्थात: इसमें कोई ऐसी चीज़ नहीं जो पेट के दु:ख का कारण बने:

﴿وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنزَفُونَ ﴿٤٧﴾﴾ [سورة الصافات:٤٧]

अर्थात: इस दारू के पीने के कारण बुद्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, एवं अल्लाह का कथनः ﴿مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۖ﴾ के अंदर इस बात की ओर ध्यान खींचना उद्देश है कि (स्वर्ग का मधु) हर उस गंदगी एवं मिलावट से सुरक्षित रहेगा जो समान रूप से सांसारिक मधु में हुआ करती है।
८. खाने एवं फल भी स्वर्ग की विलासिता का पाठ हैं, सहीह हदीस से यह बात सिद्ध है कि सर्वप्रथम स्वर्गवासियों का सत्कार मछली के कलेजे के किनारे वाले भाग से कराया जाएगा,

क्यों कि यह सबसे स्वादिष्ट होता है, और यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के स्वतंत्र नौकर सौबान रज़िअल्लाहु अन्हू की हदीस में है: एक यहूदी ज्ञानी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकट आया एवं उस ने परिक्षण लेने हेतु कुछ प्रश्न किया, इस हदीस में आया है कि उस व्यक्ति ने आप से पूछा: जब वो स्वर्ग में प्रवेश कर जाएंगे तो उन्हें उपहार स्वरूप क्या भेंट दिया जाएगा, (उपहार का अर्थ वह सर्वप्रथम वस्तु है जो अतिथि को प्रेम एवं परिचित का प्रदर्शन करने हेतु भेंट दिया जाता है) तो आपने उत्तर दिया: मछली के कलेजे का अतिरिक्त भाग, उसने कहाः इसके पश्चात उनका भोजन क्या होगा? आपने फ़रमाया: उनके लिए स्वर्ग में बैल वध किया जाएगा जो उसके किनारों में चरता फिरता है। उसने कहा इस (भोजन) पर उसका पय क्या होगा? आपने फ़रमाया उस स्वर्ग के सलसबील नाम के फ़ौवारे से... हदीस के अंत तक। (मुस्लिम: ३१५)

स्वर्ग वासियों के खाने एवं फल के संबंध में अनेक साक्ष्य हैं जिनका उल्लेख करने हेतु यहां स्थान नहीं है।

सारांशिक रूप में संपूर्ण विलासिताओं का उल्लेख अल्लाह के इस कथन में है:

﴿وَأَمۡدَدۡنَٰهُم بِفَٰكِهَةٖ وَلَحۡمٖ مِّمَّا يَشۡتَهُونَ ٢٢﴾ [سورة الطور:٢٢]

अर्थात: हम उनके हेतु फल एवं वांछित मांस की रेल-पेल कर देंगे।

९. ए मोमिनो! प्रलय में स्वर्गवासी की सर्वश्रेष्ठ विलासिता अल्लाह की दृष्टि है, सुहैब रूमी रज़िअल्लाहु अन्हू से रिवायत है वह रसूलसल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया: "जब स्वर्ग वाले स्वर्ग में प्रवेश कर जाएंगे, उस समय अल्लाह तआ़ला कहेगा: तुम्हें कोई चीज़ चाहिए जो मैं तुम्हें अतिरिक्त प्रदान करूं, वे कहेंगे: क्या तूने हमारे मुखड़ो को दीप्तिमान नहीं किया? क्या तूने हमें स्वर्ग में प्रवेश नहीं किया एवं नरक से सुरक्षित नहीं किया? रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: फिर अल्लाह तआ़ला पर्दा उठा देगा, तो उन्हें कोई चीज़ प्रदान नहीं की गई होगी जो उन्हें अपने सर्वोच्च पालनहार की दृष्टि से अधिक प्रिय हो"। (मुस्लिम: १८१)

९- ए मुसलमानो! स्वर्गवासियों की नेमतों में बढ़ोतरी होती रहेगी और वह कभी पुरानी नही होगी, अनस बिन मालिक रज़ीअल्लाहु अ़हु नबी सलल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फरमाया: स्वर्ग में प्रत्येक शुक्रवार को एक बाज़ार लगेगा, जिस में उत्तर की ओर से हवा चलेगी जो स्वर्गवासियों के चेहरों एवं वस्त्र से लगके गुजरेगी, जिससे उनकी सुंदरता में बढ़ोतरी हो जाएगी और जब वे अपने परिवार वालों के पास लौट कर जाएंगे तो वे कहेंगे:

अल्लाह की क़सम हमारे पश्चात तुम्हारी सुंदरता बढ़ गई, वे लोग भी कहेंगे: अल्लाह की क़सम हमारे पश्चात तुम्हारी सुंदरता भी बढ़ गई।

ए मुसलमानो! स्वर्ग एवं उसकी विलासिता के संबंध में बातें बहुत हैं, जिसको स्वर्ग एवं स्वर्ग वासियों की विलासिता के संबंध में अधिक जानकारी प्राप्त करने की इच्छा हो तो उसे इब्ने क़य्यिम रहिमहुल्लाह की पुस्तक [حادي الأرواح إلى بلاد الأفراح]: का अध्ययन करना चाहिए।

अल्लाह तआ़ला हमें एवं आपको सर्वश्रेष्ठ क़ुरआन के लाभों से लाभार्थी करे, मुझे एवं आप को क़ुरआन के श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाहों से लाभार्थी करे, मैं अपनी यह बात कहते हुए अपने लिए एवं आप संपूर्ण के लिए अल्लाह से क्षमा मांगता हूं, आप भी उससे क्षमा प्रार्थी हों। निःसंदेह वह अधिक क्षमा स्वीकार करने वाला एवं अधिकतम दया करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد!

प्रशंसाओं के पश्चात!

ज्ञात रखिए -अल्लाह आप पर कृपा करे- कि मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने पालनहार से प्रश्न किया एवं कहा: स्वर्ग में निम्नतम स्तर का (स्वर्ग वासी) कौन होगा? अल्लाह तआ़ला ने उत्तर देते हुए कहा: वह (ऐसा) व्यक्ति होगा जो संपूर्ण स्वर्ग वासी के स्वर्ग में भेज दिए जाने के पश्चात आएगा, तो उसे कहा जाएगा: स्वर्ग में प्रवेश कर ले, वह कहेगा: मेरे पालनहार! कैसे? लोग अपने स्थानों पर स्थित हो चुके हैं, एवं जो कुछ प्राप्त करना था वह कर चुके हैं, तो उसे कहा जाएगा: क्या तुम इससे प्रसन्न हो जाओगे कि तुम्हें संसार के राजाओं में से किसी राजा के देश के समान मिल जाए? वह कहेगा: मेरे पालनहार! मैं प्रसन्न हूं, अल्लाह कहेगा: वह तुम्हारा हुआ, फिर इसी के समान और, फिर इसी के समान और, फिर इसी के समान और, फिर इसी के समान और, फिर इसी के समान और, पांचवी बार वह व्यक्ति (अचानक) कहेगा: मेरे पालनहार! मैं प्रसन्न हो गया, अल्लाह तआ़ला कहेगा यह (संपूर्ण) भी तेरा एवं इसके अतिरिक्त १० गुना भी तेरा, एवं वह सब कुछ भी तेरा जो तेरा मन चाहे, एवं जो तेरे नेत्रों को भाए, वह कहेगा: ए मेरे पालनहार! मैं प्रसन्न हूं, फिर (मूसा अलैहिस्सलाम) ने कहा: ए मेरे पालनहार! वह तो सबसे उच्च स्तर का है, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: यही वो व्यक्तिगण है जो मेरी इच्छा हैं, उनके सम्मान को मैंने अपने हाथों से बोया है एवं उस पर मोहर लगा दी, (जिसके हित में चाहा सुरक्षित कर लिया) (सम्मान) का वह (स्थान) न किसी नेत्र ने देखा ना किसी

कान ने सुना एवं न किसी के हृदय में इसके संबंध में विचार आया। (इस हदीस को मुस्लिम: १८९ ने मुग़ीरा बिन शोअ्‌बा रज़िअल्लाहु अन्हू से रिवायत किया है।)

१०. ए मुसलमानो के समूह! स्वर्ग एवं नरक सदैव स्थित रहने वाले हैं, वो ना ही नष्ट होंगे एवं ना ही समाप्त होंगे, इसका साक्ष्य क़ुरआन एवं हदीस के बाह्य ग्रंथ हैं, स्वर्ग में मोमिनों के एवं नरक में का फिरों से सदैव रहने के साक्ष्य क़ुरआन के अंदर कई एक का स्थान पर आए हैं, एवं जिन लोगों ने उनके नष्ट होने की बात की है उन का कथन इतना दुर्बल है कि उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता, क्योंकि वह धार्मिक ग्रंथ के बाह्य अर्थ के विरुद्ध है, एवं अल्लाह तआ़ला ने लोगों को ऐसी बातों से संबोधित किया है जो वो भली भांति समझ सकते हैं, इस कारण वश ग्रंथों का अवतार जिस प्रकार हुआ है उसी प्रकार बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार करना अनिवार्य है।

११. ए विश्वासियों की मण्डली! स्वर्ग और नरक दो ऐसी सृष्टि हैं जो अभी भी स्थित हैं, इसका साक्ष्य अल्लाह का कथन है :

﴿ وَسَارِعُوٓاْ إِلَىٰ مَغۡفِرَةٖ مِّن رَّبِّكُمۡ وَجَنَّةٍ عَرۡضُهَا ٱلسَّمَٰوَٰتُ وَٱلۡأَرۡضُ أُعِدَّتۡ لِلۡمُتَّقِينَ ١٣٣ ﴾

[سورة آل عمران:١٣٣]

अर्थात: अपने रब की क्षमा की ओर एवं उस स्वर्ग की ओर दौड़ो जिसकी चौड़ाई आकाश एवं पृथ्वी के समान है, जो धर्म निष्ठ व्यक्तियों हेतु तैयार की गई है।

इस कथन के अंदर साक्ष्य स्वरूप (أُعِدَّتۡ) अर्थात "तैयार की गई है"।

एवं हदीस से साक्ष्य: रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बिलाल रज़िअल्लाहु अन्हू से कहना: मुझे वह पुण्य-कर्म बताओ जो तुमने इस्लाम के स्वीकार करने के पश्चात किया हो, एवं तुम्हारे यहां वह ज़्यादा आशा वाला हो, क्योंकि स्वर्ग में अपने आगे आगे तुम्हारे जूतों की आहट सुनी है।

(इस हदीस को बुख़ारी: ११४९ एवं मुस्लिम: २४५८ ने रिवायत किया है एवं उल्लेख किए गए शब्द मुस्लिम के हैं।)

इसी प्रकार स्वर्ग की सृष्टि एवं वर्तमान काल में इसके स्थित रहने का साक्ष्य रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह कथन भी है (أدخلت الجنة)" :अर्थात: "मुझे स्वर्ग में प्रवेश कराया गया, वहां क्या देखता हूं कि मोतियों के गुंबद हैं एवं वहां की मिट्टी कस्तूरी के समान सुगंधित है..."।

(इसरा की हदीस का एक पाठ है जिसे मुस्लिम: १६३ ने अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहु अन्हू से रिवायत किया है।)

ऐ अल्लाह के दासो!

अल्लाह के बंदो! स्वर्ग एवं नरक सदैव रहने वाले हैं कभी भी स्माप्त होने वाले नहीं हैं, क़ुर्आन एवं ह़दीस में स्पष्ट रूप से इस विष्य में प्रमाण आए हुए हैं, और यह भी प्रमाणित है कि स्वर्ग वासी सदैव स्वर्ग में और नरकवासी सदैव नरक में रहेंगे, और जो भी यह कहता है कि स्वर्ग एवं नरक सदैव रहने वाले नहीं हैं तो उनकी बात गलत है क्योंकि यह प्रमाणों के विरूद्ध है, क्योंकि क़ुर्आन एवं ह़दीस में जो कुछ भी इस विष्य में आया है हमारे लिए उनका मानना अनिवार्य है।

यह वह दस बातें हैं जो स्वर्ग पर विश्वास रखने को सम्मिलित हैं, प्रत्येक विश्वासियों हेतु इनसे अवगत होना अनिवार्य है, ताकि स्वर्ग उसकी बुद्धि पर सवार रहे, एवं पुण्य-कर्म करने हेतु सतर्क रहे, एवं अभद्रता व आलस्य से वंचित रहे।

हे अल्लाह! मैं तुझ से ऐसी कथनी और हम करनी (की शक्ति) की मांग करता हूं जो स्वर्ग के निकट कर दे, एवं ऐसी कथनी एवं करने से अपनी शरण में ले ले जो मुझे नरक के निकट कर दे, हे अल्लाह! तू मेरे लिए धर्म को ठीक कर दे जो मेरे धर्म एवं संसार की सुरक्षा का माध्यम है, एवं मेरे सांसारिक जीवन को ठीक कर दे जिस में मेरा जीवन है, एवं मेरे प्रलय के दिन को ठीक कर दे जिसमें मेरे अपने स्थान की ओर पलटना है, एवं मेरे जीवन को मेरे लिए प्रत्येक भलाई में बढ़ोतरी का कारण बना दे, और मेरे मृत्यु को मेरे लिए प्रत्येक प्रकार की बुराई से संतुष्टि का सामान बना दे।

हे हमारे पालनहार! हमें संसार में पुण्य दे, एवं प्रलय में भलाई प्रदान कर, एवं हमें नरक की यातना से वंचित रख।

اللهم صل وسلم على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

शीर्षक: आख़िरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े – क़िस्त ५

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَه إِلَّا اللّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रसंशा के पशचात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कार की गई बिदअ़त(नवाचार)हैं,प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ बिदअ़त है,प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने मन और हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा मानो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जानलो कि अल्लाह तआ़ला अपने धर्म के निर्माण में,अपनी दक़दीर(भाग्य)में और बदला एवं दंड में महान नीति वाला है और अल्लाह तआ़ला की एक निति यह भी है कि उसने इस मख़्लूक़(जीव)के लिए एक अवधि निश्चित किया है जिस में उन्हें उन आ़माल(कार्यों)का बदला देगा जिनका उसने अपने संदेशवाहक द्वारा उन्हें मोकल्लफ(उत्तरदायी)बनाया है,अल्लाह का कथन है:

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾﴾ [سورة المؤمنون:١١٥]

अर्थात: क्या तुम यह सोचते हो कि हमने तुम्हें यूं ही बेकार पैदा किया है और यह कि तुम हमारी ओर लौटाए ही न जाओगे।

ए मोमिनो! विच्छले दो उपदेशों में आखिरत के दिन पर ईमान लोन के तक़ाज़े के संबंध में चर्चा की गई,जो कि ये हैं: सूर में फूंक मार ने पर ईमान लाना,क़्यामत की भयावहताओं पर ईमान लाना,मख्लकों का पुनःउठाया जाना,लोगों को मह़शर के मैदान में जमा करना,जज़ा व सज़ा एवं हिसाब व किताब एवं स्वर्ग की नमत,आज हम ईन्शा अल्लाह नरक की विशेषण एवं गुणवत्ता पर चर्चा करेंगे।

1.अल्लाह के बंदो!आखिरत के दिन पर ईमान लाने में स्वर्ग एवं नरक पर और इस बात पर ईमान लाना शामिल है कि ये दोनों मख़्लूक़(जीव)का स्थायी निवाय हैं,अतःस्वर्ग नमत(आशीर्वाद)का घर है जिसे अल्लाह ने मोमिन एवं मुत्तक़ी(धार्मिक)बंदों के लिए तैयार किया है,और नरक यातना का घर है जिसे अल्लाह तआ़ला ने दो प्रकार के

लागों के लिए तैयार किया है: काफिर और वह मोमिन जो कबीरा गुनाह(विशाल पाप)को करते हैं।

2.ए मोमिनो!नरक में जाने वाले मोमिनों देने में अल्लाह की नीति यह है कि उन्हं पापों से पवित्र किया जा सके,उसके पश्चात अल्लाह तआ़ला उन्हें स्वर्ग में प्रवेश प्रदान करेगा,इस लिए वहां केवल पवित्र हसतियां ही प्रवेश करेंगी,और पाप गन्दगी एवं अपवित्रता से निर्मित है,इस लिए पहले इन पापों से पवित्र करना वाजिब(अनिवार्य)है,यह अल्लाह पाक की नीति है,किंतु अल्लाह तआ़ला बड़े पाप करने वाले एकेश्वरवाद बंदों को क्षमा प्रदान करके उन्हें बिना किसी यातना के भी स्वर्ग में दाखिल कर सकता है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَغۡفِرُ أَن يُشۡرَكَ بِهِۦ وَيَغۡفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَآءُۚ وَمَن يُشۡرِكۡ بِٱللَّهِ فَقَدِ ٱفۡتَرَىٰٓ إِثۡمًا عَظِيمًا ۝٤٨﴾

[سورة النساء:٤٨]

अर्थात: निसंदेह अल्लाह तआ़ला अपने साथ शरीक किए जाने को क्षमा नहीं करता और उसके अतिरिक्त जिसे चाहे क्षमा प्रदान करता है।

अत:अल्लाह तआ़ला जिसे क्षमा करदे,तो यह उसका कृपा है,और जिसे यातना दे,तो यह उसका न्याय है,रही बात काफिर की तो उसे यातना में डालने में अल्लाह की नीति यह है कि उसी अपमानित किया जाए,इस यातना का उद्देश्य उसकी पवित्रता नहीं होती,क्योंकि ख़बासत (गंदगी) उसके आंतरिक में जड़ जमा चुकी होती है,जो आग से भी दूर नहीं होगी,इस लिए वह स्वेद ही नरक में रहेगा,अल्लाह की शरण।[1]

3.नरक में अनेक प्रकार की यातना होगी,जो हमारे विचार एवं सोच में भी नहीं आ सकती,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّآ أَعۡتَدۡنَا لِلظَّٰلِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمۡ سُرَادِقُهَاۚ وَإِن يَسۡتَغِيثُواْ يُغَاثُواْ بِمَآءٖ كَٱلۡمُهۡلِ يَشۡوِي ٱلۡوُجُوهَۚ بِئۡسَ ٱلشَّرَابُ وَسَآءَتۡ مُرۡتَفَقًا ۝٢٩﴾ [سورة الكهف:٢٩]

अर्थात: निश्चय हमने अत्याचारों के लिये ऐसी अग्नि तैयार कर रखी है जिस की प्राचीर (वह दीवार जो नरक के चारो ओर बनाई गई है)ने उन को घेउ लिया है,और यदि वह(जल के लिए)गुहार करेंगे तो उन्हें तेल की तलछट के समान जल दिया जायेगा जो मुखों को भून देगा,वह किया ही बुरा पेय है!और वह किया ही बुरा विश्राम है।!

तथा अल्लाह ने अधिक फरमाया:

---

[1]देखें:"अज़्वाउल बयान"में सूरह अलजासिया की इस आयत की व्याख्या،﴿ولهم عذاب مهين﴾:आयत:9

﴿إِنَّ ٱللَّهَ لَعَنَ ٱلْكَٰفِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ﴿٦٤﴾ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدًا ۖ لَّا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿٦٥﴾ يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِى ٱلنَّارِ يَقُولُونَ يَٰلَيْتَنَآ أَطَعْنَا ٱللَّهَ وَأَطَعْنَا ٱلرَّسُولَا۠ ﴿٦٦﴾﴾ [سورة الأحزاب:٦٤-٦٤]

अर्थातः अल्लाह ने धिक्कार किया है काफिरों को।और तैयार कर रखी है उनके लिए दहकती अग्नि।वे सदावासी होंगे उस में।नहीं पायेंगे कोई रक्षक और न कोई सहायक।जिस दिन उलट पलट किये जायेंगे उन के मुख अग्नि में,वे कहेंगेःहमारे लिये क्या ही अच्छा होता की हम कहा मानते अल्लाह का तथा कहा मानते रसूल का!।

4.ज्ञात हुआ कि काफिर स्वेद के लिए नरक में रहेंगे,किंतु पापी मोमिनों को लंबे समय तक उसमें रखा जाएगा–यदि अल्लाह ने क्षमा नहीं किया–तो एक निश्चित समय तक उसमें यातना चखेंगे,अपने किये हुए पापों के बराबर यातना पाएंगे,जैसे जीभ के पाप,अथवा योनी के पाप,अथवा परिजनों से संबंध तोड़ना,अथवा ह़राम(गाने एवं बातें)सुन्ना,अथवा ह़राम चीज की ओर देखना,अथवा ह़राम धन खाना इत्यादि,अतःसज्दा के स्थानों को आग नहीं छू सके गी,इससे नमाज़ का स्थान स्पष्ट होता है,उनमें से किसी के टखने तक अग्नि पहुंचेगी तो किसी के घुटने तक,किसी की कमर तक पहुंचे गी,जहां नाड़ा बांधा जाता है,और उनमें से किसी की हंस्ली की हड्डी तक।[1]इसका अर्थ वह हड्डी है जो हलक़ और गरदन के बीच में होती है,यह इस बात का प्रमाण है कि कठोरता एवं सुगमता के रूप से उनकी यातना विरुद्ध होगा,अतःजब वह अपनी यातना चख लेंगे तो उन्हें नरक से निकाल लिया जाए जबकि वह जल कर काला हो चुके होंगे,उसके बाद उन्हें स्वर्ग के प्रारंभिक भाग में स्थित एक नहर डाला जाएगा,जिसे आबे ह़यात(अमृत)कहा जाता है,अतःवह ऐसे वृद्धि पाएंगे जिसे प्राकृतिक बीज पानी के बहाउ में उगता है।[2]जब पापी मोमिन अपने पापों से पवित्र होजोएंगे तब उन्हें स्वर्ग में प्रवेश किया जाएगा।

5.नरक का आकार बहुत बड़ा है,उसका दृश्य भ्यावक और उसकी झुलस बहुत कठोर है,उसके आकार के बड़े होने का प्रमाण अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ीअल्लाहु अंहु की ह़दीस है,वह फरमाते हैंः मोह़म्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःउस दिन नरक को इस अवस्था में लाया जाएगा कि उसमें सत्तर हजार लगाम लगे होंगे,हर लगाम को सत्तर हजार देवदूत पकड़ कर घसीट रहे होंगे।[3]

6.उसका दृश्य भ्यावक होगा,यह अल्लाह तआ़ला के इस फरमान से ज्ञात होता हैः

---

[1]इसे मुस्लिम(2845)ने सुमरा बिन जुन्दुब रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

[2]देखेंःसही बोखारी(7439,7437)और मुस्लिम(182)जिसे अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु ने रिवायत किया है।

[3]देखेंःसही मुस्लिम(2724),यह कथन मरफू ह़दीस के स्थान में है,जैसा कि ह़दीस का ज्ञान रखने वाले इससे अवज्ञत हैं।

﴿إِنَّهَا تَرۡمِي بِشَرَرٖ كَٱلۡقَصۡرِ ۝٣٢﴾ [سورة المرسلات:٣٢]

अर्थातः वह (अग्नि) फेंकती होगी चिंगारियां भवन के समान।

ज्ञात हुआ कि नरक की चिंगारियॉ अपने आकार में महल के समान है,(आयत में अंकित शब्द)قصرة,قصر का बहुवचन है,जिसका अर्थ वृक्ष के जड़ होते हैं,[1]अतःनरक से उड़ने वाली चिंगारियॉ वृक्ष की जड़ों के समान होगी,हम अल्लाह का शरण चाहते हैं।

7.उसकी झुलस के भीषण ताव का प्रमाण पैगंबर सललाहु अलैहि वसल्लम की यह हदीस बतलाती हैः"तुम्हारी दुनिया की अग्नि नरक की अग्नि का सत्तरवॉ(70)अंश है,पूछा गयाःए अल्लाह के रसूल!यह दुनिया की अग्नि ही प्रयाप्त थी।आपने फरमायाःवह अग्नि इस पर उन्हत्तर(69)गुना अधिक कर दी गई है और इसका प्रत्येक भाग दुनिया की अग्नि के जितना गर्म है।[2]

8.ए मुसलमानो!नरक के सात द्वार हैं,उनमें से प्रत्येक द्वार के लिए लोगों का एक विशेष एवं ज्ञात भाग बटा हुआ है,अल्लाह का कथन हैः

﴿وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوۡعِدُهُمۡ أَجۡمَعِينَ ۝٤٣ لَهَا سَبۡعَةُ أَبۡوَٰبٖ لِّكُلِّ بَابٖ مِّنۡهُمۡ جُزۡءٞ مَّقۡسُومٌ ۝٤٤﴾ [سورة الحجر:٤٣-٤٤]

अर्थातःऔर वास्तव में उन सब के लिये नरक का वचन है।उस(नरक)के सात द्वार हैं,और उन में से प्रत्येक द्वार के लिये एक विभाजित भाग है।

9.नरक वासियों के खाने भी उनके श्रेणी के अनुरूप भिन्न भिन्न होंगे,क्योंकि नरक वासियों की यातना उनके पापों के अनुरूप मात्रा एवं गुणवक्ता में एक दूसरे से भिन्न होगा,कुछ नरक वासियों का खाना पीप होगा।अल्लाह का कथन हैः

﴿وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنۡ غِسۡلِينٖ ۝٣٦﴾ [سورة الحاقة: ٣٦]

अर्थातःऔर न कोई भाजन,पीप के सिवा।

ग़िसलीन का अर्थ नरक वासियों के घावों से बहने वाला पीप है।

कुछ नरक वासियों का खाना कांटे वाले वृक्ष होंगे,अर्थात सूखे कांटे वाले पौधे होंगे,अल्लाह ने फरमायाः

---

[1]देखेंःतफसीर इब्ने जरीर त़बरी में उपरोक्त आयत की व्याख्या।

[2]इसे बोखारी(3265)और मुस्लिम(2843)ने अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से रिवायत किया है और उपरोक्त शब्द बोखारी के हैं।

﴿لَّيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِن ضَرِيعٍ ۝٦﴾ [سورة الغاشية: ٦]

अर्थातःउनके लिये कटीली झाड़ के सिवा कोई भोजन सामग्री नहीं होगी।

कुछ नरक वासियों का खाना थूहर का वृक्ष होगा,अल्लाह फरमाता हैः

﴿ إِنَّ شَجَرَتَ ٱلزَّقُّومِ ۝٤٣ طَعَامُ ٱلْأَثِيمِ ۝٤٤ كَٱلْمُهْلِ يَغْلِي فِي ٱلْبُطُونِ ۝٤٥ كَغَلْيِ ٱلْحَمِيمِ ۝٤٦ ﴾ [سورة الدخان: ٤٣-٤٦]

अर्थातः

ज़क़्क़ूम वह पैड़ है जो नरक की जड़ से निकलता है,और देखने और खाने में बहुत खराब होता है,अल्लाह का फरमान हैः

﴿ أَذَٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ ٱلزَّقُّومِ ۝٦٢ إِنَّا جَعَلْنَٰهَا فِتْنَةً لِّلظَّٰلِمِينَ ۝٦٣ إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيٓ أَصْلِ ٱلْجَحِيمِ ۝٦٤ طَلْعُهَا كَأَنَّهُۥ رُءُوسُ ٱلشَّيَٰطِينِ ۝٦٥ فَإِنَّهُمْ لَأَكِلُونَ مِنْهَا فَمَالِـُٔونَ مِنْهَا ٱلْبُطُونَ ۝٦٦ ﴾ [الصافات: ٦٢-٦٦]

अर्थातःक्या यह अतिथ्य उत्तम है अथवा थोहड़ का वृक्ष।हम ने उसे अत्याचारियों के लिये एक परीक्षा बनाया है।वह एक वृक्ष है जो नरक की जड़(तह)से निकलती है।उसके गुच्छे शैतानों के सिरों के समान हैं।तो वह(नरकवासी)खाने वाले हैं उस से।फिर भरने वाले हैं उस से अपने पेट।

10.जहां तक नरक वासियों के पेय की बात है तो उन्हें गर्म पानी पिलाया जाएगा और उनके सरों पर बहाया जाएगा,इसके माध्यम से उन्हें शरीर के बाह्यभागों को भी यातना दी जाएगी और पेट केआंतरिक भागों को भी,जिस से उनकी खालें गल जाएंगी और आंतें कट जाएंगी,अल्लाह ने फरमायाः

﴿ هَٰذَانِ خَصْمَانِ ٱخْتَصَمُوا۟ فِي رَبِّهِمْ ۖ فَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّن نَّارٍ يُصَبُّ مِن فَوْقِ رُءُوسِهِمُ ٱلْحَمِيمُ ۝١٩ يُصْهَرُ بِهِۦ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَٱلْجُلُودُ ۝٢٠ ﴾ [سورة الحج: ٢٠]

अर्थातःतो इन में से काफिरों के लिये ब्योंत दिये गये हैं अग्नि के वस्त्र,उन के सिरों पर धारा बहायी जायेगी खौलते हुये पानी की।जिस से गला दी जायेंगी उन के पेटों के भीतर की वस्तुयें और उनकी खालें।

तथा अल्लाह ने अधिक फरमायाः

﴿وَسُقُوا۟ مَآءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَآءَهُمْ ﴾ [سورة محمد: ١٥]

अर्थातःतथा पिलाये जायेंगे खौलता जल जो खण्ड–खण्ड कर देगा उन की ऑतों को।

नरक वासियों की यातना के लिए पेयों के और भी प्रकार होंगे जिन की ओर अल्लाह तआ़ला ने अपने इस कथन में इशारह किया है:

﴿هَٰذَا فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَغَسَّاقٌ ۝٥٧ وَءَاخَرُ مِن شَكْلِهِۦٓ أَزْوَٰجٌ ۝٥٨﴾ [ص: ٥٧-٥٨]

अर्थात:यह है।तो तुम चखो खौलता पानी तथा पीप।तथा कुछ अन्य इसी प्रकार की विभिन्न यातनायें।

ग़स्साक़ के अर्थ हैं:नरक वासियों की खालों से पहने वाली पीप।

11.क़्यामत के दिन तीन प्रकार के लोगों को सबसे कठोर यातना दी जाएगी,वे तीन प्रकार के लोग ये हैं:फिरऔ़न और उसके अनुयायी,बनु इसराइल में से वे लोग जिन्हों ने कुफ्र किया,और मोनाफेक़ोन(पाखंडियों),इसका प्रमाण अल्लाह तआ़ला का यह फरमान है:

﴿وَيَوْمَ تَقُومُ ٱلسَّاعَةُ أَدْخِلُوٓاْ ءَالَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ ٱلْعَذَابِ﴾ [سورة غافر: ٤٦]

अर्थात:जिस दिन क़्यामत आयेगी(फरमान होगा कि)फिरऔ़नियों को सबसे कठोर यातना में डालदो।

तथा अल्लाह तआ़ला ने बनी इसराइल के प्रति फरमाया:

﴿فَمَن يَكْفُرْ بَعْدُ مِنكُمْ فَإِنِّيٓ أُعَذِّبُهُۥ عَذَابًا لَّآ أُعَذِّبُهُۥٓ أَحَدًا مِّنَ ٱلْعَٰلَمِينَ ۝١١٥﴾ [سورة المائدة: ١١٥]

अर्थात:फिर उसके पश्चात भी जो कुफ्र(अविश्वास)करेगा,तो मैं निश्चय उसे दण्ड दूँगा,ऐसा दण्ड कि संसार वासियों में से किसी को वैसा दण्ड नहीं दूंगा।

और अल्लाह तआ़ला ने मोनाफिक़ों(पाखंडियों)के विषय में फरमाया:

﴿إِنَّ ٱلْمُنَٰفِقِينَ فِى ٱلدَّرْكِ ٱلْأَسْفَلِ مِنَ ٱلنَّارِ﴾ [سورة النساء:١٤٥]

अर्थात:निश्चय मोनाफिक़(द्विधावादी)नरक की सब से नीची श्रेणी में होंगे।

12.क़्यामत के दिन सबसे हलके(और कम)यातना वाला व्यक्ति होगा जिस के पांव के नीचे दो अंगारे रखे जाएंगे जिनके कारण उसकी बुद्धिखौल रहा होगा।[1]

13.सारे के सारे लोग नरक से गुजरेंगे,चाहे वह मोमिन हो अथवा काफिर,जैसा कि अल्लाह का कथन है:

[1]इसे बोखारी(6561)और मुस्लिम(213)ने उ़समान बिन बशीर से वर्णित किया है।

﴿وَإِن مِّنكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا ﴿٧١﴾﴾ [سورة مريم:٧١]

अर्थातःऔर नहीं है तुम में से कोई परन्तु वहां गुजरने वाला है,यह आप के पालनहार पर अनिवार्य है जो पूरा हो कर रहेगा।

किंतु जिन मोमिनों को अल्लाह तआ़ला मुक्ति देना चाहेगा,उन्हें अग्नि छू भी नहीं सके गी,बल्कि वह उसके ऊपर(पुल)सरात से गुजर जाएंगे और अग्नि उन्हें नहीं छू सके गी,किंतु अल्लाह तआ़ला जिसे यातना देना चाहेगा,चाहे वह पापी मोमिन हो अथवा काफिर,तो पुल सरात से लग हुऐ आंकड़े(कांटेदार कील)उसे उचक लेंगे और नरक में डाल देंगे,किंतु मोमिनों को उनके पापों के बराबर ही नरक की यातना दी जाएगी,उसके पश्चात उन्हें वहां से निकाल कर स्वर्ग में प्रवेश कर दिया जाएगा,किंतु मोनाफिक़ों को स्वेद के लिए नरक में ही रहना होगा,उपरोक्त आयत के अंत में अल्लाह तआ़ला के इस कथन का यही अर्थ है:

﴿ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوا وَّنَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ﴿٧٢﴾﴾ [سورة مريم:٧٢]

अर्थातःफिर हम उन्हें बचा लेंगे जो डरते रहे,तथा उस में छोड़ देंगे अत्याचारियों को मुंह के बल गिरे हुये।

आयत में आए शब्द جِثِيًّا के अर्थ हैं:घुटनों के बल गिरना,जो कि बैठने के जैसा है,क्योंकि मनुष्य घुटनों के बल उसी समय बैठता है जब उसे पर कोई संकट आती है।[1]

14.नरक वासियों को अत्यंत प्यास की स्थिति में नरक की ओर हांक कर लाया जाएगा,अल्लाह का कथन है:

﴿وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾﴾ [سورة مريم:٨٦]

अर्थातःतथा हांक देंगे पापियों को नरक की ओर प्यासे पशुओं के समान।

आयत में आए शब्द وِرد का मूल अर्थ है:जल के निकट आना,चूंकि जल के मनुष्य प्यास के कारण ही आता है,इस लिए यहां प्यासी समूह पर शब्द وِرد को लाया गया है।

15.उस दिन नरक वासियों के कुछ चिन्ह होंगी जिन से देवदूत उन्हें पहचान लेंगे,जब उन्हें पहचान लेंगे तो उन्हें उनके ललाटों एवं पैरों से पकड़ कर पूरी शक्ति एवं कठोरता के साथ नरक में फेंक देंगे,अल्लाह की शरण।अल्लाह का कथन है:

[1]देखें:तफसीर इब्ने जरीर में उपरोक्त आयत की व्याख्या।

﴿يُعۡرَفُ ٱلۡمُجۡرِمُونَ بِسِيمَٰهُمۡ فَيُؤۡخَذُ بِٱلنَّوَٰصِي وَٱلۡأَقۡدَامِ ۝٤١﴾ [سورة الرحمن:٤١]

अर्थातःपहचान लिये जाएंगे अपराधी अपने मुखों से,तो पकड़ा जायेगा उन के माथे के बालों और पैरों को।

﴿يَوۡمَ يُدَعُّونَ إِلَىٰ نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ۝١٣﴾ [سورة الطور:١٣]

अर्थातः जिस दिन वह धक्के दे दे कर नरक की अग्नि की ओर लाए जाएंगे।

يُدَعُّونَ का अर्थ है:पूरे शक्ति एवं निर्दयता के साथ उन्हें नरक में प्रवेश किया जाएगा।

16.नरक वासियों को एक यातना यह भी दी जाएगी कि उन्हें मुंह एवं पैर के बल अग्नि में घसीटा जाएगा,जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फरमायाः

﴿يَوۡمَ يُسۡحَبُونَ فِي ٱلنَّارِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمۡ ذُوقُواْ مَسَّ سَقَرَ ۝٤٨﴾ [سورة القمر:٤٨]

अर्थातःजिस दिन वे घसीटे जोयेंगे यातना में अपने मुखों के बल(उन से कहा जायेगा कि)चखो नरक की यातना का स्वाद।

नरक वासियों की एक यातना यह भी होगी कि उन्हें अग्नि का वस्त्र पहनाया जाएगा, जैसा कि इस आयत में इसका उल्लेख हैः

﴿فَٱلَّذِينَ كَفَرُواْ قُطِّعَتۡ لَهُمۡ ثِيَابٞ مِّن نَّارٖ﴾ [سورة الحج:١٩]

अर्थातःतो उन में से काफिरों के लिए ब्योंत दिये गये हैं अग्नि के वस्त्र।

तथा उन्हें पीतल का वर्स्त्र अग्नि में लपैट कर पहनाया जाएगा,जैसा कि अल्लाह का कथन हैः

﴿سَرَابِيلُهُم مِّن قَطِرَانٖ﴾ [سورة إبراهيم:٥٠]

अर्थातःउनके वस्त्र तारकोल के होंगे।

سرابيل का अर्थ होता हैःक़मीज, قَطران का अर्थ अग्नि में पिघलाया हुआ पीतल है।

नरक वासियों एक यातना यह भी दी जाएगी कि उन्हें लोहे कीहथोड़ी से मारा जाएगा,जैसा कि अल्लाह का कथन हैः

﴿وَلَهُم مَّقَٰمِعُ مِنۡ حَدِيدٖ ۝٢١﴾ [سورة الحج:٢١]

अर्थातः

مقامع، مقمعةका बहुवचन है,जो भाला के जैसा लोहे का एक हथियार है जिस से हाथी के सर पर मारा जाता है,आयत में इस का अर्थ लोहे का बड़ा हथोड़ा है,जिस से नरक के दारोगे नरक वासियों को मारेंगे।अल्लाह की शरण।

17.नरक (की अग्नि)–अल्लाह हमें इस से सुरक्षित रखे–देखती और करोध से बिफरती है,धाड़ती और चिंघाड़ती है,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿إِذَا رَأَتْهُم مِّن مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَزَفِيرًا ﴿١٢﴾﴾ [سورة الفرقان:١٢]

अर्थातःजब वह उन्हें दूर स्थान से देखेगी,तो सुन लेंगे उस के कोध तथा आवेग की ध्वनि को।

मतलब यह कि नरक की अग्नि काफिरों को हश्र के मैदान में देखे गी तो वे उसके बिफरने की आवाज सुनेंगे,अर्थात उसके खौलने की आवाज,तथा उसके धाड़ने की आवाज और चिंघाड़ने की आवाज सुनेंगे,ये दो प्रसिद्ध ध्वनि है,किंतु उनकी स्थिति को अल्लाह तआ़ला ही जानता है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِذَآ أُلْقُوا۟ فِيهَا سَمِعُوا۟ لَهَا شَهِيقًا وَهِىَ تَفُورُ ﴿٧﴾ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ ٱلْغَيْظِ﴾ [سورة الملك:٧-٨]

अर्थातःजब वह फेंके जायेंगे उस में तो सुनेंगे उस की दहाड़ और वह खौल रही होगी।प्रतीत होगा कि फट पड़गी कोध से।

मतलब यह कि वह करोध से फटने जैसा हो रहा होगा,अल्लाह की शरण।

18.नरक की अग्नि भड़कती और बुझती है,अल्लाह का कथन है:

﴿كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنَاهُمْ سَعِيرًا﴾ [سورة الإسراء:٩٧]

अर्थातःजब भी वह बुझने लगेगा तो हम उसे और भड़का देंगे।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको कुरान की बरकतों से मालामाल फरमाए,अल्लाह मुझे और आपको कुरान की आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभान्वित फरमाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा की प्रार्थना करता हूं,अतःआप भी उससे क्षमा प्राप्त कीजिए,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला एवं अति कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

19.आप पर अल्लाह कृपा करे!अल्लाह तआ़ला ने यह वादा किया है कि नरक को भर देगा,अल्लाह का कथन है:

﴿وَلَٰكِنْ حَقَّ ٱلْقَوْلُ مِنِّى لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ ٱلْجِنَّةِ وَٱلنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۝١٣﴾ [سورة السجدة:١٣]

अर्थातःपरन्तु मेरी यह बात सत्य हो कर रही कि में अवश्य भरूंगा नरक को जिन्नों तथा मानव से।

अल्लाह के बंदो:ये नरक के विष्य में महत्वपूर्ण बातें थीं जिनसे एक मुसलमान को अवगत रहना चाहिए ताकि वे इससे बचते रहे,अल्लाह हम सबको इससे बचाए रखे।

20.अल्लाह के बंदो!नरक एक मख़्लूक़(जीव)है(जो अभी भी अस्तित्व में है),इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿وَٱتَّقُوا۟ ٱلنَّارَ ٱلَّتِىٓ أُعِدَّتْ لِلْكَٰفِرِينَ ۝١٣١﴾ [سورة آل عمران:١٣١]

अर्थातःतथा अल्लाह और रसूल के आज्ञाकारी रहो,ताकि तुम पर दया की जाये।

इस आयत में जो तर्क का बिंदु है वहः﴿أُعِدَّتْ﴾ है।(अर्थात तैयार की गई)

ह़दीस से इस का साक्ष्य यह है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अ़म्र बिन लोह़य को देखा कि वह नरक में अपनी एड़ियां घसीट रहा था।वह प्रथम व्यक्ति था जिसने इब्राहिम धर्म में परिवर्तन किया और अ़रब द्वीप में मूर्ति पूजा को प्रचलित किया।[1]

और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक महिला को आपने एक बिल्ली के कारण नरक की यातना में देखा,जिसे उसने बांध रखा था,उसे खिलाया नहीं,और उसको छोड़ा भी नहीं कि पृथ्वी के कीड़े मकोड़े खालेती।[2]

अल्लाह के बंदो!ये बीस चोज़े जिनका उल्लेख हुआ,वे नरक एवं स्वर्ग की विशेषताओं पर ईमान लाने से संबंधित हैं,प्रत्येक मोमिन को चाहिए कि इन से अवज्ञत रहे,ताकि उसके मन में नरक की याद स्वेद ताजा रहे,फलस्वरूप वह पुण्य के कार्यों के लिए तैयार रहे और पापों से,इधर उधर भटकने से और आलसा से दूर रहे।

- हे अल्लाह हमें!क़ब्र की यातना से और नरक की यातना से,जीवन और मौत के प्रलोभन से और मसीहे दज्जाल के प्रलोभन से तेरा शरण चाहते हैं।

[1]देखें:अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु की ह़दीस जिसे बोखारी(3521)और मुस्लिम(2856)ने रिवायत की है।
[2]देखें:इब्ने उ़मर रज़ीअल्लाहु अंहुमा की ह़दीस जिसे बोखारी(2365)और मुस्लिम(2242)ने वर्णन किया है।

- हे अल्लाह!हम तुझसे स्वर्ग मांगते हैं और वे कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कथन एवं कार्य से भी जो नरक से निकट करदे।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

اللهم صل وسلم على نبينا محمد وآله وصحبه وسلّم تسليما كثيرا.

शीर्षक: आख़िरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े – क़िस्त ६

(क़्यामत के कुछ दृश्य)

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रसंशा के पशचात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कार की गई बिदअ़त(नवाचार)हैं,प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ बिदअ़त है,प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने मन और हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा मानो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जानलो कि अल्लाह तआ़ला अपने धर्म के निर्माण में,अपनी दक़दीर(भाग्य)में और बदला एवं दंड में महान नीति वाला है और अल्लाह तआ़ला की एक निति यह भी है कि उसने इस मख़्लूक़(जीव)के लिए एक अवधि निश्चित किया है जिस में उन्हें उन आ़माल(कार्यों)का बदला देगा जिनका उसने अपने संदेशवाहक द्वारा उन्हें मोकल्लफ(उत्तरदायी)बनाया है,अल्लाह का कथन है:

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَٰكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ١١٥ فَتَعَٰلَى ٱللَّهُ ٱلْمَلِكُ ٱلْحَقُّ﴾ [سورة المؤمنون:١١٦]

अर्थात:क्या तुम ने समझ रखा है कि हम ने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है और तुम हमारी ओर फिर नहीं लाये जाओगे?तो सर्वोच्च है अल्लाह वास्तविक अधिपति।
ए मोमिनों!पिच्छले दो उपदोशों में आखिरत पर ईमान लाने के तक़ाज़े से संबंधित चर्चा की गई,जो कि यह हैं: सूर में फूंक मार ने पर ईमान लाना,क़्यामत की भयावहताओं पर ईमान लाना,मख़्लूक़ों(जीवों)को पुन:उठाया जाना,लोगों को मह़शर के मैदान में जमा करना,जज़ा व सजा एवं हिसाब व किताब,स्वर्ग की नेमत(आशीर्वादों),नरक की गुनवक्ताएं,और आज हम इन्शा अल्लाह क़्यामत के कुछ दृश्यों के विषय में चर्चा करेंगे।

1.अल्लाह के बंदो!आखिरत के दिन पर ईमान लाने में क़्यामत के दृश्यों पर ईमान लाना भी शामिल है,उन दृश्यां में से यह भी है कि:नामाए आ़माल(कर्मपत्र)(गगन)में उड़ रहे होंगे,अतः लोग उन्हें(अपने हाथों से)प्राप्त करेंगे,कुछ लोग अपने दाएं हाथ से नामाए आ़माल(कर्मपत्र)लेंगे,ये सत्य मार्ग पर स्थिर रहने वाले होंगे,और स्वर्ग में प्रवेश के पात्र होंगे,जबकि कुछ लोग बाएं हाथ से उसे पकड़ेंगे,ये काफिर होंगे,मोमिन खुशी खुशी अपने हाथ में नामाए आ़माल लेगा,अल्लाह का फरमान है:

﴿فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَٰبَهُۥ بِيَمِينِهِۦ فَيَقُولُ هَآؤُمُ ٱقْرَءُوا۟ كِتَٰبِيَهْ ﴿١٩﴾ إِنِّي ظَنَنتُ أَنِّي مُلَٰقٍ حِسَابِيَهْ ﴿٢٠﴾ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٢١﴾ فِي
جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿٢٢﴾ قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾ كُلُوا۟ وَٱشْرَبُوا۟ هَنِيٓـًٔا بِمَآ أَسْلَفْتُمْ فِي ٱلْأَيَّامِ ٱلْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾﴾ [سورة الحاقة:١٩-٢٤]

अर्थातः फिर जिसे दिया जायेगा उस का कर्मपत्र दायें हाथ में वह कहेगाःयह लो मेरा कर्मपत्र पढ़ा।मुझे विश्वास था कि मैं मिलने वाला हूँ अपने हिसाब से।तो वह अपने मन चाहे सुख में होगा।उच्च श्रेणी के स्वर्ग में।जिस के फलों के गुच्छे झुक रहे होंगे।(उन से कहा जायेगा):खाओ तथा पियो आनन्द ले कर उस के बदले जो तुम ने किया है विगत दिनों(संसार)में।

किंतु काफिर अपना नामाए आ़माल(कर्मपत्र)बाएं हाथ से अपनी पीठ के पीछे से प्राप्त करेगा,जिस प्रकार उसने दुनिया में अल्लाह की पुस्तक को पीठ पीछे डाल रखा,उसी प्रकार उसको अपना नामाए आ़माल भी प्रलय के दिन पीठ पीछे से दिया जाएगा,ताकि उसे पूरा बदला मिल सके,अतःवह शोक व खेद एवं हसरत के साथ अपना नामाए आ़माल पकड़ेगा,अल्लाह का कथन है:

﴿وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَٰبَهُۥ بِشِمَالِهِۦ فَيَقُولُ يَٰلَيْتَنِي لَمْ أُوتَ كِتَٰبِيَهْ ﴿٢٥﴾ وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ﴿٢٦﴾ يَٰلَيْتَهَا كَانَتِ ٱلْقَاضِيَةَ ﴿٢٧﴾ مَآ أَغْنَىٰ
عَنِّي مَالِيَهْ ﴿٢٨﴾ هَلَكَ عَنِّي سُلْطَٰنِيَهْ ﴿٢٩﴾﴾ [سورة الحاقة:٢٥-٢٩]

अर्थातःऔर जिसे दिया जायेगा उस का कर्मपत्र उस के बायें हाथ में तो वह कहेगाःहाय!मुझे मरो कर्मपत्र दिया ही न जाता!तथा मैं न जानता कि क्या है मेरा हिसाब?।काश मेरी मौत ही निर्णायक होती!नहीं काम आया मेरा धन।मुझ से समाप्त हो गया मेरा प्रभुत्व।

तथा अल्लाह ने अधिक फरमायाः

﴿وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَٰبَهُۥ وَرَآءَ ظَهْرِهِۦ ﴿١٠﴾ فَسَوْفَ يَدْعُوا۟ ثُبُورًا ﴿١١﴾ وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ﴿١٢﴾ إِنَّهُۥ كَانَ فِيٓ أَهْلِهِۦ مَسْرُورًا ﴿١٣﴾ إِنَّهُۥ ظَنَّ أَن لَّن يَحُورَ ﴿١٤﴾
بَلَىٰٓ إِنَّ رَبَّهُۥ كَانَ بِهِۦ بَصِيرًا ﴿١٥﴾﴾ [سورة الإنشقاق: ١٠-١٥]

अर्थातःऔर जिन को उन का कर्मपत्र बायें हाथ में दिया जायेगा तो वह विनाश(मृत्यु)को पुकारेगा। तथा नरक में जायेगा।वह अपनों में प्रसन्न रहता था।उस ने सोचा था कि कभी पलट कर नहीं आयेगा।क्यों नही?निश्चय उस का पालनहार उसे देख रहा था।

2.ए मोमिनो!क़्यामत का एक दृश्य यह होगा कि नरक की पीठ पर पुल सरात का निर्माण किया जाएगा,फिर लोग उस पर से गुजरेंगे,मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत सर्वप्रथम उस पर से गुजरेगी,वह पैर फिसलने का स्थान होगा,अर्थात पैर उस पर फिसलंगे,स्थिर नहीं रहेंगे,उस पर आंकड़े एवं कठोर प्रकार के विस्तृत एवं विशाल कांटे लगे होंगे,उन में एक ऐसा कांटा भी होगा जो मुड़ा हुआ होगा,वह सादान नाम के वृक्ष का कांटा होगा जो नज्द में हुआ करता है,पुलसरात से गुजरते हुए लोगों के तीन प्रकार होंगेःबिल्कुल सुरक्षित मुक्ति पाने वाला,घायल हो कर मुक्ति पाने वाला,और वह जो नरक की अग्नि में गिर जाएगा,अतःआंकड़ों एवं कांटों से कुछ लोग बच जाएंगे,उनको न घाव आयेगा और न वे कांटों के चपेट में आयेंगे,वे पूरे ईमान वाले लोग होंगे जिन्हों ने अल्लाह की आज्ञा मानीऔर उसके अवज्ञा से बचते रहे।

ए मुसलमानो!दूसरे प्रकार में वे लोग होंगे जो आंड़कों से घायल हो जाएंगे,किंतु उनके चपेट में न आ सकेंगे और पुलसरात पार करने में सफल हो जाएंगे,उनके नामाए आ़माल में ऐसे पाप होंगे जिन से नरक में प्रवेश वाजिब(अनिवार्य)नहीं होता,बल्कि केवल घायल होना ही आखिरत में उनकी यातना होगी,उसके पश्चात उन्हें मुक्ति मिल जाएगी।

तीसरे प्रकार में वे लोग होंगे जिन्हें आंकड़े अपने चपेट में ले लेंगे और बलपूर्वक उन्हें नरक में फेंक देंगे,ये ऐसे मोमिन होंगे जो अपने पाप एवं बड़े पापों के कारण नरक में जाने के पात्र होंगे,यही स्थिति मोनाफिक़ों(कपटियों)की होगी,उन्हें भी आंकड़े उचक लेंगे और नरक की अग्नि में डाल देंगे,अल्लाह की शरण।किंतु मोमिनों को उनके पापों के समान नरक में यातना दी जाएगी फिर उन्हें निकाल दिया जाएगा,किंतु मानाफिक़ों को स्वेद के लिए नरक के सबसे निचले चरण में रहना होगा,रही बात काफिरों की तो उन्हें पुलसरात के निर्माण से पूर्व ही नरक की ओर हांक कर ले जाया जाएगा,अल्लाह का कथन है:

﴿وَسِيقَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓاْ إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًاۖ﴾ [سورة الزمر:٧١]

अर्थातःतथा हॉके जायेंगे जो काफिर हो गये नरक की ओर झुण्ड बना कर।
तथा अल्लाह ने फिरऔ़न के संबंध में फरमायाः

﴿يَقْدُمُ قَوْمَهُۥ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ فَأَوْرَدَهُمُ ٱلنَّارَۖ وَبِئْسَ ٱلْوِرْدُ ٱلْمَوْرُودُ ۝٩٨﴾ [سورة هود:٩٨]

अर्थातःवह प्रलय के दिन अपनी जाति के आगे चलेगा,और उन को नरक में उतारेगा और वह क्या ही बुरा उतरने का स्थान है।

अतःउन काफिरों में से प्रत्येक समूदाय मूर्ति,सूर्य और चॉद जैसे अपने परमेश्वर का अनुगमनकरतेहुऐ(नरक में प्रवेश करेगा),प्रत्येक समूह अपने परमेश्वर के साथ नरक में प्रवेश करेगा,नरक उनके सामने चमकती रैत के जैसे स्पष्ट होगी,उसके भाग आपस में

एक दूसरे को चौड़ा चौड़ा कर रहे होंगे,अतःवे लगातार उसमें गिर जाएंगे।अल्लाह हमें इससे सूरक्षित रखे।[1] फिर पुलसरात नरक के ऊपर लगा दिया जाएगा।

अल्लाह के बंदो!पुलसरात पर लोगों की गति उनके बस में न होगी,और न उनकी शारीरिक शक्ति से उसका कोई संबंध होगा,बल्कि उनके अ़मलों(कार्यों)के अनुरूप उनके गुजरने की गति होगी,जैसा कि इस ह़दीस में आया है(जिस में है कि):उनके आ़माल उनको लेके दौड़ेंगे।[2]अतःजिस का अ़मल पुण्य एवं उत्तम होगा वह तेज गति से गुजर जाएगा,कोई पलक झपकने के जैसे गुजर जाएगा,कोई बिजली के जैसे गुजर जाएगा,कोई हवा के गुजरने के जैसा(तेजी से)गजर जाएगा,काई पक्षि गुजरने के जैसा,कोई तेज गति वाले घोड़े और सवारी के जैसे और कोई मनुष्य के दौड़ने के जैसा गुजर जाएगा,यहां तक कि अंतिम व्यक्ति घिसट घिसट कर गुजरेगा,जिसका अ़मल बुरा होगा वह धीमी गतिसे गुजरेगा,और यदि वह नरक का पात्र होगा तो आंकड़े उसे दबोच लेंगे।[3]

3.ए मोमिनो!क़्यामत का एक दृश्य यह भी होगा कि कुछ मोमिनों को स्वर्ग एवं नरक के बीच एक पुल पर रोका जाएगा,उस दिन उन मोंमिनों को जिन्हें नरक की यातना दी जाएगी,नरक से निकलने के पश्चात उन्हें स्वर्ग एवं नरक के बीच एक पुल पर रोका जाएगा,ताकि उनके दिलों में जो ईर्ष्या जलन,घृणा कीना होगी,उससे उनको पवित्र किया जाए,क्योंकि पूर्णता से दिलों के पवित्र एवं साफ होने के पश्चात ही वे स्वर्ग में प्रवेश कर सकेंगे,इमाम बोखारी ने अल्लाह के फरमान

﴿وَنَزَعۡنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنۡ غِلٍّ﴾ [سورة الحجر:٤٧]

की व्याख्या में अबू सईद खुदरी रज़ीअल्लहु अंहु से वर्णन किया है कि रसूल सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"ईमान वाले नरक से छुटकारा पाएंगे तो नरक एवं स्वर्ग के बीच उन्हें एक पुल पर रोक दिया जाएगा,फिर दुनिया में जो एक दूसरे पर अन्याय किया होगा उसका क़िसास(बदला)लिया जाएगा,यहां तक कि जब वे पवित्र हो जाएंगे तो उन्हें स्वर्ग में प्रवेश होनी की अनुमति होगी।उस हस्ती की शपथ जिसके हाथ में मोह़म्मद की जान है!स्वर्गवासियों में से प्रत्येक अपना स्थान दुनिया में अपने घर के अपेक्षा में अधिक जानने वाला होगा"।[4]

---

[1]देखें:सही़ बोखारी(7437)और मुस्लिम(182),अबूहोरैरा का वर्णन,इसी प्रकार देखें:सही़ बोखारी(4581)और मुस्लिम(183)अबू सईद का वर्णन।

[2]देखें:सही़ मुस्लिम(195)हो़ज़ैफा रज़ीअल्लाहु अंहु की रिवायत

[3]इसका प्रमाण देखें:सही़ बोखारी(7437)और मुस्लिम(182)।

[4]इसे बोखारी(6535)ने वर्णित किया है।

इब्ने तैमिया रहि़महुल्लाहु फरमाते हैंःख़बीस एवं अपवित्र आतमाओं के लिए पवित्र स्वर्ग में प्रवेश करना उचित नहीं,जहां किसी भी प्रकार की ख़बासत अपवित्रता नहीं होगी,इस लिए खबीस व अपवित्र आतमाओं के लिए यह उचित नहीं होगा कि वे पवित्र स्वर्ग में प्रवेश करें।[1]

अल्लाह तआला मुझे और आपको क़ुरान की बरकतों से मालामाल फरमाए,अल्लाह मुझे और आपको क़ुरान की आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभान्वित फरमाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा की प्रार्थना करता हूं,अतःआप भी उसस क्षमा प्राप्त कीजिए,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला एवं अति कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

4.अल्लाह के बंदो!अल्लाह से डरें और यह जान लें कि क़यामत के दिन एक दृश्य यह भी होगा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़यामत के दिन शिफाअ़त(अनुशंसा)करेंगे,शिफाअ़तं उ़ज़्मा(महान अनुशंसा)जिसका उल्लेख पूर्व में बीत चूका है,उसके अतिरिक्त चार प्रकार की शिफाअ़तें होंगी।आपकी प्रथम शिफाअ़त मोंमिनों के हित में स्वर्ग में प्रवेश के लिए होगी,क्योंकि मोमिनीन जब स्वर्ग के पास आएंगे तो उसके द्वार बंद होंगे,उस समय पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वर्ग के द्वार पर दस्तक देंगे,स्वर्ग का खाजिन[2](रक्षक)पूछेगाःआप कोन?आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाएंगेःमोह़म्मद।वह कहेगाःमुझे आदेश दिया गया है कि आप से पूर्व किसी के लिए द्वार न खोलूं।[3]

अनस बिन मालिक रज़ीटल्लाहु से वर्णित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःलोगों में प्रथम व्यक्ति हूंगा जो स्वर्ग के बारे में अनुशंसा करेगा और समस्त पैगंबरों से मेरे अनुयायी अधिक होंगे।[4]

---

[1]देखेंः"फतावा इब्ने तैमिया"(14/344)संक्षेप से साथ।

[2]खाजिन का अर्थ होता है रक्षक,यह प्रसिद्ध है कि स्वर्ग के रक्षक का नामःरिज़वान है,जब कि इसका कोई सत्य प्रमाण नहीं है,सत्य यह है कि उसे स्वर्ग के खाजिन एवं रक्षक ही के नाम से जाना जाए जैसा कि ह़दीस में आया है,यह लाभ मुझे शैख मोह़म्मद बिन अ़ली आदम अलअसयूबी रहि़महुल्लाहु से प्राप्त हुआ है।

[3]इसे मुस्लिम(197)ने अनस बिन मालिक रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्णित किया है।

[4]इसे मुस्लिम(196),अह़मद(3/140)और दारमी ने अपने प्राक्कथन,खण्ड ما أعطي النبي من الفضل वर्णित किया है।

ज्ञात हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वर्ग में प्रवेश करने वाले र्स्वप्रथम व्यक्ति होंगे,आप से पूर्व कोई प्रवेश नहीं कारेगा,इससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी उम्मत का स्थान स्पष्ट होता है,वह इस प्रकार से कि र्स्वप्रथम आप और आपकी उम्मत स्वर्ग में प्रवेश होगी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दूसरी सिफारिश(अनुशंसा)उन लोगों के हित में होगी स्वर्ग में प्रवेश के विषय में होगी जिन से कोई हिसाब व किताब न होगा,इसका प्रमाण अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु की शिफाअ़त वाली लम्बी ह़दीस है,उसमें है किः ए मोह़म्मद!आप अपनी उम्मत के उन लोगों को जिन का कोई हिसाब व किताब नहीं,स्वर्ग के दाएं द्धार से स्वर्ग में प्रवेश करें[1]।[2]

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तीसरी सिफारिश उन पापी मोमिनों के हित में नरक से निकलने के लिए होग जो अपने पापों के कारण रनक में प्रवेश होंगे,आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस ह़दीस में यही सिफारिश हैः"प्रत्येक नबी के लिए एक दुआ़ स्वीकृत थी जो उसने दुनिया में करली किंतु में चाहता हूं कि अपनी दुआ़ को आखिरत में अपनी उम्मत की सिफारिश के लिए सुरक्षित रखूं"।[3]तथा आप की यह ह़दीस किः"मेरी सिफारिश मेरी उम्मत के लिए उन लोगों के लिए होगी जिन्हों ने बड़े बड़े पापों को किया होगा।[4]

चौथी सिफारिशःनबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने चचा अबू तालिब के हित में यातना को हलका करने के लिए करेंगे,क्योंकि वह आपकी रक्षा करता और मुश्रिकों के संकट से आप की रक्षा करता था,अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है,उन्हों ने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि आपने अपने चचा अबू तालिब को क्या लाभ पहुंचाया जो आपकी सहायता करता था और आप के लिए दूसरों से नाराज रहता था?आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"वह टखनों तक हलकी अग्नि में है,यदि में न होता तो वह अग्नि की तह में बिल्कुल नीचे होता"।[5]

---

[1]मेंने कहाःइससे उनकी महत्ता स्पष्ट होती है,क्योंकि स्वर्ग के सात द्धार हैं जैसा कि कुरान में आया हैः, ﴿لها سبعة أبواب﴾ इन समस्त द्धारों के बजाये उनका दाई द्धार से प्रवेश होना उनकी श्रेष्ठता का प्रमाण है,क्योंकि दाई(ओर)की श्रेष्ठता इस्लाम में ज्ञात एवं प्रसिद्ध है।

[2]इसे बोखारी(4712)ने वर्णित किया है।

[3]इसे बोखारी(6304)और मुस्लिम(198)ने अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्णित किया है।

[4]इसे तिरमिज़ी(2435),अबू दाऊद(4739),अह़मद(2/213)ने वर्णित किया है और अल्बानी ने अलकिश्कात(5599. 5598)में इसे सह़ी कहा है,अनस बिन मालिक की रिवायत।

[5]इसे बोखारी(3883)और मुस्लिम(209)और अह़मद(1/206)ने रिवायत किया है।

अल्लाह के बंदो!क़्यामत के चार दृश्य हैं:नामाए अ़ामाल(कार्य सूची)का(हवा में)उड़ना,नरक की पीठ पर पुल सरात का होना,स्वर्ग व नरक के बीच एक पुल सरात पर कुछ मोमिनों का ठहरना,और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वे पांच सिफारिश जो आप क़्यामत के दिन करेंगे।

हे अल्लोह!हमें आखिरत में अपने नबी मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सिफारिश से सम्मानित फरमा।

हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग को मांगते हैं और वे कार्य एवं कथन भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तुझ से तेरी शरण चाहते हैं नरक से और ऐसे कार्य एवं कथन से भी जो नरक से निकट करे।

हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान कर जो तुझ से निकट करदे।

हे अल्लाह!हमने अपना बड़ा हानि किया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा नहीं करेगा तो निसंदेह हमहानि पाने वालों में से हो जाएंगे।

हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों को क्षमा करदे,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक के हों अथवा बाह्य।

हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी दे और आखिरत में भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

शीर्षक: आख़िरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े – क़िस्त ७

(क़्यामत के दिन की जाने वाली शिफ़ाअत के प्रकार)

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रसंशा के पशचात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कार की गई बिदअ़त(नवाचार)हैं,पत्येक अविष्कार की गई चीज़ बिदअ़त है,प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने मन और हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा मानो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जानलो कि अल्लाह तआ़ला अपने धर्म के निर्माण में,अपनी दक़दीर(भाग्य)में और बदला एवं दंड में महान नीति वाला है और अल्लाह तआ़ला की एक निति यह भी है कि उसने इस मख़्लूक़(जीव)के लिए एक अवधि निश्चित किया है जिस में उन्हें उन आ़माल(कार्यों)का बदला देगा जिनका उसने अपने संदेशवाहक द्वारा उन्हें मोकल्लफ(उत्तरदायी)बनाया है,अल्लाह का कथन है:

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَٰكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ١١٥ فَتَعَٰلَى ٱللَّهُ ٱلْمَلِكُ ٱلْحَقُّ﴾ [سورة المؤمنون:١١٥-١١٦]

अर्थात:क्या तुम ने समझ रखा है कि हम ने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है और तुम हमारी ओर फिर नहीं लाये जाओगे?तो सर्वोच्च है अल्लाह वास्तविक अधिपति।

ए मोमिनो!पिच्छले दो उपदेशों में आखिरत के दिन पर ईमान लोन के तक़ाज़े के संबंध में चर्चा की गई,जो कि ये हैं: सूर में फूंक मार ने पर ईमान लाना,क़्यामत

की भयावहताओं पर ईमान लाना,मख़्लकों का पुनःउठाया जाना,लोगों को मह़शर के मैदान में जमा करना,जज़ा व सज़ा एवं हिसाब व किताब एवं स्वर्ग की नेमत,नरक की गुणवत्ताएं,क़्यामत के कुछ दृश्यें,आज हम ईन्शा अल्लाह क़्यामत के दिन की जाने वाली शिफाअ़त के विभिन्न प्रकारों पर चर्चा करेंगे।

- अल्लाह के बंदो!क़्यामत के दिन जो दृश्य घटित होंगे उन में यह भी होगा कि सिफरिश करने वाले सिफारिश के पात्रों के लिए सिफारिश करेंगे,सिफारिश करने वालों के छ प्रकार हैंःरसूल,मोमिन,शहीद,किशोर बालक,देवदूत एवं क़ुरान।

1.रसूलों का अपने मोमिन अनुयायियों के लिए सिफारिश करनाःइसका संबंध उन अनुयायियों से होगा जो अपने पापों के कारण नरक में प्रवेश होंगे,अतःरसूल सिफारिश करेंगे कि उन्हें नरक से निकाला जाए,इसका प्रमाण जाबिर रज़ीअल्लाहु अन्हु की ह़दीस है,फरमाते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"जब स्वर्गवासी एवं नरकवासी के बीच अंतर हो जाएगा,और स्वर्गवासी स्वर्ग में और नरकवासी नरक में प्रवेश कर जाएंगे तो रसूल सिफारिश के लिए खड़े होंगे,(अल्लाह तआ़ला)फरमाएगाःजाओ और जिन्हें तुम पहचानते हो उन्हें(नरक से)निकाल लो,अतः वह अपने(अनुयायियों को)निकालेंगे जबकि वे जल भुन कर काले हो चुके होंगे,फिर उन्हें एक नहर में डाल देंगे जिसे(नहरे हयात)कहा जाता है,उनके झुलसे हुए शरीर के अंग नहर के किनार गिर जाएंगे,और वे क्कड़ियों के जैसे(तेजी के साथ)पुनःसफेद हो कर उग जाएंगे,फिर वह रसूल(दूसरी बार)सिफारिश करेंगे तो(अल्लाह)फरमाएगाःजाओ,जिस के दिल हृदय में क़ीरातव[1]के समान भी ईमान हो उसे निकाल लाओ,अतःवह कुछ लोगों को निकाल लाएंगे,फिर सिफारिश करेंगे,(अल्लाह तआ़ला)फरमाएगाःजाओ,जिस के हृदय में राई के दाने के बराबर भी ईमान हो उसे निकाल लाओ......अलह़दीस।[2]

रसूल उन मोमिनों के लिए सिफारिश करेंगे जो नरक में जा चुके होंगे,इस का प्रमाण हो़ज़ैफा रज़ीअल्लाहु अंहु की ह़दीस भी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःइब्राहिम(अलैहिस्सलाम)क़्यामत के दिन कहेंगेःए मेरे परवरदिगार!तो अल्लाह तआ़ला फरमाएगाःलब्बेक ए

---

[1]जन का एक माप है,जो आज कल गेहूं के दो दाने के समान होता है।देखेंः"अलमोजम अलवसीत"।

[2]इसे बोखारी(6558)और अह़मद(3/325)ने रिवायत किया है और उपरोक्त शब्द अह़मद के हैं।

इब्राहिम!इब्राहिम(अलैहिस्सलाम)कहेंगे:(मेरी संतान को तू ने नरक में डाल दिया),अल्लाह तआ़ला फरमाएगा:जिस के हृदय में एक अंश अथवा एक जौ के समान भी ईमान हो,उसे नरक से निकाल लो।[1]

2.अल्लाह के बंदो!क़्यामत के दिन होने वाली शिफाअ़त(अनुशंसा)का दूसरा प्रकार यह होगा कि जो मोमिनीन स्वर्ग में होंगे वे अपने उन भाइयों के लिए नरक से निकलने की सिफारिश करें गे जो नरक में होंगे,इस का प्रमाण सईद खुदरी रज़ीअल्लाहु अन्हु की ह़दीस है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:.....यहां तक कि जब नरक से मक्ति पालेंगे,शपथ अल्लाह की जिस के हाथ में मेरा प्राण है!तुम में से कोई पूरा पूरा अधिकार प्राप्त करने(के विषय)में इस प्रकार अल्लाह से विनती एवं प्रार्थना नही करता जिस प्रकार से क़्यामत के दिन मोमिन अपने मुसलमान भाइयों के प्रति करेंगे जो अग्नि में होंगे,वे कहेंगे कि:ए हमारे रब!हमारे ये भाई भी हमारे साथ नमाज़ पढ़ते थे और हमारे साथ रोज़े रखते थे और हमारे साथ अन्य(नेक)कार्यों को करते थे(उनको भी नरक से मुक्ति प्रदान फरमा)अत:अल्लाह फरमाएगा कि:(जाओ और जिसे तुम पहचान पाओ उसे नरक से निकाल लो)और अल्लाह उनके मुखों को नरक पर ह़राम(वर्जित)कर देगा।अत:वे बहुत से ऐसे लोगों को निकालेगे जिनकी आधी पिंडलियों तक अथवा घुटनों तक आग पकड़ चुकी होगी।फिर वापस आएंगे और कहेंगे:(ए हमारे परवरदिगार!जिन्हें तू ने निकालने का आदेश दिया था,उनमें से किसी को हम ने नरक में नहीं छोड़ा)।अल्लाह तआ़ला उनसे फरमाएगा कि जाओ और जिस के हृदय में अशरफी के समान भी ईमान हो उसे भी निकाल लाओ।अत:वे अनेक लोगों को निकालेंगे।फिर वे वापस आएंगे और कहेंगे:(ए हमारे परवरदिगार!जिन्हें तू ने निकालने का आदेश दिया था,उनमें से किसी को हमने रनक में नहीं छोड़ा)।अल्लाह तआ़ला फिर फरमाएगा कि जाओ और जिस के हृदय में आधी अशरफी के समान ईमान हो उसे भी निकाल लाओ।अत:वे अनेक लोगों को निकालेगे,फिर लौट कर आएंगे और कहेंगे::(ए हमारे परवरदिगार!जिन्हें तू ने निकालने का आदेश दिया था,उनमें से किसी को हम ने नरक में नहीं छोड़ा)।फिर अल्लाह फरमाएगा:जाओ और जिसके हृदय राई के दाने के समान

[1]इसे इब्ने ह़िब्बान(7378)ने रिवायत किया है,और शोऐब अलअरनाऊत ने अपने शोध में कहा कि:इसकी सनद सह़ीहैन(बोखारी एवं मुस्लिम)की शर्त पर सही़ है।

भी ईमान हो,उसे निकाल लो ।अतःवे अनेक लोगों को निकालेंगे,फिर कहेंगेः(ए हमारे रब!हम ने नरक में किसी पुण्य करने वाले को नहीं छोड़ा) ।अबू सईद खुदरी रज़ीअल्लाहु अंहु कहा करते थे किःयदि तुम पुष्टि नहीं करते तो यह आयत पढ़ो

﴿إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَظۡلِمُ مِثۡقَالَ ذَرَّةٖۖ وَإِن تَكُ حَسَنَةٗ يُضَٰعِفۡهَا﴾[النساء: ٤٠]

(अल्लाह तआला रत्ती भर भी किसी के साथ अन्याय नहीं करता। यदि नेकी है तो उसे बढ़ाता है)।[1]

3.अल्लाह के बंदो!क़्यामत के दिन होने वाली सिफारिश का तीसरा प्रकार यह होगा कि देवदूत पापी मोमिनों के हित में नरक से निकलने की सिफारिश करेंगे,फिर अल्लाह तआ़ला बिना किसी सिफारिश के केवल अपने कृपा एवं दया से अनेक समूहों को नरक से निकालेंगे,जिसका प्रमाण अल्लाह का यक कथन हैः"देवदूतों ने सिफारिश की,पैगंबरों ने सिफारिश की,मोंमिनों ने सिफारिश की,अब ارحم الراحمين(सर्वाधिक दया करने वाले) के अतिरिक्त कोई शेष नहीं रहा(एक शब्द में है किःकेवल मेरी सिफारिश रह गई),तो वह आग से एक मुट्ठी भरेगा और ऐसे लोगों को उस में से निकाल ले गा जिन्हों ने कभी भलाई का कोई कार्य नहीं किया था,और वे(जल कर)कोयला हो चुके होंगे,फिर वह उन्हें स्वर्ग के दहानों पर(बहने वाली)एक नहर में डाल देगा,जिस को नहरे हयात कहा जाता है,वे इस प्रकार से (उग कर) निकलेंगे जिस पकार से(घास का)छोटा बीज सैलाब के कूड़े कर्कट में फूटतो है" ।[2]

जाबिर रज़ीअल्लाहु अंहुमा की ह़दीस में आया है किःअल्लाह तआ़ला फरमाएगाः.....अब में अपने ज्ञान एवं कृपा के आधार पर(नरक से मख़्लूक़ को)निकालूंगा,फरमाया किःअतःउन मोमिनों ने जितने लोगों को निकाला था उनके कई गुना संख्या को अल्लाह तआ़ला निकाले गा और फिर उस संख्या के कई गुना लोगों को निकाले गा,और उनकी गर्दन पर लिखा देगाः(अल्लाह

[1]इसे बोखारी(7439)और मुस्लिम(183)ने वर्णित किया है।

[2]इसे बोखारी(7439)और मुस्लिम(183)ने वर्णित किया है और उपरोक्त शब्द मुस्लिम के है,ह़दीस के वर्णन कर्ताःअबू सईद खुदरी रज़ीअल्लाहु अन्हु,जो शब्द कोष्ठक में लिखे गए हैं वे बोखारी के हैं।

तआ़ला के स्वतंत्र बंदे),फिर वे स्वर्ग में प्रवेश करेंगे और वहां उनका नाम"جہنمیون" होगा।[1]

4.अल्लाह के बंदो!क़्यामत के दिन होने वाली शिफाअ़त का चौथा प्रकार यह होगा कि शहीद अपने मोमिन भाइयों के लिए सिफारिश करेंगे,इसका प्रमाण मिक़्दाम बिन मादीकरब रज़ीअल्लाहु अंहु की ह़दीस है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"अल्लाह के पास शहीदों के लिए छ पुरस्कार हैं,(1)रक्त का प्रथम बोन्द गिरने के साथ ही उसकी क्षमा मिल जाता है,(2)वह स्वर्ग में अपना स्थान देख लेता है,(3)क़ब्र की यातना से सुरक्षित रहता है,(4) «فزع الأكبر» (बड़े घबराहट वाले दिन) से सुरक्षित रहेगा,(5)उसके सर पर सम्मान का मुकुट रखा जएगा जिस का एक याक़ूत दुनिया एवं उसकी सारी चीजों से अच्छा है,(6)बहत्तर(72)स्वर्ग की हूरों से उसका विवाह किया जाएगा,और उसके सत्तर परिजनों के हित में उसकी शिफाअ़त स्वीकार की जाएगी"।[2]

5.अल्लाह के बंदा!क़्यामत के दिन होने वाली सिफारिश में पांचवे प्रकार की सिफारिश वह होगी जो यौवनारंभ से पूर्व मृत्यु पाने वाले बालक अपने माता. पिता के हित में करेंगे,(इसके लिए ह़दीस में)فَرَط का शब्द आया है जिस का अर्थ होता है:वह बालक जो यौवनारंभ से पूर्व मृत्यु पालें,इसका प्रमाण अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु की ह़दीस है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:जिस मुसलमान माता पिता की भी तीन अप्रौढ़ बच्चे की मृत्यु हो जाएं तो अल्लाह तआ़ला उनको अपने कृपा से क्षमा प्रदान करदेता। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:"उनसे कहा जाएगा:स्वर्ग में प्रवेश करजाओ,तो वे कहेंगे(हम प्रवेश नहीं कर सकते)जब तक कि हमारे माता पिता प्रवेश न करें,(फिर)कहा जाएगा:(जाओ)अपने माता पिता के साथ स्वर्ग में प्रवेश कर जा"।

6.अल्लाह के बंदो!क़्यामत के दिन होने वाली सिफारिश का छठा प्रकार यह है कि क़ुरान मोमिनों के हित में सिफारिश करेगा,इसका प्रमाण अबू ओमामा

---

[1]इसे अह़मद(3/325)ने वर्णित किया है औरने वर्णित किया है और"अलमुस्नद"के शोधकर्ताओं ने इसे सही मान कर कहा:इसकी सनद मुस्लिम की शर्त पर सह़ी है।

[2]इसे तिरमिज़ी(1663),इब्ने माजा(2799),अह़मद(4/131)ने रिवायत किया है और अल्बानी ने"अलजनाएज़"(पृष्ठ 50,वर्ष:1412हिजरी)में इसे सह़ी कहा है।

बाहेली रज़ीअल्लाहु अन्हु की ह़दीस है कि मैं ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुनाः"क़ुरान पढ़ा करो क्योंकि वह क़्यामत के दिन क़ुरान वालों(ह़िफज़ व क़िराअत(सस्वरपाठ)एवं अ़मल करेन वालों)का सिफारशी(सिफारिशकर्ता)बन कर आएगा।दो रोशन चमकती हुई सूरतेंःअलबक़रा एवं आलेइमरान पढ़ा करो क्योंकि वे क़्यामत के दिन इस प्रकार से आएंगी जैसे वे बादल अथवा छाया हों अथवा जैसे वह एक सीध में उड़ते पछियों के दो डाड़े हों,वे अपनी संगत में रहने वालो(अर्थात उसे पढ़ने और उस पर अ़मल करने वालों)की ओर से रक्षा करेंगी"।[1]

- अल्लाह के बंदो!यह क़्यामत के दिन होने वाली छ प्रकार की सिफारिशें हैं,जिन से नरक में जाने वाले मोमिनों को लाभ मिले गा और(उन सिफारिशों के माध्यम से)उन मोमिनों को स्वर्ग में जाने की अनुमति मीलेगी जो नरक में प्रवेश नहीं किए होंगे।
- अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको क़ुरान की बरकतों से मालामाल फरमाए,अल्लाह मुझे और आपको क़ुरान की आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभान्वित फरमाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा की प्रार्थना करता हूं,अतःआप भी उससे क्षमा प्राप्त कीजिए,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला एवं अति कृपालु है।

द्बितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!आप अल्लाह का तक़्वा अपनाएं और जान लें कि उपरोक्त सिफारिश हर किसी को प्राप्त नहीं होंगी,बल्कि जिस के अंदर सिफारिश की शर्तें पाई जाएं गी उसी के हित में अल्लाह सिफारिश को स्वीकार करेगा,अन्यथा सिफारिश रद्द कर दी जाएगी,इस सिफारिश को (الشفاعة المثبته) कहा जाता है,अर्थात जिसका होना सिद्धहै,शिफाअ़त की दो शर्ते हैंःअल्लाह तआ़ला का सिफारशी(सिफारिशकर्ता)को सिफारिश की अनुमति देना,इसका प्रमाण अल्लाह तआ़ला का यह फरमान हैः

[1]इसे मुस्लिम(804)और अह़मद(2/510)ने वर्णन किया है और अल्बानी ने"सहीहुल जामे"(5780)में सह़ी कहा है।

﴿مَن ذَا ٱلَّذِى يَشۡفَعُ عِندَهُۥٓ إِلَّا بِإِذۡنِهِۦۚ﴾ [سورة البقرة:٢٥٥]

अर्थातः कोन है जो उसकी अनुमति के बिना उसके सामने सिफारिश करे। तथा यह किः

﴿وَلَا تَنفَعُ ٱلشَّفَٰعَةُ عِندَهُۥٓ إِلَّا لِمَنۡ أَذِنَ لَهُۥۚ﴾ [سورة سبأ:٢٣]

अर्थातः सिफारिश भी उसके पास लाभ नहीं देती सिवाए उनके जिनसे अल्लाह प्रसन्न हो।[1]

दूसरी शर्तःजिसके हित में सिफारिश की जाए,अल्लाह का उससे प्रसन्न होना,इस शर्त का प्रमाण अल्लाह का यह कथन हैः

﴿وَلَا يَشۡفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ٱرۡتَضَىٰ﴾ [سورة الأنبياء:٢٨]

अर्थातःवह किसी की भी सिफारिश नहीं करते सिवाए उनके जिनसे अल्लाह प्रसन्न हो।

तथा यह किः

﴿يَوۡمَئِذٖ لَّا تَنفَعُ ٱلشَّفَٰعَةُ إِلَّا مَنۡ أَذِنَ لَهُ ٱلرَّحۡمَٰنُ وَرَضِيَ لَهُۥ قَوۡلٗا ١٠٩﴾ [سورة طه:١٠٩]

अर्थातःउस दिन सिफारिश कुछ काम नहीं आएगी मगर जिसे रह़मान आदेश दे और उसकी बात को पसंद फरमाए।

अल्लाह तआ़ला ने इन दोनों शर्तों को अपने इस फरमान में एक साथ बयान किया हैः

﴿۞وَكَم مِّن مَّلَكٖ فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ لَا تُغۡنِي شَفَٰعَتُهُمۡ شَيۡـًٔا إِلَّا مِنۢ بَعۡدِ أَن يَأۡذَنَ ٱللَّهُ لِمَن يَشَآءُ وَيَرۡضَىٰٓ ٢٦﴾ [سورة النجم: ٢٦]

अर्थातःऔर बहुत से देवदूत आकाशों में हैं जिन की सिफारिश कुछ भी लाभ नहीं दे सकती मगर यह और बात है कि अल्लाह तआ़ला अपनी प्रसन्नता और अपनी चाहत से जिस के लिए चाहे अनुमति देदे।

सिफारिश उसी के हित में(स्वीकार)की जाएगी जिस से अल्लाह प्रसन्न हो,इसका प्रमाण यह भी है कि इब्राहिम अलैहिस्सलाम अपने पिता आज़र के

[1]कुरान के एकीस(21)स्थानों पे अल्लाह तआ़ला की अनुमति के बिना सिफारिश करने का खण्डन किया गया है।देखेंः"المعجم المفهرس لألفاظ القرآن الكريم" مادة: شفع

लिए सिफारिश करेंगे किंतु अल्लाह तआ़ला उनकी सिफारिश को स्वीकार नहीं करेगा,क्योंकि उनके पिता मुशरिक हैं,जबकि सिफारशी(सिफारिशकर्ता) इब्राहिम अलैहिस्सलाम होंगे जो कि खलीलुल्लाह हैं।

- ए मोमिनो!यह जानना जरूरी है कि अल्लाह तआ़ला बंदा से उसी समय प्रसन्न होगा जब वह तौह़ीद(एकेश्वरवाद)का पालन करेगा,जिस का अर्थ है:समस्त प्रार्थानाओं को केवल अल्लाह पाक के लिए ही करना,चाहे वह नमाज़ हो,दुआ़ हो,बली हो और नजर इत्यादि हो।जैसा कि अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित ह़दीस में आया है कि:आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:.....मैं ने अपनी दुआ़ क़्यामत के दिन अपनी उम्मत के सिफारिश के लिए सुरक्षित कर ली है,अत:यह दुआ़ इन्शा अल्लाह!मेरी उम्मत के प्रत्येक मानव को पहुंचेगी जो अल्लाह के साथ किसी को साझी न करते हुए मृत्यु पाया"।इसे तिरमिज़ी।[1]

यह और इस जैसी अन्य ह़दीसें इस बात पर साक्ष्य हैं कि दुआ़ इत्यादि जैसी समस्त प्रार्थानाओं को केवल अल्लाह मात्र के लिये ही करना उस व्यक्ति के लिए प्रथम शर्त है जो क़्यामत के दिन सिफारिश करने वालों की सिफारिश से लाभान्वित होना चाहता है,किंतु वह व्यक्ति जो शिर्क में लतपत रहा,जैसे मख्लूक से दुआ़ करे,अथवा उनके नाम पर बलि चढ़ाए और नजर माने.... इत्यादि तो ऐसे व्यक्ति को किसी की सिफारिश प्राप्त नहीं होगी,चाहे जो भी करले,और यदि कोई व्यक्ति उसके हित में सिफारिश करेगा भी ता उसकी सिफारिश स्वीकार नहीं होगी,चाहे सिफारशी(सिफारिशकर्ता)आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही क्यों न हो,क्योंकि शिर्क,सिफारिश(की स्वीकृती)में बाधा है।

- हे अल्लाह!हमें आखिरत में सिफारिश करने वालों की सिफारिश से लाभान्वित फरमा।
- हे अल्लहा!हम तुझ से स्वर्ग चाहते हैं और वे कार्य एवं अ़मल भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से भी जो नरक से निकट रकदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम एवं उस अ़मल से प्रेम प्रदान कर जो तुझ से निकट करदे।

[1]इसे तिरमिज़ी(3602)ने रिवायत किया है और कहा है कि:यह ह़दीस ह़सन सह़ी है।

- हे अल्लाह!हमने अपना बड़ा हानि किय और यदि तू क्षमा न करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानी उठाने वालों में से हो जाएंगे।तू हमें अपने पास से क्षमा प्रदान कर और हम पर कृपा कर,निसंदेह तू अति क्षमा करने वाला बड़ा कृपालु है।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों को क्षमा करदे,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा बाह्य।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلّم تسليما كثيرا.

शीर्षक: आखिरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े- किस्त 8

(क़ब्र के परिक्षण, उसके प्रकोप एवं उपहार पर विश्वास रखना)

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वश्रेष्ठ मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है एवं सबसे दुष्ट चीज़ धर्म में अविष्कार किए गए नवोन्मेष हैं प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ नवाचार है, हर नवाचार गुमराही है एवं हर गुमराही नरक की ओर ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो! अल्लाह से भयभीत रहो एवं उसका डर अपनी बुद्धि एवं हृदय में जीवित रखो, उसके आज्ञाकार बने रहो एवं अवज्ञा से वंचित रहो, ज्ञात रखो कि अल्लाह तआला अपने विधान में, अपने भाग्य (वितरण करने) में और अपने बदले एवं यातना में सर्वश्रेष्ठ बुद्धिमान है एवं अल्लाह तआला की एक बुद्धिमत्ता यह भी है कि उसने अपने सृष्टि हेतु एक समय स्थित किया है जिसमें उन्हें उन कर्मों का बदला देगा जिन को अपने भविष्यवक्ताओं के माध्यम से उन पर अनिवार्य किया, अल्लाह तआला का कथन है:

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ﴿١١٥﴾ فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ﴿١١٦﴾﴾ [سورة المؤمنون:١١٥-١١٦]

अर्थात: क्या तुम्हें यह भ्रम है कि हमने तुम्हें निरर्थक पैदा

किया है एवं यह की तुम हमारी ओर नहीं लौटाए जाओगे?

ए मोमिनो! पश्चात के ७ उपदेशों में प्रलय के दिन में विश्वास रखने हेतु आवश्यकताओं पर चर्चा की गई, जो सूर में फूंक मारने पर ईमान लाना की भयावहताओं पर ईमान लाना, सृष्टि के उठाए जाने, न्याय के मैदान में मनुष्यों के एकत्रित होने, लाभ-व-यातना, जांच पड़ताल, स्वर्ग

के उपहार, नरक की विशेषताएं, प्रलय के दिन की कुछ दृष्टियां, एवं प्रलय में प्रदर्शित होने वाले अनुशंसा के प्रकार (जैसी बातों) आधारित पर थीं, एवं आज के उपदेश में हम इन्-शा-अल्लाह जिस शीर्षक के अंतर्गत चर्चा करेंगे उसका भी संबंध प्रलय के दिवस पर ईमान लाने से है, और वह है: क़ब्र के परिक्षण, उसके प्रकोप एवं उपहार पर विश्वास रखना।

ए मुसलमानो! फ़ित्ने का अर्थ: प्रश्न एवं परीक्षण है, यहां क़ब्र के फ़ित्ने का अर्थ वो ३ प्रश्न हैं जो मृत्यु व्यक्ति से पूछे जाते हैं: तुम्हारा पालनहार कौन है? एवं तुम्हारा धर्म क्या है? तुम्हारे दूत कौन हैं? यदि मृत्यु व्यक्ति धर्मनिष्ठ होगा तो प्रश्न व उत्तर के समय अल्लाह तआला उसे स्थिरता प्रदान करेगा, एवं सहीह उत्तर देने की शक्ति देगा, एवं यदि वह दुष्कृत्य होगा तो उसे सहीह उत्तर देने की शक्ति नहीं मिलेगी, एवं वह प्रकोप को झेलेगा, अल्लाह का शरण।

क़ब्र में मृत्यु से प्रश्न किए जाने के स्थित होने के संबंध में तीन हदीसें हैं:

● प्रथम: बुख़ारी ने क़तादा से एवं उन्होंने अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत किया है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: व्यक्ति को जब क़ब्र में रखा जाता है, एवं जनाज़े में उपस्थित होने वाले व्यक्तिगण उस से प्रस्थान कर जाते हैं तो वह अभी उनके जूतों की ध्वनि सुन रहा होता है कि दो देवदूत (मुनकर नकीर) उसके निकट आ जाते हैं, वह उसे बिठा कर पूछते हैं: उस व्यक्ति अर्थात: मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संबंध में तुम्हारी क्या आस्था थी, विश्वासी तो कहेगा कि मैं गवाही देता हूं कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के दास एवं दूत हैं, इस उत्तर पर उस से कहा जाएगा कि तू यह देख अपना नरक का ठिकाना, परंतु अल्लाह तआला ने इसके बदले में तुम्हारे हेतु स्वर्ग में ठिकाना दिया है, उस समय उसे स्वर्ग एवं नरक दोनों ठिकाने प्रदर्शित कराए जाएंगे और पाखंडी एवं काफ़िर से जब पूछा जाएगा कि उस व्यक्ति के संबंध में तू क्या कहता था? तो वह कहेगा: मुझे कुछ भी ज्ञात नहीं, मैं भी वही कहता था जो अन्य व्यक्तिगण कहते थे, फिर उससे कहा जाएगा: ना तूने उसे अवगत होने का प्रयास किया, एवं ना ही बुद्धिमान व्यक्तिगण के मार्ग को अपनाया, फिर उसे लोहे के सोंटे से बहुत ही शक्ति के साथ मारा जाएगा कि वह चिल्ला उठेगा, उसकी इस तीव्र ध्वनि मनुष्यों एवं जीन्नों के अतिरिक्त आस-पास (हाफ़िज़ इब्ने ह़जर ने फ़तहुल्-बारी में जो बात लिखी है उस से ज्ञात होता है कि इसका अर्थ पशु हैं, क्योंकि मुसनद बज़्ज़ार में अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हू की हदीस आई है: उस की तीव्र ध्वनि को मनुष्यों एवं जीन्नों के अतिरिक्त संपूर्ण पशु सुनेंगे।) की संपूर्ण सृष्टि सुनेगी।

(बुख़ारी: १३७४)

● मृत्यु से क़ब्र में प्रश्न किए जाने का द्वितीय साक्ष्य: बराअ बिन आ़ज़िब रज़ि अल्लाहु अन्हू की हदीस है: विश्वासी मृत्यु के निकट दो देवदूत प्रकट होते हैं, उसे बिठाते हैं एवं प्रश्न करते हैं: तुम्हारा पालनहार (पूज्य) कौन है? तो वह कहता है: मेरा पालनहार (पूज्य) अल्लाह है, फिर वो दोनों उनसे पूछते हैं? तुम्हारा धर्म क्या है? वह कहता है: मेरा धर्म इस्लाम है, फिर पूछते हैं: यह कौन हैं जो तुम्हारे बीच अवतरित किए गए? वह कहता है: वह अल्लाह के दूत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं, फिर वो कहते हैं: तुम्हें यह कहां से ज्ञात हुआ? वह कहता है: मैंने अल्लाह की पुस्तक का सस्वर पाठ किया, उस पर विश्वास किया एवं उसको सत्य समझा। फिर पुकारने वाला आकाश से पुकारता है: मेरे दास ने सत्य कहा इस कारणवश उसके हेतु स्वर्ग का बिछावना बिछा दो, उसे स्वर्ग का वस्त्र पहना दो एवं उसके हेतु स्वर्ग की ओर का एक द्वार खोल दो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "फिर स्वर्ग का वायु एवं उसकी सुगंध आने लगती है, एवं दृष्टि की अंतिम सीमा तक उसके क़ब्र को विशाल कर दिया जाता है"। फ़रमाया: उसके निकट एक अति सुंदर मनुष्य आता है, वह सुंदर वस्त्र पहना हुआ होता है, उसके शरीर से सुगंध फूट रही होती है, वह कहता है: "तुम्हारे हेतु ऐसे उपहारों का शुभ समाचार है जिस से तुम्हें प्रसन्नता प्राप्त होगी, यही वह दिवस है जिसका तुम्हें वचन दिया जाता था, वह से कहता है: तुम कौन हो? तुम्हारा मुखड़ा लाभों का उपहार लाने वाला ज्ञात होता है, वह कहता है: मैं तुम्हारा पुण्य-कर्म हूं। वह व्यक्ति कहता है: हे पालनहार! क़यामत प्रकट कर दे ताकि मैं अपने परिवार एवं अपने धन संपत्ति की ओर लौट जाऊं।

एवं रहा काफ़िर तो आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी मृत्यु का उल्लेख करते हुए फ़रमाया: उसके निकट दो देवदूत आते हैं, उसे उठाते हैं एवं पूछते हैं: तुम्हारा पालनहार कौन है? वह कहता है: हाय हाय! मुझे ज्ञात नहीं, फिर वह दोनों उससे प्रश्न करते हैं: यह व्यक्ति कौन हैं? वह कहता है: हाय हाय! मुझे ज्ञात नहीं, फिर वह दोनों उससे पूछते हैं? तुम्हारा धर्म क्या है? वह कहता है: हाय हाय! मुझे ज्ञात नहीं, तो पुकारने वाला आकाश से पुकारता है: उसने असत्य बात कही, उसके हेतु नरक का बिछावना बिछा दो, उसके हेतु नरक की ओर का द्वार खोल दो, तो उसकी तपन एवं विषैला वायु (लपट) आने लगती है, एवं उसकी क़ब्र संकीर्ण कर दी जाती है, यहां तक कि उसकी पसलियां इधर से उधर हो जाती हैं, फिर उसके निकट एक कुरूप व्यक्ति आता है, जो भद्दा वस्त्र पहना हुआ होता है, उसके शरीर से दुर्गंध फूटती रहती है, वह कहता है: तुझे बुरे यातना का शुभ समाचार दिया जाता है, यही वह दिवस है जिसका

तुझे वचन दिया जाता था, वह कहता है: तुम कौन हो? तुम्हारा मुखड़ा बुराइयों का संदेश लाने वाला ज्ञात होता है, वह कहता है: मैं तुम्हारा दुष्ट-कर्म हूं, वह कहता है ए पालनहार क़यामत प्रकट मत कर।

(इसे इमाम अहमद ने मुसनद: ४/२८७ की एक लंबी ह़दीस में रिवायत किया है, इनके अतिरिक्त अबू दाऊद: ४७५३ ने भी रिवायत किया है एवं मुसनद के शोधकर्ताओं ने इसकी सनद को सहीह स्थित किया है एवं कहा है कि इसकी प्रतिलिपि करने वाले सहीह के रुवात हैं, इसी प्रकार अल्-बानी ने सहीहुल्-जामेअ़: १६७६ एवं मिशकातुल्- मसाबीह: १६३० में इसे सहीह कहा है।)

● मृत्यु से क़ब्र में प्रश्न किए जाने का तीसरा साक्ष्य: सहीह बुख़ारी की यह रिवायत है,असमा पुत्री अबूबकर अपनी बहन आ़इशा रज़ि अल्लाहु अन्हां से उल्लेख करती हैं कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ... मुझ पर यह वह़्य की गई है कि तुम लोगों का क़ब्र में परिक्षण लिया जाएगा, दज्जाल जैसी परीक्षा (आज़माइश) के आस-पास। तुम में से प्रत्येक के निकट (अल्लाह के देवदूत) भेजे जाएंगे एवं उससे कहा जाएगा: तुम्हारा उस व्यक्ति (अर्थात मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के संबंध में क्या विचार है? फिर मोमिन अथवा विश्वासी व्यक्ति कहेगा: मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के सत्य दूत हैं, वह हमारे निकट स्मृति-चिन्ह एवं दिशा-निर्देश का प्रकाश लेकर आए, हमने (उसे) स्वीकार किया, विश्वास किया एवं (आपकी) आज्ञा की। फिर उससे कहा जाएगा: तू सो जा, तू एक पुण्य-कर्म करने वाले पुरुष की स्थिति में है एवं हमें ज्ञात है कि तू विश्वासी है, और प्रत्येक स्थिति में (बह़ हाल) पाखंडी अथवा शंकाशील व्यक्ति मुझे याद नहीं की असमा ने है कौन सा शब्द प्रयोग किया, (जब उस से प्रश्न किया जाएगा) तो वह कहेगा: मुझे (कुछ भी) ज्ञात नहीं, मैंने लोगों से जो कहते हुए सुना वह मैंने भी कह दिया। [इसे बुख़ारी: १०५३ ने रिवायत किया है, (मोमिन अथवा विश्वासी) (पाखंडी अथवा शंकाशील) में शंका हिशाम बिन उ़रवह से आया है।]

यह तीनों हदीसें है इस बात पर साक्ष्य हैं कि मृत्यु व्यक्ति से क़ब्र में प्रश्न किया जाएगा, परंतु अल्लाह तआ़ला विश्वासी को स्थिरता प्रदान करेगा एवं उसे सहीह उत्तर देने की शक्ति देगा, चाहे वह पापी ही क्यों न हो, अल्लाह का कथन है:

﴿يُثَبِّتُ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ بِٱلْقَوْلِ ٱلثَّابِتِ فِي ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَفِي ٱلْأٓخِرَةِۖ﴾ [سورة إبراهيم:٢٧]

अर्थात: अल्लाह तआ़ला विश्वावासियों को पक्की बात के साथ शक्तिशाली रखता है, सांसारिक जीवन में भी एवं प्रलोक में भी।

रही बात काफ़िरों एवं पाखंडियों की तो वो प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाएंगे इस कारणवश अल्लाह तआ़ला उनके साथ वही व्यवहार करेगा जिसके वो पात्र हैं।

● ए मोमिनो! प्रलय के दिवस में विश्वास रखने के संबंध में द्वितीय विषय है; क़ब्र की यातना एवं उसका उपहार, इसका साक्ष्य ज़ैद बिन साबित रज़ि अल्लाहु अन्हू की यह हदीस है, वह रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "यदि यह संदेश ना होता कि तुम (अपने मृत्यु गण) का अंतिम संस्कार नहीं करोगे, तो मैं अल्लाह से प्रार्थना करता क़ब्र के जिस प्रकोप (की ध्वनियां) मैं सुन रहा हूं वह तुम्हें भी सुना दे, फिर आपने अपना मुखड़ा हमारी ओर किया और फ़रमाया: "अग्नि के प्रकोप से अल्लाह का शरण मांगो।" सब ने कहा: हम अग्नि के प्रकोप से अल्लाह के शरण में आते हैं, फिर आपने फ़रमाया: "क़ब्र की यातना से अल्लाह का शरण मांगो।" सब ने कहा हम क़ब्र के प्रकोप से अल्लाह के शरण में आते हैं, फिर आपने फ़रमाया: "प्रत्येक प्रकार के परीक्षणों से; जो उस में प्रदर्शित हैं एवं जो अदृश्य हैं अल्लाह का शरण मांगो"। सब ने कहा: हम परीक्षणों से; जो प्रदर्शित हैं एवं अदृश्य हैं अल्लाह के शरण में आते हैं, आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "दज्जाल के परीक्षणों से अल्लाह का शरण मांगो"।

(मुस्लिम: २८६७)

अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब तुम में से कोई नमाज़ में तशह्हुद पढ़े तो चार चीज़ों से शरण मांगे:

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ»

अर्थात: हे अल्लाह! मैं तेरा शरण मांगता हूं नरक एवं क़ब्र की यातना से, जीवन एवं मृत्यु की यातना से, और दज्जाल के परीक्षण से"।

इसे बुख़ारी: १३७७ एवं मुस्लिम: ५८८ ने रिवायत किया है एवं उल्लेख किए गए शब्द मुस्लिम के हैं।)

● अल्लाह के दासो! क़ब्र की यातना दो प्रकार के व्यक्तियों को दी जाएगी, पापी विश्वासियों एवं काफ़िरों को, पापी विश्वासियों का साक्ष्य: अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा की यह हदीस है, वह कहते हैं कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुज़र दो क़ब्रों के पास से हुआ, इन दोनों क़ब्रों के मृत्यु की यातना दी जा रही है, एवं यह भी किसी महत्वपूर्ण कारण से नहीं हो रहा है, फिर आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हां! इन में से एक व्यक्ति चुग़ली करता था एवं द्वितीय वह व्यक्ति है जो मूत्र से बचने में सतर्क (अर्थात मूत्र के छींटे से बचने में लापरवाही करता था जिस कारणवश उसके वस्त्र मूत्र की गंदगी से अपवित्र हो जाते थे।) नहीं रहता था।

(इसे बुख़ारी: २१६ एवं मुस्लिम: २९२ ने रिवायत किया है एवं उल्लेख किए गए शब्द मुस्लिम के हैं।)

ज्ञात हुआ कि चुग़ली खाना एवं मूत्र से ना बचना महा पापों में से है, एवं यह दोनों पापी अपने पाप के अनुसार क़ब्र में यातना के योग्य हैं ताकि उन्हें उनके पापों से पवित्र एवं स्वच्छ किया जा सके, इसी प्रकार इनके अतिरिक्त और भी पाप हैं जिनके अनुसार (मनुष्य को) क़ब्र में यातना दी जाएगी, क्योंकि क़ब्र यातना एवं उपहार का स्थान है।

● काफ़िरों को क़ब्र की यातना देने पर दूसरा साक्ष्य अल्लाह तआला का कथन है:

﴿ وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذِ ٱلظَّٰلِمُونَ فِى غَمَرَٰتِ ٱلْمَوْتِ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةُ بَاسِطُوٓا۟ أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوٓا۟ أَنفُسَكُمُ ٱلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ ٱلْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَقُولُونَ عَلَى ٱللَّهِ غَيْرَ ٱلْحَقِّ وَكُنتُمْ عَنْ ءَايَٰتِهِۦ تَسْتَكْبِرُونَ ﴾ [سورة الأنعام:٩٣]

अर्थात: एवं यदि आप उस समय देखें जब ये क्रूर व्यक्तिगण मृत्यु की कठिनाइयों में होंगे एवं देवदूत अपने हाथ बढ़ा रहे होंगे कि हां अपनी प्राणें निकालो। आज तुम्हें निरादर यातना दी जाएगी, वह इस कारणवश की तुम अल्लाह के संबंध में असत्य बातें कहते थे एवं उसके श्लोकों के साथ अभिमान करते थे।

● इस कारणवश अल्लाह का कथन (ٱلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ) इस बात पर साक्ष्य है कि उन्हें तुरंत ही यातना दी जाएगी।

● अल्लाह ने फ़िरऔनियों के संबंध में फ़रमाया:

﴿ٱلنَّارُ يُعۡرَضُونَ عَلَيۡهَا غُدُوّٗا وَعَشِيّٗاۚ وَيَوۡمَ تَقُومُ ٱلسَّاعَةُ أَدۡخِلُوٓاْ ءَالَ فِرۡعَوۡنَ أَشَدَّ ٱلۡعَذَابِ ٤٦﴾ [سورة غافر:٤٦]

अर्थात: यह अग्नि है जिसके समक्ष प्रत्येक प्रातः एवं सांय ये लाए जाते हैं, एवं जिस दिन प्रलय प्रकट होगा, (आदेश होगा कि) फ़िरऔनियों को अत्यंत कठोर यातना में डालो।

अल्लाह का कथन: ﴿غُدُوّٗا وَعَشِيّٗاۚ﴾ का अर्थ यह है कि प्रलय के प्रकट होने से पूर्व। क्योंकि इसके पश्चात फ़रमाया:

﴿وَيَوۡمَ تَقُومُ ٱلسَّاعَةُ أَدۡخِلُوٓاْ ءَالَ فِرۡعَوۡنَ أَشَدَّ ٱلۡعَذَابِ﴾

इस कारणवश प्रलय के दिन से पूर्व की यातना की एवं उस समय की यातन में अंतर का उल्लेख किया गया है।

● रही बात क़ब्र के उपहारों की तो यह सत्य विश्वासियों हेतु है, अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ قَالُواْ رَبُّنَا ٱللَّهُ ثُمَّ ٱسۡتَقَٰمُواْ تَتَنَزَّلُ عَلَيۡهِمُ ٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ أَلَّا تَخَافُواْ وَلَا تَحۡزَنُواْ وَأَبۡشِرُواْ بِٱلۡجَنَّةِ ٱلَّتِي كُنتُمۡ تُوعَدُونَ ٣٠﴾ [سورة فصلت:٣٠]

अर्थात: (वास्तव में) जिन व्यक्तिगण ने कहा हमारा पालनहार अल्लाह है, फिर उसी पर स्थित रहे, उसके निकट देवदूत (यह कहते हुए आते हैं कि कुछ भी भय एवं शोक ना करो) बल्कि उस स्वर्ग का शुभ संदेश सुन लो जिसका तुम्हें वचन दिया गया।

इस श्लोक से तर्क का आधार अल्लाह का यह कथन है जो स्वर्गदूतों द्वारा कहा गया: ﴿وَأَبۡشِرُواْ بِٱلۡجَنَّةِ﴾ (अर्थात: स्वर्ग का शुभ संदेश सुन लो।) यह उस समय कहा जाता है जब आत्मा निकाली जाती है। इस कारणवश मृत्यु के समय आत्मा निकालते हुए यह शुभ संदेश देना उपहारस्वरूप माना जाता है। और यही अस्थान तर्क का आधार है।

● क़ब्र में मिलने वाले उपहारों पर क़ुरआन से साक्ष्य अल्लाह का कथन है:

﴿ فَلَوْلَآ إِذَا بَلَغَتِ ٱلْحُلْقُومَ ۝٨٣ وَأَنتُمْ حِينَئِذٍ تَنظُرُونَ ۝٨٤ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنكُمْ وَلَٰكِن لَّا تُبْصِرُونَ ۝٨٥ فَلَوْلَآ إِن كُنتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ۝٨٦ تَرْجِعُونَهَآ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ۝٨٧ فَأَمَّآ إِن كَانَ مِنَ ٱلْمُقَرَّبِينَ ۝٨٨ فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتُ نَعِيمٍ ۝٨٩ ﴾ [الواقعة: ٨٣-٩٦]

अर्थात: जबकि आत्मा कंठ तक पहुंच जाए, और तुम उस समय नेत्रों से देखते रहो, हम उस व्यक्ति की तुलना में तुम से अधिक निकट रहते हैं, परंतु तुम दर्शन नहीं कर सकते, इस कारणवश यदि तुम किसी के अधीन नहीं हो एवं तुम अपने प्रवचन में सत्य हो तो (थोड़ा) तुम इस आत्मा को लौटाओ, जो कोई अल्लाह के द्वार के निकट होगा उसके हेतु शांति, आहार एवं शांतिपूर्ण स्वर्ग है।

● इस श्लोक से तर्क का आधार यह है कि (जब आत्मा कंठ तक पहुंच जाए) उस समय शांति आहार एवं सुखो वाले स्वर्ग का शुभ संदेश दिया जाता है, जैसा कि उपरोक्त श्लोक से ज्ञात होता है, यह इस बात का साक्ष्य है कि मनुष्य को जो उपहार मिलने वाला होता है मृत्यु के समय से ही वह प्रारंभ हो जाता है एवं यह क़ब्र का सर्वप्रथम उपहार है।

● क़ब्र में मिलने वाले उपहारों पर कुरआन से एक साक्ष्य यह भी है अल्लाह का कथन है:

﴿ كَذَٰلِكَ يَجْزِى ٱللَّهُ ٱلْمُتَّقِينَ ۝٣١ ٱلَّذِينَ تَتَوَفَّىٰهُمُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ طَيِّبِينَ يَقُولُونَ سَلَٰمٌ عَلَيْكُمُ ٱدْخُلُوا۟ ٱلْجَنَّةَ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝٣٢ ﴾[النحل: ٣١-٣٢]

अर्थात: धर्मनिष्ठ व्यक्तियों को अल्लाह इसी प्रकार बदला देता है, वो जिनकी आत्माएं देवदूत इस परिस्थिति में निकालते हैं कि वो पवित्र एवं स्वच्छ हों, कहते हैं कि तुम्हारे लिए तो शांति ही शांति है, जाओ स्वर्ग में अपने उन पुण्य-कर्मों के बदले जो तुम करते थे।

● इस श्लोक से तर्क का आधार यह है कि अल्लाह देवदूतों के माध्यम से विश्वासियों को उनकी मृत्यु के समय कहता है (ٱدْخُلُوا۟ ٱلْجَنَّةَ) (स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ।)

● आत्मा निकलने से पूर्व ही विश्वासियों को उपहार का शुभ संदेश दे दिया जाता है, इसका साक्ष्य अल्लाह का यह कथन है:

﴿ يَٰٓأَيَّتُهَا ٱلنَّفْسُ ٱلْمُطْمَئِنَّةُ ۝٢٧ ٱرْجِعِىٓ إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۝٢٨ فَٱدْخُلِى فِى عِبَٰدِى ۝٢٩ وَٱدْخُلِى جَنَّتِى ۝٣٠ ﴾
[الفجر: ٢٧-٣٠]

अर्थात: ए संतुष्ट आत्मा! तू अपने पालनहार की ओर चल इस स्थिति में की तुम अल्लाह से एवं वो तुम से प्रसन्न हो, इस कारणवश तुम मेरे विशेष दासों में प्रवेश कर जा, एवं मेरे स्वर्ग में चली जा।

● हदीस से इस बात पर साक्ष्य कि आत्मा निकलने से पूर्व ही विश्वासियों को उपहार का शुभ संदेश दे दिया जाता है, बराअ बिन आ़ज़िब रज़ि अल्लाहु अन्हू की उपरोक्त हदीस है, उसमें उल्लेख हुआ है कि दो देवदूत विश्वासी से कहते हैं उस समय जब वह क़ब्र में प्रश्नों का सफ़लतापूर्वक उत्तर दे देता है, (ए शांतिपूर्ण आत्मा! अल्लाह की क्षमा/मुक्ति एवं प्रसन्नता की ओर चली जा।) इस कारणवश आत्मा प्रसन्न हो जाती है एवं सरलता पूर्वक शरीर से निकल जाती है, फिर फ़रमाया: फिर पुकारने वाला आकाश से पुकारता है: मेरे दास ने सत्य कहा इस कारणवश उसके हेतु स्वर्ग का बिछावना बिछा दो, उसे स्वर्ग का वस्त्र पहना दो एवं उसके हेतु स्वर्ग की ओर का एक द्वार खोल दो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "फिर स्वर्ग का वायु एवं उसकी सुगंध आने लगती है, एवं दृष्टि की अंतिम सीमा तक उसके क़ब्र को विशाल कर दिया जाता है।" फ़रमाया: उसके निकट एक अति सुंदर मनुष्य आता है, वह सुंदर वस्त्र पहना हुआ होता है, उसके शरीर से सुगंध फूट रही होती है, वह कहता है: "तुम्हारे हेतु ऐसे उपहारों का शुभ समाचार है जिस से तुम्हें प्रसन्नता प्राप्त होगी, यही वह दिवस है जिसका तुम्हें वचन दिया जाता था, वह से कहता है: तुम कौन हो? तुम्हारा मुखड़ा लाभों का उपहार लाने वाला ज्ञात होता है, वह कहता है: मैं तुम्हारा पुण्य-कर्म हूं। वह व्यक्ति कहता है: हे पालनहार! क़यामत प्रकट कर दे ताकि मैं अपने परिवार एवं अपने धन संपत्ति की ओर लौट जाऊं।

(इसे इमाम अहम ने मुसनद: ४/२८७ की एक लंबी हदीस में रिवायत किया है, इनके अतिरिक्त अबू दाऊद: ४७५३ ने भी रिवायत किया है एवं मुसरत के शोधकर्ताओं ने इसकी सनद को सहीह स्थित किया है एवं कहा है कि इसकी प्रतिलिपि करने वाले सहीह के रुवात हैं, इसी प्रकार अल्-बानी ने सहीहुल्-जामेअ़: १६७६ एवं मिशकातुल्- मसाबीह: १६३० में इसे सहीह कहा है।)

● अल्लाह के दासो! क़ब्र के परीक्षणों उसकी यातना एवं उपहार को स्थित करने हेतु किताब-व-सुन्नत के यह कुछ साक्ष्य हैं जिनका उल्लेख हुआ, इसका विरोध केवल भटका हुआ व्यक्ति कर सकता है।

●अल्लाह तआला हमें एवं आपको सर्वश्रेष्ठ क़ुरआन के लाभों से लाभार्थी करे, मुझे एवं आपको क़ुरआन के श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाहों से लाभार्थी करे, मैं अपनी यह बात कहते हए अपने लिए एवं आप संपूर्ण के लिए अल्लाह से क्षमा मांगता हूं, आप भी उस से क्षमा प्रार्थी हों। निः संदेह वह अधिक क्षमा स्वीकार करने वाला एवं अधिकतम दया करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد!

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के दासो! अल्लाह से भयभीत रहे एवं यह ज्ञात रखें कि प्रलय के दिन में विश्वास रखने के अनेक लाभ हैं (उपदेश का यह पाठ इब्न-ए-उसैमीन रहिमहुल्लाह की पुस्तक: शरहुसलासतिल्-उसूल, पृष्ठ संख्या: १०५ से प्रतिलिपि की गई है।) उनमें से कुछ महत्वपूर्ण लाभ निम्नलिखित हैं:

१. उस दिन के उपहार की आशा में आज्ञाकारी की ओर आकर्षित होना एवं उसके हेतु प्रबंध करना।

२. उस दिन के यातना की भय से पाप करने एवं उस पर सहमति से वंचित रहना।

३. विश्वासी संसार के जिस उपहार अथवा नेमत से वंचित रहते हैं उनकी भरपाई हेतु प्रलय के दिन के उपहार एवं सवाब की आशा करके मन को संतुष्ट करना।

४. अल्लाह की न्याय से अवगत होना वह इस प्रकार कि अल्लाह उनके कर्मों का बदला देगा, यदि कर्म पुण्य का होगा तो लाभ भी अच्छा मिलेगा एवं यदि कर्म दुष्ट होगा तो उसका बदला भी बुरा होगा।

५. अल्लाह की बुद्धिमत्ता का ज्ञान रखना इस प्रकार कि अल्लाह ने दासों को निराधार प्रकट नहीं किया, बल्कि उन्हें महान बुद्धिमत्ता के कारण प्रकट किया जो कि उसकी उपासना है, वह इस प्रकार कि वो संपूर्ण आज्ञाओं एवं उपासनाओं को पूरा करें, एवं प्रत्येक प्रकार के अवैध

चीज़ों से वंचित रहें, फिर अल्लाह तआला इस आधार पर प्रलोक में उनका लेखांकन करने वाला है।

● हे अल्लाह! हम तेरा शरण चाहते हैं नरक एवं क़ब्र की यातना से, जीवन एवं मृत्यु की यातना से और दज्जाल के परीक्षण से।

● हे अल्लाह! हम तुझसे स्वर्ग की मांग करते हैं एवं ऐसी कथनी और करनी की जो स्वर्ग से निकट कर दे, एवं नर्क से तेरा शरण चाहते हैं एवं ऐसी ही कथनी और करनी से जो नरक से निकट कर दे।

● हे अल्लाह! हमें अपना प्रेम एवं उस प्रत्येक कर्म का प्रेम प्रदान कर जो हमें तुझ से निकट कर दे।

● हे अल्लाह हम ने स्वयं को बहुत ही हानि पहुंचाया है यदि तू क्षमा ना करेगा एवं हम पर कृपा नहीं करेगा तो वास्तव में हम हानि प्राप्त करने वाले हो जाएंगे।

● हे अल्लाह! हमारे संपूर्ण पापों को क्षमा कर दे, चाहे वो बड़ा हो अथवा छोटा, पूर्व का हो अथवा पश्चात का एवं प्रदर्शित हो अथवा अदृश्य।

● हे हमारे पालनहार हमें सांसारिक जीवन में पुण्य दे एवं प्रलय में भलाई प्रदान कर और नरक की यातना से हमें सुरक्षित रख।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

शीर्षक: भाग्य में विश्वास रखने का अर्थ

الحمد لله العلي الأعلى، الذي خلق فسوى، والذي قدّر فهدى، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰه إِلَّا اللّٰهُ وحده لا شريك له، له الحمد في الآخرة والأولى، وأشهد أن محمدًا عبدُ الله ورسوله، بلّغ الرسالة، وأدى الأمانة، ونصح الأمة، وكشف الغمة، صلى الله عليه وعلى آله وأصحابه ومن سار على نهجهم واقتفى، وسلّم تسليمًا كثيرًا.

प्रशंसाओं के पश्चात!

ऐ मुसलमानो! अल्लाह से डरो एवं उसका सम्मान करो, उसके आज्ञाकार बनो एवं अवज्ञा से वंचित रहो, आज्ञाकारी के कर्मों को करने में एवं अवज्ञा से वंचित रहने में धीरज को अपनाओ, ज्ञात रखो के भाग्य में विश्वास रखना विश्वास (ईमान) का एक ऐसा स्तंभ है जिसका पालन किए बिना ईमान सहीह नहीं हो सकता, भाग्य का अर्थ यह है कि अल्लाह ने अपने पूर्व ज्ञानों एवं बुद्धिमत्ता के आवश्यकताओं के अनुसार ब्रह्मांड के भाग्य को निर्धारित किया है।

१. ऐ अल्लाह के दासो! भाग्य पर विश्वास रखने में चार बातें में सम्मिलित हैं: ज्ञान, लेख (किताबत), इच्छा (मशीयत) एवं निर्माण (तख़लीक़) पर विश्वास रखना, ज्ञान पर विश्वास रखने का अर्थ यह है कि इस बात पर विश्वास रखा जाए कि अल्लाह तआला प्रारंभिक काल से अंत काल तक के प्रत्येक वस्तु के संबंध में सारांश एवं विस्तार स्वरूप भली-भांति अवगत है, चाहे उसका संबंध क्रियाओं से हो जैसे: जीवन एवं मृत्यु देना, वर्षा करना अथवा उसका संबंध दासों के कर्मों एवं कथनों से हो, जैसे: उनकी वार्ता एवं उनके कार्य, इन संपूर्ण कार्यों से अल्लाह भली-भांति अवगत है, इसका साक्ष्य अल्लाह का कथन है:

﴿ وَكَانَ ٱللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٤٠﴾ ﴾ [سورة الأحزاب:٤٠]

अर्थात: अल्लाह प्रत्येक वस्तु का (भली-भांति) ज्ञान रखने वाला है।

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

﴿ وَعِندَهُۥ مَفَاتِحُ ٱلْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ إِلَّا هُوَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِى ٱلْبَرِّ وَٱلْبَحْرِ ۚ وَمَا تَسْقُطُ مِن وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِى ظُلُمَٰتِ ٱلْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِى كِتَٰبٍ مُّبِينٍ ﴿٥٩﴾ ﴾ [سورة الأنعام:٥٩]

अर्थात: अल्लाह के पास ही अदृश्य की कुंजियां हैं, (धनागार) अल्लाह के अतिरिक्त उनसे कोई अवगत नहीं, एवं वह संपूर्ण वस्तुओं का ज्ञानी है, जो कुछ धरती पर है एवं दरियाओं में है, जो भी पत्ता गिरता है वह उसे जानता है, एवं जो भी बीज धरती के अंधेरे भागों में है एवं जो भी सुखा एवं गीला वस्तु गिरता है यह संपूर्ण चीज़ें खुली हुई पुस्तक (किताब-ए-मुबीन) में हैं।

२. ऐ विश्वासियो! भाग्य में विश्वास रखने का दूसरा स्तंभ पुस्तक पर ईमान लाना है, अर्थात: इस बात में विश्वास रखना कि प्रलय तक जो कुछ भी प्रकट होगा; अल्लाह ने लोह-ए-महफ़ूज़ में उन संपूर्ण चीज़ों को लिख दिया है, यह अल्लाह ने आकाश एवं पृथ्वी के निर्माण से पचास हज़ार वर्ष पूर्व लिख दिया, भाग्य के लिखने का साक्ष्य अल्लाह का यह कथन है:

﴿قُل لَّن يُصِيبَنَآ إِلَّا مَا كَتَبَ ٱللَّهُ لَنَا﴾ [سورة التوبة:٥١]

अर्थात: आप कह दीजिए कि हमें अल्लाह के अतिरिक्त हमारे हित में लिखे हुए कि कोई भी चीज़ नहीं पहुंच सकती।

एवं यह कथन भी इसका साक्ष्य है:

﴿مَآ أَصَابَ مِن مُّصِيبَةٍ فِي ٱلۡأَرۡضِ وَلَا فِيٓ أَنفُسِكُمۡ إِلَّا فِي كِتَٰبٍ مِّن قَبۡلِ أَن نَّبۡرَأَهَآۚ﴾ [سورة الحديد:٢٢]

अर्थात: ना कोई कठिनाई संसार में प्रकट होती है ना (विशेषकर) तुम्हारे प्राणों में, मगर इससे पूर्व कि हम उसका आविष्कार करें, वह एक विशेष पुस्तक में लिखित है।

अर्थात: इससे पूर्व कि हम सृष्टि का निर्माण करते।

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल्-आ़स रज़ि अल्लाहु अन्हू से मरवी है कि मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कहते हुए सुना: "अल्लाह तआ़ला ने ही आकाश एवं पृथ्वी के निर्माण से पचास हज़ार वर्ष पूर्व सृष्टि के भाग्य को लिख दिया"।

(मुस्लिम: २६५३)

एवं ड़बादह बिन सामित रज़िअल्लाहु अन्हू रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया: "सर्वप्रथम वस्तु जिसका अल्लाह ने अविष्कार किया वह क़लम थी, फिर उसे आदेश दिया कि लिखो, उसने कहा: ए मेरे पालनहार! मैं क्या लिखूं? तो अल्लाह

ने उत्तर दिया: प्रलय के दिन के आगमन तक प्रत्येक वस्तु के भाग्य लिख, फिर ज़बादह ने अपने पुत्र से कहा: ए मेरे प्रिय पुत्र! नि: संदेह मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कहते हुए सुना है, आप कहा करते थे: "जिस व्यक्ति की इसके अतिरिक्त (किसी अन्य आस्था) पर मृत्यु हुई, वह मुझ में से नहीं"।

(इसे अबूदाऊद: ४७००, एवं तिर्मीज़ी: ३३१९ ने रिवायत किया है, उल्लेख किए गए शब्द अबू दाऊद के हैं एवं अल्लामा अल्-बानी ने इसे सहीह कहा है।)

३. ऐ मुसलमानो! भाग्य में विश्वास रखने का तीसरा स्तंभ अल्लाह की इच्छा (मशीय्यत) पर ईमान लाना है, इसका अर्थ यह है कि इस बात में विश्वास रखना की ब्रह्मांड में जो कुछ प्रकट हो रहा है वह अल्लाह की इच्छा से हो रहा है, अर्थात: ब्रह्मांडीय अनुमति से, चाहे उसका संबंध अल्लाह की क्रियाओं से हो जैसे: जीवन एवं मृत्यु प्रदान करना एवं ब्राह्मांड के कार्यों का समाधान करना अथवा उसका संबंध सृष्टि की क्रिया से हो जेसे: आना और जाना, कुछ करना एवं कुछ त्याग देना, आज्ञा एवं अवज्ञा एवं इनके अतिरिक्त वो संपूर्ण कार्य जिनकी गणना करना संभव नहीं, अल्लाह का अपने क्रियाओं के संबंध में कथन है:

﴿وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ﴾ [سورة القصص:٦٨]

अर्थात: और आपका पालनहार जो चाहता करता है प्रकट करता है एवं जिसे चाहता है चयन कर लेता है।

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

﴿ وَيَفْعَلُ ٱللَّهُ مَا يَشَآءُ ﴾ [سورة إبراهيم:٢٧]

अर्थात: और अल्लाह जो चाहे कर डाले।

एवं अल्लाह ने सृष्टि की क्रियाओं के संबंध में फ़रमाया:

﴿ وَلَوْ شَآءَ ٱللَّهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَٰتَلُوكُمْ ﴾ [سورة النساء:٩٠]

अर्थात: यदि अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम्हारे विरुद्ध प्रभुत्व प्रदान कर देता एवं वह तुम से नि: संदेह युद्ध करते।

इस कारण वश युद्ध लड़ना जोकि दासों के कार्यों में से है वह भी अल्लाह की इच्छा के बिना प्रकट नहीं हो सकता, अल्लाह का कथन है:

﴿وَلَوۡ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُۖ فَذَرۡهُمۡ وَمَا يَفۡتَرُونَ﴾ [سورة الأنعام:١١٢]

अर्थात: यदि अल्लाह चाहता तो ये ऐसे कार्य ना कर सकते, इस कारण वश आप उन्हें एवं जो कुछ ये मानहानि कर रहे हैं उन्हें रहने दीजिए।

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

﴿وَلَوۡ شَآءَ ٱللَّهُ مَآ أَشۡرَكُواْۗ﴾ [سورة الأنعام:١٠٧]

अर्थात: यदि अल्लाह को स्वीकृत होता तो यह बहुदेववाद नहीं बनते।

ज्ञात हुआ के इस ब्रह्मांड में कोई भी कार्य अल्लाह की इच्छा के बिना प्रकट नहीं होता, चाहे उसका संबंध अल्लाह के कार्यों से हो अथवा दासों के कार्यों से, क्योंकि यह ब्रह्मांड अल्लाह की शासन है, इस कारण वश इस शासन में वही होगा जो वह चाहेगा एवं जिसकी वह अनुमति देगा, चाहे वह उसे पसंद करता हो अथवा पसंद न करता हो, यदि कोई कार्य उसकी अनुमति के बिना प्रकट होता तो उसका शासन अधूरा रहता, अल्लाह इस से सर्वोच्च एवं सर्वश्रेष्ठ है।

४. ऐ मुसलमानो! भाग्य में विश्वास रखने का चौथा स्तंभ यह है कि निर्माण पर ईमान लाया जाए, अर्थात: इस बात में विश्वास रखा जाए पूरे ब्रह्मांड को उसके संपूर्णत: जातियों, विशेषताओं एवं क्रियाओं के साथ अनुपस्थित से उपस्थित किया, अल्लाह का कथन है:

﴿ٱللَّهُ خَٰلِقُ كُلِّ شَيۡءٖ﴾ [سورة الرعد:١٦]

अर्थात: अल्लाह ही प्रत्येक चीज़ों का बनाने वाला है।

अल्लाह का कथन है:

﴿وَخَلَقَ كُلَّ شَيۡءٖ فَقَدَّرَهُۥ تَقۡدِيرٗا﴾ [سورة الفرقان:٢]

अर्थात: उसने प्रत्येक चीज़ों को पैदा करके एक उपयुक्त अनुमान/भाग्य स्थित किया है।

अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ۝٤٩﴾ [سورة القمر:٤٩]

अल्लाह के दासो! ये चार बातें हैं जो भाग्य में विश्वास रखने के स्तंभ है, जिसने इन्हें समझ कर इनका अनुसरण किया उसने भाग्य पर विश्वास रखा।

अल्लाह तआला हमें एवं आप को सर्वश्रेष्ठ क़ुरआन के लाभों से लाभार्थी करे, मुझे एवं आपको क़ुरआन के श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाहों से लाभार्थी करे, मैं अपनी यह बात कहते हुए अपने लिए एवं आप संपूर्ण के लिए अल्लाह से क्षमा मांगता हूं, आप भी उससे क्षमा प्रार्थी हों। निःसंदेह वह अधिक क्षमा स्वीकार करने वाला एवं अधिकतम दया करने वाला है।

अल्लाह के दासो! ये चार बातें हैं जो भाग्य में विश्वास रखने के स्तंभ है, जिसने इन्हें समझ कर इनका अनुसरण किया उसने भाग्य पर विश्वास रखा।

अल्लाह तआला हमें एवं आपको सर्वश्रेष्ठ क़ुरआन के लाभों से लाभार्थी करे, मुझे एवं आपको क़ुरआन के श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाहों से लाभार्थी करे, मैं अपनी यह बात कहते हुए अपने लिए एवं आप संपूर्ण के लिए अल्लाह से क्षमा मांगता हूं, आप भी उससे क्षमा प्रार्थी हों। निःसंदेह वह अधिक क्षमा स्वीकार करने वाला एवं अधिकतम दया करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده!.

प्रशंसाओं के पश्चात!

ऐ अल्लाह के दासो! आप अल्लाह का भय अपनाएं एवं ज्ञात रखें कि अल्लाह के भाग्य के तीन भाग हैं:

१. पहला भाग्य: (अर्थात प्रथम) जो अल्लाह तआला ने आकाश एवं पृथ्वी के निर्माण से पचास हज़ार वर्ष पूर्व स्थित फ़रमाया, जब अल्लाह ने क़लम को पैदा किया तो उसे आदेश दिया: प्रलय के प्रकट होने तक प्रत्येक वस्तु का भाग्य लिख।

(इस हदीस के प्रमाण का उल्लेख हो चुका है।)

२. आयु का भाग्य: यह उस समय लिखा जाता है जब मां के कोख में शुक्राणु का निर्माण होता है, उस समय जो लिखा जाता है वह यह कि वह बालक होगा या बालिका होगी, उसके आयु

एवं कर्म, उसके नेक एवं पापी होने, रोज़ी-रोटी एवं इनके के अतिरिक्त प्रत्येक वो संपूर्ण चीज़ें लिखी जाती हैं जो सांसारिक जीवन में उनके साथ घटित होंगी, फिर उसके अंदर किसी प्रकार की कोई बढ़ोतरी एवं कमी नहीं होती, इसका साक्ष्य अब्दुल्लाह बिन मसउ़द रज़िअल्लाहु अन्हू की हदीस है, वह कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें बताया जो के स्वयं सत्य हैं एवं उनको सत्यता का प्रमाण मिला हुआ है: "तुम में से प्रत्येक का जन्म उसकी मां के कोख में पूरा हो जाता है, ४० दिनों तक शुक्राणु के स्थिति में होता है, फिर इतने ही दिनों तक जमे हुए रक्त की स्थिति में हो जाता है, फिर इतने ही दिनों तक मांस का एक लोथड़ा बन जाता है, इसके पश्चात अल्लाह तआ़ला एक देवदूत को अवतरित करता है एवं उसे चार बातों का आदेश देता है और उससे कहता है कि उसका कर्म, उसकी रोज़ी-रोटी एवं उसका आयु लिख दे एवं यह भी लिख दे कि वह नेक होगा या पापी, इसके पश्चात उसने आत्मा फूंक दी जाती है..."।

(बुख़ारी: ३२०८, मुस्लिम: २५४३)३. वार्षिक भाग्य: यह प्रत्येक वर्ष रमज़ान के अंतिम चरण शुभरात्रि (शब-ए-क़द्र) में लिखी जाती है, इस में आगामी एक वर्ष के भाग्य को स्थित किया जाता है, इसका साक्ष्य अल्लाह का यह कथन है:

﴿ إِنَّآ أَنزَلْنَٰهُ فِى لَيْلَةٍ مُّبَٰرَكَةٍ ۚ إِنَّا كُنَّا مُنذِرِينَ ﴿٣﴾ فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ ﴿٤﴾ أَمْرًا مِّنْ عِندِنَآ ۚ إِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ﴿٥﴾ ﴾ [الدخان: ٣-٥]

अर्थात: नि: संदेह हम ने उसे धनी रात्रि (बाबरकत रात) में अवतरित किया, नि: संदेह हम भयभीत करने वाले हैं, इसी रात्रि प्रत्येक कठोर कार्य का निर्णय लिया जाता है, हमारे निकट से आदेश पूर्वक हम ही हैं दूत बना कर अवतरित करने वाले।

शैख़ अब्दुर्रहमान बिन नासिर सअ़दी रहिमहुल्लाह इस आयत के उल्लेख में लिखते हैं: "अर्थात: प्रत्येक वह चीज़ जिसका संबंध भाग्य से है एवं धर्म से है उनका आदेश अल्लाह के आदेश अनुसार विस्तार पूर्वक स्पष्ट रूप से लिखा जाता है, शुभ रात्रि में लिखा जाने वाला यह स्पष्ट भाग्य उन लेखों में से एक है जिन्हें स्पष्टता के साथ लिखा जाता है, यह लेख थी पूर्व लेख के समान होता है जिस में अल्लाह ने संपूर्ण सृष्टि का भाग्य, उनका जीवन, उनकी रोज़ी-रोटी, कर्म एवं स्थितियां लिख रखा है। (अर्थात जो भाग्य लोहे महफ़ूज़ में लिख दिया जाता) है शैख़ अब्दुर्रहमान बिन नासिर सअ़दी रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।

● अल्लाह के दासो! आप यह भी ज्ञात रखें -अल्लाह आप पर अपनी कृपा दृष्टि करे- कि भाग्य में विश्वास रखने का यह अर्थ नहीं कि एक दास अपने कर्म में नि: सहाय है, चाहे उस कर्म का संबंध अच्छे से हो अथवा बुरे से, क्योंकि अल्लाह ने ही दासों को इच्छा शक्ति दी है, सत्य एवं असत्य के बीच अंतर समझने के लिए बुद्धि प्रदान की है जिसके माध्यम से वह छुटकारे के मार्गों को अपनाता है, एवं विनाश होने के मार्गों से वंचित रहता है। अल्लाह ने उसे न्याय करने, पुण्य कर्म करने एवं परिवार वालों के संग सभ्य व्यवहार करने का आदेश दिया है, दुष्ट कर्मों एवं असभ्य गतिविधियों और अत्याचार करने से रोका है इस आधार पर मामले स्वयं दासों की ओर लौटते हैं, चाहे तो वह आभार व्यक्त करे अथवा कुफ्र करे, चाहे तो सत्य मार्ग पर चले अथवा गुमराही के मार्ग को अपनाए, चाहे तो आज्ञाकार बने अथवा अवज्ञा पर उतर जाए, फिर अल्लाह प्रलय के दिन उसका लेखांकन करेगा जिस कर्म को उसने किया एवं अपनाया, यदि कर्म पुण्य होगा तो बदला भी अच्छा मिलेगा, एवं यदि कर्म दुष्ट होगा तो बदला भी बुरा मिलेगा, अल्लाह ने दासों की इच्छा शक्ति को स्थित करते हुए फ़रमाया:

﴿فَمَن شَآءَ ٱتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِۦ مَـَٔابًا﴾ [سورة النبأ:٣٩]

अर्थात: जो चाहे अपने पालनहार के निकट (पुण्य कर्म करके) अपना ठिकाना बना ले।

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

﴿فَمَن شَآءَ فَلْيُؤْمِن وَمَن شَآءَ فَلْيَكْفُرْ﴾ [سورة الكهف:٢٩]

अर्थात: जो चाहे ईमान स्वीकार करे एवं जो चाहे कुफ्र करे।

अल्लाह का एक और कथन है:

﴿فَأْتُوا۟ حَرْثَكُمْ أَنَّىٰ شِئْتُمْ﴾ [سورة البقرة:٢٢٣]

अर्थात: अपने खेतों में जिस प्रकार चाहो आओ।

● आप यह भी ज्ञात रखें -अल्लाह आप के संग दया पूर्वक व्यवहार करे- कि अल्लाह ने आपको बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य का आदेश दिया है, अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात अल्लाह एवं उसके देवदूत उस नबी पर दुरूद भेजते हैं, ए विश्वासियो! तुम (भी) उस नबी पर दुरुद भेजो एवं ख़ूब सलाम (भी) भेजते रहा करो।

● हे अल्लाह! तू अपने दास एवं दूत मुहम्मद पर दया एवं सुरक्षा अवतरित कर, उनके पश्चात आने वाले शासकों (ख़ुलफ़ा) एवं उनके महान आज्ञाकारियों और प्रलय के दिन तक शुद्धता के साथ उनकी आज्ञा करने वालों से प्रसन्न हो जा।

● हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को श्रेष्ठता एवं सर्वोच्चता प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित कर दे, अपने धर्म की रक्षा कर, तू अपने एवं इस्लाम के शत्रुओं को नष्ट कर दे, अद्वैतवादियों को सहायता प्रदान कर।

● हे अल्लाह! हमें अपने देशों में अम्न एवं शांति वाला जीवन प्रदान कर, हे अल्लाह! हमारे इमामों एवं शासकों को ठीक कर दे, उन्हें दिशा-निर्देश देने वाला एवं उस पर चलने वाला बना दे।

● हे अल्लाह! मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक लागू करने की शक्ति प्रदान कर, अपने धर्म को सर्वोच्च करने की शक्ति दे एवं उन्हें अपने प्रजाओं हेतु दया एवं कृपा का कारण बना दे।

● हे अल्लाह! हम तुझ से संसार एवं प्रलय की संपूर्ण भलाईयों हेतु प्रार्थना करते हैं जिनसे हम अवगत हैं अथवा अज्ञानी हैं, एवं तेरी शरण चाहते हैं संसार एवं प्रलय के दिन के संपूर्ण बुराइयों से, जिन से हम अवगत हैं अथवा अज्ञानी हैं।

● हे अल्लाह! हम तेरी शरण चाहते हैं तेरी नेमत के छिन जाने से, तेरे (प्रदान किए गए) स्वास्थ्य के हट जाने से, तेरी अचानक आने वाली यातना से एवं तेरे प्रत्येक प्रकार के क्रोध से।

● हे अल्लाह! हमें क्षमा प्रदान कर, एवं हमारे उन भाइयों को भी जो हमसे पूर्व ईमान स्वीकार कर चुके हैं, एवं विश्वासियों की ओर से हमारे हृदय में द्वेष (एवं शत्रुता) मत डाल, हे हमारे पालनहार नि: संदेह तू बड़ा ही दयालु एवं कृपालु है।

● हे हमारे पालनहार हमें सांसारिक जीवन में पुण्य दे एवं प्रलय में भलाई प्रदान कर और नरक की यातना से हमें सुरक्षित रख।

سبحان ربنا رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

शीर्षक: मुह़म्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गवाही देने की शर्तें एवं उसे तोड़ने वाली चीज़ें

पहला खुतबा :

إن الحمد لله نحمده ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له ومن يضلل فلا هادي له وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

अल्लाह की प्रशंसा और उस के नबी ﷺ पर दरूदो सलाम के बाद:

सब से उत्तम कलाम अल्लाह का कलाम है और सब से उत्तम मार्ग मुहम्मद ﷺ का मार्ग है,सब से बुरी चीज़ दीन में घड़ी गई बिदअतें हैं और (दीन में) हर घड़ी गई चीज़ बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम में ले जाने वाली है।

ऐ मुसलमानो! अल्लाह ताला से डरो और उस से खौफ खाओ,उस की पैरवी करो और उस की नाफर्मानी से बचो और याद रखो कि मुहम्मद ﷺ की रिसालत की गवाही देने वालों के लिये यह गवाही उस समय लाभदायक हो सकती है जब उस के साथ आठ शर्तें[1]पाई जायें :

1. **उस का अर्थ जानना और समझना अर्थात इस बात पर ईमान रखा जाये कि वह अल्लाह की ओर से (भेजे हुये) सत्य संदेष्टा हैं।**

([1])देखें :"आलाम अस्सुन्ना अल मन्शूरा लि एतक़ाद अत्ताइफा अन्नाजिया अल मन्सूरा" लेखक : शैख हाफिज़ अल हिकमी,पेज : 39,प्रकाशक : दार अल मुअय्यिद – रियाद।

2. दिल से उस पर विश्वास रखना,जिस के विपरीत शक करना है,इस का प्रमाण अल्लाह का यह कथन है :

﴿إِنَّمَا ٱلۡمُؤۡمِنُونَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ ثُمَّ لَمۡ يَرۡتَابُواْ﴾ [سورة الحجرات:١٥]

तर्जुमा : मोमिन तो वह हैं जो अल्लाह पर ईमान लायें फिर शको शुब्हा न करें।

3. ज़ाहिर और बातिन में उस की पैरवी करना,इस प्रकार कि पैग़म्बर की पैरवी की जाये,इस की दलील अल्लाह ताला का यह कथन है :

﴿۞ وَمَن يُسۡلِمۡ وَجۡهَهُۥٓ إِلَى ٱللَّهِ وَهُوَ مُحۡسِنٞ فَقَدِ ٱسۡتَمۡسَكَ بِٱلۡعُرۡوَةِ ٱلۡوُثۡقَىٰۗ﴾ [سورة لقمان:٢٢]

तर्जुमा : जो अपने आप को अल्लाह के ताबे करदे और हो भी नेक कार्य करने वाला तो निःसंदेह उस ने मज़बूत कड़ा थाम लिया।

4. उस के (अपेक्षाओं को) क़बूल करना,जिस ने मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की गवाही देने के लवाज़मात में से किसी भी भाग को अस्वीकारा उस ने (शहादत का) इन्कार किया।
5. इख्लास के साथ उस की गवाही देना,इस प्रकार कि उस का उद्देश्य केवल अल्लाह की निकटता प्राप्त करना हो जिस के विपरीत है शिर्क करना,इस प्रकार कि मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की गवाही देने से दुनियादारी चाहता हो जैसा कि यह कपटाचारियों का तरीक़ा है।
6. सच्चाइ के साथ (उस पर क़ायम रहना) जिस की ज़िद (विपरीत)झूट बयानी है,इस की दलील अल्लाह का यह कथन है:

﴿وَلَقَدۡ فَتَنَّا ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِهِمۡۖ فَلَيَعۡلَمَنَّ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ صَدَقُواْ وَلَيَعۡلَمَنَّ ٱلۡكَٰذِبِينَ ۝٣﴾ [سورة العنكبوت:٣]

तर्जुमा : उन लोगों को भी हम ने खूब प्रखा, निःसंदेह अल्लाह ताला उन्हें भी जान लेगा जो सच कहते हैं और उन्हें भी मालूम कर लेगा जो झूटे हैं।

नबी ﷺ ने फर्माया : जो व्यक्ति सच्चे दिल से इस बात की गवाही दे कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह

के पैग़म्बर हैं अल्लाह ताला उस पर जहन्नम की आग हराम कर देता है।[1]

7. इस से और इस के मानने वालों से प्रेम करना और इस से दुश्मनी रखने वालों से दुश्मनी रखना।

उन बातों का इन्कार करना जो इस के विपरीत हैं,रसूल ﷺ की गवाही देने की विपरीत बातें पांच हैं, अल्लाह हमें उनसे बचाए,उन में सब से बड़ी विपरीत चीज़ अल्लाह के अतिरिक्त की इबादत है,जिस का इन्कार अनिवार्य है,और संपूर्ण इबादतों को केवल एक अल्लाह के लिये खालिस करना अनिवार्य है जैसा कि अल्लाह ताला फर्माता है:

﴿فَمَن يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِن بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انفِصَامَ﴾ [سورة البقرة:٢٥٦]

तर्जुमा : जो व्यक्ति अल्लाह कि सिवा दुसरे माबूदों का इन्कार करके अल्लाह पर ईमान लाये उस ने मज़बूत कड़े को थाम लिया जो कभी न टुटेगा।

● हे मामिनो ! मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ की गवाही देने के विरुद्ध पांच बातें हैं :

पहली बात : ऊपर लिखी हुई आठ शर्तों में से किसी एक या अधिक की मुखालफत करना।

दूसरी बात : दीन के ऐसे भाग को नकारना जो लाज़मी तौर पर मशहूर और जाना पहचाना है जैसे रसूल ﷺ की नबूव्वत या आप की बशरियत अर्थात इंसान होने का इन्कार या उम्मते मुहम्मदिया पर आप के जो हुकूक़ हैं उन का इन्कार या इस बात का इन्कार कि आप अंतिम नबी हैं,या इस बात का इन्कार करना कि आप ने पूरे दीन को (संसार वालों तक) पहुंचा दिया,या इस चीज़ का इन्कार कि

(1)इसे बुखारी (128) ने मुआज़ बिन जबल ﷺ ने रिवायत किया है।

आप की रिसालत इन्सान और जिन्नात के लिये आम है,या इस्लाम के किसी स्तंभ का इन्कार या इस्लाम धर्म के जो चीज ह़राम अथवा अवैध है उसकी अवैधता का इंकार जैसे दारू या चोरी या ज़िना और इस प्रकार के बड़े बड़े गुनाहों के हराम होने का इन्कार।

तीसरी बात : आप की शख्सियत पर कीचड़ उछाल कर आप को तक्लीफ देना,चाहे आप की ज़िंदगी में हो या आप के मरने के बाद,जैसे आप की सत्यता या आप की समझ या आप की पाकदामनी पर तानो तश्नी करना और आप पर कीचड़ उछालना,इन सब बातों से मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ की गवाही देने का इन्कार लाज़िम आता है,क्योंकि यह ईमान के विपरीत है,इस की दलील यह है कि कुर्आन के अंदर यह प्रमाणित है कि अल्लाह ताला ने आप को चुना।

आप को तक्लीफ देने वालों के काफिर होने की दलील अल्लाह का यह कथन है :

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ يُؤْذُونَ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ لَعَنَهُمُ ٱللَّهُ فِى ٱلدُّنْيَا وَٱلْءَاخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿٥٧﴾﴾ [سورة الأحزاب:٥٧]

तर्जुमा : जो लोग अल्लाह और उस के पैग़म्बर को तक्लीफ देते हैं उन पर लोक और प्रलोक में अल्लाह की फटकार है और उन के लिये रुस्वा करने वाला अज़ाब है।

तान कहते हैं दया से दूर करने को जिसे अल्लाह अपनी दया से दूर कर दे वह काफिर ही हो सकता है।

ए ईमान वालो! आप को दुख देने का एक तरीक़ा आप का मज़ाक़ उड़ाना भी है चाहे गंभीरता के साथ हो या हंसी मज़ाक़ में।

आप का मज़ाक़ उड़ाने वालों के काफिर होने की दलील सूरे तोबा के अंदर अल्लाह का यह कथन है:

﴿وَلَئِن سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ ۚ قُلْ أَبِٱللَّهِ وَءَايَٰتِهِۦ وَرَسُولِهِۦ كُنتُمْ تَسْتَهْزِءُونَ ﴿٦٥﴾﴾ [سورة التوبة:٦٥]

तर्जुमा : यदि आप उन से पूछें तो साफ कह देंगे कि हम तो बस आपस में बोल रहे थे,कह दीजिये कि अल्लाह उस की आयतें और उस का रसूल ही तुम्हारे हंसी मज़ाक के लिये रह गये हैं,तुम बहाने न बनाओ,निःसंदेह तुम अपने ईमान के बाद बेईमान होगये।

शैख अब्दुर्रहमान बिन सादी रहिमहुल्लाह इस आयत की तफ्सीर में लिखते हैं : अल्लाह और उस के पैग़म्बर का मज़ाक़ उड़ाना ऐसा कुफ्र है जो दीन से निकाल देता है,क्योंकि दीन की इमारत अल्लाह और उस के दीन और उस के रसूलों के सम्मान पर खड़ी है,इन में से किसी एक का मज़ाक उड़ाना उस अस्ल के विपरीत और हद दर्जा मुखालिफ कार्य है।

चौथी बात : नवाक़िज़े इस्लाम (इस्लाम से निकाल देन वाली चीजों) में से किसी एक में पड़ना जैसे अल्लाह की इबादत में शिर्क करना या यह विश्वास रखना कि कोई दूसरा तरीक़ा रसूलुल्लाह ﷺ के तरीक़े से अधिक संपूर्ण है या आप के फैसले से कोई दूसरा फैसला उत्तम है,उन लोगों समान जो शैतान के फैसले को आप के फैसले पर तर्जीह देते हैं या उन की तरह जो कम्युनिज़्म या लोक तंत्र को इस्लामी निज़ाम पर तर्जीह देते हैं तो ऐसा व्यक्ति काफिर है,या रसूल ﷺ की लाई हुई किसी तालीम को नापसंद करना भी इसमें शामिल है,या अल्लाह के दीन या उस के सवाब और सज़ा का मज़ाक उड़ाना भी कुफ्र है,या जादू करना या अल्लाह के दीन से मुंह मोड़ना (भी कुफ्र है) इस प्रकार कि न तो उसे सीखे और न उस पर अमल करे। [1]

शहादते रसूल की पांचवीं और अंतिम विपरीत बात : आप की शान में गुलू करना अर्थात आप की शान को हद से बढ़ाना,आप ने अपने जीवन में और अपनी मौत के समय में भी अपने विषय में लोगों को

([1])देखें : शैख मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब रहिमहुल्लाह कि किताब : "नवाक़िज़ुल इस्लाम"

गुलू करने से सख्ती के साथ रोका है ताकि लोग आप की शान में गुलू करने से बचें। उम्मत के लिय आप कितने बड़े शुभचिंतक थे,दसियों हदीसों में आप ने गुलू करने से रोका है,उन में से एक उमर बिन खत्ताब ﵁ से रिवायत है,वह कहते हैं कि मैं ने नबी ﷺ से यह फर्माते हुये सुना : तुम लोग मुझे हद दर्जा न बढ़ाओ जिस प्रकार ईसाइयों ने इब्ने मर्यम को बढा दिया,तुम लोग मुझे अल्लाह का बंदा और उस का रसूल ही कहो। [1] हदीस में इत्तिरा शब्द का अर्थ है : प्रशंसा में हद से बढ़ जाना। [2]

अल्लाह मुझे और आप को कुर्आन की बर्कत से लाभ पहुंचाये,और मुझे और आप को इस की आयतों और हिक्मत भरे नसीहत से लाभ पहुंचाये,मैं अपनी यह बात कहते हुये अल्लाह से अपने लिये और आप के लिये क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,निःसंदेह वह क्षमा मांगने वाले को अधिक देने वाला है।

दूसरा खुत्बा

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى.

दरूदो सलाम के बादः

ए अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरें और आप जान लें नबी ﷺ की शान में गुलू करने की दो क़िस्में हैं,एक क़िस्म दीने इस्लाम से निकाल देती है और दूसरी क़िस्म उस से कम दर्जे की है।

● दीन से निकाल देने वाले गुलू का उदाहरण : आप के लिये किसी प्रकार की इबादत करना,जैसे आप को पुकारना,या रुबीबियत की कोई विशेषता आप की ओर मंसूब करना,जैसे बारिश बरसाने,जीविका देने और इल्मे ग़ैब की निस्बत आप की ओर करना,यह सब गलत और

([1])इसे बुखारी (3445) ने रिवायत किया है।

([2])देखें : " अन्निहाया फी ग़रीब अल हदीस "

कुफ्र के काम हैं और यह आप की शान में गुलू करने के कारण हैं, अल्लाह फर्माता है :

﴿قُل لَّآ أَمۡلِكُ لِنَفۡسِي نَفۡعٗا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَآءَ ٱللَّهُۚ وَلَوۡ كُنتُ أَعۡلَمُ ٱلۡغَيۡبَ لَٱسۡتَكۡثَرۡتُ مِنَ ٱلۡخَيۡرِ وَمَا مَسَّنِيَ ٱلسُّوٓءُۚ﴾ [سورة الأعراف:١٨٨]

तर्जुमाः आप कह दीजिये कि मैं स्वयं अपने लिये किसी लाभ का इख्तियार रखता हूं और न किसी हानि का,मगर जितना अल्लाह ने चाहा हो और यदि मैं गै़ब की बातें जानता तो मैं अधिकतर लाभ प्राप्त कर लेता और मुझे कोई हानि न पहुंचती।

● रहा वह गुलू जो दीने इस्लाम से नहीं निकालता और वह बिदअत में से है तो गुलू की यह क़िस्म भी पहली क़िस्म की ओर ले जाती है,इस की मिसाल आप के जाह की सौगंध खाना,या आप की ज़ात का वसीला पकड़ना,या जश्ने मीलादुन्नबी मनाना,या यह अक़ीदा रखना कि अल्लाह ने आप को नूर से पैदा किया है,या यह अक़ीदा रखना कि अल्लाह ताला ने संसार को आप के लिये पैदा किया ,आप की क़ब्र की ओर यात्रा करना,इसे अधिकतर लोग करते हैं और नेकी समझ कर करते हैं जब कि यह बिदअत है,क्योंकि यह ऐसे अमल के ज़रिये नज़्दीकी प्राप्त करना है जिस का शरीअत ने आदेश नहीं दिया है,बल्कि इस से मना किया है,नबी ﷺ ने फर्माया : तीन मस्जिदें : मस्जिदे हराम,मस्जिद अक़्सा और मेरी इस मस्जिद अर्थात मस्जिदे नबवी के अतिरिक्त किसी और मस्जिद की ओर (सवाब की निय्यत से) यात्रा न किया जाये। [1]

इस हदीस में आप ने मार्गदर्शन किया है कि दिल में मस्जिदे नबवी की ओर यात्रा का इरादा हो न कि क़ब्रे नबवी की ओर,जिस ने अपने दिल में क़ब्रे नबवी की ओर यात्रा की निय्यत की तो उस ने ऐसे अमल के ज़रिये निकटता प्राप्त की जिस की शरीअत इजाज़त नहीं

(1) इसे बुखारी (1995) और मुस्लिम (827) ने अबू सईद खुदरी رضي الله عنه से रिवायत किया है।

देती ,बल्कि यह अमल उसी पर लौटा दिया जायेगा,स्वीकार न होगा,नबी ﷺ ने फर्माया : जो व्यक्ति ऐसा काम करे जिस का आदेश हम ने नहीं दिया तो वह निरस्त है। अधिक आप ने फर्माया : अमलों का दारो मदार निय्यतों पर है। अर्थात अमलों के स्वीकार होने का दारो मदार निय्यतों पर है,यदि बंदा मुस्लिम मस्जिदे नबवी में प्रवेश कर के नमाज अदा करे तो उस का यह इरादा पूरा हो जायेगा,उस के पश्चात यह सही होगा कि वह क़ब्रे नबवी की ज़्यारत करे,नबी ﷺ और आप के सहाबा (अबू बक एवं उमर) पर सलाम भेजे,उस के लिये यह भी सही होगा कि वह मस्जिदे कुबा जाये और उस में दो रकात नफ्ल पढ़े जैसा नबी ﷺ किया करते थे,वह बक़ी कब्रस्तान की भी ज़्यारत कर सकता है और उस में दफन लोगों को सलाम भेज सकता है,इसी प्रकार उहुद के शहीदों और दूसरे क़ब्रस्तानों की ज़्यारत कर सकता है ताकि इब्रत और नसीहत हासिल करे और उन में दफन लोगों पर सलाम भेजे।

● हे मुसलमानो! नबी ﷺ के सम्मान के विषय में लोगों की तीन क़िस्में हैं :

पहली क़िस्म : शिद्दत पसंद और गलत मार्ग वाले लोग जो आप के हक़ के साथ न्याय नहीं करते हैं और आप से प्रेम और दोस्ती ,आप की पैरवी और सम्मान का जो वाजबी हक़ है उसे अदा नहीं करते,इन की दो क़िस्में हैं :

1 : वह गुनहगार और ग़ाफिल लोग जो आप की पैरवी से मुंह फेरे रहते हैं।

2 : वह हद से आगे जाने वाले बिदअती जो नबी ﷺ के सम्मान मे ग़लत मार्ग पर चलते हैं,जैसे गुलू करने वाले शीया समुदाय के लोग जो अपने गुमान अनुसार मासूम इमामों को नबी ﷺ पर प्रतिष्ठा देत हैं,इसी प्रकार बातिन सूफियों का बातिनी गुट जो अवलिया और अक़ताब को नबी ﷺ से बड़ा समझते हैं।

दूसरी क़िस्म : गुलू करने वाले लोग,यह पहली क़िस्म के विपरीत हैं यह लोग आप को अल्लाह के दर्जे से ऊपर मानते हैं,आप के लिये ऐसे कार्य करते हैं जो केवल अल्लाह का हक़ है जैसे दुआ,मुनाजात,मन्नत और ज़िबह करना आदि,या आप को ऐसी विशेषताओं वाला मानते हैं जो विशेषतायं अल्लाह के लिये खास हैं,जैसे ग़ैब का ज्ञान आदि,गुलू की यह क़िस्म क़ब्र प्रस्तों में पाई जाती है।

तीसरी क़िस्म : हक़ प्रस्तों की है जो बीच का मार्ग अपनाते हैं,यह आप से प्रेम और दोस्ती का नाता रखते हैं,आप के शरई हक़ को अदा करते हैं,आप की शान में गुलू करने से दूर रहते हैं,अल्लाह हमें उन में शामिल करे और उन के मार्ग पर जमा दे।

आप यह याद रखें । अल्लाह आप पर अपनी कृपा बनाए रखे। अल्लाह ने आपको बहुत बड़े कार्य का आदेश दिया है अल्लाह का कथन हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थातः अल्लाह तआला एवं उसके फरिश्ते (देवदूत) उस नबी पर रहमत भेजते हैं ए ईमान वालो! तुम भी उन पर दुरुद (अभिवादन) भेजो एवं खूब सलाम भेजते रहो।

ऐ अल्लाह ! तू अपने बंदे व रसूल, दास एवं संदेशवाहक मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दया कृपा एवं शांति भेज तू उनके ख़ुलफ़ा (मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उत्तराधिकारीयों) ताबेईन (समर्थक) एवं क़यामत तक आने वाले समस्त आज्ञाकार्यों से प्रसन्न हो जा।

ए अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर! बहुवाद, एवं बहुवादियों को अपमानित कर दे! तू अपने एवं इस्लाम के

शत्रुओं एवं विरोधीयों को नाश कर दे! तू अपने मुवह्हिद बंदों (अव्दैतवादियों) को सहायता प्रदान कर!

ए अल्लाह! तू हमारे देशों को शांतिपूर्ण बना दे, हमारे इमामों, प्रतिनिधियों, शासकों को सुधार दे, उन्हें हिदायत (सहीमार्ग) का निर्देश दे, और हिदायत पर चलने वाला बना।

ए अल्लाह! तू समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने एवं अपने धर्म के उत्थान की तौफ़ीक़ प्रदान कर, उन को उनकी प्रजा के लिए रहमत (दया) का कारण बना दे!

ए अल्लाह हमारे प्रति इस्लाम और मुसलमानों के प्रति जो बुराई का भाव रखते हैं! उसे तू अपनी ज़ात में व्यस्त कर दे और उसके फ़रेब व चाल को उलटा उसके लिए वबाल बना दे!

ए अल्लाह! मुद्रास्फीति, महामारी, ब्याज, बलात्कार, भूकंप एवं आज़माइशों को हमसे दूर कर दे और प्रत्येक प्रकार के आंतरिक एवं बाह्य फ़ित्नों (उत्पीड़नों) को हमारे ऊपर से उठा लेखकः सामान्य रूप से समस्त मुस्लिम देशों से और विशेष रुप से हमारे देश से!

ए दोनों जहां के पालनहार! ए अल्लाह! हमारे ऊपर से महामारी को दूर करदे, निःसंदेह हम मुसलमान हैं।

ए हमारे रब! हमें दुनिया और आख़िरत में हर प्रकार की अच्छाई दे, और नरक की यातना से हमको मुक्ति प्रदान कर!

سبحان ربك رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين.

शीर्षक: पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने के तक़ाज़े

إن الحمد الله، نحمده ونستعينه،ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا،من يهده الله فلا مضل له،ومن يضلل فلا هادي له،وأشهد أن لا إله الإ الله وحده لا شريك له وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रशंसाओं के पश्चात!ऐ मुसलमानों!अल्लाह तआ़ला से डरो और उस्का भय रखो,उसकी अज्ञाकारी करो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जानलो के बंदों पर अल्लाह का यह कृपा है कि उसने उनके मध्य उनहीं में से एक संदेशवाहक भेजा जो उन्हें उसकी आयतें पढ़ कर सुनाता है और उनहें कुरान व ह़दीस सिखाता है। निसंदेह यह उस्से पश्चात खुली गुमराही में थे।पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने के पंद्रह तक़ाज़े हैं:

1–आप के नाम और वंशावली से अवज्ञत होना,आप का वशावली इस प्रकार है:मोहम्मद बिन अबदल्लाह बिन अब्दुलमुत्तलिब बिन ह़ाशिम बिन अ़बदे मनाफ बिन कोसैय बिन केलाब बिन मुर्रह बिन कअ़ब बिन लोवैय बिन ग़ालिब बिन फहर बिन मालिक बिन अलनज़र बिन कनाना बिन ख़ोज़ैमा बिन मुदरिका बिन इलयास बिन मुज़िर बिन नज्ज़ार बिन अ़दनान।अ़दनान इसमाईल के वंश से थे और इसमाईल इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वंश से थे।इस समस्त वंशावली में आप का नाम पिता के नाम के साथ जनना भी प्रयाप्त है और वह इस प्रकार है:मोहम्मद बिन अबदुल्लाह।और यह कि आप कोरैश जनजाति से संबंध रखते थे।

2– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का एक तक़ाज़ा यह है कि आप अपनी नबूव्वत (प्रवर्तन) के जिन प्रमाणों के साथ मबऊ़स (अवतरित) हुऐ,उन पर ईमान लाया जाऐ,जो कि अति अधिक हैं,उनमें सबसे बड़े प्रमाण यह हैं: पवित्र कुरान का अवतरित होना,चांद का आपके ''ईशारे से'' दो टुकड़े होना,खोजूर की डाली का आपके प्रेम में बिलक बिलक कर रोना,आपके सामने खाने का तसबीह़ पढ़ना,आपकी ऊंगली के बीच से पानी का जारी होना,थोड़े से खाने का अधिक हो जाना और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का भविष्य के प्रति गैबी मामलों की खबर देना।

3– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का तक़ाज़ा यह है कि आपकी नबुव्वत (प्रवर्तन) व संदेशवाहन पर ईमान लाया जाऐ और इस पर ईमान लाया जाऐ कि आप अल्लाह की ओर से भेजे गऐ सत्य पैगंबर हैं।

4– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का तक़ाज़ा यह भी है कि आप के अंतिम पैगंबर और अंतिम रसूल होने पर ईमान लाया जाऐ,जैसा कि अल्लाह का कथन है:

﴿مَّا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَآ أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَٰكِن رَّسُولَ ٱللَّهِ وَخَاتَمَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ﴾ [سورة الأحزاب:٤٠]

अर्थातः (लोगो!) तुम्हारे पुरुष में से किसी के पिता मोहम्मद नहीं किंतु आप अल्लाह के पैगंबर हैं और समस्त पैगंबरों को समाप्त करने वाले हैं।

ह़ज़रत सौबान रज़िअल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः''मेरी उम्मत में लगभग तीस झूटे (दावेदार) निकलेंगे,उनमें से प्रत्येक यह दावा करेगा कि वह नबी है,जब्कि में अंतिम नबि हूं मेरे पश्चात कोई (दूसरा)नबी नहीं होगा...'' (इस ह़दीस को अबूदाऊद (4252) और अह़मद 5/278 ने वर्णन किया है और अल्बानी ने सह़ी कहा है,इसी प्रकार''अलमुस्नद''के शोधकर्ताओं ने भी इसे मुस्लिम के शर्त पर सह़ी कहा है।)

ह़ज़रत जाबिर रजिअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः''मेरी और मुझसे पश्चात के समस्त रसूलों का उदाहरण ऐसा है जैसे ऐक व्यक्ति ने एक घर बनाया और उसमें हर प्रकार की सजावट का प्रबंधन किया किंतु एक कोने में एक ईंट की जगह छूट गई।अब समस्त लोग आते हैं और घर को चारों ओर से घूम कर देखते हैं और आश्चर्य करते हैं किंतू यह भी कहते हैं कि यहां एक ईंट क्यों न रखी गई?तो में ही वह ईंट हूं और में अंतिम पैगंबर हूं''

(इसे बोखारी 3535 और मुस्लिम 2286 ने रिवायत किया है।)

5– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम. पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह है कि यह ईमान लाया जाए कि आप की लाई हूई शरीअ़त पूर्व के समस्त शरीअ़तों को निरस्त करने वाली और उनका रक्षक है,जैसे ईसा और मूसा अलैहिमुस्सलाम की लाई हूई शरीअतें,अल्लाह का कथन है:

﴿وَأَنزَلْنَآ إِلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ بِٱلْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ ٱلْكِتَٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ﴾ [سورة المائدة:٤٨]

अर्थातः हमने आपकी ओर सत्य के साथ यह पुस्तक अवतरित की है जो अपने से पूर्व पुस्तकों की पुष्टि करने वाली है और उनकी रक्षक है।

6– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान का तक़ाज़ा है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि आप के अवतरित होने के पश्चात अल्लाह तआ़ला के निकट

इसलाम धर्म के सेवा कोई धर्म स्वीकृत नहीं,इसका प्रमाण अल्लाह तआ़ला का यह कथन है:

﴿وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ ٱلْإِسْلَٰمِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِى ٱلْءَاخِرَةِ مِنَ ٱلْخَٰسِرِينَ ﴿٨٥﴾﴾ [سورة آل عمران:٨٥]

अर्थात: जो व्यक्ति इसलाम के अतिरिक्त और धर्म तलाश करे,उसका धर्म स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह आखेरत में हानी पान वालों में से होगा।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह ह़दीस भी इस का प्रमाण है:''क़सम है उसकी जिसके हाथ में मोह़म्मद(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)का प्राण है।उस काल का (अर्थात मेरे समय और मेरे बाद तक) कोई यहूदी अथवा ईसाई''अथवा और कोई धर्म वाला''मेरा ह़ाल सुने फिर ईमान न लाऐ उस पर जिस के साथ में भेजा गया हूं।(अर्थात कुरान) तो नरक में जाएगा''

(इसे मुस्लिम 153 ने अबूहोरैरा रज़िअल्लाहु अंहु से वर्णन किया है।)

7– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का तक़ाज़ा है कि इस पर ईमान लाया जाऐ कि आपने (अल्लाह के) संदेश को(संसार वालों तक)पहुंचा दिया और इसे पूरा कर दिया,और अपनी उम्मत को आलोकित राजमार्ग पर छोड़ कर (इस संसार से गऐ) इसका प्रमाण अल्लाह तआ़ला का यह कथन है:

﴿ٱلْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِى وَرَضِيتُ لَكُمُ ٱلْإِسْلَٰمَ دِينًا﴾ [سورة المائدة:٣]

अर्थात: आज मेंने तुम्हारे लिऐ धर्म को पूरा कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी करदी और तुम्हारे लिऐ इसलाम के धर्म होने पर राज़ी हो गया।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत में इसका प्रमाण वह ह़दीस है जिसे बोखारी व मुस्लिम ने मसरूक़ से रेवायत किया है,वह कहते हैं:में मोमिनों की माता आइशा रजिअल्लाहु अंहा के पास टेक लगा कर बैठा हुआ था,उन्हों ने कहा:ऐ अबू (पितो)आइशा! तीन चीजें ऐसी हैं कि उनमें किसी ने एक भी किया तो वह अल्लाह पर बड़ा आरोप लगाऐगा।उनमें से एक यह ज़िक्र(प्रार्थना)की कि–जिसने यह सोचा कि अल्लाह ने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जो चीजें उतारी हैं उनमें से कुछ चीजें मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने छिपा ली हैं। जबकि अल्लाह कहता है:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلرَّسُولُ بَلِّغْ مَآ أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ﴾ [سورة المائدة:٦٧]

'' जो चीज अल्लाह की ओर से तुम पर उतारी गई है उसे लोगों तक पहुंचादो''

(इसे बोखारी 4855 और मुस्लिम 177,286 ने रिवायत किया है और उपरोक्त श्बद मुस्लिम के हैं)

अबूज़र रज़िअल्लाहु अंहु से वर्णित है,वह फरमाते हैं: ''हमें मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस हाल में छोड़ा कि आकाश में जो पंक्षि अपने पर फरफराता है,उस्के प्रति भी आपने हमें कोई न कोई ज्ञान अवश्य दिया''

(इसे अहमद ने ''अलमुस्नद''5/153 में वर्णित किया है और ''अलमुस्नद''के शोधकर्ताओं ने इसे हसन कहा है)

सहाबा रजिअल्लाहु अंहु ने हज्जतुलविदा में यह गवाही दी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसलाम के प्रचार का कर्तव्य पूरा कर दिया,उनकी संख्या लगभग चालीस हजार थी,जब पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे कहा:में तुम्हारे समक्ष ऐसी चीज छोड़े जा रता हूं कि यदि तुम उसे बलपुर्वक पकड़े रहो तो कभी गुम्राह न होगे(वह है) अल्लाह तआला की पुस्तक और तुमसे (क़यामत में)

मेरे बारे में प्रश्न होगा तो फिर तुम किया कहोगे?''

तो उन सबने कहा कि:हम गवाही देते हैं कि निसंदेह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला का संदेश पहूंचाया और पैगंबरी का अधिकार पूरा किया और उम्मत का कलयाण किया।फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी तर्जनी(शहादत) की ऊंगली आकाश की ओर उठाते थे और लोगों की ओर झूकाते थे (अर्थात अपनी उंगली को ऊपर नीचे करते और लोगों की ओर ईशारा करते।ऐसा इमाम नौवी ने इस हदीस की व्याख्या में लिखा है।) और फरमाते थे कि ऐ अल्लाह!गवाह रहना, ऐ अल्लाह!गवाह रहना, ऐ अल्लाह!गवाह रहना,तीन बार (यही फरमाया और यूंही इशारा किया) 7(इसे मुस्लिम 1218 ने जाबिर रजीअल्लाहु अंहु से रिवायत किया है।)

8–पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का एक तक़ाज़ा यह है कि इस बात पर ईमान लाया जाऐ कि आप समस्त मनुष्य एवं जिनों के लिऐ पैगंबर बना कर भेजे गऐ थे,अल्लाह का कथन है:

﴿قُلْ يَـٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنِّى رَسُولُ ٱللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا﴾ [سورة الأعراف:١٥٨]

अर्थातः आप कह दीजीऐ कि ऐ लोगो!में तुम सब की ओर अल्लाह की ओर से भेजा हुआ हूं।

अल्लाह ने और फरमायाः

﴿وَمَآ أَرۡسَلۡنَٰكَ إِلَّا رَحۡمَةٗ لِّلۡعَٰلَمِينَ ١٠٧﴾ [سورة الأنبياء:١٠٧]

अर्थातः हमने आपको समस्त संसार वालों के लिऐ कृपा बना कर भेजा है।

सूरह अलजिन्न में इस बात का उल्लेख आया है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिनों को इसलाम की दावत दी,तो कुछ जिन्न आपके पास आऐ और आपसे इसलाम की प्रतिज्ञा ली,इस संदर्भ में सूरह अलअह़क़ाफ की कुछ आयतें नाज़िल हूईं,जोकि यह हैंः

﴿وَإِذۡ صَرَفۡنَآ إِلَيۡكَ نَفَرٗا مِّنَ ٱلۡجِنِّ يَسۡتَمِعُونَ ٱلۡقُرۡءَانَ فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوٓاْ أَنصِتُواْۖ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوۡاْ إِلَىٰ قَوۡمِهِم مُّنذِرِينَ ٢٩ قَالُواْ يَٰقَوۡمَنَآ إِنَّا سَمِعۡنَا كِتَٰبًا أُنزِلَ مِنۢ بَعۡدِ مُوسَىٰ مُصَدِّقٗا لِّمَا بَيۡنَ يَدَيۡهِ يَهۡدِيٓ إِلَى ٱلۡحَقِّ وَإِلَىٰ طَرِيقٖ مُّسۡتَقِيمٖ ٣٠ يَٰقَوۡمَنَآ أَجِيبُواْ دَاعِيَ ٱللَّهِ وَءَامِنُواْ بِهِۦ يَغۡفِرۡ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمۡ وَيُجِرۡكُم مِّنۡ عَذَابٍ أَلِيمٖ ٣١﴾
[سورة الأحقاف:٢٩-٣١]

अर्थातः याद करो!जबकि हमने जिनों की एक टोली को तेरी ओर आकशित किया कि वह कुरान सुनें,तो जब (पैगंबर के) पास पहुंच गऐ तो (एक दूसरे से) कहने लगे खामोश होजाओ,फिर जब पढ़ कर समाप्त हो गया तो अपने समूदाय को सूचत करने के लिए वापस लौट गऐ।कहने लगे ऐ हमारे समूदाय!हमने निसंदेह वह पुस्तक सुनी है जो मूसा(अलैहिस्सलाम) के पश्चात अवतरित की गई है जो अपने से पूर्व पुस्तकों की पुष्टि करने वाली है जो सत्य धर्म की और सत्य मार्ग की ओर मार्गदर्शन करती है।ऐ हमारे समुदाय!अल्लाह की ओर बोलाने वाले का कहा मानो,उस पर ईमान लाओ,तो अल्लाह तुम्हारे पापों को क्षमा प्रदान करेगा और तुम्हें पीड़ायुक्त यातना से शरण प्रदान कर देगा।

अल्लाह तआ़ला के आदेश के अनूसार पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने समस्त लोगों को इसलाम की दावत दी,सर्वप्रथम सबसे निकट परिजनों और परिवार वालों को इसलाम की ओर बोलाया,फिर अ़रब,फारस और रूम के राजाओं को पत्र लिखे,ह़बशा के राजा नज्जाशी को पत्र लिखा,जिनों को इसलाम की दावत दी,दावत के मार्ग को आसान करने के लिऐ ग़ज़वात''इसलामी युद्ध''किये,आपके पश्चात आपके सह़ाबा''साथी गण''आपके मार्गदर्शन पर चले,और उन्होंने भी अल्लाह की ओर बोलाने का कर्तव्य पूरा किया,कुरान व ह़दीस की सुरक्षा की,नासतिकों से युद्ध किया,नबूवत का दावा करने वालों से युद्ध किया,संसार भर में विजय का ध्वज लहराया,इस प्रकार सीरिया,मिस्त्र और मोराकश को प्राजित किया ख़ोरासान पर विजय का ध्वज

लहराया,हर जगह तौहीद(एकेश्वरवाद/अद्वैतवाद) को प्रचलित किया,बुतों को ध्वस्त किया और इसलाम की सहायता व विजय के लिऐ अनमोल कार्य किये,जोकि इतिहास और ह़दीस की पुस्तकों में मौजूद है,अल्लाह उनपर रह़मत अवतरित करे और उन्हें उच्च परिनाम प्रदान करे।उन्होंने और उनके पश्चात के वंशों ने जो अनमोल कार्य किये,सबको क़ियामत के दिन उनके पुण्य में शामिल फरमाऐ।

9– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का एक तक़ज़ा यह भी है कि इस बात पर ईमान लाया जाऐ कि आप का तरीक़ा सर्वोच्च तरीक़ा है,ह़ज़रत जाबिर रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने उपदेश में फरमाया करते थेः''प्रशंसाओं के पश्चात,सर्वोच्च बात अल्लाह की पुस्तक की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज(धर्म में) अविष्कार की गया नवाचार हैं और प्रत्येक नवाचार गुमराही है'' (इसे मुस्लिम 1218 ने ह़जरत जाबिर रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।)

10–– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का तक़ाज़ा यह भी है कि आप के अधिकारों को पूरे किये जाऐं, जिन में सर्वप्रथम आप की पुष्टि करना और आप के लाए हुऐ धर्म को मानना,इस प्रकार कि आपके आदेश को माना जाऐ और आपने जिन चीजों से रोका है उस्सा बचा जाऐ,इसी प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम करना भी आपके अधिकारों में से है।

11– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का तक़ाज़ा यह भी है कि आपके मनुष्य होने पर ईमान लाया जाऐ और इस बात पर कि आप अल्लाह के बंदे हैं जिनकी पूजा करना उचित नहीं,अनेक आयतों के अंदर भी इसको स्पष्ट किया गया है, उदाहरण स्वरूप सूरह इसरा में अल्लाह तआ़ला का यह कथन हैः

﴿سُبْحَٰنَ ٱلَّذِىٓ أَسْرَىٰ بِعَبْدِهِۦ لَيْلًا مِّنَ ٱلْمَسْجِدِ ٱلْحَرَامِ إِلَى ٱلْمَسْجِدِ ٱلْأَقْصَا﴾ [سورة الإسراء:١]

अर्थातः पवित्र है वह अल्लाह तआ़ला जो अपने बंदे को रात ही रात में मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़सा तक ले गया।

ह़ज़रत उमर रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है,वह कहते हैंःमेंने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुऐ सुनाः''मुझे मेरे रुतबे से अधिक ना बढ़ाओ (अर्थात मेरी प्रशंसा करने में।देखेंः(फतहुल्बारी)में उपरोक्त ह़दीस की व्याख्या।) जैसे ईसा बिन(पुत्र)मरयम अलैहेमा अलसलाम को ईसाइयों ने उनके रुतबे से अधिक बढ़ा दिया है।में तो केवल अल्लाह का बंदा हूं,इस लिये यही कहा करो(मेरे प्रति) कि में अल्लाह का बंदा और उसका रसूल हूं''(इसे बोखारी (3445),अह़मद 1/23 और दारमी (2786) ने रिवायत किया है और उपरोक्त शब्द बोखारी ने रिवायत किया है।)

और अल्लाह ने अपने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमायाः

﴿قُلْ إِنَّمَآ أَنَا۠ بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰٓ إِلَيَّ أَنَّمَآ إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَٰحِدٌ﴾ [سورة الكهف:١١٠]

अर्थातः आप कह दिजिये कि में तो तुम जैसा ही एक मनुष्य हूं।(हां)मेरी ओर वह्य की जाती है कि सबका प्रमेश्वर केवल एक ही अल्लाह है।

आपके मनुष्य होने पर ईमान लाने से यह अनीवार्य होजाता है कि इस बात पर ईमान लाया जाऐ कि आप और आपके अतिरिक्त अन्य समस्त अंबेया व रोसुल(संदेशवाहक गण)भी रुबूबियत व उलूहियत के किसी भी गुन के मालिक नहीं हैं,अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी को यह आदेश दिया कि आप लोगों से कह दें:

﴿قُل لَّآ أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَآءَ ٱللَّهُ ۚ وَلَوْ كُنتُ أَعْلَمُ ٱلْغَيْبَ لَٱسْتَكْثَرْتُ مِنَ ٱلْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ ٱلسُّوٓءُ ۚ إِنْ أَنَا۠ إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝١٨٨﴾ [سورة الأعراف:١٨٨]

अर्थातः आप फरमा दीजिये कि में स्वयं ही अपने आप के लिऐ किसी लाभ का अधिकार नहीं रखता और न किसी हानी का,मगर उतना ही जेतना अल्लाह ने चाहा हो और यदि में गैब की बातें जानता होता तो में ढेर सारा लाभ प्राप्त कर लेता और मुझे कोई हानी न पहुंचती,में तो केवल डराने वाला और खुशखबरी देने वाला हूं उनलोगों को जो ईमान रखते हैं।

यह और इस जैसी अन्य आयतों से प्रमाणित होता है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक मनुष्य थे,और आप रुबूबियत व उलूहियत के किसी भी गुन के मालिक नहीं थे,आप न तो गैब का ज्ञान रखते थे,न संसार में कोई परिवर्तण कर सकते थे और न दोआऐं क़बूल करते थे,बल्कि हमारे जैसा अल्लाह के बंदे थे,किंतू अल्लाह ने आपको संदेशवाहन प्रदान किया था और यही स्थिति अन्य समस्त पैगंबरों कि भी थी।
12–पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का तक़ाज़ा यह भी है कि आप के समस्त मानवीय एवं नैतिक गुणों एवं विशेषणों पर ईमान लाया जाऐ,जैसे आप की लंबाई,रूप,चाल ढाल,आपके चेहरे के गुण और आप की मानवीय सुंदरता,इसी प्रकार वे उच्च व्यवहार जो अल्लाह ने आपको प्रदान किया था और आपके अतिरिक्त किसी और के अंदर नहीं पाऐ गऐ,जैसे सच्चाई,अमानतदारी,कृपा व दया,परिजनों के साथ उच्च व्यवहार और क्षमा करना आदी,विद्वानों ने आपके मानवीय एवं नैतिक गुणों एवं विशेषणों के विश्य में अनेक पुस्तकें लिखी हैं।

14– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान का तक़ाजा़ यह भी है कि आपके अधिकार में जो व्यक्तिगत और धार्मिक गुण आऐ हैं,उनपर ईमान लाया जाऐ,व्यक्तिगत

गुणों का उदाहरण नबवी छाप है,जो कि आप के बाऐं कंधे के पास मांस का उभरा हूआ भाग था,जो कबूतर के अंडे के बराबर था।

आप के व्यक्तिगत गुणों का एक उदाहरण यह भी है कि आपकी आंखें सोती थीं किंतु ह्रदय नहीं सोता था।
उसका उदाहरण यह भी है कि आपके शरीर से निकलने वाले पसीने और (मूंह से निकलने वाले)राल में अल्लाह ने बरकत पैदा फरमाया था।

रही बात आपके धार्मिक गुणों की तो इसके कुछ उदाहरण यह हैं:आपके विरासत (पैतृक सम्पति)का कोई हकदार नहीं,आप पर और आपके अहलेबैत (परिवार वालों) पर सदका(दान) ह़राम है,आपके लिऐ यह वैध था कि लगातार एक से अधिक रोज़ा रखें और बीच में इफतार न करें,आपको अल्लाह ने चार से अधिक विवाह की अनूमति दी थी,और उस महिला से आपको विवाह का विशेष अनूमति प्राप्त था जो अपने आपको आपके लिए हैबा (दान/समर्पित) करदे,इसी प्रकार आपका उसी स्थान पर दफन होना जहां आप का निधन हूआ,इनके अतिरिक्त और भी गुण हैं जो आपके लिऐ विशष हैं।

15– पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का तक़ाजा यह भी है कि आपके मासूम होने पर ईमान लाया जाऐ,(शब्दकोश में इसमत का अर्थ होता है:रोकना और रक्षा करना।देखें:(लेसानुलअ़रब)आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पांच चीजों से मासूम थे:

1–आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम धर्म के प्रचार प्रसार में गलती,भूल चूक और (किसी बात को)छुपाने से मासूम थे,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿وَمَا يَنطِقُ عَنِ ٱلۡهَوَىٰٓ ۝٣ إِنۡ هُوَ إِلَّا وَحۡيٞ يُوحَىٰ ۝٤﴾ [سورة النجم:٣-٤]

अर्थातः वह अपनी इच्छा से कोई बात कहते हैं।वह तो केवल वहय होती है जो उतारी जाती है।

अल्लाह ने और फरमायाः

﴿۞ يَٰٓأَيُّهَا ٱلرَّسُولُ بَلِّغۡ مَآ أُنزِلَ إِلَيۡكَ مِن رَّبِّكَۖ وَإِن لَّمۡ تَفۡعَلۡ فَمَا بَلَّغۡتَ رِسَالَتَهُۥۚ وَٱللَّهُ يَعۡصِمُكَ مِنَ ٱلنَّاسِۗ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهۡدِي ٱلۡقَوۡمَ ٱلۡكَٰفِرِينَ ۝٦٧﴾ [سورة المائدة:٦٧]

अर्थातः ऐ रसूल!जो कुछ भी आप की ओर आपके रब की ओर से नाज़िल किया गया है पहुंचा दिजीऐ।यदि आपने ऐसा न किया तो आप ने अल्लाह की रेसालत(संदेशवाहन)को अदा नहीं किया,और आप को अल्लाह तआ़ला लोगों से बचालेगा।

2–आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मासूम होने का एक भाग यह भी है कि आप शिरक (बहूदेववाद) करने से मासूम थे,बेसत (संदेशवाहक) बनने से पूर्व भी आप शिरक से मासूम रहे,सत्य नोसूस (धार्मिक) पाठें इस बात पर साक्ष्य हैं कि आप ने कभी किसी प्रतिमा के सामने न तो सजदा किया,न उसे(आशीर्वाद के लिऐ) हाथ लगाया,और न इस जैसी कोई ऐसी शिरकिया (बहूदेववादीय) गतिविधि में भाग लिया जो आप के समुदाय के लोगों किया करते थे,आप अपने स्वभाव के अनूसार अल्लाह से अवगत थे,कई सालों तक गारे हि़रा में जाकर अल्लाह की पूजा करते और उसकी पूजा में किसी को साझी नही ठहराते,आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अल्लाह तआ़ला की इस तौही़द (एकेश्वरवाद)पे स्थिर रहना कोई आश्चर्य का विषय नहीं,क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने आपके अंदर से शैतान का भाग दो बार निकाला,प्रथम जब आप छोटे थे और द्वितीय जब आप बड़े होगऐ और आपके साथ शक्के सदर (सीना चीरने का) घटना हुआ।

3–आपकी इसमत (मासूम) होने का एक भाग यह भी है कि आप कबीरा गूनाहों (बड़े पापों)से मासूम थे, पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जीवनी इस पर साक्ष्य है,चाहे संदेशवाहन से पूर्व हो अथवा उसके पश्चात,क्योंकि आपने कभी शराब को मूंह न लगाया,न ही आपने कभी किसी महिला को हाथ लगाया,इस्से आगे बढ़ना तो दूर की बात,और न ही आपने कभी झूट बोला,जैसा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन हैः''में केवल सत्य ही बोलता हूं'',आपसे बड़े पाप केसे हो सकता था जबकि आपने अपने सहाबा से कहाः''अल्लाह की क़सम!में तुममें सबसे अधिक अल्लाह से डरने और उसका तक़्वा अपनाने वाला हूं''(इसे बोखारी5063 ने रिवायत किया है)

क़ुरतुबी रही़महुल्लाह लिखते हैंःइस पर सभों की सहमति है कि अंबेया एकराम समस्त प्रकार के पापों के साथ उन छोटे पापों से भी मासूम थे जिनके अंदर अशलीलता पाई जाती है।

4–आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मासूमियत का एक भाग यह भी है कि आप जिस वंश से थे,वह वंश बलातकार से सुरक्षित था,अल्लाह तआ़ला ने हमारे नबी के वंश को पूर्व इस्लामी युग के बलातकार से सुरक्षित रखा था,चाहे वह पिता की ओर से हो अथवा माता की ओर से,आपका जन्म इस्लामी निकाह के तरीके पे आयोजित होने वाले निकाह से हूइा था।(हा़फिज़ ह़कमी की पुस्तक(मआ़रेजुल क़बूल)से हलके

हेरफेर के साथ नकल किया गया है,अध्यायःमोलिदोहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम,पृष्ठ संख्या(1051),प्रकाशकः दारो इब्नुलकय्यिम, दम्माम।)

इसका प्रमाण पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह ह़दीस है जिसे इब्ने अब्बास रजीअल्लाहु अंहु ने रिवायत किया हैः''मेरे माता.पिता के बीच कभी अवैध संबंध न था,अल्लाह ने मुझे पवित्र कोख में पवित्रता के साथ मुनतकिल किया,जब भी दो डालियों (खानदानों) का आपस में संबंध हुआ तो में उनमें सबसे अच्छा था'' (इस ह़दीस को अबू नईम ने (दलाइलुन्नबूवत) :24 में विभिन्न माध्यमों से रिवायत किया है और सियूती ने (अलखसाइस अलकुबरा) :1/62,66 में इसके साक्ष्यों का उल्लेख किया हैः(हुकूक अलनबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अला उम्मतेहि) डाकटर मोह़म्मद बिन खलीफा अलतमिमी,प्रकाशकःमकतबा अजवाउलसलफ।रियाज़ः138)

15–आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मासूमियत का एक भाग यह भी है कि आप बुरे छवी से मासूम थे, पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उच्च चरित्र पर बात की जाऐ तो बात बहुत लेबी होजाऐगी,एतना कहना ही प्रयाप्त होगा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अंदर समस्त उत्तम व्यवहार पाऐ जात थे और आप समस्त बुरे चरित्र से पवित्र थे,इस विश्य में हमारे लिऐ अल्लाह तआ़ला का यह कथन प्रयाप्त है जिसके संबोधक पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैंः

﴿وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ ۝٤﴾ [سورة القلم:٤]

अर्थातः निसंदेह आप बड़े''उत्तम चरित्र पर हैं।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने के यह पंद्रह तकाजे हैं,इन तकाजों पर ईमान लाने और इन पर अमल करने में अल्लाह हमारी सहायता करे,और हमें उनलोगों में शामिल फरमाऐ जिन्होंने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाया,आपकी सहायता की और उस आलोक की पैरवी की जिसके साथ आप भेजे गऐ थे,वही लोग सफल हैं।

अल्लाह तआ़ला कुरान की बरकतों से हमें और आप को लाभ पहुंचाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और ह़िकमतों पर आधारित प्रामर्शों ले लाभ पहुंचाए,में अपनी यह बात हकते हुए अल्लाह तआ़ला से आप सब के लिए समस्त प्रकार के पापों से छमा प्राप्त करता हूं,आप भी उस्से छमा प्राप्त करे,निसंदेह वह अति तौबा स्वीकारने वाला और छमा प्रदान करने वाला है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد:

आप यह भी जान लें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़ी चीज का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थातः अल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है:''तुम्हारे सबसे अचछे दिनों में से शुक्रवार का दिन है,उसी दिन मनु पैदा किये गऐ,उसी दिन उनकी आत्मा निकाली गई,उसी दिन सूर फूंका जाएगा,(अर्थात सूर में दूसरी बार फूंक मारा जाएगा,इस्का मतलब वह सूर है जिसमें इसराफील फूंक मारेंगे,यह वह देवदूत हैं जिनको सूर में फूंक मारने पर नियुक्त किया गया है,जिसके पश्चात समस्त मुर्दो अपनी कबरों से उठ खड़े होंगे।) उसी दिन चीख होगी।(अर्थात जिससे दुनयावी जीवन के अंत में लोग बेहोश होकर गिर पड़ेंगे और सब के सब मर जाऐंगे,यह बेहोशी उस समय उतपन होगी जब सूर में बहली बार फूंक मारा जाऐगा,दो फूंक के मध्य में चालीस साल का अंतर होगा।) इसलिऐ तुमलोग उस दिन मुझ पर अधिक से अधिक दरूद भेजा करो,क्योंकि तुम्हारा दरूद मुझ पर प्रस्तुत किया जाता है''। (इसे नेसाई (1373), अबूदाऊद (1047),इब्ने माजा (1085) और अह़मद 4/8 ने रिवायत किया है और अल्बानी ने सही़अबूदाऊद में और मुस्नद के शोधकर्ताओं ने (ह़दीसः16162)के अंतर्गत इसे सह़ी कहा है।)

ए अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्माद पर रह़मत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़ेयामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट करदे,और अपने एकेश्वरवादी बंदों की सहायता फरमा।

हे अल्लाह तू हमें हमारे देशों में शांति प्रदान कर,हमारे इमामों और हमारे हाकिमों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक और हिदायत पर चलने वाला बना। उन्हें उनके प्रजाओं के लिऐ रह़मत बना दे।

हे अल्लाह!जो हमारे प्रति,इस्लाम और मुसलमानों के प्रति बुरा भाव रखे तू उसे खुद में ही वयस्त करदे,और उसके चाल व फरेब को उसके लिऐ बावले जान बना।

हे अल्लाह!मुसलमानों को जो कठिनाई पहुंची उसकी गंभीरता को तेरे सेवा कोई नहीं जानता,हे अल्लाह!हमसे इस कठिनाई को दूर फरमा दे,हम मुसलमान हैं,हे अल्लाह!इस महामारी से जिन लोगों का मृत्यु हो गया है,उन पर कृपा फरमा,और उनमें जो रोगी हैं,उन्हें स्वास्थ्य प्रदान कर,हे अल्लाह!हम तेरी पनाह चाहते हैं तेरी नेमत के समाप्ति से,तरे कृपा के हट जाने से,तेरे अचानक यातना से और तेरी प्रत्येक प्रकार की नाराजगी से।

हे अल्लाह हम तेरी पनाह चाहते हैं कुष्ठ रोग से,पागलपन से,कोढ़ से और बूरे रोग से।

हे अल्लाह हमें रमज़ान नसीब फरमा,हे अल्लाह हमें रमज़ान नसीब फरमा,हे अल्लाह हमें रमज़ान नसीब फरमा।

हे हमारे पालनहार!हमें नेकी दे और आखेरत में अच्छाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

ऐ अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला न्याय का,भलाई का और परिजनों के साथ उच्च व्यवहार का आदेश देता है और निर्लज्जता के कामों,ओछ गतिविधियों और अन्याय से रोकता है।वह खुद तुम्हें प्रामर्श कर रहा है कि तुम नसीहत प्राप्त करो।इस लिऐ तुम अल्लाह तआ़ला को याद करो,वह भी तुम्हें याद करेगा,उसके आशीर्वदों पर उनका आभार व्यक्त करो अल्लाह तुम्हें और द़ेगा,निसंदेह अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र सबसे बड़ी चीज है,अल्लाह तुम्हारे समस्त आमाल से अवगत है।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين

शीर्षक: मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महानता के दस साक्ष्य

प्रथम उपदेश:

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

समस्त प्रकार के प्रशंसाओं के पश्चात:

सर्वोत्तम बात अल्लाह की बात है और सर्वश्रेष्ठ मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम का मार्ग है, दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअतें (नवाचार) हैं, और धर्म में अविष्कारित प्रत्येक चीज़ बिदअत है, प्रत्येक बिदअत गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली हैं।

ए मुस्लमानो! अल्लाह का भय रखो, जान लो कि इस उम्मत को अल्लाह ने यह सम्मान प्रदान किया है कि सर्वोतम जीव को उनका नबी व रसूल (संदेशवाहक) बनाया,जो कि मो0 सल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। वह वासतव में नैतिकता व उच्च व्यवहार एवं ज्ञान व कार्य के रूप से सर्वोतम मानव थे, यही कारण है कि आपने समस्त संसार पर अपना प्रभाव स्थापित किया,चाहे जिन्नात हो या मनुष्य,यहां तक कि मवेशियों पर भी अपका प्रभाव स्थापित हुआ,इस प्रकार आप वासतव में एक महान पुरूस थे,पुर्ण रुप से संसार भर में आपके जेसा किसी का जनम हुआ और ना ही हो सकता है,पैगम्बर सल्लाहु अलैहि वसल्लम की महानता कुछ निश्चित र्दष्टिकोण में सिमित नहीं,बल्कि वह प्रत्येक पहलू को शामिल है,आपकी महानता के साक्ष्यें सौ से भि अधिक हैं,हर साक्ष्य दुसरे साक्ष्य से विभिन्न है, उन में से कुछ यह हैं:

१:अल्लाह तआला ने समस्त मानव जाति में से आपका चयन किया ताकि आप रिसालत व पैगम्बरी (संदेशवाहक एवं प्रवर्तन) का कर्तव्य पूरा करें,अल्लाह ने अपने पैगम्बर मो0 सल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाया:

﴿ وَأَرۡسَلۡنَٰكَ لِلنَّاسِ رَسُولٗاۚ ﴾ [سورة النساء:٧٩]

अर्थात:हम ने आप को समस्त मानव जाति के लिए संदेशवाहक बना कर भेजा है.

२: आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम की महानता का एक साक्ष्य यह भी है कि अल्लाह तआला ने आपको नबूवत व रिसालत (प्रवर्तन एवं संदेशवाहन) दोनों से सम्मानित किया.

३:आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम की महानता एवं श्रेष्ठता का एक प्रमान यह भी है कि आप उलूलअजम (महत्तवाकांक्षी /अभिलाषी) रसुलों(संदेशवाहक) में से हैं,उलुलअजम रसूल पांच हैं: नूह, इब्राहीम, मूसा, इसा, और मो0 सल्लाहु अलैहि वसल्लम उन सब पर अल्लाह की अपार कपा एवं करम हो।

﴿فَٱصۡبِرۡ كَمَا صَبَرَ أُوْلُواْ ٱلۡعَزۡمِ مِنَ ٱلرُّسُلِ﴾ [سورة الأحقاف:٣٥]

के अंतर्गत इब्ने कसीर का लिखा हुआ लाभ देखें)

४-आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महानता का एक प्रमाण यह भी है कि अल्लाह तआला ने आपको अनेक ऐसी निशानियाँ (चिन्ह) प्रदान की हैं जो आपकी नुबूव्वत (प्रवर्तन) के साक्ष्य हैं, इब्नूल-क़य्यिम रहिमहुल्लाह ने अपनी पुस्तक "इग़ासतुल-लहफ़ान"1 { पस११०७,शोध अ़ली ह़सन अ़ब्दुल ह़मीद,दार इब्नुल जौज़ी-दम्माम} के अंत में उल्लेख किया है कि यह चिन्ह १००० से अधिक हैं। यह बंदों (दास) पर अल्लाह की रह़मत (कृपा) है ताकि आपकी नुबूव्वत (प्रवर्तन) पर ईमान लाने एवं (आपकी बातों) को मानने में यह निशानियाँ सहायक बनें एवं विरोधियों के तर्कों का काट कर सकें।

५-आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महानता एवं श्रेष्ठता का एक साक्ष्य यह भी है कि अल्लाह तआला ने आपको एक ऐसी जीवित मोजिज़ों (चमत्कार) प्रदान किया जो आपकी बेसत (अवतरित) से लेकर क़यामत तक जारी रहने वाला है। और वह है क़ुरआन- ए -मजीद, क्योंकि समस्त पैग़म्बरों के चिन्ह उनकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हो गए किंतु क़ुरआन ऐसा मोजिज़ा (चमत्कार) है जो उस समय तक बाक़ी रहेगा जब तक पृथ्वी और उस पर जीवित रहने वाले मनुष्य बाक़ी रहेंगे। अबू हुरैरा रज़िअल्लाहू अन्हूसे वर्णित है कि रसूल सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

अर्थात: " पैग़म्बरों में से कोई पैग़म्बर ऐसा नहीं जिनको कुछ निशानियां (चमत्कार) न दी गयी हों।

जिनके अनुसार उन पर ईमान लाया गया। और मुझे जो विशाल चमत्कार दिया गया वह क़ुरआन है, जो अल्लाह ने मेरी ओर अवतरित किया मैं आशा करता हूं कि क़यामत के दिन गिनती में समस्त पैग़म्बरों से अधिक मेरे अनुयायी होंगें।

2{इस हदीस को बुख़ारी: ४९८१, एवं मुस्लिम: १५२ ने विवरण किया है।}

६-आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महानता का एक साक्ष्य यह भी है कि अल्लाह तआला ने आपके ऊपर सर्वोत्तम शरीयत (इस्लाम धर्म) अवतरित फ़रमाया और उसे उन समस्त उत्तम

आदेशों एवं शिक्षाओं से निर्मित किया जो समस्त आकाशीय पुस्तकों में अंकित थीं एवं उनमें अधिक वृद्धि भी फ़रमाया।

७-आप सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम की महानता एवं महत्ता का एक साक्ष्य यह भी है कि अल्लाह तआला ने आप पर अहा़दीस (आप सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम के कार्य एवं कथन) भी वह्य (आकाशवाणी प्रकाशन) फरमाई जो शरीअत (इस्लाम धर्म) के विवरण से निर्मित है।

८-आप सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम की महानता एवं श्रेष्ठता का एक प्रमाण यह भी है कि अल्लाह तआला ने आपको समस्त मानव एवं जिनों के लिए रसूल (संदेशवाहक) बनाया, जबकि आपके अतिरिक्त अंबिया (पैग़म्बरों) को विशेष रुप से उनके अपने ही क़ौम के लिए अवतरित किया।

अल्लाह तआला का कथन है:

﴿وَمَآ أَرۡسَلۡنَٰكَ إِلَّا كَآفَّةٗ لِّلنَّاسِ بَشِيرٗا وَنَذِيرٗا﴾ [سورة سبأ:٢٨]

अर्थात: "हमने आपको समस्त मानव जाति के लिए संदेशवाहक बना कर भेजा।"

अल्लाह तआ़ला का एक और कथन है:

﴿وَمَآ أَرۡسَلۡنَٰكَ إِلَّا رَحۡمَةٗ لِّلۡعَٰلَمِينَ ١٠٧﴾ [سورة الأنبياء:١٠٧]

अर्थात: हमने आपको समस्त संसार वासियों के लिए रह़मत (क्रपी) बना कर भेजा है।

अल्लाह ताला ने यह भी उल्लेख फ़रमाया है कि जिन्नातों ने भी पैग़ंबर सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम के निमंत्रण को स्वीकार किया:

﴿وَإِذۡ صَرَفۡنَآ إِلَيۡكَ نَفَرٗا مِّنَ ٱلۡجِنِّ يَسۡتَمِعُونَ ٱلۡقُرۡءَانَ فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوٓاْ أَنصِتُواْۖ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوۡاْ إِلَىٰ قَوۡمِهِم مُّنذِرِينَ ٢٩﴾ [سورة الأحقاف:٢٩]

अर्थात: "हमने जिनों के एक समूह का ध्यान आपकी ओर आकर्षित किया ताकि वे क़ुरआन को सुनें, जब वे उसके निकट आए तो आपस में कहने लगे कि चुप जाओ जब (पढ़ना) समाप्त हुआ तो अपने समुदाय के पास गए ताकि (उनको) नसीहत करें।"

इस कथन तक (ध्यान दें) :

﴿يَٰقَوۡمَنَآ أَجِيبُواْ دَاعِيَ ٱللَّهِ وَءَامِنُواْ بِهِۦ يَغۡفِرۡ لَكُم مِّن ذُنُوبِكُمۡ وَيُجِرۡكُم مِّنۡ عَذَابٍ أَلِيمٖ ٣١﴾ [سورة الأحقاف:٣١]

अर्थात: "ए हमारे समुदाय के लोगो! अल्लाह की ओर बुलाने वाले की बात मानो, उस पर ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हारे पापों को क्षमा प्रदान करेगा और तुम को दर्दनाक पीड़ा से मुक्ति प्रदान करेगा।

इस आयत में अंकित अल्लाह की ओर बुलाने वाला (दाई) का अर्थ पैग़म्बर मोहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम है। आप ही से जिनों ने क़ुरआन की तिलावत (सस्वरपाठ) सुनी।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है:

अर्थात: "प्रत्येक पैग़ंबर विशेष रुप से अपनी कौ़म (समुदाय) की ओर भेजे गये और मैं लाल और काले हर व्यक्ति की ओर भेजा गया हूं" 3 {इसे मुस्लिम: ५२१ ने जाबिर बिन (पुत्र) अब्दुल्लाह रज़िअल्लाहु अन्हुमा से विवरण किया है}

लाल एवं काला का अर्थ समस्त संसार है।

९-पैग़म्बर सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम की महानता एवं उच्चता का एक साक्ष्य यह भी है कि अल्लाह तआला ने आपके माध्यम से नुबूव्वत और रिसालत (प्रवचन एवं संदेशवहन) की श्रंखला समाप्त कर दिया इसीलिए आपको ख़ातिमुन्नबीय्यीन (पैग़म्बरों का समापन करने वाला) का उपाधि दिया गया अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿مَّا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَآ أَحَدٖ مِّن رِّجَالِكُمۡ وَلَٰكِن رَّسُولَ ٱللَّهِ وَخَاتَمَ ٱلنَّبِيِّـۧنَۗ﴾ [سورة الأحزاب:٤٠]

अर्थात: "पैग़म्बर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं हैं किंतु आप अल्लाह के रसूल (संदेशवाहक) एवं समस्त पैग़म्बरों की श्रंखला को समाप्त करने वाले हैं।"

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि पैग़म्बर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

अर्थात: "मेरे एवं मुझ से पूर्व समस्त पैग़म्बरों का उदाहरण ऐसा है जैसे एक व्यक्ति ने एक घर बनाया और उसमें समस्त प्रकार की सुंदरता का प्रबंध किया किंतु एक कोने में एक ईंट का स्थान छोड़ दिया, अब लोग आते हैं और मकान को चारों ओर से घूम कर देखते हैं और आश्चर्य में पड़ जाते हैं किंतु यह भी कह जाते हैं कि इस स्थान पर एक ईंट क्यों ना रखी गई? तो मैं ही वह ईंट हूं और मैं ख़ातिमुन्नबीय्यीन (अंतिम पैग़म्बर) हूँ।"

4 (इसे बुख़ारी: ३५३५ एवं मुस्लिम: २२८६ ने अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु अन्हु से विवरण किया है।)

१०-पैग़म्बर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महानता एवं महत्ता का एक साक्ष्य यह भी है कि अल्लाह तआला ने आपके ज़िक्र (याद) को अति बुलंद फ़रमाया है। जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है:

﴿وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝٤﴾ [سورة الشرح:٤]

अर्थात: " हमने आपके ज़िक्र को बुलंद किया है।"

अल्लाह तआला ने आपके नाम को शहादत-ए-तौहीद (इस्लाम में प्रवेश हेतु वाक्य) का अटूट अंग बना दिया: أشهد أن لا إله إلا الله، وأشهد أن محمدا رسول الله

अर्थात: "मैं इस बात का साक्षी हूं की अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य माबूद (परमेश्वर) नहीं। और इस बात का भी साक्षी हूं कि मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।"

अज़ान व इक़ामत (नमाज़ के लिए खड़े होते समय पढ़े जाने वाले वाक्यों) ख़ुत्बा (उपदेश) नमाज़ - तशह्हुद वतहीय्यात- (पैग़म्बर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अभिवादन) और अत्यंत प्रार्थनाओं में जहां अल्लाह तआला का ज़िक्र (नाम) आया है वहीं पैग़म्बर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का भी ज़िक्र (नाम) आया है। इस प्रकार पैग़म्बर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़िक्र (याद) से पृथ्वी का कोना कोना गूंज रहा है। संसार में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं जिसका ज़िक्र (नाम) एवं प्रशंसा पैग़म्बर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़िक्र (याद) और प्रशंसा के प्रकार की जाती है जैसा कि हस्सान बिन साबित रज़िअल्लाहु अन्हु का कथन है:

وضمَّ الإلهُ اسمَ النبيّ إلى اسمِهِ إذا قَالَ في الخَمْسِ المؤذِّنُ أشْهَدُ

وشقّ لهُ منِ اسمِهِ ليجلهُ فذو العرشِ محمودٌ ، وهذا محمد

अर्थात: "अल्लाह तआला ने अपने पैगंबर के नाम को अपने नाम के साथ विलय कर लिया है, इस प्रकार कि मुअज़्ज़िन (अज़ान कहने वाला) पांच समय के अज़ान में जब कलिमह- ए -शहादत (इस्लाम में प्रवेश हेतु वाक्य) पढ़ता है तो अल्लाह के नाम के साथमो ह़म्मद का नाम भी लेता है, अल्लाह तआला ने आपके सम्मान के लिए आपका नाम अपने नाम से व्युत्पत्ति किया है इसलिए अर्श (अल्लाह का सिंहासन) वाला महमूद है और आप मोह़म्मद हैं।

ऐ मुसलमानो! पैग़म्बर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महानता एवं श्रेष्ठता के यह दस साक्ष्य हैं, यह साक्ष्य अति अधिक हैं जिनकी संख्या १०० तक पहुंचती है। जैसाकि हमने पूर्व में उल्लेख किया है।

अल्लाह तआला क़ुरआन को मेरे लिए एवं आप सबके लिए सौभाग्यशाली बनाए, मुझे और आप को उसकी आयतों एवं ह़िकमत (प्रतिज्ञा) पर आधारित नसीह़त (परामर्श) से लाभ पहुंचाए। मैं यह बात कहते हुए अल्लाह से क्षमा चाहता हूं आप भी उससे क्षमा की प्रार्थना करें नि: संदेह वह अत्यंत क्षमा प्रदान करने वाला एवं अत्यंत कृपा करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى أما بعد !

ए अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो और आप जान लो कि नि:संदेह सबसे नीच एवं सबसे कुरूप बात यह है कि मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सम्मान एवं प्रतिष्ठा पर आलोचना किया जाए आप के साथ अपशब्द, दुर्वचन, कर के अथवा आपका मानहानि कर के, उन लोगों की ओर से जिनके प्रति इस्लाम ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वह इस्लाम एवं मुसलमानों से घृणा रखते हैं, ऐसे लोगों के प्रति अल्लाह का कथन सत्य बैठता है:

﴿إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ ٱلۡأَبۡتَرُ ۝٣﴾ [سورة الكوثر:٣]

अर्थात: "नि: संदेह आपका शत्रु ही लावारिस और गुमनाम है।"

अर्थात: तुझ से घृणा रखने वाले एवं जिस हिदायत (दिशा निर्देश) व नूर (आलोक) के साथ आप अवतरित हुए हैं, उससे घृणा रखने वाले के समस्त चिन्ह मिट जाएंगे, उसका कोई नाम लेने वाला ना होगा और वह हर प्रकार की अच्छाई से वंचित कर दिए जाएगा।

वे लोग जो इस्लाम के विरुद्ध षड्यंत्र रचते हैं उनके विरुद्ध अल्लाह यह तरकीब करता है कि जब भी वे इस्लाम पर आक्रमण करते हैं, उनके समुदाय का ध्यान इस्लाम की ओर अधिक बढ़ जाता है ताकि वे इस्लामी स्रोतोंके माध्यम से उसकी वास्तविकता से अवगत हो सकें, इसके अतिरिक्त इस्लामी दावत (दिशा निर्देश) के प्रचार और प्रसार के लिए मुसलमान भी अपने प्रदेशों में दावती गतिविधियों को तेज़ कर देते हैं। अल्लाह ताला का सत्य कथन है:

﴿وَمَكَرُواْ مَكۡرٗا وَمَكَرۡنَا مَكۡرٗا وَهُمۡ لَا يَشۡعُرُونَ ۝٥٠﴾ [سورة النمل:٥٠]

अर्थात: " उन्होंने चालाकी की (आंतरिक षड्यंत्र) और हमने भी और वे इसे समझते ही नहीं थे।"

इसके साथ ही मुसलमानों को यह ध्यान रखना चाहिए की काफिर मुसलमानों को भड़काना और उकसाना चाहते हैं ताकि वे हिंसा, क्रोध, अज्ञानता, मूर्खता एवं विनाश का प्रदर्शन करें, जब वे ऐसा करने लगते हैं तो वह अपने समुदाय वालों से कहते हैं: "देखो इस्लाम एवं मुसलमानों को, कि वे क्या कर रहे हैं।" फिर लोगों को इस्लाम धर्म से रोकने के लिए मीडिया में उनके विनाश के दृश्यों का प्रसारण करते हैं इसलिए सावधान एवं सचेत रहें यह उचित नहीं की निर्बल बुद्धि वाले उत्पीड़नों में पड जाएं। बल्कि धीरज से काम लें, खुद पर नियंत्रण रखना, ज्ञानी एवं अनुभवी लोगों को मामला सौंप देना, इस प्रकार की घटनाओं को अल्लाह की ओर बुलाने और जो शंकाएं उठाए जा रहे हैं उनका खंडन करने के लिए प्रयोग करना, वाजिब (अनिवार्य) है ताकि शत्रुओं को दुष्टता एवं धोखा का अवसर न मिल सके और अल्लाह की आज्ञा से विचारण, कृपा में परिवर्तित हो जाए अल्लाह का कथन है:

﴿وَلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ ٱلَّذِينَ لَا يُوقِنُونَ ۝٦٠﴾ [سورة الروم:٦٠]

अर्थात: "जो लोग विश्वास नहीं रखते वे आपको हल्का (अधीर) ना करें।"

इसके अतिरिक्त यह भी जान लें -अल्लाह आप पर दया करे- कि अल्लाह तआला ने आपको एक बड़ी चीज़ का आदेश दिया है अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيْهِ وَسَلِّمُواْ تَسْلِيمًا ۝٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात: "अल्लाह तआला एवं उसके देवदूत उस पैग़ंबर पर रहमत (कृपा) भेजते हैं ए विशवासियो! तुम भी उन पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजते रहा करो।"

पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है:

अर्थात: "तुम्हारे पवित्र दिनों में से शुक्रवार का दिन है उसी दिन आदम (मनु) का जन्म हुआ उसी दिन उनकी रूह (आत्मा) निकाली गई उसी दिन सूर (तुरही) फूंका जाएगा 5 {अर्थात तुरही दूसरी बार फूंका जाएगा माने वह तुरही है जिसमें इसराफ़ील फूंक मारेंगे, यह वह देवदूत हैं जिनको तुरही में फूंक लगाने का आदेश दिया गया है जिसके पश्चात समस्त जीव क़बरों से उठ खड़े हो जाएंगे।} उसी दिन चीख़ होगी। 6 {अर्थात: जिससे सांसारिक जीवन के अंत में लोग मदहोश हो कर गिर पड़ेंगे और समस्त जीव की मृत्यु हो जाएगी। यह मदहोशी उस समय उत्पन्न होगी जब सुर (तुरही) में सर्वप्रथम फूंक लगाया जाएगा ०२ फुंक के मध्यमें ४० वर्षों का अंतर होगा।}

इसीलिए उस दिन तुम लोग मुझ पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजा करो, क्योंकि तुम्हारा दुरूद मुझ पर प्रस्तुत किया जाता है।

{इसे निसाई (१३७३), अबू दाऊद (१०४७), इब्ने माजा (१०८५) और अह़मद (८/४) ने विवरण किया है और अलबानी ने सही अबूदाऊद में और मुसनद के शोध कर्ताओं ने (१६१६२) के अंतर्गत इसे सत्य कहा है।}

हे अल्लाह! तू अपने बंदे व रसूल (दास एवं संदेशवाहक) मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दया, कृपा एवं शांति भेज, तू उनके ख़ुलफ़ा (मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उत्तराधिकारीयों) ताबेईन (समर्थक) एवं क़यामत तक आने वाले समस्त आज्ञाकार्यों से प्रसन्न हो जा!

हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित कर दे, तू अपने एवं इस्लाम के शत्रुओं एवं विरोधीयों को नाश कर दे, तू अपने मुवह़्हिद बंदों (अव्दैतवादियों) की सहायता प्रदान कर।

हे अल्लाह! तू हमारे देशों को शांतिपूर्ण बना दे, हमारे इमामों (प्रतिनिधियों), शासकों को सुधार दे, उन्हें हिदायत (सही मार्ग) का निर्देश दे, और हिदायत पर चलने वाला बना दे।

हे अल्लाह! जो हमारे प्रति, इस्लाम और मुसलमानों के प्रति बुराई का भाव रखते हैं, उसे तू अपनी ही ज़ात में व्यस्त कर दे और उसके फ़रेब व चाल को उलटा उस के लिए वबाल बना दे!

हे अल्लाह! मुद्रास्फीति, महामारी, ब्याज बलात्कार, भूकंप एवं आज़माइशों को हमसे दूर कर दे और प्रत्येक प्रकार के आंतरिक एवं बाह्य फ़ित्नों (उत्पीड़नों) को हमारे ऊपर से उठा ले, सामान्य रूप से समस्त मुस्लिम देशों से और विशेष रूप से हमारे देशों से ऐ दोनों जहां के पालनहार!

हे अल्लाह! हमारे ऊपर से महामारी को दूर कर दे, नि: संदेह हम मुसलमान हैं।

हे अल्लाह! तू समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने एवं अपने धर्म के उत्थान की तौफ़ीक़ प्रदान कर, उनको उनके प्रजा के लिए रह़मत (दया) का कारण बना दे!

हे हमारे रब! हमें दुनिया और आख़िरत में समस्त प्रकार की अच्छाई दे, और नरक की यातना से हम को मुक्ति प्रदान कर!

आपका रब (पालनहार) अति सम्मान वाला है और उन समस्त चीज़ों से पवित्र है जो बहुदेववादी उनके प्रति बताते हैं।

पैगम्बरों पर सलाम (शांति) है और समस्त प्रशंसाएं अल्लाह रब्बुल आलमीन (दोनों संसार का पालनहार) के लिए योग्य हैं।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين.

शीर्षक: मुस्तफा सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम का एक अधिकार आज्ञाकारीता भी है

प्रथम उपदेश:

إن الحمد لله، نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، ومن سيئات أعمالنا من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدًا عبده ورسوله.

प्रशंसाओं के पश्चात !

सर्वोत्तम बात अल्लाह की बात है और सर्वश्रेष्ठ मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम का मार्ग है, दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअतें (नवाचार) हैं, और धर्म में अविष्कारित प्रत्येक चीज़ बिदअत है, प्रत्येक बिदअत गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली हैं।

ए मुसलमानो! अल्लाह तआला का भय रखो , जान लो कि इस उम्मत को अल्लाह ने यह सम्मान प्रदान किया है कि सर्वोत्तम मख़लूक (जीव) को उनका नबी एवं पैग़ंबर बनाया जोकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है। वह निःसंदेह नैतिक एवं व्यवहार, ज्ञान एवं कार्य के विषय में सर्वोत्तम थे अल्लाह तआला ने आपके साथ उत्तम व्यवहार का आदेश दिया है:

عن تميم الداري: [إنَّ الدِّينَ النَّصيحةُ، إنَّ الدِّينَ النَّصيحةُ، إنَّ الدِّينَ النَّصيحةُ. قالوا: لِمَن يا رسولَ اللهِ؟ قال: للهِ، وكتابِه، ورسولِه، وأئمةِ المؤمنين، وعامَّتِهم، وأئمةِ المسلمينَ وعامَّتِهم]مسلم (٥٥).

अर्थात: "तमीम दारी रज़िअल्लाहू अन्हू से मर्वी है कि पैग़ंबर सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: धर्म शुभ चिंता एवं सुंदर व्यवहार का नाम है, (सहाबा) ने पूछा किसके लिए? आपने फ़रमाया: अल्लाह, उसकी पुस्तक उसके पैग़ंबर, मुसलमानों के इमामों, (धार्मिक मार्गदर्शक) एवं उनके अनुयायियों के लिए." {1- इस हदीस को इमाम मुस्लिम (५५) ने रिवायत किया है।}
पैगंबर सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम के प्रति शुभचिंतन एवं सुंदर व्यवहार के अर्थ क्या हैं? इसको स्पष्ट करते हुए नौव्वी रहमतुल्लाहि अलैहि मैं एक विद्वान के कथन का उल्लेख किया

है: पैगंबर सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम के शुभचिंतन एवं उत्तम व्यवहार का अर्थ यह है कि आपकी रिसालत व पैग़ंबरी (संदेशवाहक एवं प्रवर्तन) की पुष्टि की जाए, आपकी शिक्षाओं पर ईमान लाया जाए, आपने जिन बातों का आदेश दिया है और जिन चीज़ों से रोका है उन सब में आपकी आज्ञा मानी जाए, आपके जीवन में और आपकी मृत्यु के पश्चातभीआपकीसहायताकीजाए, आपकेशत्रुओंसेशत्रुतारखीजाए, और आपके मित्र से मित्रता रखी जाए, आपके अधिकारों का सम्मान किया जाए, आपकी दावत (शिक्षा) का प्रचार एवं प्रसार किया जाए, आपकी शरीअत (धर्म एवं धार्मिक शिक्षा) का प्रसारण किया जाए शरीअत (धर्म एवं धार्मिक शिक्षा) के प्रति प्रसारित निराधार तोहमत (बदनामी) का खंडन किया जाए, शरई (इस्लामी) शिक्षाओं का प्रसारण किया जाए, उसके मूल अर्थ से अवगत हुआ जाए, इसकी ओर लोगों को बुलाया जाए, इसकी शिक्षाओं के सीखने एवं सिखाने में सौम्यता एवं कृपा से काम लिया जाए, इसके स्थान एवं प्रतिष्ठा का पालन-पोषण किया जाए, इसको सीखते समय शिष्टाचार एवं आदर को अपनाया जाए, इस विषय में ज्ञान के बिना कोई बात ना कही जाए, शरईउ लूम (इस्लामी शिक्षाओं) के विशेषज्ञों का मान-सम्मान किया जाए, क्योंकि वे इन शिक्षाओं से निस्बत (संबंध) रखते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नैतिकताओं एवं शिष्टाचारों को अपने जीवन में लागू किया जाए, आप के अहल-ए-बैत (परिवार) एवं सहाबा (साथीगण) से प्रेम रखा जाए, आपकी सुन्नत (पैग़ंबर सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम के कार्य एवं कथन) में बिदअत (नवोन्मेष) को जन्म देने वाले एवं आदरणीय सहाबा (साथी गण) के सम्मान एवं प्रतिष्ठा पर उंगली उठाने वाले अभिमानी उसे दूर रहा जाए। {2-शरह अल-नौव्वी अला सही मुस्लिम} समाप्त।

ऐ मुसलमानो! पैग़ंबर सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम की आज्ञाकारी करना, आपके साथ उत्तम व्यवहार एवं शुभचिंतन का एक महत्वपूर्ण रूप है, जैसाकि विद्वानों के उपयुक्त कथनों में इसका उल्लेख मिलता है, और ऐसा क्यों ना हो जबकि अल्लाह तआला ने अपने आज्ञाकारीत के साथ पैगंबर सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम की आज्ञाकारीता का उल्लेख किया है और अपनी मख़लूक़ (जीव/ मानवजाति) को यह शिक्षा दिया है कि जिसने रसूल सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम का आज्ञा माना, उसने अल्लाह का आज्ञा माना, अल्लाह तआला का कथन है:

﴿مَّن يُطِعِ ٱلرَّسُولَ فَقَدۡ أَطَاعَ ٱللَّهَۖ وَمَن تَوَلَّىٰ فَمَآ أَرۡسَلۡنَٰكَ عَلَيۡهِمۡ حَفِيظٗا ۝٨٠﴾ [سورة النساء:٨٠]

अर्थात: "जिसने रसूल सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम की आज्ञाकारीता की उसने अल्लाह का आज्ञा माना, और जिसने मुंह मोड़ लिया तो हमने आप को उन पर अभिभावक बना कर नहीं भेजा है।"

इसका कारण यह है कि पैग़ंबर सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम इस धर्म को अल्लाह तआला के पास से लेकर आए, वह अल्लाह तआला के संदेश वाहक एवं उपदेशक थे, आप ने अपनी ओर से कोई चीज़ नहीं बताई, अल्लाह तआला ने अपने पैग़ंबर से कहा:

﴿قُلْ إِنَّمَآ أَنَا۠ بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰٓ إِلَىَّ﴾ [سورة الكهف:١١٠]

अर्थात: "आप कह दीजिए कि मैं तुम जैसा ही एक मनुष्य हूं, मेरी ओर वह्य (आकाशवाणी प्रकाशन) की जाती है।"

अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुरआन में ३३ स्थानों पर रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आज्ञाकारीता का आदेश दिया है। {3-शैख़ु-उल-इस्लाम इब्ने तैमिया रहमतुल्लाही अलैहि फ़रमाते हैं: अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम मैं ३० से अधिक स्थानों पर रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आज्ञाकारीता का उल्लेख किया है, अपने विरोध के साथ रसूल सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम के विरोध का उल्लेख किया है, इसके अतिरिक्त अपने नाम के साथ आपके नाम का उल्लेख किया है, इसीलिए अल्लाह तआला के उल्लेख के साथ आपका भी उल्लेख किया जाता है। (मजमूअ-तुल-फ़तावा (१९/२०३)

आजुर्री ने अपनी पुस्तक अल-शरिआ पृष्ठ: ४८ में इसी बात का उल्लेख किया है।}

उदाहरण स्वरूप अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿ وَمَآ ءَاتَىٰكُمُ ٱلرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَىٰكُمْ عَنْهُ فَٱنتَهُوا۟ۚ﴾ [سورة الحشر:٧]

अर्थात: " तुम्हें जो कुछ रसूल दें उसे ले लो और जिस से रोकें रुक जाओ!"

इसके अतिरिक्त अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿فَإِن تَوَلَّوْا۟ فَإِنَّ ٱللَّهَ لَا يُحِبُّ ٱلْكَٰفِرِينَ﴾ [سورة آل عمران:٣٢]

अर्थात: "यदि वे मुंह मोड़ लें तो नि:संदेह अल्लाह तआला काफ़िरों (अविश्वास कार्यो) को पसंद नहीं करता।"

अल्लाह ताला का कथन है:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَطِيعُواْ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ وَلَا تَوَلَّوۡاْ عَنۡهُ وَأَنتُمۡ تَسۡمَعُونَ ٢٠﴾ [سورة الأنفال:٢٠]

अर्थात: "ईमान वालो (विश्वासयो)! अल्लाह एवं उसके रसूल की बात मानो और उसकी बात मानने से मुंह मत मोड़ो सुनते जानते हुए।"

अल्लाह ताला अधिक फ़रमाता है:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَطِيعُواْ ٱللَّهَ وَأَطِيعُواْ ٱلرَّسُولَ وَأُوْلِي ٱلۡأَمۡرِ مِنكُمۡۖ﴾ [سورة النساء:٥٩]

अर्थात: "ईमान वालो (विश्वासयो)! अल्लाह, रसूल एवं अपने शासकों की आज्ञाकारिता करो"।

पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस (आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कार्य एवं कथन) में भी आज्ञाकारीता के प्रति प्रोत्साहन दिया गया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मार्गों पर चलने, आपकी सुन्नत (कार्य एवं कथन) का पालन करने, और आपने जिन चीज़ों का आदेश दिया है और जिन चीज़ों से रोका है उनके आदर के प्रति प्रोत्साहित किया गया है। इस विषय में अबू हुरैरा रज़िअल्लाहू अन्हू से मर्वी है कि रसूल सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"كُلُّ أُمَّتِي يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَنْ أَبَى ". قَالُوا : يَا رَسُولَ اللَّهِ، وَمَنْ يَأْبَى ؟ قَالَ : " مَنْ أَطَاعَنِي دَخَلَ الْجَنَّةَ، وَمَنْ عَصَانِي فَقَدْ أَبَى ". (البخاري:7280)

अर्थात: "समस्त उम्मत स्वर्ग में जाएगी सिवाय उनके जिन्होंने अस्वीकार किया। सहाबा (साथी गण) ने प्रश्न किया: ए अल्लाह के रसूल! कौन अस्वीकार करेगा? आपने फ़रमाया: जिसने मेरी आज्ञा मानी वह स्वर्ग में प्रवेश करेगा और जो अवज्ञा किया उसने अस्वीकारा।"

{4-इसे बुख़ारी (7280) ने रिवायत किया है।}

हज़रत अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु अन्हु से मर्वी है रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"مَنْ أَطَاعَنِي فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ، وَمَنْ عَصَانِي فَقَدْ عَصَى اللَّهَ، وَمَنْ أَطَاعَ أَمِيرِي فَقَدْ أَطَاعَنِي، وَمَنْ عَصَى أَمِيرِي فَقَدْ عَصَانِي ". (البخاري:٧١٣٧، مسلم: ١٨٣٥)

अर्थात: "जिसने मेरी आज्ञा मानी उसने अल्लाह की आज्ञा मानी और उसने मेरी अवज्ञा कि उसने अल्लाह की अवज्ञा की।" {5- इसे बुख़ारी (7137) और मुस्लिम (1835) ने रिवायत किया है।}

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहू अन्हु से मर्वी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

فَإِذَا نَهَيْتُكُمْ عَنْ شَيْءٍ فَاجْتَنِبُوهُ، وَإِذَا أَمَرْتُكُمْ بِأَمْرٍ فَأْتُوا مِنْهُ ما استطعتم. (البخاري:٧٢٨٨، مسلم: ١٣٣٧)

अर्थात: "मैं तुम्हें किसी चीज़ से रोकूं, तो तुम भी उससे बचो और जब मैं तुमको किसी बात का आदेश दूं तो तुम उसको पूरा करो जितना तुम में शक्ति हो। "{6- इसे बुख़ारी (7288) और मुस्लिम (1337) ने रिवायत किया है।}

अबू सईद खुदरी रज़िअल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

والذي نفسي بيده لتدخلن الجنة كلكم إلا من أبى وشرد على الله كشراد البعير قالوا يا رسول الله ومن يأبى أن يدخل. (صحيح ابن حبان:196/1-197)

अर्थात: "उस ज़ात का शपथ जिसके हाथ में मेरा प्राण है! तुम समस्त लोग स्वर्ग में प्रवेश करोगे सिवाय उनके जो अस्वीकार करते हैं ऊंट के बिदकने {7-अर्थात: इसी प्रकार बिदके जिस प्रकार ऊंट अपने मालिक से बिदक कर भाग जाता है, बिदकने का मतलब अल्लाह की आज्ञाकारिता से मुंह मोड़ना है।} के समान (अल्लाह एवं उसके रसूल की) आज्ञाकारीता से बग़ावत कर जाते हैं। सहाबा ने पूछा भला स्वर्ग में प्रवेश करने को कौन अस्वीकारता है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जिसने मेरी आज्ञा मानी वह स्वर्ग में प्रवेश करेगा एवं जिसने मेरी अवज्ञा की उसने गोया स्वर्ग में प्रवेश होने से अस्वीकारा।" {8-इसे इब्न-ए-हिब्बान १/१९६-१९७ ने (१७) नम्बर के अंतर्गत रिवायत किया है, इसके रोवात (कथा वाचक) वही है जो मुस्लिम के रोवात हैं, इस हदीस के शवाहिद (साक्षी) भी हैं जिन से शक्ति मिलती है, उदाहरण स्वरूप अबू हुरैरा की उपर्युक्त हदीस और वह हदीस जिसे अह़मद

(२/३६१) आदि ने वर्णन किया है, जिसके सनद (कथा वाचकों की श्रृंखला) शैख़ैन (बुख़ारी व मुस्लिम) की शर्त पर है जैसा कि हाफ़िज़ इब्ने हजर ने फ़तहु-ल-बारी में हदीस नंबर (७२८०) के अंतर्गत उल्लेख किया है उपर्युक्त हदीस पर शैख़ शोऐब के हाशिया से संक्षिप्त के साथ व्युत्पन्न है।}

अल्लाह ताआला मेरे एवं आपके लिए क़ुरआन करीम को बाबरकत (सौभाग्यशाली) बनाए मुझे और आप सब को आयतों एवं हिकमतों (बुद्धिमत्ताऔं) पर आधारित परामर्श से लाभ पहुंचाए, मैं अपनी यह बात करते हुए हर प्रकार के पापों से अल्लाह के समक्ष क्षमा चाहता हूं।आप भी उसके समक्ष अपने पापों की क्षमा चाहें। नि:संदेह वह तौबा स्वीकार करने वाला एवं अति क्षमा प्रदान करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد !

ऐ मुसलमानो! अल्लाह से डरो और आप जान लो कि पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आज्ञाकारीता में यह भी शामिल है कि विरोध के समय आपकी और लौटा जाए।

अल्लाह ताआला का कथन है:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ أَطِيعُواْ ٱللَّهَ وَأَطِيعُواْ ٱلرَّسُولَ وَأُوْلِي ٱلۡأَمۡرِ مِنكُمۡۖ فَإِن تَنَٰزَعۡتُمۡ فِي شَيۡءٖ فَرُدُّوهُ إِلَى ٱللَّهِ وَٱلرَّسُولِ إِن كُنتُمۡ تُؤۡمِنُونَ بِٱللَّهِ وَٱلۡيَوۡمِ ٱلۡأٓخِرِۚ ذَٰلِكَ خَيۡرٞ وَأَحۡسَنُ تَأۡوِيلًا ٥٩﴾ [سورة النساء:٥٩]

अर्थात: "मोमिनो! अल्लाह एवं उसके पैगंबर सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम की आज्ञाकारिता करो एवं जो तुम में प्रशासक हैं उनकी भी, और यदि किसी बात पर आपस में विवाद हो जाए और यदि तुम अल्लाह और रसूल पर ईमान रखते हो तो उस विषय में अल्लाह और रसूल के आदेश की ओर रुजू (संपर्क) करो यह बहुत अच्छी बात है और इसका परिणाम भी अच्छा है।"

इब्न-ए-क़य्यिम रहिमहुल्लाह का वर्णन है: लोगों का इस बात पर इज्मा (सहमति) है कि अल्लाह की ओर रुजू (संपर्क) का मतलब यह है कि उसके पुस्तक की ओर रुजू किया जाए, और पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर रुजू का मतलब यह है कि आपके जीवन में आपसे संपर्क करना एवं आपकी मृत्यु के पश्चात आपकी हदीसों की ओर रुजू करना। {9-

एलाम-उल-मोअक़्क़ेईन, अध्याय: अल्लाह के धर्म में शरई (धार्मिक) पाठों के विरोध पर आधारित विचार से फ़तवा देना ह़राम (निषेध) है।}

इसके अतिरिक्त यह भी जान लें -अल्लाह आप पर अपनी कृपा/दया नाज़िल करे- कि अल्लाह तआला ने आपको एक बड़ी चीज़ का आदेश दिया है अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात: "अल्लाह तआला और उसके फरिश्ते (देवदूत) उस नबी पर रह़मत (दया/कृपा) भेजते हैं, तुम भी उन पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजते रहा करो।"

नबी सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम का कथन है:

مِنْ أَفْضَلِ أَيَّامِكُمْ يَوْمُ الْجُمُعَةِ ؛ فِيهِ خُلِقَ آدَمُ، وَفِيهِ قُبِضَ، وَفِيهِ النَّفْخَةُ، وَفِيهِ الصَّعْقَةُ، فَأَكْثِرُوا عَلَيَّ مِنَ الصَّلَاةِ فِيهِ، فَإِنَّ صَلَاتَكُمْ مَعْرُوضَةٌ عَلَيَّ " (مسند أحمد:16162)

अर्थात: "तुम्हारे पवित्र दिनों में से शुक्रवार का दिन है उसी दिन आदम (मनु) का जन्म हुआ उसी दिन उनकी रूह (आत्मा) निकाली गई उसी दिन सुर (तुरही) फूंका जाएगा {10-अर्थात तुरही दूसरी बार फूंकी जाएगी, इसके मानव हेतु रही है जिसमें इसराफ़ील फूंक मारेंगे, यह वह देवदूत हैं जिनको तुरही में फूंक लगाने के लिए नियुक्त किया गया है जिसके पश्चात समस्त जीव क़बरों से उठ खड़े होंगे।} उसी दिन चीख़ होगी। {11-अर्थात जिस से सांसारिक जीवन के अंत में लोग मदहोश हो कर गिर पड़ेंगे और सबकी मृत्यु हो जाएगी यह मदहोशी उस समय उत्पन्न होगी जब सुर में सर्वप्रथम फूंक लगाया जाएगा, दो फूंक के मध्य में ४० वर्षों का अंतर होगा।} इसलिए तुम लोग उस दिन मुझ पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजा करो क्योंकि कि तुम्हारा दुरूद मुझ पर प्रस्तुत किया जाता है" {12-इसे निसई: (१३७३), अबू दाऊद: (१०४७), इब्ने माजा:(१०८५) और अहमद (४/८) ने विवरण किया है और अल्बानी ने सही़ अबी दाऊद में और मुसनद के शोधकर्ताओं ने (१६१६२) के अंतर्गत इसे सत्य कहा है।}

हे अल्लाह! तू अपने बंदे और रसूल (दास एवं संदेशवाहक) मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर कृपा एवं शांति भेज, तू उनके ख़ुलफ़ा (उत्तराधिकारीयों), ताबेईन (अनुयायियों) एवं क़यामत तक सत्य के साथ उनके समर्थन करने वालों से प्रसन्न हो जा!

हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान और प्रतिष्ठा प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर दे, तू अपने एवं इस्लाम के शत्रुओं को नाश कर दे, एवं अपने एकेश्वरवाद दासों की सहायता फ़रमा!

हे अल्लाह! हमारे देशों को शांतिपूर्ण बना दे, हमारे इमामों (मार्गदर्शकों) एवं हमारे शासकों को सुधार दे, उन्हें हिदायत का निर्देश प्रदान कर एवं हिदायत (सत्यमार्ग) पर चलने वाला बना दे!

हे अल्लाह! हमारे प्रति, इस्लाम एवं मुसलमानों के प्रति जो बुरा भाव रखता है तू उसे स्वयं ही में व्यस्त कर दे, एवं उसके छल-कपट को स्वयं उसके अपने प्राण के हानि का कारण बना दे!

हे अल्लाह! मुद्रास्फीति, महामारी, ब्याज, बलात्कार, भूकंप एवं आज़माइशों को हम से दूर कर दे एवं प्रत्येक प्रकार के आंतरिक एवं बाह्य फित्नों (उत्पीड़नों) को हमारे ऊपर से उठा ले, समान रूप से समस्त मुस्लिम देशों से एवं विशेष रूप से हमारे देश से!

हे दोनों जहां के पालनहार! हे अल्लाह! हमारे ऊपर से महामारी को दूर कर दे, हम मुसलमान हैं!

हे अल्लाह! समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने एवं अपने धर्म के उत्थान की तौफ़ीक़ प्रदान कर, उनको उनके प्रजा के प्रति रहमत (दया) का कारण बना दे!

ए हमारे रब! हमें दुनिया एवं आख़िरत में समस्त प्रकार की अच्छाई दे, और नरक की यातना से हमको मुक्ति प्रदान कर!

अल्लाह तआला न्याय का, अच्छाई का एवं परिजनों के साथ सुंदर व्यवहार का आदेश देता है, अशिष्ट गतिविधियों एवं क्रूरता व दुरुपयोग से रोकता है। वह स्वयं तुम्हें परामर्श देता है कि तुम नसीहत प्राप्त करो, इसलिए तुम अल्लाह का ज़िक्र (याद) करो वह तुम्हें याद करेगा उसकी नेमतों पर उसके आभारी रहो वह तुम्हें अधिक नेमतें (आशीर्वाद) देगा अल्लाह का ज़िक्र बहुत बड़ी चीज़ है, अल्लाह तुम्हारे समस्त कार्यों एवं गतिविधियों से अवगतहै!

शीर्षक: मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक अधिकार आप से प्रेम करना भी है

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

समस्त प्रकार की प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं, हम उसकी ही प्रशंसा करते हैं एवं उससे ही सहायता मांगते हैं, हम उससे अपने पापों की क्षमा चाहते हैं तथा उसके समक्ष तौबा करते हैं, हम अपने जान (आत्मा) की बुराईयों एवं अपने कर्मों की बुराईयों से अल्लाह की शरण चाहते हैं, जिसको अल्लाह हिदायत दे दे उसको कोई गुमराह (पथभ्रष्ट) नहीं कर सकता एवं जिसको दिग्भ्रमित कर दे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता, और मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा माबूद (उपास्य, पुज्य) नहीं, वह अकेला है उसका कोई साझी भी नहीं, और मैं गवाही देता हूं कि मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) उसके बंदे और रसूल (दास एवं संदेशवाहक) हैं।

इन समस्त प्रशंसाओं के पश्चात :

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह कि बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदतए)(नवाचार) है और हर बिदअत (नवोन्मेष) गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!

अल्लाह से डरो और उसका भय सदैव अपने हृदय में जीवित रखो उसकी आज्ञाकारीता करो और उसकी अवज्ञा से बचते रहो यह जान लो कि पैगंबर मोहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम से प्रेम और उनका आदर एक मुसलमान के ईमान की शर्त है.और धर्म का एक महत्वपूर्ण सुतून है.ऐसे अनेकों साक्ष्य हैं जो यह दर्शाते हैं कि पैगंबर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम करना वाजिब (अनिवार्य) है. उदाहरण स्वरूप अल्लाह ताला का यह कथन है:

﴿قُلْ إِن كَانَ ءَابَآؤُكُمْ وَأَبْنَآؤُكُمْ وَإِخْوَٰنُكُمْ وَأَزْوَٰجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَٰلٌ ٱقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَٰرَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَجِهَادٍ فِى سَبِيلِهِۦ فَتَرَبَّصُوا۟ حَتَّىٰ يَأْتِىَ ٱللَّهُ بِأَمْرِهِۦ ۗ وَٱللَّهُ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلْفَٰسِقِينَ ﴿٢٤﴾﴾ [سورة التوبة:٢٤]

अर्थात: "कह दो कि अगर तुम्हारे पिता और पुत्र और भाई और स्त्रियाँ और वंश के लोग और धन जो तुम कमाते हो और कारोबार जिसके बंद होने से डरते हो और मकानें हैं जिनको तुम पसंद करते हो अल्लाह और उसके पैग़म्बर से और अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने से तुम्हें अधिक प्रिय हो तो इंतज़ार करो यहां तक कि अल्लाह अपना आदेश (यातना) भेजे। और अल्लाह पाप करने वालों को हिदायत नहीं दिया करता।"

यह आयत (स्पष्ट) साक्ष्य है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहू अलैही वसल्लम से प्रेम वाजिब (अनिवार्य) है। तथा आप सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम इस प्रेम के पात्र हैं। और यही आयत मोमिनो को आपसे प्रेम के लिए प्रोत्साहित करने के लिए भी काफ़ी है। क्योंकि अल्लाह ने उस व्यक्ति को जिस का धन-दौलत, परिवार, उसके निकट अल्लाह और रसूल से अधिक प्रेमी हों उसे यह चेतावनी दी है कि: {इंतज़ार करो यहां तक की अल्लाह अपना आदेश (यातना) भेजे।} तथा इस आयत के अंत में उसे "फ़ासिक़" कहा है और यह बताया है कि वह भर्मितों में से है और यह हिदायत से वंचित है।

ए मोमिनो! पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम उसी समय पूरा हो सकता है जब आप से प्रेम को अपने प्राण, धन, एवं परिवार पर प्राथमिकता दी जाए। इसके बिना प्रेम और ईमान अधूरे रह जाते हैं इसका साक्ष्य क़ुरआन व हदीस से अंकित है। अल्लाह का कथन है:

﴿ٱلنَّبِىُّ أَوْلَىٰ بِٱلْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ﴾ [سورة الأحزاب:٦]

अर्थात: "पैग़म्बर मोमिनो पर उनकी प्राणों से भी अधिक अधिकार रखते हैं।" (इस हदीस को बुख़ारी (२३९९) एवं मुस्लिम(१६९१) ने अबू हुरैरा से वर्णन किया है एवं उपर्युक्त शब्द बुख़ारी में अंकित है।)

हदीस में इसका साक्ष्य आया है, जिसको पैग़म्बर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने यूं फ़रमाया:

عن أبي هريرة: ما مِن مُؤْمِنٍ إلّا وأنا أوْلى النّاسِ به في الدُّنْيا والآخِرَةِ، اقْرَؤُوا إنْ شِئْتُمْ: ﴿ٱلنَّبِيُّ أَوۡلَىٰ بِٱلۡمُؤۡمِنِينَ مِنۡ أَنفُسِهِمۡۖ﴾ (البخاري:4781)

अर्थात: "विश्व में कोई मोमिन ऐसा नहीं जिससे मेरा दुनिया व आख़िरत में सबसे अधिक निकट संबंध न हो, यदि तुम चाहते हो तो यह आयत पढ़ लो: पैग़म्बर मोमिनो से उनके प्राणों से अधिक निकट संबंध रखते हैं।"

आप सल्लल्लाहु अलैहि का कथन है:

أَنَا أَوْلَى بِكُلِّ مُؤْمِنٍ مِنْ نَفْسِهِ. (مسلم :867)

अर्थात: "मैं प्रत्येक मोमिन से स्वयं उससे अधिक प्रेम एवं अनुराग रखता हूं" (इस हदीस को मुस्लिम (८६७) ने जाबिर रज़ि अल्लाहु अन्हो से रिवायत किया है।)

पैग़म्बर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّى أَكُونَ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ وَالِدِهِ وَوَلَدِهِ، وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ. (البخاري:١٥)

अर्थात: "तुम में से कोई मोमिन में नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके अपने संतानों उसके माता पिता और तमाम लोगों से अधिक उसके निकट प्रिय ना हो जाऊं।(इस हदीस को बुख़ारी(१५) एवं मुस्लिम(४४) मैं अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हो से रिवायत किया है।)

"عن عَبْدِ اللَّهِ بْنَ هِشَامٍ ، قَالَ : كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ آخِذٌ بِيَدِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، فَقَالَ لَهُ عُمَرُ : يَا رَسُولَ اللَّهِ، لَأَنْتَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ إِلَّا مِنْ نَفْسِيا فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : " لَا، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ حَتَّى أَكُونَ أَحَبَّ إِلَيْكَ مِنْ نَفْسِكَ "ا فَقَالَ لَهُ عُمَرُ : فَإِنَّهُ الْآنَ، وَاللَّهِ لَأَنْتَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ نَفْسِيا فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : " الْآنَ يَا عُمَرُ". (البخاري 6632)

अर्थात: "बुख़ारी ने अब्दुल्लाह बिन हेशाम रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है, उल्लेख किया है कि हम पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम के साथ थे और ऊमर बिन ख़त्ताब रज़ि अल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़े हुए थे उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु ने उल्लेख किया: या रसूलुल्लाह! आप मुझे हर चीज़ से अधिक प्रिय हैं सिवाय मेरे प्राण के, पैग़म्बर सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: कि नहीं, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरा प्राण है, ईमान उस समय तक

पूरा नहीं हो सकता जब तक कि मैं तुम्हारे निकट तुम्हारे अपने प्राण से भी अधिक प्रिय ना हो जाऊं। उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया: तब अल्लाह की क़सम! अब आप मुझे मेरे अपने प्राण से भी अधिक प्रिय हैं। पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हां, उमर! अब तुम्हारा ईमान पूरा हुआ।" (4) (इस हदीस को बुख़ारी (६६३२) ने रेवायत किया है।)

عَنْ أَنَسٍ ، عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ : " ثَلَاثٌ مَنْ كُنَّ فِيهِ وَجَدَ حَلَاوَةَ الْإِيمَانِ : أَنْ يَكُونَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِمَّا سِوَاهُمَا، وَأَنْ يُحِبَّ الْمَرْءَ لَا يُحِبُّهُ إِلَّا لِلَّهِ، وَأَنْ يَكْرَهَ أَنْ يَعُودَ فِي الْكُفْرِ كَمَا يَكْرَهُ أَنْ يُقْذَفَ فِي النَّارِا (البخاري:١٦)

अर्थात: "अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

तीन चीज़ें जिसके अंदर होंगी उसको ईमान की मिठास मिल जाएगी:

१। जिस के निकट अल्लाह और उसके रसूल सबसे अधिक प्रिय हों।

२। जो मनुष्य किसी से सिर्फ़ अल्लाह के लिए प्रेम करे।

३। जो कुफ्र से निजात पाने के पश्चात दोबारा कुफ्र की तरफ़ लौटने को उसी प्रकार ना पसंद करे जिस प्रकार आग में गिरना ना पसंद करता है।"(इसे बुख़ारी (१६) एवं मुस्लिम (४३) ने रिवायत किया है, एवं उपर्युक्त शब्द मुस्लिम के हैं।)

ए मोमिनो! अल्लाह से प्रेम के साथ रसूल से प्रेम का उल्लेख क़ुरआन और ह़दीस में अनेक स्थानों पर आया है। जैसा कि अल्लाह का कथन है:

﴿أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ﴾ [سورة التوبة:٢٤]

अर्थात: "यदि यह तुम्हें अल्लाह से उसके रसूल से अधिक प्रिय है।"

यह रब्त (संबंध) इस बात का साक्ष्य है कि अल्लाह और रसूलुल्लाह के प्रेम के मध्य अधिक अटूट संबंध पाया जाता है, हर स्थिति में मूल रुपेन अल्लाह के प्रेम में रसूल का प्रेम शामिल है, लेकिन रसूल के प्रेम को अलग से उल्लेख करके यह संकेत दिया गया है कि रसूल से प्रेम का बड़ा महत्व है आप अल्लाह और रसूल के प्रेम के इस अटूट संबंध को समझें।

ए मुसलमानो! पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम का बहुत महत्व है,एक महत्व यह भी है कि जो व्यक्ति आपसे प्रेम करता है उसे आख़िरत में आपका संगत प्राप्त होगा।

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ السَّاعَةِ، فَقَالَ : مَتَى السَّاعَةُ ؟ قَالَ : " وَمَاذَا أَعْدَدْتَ لَهَا ؟ " قَالَ : لَا شَيْءَ، إِلَّا أَنِّي أُحِبُّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ! فَقَالَ : " أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ "! قَالَ أَنَسٌ : فَمَا فَرِحْنَا بِشَيْءٍ فَرَحَنَا بِقَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : " أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ "! قَالَ أَنَسٌ : فَأَنَا أُحِبُّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَأَبَا بَكْرٍ، وَعُمَرَ، وَأَرْجُو أَنْ أَكُونَ مَعَهُمْ بِحُبِّي إِيَّاهُمْ، وَإِنْ لَمْ أَعْمَلْ بِمِثْلِ أَعْمَالِهِمْ. (البخاري3688)

अर्थात: "अनस बिन (पुत्र) मालिक रज़ि अल्लाहु अंहु से मर्वी है: एक व्यक्ति ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा: क़यामत कब आएगी? आपने फ़रमाया: तुमने उसके लिए क्या तैयारी की है? उसने कहा: कुछ भी नहीं, मात्र यह कि मैं अल्लाह और रसूल से प्रेम करता हूं, आपने फ़रमाया: तू क़यामत के दिन उसी के साथ होगा जिससे तू प्रेम करता है। अनस रज़ि अल्लाहु अंहु का कथन है कि हम किसी बात से इतना खुश ना हुए जितना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस कथन "जिसको प्रेम करता है क़यामत के दिन उसी के साथ होगा"से हुए, अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु कहते हैं मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, ह़ज़रत अबू बक्र और ह़ज़रत उ़मर रज़ि अल्लाहु अनहुमा से प्रेम करता हूं,मुझे आशा है कि इस प्रेम के कारण मैं उनके साथ रहूंगा। यद्यापि मैंने उन के जैसे कार्य नहीं किये।"(6) (इसे बुख़ारी (३६८८) एवं मुस्लिम (२६३९) ने रिवायत किया है।)

अल्लाह तअ़ाला मुझे और आपको क़ुरआन की बरकत से मालामाल कर दे! मुझे और आपको भी उसकी आयतों और हिक्मत (बुद्धिमत्ता / नीति) पर आधारित नसीह़त से लाभ पहुंचाए। मैं यह बात कहते हुए अपने लिए और आप सबके लिए हर गुनाह (पाप) से अल्लाह की मगफ़िरत (क्षमा) चाहता करता हूं, आप भी अल्लाह से अपने पापों की क्षमा चाहें, नि: संदेह वह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला और बड़ा माफ़ करने वाला है।

द्वितीय उपदेश :

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد!

ए मोमिनो! प्रिय पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम करने के अनेक सहायक कारण हैं, उनमें से चार कारणों का उल्लेख यहां पर किया जाता है:

१। उम्मत के प्रति रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बलिदानों और आपके अनुराग एवं कोमलता को याद करना, क्योंकि आपने इस्लाम के प्रचार-प्रसार के मार्ग में कठिनाइयों का सामना किया है।

२। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम के भाव को शक्ति प्रदान करने वाले कारणों में से एक कारण यह भी है: यह याद रखा जाए कि उम्मत के उस दुनिया(आखेरत) में बर्बादी(हानि)के प्रति भी आप अत्यंत चिंतित थे जैसा कि अल्लाह का कथन है:

﴿لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِٱلْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢٨﴾﴾ [سورة التوبة:١٢٨]

अर्थात: "तुम्हारे पास एक ऐसे पैग़म्बर आए हैं जो तुम्हारे लिंग से हैं, जिनको तुम्हारे हानि से अति कष्ट होता है, और तुम्हारे लाभ के लिए सदैव उत्सुक रहते हैं,ईमान वालों (विश्वासियों) के साथ बड़े दयालु हैं।"

عَن أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ، أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ : " إِنَّمَا مَثَلِي وَمَثَلُ النَّاسِ كَمَثَلِ رَجُلٍ اسْتَوْقَدَ نَارًا، فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ جَعَلَ الْفَرَاشُ وَهَذِهِ الدَّوَابُّ الَّتِي تَقَعُ فِي النَّارِ يَقَعْنَ فِيهَا، فَجَعَلَ يَنْزِعُهُنَّ وَيَغْلِبْنَهُ فَيَقْتَحِمْنَ فِيهَا، فَأَنَا آخُذُ بِحُجَزِكُمْ عَنِ النَّارِ، وَهُمْ يَقْتَحِمُونَ فِيهَا ". (البخاري6483)

अर्थात: "हज़रत अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना: मेरे और लोगों का उदाहरण एक ऐसे व्यक्ति जैसा है जिस ने आग जलाई, जब उसके चारो ओर रौशनी हो गई तो कीड़े-मकोड़े उसमें गिरने लगे और आग जलाने वाला उन्हें उसमें से निकालने लगा, किंतु वे उसके नियंत्रण में नहीं आए, और आग में गिरते रहे,इसी प्रकार मैं तुम्हारी कमर को पकड़ कर आग से निकालता हूँ, और तुम हो कि उसी में गिरते जा रहे हो। (इस हदीस को इमाम बुख़ारी (६४८३) एवं इमाम मुस्लिम (२२८४) ने रिवायत किया है।)

३। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम को अति शक्ति प्रदान करने वाला तृतीय कारण यह है कि आप के गुणों एवं शिष्टाचारों से अवगत हुआ जाए, उनके गुणों में से यह भी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों को माफ़ किया करते थे, मक्का वालों ने आपको जादूगर, दीवाना और भर्मित व्यक्ति कहा, आपके घुटनों पर मारा, ऊंट के ओझ से आपका

गर्दन दबाया, आप के चौथे दांत शहीद (तोड़) कर दिए एवं आप के पवित्र चेहरे से रक्त बह पड़े, किंतु जब अल्लाह ने आपको मक्का वासियों पर प्रभुत्व प्रदान किया तो आपने मक्का वासियों के समस्त अत्याचारों एवं उत्पीड़नों के बावजूद उनसे कहा: ए मक्का वासियो तुम्हें क्या लगता है कि मैं तुम्हारे साथ क्या करूंगा? उन लोगों ने कहा: हमें तो आपसे भलाई की आशा है क्योंकि आप शरीफ़ भाई हैं और शरीफ़ भाई के पुत्र हैं, तो आपने फ़रमाया: जाओ तुम सब स्वतंत्र हो!

इस प्रकार आपने सब को स्वतंत्रता प्रदान किया जबकि अल्लाह ने आपको उन पर प्रभुत्व प्रदान किया था और उनके हत्या करने पर नियंत्रण दिया था और वे सब आपके लिए माल-ए-फ़ैय (वह माल जो विपक्षी दलों से युद्ध लड़े बिना प्राप्त हो) के रूप में थे इसीलिए तो मक्का वासियों को "तुलक़ा" (स्वतंत्र) का नाम दिया जाता है।(इसे इमाम तबरानी मैं अपनी तारीख़ में रिवायत किया है एवं फ़तह-ए-मक्का की ख़बर नक़ल की है। देखें: अज़रक़ी की अख़बार-ए- मक्का (२/१२१)।

४। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम को अति शक्ति प्रदान करने वाला अंतिम कारण यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवनी पर आधारित पुस्तकों को बार-बार पढ़ी जाए और उनका अध्ययन किया जाए और आपके जीवन शैली एवं दिनचर्या के कार्यों को याद किया जाए, आपके जिहाद एवं इस्लामी समाज के निर्माण में आपके चेष्टाओं को याद किया जाए।

ए मुसलमानो! रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम को अपना धन-मन एवं परिवार पर प्राथमिकता देने के विषय में हमारे पूर्वजों ने उल्लेखनीय उदाहरण स्थापित की हैं। अबू सुफ़ियान बिन (पुत्र) हरब - जिस समय वह बहुदेववादी थे- ने ज़ैद बिन (पुत्र) दसना रहमतुल्लाहि अलैहि से पूछा, जिस समय उनको मक्का वालों ने हत्या करने के लिए हरम से निकाला: ज़ैद तुमको अल्लाह का वास्ता देकर पूछता हूं: क्या तुम्हें यह बात पसंद है कि इस समय तुम्हारे स्थान पर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हों और हम उनकी हत्या कर दें और तुम अपने परिवार के साथ (सुरक्षित) रहो?

उन्होंने उत्तर दिया: अल्लाह की क़सम! मैं यह कभी नहीं पसंद करूंगा कि मेरे स्थान पर मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हों और उन्हें कोई कांटा भी चूभे जिससे उनको कष्ट हो और मैं अपने परिवार वालों के साथ बैठा रहूं।

अबू सुफ़ियान ने कहा: मैंने कभी किसी को इतना प्रेम करते नहीं देखा जितना मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा (साथी गण) मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से करते हैं। (देखें: इब्न-ए-हिशाम की अ-स्सीरतु-न्नबवी, इन्होंने योमुर्रजी सं०: ३ हिजरी के वर्णन में इसका उल्लेख किया है और इसका संबंध इसहाक़ से बताया है।)

ए मोमिनो! शैतान कुछ लोगों को इस प्रकार भी अपने जाल में फ़ंसाता है कि वह उनके समक्ष ऐसे कार्यों को सुंदर रूप से प्रस्तुत करता है जो धर्म का भाग ही नहीं हो, नाही रसूल सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने उन्हें किया हो और ना ही सहाबा और तीनों क़रणों (वंश) ने ऐसा कुछ किया हो, साथ ही शैतान उन्हें झूठे भ्रम में भी डाल देता हो कि ऐसा करना रसूल सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम से प्रेम करना है इसका उदाहरण वह कार्य भी है जिसे "ईद मिलदुन्नबी" कहा जाता है, जो कि ग़लत है इसलिए कि प्रेम का मतलब है प्रेमि का आज्ञा मानना ,उसकी समस्त बातों को मानना और उसके धर्म में कटौती-बढ़ोती ना करना। हम यह जानते हैं कि "ईद मिलादुन्नबी" प्रेम का भाग नहीं है बल्कि इबादत के नाम पर धर्म में एक नव-अविष्कार है, और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है:

مَنْ أَحْدَثَ فِي أَمْرِنَا هَذَا مَا لَيْسَ فِيهِ فَهُوَ رَدٌّ. (البخاري2697)

अर्थात: "जिस व्यक्ति ने हमारे इस धर्म में किसी ऐसी नयी चीज़ का आविष्कार किया जो इस धर्म का भाग नहीं है तो वह बहिष्कृत माना जाएगा। (इसे बुख़ारी (२६९७) एवं मुस्लिम (१७१८) ने आयशा रज़ि अल्लाहु अन्हां से रिवायत किया है।)

अर्थात वह अ़मल (कार्य) कर्ता की ओर लौटा दिया जाता है और स्वीकार नहीं किया जाता।

आप यह याद रखें -अल्लाह आप पर अपनी कृपा बनाए रखे- अल्लाह ने आपको बहुत बड़े कार्य का आदेश दिया है अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात: " अल्लाह तआला एवं उसके(फरिश्ते) देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं ए इमान वालो! तुम भी उन पर दुरुद (अभिवादन) भेजो एवं खूब सलाम भेजते रहो।"

पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वयं अपनी उम्मती (अनुयायियों) को शुक्रवार को अपने उपर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजने पर प्रोत्साहित करते हुए फ़रमाया: "तुम्हारे पवित्र दिनों में से एक शुक्रवार का दिन है इसलिए उस दिन मेरे ऊपर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजो, क्योंकि तुम्हारा दुरुद व सलाम मेरे ऊपर प्रस्तुत किया जाता है।"

अल्लाह तू अपने बंदे व रसूल (दास एवं संदेशवाहक) मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दया, कृपा एवं शांति भेज तू उनके ख़ुलफ़ा (मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उत्तराधिकारीयों) ताबेईन (समर्थक) एवं क़यामत तक आने वाले समस्त आज्ञाकार्यों से प्रसन्न हो जा!

ए अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर! बहुवाद, एवं बहुवादियों को अपमानित कर दे! तू अपने एवं इस्लाम के शत्रुओं एवं विरोधीयों को नाश कर दे! तू अपने मुवह्हिद बंदों (अव्दैतवादियों) को सहायता प्रदान कर!

ए अल्लाह! तू हमारे देशों को शांतिपूर्ण बना दे, हमारे इमामों (प्रतिनिधियों), शासकों को सुधार दे, उन्हें हिदायत (सही मार्ग) का निर्देश दे, और हिदायत पर चलने वाला बना, ए अल्लाह! तू समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने एवं अपने धर्म के उत्थान की तौफ़ीक़ प्रदान कर, उनको उनके प्रजा के लिए रह़मत (दया) का कारण बना दे! ए अल्लाह हमारे प्रति इस्लाम और मुसलमानों के प्रति जो बुराई का भाव रखते हैं, उसे तू अपनी ज़ात में व्यस्त कर दे और उसके फ़रेब व चाल को उलटा उसके के लिए वबाल बना दे!

ए अल्लाह! मुद्रास्फीति, महामारी, ब्याज बलात्कार, भूकंप एवं आज़माइशों को हमसे दूर कर दे और प्रत्येक प्रकार के आंतरिक एवं बाह्य फ़ित्नों (उत्पीड़नों) को हमारे ऊपर से उठा ले सामान्य रूप से समस्त मुस्लिम देशों से और विशेष रुप से हमारे देश से! ए दोनों जहां के पालनहार! ए अल्लाह! हमारे ऊपर से महामारी को दूर कर दे, नि: संदेह हम मुसलमान हैं।

ए हमारे रब! हमें दुनिया और आख़िरत में हर प्रकार की अच्छाई दे, और नरक की यातना से हम को मुक्ति प्रदान कर!

ए अल्लाह के बंदो (दासो)!

नि: संदेह अल्लाह तआला न्याय का, अच्छाई का, और परिजनों के साथ उत्तम व्यवहार करने का आदेश देता है, और असभ्यता के कार्यों, अशिष्ट गतिविधियों एवं क्रुरता व दुरुपयोग से रोकता है। वह स्वयं तुम्हें परामर्श देता है कि तुम नसीहत प्राप्त करो इसलिए तुम अल्लाह का ज़िक्र(याद) करो वह तुम्हें याद करेगा उसकी नेमतों पर उसके आभारी रहो वह तुम्हें अधिक नेमतें (आशीर्वाद) देगा, अल्लाह को याद करना बहुत बड़ी बात है तुम जो भी करते हो वह तुम्हारे समस्त गतिविधियों से अवगत है।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين.

शीर्षक: मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक अधिकार आप की अवज्ञा से बचना भी है

إن الحمد لله، نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، ومن سيئات أعمالنا من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدًا عبده ورسوله.

प्रशंसाओं के पश्चात!

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मार्ग है। दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त (नवाचार) हैं और प्रत्येक बिदअ़त (नवोन्मेष) गुमराही है और हर गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ऐ मुसलमानो! अल्लाह तआ़ला से डरो उसकी आज्ञाकारीता करो उसकी अवज्ञा से दूर रहो जान लो कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक अधिकार यह भी है कि आपकी अवज्ञा से बचा जाए अल्लाह के इस कथन में आपकी अवज्ञा से बचने का निर्देश है:

﴿وَمَن يَعۡصِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُۥ يُدۡخِلۡهُ نَارًا خَٰلِدٗا فِيهَا وَلَهُۥ عَذَابٞ مُّهِينٞ ١٤﴾ [سورة النساء:١٤]

अर्थात: "जो व्यक्ति अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अवज्ञा करे और उसके निर्धारित सीमाओं से आगे निकले उसे वह नरक में डाल देगा जिस में वह सदैव रहेगा इन्हीं लोगों के लिए अपमान जनक यातना है।"

अल्लाह के इस कथन में भी यही निर्देश है:

﴿وَمَن يَعۡصِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ فَقَدۡ ضَلَّ ضَلَٰلٗا مُّبِينٗا﴾ [سورة الأحزاب:٣٦]

अर्थात: "(याद रखो!) जो भी अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करेगा वह स्पष्ट गुमराही में पड़ेगा।"

अल्लाह ने अधिक फ़रमाया:

﴿وَيَوْمَ يَعَضُّ ٱلظَّالِمُ عَلَىٰ يَدَيْهِ يَقُولُ يَٰلَيْتَنِى ٱتَّخَذْتُ مَعَ ٱلرَّسُولِ سَبِيلًا ﴿٢٧﴾ يَٰوَيْلَتَىٰ لَيْتَنِى لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيلًا ﴿٢٨﴾ لَّقَدْ أَضَلَّنِى عَنِ ٱلذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَآءَنِى ۗ وَكَانَ ٱلشَّيْطَٰنُ لِلْإِنسَٰنِ خَذُولًا ﴿٢٩﴾﴾ [سورة الفرقان: ٢٧-٢٩]

अर्थात: "उस दिन ज़ालिम (अत्याचारी) अपने हाथ चबाएगा कहेगा: ए काश! मैंने रसूल के साथ मार्ग अपनाया होता। (२७) हाय मेरा दुर्भाग्य! काश! मैंने अमुक व्यक्ति को मित्र ना बनाया होता। (२८) उसने मुझे भटका कर अनुस्मृति से विमुख कर दिया, इसके पश्चात कि वह मेरे पास आ चुकी थी। शैतान तो समय पर मनुष्य का साथ छोड़ ही देता है।

अल्लाह के इस कथन को भी देखें:

﴿وَمَن يُشَاقِقِ ٱلرَّسُولَ مِنۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ ٱلْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ ٱلْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِۦ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِۦ جَهَنَّمَ ۖ وَسَآءَتْ مَصِيرًا ﴿١١٥﴾﴾ [سورة النساء:١١٥]

अर्थात: "और जो व्यक्ति इसके पश्चात भी कि, मार्गदर्शन खुल कर उसके सामने आ गया है, रसूल के मार्ग के अतिरिक्त किसी और मार्ग पर चलेगा तो उसे हम उसी पर चलने देंगे, जिसको उसने अपनाया होगा, और उसे नरक में झोंक देंगे, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।"

अल्लाह ने अधिक फ़रमाया:

﴿فَلْيَحْذَرِ ٱلَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِۦٓ أَن تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾﴾ [سورة النور:٦٣]

अर्थात: "अतः उन को जो उसके आदेश की अवहेलना करते हैं डरना चाहिए कि कहीं ऐसा ना हो कि उन पर कोई आज़माइश आ पड़े अथवा उन पर कोई दुखद यातना आ जाए।"

इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह अल्लाह के इस कथन:

﴿فَلْيَحْذَرِ ٱلَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِۦٓ أَن تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾﴾ [سورة النور:٦٣]

का उल्लेख करते हुए लिखते हैं: "अर्थात: (जो व्यक्ति) रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेश का अवज्ञा करते हैं, आप के आदेश का मतलब आप का मार्ग है, आप का शैली, आप की सुन्नत एवं आप की लाई हुई शरीअ़त (इस्लाम धर्म) है, समस्त कार्यों एवं कथनों को

आपके कार्य एवं कथन के आधार पर ही तौला जाएगा, जो आपकी सुन्नत के अनुसार होगा उसे स्वीकार किया जाएगा और जो उसके विरुद्ध होगा उसे उसके कहने या करने वाले पर लौटा दिया जाएगा। जैसाकि सही़हैन (बुख़ारी एवं मुस्लिम) आदि में विवरित है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

अर्थातः "जो व्यक्ति ऐसा काम करे जिस का आदेश हम ने नहीं दिया तो वह निरस्त है।"

अर्थात: जो लोग आंतरिक अथवा बाह्य रूप से रसूल की लाई हुई शरिअ़त (इस्लाम धर्म) का उल्लंघन करते हैं उन्हें इस बात से डरना चाहिए कि कहीं उन्हें उत्पीड़न ना आ पकड़े, अर्थात: उनके हृदयों में कुफ़्र (नास्तिकता) अथवा मुनाफ़िक़त (पाखंडी) अथवा बिदअत (नवोन्मेष) ना जन्मले ले, अथवा उन्हें दर्दनाक यातना ना आ पकड़े, अर्थात: दुनिया में हत्या एवं लूटपाट, दंड हिरासत आदि रूप के उत्पीड़नों से जूझना ना पड़े।"

मामूली तसर्रुफ़ (उलट फेर) के साथ उनका कथन समाप्त हुआ।

ए मुसलमानो! ह़दीस में भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विरोध से रोका गया है, जैसाकी ह़दीस में वर्णन है:

अर्थात: " जब मैं तुम्हे किसी चीज़ से रोकूं तो तुम उससे रुक जाओ और जब मैं तुम्हें किसी बात का आदेश दूं तो तुम अपनी शक्ति के अनुसार उसे पूरा करो।"

1{इसे बुख़ारी: (७२८८), मुस्लिम: (१३३७) ने अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।}

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अवज्ञा दुनिया व आख़िरत में यातना का कारण है, जैसाकि सलमा बिन (पुत्र) अलाकू कि सत्य ह़दीस है:

अर्थात: "एक व्यक्ति ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बाएं हाथ से खाया आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: दाएं हाथ से खाओ, वह बोला: मुझ से नहीं हो सकता।

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह करे तुझ से ना हो सके! उसने अकड़ से ऐसा किया था, वह उस हाथ को मुंह तक ना उठा सका।"

2{इसे मुस्लिम: (२०२१) ने रिवायत किया है।}

सईद बिन (पुत्र) मुसैय्यिब बिन ह़ज़्न 3{ह़ज़्न) "ज़" के सुकून (स्थिरता) के साथ कठोरता के अर्थ में है, इसका विपरीत (आसान) अर्थात सुविधा है, ह़दीस में आया है:

अर्थात: "हे अल्लाह! कोई चीज़ आसान नहीं है, मगर जिसको तू आसान कर दे, और तू जब चाहता है कठिन चीज़ को भी आसान कर देता है।"

इसे इब्न-ए-हिब्बान: ९७४ ने अपने सही में रिवायत किया है, और अल्लामा अल्बानी ने इसको अल-सिलसिलह अल-सहीहह में २८८६ के अंतर्गत विवरण किया है।} अपने पिता से रिवायत करते हैं कि उनके दादा ह़ज़्न पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा कि तुम्हारा नाम क्याहै? उन्होंने कहा कि मेरा नाम "ह़ज़्न" है, पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम आसान हो, उन्होंने कहा कि मैं अपने पिता का रखा हुआ नाम नहीं बदल लूंगा।

सईद बिन (पुत्र) मुसैय्यिब ने कहा कि उसके बाद अब तक हमारे परिवार में कठोरता एवं मुसीबत ही रही।"

4{इसे बुख़ारी ६१९० ने वर्णन किया है।}

अबू ह़ुमै दअल-साइदी रज़ि अल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हमने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ तबूक के युद्ध में भाग लिया, जब हम तबूक के स्थान पर पहुंचे तो आपने फ़रमाया:

अर्थात: "आज रात बहुत तेज़ आंधी चलेगी, इसलिए कोई व्यक्ति खड़ा ना रहे, एवं जिस के पास ऊँट हों वह उसे बांध दे, इसलिए हमने ऊँट बांध लिए, और आंधी बहुत तेज़ आई, एक व्यक्ति खड़ा हो गया था तो हवा ने उसे "तै पहाङ" पर जा फेंका।"

{इसे बुख़ारी: (१४८२), एवं मुस्लिम: (१३९२) ने वर्णन किया है।}

अर्थात: "अब्दुल्लाह बिन (पुत्र) अब्बास रज़िअल्लाहु अन्हुमा ने उल्लेख किया है कि पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक आ़राबी (ग्रामीण) कि बीमार पुर्सी के लिए गए, पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब भी किसी रोगी की बीमार पुर्सी के लिए जाते तो फ़रमाते:

कोई बात नहीं, इन शा अल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा) तो यह बुख़ार पापों को धो देगा। पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस देहाती से भी यही कहा:

कोई बात नहीं, इन शा अल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा) तो यह बुख़ार पापों को धो देगा। उसने कहा: आप कहते हैं, पापों को धोने वाला है बिल्कुल नहीं यह तो अति तीव्र रूप का बुख़ार है अथवा (कथा वाचक ने) "तसूर" कहा (दोनों का अर्थ एक ही है।) कि बुख़ार एक अति बूढ़े व्यक्ति पर जोश मार रहा है जो क़ब्र तक पहुंचाए बिना नहीं छोड़ेगा। पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अच्छा तो फिर ऐसा ही होगा।"

6{इसे बुख़ारी: (३६१६) ने वर्णन किया है।}

ए मुसलमानो! पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अवज्ञा चार प्रकार के हैं:

(१) सग़ीरा (छोटा)

(२) कबीरा (बड़ा)

(३) बिदअत (नवाचार)

(४) कुफ़्र (नास्तिकता)

◆ कबीरा का अर्थ: वह पाप है जिसके करने वाले के प्रति लानत, (अभिशाप) अथवा अल्लाह का क्रोध, अथवा नरक की चेतावनी, एवं दंड का उल्लेख है। कबीरा (बड़े पाप) का अपराधी आख़िरत में अल्लाह की मशीय्यत (चाहत) के अंतर्गत होगा।

यदि अल्लाह चाहेगा तो उसे यातना देगा एवं चाहेगा तो छमा प्रदान करेगा। इसलिए कबाएर (बड़े पापों से बचना अति आवश्यक है।

अल्लाह का कथन है:

﴿إِن تَجْتَنِبُواْ كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُم مُّدْخَلًا كَرِيمًا ﴿٣١﴾﴾
[سورة النساء:٣١]

अर्थात: "यदि तुम उन बड़े गुनाहों से बचते रहे जिन से तुम्हें रोका जा रहा है तो हम तुम्हारे बुराइयों को तुम से दूर कर देंगे और तुम्हें प्रतिष्ठित स्थान में प्रवेश कराएंगे।"

चोरी, शराब पीना, सूदख़ोरी, बलात्कार, संबंध तोड़ना एवं महिलाओं की बेपर्दगी जैसे कार्य बड़े पापों में शामिल हैं। इन समस्त कार्यों के प्रति सांसारिक अथवा उख़र विदंड का उल्लेख आया है।

◆ सग़ीरा (छोटे पाप) का मतलब हर वह पाप है जिसके प्रति ना तो सांसारिक दंड का उल्लेख है और ना ही आख़िरत में कोई विशेष दंड का उल्लेख आया है। 7{देखें: मजमूअ-तुल-फ़तावा इब्न-ए-तैमिया, ११/६५०६५१, इब्न-ए-तैमिया इस कथन को इब्न-ए-अब्बास, अबू ओबैद अल-क़ासिम बिन (पुत्र) सलाम एवं इमाम अहमद बिन हंबल आदि की ओर संबंधित किया है, और कहा है कि यह सर्वोत्तम कथन है।} किंतु इस बात को समझना भी अवश्य है कि जब सग़ीरा (छोटे पापों) को कोई व्यक्ति लगातार करे और उस से तौबा ना करे तो वह कबीरा (बड़ा पाप) में परिवर्तन हो जाता है।

इब्ने मसऊद रज़िअल्लाहु अन्हु से वार्णित है कि पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

अर्थात: "छोटे-छोटे पापों से बचो क्योंकि वह जब मनुष्य के अंदर जमा हो जाते हैं तो उसे नष्ट कर देते हैं। पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन छोटे-छोटे पापों का उदाहरण उस समुदाय से दिया जो किसी रेगिस्तान में डेरा डाले और जब उनके खाना बनाने का समय हो जाए तो (उनमें) से कोई व्यक्ति (लकड़ी की खोज) में निकल पड़े, जब लकड़ी ले आए और दूसरा व्यक्ति भी लकड़ी ले कर आए यहां तक कि बहुत सी लकड़ियां जमा हो जाएं उसके पश्चात वह उन लकड़ियों को जला कर आग जलाए और उस से भोजन तैयार कर ले।" 8{इसे इमाम अहमद (०१/४०२-४०३) ने विवरण किया है और "अल-मुसनद" के शोधकर्ताओं ने हसन लेग़ैरिही का स्थान दिया है।}

इब्ने मसऊद का कथन समाप्त हुआ।

यही कारण है कि इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहू अन्हूमा ने सत्य रिवायत (कथन) में फ़रमाया: लगातार किया जाने वाला कोई भी पाप सग़ीरा (छोटा) नहीं रहता, और तौबा के साथ किया जाने वाला कोई भी पाप कबीरा (बड़ा) नहीं रहता। इसे इब्ने अब्बास ने विवरण किया है।

◆ रही बात कुफ़्र (नास्तिकता) की तो यह नवाक़िज़-ए-इस्लाम (इस्लाम विरोधी) कोई भी कार्य करने से हो जाता है, जैसे अल्लाह के अतिरिक्त की पूजा करना। उदाहरण स्वरूप अंबिया

व सालेहीन की अथवा उनके क़ब्रों की पूजा करना, अथवा अल्लाह व रसूल, अथवा अल्लाह के धर्म को अपशब्द कहना, अथवा शरीअ़त इस्लाम धर्म के किसी भाग का मज़ाक़ बनाना, अथवा धर्म के किसी प्रसिद्ध चीज़ का खंडन करना, उदाहरण स्वरूप अल्लाह पर ईमान लाने का खंडन करना, अथवा शराब की निषेधता एवं अवैधता का खंडन करना, अथवा यह विश्वास रखना की पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अतिरिक्त किसी और का विधि आपके शैली से उत्तम है, अथवा जादू करना, कफ़िरों के धर्म में रुचि दिखाते हुए मोमिनों (विश्वासियों) के विरुद्ध उनकी सहायता करना।

कुफ़्र (नास्तिकता) में पड़ जाने के अनेक कारण हैं जिन्हें फ़ोक़्हा (विधिवेत्ताओं) ने फिक़्ह की पुस्तकों में बाबुल-मुरतद (अध्याय स्वधर्म त्यागी) के अंतर्गत उल्लेख किया है हमने केवल कुछ उदाहरणों का उल्लेख किया है।

◆ जहां तक बिदअ़त (नवाचार) की बात है तो इबतेदा (जिससे बिदअ़त शब्द व्युत्पन्न है) का शब्दकोश परिभाषा अविष्कार करने एवं जन्म देने के हैं एवं इसकी शरई (धार्मिक) परिभाषा यह है कि धर्म में कोई ऐसी पूजा अथवा आस्था का आविष्कार करना जिसका धर्म में कोई प्रमाण ना हो। बिदअ़त (नवोन्मेष) का संबंध आस्था से भी है एवं कार्य अर्थात पूजा से भी है।

पूजा में नवाचार का उदाहरण: नमाज़ों के पश्चात सामूहिक रूप से तस्बीह़ के वाक्यों का पाठन करना, जुमा की नमाज़ के पश्चात ज़ोहर की नमाज़ पढ़ना, ईद मिलादुन्नबी मनाना, इसरा व मेराज की रात का उत्सव मनाना, एवं इसी प्रकार के अन्य कार्यों को करना जिन्हें कुछ लोग अल्लाह के निकटता प्राप्त करने के भरम में करते हैं जबकि इस प्रकार की पूजा अल्लाह से दूर कर देती हैं क्योंकि अल्लाह ने उन्हें प्रमाणित नहीं किया है बल्कि पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस प्रकार के कार्य को बिदअ़त (नवाचार) का नाम दिया है जैसाकि ह़दीस में आया है:

अर्थात: "प्रत्येक बिदअ़त (नवाचार) गुमराही है।"

9{इसे मुस्लिम: (८६७) ने जाबिर रज़िअल्लाहु अन्हु से और अह़मद: ०४/१२६-१२७ आदि ने इरबाज़ बिन सारिया रज़िअल्लाहु अन्हु से वर्णन किया है और अल्बानी रहिमहुल्लाह ने इसे सत्य कहा है।}

अल्लाह तआला पवित्र क़ुरआन को मेरे और आपके लिए बा-बरकत (सौभाग्यशाली) बनाए, मुझे और आपको उसकी आयतों एवं हिकमत (प्रतिज्ञा) पर आधारित परामर्शों से लाभ पहुंचाए। मैं अपनी यह बात कहते हुए अपने लिए एवं आप सबके लिए अल्लाह से क्षमा की दुआ करता हूं, आप भी उसे क्षमा प्राप्त करें, नि: संदेह वह अति तौबा स्वीकार करने वाला है और अति क्षमा प्रदान करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى أما بعد !

ए अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरें और आप जान लें कि अल्लाह तआला ने आपको एक बड़ी चीज़ का आदेश दिया है अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात: "अल्लाह तआला एवं उसके देवदूत उस पैग़ंबर पर रहमत (कृपा) भेजते हैं ए विशवासियो! तुम भी उन पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजते रहा करो।"

पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है:

अर्थात: "तुम्हारे पवित्र दिनों में से शुक्रवार का दिन है उसी दिन आदम (मनु) का जन्म हुआ उसी दिन उनकी रूह (आत्मा) निकाली गई उसी दिन सूर (तुरही) फूंका जाएगा 11{अर्थात तुरही दूसरी बार फूंका जाएगा माने वह तुरही है जिस में इसराफ़ील फूंक मारेंगे, यह वह देवदूत हैं जिनको तुरही में फूंक लगाने का आदेश दिया गया है जिसके पश्चात समस्त जीव क़बरों से उठ खड़े हो जाएंगे।} उसी दिन चीख़ होगी। 12{अर्थात: जिस से सांसारिक जीवन के अंत में लोग मदहोश हो कर गिर पड़ेंगे और समस्त जीव की मृत्यु हो जाएगी। यह मदहोशी उस समय उत्पन्न होगी जब सुर (तुरही) में सर्वप्रथम फूंक लगाया जाएगा ०२फुंक के मध्य में ४० वर्षों का अंतर होगा।}

इसीलिए उस दिन तुम लोग मुझ पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजा करो, क्योंकि तुम्हारा दुरूद मुझ पर प्रस्तुत किया जाता है।

हे अल्लाह तू अपने बंदे व रसूल (दास एवं संदेशवाहक) मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दया, कृपा एवं शांति भेज, तू उनके ख़ुलफ़ा (मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उत्तराधिकारीयों) ताबेईन (समर्थक) एवं क़यामत तक आने वाले समस्त आज्ञाकार्यों से प्रसन्न हो जा!

हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित कर दे, तू अपने एवं इस्लाम के शत्रुओं एवं विरोधीयों को नाश कर दे, तू अपने मुवह़्हिद बंदों (अव्दैतवादियों) को सहायता प्रदान कर। हे अल्लाह! तू हमारे देशों को शांतिपूर्ण बना दे, हमारे इमामों (प्रतिनिधियों), शासकों को सुधार दे, उन्हें हिदायत (सही मार्ग) का निर्देश दे, और हिदायत पर चलने वाला बना दे।

हे अल्लाह ! जो हमारे प्रति, इस्लाम और मुसलमानों के प्रति बुराई का भाव रखते हैं, उसे तू अपनी ही ज़ात में व्यस्त कर दे और उसके फ़रेब व चाल को उलटा उसके लिए वबाल बना दे!

हे अल्लाह! मुद्रास्फीति, महामारी, ब्याज बलात्कार, भूकंप एवं आज़माइशों को हम से दूर कर दे और प्रत्येक प्रकार के आंतरिक एवं बाह्य फ़ित्नों (उत्पीड़नों) को हमारे ऊपर से उठा ले, सामान्य रूप से समस्त मुस्लिम देशों से और विशेष रूप से हमारे देशों से ऐ दोनों जहां के पालनहार! हे अल्लाह! हमारे ऊपर से महामारी को दूर कर दे, नि: संदेह हम मुसलमान हैं।

हे अल्लाह! तू समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने एवं अपने धर्म के उत्थान की तौफ़ीक़ प्रदान कर, उनको उनके प्रजा के लिए रह़मत (दया) का कारण बना दे!

हे हमारे रब! हमें दुनिया और आख़िरत में समस्त प्रकार की अच्छाई दे, और नरक की यातना से हम को मुक्ति प्रदान कर!

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين

मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक अधिकार यह है कि आपके सहाबा का सम्मान किया जाए

إن الحمد لله، نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، ومن سيئات أعمالنا من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدًا عبده ورسوله.

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह ताला की है, एवं सबसे उत्तम सिद्धांत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम का सिद्धांत है और सब से घृणात्मक चीज धर्म में अविष्कार की हुई बिदअतें (नवाचार) हैं। हर नवोन्मेष गुमराही है, हर गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!

अल्लाह त-आला से भय करो एवं उसी का डर सदैव अपने ह्रदय में जीवित रखो। उसी की आज्ञाकारीता करो एवं उस के आज्ञा का उल्लंघन करने से बचो। ध्यान रखो कि अहले सुन्नत वल जमात के बुनियादी धारणाओं में यह बात सम्मिलित है कि उनके सहाबियों (साथियों) की प्रतिष्ठा का ध्यान रखा जाए, एवं उनका सम्मान किया जाए, उनके साथ उत्तम व्यवहार किया जाए, उनके अधिकारों का ज्ञात रखा जाए, उनकी आज्ञाकारीता की जाए, उनकी प्रशंसा उत्तम रूप में की जाए उनके क्षमा के लिए प्रार्थना की जाए उनके व्यक्तिगत झगड़ों के प्रति चुपचाप रहा जाए उनके शत्रुओं से शत्रुता रखी जाए उनमें से किसी के प्रति जो नकारात्मक संदेश फैले हुए हैं जिन्हें कुछ इतिहासकारों, अज्ञानी कथावाचकों, गुमराह शीओं एवं नवोन्मेष के पालन करने वालों ने प्रतिलिपि की है, उन से दूर रहा जाए।

क्योंकि यह लोग इसी प्रकार के संदेशों को फैलाने की योग्यता रखते हैं। किसी सहाबी को घृणात्मक रूप से याद ना किया जाए, नाही उनके किसी कार्य का उल्लंघन किया जाए, बल्कि उनके सकारात्मक रूपों को उजागर किया जाए एवं जो भी उनकी अच्छाइयां हैं उनकी प्रशंसा की जाएं, इसके अतिरिक्त जो भी अनुपयुक्त चीजें हैं उन पर चुप रहा जाए।

शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमिया रहमतुल्लाही अलैह का वर्णन है: "अहले सुन्नत वल जमात के सिद्धांतों में से है कि उनके हृदय एवं जीभ सहाबा के प्रति पूर्णतः शुद्ध होती हैं। जैसा कि अल्लाह ताला ने इनके बारे में इस आयते करीमा में वर्णन किया:

﴿وَالَّذِينَ جَاءُو مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝١٠﴾ [سورة الحشر:١٠]

अर्थात: "उनके लिए जो इन के पश्चात आएं जो कहेंगे कि ए हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे एवं हमारे उन भाइयों को भी जो हम से पहले ईमान स्वीकार चुके हैं, और इमान रखने वालों की ओर से हमारे हृदय में द्वेष (शत्रुता) ना डाल, ए हमारे रब! नि: संदेह तू बहुत बड़ा दयालु एवं कृपालु है।"

ए मोमिनो! सहाबा को अन्य व्यक्तियों पर यह श्रेष्ठता प्राप्त है कि अल्लाह ताला ने पूर्ण मनुष्य में उन्हें अपने दूत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम का संगी बनाया, उन्हें सांसारिक जीवन में आप का दर्शन करके मन को शांति प्रदान करने, आपके मुंह से पवित्र हदीस सुनने, आपसे धार्मिक रेखाओं को जानने, एवं आप जिन प्रकाश एवं निर्देश के साथ भेजे गए उन्हें पूर्ण रूप से संसार के कोने कोने तक पहुंचाने का काम दे कर विशेष सम्मान प्रदान किया।

इस कारणवश आप की संगत में रहने, आपके साथ जिहाद करने, इस्लाम के प्रचार प्रसार करने एवं अन्य मनुष्यों को इसकी ओर निमंत्रण देने के कारण उन्हें बड़ी सफलता दी गई इन के पश्चात आने वालों को जितना सवाब मिलेगा उन्हें भी उतना ही सवाब मिलेगा क्योंकि उन्होंने ही इनको सत्य का मार्ग दर्शन कराया है और यह बात सभी जानते हैं कि जो व्यक्ति सच एवं सीधे मार्ग का निर्देश कराता है या उसकी ओर लोगों को निमंत्रण देता है उसे उतना ही सवाब मिलता है जितना उस पर चलने वाले को मिलता है और इस सवाब के कारण उन आज्ञाकारीयों के सवाब में कोई कटौती नहीं होती है।

ए मोमिनो! अल्लाह ताला ने सहाबा की बहुत अधिक प्रशंसा की है एवं उनके गुणों को बयान किया है तौरात, इंजील एवं क़ुरआन में उनको उच्च स्थान प्रदान किया है, उनको बड़ी सफलता तथा माफ़ी का विश्वास दिलाया है, अल्लाह ताला का वर्णन है:

﴿مُّحَمَّدٌ رَّسُولُ ٱللَّهِۚ وَٱلَّذِينَ مَعَهُۥٓ أَشِدَّآءُ عَلَى ٱلۡكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيۡنَهُمۡۖ تَرَىٰهُمۡ رُكَّعٗا سُجَّدٗا يَبۡتَغُونَ فَضۡلٗا مِّنَ ٱللَّهِ وَرِضۡوَٰنٗاۖ سِيمَاهُمۡ فِي وُجُوهِهِم مِّنۡ أَثَرِ ٱلسُّجُودِۚ ذَٰلِكَ مَثَلُهُمۡ فِي ٱلتَّوۡرَىٰةِۚ وَمَثَلُهُمۡ فِي ٱلۡإِنجِيلِ كَزَرۡعٍ أَخۡرَجَ شَطۡـَٔهُۥ فَـَٔازَرَهُۥ فَٱسۡتَغۡلَظَ فَٱسۡتَوَىٰ عَلَىٰ سُوقِهِۦ يُعۡجِبُ ٱلزُّرَّاعَ لِيَغِيظَ بِهِمُ ٱلۡكُفَّارَۗ وَعَدَ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ مِنۡهُم مَّغۡفِرَةٗ وَأَجۡرًا عَظِيمَۢا ٢٩﴾ [سورة الفتح:٢٩]

अर्थात: "मोहम्मद सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम अल्लाह के दूत हैं और जो मनुष्य उनके साथ हैं वे काफ़िरों पर कठोर एवं आपस में दयालु हैं तू उनहें देखेगा कि वे रुकू एवं सजदा कर रहे हैं, अल्लाह ताला की कृपा एवं सहमति की जिज्ञासा में हैं, उनका चिन्ह उनके मुखड़ों पर सजदों के कारण हैं, उनका यही उदाहरण तौरात में है एवं उनका यही उदाहरण इंजील में है उस खेती के जैसा जिसने अपना अंखवा निकाला फिर उसे शक्तिशाली बनाया और वह मोटा हो गया फिर अपनी डाली पर सीधा खड़ा हो गया एवं अन्नदाताओं को प्रसन्न करने लगा ताकि इनके कारण वे काफिरों को चिड़ा सकें उन ईमान वालों और पूण्य करने वालों से अल्लाह ताला ने माफी एवं बड़े सवाब का विश्वास दिलाया है।" इमाम कुर्तुबी रहमतुल्लाहि अलैह इस आयत की व्याख्या करते हुए लिखते हैं: "यह एक उदाहरण है जिसे अल्लाह ताला ने सहाबा के संदर्भ में प्रस्तुत किया है। जिसका अर्थ यह है कि वे पहले बहुत कम संख्या में होंगे, फिर उनकी संख्या अधिक हो जाएगी जब नबी सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम ने दुर्बलता एवं असमर्थता की स्थिति में मनुष्य को धर्म की ओर आमंत्रण देना प्रारंभ किया तो एक-एक करके लोगों ने आपके इस आमंत्रण को स्वीकार कर लिया यहां तक कि आप का संदेश उस पौधे की तरह शक्तिशाली हो गया जो बीज बोते समय दुर्बल दिखता है फिर स्थिरता के साथ उसमें शक्ति आती जाती है यहां तक कि उसके सूंढ़ एवं डालियां शक्तिशाली हो जाती हैं इस प्रकार यह एक बहुत ही उपयुक्त उदाहरण सिद्ध हुआ।"

सहाबा की महानता एवं उनके उच्च स्थान का एक प्रमाण यह भी है कि अल्लाह ताला ने उनके बारे में यह सूचना दी है की वे पवित्रता की बात के ज़्यादा निकट थे जैसा कि सूरतु-उल-फतह में वर्णन हुआ:

﴿وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ ٱلتَّقْوَىٰ وَكَانُوٓا۟ أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيمًا﴾ [سورة الفتح:٢٦]

अर्थात: "अल्लाह ताला ने मुसलमानों को पवित्रता(तक़वा) की बात पर जमाए रखा एवं वे इसके ज़्यादा योग्य थे, और अल्लाह ताला को प्रत्येक वस्तु के बारे में पूर्णत: ज्ञात है।"

इसके अतिरिक्त यह भी सूचना दी है कि यदि लोग उसी तरह ईमान स्वीकार कर लें जिस प्रकार सहाबा ने किया तो वे भी निर्देश को प्राप्त कर लेंगे।

अल्लाह ताला का वर्णन है:

﴿فَإِنْ ءَامَنُوا۟ بِمِثْلِ مَآ ءَامَنتُم بِهِۦ فَقَدِ ٱهْتَدَوا۟ ۖ﴾ [سورة البقرة:١٣٧]

अर्थात: "यदि वे उसी प्रकार ईमान स्वीकार कर लें जैसा कि तुमने किया तो वे भी निर्देश (हिदायत) प्राप्त कर लेंगे।"

अल्लाह ताला ने सहाबा के पक्ष में यह गवाही दी है कि वे सत्य एवं ईमान के स्वीकार करने वाले हैं।

अल्लाह ताला का वर्णन है:

﴿وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَهَاجَرُوا۟ وَجَٰهَدُوا۟ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ وَٱلَّذِينَ ءَاوَوا۟ وَّنَصَرُوٓا۟ أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَّهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٧٤﴾﴾ [سورة الأنفال:٧٤]

अर्थात: "जिस मनुष्य ने ईमान स्वीकार किया, प्रवासी बने, अल्लाह के मार्ग में जिहाद किया, जिन्होंने शरण दी, एवं सहयोग किया, यही लोग सत्य मोमिन हैं इनके लिए माफ़ी है एवं प्रतिष्ठा वाली रोज़ी है।"

क़ुरआन मजीद में दो स्थानों पर यह वर्णन आया है कि अल्लाह उनसे प्रसन्न हो गया वे दोनों आयतें निम्नलिखित हैं:

﴿لَّقَدۡ رَضِيَ ٱللَّهُ عَنِ ٱلۡمُؤۡمِنِينَ إِذۡ يُبَايِعُونَكَ تَحۡتَ ٱلشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي قُلُوبِهِمۡ فَأَنزَلَ ٱلسَّكِينَةَ عَلَيۡهِمۡ وَأَثَٰبَهُمۡ فَتۡحٗا قَرِيبٗا ١٨﴾ [سورة الفتح:١٨]

अर्थात: "नि: संदेह अल्लाह ताला मोमिनो से प्रसन्न हो गया जबकि वे पेड़ के नीचे तुझसे प्रतिज्ञा ले रहे थे, उनके हृदय में जो कुछ था उसने उसे ज्ञात कर लिया, उनको शांति एवं संतोष प्रकट किया एवं उन्हें शीघ्र ही सफलता प्रदान की।"

दूसरा स्थान सूरह-ए-तौबा है जिसमें वर्णन हुआ कि अल्लाह ताला उनसे प्रसन्न हो गया।

﴿وَٱلسَّٰبِقُونَ ٱلۡأَوَّلُونَ مِنَ ٱلۡمُهَٰجِرِينَ وَٱلۡأَنصَارِ وَٱلَّذِينَ ٱتَّبَعُوهُم بِإِحۡسَٰنٖ رَّضِيَ ٱللَّهُ عَنۡهُمۡ وَرَضُواْ عَنۡهُ وَأَعَدَّ لَهُمۡ جَنَّٰتٖ تَجۡرِي تَحۡتَهَا ٱلۡأَنۡهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَآ أَبَدٗاۚ ذَٰلِكَ ٱلۡفَوۡزُ ٱلۡعَظِيمُ ١٠٠﴾ [سورة التوبة:١٠٠]

अर्थात: " जो शरणार्थियों एवं उपयोगीयों (मुहाजिरीन-व-अंसार) भूतपूर्व एवं प्रथम हैं और जितने लोग सत्यता के साथ उनकी आज्ञाकारी हैं अल्लाह उन संपूर्ण लोगों से प्रसन्न हो गया एवं वे सभी लोग भी अल्लाह ताला से खुश हो गए और अल्लाह ताला ने उनके लिए ऐसे बग़ीचे उपलब्ध कर रखे हैं जिनके नीचे नेहरें बह रही होंगी जिनमें वे सदैव रहेंगे यह बड़ी सफ़लता है।"

अल्लाह ताला ने अपने दूत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उन सहाबा से परामर्श लेने का आदेश दिया।

अल्लाह ताला का वर्णन है:

﴿وَشَاوِرۡهُمۡ فِي ٱلۡأَمۡرِۖ فَإِذَا عَزَمۡتَ فَتَوَكَّلۡ عَلَى ٱللَّهِۚ﴾ [سورة آل عمران:١٥٩]

अर्थात: "कार्यों का परामर्श उन (सहाबा) से क्या करें जब आप की प्रतिबद्धता ठोस हो जाए तो अल्लाह ताला पर विश्वास रखें।"

इन के पश्चात आने वाले मुसलमानों को भी यह निर्देश दिया है कि वे उनकी क्षमा या माफ़ी के लिए अल्लाह ताला से प्रार्थना करें एवं मोमिनों के प्रति अपने हृदय में द्वेष न रखें।

अल्लाह ताला का वर्णन है:

﴿وَٱلَّذِينَ جَآءُو مِنۢ بَعۡدِهِمۡ يَقُولُونَ رَبَّنَا ٱغۡفِرۡ لَنَا وَلِإِخۡوَٰنِنَا ٱلَّذِينَ سَبَقُونَا بِٱلۡإِيمَٰنِ وَلَا تَجۡعَلۡ فِي قُلُوبِنَا غِلّٗا لِّلَّذِينَ ءَامَنُواْ رَبَّنَآ إِنَّكَ رَءُوفٞ رَّحِيمٌ ۝١٠﴾ [سورة الحشر:١٠]

अर्थात: "उनके लिए जो इन के पश्चात आएं जो कहेंगे कि ए हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे एवं हमारे उन भाइयों को भी जो हम से पूर्व ईमान स्वीकार कर चुके हैं एवं इमान वालों की ओर से हमारे हृदय में द्वेष (शत्रुता) ना डाल ए हमारे रब! नि: संदेह तू कृपालु एवं दयालु है।"

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्पष्टता के साथ कहा कि सर्वश्रेष्ठ युग सहाबा का युग था, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वर्णन है: जिसका अर्थ यह है: "संपूर्ण मनुष्य में सर्वश्रेष्ठ लोग मेरे युग के लोग हैं फिर जो उनके निकट हैं फिर जो उनके निकट हैं।"

(बुख़ारी:२६५२, मुस्लिम:५२३३ ने अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि अल्लाअल्लाहु अनहु सर प्रतिलिपि की है।)

"मेरे संगठन में सर्वश्रेष्ठ लोग वे हैं जिनके समक्ष मेरा अवतार हुआ।"

सहाबा के महानता का प्रमाण यह भी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया कि उनका सवाब उनके पश्चात आने वालों की तुलना में कई गुना अधिक है नबी सल्लल्लाहु वाले वसल्लम का वर्णन है:

" मेरे सहाबा को बुरा भला ना कहो क्योंकि तुम में का कोई उहुद पर्वत के बराबर भी स्वर्ण दान कर दे तो वह उनके मुद अथवा उसके अर्ध के बराबर भी नहीं पहुंच सकता।"

(इसे बुख़ारी:३६७३, एवं मुस्लिम:२५४१ ने अबू सईद खुदरी रज़ि अल्लाहु अन्हु से प्रतिलिपि किया है एवं इसी अर्थ की हदीस अबू हुरैरा राज़ि अल्लाहू अन्हु से भी प्रतिलिपि की गई है जिसको इमाम मुस्लिम:२५४० ने प्रतिलिपि किया है)

इस हदीस में "नसीफ़" एक शब्द आया है जिसका अर्थ अर्ध है एवं मुद एक सा-अ के चौथे पार्ट को कहते हैं।

इसका अर्थ यह है कि सहाबी का दान पूण्य यदि एक मुद हो तो उसका फल उसके पश्चात आने वाले लोगों के दान पूण्य के फल से कहीं बढ़कर है, चाहे उनका दान पुण्य उहुद पर्वत के बराबर ही क्यों ना हो। इस अंतर का कारण यह है कि सहाबी के भीतर अनंत प्रेम, निष्कपट (इख़्लास) एवं उनके हृदय में असीन सत्यता थी।

सारांश यह है कि सहाबा को अन्य मनुष्यों पर १० विशेषताओं के कारण इस प्रकार उच्च स्थान प्राप्त है:

(१) अल्लाह ने उन्हें अपने दूत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की संगत में रहने का अवसर दिया।

(२) उन्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखने एवं संगत में रहने का सौभाग्य प्राप्त है।

(३) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनसे प्रेम करते थे।

(४) वे सर्वश्रेष्ठ लोग थे।

(५) उनकी महानता का उल्लेख तौरात इनजील एवं क़ुरआन में हुआ एवं उन सभी पुस्तकों में उनकी प्रशंसा की गई है।

(६) उन्होंने इस्लाम स्वीकार करने में पहल की।

(७) उन्होंने अल्लाह, इस्लाम धर्म, एवं नबी के लिए अपनी प्राण, संपत्ति एवं संतान तक को त्याग दिया। उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उत्साहित किया एवं आपके ठोस

विचार में किसी प्रकार का लचीलापन नहीं आने दिया एवं इस्लाम धर्म के सदैव जीवित रखने के लिए संपूर्ण कठिनाइयों को सहा।

(८) वे उन संपूर्ण सराहनीय विशेषताओं से प्रदर्शित थे जिनको उन्होंने भविष्यवक्ता के दीपक से परोक्ष रूप से प्राप्त किया था एवं प्रशिक्षित हुए थे।

(९) उन्होंने क़ुरआन एवं हदीस को अपने हृदय में सुरक्षित किया और समस्त संसार तक पहुंचाया और उन्हीं सहाबा के कारण प्रलय की दिवस तक संसार में इस्लाम धर्म फलता फूलता रहेगा।

(१०) वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात अल्लाह के धर्म के सबसे ज़्यादा ज्ञानी थे। जिस बात को वे सामूहिक रूप में कह देते थे कोई भी उसका विरोध नहीं कर सकता था।

यह वे १० विशेषताएं हैं जिनके कारण सहाबा को अपने से पूर्व एवं अपने से पश्चात संपूर्ण व्यक्तियों पर प्रभुत्व प्राप्त था। अल्लाह ताला मुझे एवं आप को पवित्र क़ुरआन की बरकत से समृद्धि प्रदान करे। मुझे एवं आपको इस की आयतों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सदुपदेशों का लाभार्थी बनाए। मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने एवं आप सभी के लिए हर प्रकार के दंड एवं पाप से क्षमा के लिए अनुरोध करता हूं।आप भी अल्लाह से क्षमा की भीख मांगें।

नि: संदेह वह अधिक से अधिक पश्चाताप स्वीकार करने वाला एवं क्षमा करने वाला है।

दूसरा भाषण:

मुसलमानो! सहाबा अपनी महानता में दूसरे से विभिन्न हैं। अहले सुन्नत वल जमात इस बात में विश्वास रखते हैं कि नबी के पश्चात इस उम्मत में सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति अबु बक्र हैं, फिर उमर, फिर उस्मान एवं फिर अली हैं। अहले सुन्नत वल जमात अंसार के विपरीत मुहाजिरीन को उच्च स्थान देते हैं क्योंकि मुहाजिमुहाजिरों (शरणार्थियों) ने इस्लाम स्वीकार करने में पहल की थी फिर उनके पश्चात अंसार का स्थान है जिन्होंने इस्लाम स्वीकार करने के साथ-साथ अल्लाह के दूत नबी सल्ला वसल्लम को शरण भी प्रदान किया था एवं सहयोग किया था। अहले सुन्नत

वल जमात सफ़लता (फ़तहे हुदैबिया) से पूर्व दान प्रदान करने वालों उच्च स्थान स्थान देते हैं उन लोगों के विपरीत जिन्होंने सफ़लता के पश्चात दान प्रदान किया था एवं युद्ध किया था।

वे इस बात में विश्वास रखते हैं कि बदर युद्ध लड़ने वाले जिनकी कुल संख्या ३१३ थी उनके संबंध में अल्लाह ताला का वर्णन है:" तुम जो चाहो करो मैं ने सामूहिक तौर पर तुम सबको क्षमा कर दिया है।" वे इस बात में भी आस्था रखते हैं कि पेड़ के नीचे प्रतिज्ञा करने वालों में से कोई भी नरक में नहीं जाएगा जिनकी कुल संख्या १४०० से अधिक थी। वे उनके लिए स्वर्ग की गवाही देते हैं जिनके लिए अल्लाह के दूत ने गवाही दी जैसे: अशरह-ए-मुबश्शरा (१० भाग्यशाली व्यक्ति जिन को स्वर्ग में जाने की सूचना दी गई।) एवं अन्य सहाबा।

ए मोमिनो! सहाबा के हम पर ४ अधिकार हैं:

(१) उन से प्रेम करना एवं उन से प्रसन्न रहना जैसा कि अल्लाह ताला ने मोमिनो को आदेश देते हुए कहा:

﴿وَٱلَّذِينَ جَآءُو مِنۢ بَعۡدِهِمۡ يَقُولُونَ رَبَّنَا ٱغۡفِرۡ لَنَا وَلِإِخۡوَٰنِنَا ٱلَّذِينَ سَبَقُونَا بِٱلۡإِيمَٰنِ وَلَا تَجۡعَلۡ فِي قُلُوبِنَا غِلّٗا لِّلَّذِينَ ءَامَنُواْ رَبَّنَآ إِنَّكَ رَءُوفٞ رَّحِيمٌ ۝١٠﴾ [سورة الحشر:١٠]

अर्थात: "उनके लिए जो इन के पश्चात आएं जो कहेंगे कि ए हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे एवं हमारे उन भाइयों को भी जो हम से पूर्व ईमान स्वीकार कर चुके हैं एवं इमान वालों की ओर से हमारे हृदय में द्वेष (शत्रुता) ना डाल ए हमारे रब! नि: संदेह तू कृपालु एवं दयालु है।"

(२) इस बात ने आस्था रखना कि वे धार्मिक क्रियाओं के उम्मत में सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी थे क्योंकि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निरीक्षण में प्रशिक्षण प्राप्त किया था एवं क़ुरआन के अवतार को उन्होंने देखा था और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस बात की भी सूचना दी कि उनमें चार प्रथम सहाबा (ख़ुलाफा-ए- राशिदीन) की सुन्नत पालन के योग्य है बाद में आने वालों को चाहिए कि वे उनकी प्रक्रियाओं का पालन करें रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वर्णन है: "मैं तुमको अल्लाह से भय रखने एवं शासक की बात सुनने अथवा

उनकी आज्ञा कारिता करने का आदेश देता हूं चाहे शासक कोई कटे हुए पार्ट वाला हब्शी दास ही क्यों न हो, क्योंकि तुम में से जो जीवित रहेगा वह उम्मत के भीतर अनेक झगड़े देखेगा तो तुम जीवित लोगों को मेरा इच्छा पात्र है की नौविद्रोहों एवं नवाचारों में ना पड़ना क्योंकि यह सब पथभ्रष्ट हैं। इस कारणवश तुम में से जो भी उस युग को देखे वह मेरे एवं मेरे आज्ञाकारीयों (ख़ुलाफा-ए- राशिदीन) के सिद्धांतों पर डटा रहे एवं मेरे उन सदुपदेशों को अपने दंतो से कठोरता के साथ पकड़े रहे।

(३) कुछ नवोन्मेषों जैसे रवाफ़िज़ एवं उन सिद्धांतों पर चलने वाले लोग जो कुछ सहाबा के संदर्भ में कहते हैं इस बारे में सहाबा की रक्षा करना।

यह ज्ञात रखें -अल्लाह आप संपूर्ण पर कृपा करे- कि अल्लाह ने आप सभी को एक महान कार्य का आदेश दिया:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात: " अल्लाह ताला एवं उसके देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं ए इमान वालो! तुम भी उन पर दुरुद भेजो एवं खूब सलाम भेजते रहो।

अल्लाह के श्रद्धालुओ!

अल्लाह ताला न्याय का, भलाई का, अपनों के साथ सत्य व्यवहार करने का, आदेश देता है एवं असभ्यता वाले कार्यों से, अभद्र चालों से, कुर्ता एवं दुरुपयोगों से रोकता है। महान अल्लाह को याद करो वह भी तुमको याद करेगा उसकी दी हुई लाभदायक वस्तुओं पर उसके आभारी रहो वह तुम को और अधिक देगा नि: संदेह अल्लाह ताला को याद करना बहुत बड़ी चीज़ है एवं अल्लाह हमारे कार्यों के बारे में पूर्णत: ज्ञात रखता है।

शीर्षक: नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक अधिकार यह है कि: आपकी पत्नियों का सम्मान किया जाए

प्रथम उपदेश:

إن الحمد لله نحمده، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

अल्लाह की प्रशंसा के पश्चात्, सबसे उत्तम शब्द अल्लाह के शब्द हैं, और सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शन अल्लाह के रसूल का है। और सबसे बुरी बात धर्म में नई बात पैदा करनी है, और हर नई बात बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही आग में ले जाने वाली है।

हे मुसलमानो! अल्लाह से डरो, उसको अपना निरीक्षक समझो, उसके आदेश का पालन करो तथा उसकी अवज्ञा एवं नाफरमानी से बचो। और इस बात को जान लो कि अहले सुन्नत वल जमाअत की आस्था की सिद्धांतों में से यह भी है कि अल्लाह के रसूल की बिवियों का सम्मान किया जाए, कयोंकि अल्लाह ने उनहें प्रतिष्ठा के शिखर तथा आदर- सत्कार की चरम सीमा पर पहुंचाया है, बल्कि उनहें समस्त मुसलमानों की माताओं की उपाधि दी है, जैसाकि अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿ٱلنَّبِيُّ أَوْلَىٰ بِٱلْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ ۖ وَأَزْوَٰجُهُۥٓ أُمَّهَٰتُهُمْ ﴾ [سورة الأحزاب:٦]

"नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अधिक समीप हैं ईमान वालों के उनकी प्राणों की अपेक्षा, और आपकी पत्नियाँ उनकी मातायें हैं", और इस आयत में पवित्रता, सम्मान, श्रद्धा, आदर, सत्कार तथा आवभगत का वह संदेश है जो हर मुसलमान पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नियों के अधिकारों की रक्षा को अनिवार्य घोषित करता है, और उसे उचित ढंग से अदा करने का आह्वान करता है।

अल्लाह के बंदो! नबी साहब की बिवियों के आदर और सम्मान को अनिवार्य करने वाला कारण यह है कि उनहोंने अल्लाह के रसूल के मार्गदर्शन को याद किया और उसे उम्मत के दरम्यान फैलाया, विशेष रूप से आईशा सिद्दिक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अधिक संख्या में रिवायत करने वाले वयक्तिओं में से थीं।

जहाँ तक बात हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की है, तो आप नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पहली पत्नी हैं, और वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को साहस देती थीं, आप को इस बात का आश्वासन देती थीं कि आप जिस मार्ग पर चल रहे हैं वही सत्य है, और यह कि अल्लाह तआला कभी भी आपको अपमानित नहीं करेगा, जैसाकि उस वाक़्य से ज्ञात होता है जब आप हज़रत ख़दीजा के पास आते हैं, और आपका हृदय धड़क रहा होता है, क्योंकि पहली बार हिरा की गुफा में जिब्रील अलैहिस्सलाम आप पर इश्वरीय ज्ञान ले कर अवतरित होते हैं। अतः हज़रत ख़दीजा आपको दिलासा दीं, फिर ले कर अपने चचेरे भाई वरक़ह बिन नौफल के पास गईं, और वह अज्ञानता के युग में ईसाई हो गये थे, अतः वरक़ह बिन नौफल ने आपको आश्वस्त किया और इस तथ्य को स्पष्ट किया कि जो चीज़ आप पर उतरी है वह वास्तव में अल्लाह की ओर से इश्वरीय ज्ञान (वह्य) है। {सहीह बुख़ारी:3 तथा सहीह मुस्लिम: 160 में इस वाक़्य का विवरण देखें}

शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमिया कहते हैं: अहले सुन्नत वल जमाअत के सिद्धांतों में से है कि वह मुमिनों की माँएं, अर्थात रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बिवियों का आदर करते हैं, और विश्वास रखते हैं कि मरणोपरांत भी वह आप ही की बिवियाँ रहेंगीं, विशेष रूप से हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अधिकांश बच्चों की माँ हैं, और आप पर ईमान लाने वाली तथा आपको समर्थन प्रदान करने वाली प्रथम महिला हैं। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दृष्टि में वह अति सम्मानित एवं गरीमा मंडित थीं।

और आईशा सिद्दिक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा जिनके विषय में अल्लाह के रसूल ने कहा है: आईशा का महत्व औरतों पर उसी प्रकार है जिस प्रकार सरीद (एक प्रकार की गोश्त-मिश्रित खिचड़ी) का महत्व शेष भोजनों पर है"। अल्लामा इब्ने तैमिया की बात पुरी हुई

{मजमुउल फतावा; ३\१५४: बुख़ारी शरीफ़; ३७६९, मुस्लिम शरीफ़; २४४६}

अल्लाह के बंदो!

और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बिवियों के अधिकारों के महत्व की ओर संकेत करने वाली चीज़ उनके ऊपर विशेष रूप से नमाज़ में तशह्हुद में दरुद भेजना भी है, और यह बात मालूम है कि उन पर दरूद का मतलब उनके लिए दुआ होता है, अर्थात उनके लिए दुआ

करना है कि अल्लाह उनकी स्तुति करे तथा उनके महत्व को बढ़ाये। अबु हुमैद साअदी से वर्णित है कि लोगों ने पूछा: हे अल्लाह के रसूल हम कैसे आप पर दरुद भेजें?

तो आपने कहा, कहो:

اللهم صل على محمد وأزواجه وذريته كما صليت على آل إبراهيم وبارك على محمد وأزواجه وذريته كما باركت على آل إبراهيم، إنك حميد مجيد

हे अल्लाह! आशीर्वाद दे मुहम्मद तथा आपकी पत्नियों एवं संतानों को जैसाकि तुम ने इब्राहीम एवं इब्राहीम की संतान को दिया, और कृपा कर मुहम्मद, उनकी पत्नियाँ और संतान पर जैसाकि तु ने इब्राहीम की संतान पर किया, वस्तुतः तु प्रशंसनीय एवं यशस्वी है।

अल्लाह के बंदो!

और रसूल की बिवियों के अधिकारों में से यह भी है कि उनके लिए क्षमा की प्रार्थना की जाये, उनकी विशेषताओं का स्मरण किया जाये, उनके महत्वों का वर्णन किया जाये और उनकी प्रशंसा की जाए। और वह इसलिए क्योंकि अल्लाह के रसूल से उनका सीधा संपर्क एवं निकट संबंध है, और इस उम्मत की शेष औरतों पर उनहें महत्व प्राप्त है।

हे मुमिनो! नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बिवियों को गंदगी तथा मलिनता से पवित्रता का कुरआन ने प्रमाण प्रस्तुत किया है, जैसाकि अल्लाह तआला ने कहा है:

﴿إِنَّمَا يُرِيدُ ٱللَّهُ لِيُذۡهِبَ عَنكُمُ ٱلرِّجۡسَ أَهۡلَ ٱلۡبَيۡتِ وَيُطَهِّرَكُمۡ تَطۡهِيرٗا ﴿٣٣﴾﴾ [سورة الأحزاب:٣٣]

"अल्लाह चाहता है कि मलिनता को तुम से दूर कर दे, हे नबी के घर वालीयो! तथा तुम्हें पवित्र कर दे अति पवित्र"।

इब्ने जरीर रहिमहुल्लाह का कहना है: अल्लाह तआला तुम्हें व्यभिचार, बुराई और निर्लज्जता से पवित्र करना चाहता है हे मुहम्मद के घर वालीयो! और तुम्हें उस गंदगी से पुर्ण रुप से सुरक्षित करना चाहता है जो अल्लाह के नाफरमानों और अवज्ञाकारियों में विधमान होती है।

और इसी कारण नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नियों पर कीचड़ उछालना तथा उन पर कोई आरोप लगाना आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए अति कष्टदायक बात

है। और अल्लाह तआला ने अपने इस कथन के माध्यम से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कष्ट पहुंचाने को अवैध घोषित किया है, अल्लाह का वह फरमान यह है:

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ يُؤۡذُونَ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ لَعَنَهُمُ ٱللَّهُ فِي ٱلدُّنۡيَا وَٱلۡأٓخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمۡ عَذَابٗا مُّهِينٗا ٥٧﴾ [سورة الأحزاب:٥٧]

"वास्तव में जो लोग अल्लाह तथा उसके रसूल को कष्ट देते हैं उन पर दुनिया तथा आख़िरत में अल्लाह का अभिशाप है, और अल्लाह ने उनके लिए बड़ी यातना तैयार कर रखी है "। हे मुमिनो! और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बिवियों के सम्मान के विपरीत वह आस्था भी है जिसको राफज़ी लोग अपनाए हुए हैं, अल्लाह की उन पर लानत हो। उन लोगों ने हज़रत आईशा पर व्यभिचार का आरोप तथा कलंक लगाने में मुनाफिक़ों का साथ दिया था, अतः इस बुरी आस्था के द्वारा वह अल्लाह की वंदना करते थे। और यह बहुत बड़ा कुफ्र है, अल्लाह हमें इससे सुरक्षित रखे। क्योंकि जो लोग हज़रत आईशा पर व्यभिचार का आरोप लगाते हैं, वह उस सूचना को सत्य नहीं मानते जो क़ुरआन में सुरह नूर के आरंभ में आई है, जिस में अल्लाह ने उनके ऊपर ज़िना का आरोप लगाने को इस सूरह में कलंक एवं आरोप, अर्थात झूट कहा है, अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ جَآءُو بِٱلۡإِفۡكِ عُصۡبَةٞ مِّنكُمۡۚ لَا تَحۡسَبُوهُ شَرّٗا لَّكُمۖ بَلۡ هُوَ خَيۡرٞ لَّكُمۡۚ لِكُلِّ ٱمۡرِيٕٖ مِّنۡهُم مَّا ٱكۡتَسَبَ مِنَ ٱلۡإِثۡمِۚ وَٱلَّذِي تَوَلَّىٰ كِبۡرَهُۥ مِنۡهُمۡ لَهُۥ عَذَابٌ عَظِيمٞ ١١ لَّوۡلَآ إِذۡ سَمِعۡتُمُوهُ ظَنَّ ٱلۡمُؤۡمِنُونَ وَٱلۡمُؤۡمِنَٰتُ بِأَنفُسِهِمۡ خَيۡرٗا وَقَالُواْ هَٰذَآ إِفۡكٞ مُّبِينٞ ١٢﴾ [سورة النور:١١-١٢]

"वास्तव में जो लोग कलंक घड़ लाये हैं वह तुम्हारे ही भीतर के एक गिरोह हैं, तुम उसे बुरा न समझो, बल्कि वह तुम्हारे लिए अच्छा है। उनमें से प्रत्येक के लिए जितना भाग लिया उतना पाप है और जिसने भार लिया उसके बड़े भाग का तो उसके लिए बड़ी यातना है।

क्यों जब उसे ईमान वाले पुरुषों तथा स्त्रियों ने सुना तो अपने आप में अच्छा विचार नहीं किया तथा कहा कि यह खुला आरोप है"।

यहाँ तक कहा:

﴿وَلَوۡلَآ إِذۡ سَمِعۡتُمُوهُ قُلۡتُم مَّا يَكُونُ لَنَآ أَن نَّتَكَلَّمَ بِهَٰذَا سُبۡحَٰنَكَ هَٰذَا بُهۡتَٰنٌ عَظِيمٞ ١٦﴾ [سورة النور:١٦]

"और क्यों नहीं जब तुम ने इसे सुना तो कह दिया कि हमारे लिए योग्य नहीं कि यह बात बोलें। हे अल्लाह! तु पवित्र है! यह तो बहुत बड़ा आरोप है। अल्लाह तुम्हें शिक्षा देता है कि पुनः इस जैसी कभी बात न कहना। यदि तुम ईमान वाले हो।

अल्लामा इब्ने कसीर रहि़महुल्लाह ने कहा है: और समस्त विद्वानों की इस बात पर सहमति है कि जो व्यक्ति भी इस आयत के पश्चात् ह़ज़रत आईशा के प्रति अभद्र शब्द का प्रयोग करेगा, उन पर कलंक लगायेगा, और इस आयत में वर्णित तथ्य के बाद भी उन पर आरोप लगायेगा; तो वह निश्चित रूप से काफिर है, कयोंकि वह क़ुरआन का विरोधी है"? {तफसीर इब्ने कसीर; सुरह नूर: २३}

अल्लाह के बंदो!

यह कुछ लाभदायक बातें हैं जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बिवियों के सम्मान तथा उनकी प्रतिष्ठा के विपरीत बातों से संबंधित हैं। अल्लाह तआला उन सबसे प्रसन्न हो।

अल्लाह तआला हमें तथा आप लोगों को इस बड़ी किताब (क़ुरआन) में बरकत दे, और उसमें जो उत्तम उपदेश तथा अच्छी बातें हैं उस से हमें तथा आप लोगों को लाभ प्रदान करे, मैं अपनी इस बात को कहता हूँ, और मैं अपने तथा आप लोगों के लिए समस्त पापों से अल्लाह से क्षमा चाहता हूँ, अतः आप लोग भी उस से क्षमा मांगें, वास्तव में वह पश्चाताप करने वालों को क्षमा प्रदान करता है।

द्वितीय संदेश:

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد:

ए अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरें और आप जान लें कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वह पत्नियाँ जिनके साथ आपने वैवाहिक संबंध स्थापित किया है, वह ग्यारह हैं:

१- ख़दीजा बिनते खुवैलिद

२- आईशा सिद्दिक़ा बिन्ते अबु बकर सिद्दीक़

३-सौदा बिन्ते ज़मआ

४- हफ्सह बिन्ते उमर बिन ख़त्ताब

५-उम्मे हबीबा, रमलह बिन्ते अबी सुफियान रज़ी अल्लाहु अंहा व अ़न अबीहा

६- उम्मे सल्मह, हिन्द बिन्ते अबी उमैया बिन अल मुग़ीरह, अल क़रशीयह रज़ी अल्लाहु अंहा

७-ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ी अल्लाहु अंहा

८-ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा हिला लीया रज़ियल्लाहु अन्हा

९- जुवैरिया बिन्ते हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा

१०- सुफैया बिन्त हुय्य बिन अख़तब

११- मैमुना बिन्त हारिस हिलालीया रज़ियल्लाहु अन्हा

फिर जान लो! (अल्लाह तुम लोगों पर दया करे) यह सत्य है कि अल्लाह तआला ने तुम्हें एक बड़े कार्य का आदेश दिया है, अतः अल्लाह कहता है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

"नि:संदेह अल्लाह तथा उसके फ़रिश्ते नबी पर दरुद भेजते हैं। हे ईमान वालो! उन पर अधिक दरुद तथा सलाम भेजो"। और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी अपनी उम्मत को जुमआ के दिन दरुद भेजने पर उभारते हुए कहा है : (सबसे उत्तम दिन जुमआ का दिन है, अतः उस दिन मेरे ऊपर अधिक संख्या में दरुद भेजो, क्योंकि तुम्हारा दरुद मेरे ऊपर प्रस्तुत किया जाता है), हे अल्लाह अपने बंदे और रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरुद एवं सलाम नाज़िल फरमा, और आपके साथियों से प्रसन्न हो जा, और आप के साथियों के साथियों तथा उन लोगों से भी हर्षित हो जा जिन्होंने उचित ढंग से प्रलय के दिन तक उनके मार्गों का अनुपालन किया।

हे अल्लाह मुसलमान तथा इसलाम को शक्ति प्रदान कर, और मिश्रण (शिर्क) तथा मिश्रण कारीयों को अपमानित कर, और अपने शत्रुओं अर्थात अपने दीन के शत्रुओं को नष्ट एवं ध्वस्त क रदे, और अपने एकेश्वरवादी भक्तों को सहायता प्रदान कर, हे अल्लाह हमारे देशों में हमें शांति दे, हमारे (इमामों) सरदारों और शासकों में सुधार पैदा फरमा, और उनहें ऐसा मार्गदर्शक

बना जो स्वयं सत्य पाथ पर अग्रसर हों, हे अल्लाह जो हमें, इसलाम को तथा मुसलमानों को कष्ट और हानी पहुचाना चाहे, उसे तू स्वयं में व्यस्त कर दे, और उसके षडयंत्र को उसी पर लौटा दे। हे अल्लाह हम से मुल्य वृधि, संक्राम करोग, सूद तथा ज़िना (व्यभिचार) को दूर कर दे, हे अल्लाह हमें भूकंप, क्लेश, वेदना तथा दुर्भाग्य से बचा जो छुपा तथा स्पष्ट हो, उसे विशेष रूप से हमारे देश तथा सामान्य रूप से समस्त मुसलमानों के देशों से दूर रख। हे अल्लाह! हम से संक्रमण और महामारी को उठा ले, हम वास्तव में मुसलमान हैं।

हे अल्लाह! मुसलमानों के समस्त शासकों को अपनी किताब को दृढ़ता प्रदान करने और धर्म को प्रतिष्ठित एवं सम्मानित करने की तौफ़ीक़ दे, और उनहें अपने शासितों पर दयावान बना।

हे रब्ब! हमें इस संसार में भी भलाई दे और मरणोपरांत भी भलाई से नवाज़, और हमें नर्क की अग्नि से बचा।

हे अल्लाह अपने बंदे और रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरुद एवं सलाम नाज़िल फरमा, और आपके साथियों से प्रसन्न हो जा, और आप के साथियों तथा उन लोगों से भी हर्षित हो जा जिन्होंने उचित ढंग से प्रलय के दिन तक उनके मार्गों का अनुपालन किया।

अल्लाह के भक्तो! अल्लाह न्याय तथा उचित व्यवहार का आदेश देता है, पड़ोसियों को दान करने का उपदेश देता है, और व्यभिचार, बुराई तथा वैश्यावृति से मना करता है, वह तुम्हें उपदेश देता है ताकि तुम नसीहत प्राप्त कर सको। अतः अल्लाह को याद करो जो सबसे बड़ा है, वह तुम्हें याद करेगा, और उसके उपहारों पर उसका आभार प्रकट करो वह उसमें और वृद्धि करेगा। और अल्लाह तआला का स्मरण सबसे बड़ा कार्य है, और तुम जो कुछ भी करते हो उस से अल्लाह तआला भली भांति परिचित है।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين

शीर्षक: मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक अधिकार अहले बैत का सम्मान भी है

प्रथम उपदेशः

إن الحمد لله، نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، ومن سيئات أعمالنا من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدًا عبده ورسوله.

प्रशंसाओं के पश्चात!

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मार्ग है। दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त (नवाचार) हैं और प्रत्येक बिदअ़त (नवोन्मेष) गुमराही है और हर गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो! अल्लाह से डरो और उसका भय रखो उसकी आज्ञा करो और उसकी अवज्ञा से बचो, जान लो कि पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अधिकारों का यह एक आवश्यक भाग है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहल-ए-बैत (परिवार) का सम्मान किया जाए उनसे प्रेम एवं मित्रता रखी जाए उसका पालन किया जाए।

हे अल्लाह के दासो! इस मौलिक (आस्थाओं) के अनेक साक्ष्य हैं, ज़ैद बिन (पुत्र) अरक़म रज़िअल्लाहु अन्हू से वार्णित है, वह फ़रमाते हैं:

قَامَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا فِينَا خَطِيبًا بِمَاءٍ يُدْعَى خُمًّا، بَيْنَ مَكَّةَ وَالْمَدِينَةِ، فَحَمِدَ اللَّهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ، وَوَعَظَ وَذَكَّرَ، ثُمَّ قَالَ : " أَمَّا بَعْدُ ؛ أَلَا أَيُّهَا النَّاسُ، فَإِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ، يُوشِكُ أَنْ يَأْتِيَ رَسُولُ رَبِّي فَأُجِيبَ، وَأَنَا تَارِكٌ فِيكُمْ ثَقَلَيْنِ ؛ أَوَّلُهُمَا كِتَابُ اللَّهِ، فِيهِ الْهُدَى وَالنُّورُ، فَخُذُوا بِكِتَابِ اللَّهِ، وَاسْتَمْسِكُوا بِهِ "، فَحَثَّ عَلَى كِتَابِ اللَّهِ وَرَغَّبَ فِيهِ، ثُمَّ قَالَ : " وَأَهْلُ بَيْتِي، أُذَكِّرُكُمُ اللَّهَ فِي أَهْلِ بَيْتِي، أُذَكِّرُكُمُ اللَّهَ فِي أهل بيتي، ذَكِّرُكُمُ اللَّهَ فِي أَهْلِ بَيْتِي ". فَقَالَ لَهُ حُصَيْنٌ : وَمَنْ أَهْلُ بَيْتِهِ يَا زَيْدُ، أَلَيْسَ نِسَاؤُهُ مِنْ أَهْلِ بَيْتِهِ ؟ قَالَ : نِسَاؤُهُ مِنْ أَهْلِ بَيْتِهِ، وَلَكِنْ أَهْلُ بَيْتِهِ مَنْ حُرِمَ الصَّدَقَةَ بَعْدَهُ. (مسلم: ٢٤٠٨)

अर्थात: "पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक दिन मक्का और मदीना के मध्य में स्थित "ख़ुममा" स्थान के जला स्थल पर उपदेश सुनाने के लिए खड़े हुए, आप सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम ने अल्लाह की प्रशंसा की और उपदेश दिया फिर फ़रमाया: ए लोगो में मनुष्य हूं, बहुत जल्द मेरे रब (पालनहार) का भेजा हुआ (मृत्यु देवदूत) मेरा प्राण निकाल लेंगे, मैं तुम में ثقلين दो बड़ी चीज़ें छोड़ जाता हूं, (इसका वर्णन आगे आएगा कि ثقلين का अर्थ क़ुर्आन एवं अहल-ए-बैत (परिवार) है, इसनके ثقلين का नाम इस कारण से दिया गया है कि इन पर अ़मल करना और इनका हक पूरा करना कठिन काम है,इस लिए इनके महत्व को देखते हुए उनका नाम ثقلين दिन गया है, देखें «النهاية»)। प्रथम अल्लाह की पुस्तक है और उसमें हिदायत है और नूर है। तो अल्लाह की पुस्तक को थामे रहो और उसको बलपूर्वक पकड़े रहो।

इस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह की पुस्तक के प्रति रुचि दिलाई फिर फ़रमाया की द्वितीय चीज़ मेरे परिवार वाले हैं, (यह दूसरा ثقل है) मैं तुम्हें अपने अहले बैत (परिवार) के प्रति अल्लाह की याद दिलाता हूं। -ऐसा आपने तीन बार कहा। हुसैन ने कहा की ए ज़ैद! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहले बैत (परिवार) कौन हैं? क्या आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नियाँ अहले बैत (परिवार) नहीं हैं? ज़ैद रज़िअल्लाहु अन्हु ने कहा कि आपकी पत्नियाँ भी अहले बैत (परिवार) में दाख़िल हैं किंतु अहले बैत वह है जिन पर ज़कात हराम है। १ "{इसे मुस्लिम: (२४०८) ने वर्णन किया है।}

अबू बकर सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

ارْقُبُوا مُحَمَّدًا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي أَهْلِ بَيْتِهِ.

अर्थात: "आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहले बैत (परिवार) का संरक्षण करो।" संरक्षण का अर्थ रक्षा है।(देखें फतहुलबारी)।

2 {इसे बुख़ारी: ३७१३ ने वर्णन किया है।}

पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहले बैत (परिवार) के फ़ज़ाएल (महत्त्व) के विषय में अनेक हदीसें वर्णित हैं जिनको सही, सोनन, मुसनद आदि पुस्तकों में विस्तार पूर्वक उल्लेख किया गया है ३ {देखें: "अल-सही अल-मुसनद मिन फ़ज़ाएले अहलिन्नुबूवह" लेखक: उम्मे शुएब अल वादेईया, प्रकाशक: दारुल आसार, सना}

इब्ने तैमिया रहमतुल्लाहि अलैहि ने उल्लेख किया है कि "इसमें कोई संदेह नहीं की पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के परिवार का उम्मत पर वह अधिकार है जिसमें उनका कोई

साझी नहीं, वह जितने प्रेम एवं विलायत (मित्रता) के पात्र हैं उतने क़ुरैश के अन्य जनजाति नहीं हैं, जिस प्रकार क़ुरैश प्रेम एवं मित्रता के पात्र हैं अन्य जनजाति उसके पात्र नहीं, और जिस प्रकार अरब जिस प्रेम एवं मित्रता के पात्र हैं मनु के अन्य वंश उसके पात्र नहीं, यह उन जमहुर (विद्वानों का समूह) की राय है जो अ़रब अन्य समुदायों पर, क़ुरैश को अन्य समस्त अरब जनजातियों पर प्राथमिकता देने के पक्ष में हैं और यही कथन इमाम अह़मद आदि जैसे विद्वानों का भी है।"

1{मिनहाज-उस-सुनना अल-नबवीया:४/५९९}

इसके पश्चात आप रहिमहुल्लाह ने वासिला बिन (पुत्र) अल-अस्का की ह़दीस वर्णन किया है जो कि उपयुक्त महत्व पर साक्ष्य है ह़दीस के शब्द हैं, फर्माते हैं:

سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ : " إِنَّ اللهَ اصْطَفَى كِنَانَةَ مِنْ وَلَدِ إِسْمَاعِيلَ، وَاصْطَفَى قُرَيْشًا مِنْ كِنَانَةَ، وَاصْطَفَى مِنْ قُرَيْشٍ بَنِي هَاشِمٍ، وَاصْطَفَانِي مِنْ بَنِي هَاشِمٍ ". (مسلم:٢٢٧٦)

अर्थात: "मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: नि:संदेह अल्लाह तआ़ला ने इस्माइल अलैहिस्सलाम के वंश से कनाना का चयन किया, कनाना से क़ुरैश का चयन किया, क़ुरैश से बनी हाशिम का चयन किया और बनी हाशिम से मेरा चयन किया।"

2{इसे मुस्लिम: (२२८६) आदि ने वर्णन किया है}

ए मोमिनो! पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पवित्र पत्नियाँ अहले बैत (परिवार) में शामिल हैं। जैसाकि क़ुरआन इस पर साक्षी है अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

﴿ إِنَّمَا يُرِيدُ ٱللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ ٱلرِّجْسَ أَهْلَ ٱلْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا ﴾ [سورة الأحزاب:٣٣]

अर्थात: "अल्लाह तआ़ला यही चाहता है कि ए पैग़ंबर की पत्नियो! तुम से वह (हर प्रकार) की गंदगी को दूर कर दे और तुम्हें अति पवित्र कर दे। इब्ने कसीर रहमतुल्लाहि अलैहि उल्लेख करते हैं: "यह इस बात का साक्ष्य है कि पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पवित्र पत्नियाँ अहले बैत (परिवार) में शामिल हैं। क्योंकि यह आयत आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नियों के प्रति अवतरित हुई।"

ऐ मुसलमानो! पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के परिवार के लिए सदक़ा व ज़कात लेना निषेध है, अल्लाह तआला ने उनके स्थान एवं महत्व का सम्मान करते हुए उन पर सदक़ा व ज़कात (दान) को निषेध कर दिया है क्योंकि सदक़ा व ज़कात (दान) मनुष्य की गंदगी होती है। पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है: "मोहम्मद के परिवार के लिए सदक़ा (दान) वैद्य नहीं है यह तो मनुष्य (केधन) का मैल-कुचैल है।"

1{इसे मुस्लिम: (१०८३) ने अब्दुल मुत्तलिब बिन रबीआ बिन हारिस रहमतुल्लाहि अलैहि से वर्णन किया है।}

मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वह परिवार जिन पर सदक़ा (दान) निषेध है वे दो जनजाति हैं बनू हाशिम बिन अ़ब्दे-मनाफ़ और बनू मुत्तलिब बिन अ़ब्दे-मनाफ़।

ए मोमिनो! मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहले बैत (परिवार) के सम्मान का एक साक्ष्य यह भी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत (अनुयायी) को यह शिक्षा दिया है कि वह अपनी नमाज़ में तशह्हुद में यह दुआ (प्रार्थना) करें:

اللَّهمَّ صلِّ على محمَّدٍ وعلى آلِ محمَّدٍ، كما صلَّيْتَ على إبراهيمَ وعلى آلِ إبراهيمَ إنَّك حميدٌ مجيدٌ، اللَّهمَّ بارِكْ على محمَّدٍ وعلى آلِ محمَّدٍ، كما باركْتَ على إبراهيمَ وعلى آلِ إبراهيمَ إنَّك حميدٌ مجيدٌ.

अर्थात: "हे अल्लाह! मोहम्मद एवं मोहम्मद के परिवार पर अपनी रहमत (कृपा) अवतरित फ़रमा, जैसा कि तूने इब्राहिम अलैहिस्सलाम और उनके परिवार पर अपनी रहमत (कृपा) अवतरित फ़रमाई, निसंदेह तू बड़े गुणों वाला सम्मान वाला है, हे अल्लाह! मोहम्मद एवं मोहम्मद के परिवार पर अपनी बरकत (आशीर्वाद) अवतरित फ़रमा, जिस प्रकार तूने इब्राहिम अलैहिस्सलाम और उनके परिवार पर अपनी बरकत नाज़िल फ़रमाई, नि: संदेह तू बड़े गुणों वाला महान है।"

2{इसे बुखारी (३३७०) और मुस्लिम (४०६) ने काब बिन (पुत्र) उजरह रजिअल्लाहु अनहु से वर्णन किया है।}

क्या इससे अधिक भी उनका कोई सम्मान हो सकता है की पांच समय की नमाज़ (प्रार्थना) में उनके लिए प्रार्थना किया जाए?

अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको क़ुरआन की बरकत (आशीर्वाद) से लाभ पहुंचाए, मुझे और आप सबको उसकी आयतों और हि़कमत (प्रतिज्ञा) पर आधारित परामर्शों से लाभ पहुंचाए मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सबके लिए क्षमा प्राप्त करताहूं आप भी उससे अपने पापों की क्षमा प्राप्त करें निसंदेह वह अति तौबा स्वीकार करने वाला और अति क्षमा प्रदान करने वाला है।

द्वितीय उपदेश

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى أما بعد.

प्रशंसाओं के पश्चात:

ए अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो और जान लो कि -अल्लाह आप पर कृपा करे- हमारे पूर्वजों ने पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के परिवार के सम्मान में (उत्तम) उदाहरणें स्थापित किए हैं। अबू बकर सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَقَرَابَةُ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحَبُّ إِلَيَّ أَنْ أَصِلَ مِنْ قَرَابَتِي. (البخاري:٣٧١٢، مسلم:١١٥٩)

अर्थात: "क़सम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरा प्राण है, नि: संदेह पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के परिजनों के साथ उत्तम व्यवहार करना मेरे लिए अपने परिजनों के साथ उत्तम व्यवहार करने से भी अधिक पसंद है।"

1{इसे बुख़ारी :(३७१२) और मुस्लिम: (१७५८) ने वर्णन किया है।}

ए मुसलमानो! अहले सुन्नत वल जमाअ़त

पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के परिवार के साथ मित्रता एवं प्रेम का संबंध रखते हैं, रवाफ़िज़ (शीया) का यह दावा बिलकुल सत्य नहीं कि मात्र वही लोग आपके परिवार से प्रेम रखते हैं, शेष अन्य लोग उनके साथ अन्याय करते हैं, बल्कि सत्य यह है कि रवाफ़िज़ (शीया) ने पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के परिवार के साथ इतने अत्याचार किए हैं जिनका कोई उदाहरण नहीं, उनहोंने उनका अपमान किया और उनको धोखा दिया, अहल-ए-बैत (आपके परिवार) के प्रति अनेक ह़दीसों के खंडन का कारण बने, क्योंकि उनके प्रति यह प्रसिद्ध

हो गया कि वे अहल-ए-बैत के प्रति झूठ घड़ते हैं, अथवा रवाफ़िज़ (शीया) अहले बैत के प्रेम को कुछ ही सदस्यों तक सीमित करते हैं जब कि सुन्नत (पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कार्य एवं कथन) को मानने और उसका स्थिरता पूर्वक पालन करने वाले (सुन्नी) समस्त अहल-ए-बैत से प्रेम एवं मित्रता का संबंध रखते हैं, अथवा यह कि रवाफ़िज़ (शीया) अहल-ए-बैत के जितने सदस्यों से प्रेम का दावा करते हैं, उनसे कहीं अधिक वे उनसे घृणा करते हैं।

जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आपको एक बड़ी चीज़ का आदेश दिया है अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात: "अल्लाह तआ़ला एवं उसके देवदूत उस पैग़ंबर पर रह़मत (कृपा) भेजते हैं ए विशवासियो! तुम भी उन पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजते रहा करो।"

पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है:

إِنَّ مِنْ أَفْضَلِ أَيَّامِكُمْ يَوْمَ الْجُمُعَةِ : فِيهِ خُلِقَ آدَمُ، وَفِيهِ قُبِضَ، وَفِيهِ النَّفْخَةُ، وَفِيهِ الصَّعْقَةُ ؛ فَأَكْثِرُوا عَلَيَّ مِنَ الصَّلَاةِ فِيهِ ؛ فَإِنَّ صَلَاتَكُمْ مَعْرُوضَةٌ عَلَيَّ. (النسائي:١٣٧٣، أبو داود:١٠٤٧، ابن ماجه:١٠٨٥)

अर्थात: "तुम्हारे पवित्र दिनों में से शुक्रवार का दिन है उसी दिन आदम (मनु) का जन्म हुआ उसी दिन उनकी रूह़ (आत्मा) निकाली गई उसी दिन सूर (तुरही) फूंका जाएगा २{अर्थात तुरही दूसरी बार फूंका जाएगा माने वह तुरही है जिसमें इसरफ़ील फूंक मारेंगे, यह वह देवदूत हैं जिनको तुरही में फूंक लगाने का आदेश दिया गया है जिसके पश्चात समस्त जीव क़बरों से उठ खड़े हो जाएंगे।} उसी दिन चीख़ होगी। ३{अर्थात: जिस से सांसारिक जीवन के अंत में लोग मदहोश हो कर गिर पड़ेंगे और समस्त जीव की मृत्यु हो जाएगी। यह मदहोशी उस समय उत्पन्न होगी जब सुर (तुरही) में सर्वप्रथम फूंक लगाया जाएगा ०२ फुंक के मध्य में ४० वर्षों का अंतर होगा।} इसीलिए उस दिन तुम लोग मुझ पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजा करो, क्योंकि तुम्हारा दुरूद मुझ पर प्रस्तुत किया जाता है।

हे अल्लाह तू अपने बंदे व रसूल (दास एवं संदेशवाहक) मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दया, कृपा एवं शांति भेज, तू उनके ख़ुलफ़ा (मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के

उत्तराधिकारीयों) ताबेईन (समर्थक) एवं क़यामत तक आने वाले समस्त आज्ञाकार्यों से प्रसन्न हो जा!

हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित कर दे, तू अपने एवं इस्लाम के शत्रुओं एवं विरोधीयों को नाश कर दे, तू अपने मुवह्हिद बंदों (अव्दैत वादियों) को सहायता प्रदान कर।

हे अल्लाह! तू हमारे देशों को शांतिपूर्ण बना दे, हमारे इमामों (प्रतिनिधियों), शासकों को सुधार दे, उन्हें हिदायत (सही मार्ग) का निर्देश दे, और हिदायत पर चलने वाला बना दे।

हे अल्लाह! तू समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने एवं अपने धर्म के उत्थान की तौफ़ीक़ प्रदान कर, उनको उनके प्रजा के लिए रह़मत (दया) का कारण बना दे!

हे अल्लाह ! जो हमारे प्रति, इस्लाम और मुसलमानों के प्रति बुराई का भाव रखते हैं, उसे तू अपनी ही ज़ात में व्यस्त कर दे और उसके फ़रेब व चाल को उलटा उसके लिए वबाल बना दे!

हे अल्लाह! मुद्रास्फीति, महामारी, ब्याज बलात्कार, भूकंप एवं आज़माइशों को हम से दूर कर दे और प्रत्येक प्रकार के आंतरिक एवं बाह्य फ़ित्नों (उत्पीड़नों) को हमारे ऊपर से उठा ले, सामान्य रूप से समस्त मुस्लिम देशों से और विशेष रूप से हमारे देशों से ऐ दोनों जहां के पालनहार! हे अल्लाह! हमारे ऊपर से महामारी को दूर कर दे, नि:संदेह हम मुसलमान हैं।

हे हमारे रब! हमें दुनिया और आख़िरत में समस्त प्रकार की अच्छाई दे, और नरक की यातना से हम को मुक्ति प्रदान कर!

आपका रब (पालनहार) अति सम्मान वाला है और उन समस्त चीज़ों से पवित्र है जो बहुदेववादी उनके प्रति बताते हैं।

पैगम्बरों पर सलाम (शांति) है और समस्त प्रशंसाएं अल्लाह रब्बुल आलमीन (दोनों संसार का पालनहार) के लिए योग्य हैं जो समस्त संसार का पालनहार है।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين

शीर्षक: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ह़क़ूक़ में से आप पर दुरूद व सलाम भेजना भी है

पहला खुतबा :

हर प्रकार की प्रशंसा अल्लाह तआला के लिये है,हम उसी की प्रशंसा करते हैं,उसी से सहायता मांगते हैं और उसी से क्षमा मांगते हैं,और हम अपने नफ्सों और अपने अमलों की बुराइयों से अल्लाह की पनाह चाहते हैं,जिसे अल्लाह हिदायत दे उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता,और मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं,वह अकेला है उस का कोई साझी नहीं,और मैं गवाही देता हूं की मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और उस के संदेष्टा हैं।

अल्लाह की प्रशंसा और उस के नबी ﷺ पर दरूदो सलाम के बाद :

सब से उत्तम कलाम अल्लाह का कलाम है और सब से उत्तम मार्ग मुहम्मद ﷺ का मार्ग है,सब से बुरी चीज़ दीन में घड़ी गई बिदअतें हैं और (दीन में) हर घड़ी गई चीज़ बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम में ले जाने वाली है।

● ऐ मुसलमानो! अल्लाह तआला से डरो और उस से खौफ खाओ,उस की पैरवी करो और उस की नाफर्मानी से बचो और याद रखो कि मुहम्मद ﷺ के हुकूक में से आप पर सलातो सलाम भेजना है और आप के लिये वसीला,फज़ीलत और मक़ामे महमूद की प्राप्ति की दुआ करना है जिस का अल्लाह ने आप से वादा किया है।

● और नबी ﷺ पर सलात का अर्थ है आप के लिये दया और उत्तम स्थान की प्रार्थना करना,क्योंकि शब्दकोश में सलात का अर्थ है दुआ करना,जैसा कि अल्लाह तआला के इस कथन में आया है :

﴿خُذۡ مِنۡ أَمۡوَٰلِهِمۡ صَدَقَةٗ تُطَهِّرُهُمۡ وَتُزَكِّيهِم بِهَا وَصَلِّ عَلَيۡهِمۡۖ إِنَّ صَلَوٰتَكَ سَكَنٞ لَّهُمۡۗ﴾ [سورة التوبة:١٠٣]

तर्जुमा :आप उन के मालों में से सदक़ा ले लीजिये जिस के ज़रिये से आप उन को पाक साफ कर दें और उन के लिये दुआ की जिये,निःसंदेह आप की दुआ उन्हें षांति देगा।

अर्थात उन के लिये दुआ करो क्योंकि तुम्हारी दुआ उन के लिये सूकून और षांति लायेगा।

और फरिश्तों का नबी ﷺ पर सलात भेजने का अर्थ है दया और रहमत की दुआ करना और आप की प्रशंसा करना।

और अल्लाह तआला का नबी ﷺ पर सलात भेजने का अर्थ है दया करना और फरिश्तों के बीच आप की प्रशंसा करना।

खुलासा यह है कि नबी ﷺ पर सलात भेजने का अर्थ आप का सम्मान और आदर करना,आप से प्रेम करना और आप की प्रशंसा करना और लोगों और फरिश्तों के सलात का अर्थ है अल्लाह ताला से इस बात को तलब करना कि आप की प्रशंसा की जाये,आप का ज़िक बुलंद हो और आप का सम्मान और आदर अधिकतर हो।

● हे मोमिनो! नबी ﷺ पर सलाम भेजने का अर्थ आपके लिये **समस्त संकटों एवं कठिनाइयों** से रक्षा तलब करना है और आप की इज़्जत की रक्षा करना और आप पर कोई कीचड़ न उछाल सके और न आप पर काई आंच आये इस में दाखिल है।

इस प्रकार नबी ﷺ पर सलातो सलाम भेजने से हर प्रकार की भलाइयां जमा हो जाती हैं,इब्ने कसीर **रहिमहुल्लाह** सूरे अहज़ाब की इस आयत :

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

तर्जुमा : ऐ ईमान वालो! नबी पर सलातो सलाम भेजते रहो।

की तफ्सीर में कहते हैं : कि इस आयत का उद्देश्य फरिश्तों के बीच अपने बंदे और नबी ﷺ के स्थान को स्पष्ट करना है इस प्रकार कि अल्लाह ताला फरिश्तों के बीच नबी ﷺ की प्रशंसा करता है और फरिश्ते आप पर सलात भेजते हैं,फिर अल्लाह तआला ने नीचे रहने वाली सृष्टि को नबी ﷺ पर

सलातो सलाम भेजने का आदेश दिया ताकि ऊपर और नीचे रहने वाली हर एक मखलूक की प्रशंसा आप के लिये जमा हो जाये।[1]

● हे अल्लाह के बंदो! जब बंदा नबी ﷺ पर सलात भेजने का इरादा करे तो सलात और सलाम दोनों भेजे,इन में से किसी एक को केवल न भेजे,अर्थात इस प्रकार केवल यह न कहे : (सल्लाल्लाहु अलैहे) और न केवल यह कहे : (अलैहिस्सलाम)।

और यह बात इस आयते करीमा :

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

तर्जुमा : ऐ ईमान वालो! नबी पर सलातो सलाम भेजते रहो।[2]

से ली गई है,जैसा की इमाम नौवी और इमाम इब्ने कसीर **रहिमहुमुल्लाह** ने फर्माया है।

● ऐ मुसलमानो! जब नबी ﷺ का ज़िक आये तो आप पर सलात भेजना अनिवार्य है जैसा कि दो हदीसों में यह बात बतौरे धमकी आई है,पहली हदीस नबी ﷺ ने फर्माया : वह व्यक्ति बखील है जिस के सामने मेरा ज़िक हो और वह मुझ पर सलात ने भेजे।[3]

और दूसरी हदीस में आप ने फर्माया :

(رَغِمَ أَنْفُ رَجُلٍ ذُكِرْتُ عِنْدَهُ فَلَمْ يُصَلِّ عَلَيَّ)

;[1]द्धतफ्सीर सूरतुल अहज़ाब : 56

;[2]द्धदेखें : किताब "अल अज़्कार " बाब सिफतुस्सलाति अला रसूलिल्लाह ﷺ व तफ्सीर अल कुर्आन अल अज़ीम सूरतुल अहज़ाब : 56

;[3]द्धइसे इब्ने हिब्बान ने (3/189) में और नसाई ने अल कुबरा (9800) किताब अमलुल योम वल्लैला बाब मनिल बखील में और तिर्मिज़ी ने(3546) और अहमद ने (1/201) में हुसेन बिन अली बिन अबी तालिब से रिवायत किया है और अल्लामा अलबानी ने सही कहा है,और षैख षुऐब अर्नऊत ने कहा है कि इस की सनद मज़बूत है।

उस व्यक्ति की नाक मिट्टी में रगड़ जाये[1] जिस के सामने मेरा ज़िक्र हो और वह मुझ पर सलात ने भेजे।[2]

● ऐ अल्लाह के बंदो! नबी ﷺ पर हर हाल में सलात भेजना मुस्तहब है,परन्तु दस खास जगहों में सलात का ज़िक्र है और वह निम्न लिखित प्रकार हैं :

पहली जगह : नमाज़ के अंतिम तशह्हुउद में।

दूसरी जगह : नमाज़े जनाज़ा में दूसरी तक्बीर के बाद।

तीसरी जगह : खुतबों में जैसे जुमा,ईदैन और नमज़े इस्तिस्क़ा आदि खुतबों में,इब्ने क़य्यिम कहते हैं : सहाबा के यहां खुतबों में नबी ﷺ पर सलात भेजना जानी पहचानी सी बात थी।[3]

चौथी जगह : जुमा के दिन,औस बिन अबी औस رضي الله عنه कहते हैं : रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : तुम्हारे दिनों में सर्वोत्तम जुमा का दिन है,इसी दिन आदम عليه السلام पैदा किये गये और इसी दिन आप की मृति हुई,इसी दिन सूर फूंका जायेगा और लोग बेहोश हो कर गिर पड़ेंगे,तो तुम मुझ पर अधिकतर दरूद भेजो क्योंकि तुम्हारा दरूद मुझ तक पहुंचा दिया जाता है।[4]

पांचवीं जगह : मोअज़्ज़िन की अज़ान का जवाब देने के बाद,इमाम मुस्लिम अपनी सही में अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस رضي الله عنه से रिवायत करते हैं उन्हों ने रसूलुल्लाह ﷺ को फर्माते हुये सुना : जब तुम मोअज़्ज़िन को अज़ान देते हुये सुनो तो जो मोअज़्ज़िन कह रहा है तुम भी कहो फिर तुम मुझ पर दरूद भेजो क्योंकि जो मुझ पर एक बार दरूद भेजेगा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल करेगा।[5]

;[1]द्धअर्रुगाम का अर्थ है : मिट्टी अर्थात बद दुआ करना है कि उस की नाक मि मिट्टी में रगड़ जाये।

;[2]द्धइसे तिर्मिज़ी ने (3545) में और अहमद ने (2/254) में अबू हुरेरा رضي الله عنه से रिवायत किया है और मुस्नद की तहक़ीक़ करने वालों ने इसे सही कहा है और अलबानी ने इस हसन सही कहा है।

;[3]द्ध "जिलाउल अफहाम" अल मौतिनुल खामिस मिन मवातिनिस्सलाति अलन्नबी ﷺ पेज : 441 प्रकाशक: दारो आलमिल फवाइद।

;[4]द्ध इसे नसाई ने (1373) में और अबू दावूद ने (1047) में और इब्ने माजा ने (1085)में और अहमद ने (4/8) में रिवायत किया है और अल्लामा अलबानी ने सही अबू दावूद में इसे सही कहा है।

;[5]द्ध नम्बर (384)

अल्लाह के बंदो! छटी जगहः दुआ करते समय,और इस की दलील फुज़ाला बिन उबैद ﷺ की हदीस है,कहते हैं : रसूलुल्लाह ﷺ हमारे बीच[1] बैठे हुये थे कि अचानक एक व्यक्ति आकर **नमाज़ पढ़ने** लगा,[2] उस ने कहा : ऐ अल्लाह! मुझे क्षमा कर दे और मुझ पर दया कर,तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : ऐ दुआ करने वाले तू ने जल्द बाज़ी की जब तू दुआ करने के लिये बैठे तो अल्लाह की शान अनुसार उस की प्रशंसा कर और मुझ पर दरूद भेज फिर तू अल्लाह से दुआ कर,फिर एक और व्यक्ति उस के बाद आया,उस ने अल्लाह की प्रशंसा की और नबी ﷺ पर दरूद भेजा तो आप ने फर्माया : ऐ दुआ करने वाले दुआ कर तेरी दुआ क़बूल की जायेगी।[3]

और उमर ﷺ ने से रिवायत है कहते हैं : निःसंदेह दुआ आकाश और धर्ती के बीच टंगी रहती है वह ऊपर नहीं जाती जब तक तुम अपने नबी ﷺ पर दरूद न भेजो।[4]

सातवीं और आठवीं जगह : मस्जिद में प्रवेष करते और उस से निकलते समय,नबी ﷺ से प्रमाणित है कि जब आदमी मस्जिद में प्रवेष करे तो नबी ﷺ पर दरूदो सलाम भेजे फिर यह दुआ पढ़े :

(اللهم افتح لي أبواب رحمتك)

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! तू मुझ पर अपनी दया के द्वार खोल दे।[5]

और जब मस्जिद से निकले तो तो नबी ﷺ पर दरूदो सलाम भेजे फिर यह दुआ पढ़े :

;[1]द्ध बैन अर्थात बैनमा

;[2]द्धसल्ला अर्थात दआ(दुआ किया)

;[3]द्धइसे अबू दावूद ने (1481) में और तिर्मिज़ी ने (3477) में षब्द इन्हीं के हैं, और नसाई ने (1284) में नक़ल किया है और तिर्मिज़ी ने इसे हसन सही कहा है और अल्लामा अलबानी ने इसे सही कहा है।

;[4]द्धइसे तिर्मिज़ी ने (486) में नक़ल किया है और अल्लामा अलबानी ने इसे सही कहा है।

;[5]द्धदेखें : सुनन इब्ने माजा (771) और सुनन तिर्मिज़ी (314) और मुसन्नफ इब्ने अबी षैबा (3412) और अल्लामा अलबानी ने इसे सही कहा है बिना झमा वाले वाक्यों वाली रिवायत को,देखें सही अल तिरमिजी।

(اللهم افتح أبواب فضلك)

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! तू मुझ पर अपने फज़्ल (من) के द्वार खोल दे।

नौवीं जगह : सफा और मरवा के बीच सई करना,वह्ब बिन अज्दा से रिवायत है कहते हैं मैं ने उमर ﷺ को मक्का में खुतबा देते हुये सुना,उन्हों ने कहा : जब तुम में से कोई व्यक्ति हज के इरादे से आये तो वह काबे का सात बार तवाफ करे और मक़ामे इब्राहीम के निकट दो रकात नमाज़ पढ़े फिर सफा पर जाये और काबे की ओर मुंह करके सात बार अल्लाहु अकबर कहे,हर दो तक्बीरों के बीच अल्लाह की प्रषंसा और उस की तारीफ करे और नबी ﷺ पर दरूद भेजे और अपने लिये अल्लाह से दुआ करे और इसी प्रकार मरवा पर भी करे।

दस्वीं जगह : जब क़ौम के साथ किसी मज्लिस में हो तो उन से अलग होने से पहले, अबू हूरेरा ﷺ से रिवायत है,कहते हैं रसूल ﷺ ने फर्माया : जब कोई क़ौम किसी मज्लिस में जमा हो और वे न तो अल्लाह का ज़िक्र करें और न उस के नबी ﷺ पर दरूद भेजें मगर क़यामत के दिन उन का नुक़सान(قسورة) होगा,अगर अल्लाह चाहेगा तो उन्हें क्षमा कर देगा और अगर चाहेगा तो उन की पकड़ करेगा।(٥١)

यह दस जगहें खास हैं जहां जहां नबी ﷺ पर दरूद पढ़ना मुस्तहब है इस बात को ध्यान में रखते हुये कि हर हाल में दरूद पढ़ना मुस्तहब है।

अल्लाह के बंदो! अल्लाह तआला मुझे और आप सब को महान कुर्आन में बर्कत दे,और मुझे और आप सब को कुर्आन में पाई जाने वाली आयतों और हिकमत वाले ज़िक्र से लाभ पहुंचाये,मैं अपनी यह बात कहते हुये अपने लिये और आप सब के लिये हर पाप से अल्लाह तआला से क्षमा मांगता हूं तुम भी

;[1]द्धइसे बैहक़ी ने (5/94) (9343) में और इब्ने अबी षैबा ने (14501) में संक्षिप्त में रिवायत किया है और साहिबे जामे अलआसार अस्सहीहा अन अमीरिल मोमिनीन उमर बिन अल खत्ताब ﷺ पेज : 159 ने इसे हसन कहा है।

;[2]द्धअर्थात : नक़्स (नुकसान) देखें : अन्निहाया ।

;[3]द्धइसे अहमद ने (2/484) और तिर्मिज़ी ने (3380) में रिवायत किया है और मुस्नद की तहक़ीक करने वालों ने इसे सही कहा है और अल्लामा अलबानी ने इसे सिलसिला अस्सहीहा (1/156) में सही कहा है।

उसी से क्षमा मांगों निःसंदेह वह अधिक तौबा क़बूल करने वाला और अधिक क्षमा करने वाला है।

दूसरा खुतबा

संपूर्ण प्रषंसा अल्लाह के लिये है और वह अपने बंदों के लिये काफी है,और उस के उन बंदों पर दरूदो सलाम हो जिन को उस ने चुना,प्रशंसा और सलातो सलाम के बाद : ऐ मुसलमानो! आप लोगों पर यह बात ढकी छुपी नहीं है कि दुनिया करोना वायरस के दूसरे लहर से जूंझ रही है,और यह लहर पहले से बड़ी है और कुछ मुल्कों के हेल्थ सेंटरों ने यह महसूस किया कि संक्रमित बढ़ रहे हैं और उन्हों ने चेतावनी दी है कि इस का महत्वपूर्ण कारण एहतियाती उपायों का लागू न करना है।

अल्लाह तआला ने मुसलमानों पर यह अनिवार्य किया है कि वे पांच ज़रूरी चीज़ों की हिफाज़त करें अर्थात दीन,बुद्धि,इज़्जत,जान और माल की,इस लिये स्वास्थ्य की हिफाज़त अनिवार्य है,इसी प्रकार जाने पहचाने एहतियाती उपायों का पालन करना अर्थात मास्क पहनना हाथों को सेनिटायज़र करना,मस्जिद में मुसल्ला लेकर आना और गलत सलत खबरों के फैलाने से बचना जिस के कारण बीमारी में पड़ने का खतरा बढ़ जाये।

फिर आप जान लें–अल्लाह आप पर दया करे–बला और वबा में पड़ने के कारणों में से गुनाह और पाप हैं,अल्लाह तआला का कथन है :

﴿ظَهَرَ ٱلْفَسَادُ فِى ٱلْبَرِّ وَٱلْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِى ٱلنَّاسِ لِيُذِيقَهُم بَعْضَ ٱلَّذِى عَمِلُوا۟ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤١﴾﴾ [سورة الروم:٤١]

तर्जुमा : खुषकी और तरी में लोगों के बुरे अमलों के कारण फसाद फैल गया,इस लिये कि उन्हें उन के कुछ करतूतों का फल अल्लाह तआला चखादे,षायद वे बाज़ आ जायें।

और इस का इलाज संपूर्ण पापों से सच्ची तोबा,अधिकतर अल्लाह के समीप गिड़गिड़ाना और दूख दूर करने की प्रार्थना करना है और भोर और सायं में अज़्कार पढ़ना और नमाज़ की पाबंदी करना और अधिकतर नफ्ली इबादत

करना,सदक़ा और खैरात करना,लोगों के बीच सुलह कराना,धोका धड़ी और रिश्तों के तोड़ने से बचना आर हराम खान पान से बचना जैसे सिगरेट,नशे वाली वस्तुयें सेवन करना,औरतों का बेपरदा निकलना और मर्दों संग खलत मलत होना, जब यह सब चीज़ें फैलेंगी तो यह आम मुसीबतों और बलाओं का महत्वपूर्ण कारण बनेंगी।

ए अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो और आप जान लो कि अल्लाह ने आप को बहुत बड़े कार्य का आदेश दिया है अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात: (अल्लाह तआला एवं उसके फरिश्ते (देवदूत) उस नबी पर रहमत भेजते हैं ए इमान वालो! तुम भी उन पर दुरुद (अभिवादन) भेजो एवं खूब सलाम भेजते रहो)।

अल्लाह तू अपने बंदे व रसूल (दास एवं संदेशवाहक) मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दया (कृपा) एवं शांति भेज तू उनके ख़ुलफ़ा, मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उत्तराधिकारीयों, ताबेईन (समर्थक) एवं क़यामत तक आने वाले समस्त आज्ञाकार्यों से प्रसन्न हो जा!

ए अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर! बहुवाद एवं बहुवादियों को अपमानित कर दे! तू अपने एवं इस्लाम के शत्रुओं एवं विरोधीयों को नाश कर दे! तू अपने मुवह्हिद बंदों, अव्दैतवादियों, को सहायता प्रदान कर!

ए अल्लाह! तू हमारे देशों को शांतिपूर्ण बना दे, हमारे इमामों, प्रतिनिधियों, शासकों को सुधार दे, उन्हें हिदायत, सही मार्ग, का निर्देश दे और हिदायत पर चलने वाला बना।

ए अल्लाह! तू समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने एवं अपने धर्म के उत्थान की तौफ़ीक़ प्रदान कर, उनको उनके प्रजा के लिए रह़मत (दया) का कारण बना दे! ए अल्लाह हमारे प्रति इस्लाम और मुसलमानों के प्रति जो बुराई का भाव रखते

हैं, उसे तू अपनी ज़ात में व्यस्त कर दे और उसके फ़रेब व चाल को उलटा उसके लिए व बाल बना दे!

ए अल्लाह! मुद्रास्फीति, महामारी, ब्याज बलात्कार, भूकंप एवं आज़माइशों को हम से दूर कर दे और प्रत्येक प्रकार के आंतरिक एवं बाह्य फ़ित्नों (उत्पीड़नों) को हमारे ऊपर से उठा ले सामान्य रूप से समस्त मुस्लिम देशों से और विशेष रुप से हमारे देश से! ए दोनों जहां के पालनहार! ए अल्लाह! हमारे ऊपर से महामारी को दूर कर दे, निःसंदेह हम मुसलमान हैं।

ए हमारे रब! हमें दुनिया और आख़िरत में हर प्रकार की अच्छाई दे, और नरक की यातना से हम को मुक्ति प्रदान कर!

سبحان ربك رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين.

शीर्षकः मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजने के फ़ायदे

إن الحمد لله، نحمده ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضلَّ له، ومن يُضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रशंसाओं के पश्चातः

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मार्ग है। दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्करित बिदअत (नवाचार) हैं और प्रत्येक बिदअत (नवोन्मेष) गुमराही है और हर गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुस्लमानो अल्लाह का तकवा अपनाओ और उसी से डरते रहो, उसकी आज्ञा करो और उसके अवज्ञा से बचो और जान लो कि पैगम्बर सल्लाहु अलिहे वसल्लम पर दरूद भेजने से दस लाभ प्राप्त होते हं।

1 –अल्लाह ने पैगम्बर स अ व पर दरूद भेजने का जो आदेष दिया है उसका पालन होगा जो कि अल्लाह के इस कथन में आया हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थातः ''अल्लाह और उस के देवदूत उस नबी पर कृपा भेजते हैं,ए ईमान वालो! तुम भी उन पर दरूद भेजो और अति सलाम भी भेजते रहा करो''

2–दासों का अल्लाह के पैगम्बर पर दरूद भेजना एक प्रार्थना है जो एक स्थाई पूजा का महत्व रखता है और जिस का अल्लाह ने आदेष दिया है और उस पर पुण्य भी रखा है।

3– जो व्यक्ति एक बार पैगम्बर स अ व पर दरूद भेजता है अल्लाह तआला की ओर से उस व्यक्ति को दस कपा प्राप्त होते हैं, जैसा कि आप स अ व का कथन हैः

مَنْ صَلَّى عَلَيَّ صَلَاةً صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ بِهَا عَشْرًا (مسلم: ٣٨٤)

अर्थातः जो मुझ पर एक बार दरूद भेजता है अल्लाह इस कारण से उस पर दस कपा भेजता है।

और बदला कम ही के लिंग से होता है, अतः जो अल्लाह के पैगम्बर स अ व की प्रषंसा करता है अल्लाह तआला भी उस कार्य का बदला उसी प्रकार प्रदान करता है वह इस प्रकार कि उसकी प्रषंसा करता है और उसके मान सम्मान में वृधि करता है।

4–दरूद पढने वाले व्यक्ति की प्रतिश्ठा दस गुना बढ जाती है, उस के लिए दस पुण्य लिख दिया जाते हैं जैसा कि अबदूल्लाह बिन अमर रजिअल्लाहु अनहु से वर्णित है वह फरमाते हैं कि पैगम्बर स अ व ने फरमायाः

مَنْ صَلَّى عَلَيَّ صَلَاةً وَاحِدَةً صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ عَشْرَ صَلَوَاتٍ، وَحُطَّتْ عَنْهُ عَشْرُ خَطِيئَاتٍ، وَرُفِعَتْ لَهُ عَشْرُ دَرَجَاتٍ

अर्थातः जो मुझ पर एक बार दरूद भेजता है अल्लाह उस पर दस कृपा भेजता है,उसके दस पाप को मिटा देता है और उस के दस श्रेणी को बढ़ा दिया जाता है।

''इसे नेसाई ने अल सोनन अल कुबरा में वर्णन किया है हदिस संख्याः1221''

5– अल्लाह के पैगम्बर पर दरूद भेजना पापों के मिटने का कारण बनता है और दास के लिए गम और दख से मुक्ति का कारण बनता है।

''1– इसे तिरमीजी ने वर्णन किया है 2457 और इसमाईल अलकाजी ने फजलुस्सलात अला अलनबी स अ व 14 में इसी प्रकार वर्णन किया है और अहमद 5/136 में इसे संक्षेप में वर्णन किया है और अलबानी रहिमहुल्लाह ने अलसहीहा के

अंदर हदीस संख्या 954 के अंतर्गत इसे हसन कहा है।''

अर्थातःओबैयबिनकअ्ब रजिअल्लाहुअनहु कहते हैं कि जब दो तीहाई रात बीत जाती तो रसूल सल्लाहु अलिहे वसल्लम उठते और फरमातेः लोगो! अल्लाह को याद करो ,खरखराने वाली आगई है और उसके साथ एक दूसरी आलगी है, मौत अपनी सेना लेकर आगई है मौत अपनी सेना लेकर आगई है, मैने कहाः ए अल्लाह के नबी में आप पर अति दरूद भेजता हूॅ तो आप बता दीजीए कि कितना समय आप पर दरूद भेजने के लिए नीकाल् ? आप ने फरमायाः तूम जितना चाहो, मेंने कहाः एक चौथाई? आप ने कहाः तुम जितना चाहो और यदि उस से अधिक करलो तो तुमहारे लिए अच्छा है, मैंने कहा :आघा? आप ने फरमायाः जितना तुम चाहो और यदि उस से अधिक करलो तो तुम्हारे लिए अच्छा है, मैंने कहाः दा तीहाई? आप ने फरमायाः जितना तुम चाहो और यदि उस से अधिक करलो तो तुम्हारे लिए अच्छा है, मैंने कहाः पूरी रात? आप ने कहाः तब तुम्हारे सारे गम खत्म हो जाऐंगे और सारे पाप भी मिट जाऐंगे।

''इसे तिरमीजी 2457 ने वर्णन किया है,अह़मद 5/136 ने संछेप मे वणन किया है और अलबानी 945 ने सत्य कहा है।''

इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाह फरमाते हैंः इस व्यक्ति ''ओब्य बिन काब रजिअल्लाहु अनहु ''के पास एक विषेश प्रार्थना थी जो वह अल्लाह से किया करते थे, किंतु जब से उन्होंने अपनी विषेश प्रार्थना को छोड़ कर आप सल्लाहु अलिहे वसल्लम पर दरूद भेजना प्रारंभ किया तब से अल्लाह उनके संपूर्ण दुनयावि व उखरवि कठिनाईयों के लिए काफि हो गया,और वह जब भी आप सल्लाहु अलिहे वसल्लम पर दरूद भेजते अल्लाह उन पर दस कृपा भेजता और यदि वह कभी किसी मोमिन के प्रति दुआ करते

तो देवदूत आमीन कहने के साथ यह भी कहते हैं कि आपके लिए भी एसा ही हो, अतः उनका आप सल्लाहु अलिहे वसल्लम के लिए प्रार्थना करना अधिक उचित है,

''इब्ने तैमिया का कथन समाप्त हूआ'' :''मजमउल फतावा 1/193''

6–अल्लाह के बंदो! नबी सल्लाहु अलिहे वसल्लम पर अभिवादन भेजने का छटा लाभ यह है कि जब दूआ करने वाला अल्लाह के रसूल सल्लाहु अलिहे वसल्लम पर अभिवादन भेजने के साथ उस में आपके लिए वसीला की भी दूआ करता है तो यह उसके प्रति अनुषंसा का कारण बनता है।

अर्थातः'' हजरत अबदुल्लाह बिन आस रजिअल्लाहु अनहु से वर्णित है कि उन्होंने नबी सल्लाहु अलिहे वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना कि जब तुम मोअज़्ज़िन को सुनो तो उसी प्रकार कहो जैसे वह कहता है फिर मुझ पर अभिवादन भेजो कियों कि जो मुझ पर एक बार दरूद भेजता है अल्लाह तआला उस के बदले उस पर दस कृपा भेजता है,फिर अल्लाह से मेरे लिए वसीला मांगो क्यिों कि वह स्वर्ग में एक स्थान है जो अल्लाह के दासों में से केवल एक दास को मिलेगा और मुझे आषा है कि वह में ही हूँगा,तो जिसने मेरे लिए वसीला मांगा उसके लिए मेरी अनुषंसा अनिवार्य हो गई।''''मुस्लिम 384''

7–जब प्रार्थना करने वाला अपनी प्रार्थना से पूर्व अभिवादन करता है तो इस बात का आषा होता है कि प्रार्थना स्वीकत होगी क्यिों कि दरूद एक दास के प्रार्थना को अल्लाह के दरबार तक पहूँचा देती है।

अर्थातः ''उमर बिन खत्ताब रजिअल्लाहु अनहु कहते हैंः प्रार्थना आकाष एवं पृथवी के मध्य में रहती है उस से थोड़ा भी उपर नहीं जाती जब तक कि तुम नबी सल्लाहु अलिहे वसल्लम पर अभिवादन नहीं भेज देते।''

''तिरमीजीः486 अलबानी ने सही कहा है''

8–दरूद पढ़ना इस बात का कारण है कि उसका दरूद नबी सल्लाहु अलिहे वसल्लम पर प्रस्तुत किया जाता है,जैसा कि अल्लाह के नबी सल्लाहु अलिहे वसल्लम का कथन इस बात का साक्ष्य हैः

अर्थात : तुम्हारा अभिवादन मुझ पर प्रस्तुत किया जाता है।

''हदिस का एक टुकड़ा है जिसे अह़मद 8/4 आदि ने औस बिन अबू औस से वर्णन किया है,और मुस्नद के षोधकर्ताओं ने सत्य कहा है 16162''

एक व्यक्ति के लिए इस से बड़ी प्रतिश्ठा की बात और किया हो सकती है कि उसका अभिवादन नबी पर प्रस्तुत किया जाए।

9–दरूद किसी सभा को षुद्ध करने का कारण है उस सभा के तुलना में जिस में आप सल्लाहु अलिहे वसल्लम पर दरूद नहीं भेजा गया हो,निसंदेह क़यामत के दिन एसा सभा,सभा आयोजकों पर अफसोस का कारण बनेगा।

अर्थात: अबू होरैरा रजिअल्लाहु से वर्णन है वह कहते हैं कि पैगम्बर सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:जिस भी सभा में अल्लाह का उल्लेख न किया गया हो और न ही अल्लाह के पैगम्बर पर दरूद भेजा गया हो तो वह सभा क़ियामत के दिन कमी का कारण होगी,यदि अल्लाह चाहे तो सभा वालों को छमा प्रदान कर दे और यदि चाहे तो उन की पकड़ करे ''

''इसे अहमद 4842/2 आदि ने वर्णन किया है और मुस्नद के षोधर्कताओं ने 10277 सत्य कहा है और अलबानी ने अलसिलसिला अल सहीहा 156/1 में उल्लेख किया है''

10:दरूद पढ़ना पैगम्बर सल्लाहु अलिहे वसल्लम के प्रेम में स्थिरता एवं वृद्धि का कारण है और यह ईमान के अनुबंध में से एक अनुबंध है जो प्रेम के माध्यम से ही पूरा हो सकता है क्यों कि कोई व्यक्ति जितना अधिक अपने प्रेमि को याद करता है उसके गुणो और उसके प्रेम की ओर आकर्शित करने वाले गुणो को अपने ध्यान में ताजा करता है,उसके प्रेम में इसी प्रकार वृद्धि होता है ,प्रेमि से मिलन का षोक बढ़ता चला जाता है और पूर्णरूप से उसके हृदय पर हावी हो जाता है।

और जब बंदा अपने प्रेमि को याद करना छोड़ देता है और उसके गुणों को दिल से निकाल देता है तो हृदय मे उसका प्रेम भी कम हो जाता है।एक प्रेम करने वाले व्यक्ति की ऑखों को प्रेमि के दिदार से बढ़ कर कोई चीज ठंडक नहीं पहुॅचा सकती।

अल्लाह के बंदो! पैगम्बर सल्लाहु अलिहे वसल्लम पर दरूद भेजने के यह दस लाभ हैं जो इबने क़यियम रहिमहुल्लाह की पुस्तक'' जलाउल अफहाम'' का सार है।

अल्लाह मुझे और आप को पवित्र कुरान की बरकत से लाभ पहूॅचाए,उसकी आयतों एवं प्रज्ञता पर आधारित परामर्षों से मुझे और आपको लाभ पहूॅचाए,में अपनी यह बात कहते हूए अपने लिए और आप के लिए अल्लाह से छमा प्राप्त करता हूॅ अतः आप भी अपने पापों की छमा प्राप्त करें, निसंदेह वह तौबा स्वीकार करने वालों को अति छमा प्रदान करता है।

द्वितीय उपदेषः

الحمد لله وكفىٰ وسلام على عباده الذين اصطفى، أمابعد!!!

ए अल्लाह के बंदो! अल्लाह से डरो और जान लो कि नबी सल्लाहु अलैहे वसल्लम पर दरूद भेजने में आप के लिए वसीला व फजीला की प्रार्थना करना भी षामिल है

और यह भी कि अल्लाह तआला आप सल्लाहु अलैहे वसल्लम को उस मक़ामे मह़मूद तक पहूँचाए जिस का अल्लाह ने आप से वादा किया है,क्यों कि यह पैगम्बर सल्लाहु अलैहे वसल्लम के लिए प्रतिश्ठा और प्रषंसा की प्रार्थना है और यही आप पर दरूद भेजने का अर्थ है,इसका साक्ष्य जाबिर बिन अबदूल्लाह रजिअल्लाहु की ह़दीस है कि रसूल सल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फरमाया :

अर्थातः जो व्यक्ति अज़ान सुनते समय यह प्रार्थना पढ़े:

(اللَّهُمَّ رَبَّ هَذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ، وَالصَّلاَةِ القَائِمَةِ آتِ مُحَمَّدًا الوَسِيلَةَ وَالفَضِيلَةَ، وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَحْمُودًا الَّذِي وَعَدْتَهُ)

''हे अल्लाह! इस संपूर्ण दावत व क़ाइम होने वाली नमाज़ के रब! पैगम्बर सल्लाहु अलैहे वसल्लम को वसीला व प्रतिश्ठा प्रदान कर और उनको उस स्थान तक पहूँचा जिस का तू ने उन से वादा किया है''

तो कियामत के दिन उस के लिए मेरा प्रामर्ष अनिवार्य होगा।

''बोखारी 614''

अर्थातः हजरत अबदूल्लाह बिन अमर बिन आस रजिअल्लाहु अनहु से वर्णित है कि उन्हों ने पैगम्बर सल्लाहु अलैहे वसल्लम को सुना आप फरमा रहे थेः जब तुम मोअज़्जिन को सुनो तो उसी प्रकार कहो जैसे वह कहता है फिर मूझ पर दरूद भेजो कियों कि जो मूझ पर एक बार दरूद भेजता है अल्लाह उस के बदले उस पर दस कृपा भेजता है,भिर अल्लाह से मेरे लिए वसीला मांगो क्यों कि वह स्वर्ग में एक स्थान है जो अल्लाह के दासों में से केवल एक दास को प्रदान किया जाएगा और मूझे आषा है किवह में ही हूंगा,इस लिए जिस ने मेरे लिए वसीला मांगा उस के लिए मेरी अनुषंसा अनिवार्य होगी'' ''मुस्लिमः 384''

वसीला का अर्थ स्वर्ग के अंदर उच्च स्थान और फजीला का तात्पर्य सामान्य प्रतिश्ठा एवं सौभाग्य व पुण्य है, पैगम्बर सल्लाहु अलैहे वसल्लम के कथन ''मक़ामे मह़मूद''में ''मह़मूद'' का अर्थ वह स्थान है जहॉ खरे होने वाले की प्रषंसा कि जाए और ''मक़ाम''का अर्थ हिसाब व किताब के आरंभ के लिए खरे होने वाले के प्रति षिफाअ़ते कुबरा है और उस स्थान पर खरे होने वाले पैगम्बर सल्लाहु अलैहे वसल्लम हैं, ईस का साक्ष्य अबू होरैरा रज़िअल्लाहु अनहु की ह़दीस है वह कहते है कि पैगम्बर सल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फरमायाः

''इसे अह़मद 2/478 ने रिवायत किया है,मुस्नद के षोधकर्ताओं ने हसन लेगैरेहि कहा है इसी प्रकार इबने जरीर ने सूरह इसरा आयत संख्या 79 की तफसीर में वर्णन किया है''

अर्थातः ''मकामे मह़मूद का अर्थ प्रामर्ष है''

हदीस के अंत में अल्लाह के नबी का कथन हैः ‘‘मेरा प्रामर्ष दरूद पढ़ने वाले के लिए ह़लाल हो जाएगी’’ यह इस बात का प्रतीक है कि बदला कार्य के लिंग से ही मिलता है।

इसलिए जब प्रार्थना करने वाला अल्लाह के नबी के लिए यह प्रार्थना करता है कि अल्लाह आप सल्लाहु अलैहे वसल्लम को मक़ामे मह़मूद प्रदान करदे तो इस कारणवष प्रार्थना करने वाला इस बात का पात्र बनजाता कि वह उन व्यक्तियों की श्रेणी में षामिल हो जाता है जिन के प्रति पैगम्बर सल्लाहु अलैहे वसल्लम ने पापों की छमा और प्रतिश्ठा की उठान का प्रामर्ष करेंगे।

हे अल्लाह! तू हमें ऐसे लोगों में षामिल फरमा जिन को तेरे पैगम्बर सल्लाहु अलैहे वसल्लम का प्रामर्ष प्राप्त हो!

आप यह जान लें—अल्लाह आप पर कृपा करे —कि अल्लाह तअ़ाला ने आप को एक महान कार्य का आदेष दिया है,अल्लाह का कथन हैः

अर्थातः जो भी मुस्लमान अल्लाह के पैगम्बर पर अधिक से अधिक दरूद भेजेगा अल्लाह तअ़ाला उस के हृदय को आलोकित कर देगा,उसके पापों को छमा प्रदान करेगा,उसके हृदय को खोल देगा और उसके मामलों को आसान कर देगा,अतः अधिक से अधिक दरूद का पाठ किजिये।

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थातः (अल्लाह तअ़ाला एवं उसके देवदूत उस पैग़ंबर पर रह़मत (कृपा) भेजते हैं ए विशवासियो! तुम भी उन पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजते रहा करो।)

पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने समुदाय को शुक्रवार के दिन अपने ऊपर अधिक से अधिक दुरूद (इभिादन) भेजने का आदेश दिया है आपका कथन हैः

अर्थातः तुम्हारे पवित्र दिनों में से शुक्रवार का दिन है इसीलिए उस दिन तुम लोग मुझ पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजा करो, क्योंकि तुम्हारा दुरूद मुझ पर प्रस्तुत किया जाता है।

हे अल्लाह तू अपने बंदे व रसूल (दास एवं संदेशवाहक) मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दया, कृपा एवं शांति भेज, तू उनके ख़ुलफ़ा (मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उत्तराधिकारीयों) ताबेईन (समर्थक) एवं क़यामत तक आने वाले समस्त आज्ञाकार्यों से प्रसन्न हो जा!

हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित कर दे, तू अपने एवं इस्लाम के शत्रुओं एवं विरोधीयों को नाश कर दे, तू अपने मुवह़्हिद बंदों (अव्दैतवादियों) कोसहायताप्रदानकरा।हेअल्लाह! तू हमारे देशों को शांतिपूर्ण बना दे,

हमारे इमामों (प्रतिनिधियों) शासकों को सुधार दे, उन्हें हिदायत (सही मार्ग) का निर्देश दे, और हिदायत पर चलने वाला बना दे।

हे अल्लाह! तू समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने एवं अपने धर्म के उत्थान की तौफ़ीक़ प्रदान कर, उनको उनके प्रजा के लिए रहमत (दया) का कारण बना दे।

हे अल्लाह! जो हमारे प्रति, इस्लाम और मुसलमानों के प्रति बुराई का भाव रखते हैं, उसे तू अपनी ही ज़ात में व्यस्त कर दे और उसके फ़रेब व चाल को उलटा उसके लिए वबाल बना दे।

हे अल्लाह! मुद्रास्फीति, महामारी, ब्याज बलात्कार, भूकंप एवं आज़माइशों को हम से दूर कर दे और प्रत्येक प्रकार के आंतरिक एवं बाह्य फ़ित्नों (उत्पीड़नों) को हमारे ऊपर से उठा ले, सामान्य रूप से समस्त मुस्लिम देशों से और विशेष रूप से।

अल्लाह कठिनाईयॉ पापों के कारण ही जन्म लेती हैं और तौबा के माध्यम से ही दूर होती हैं,हमारे हाथ तेरे द्वार में उठे हूए हैं,हमारे सर तेरे द्वार में झुके हूऐ हैं, हे अल्लाह तू हम से इस महामारी को दूर करदे, निसंदेह हम मुस्लमान हैं।

हे अल्लाह जिसका भी इस महामारी के कारण निधन होगया है उन पर कृपा फरमा और जो लोग इस के कारण रोगी हैं उनको स्वास्थ्य और पूण्य प्रदान कर!

हे हमारे पालनहार हमें दुनयॉ व आखेरत की अच्छाई प्रदान कर और नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा!

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين

शीर्षक: नबवी प्रवासन से व्युत्पन्न १६ सीख एवं लाभ

إن الحمد لله نحمده، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रशंसाओं के पश्चात!

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मार्ग है। दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअत (नवाचार) है और प्रत्येक बिद्अत गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो! अल्लाह से डरो एवं उसका भय अपनी बुद्धि एवं हृदय में जीवित रखो। उसकी आज्ञा करो एवं अवज्ञा से वंचित रहा करो। ज्ञात रखो कि अल्लाह तआला ने अपने दूत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अवतार दूतों के चल बसने के एक लंबे समय के पश्चात किया जबकि इस धरती पर मूर्ति पूजा का चलन हो चुका था जिसमें इस धरती का सर्वश्रेष्ठ पाठ मक्का भी सम्मिलित था, इस कारणवश जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने परिवार के लोगों को इस्लाम की ओर आमंत्रित किया, उनमें से बहुत कम लोगों ने आपके आमंत्रण को स्वीकार किया, अधिकतम लोगों ने नकार दिया, चोरी छुपे यह प्रचार-प्रसार जारी था, क़ुरैश के काफ़िर इससे अनजान थे, परंतु जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाम के प्रचार-प्रसार की सूचना दी, काफ़िरों के पूज्यों की कमी को बताया एवं स्पष्ट रूप से उनका खंडन किया, तो उनके हृदय में अपने पूज्यों की सुरक्षा हेतु पक्षपात (का दीप जल उठा।) एवं बहुदेव वादियों के व्यवहार में अचानक परिवर्तन आ गया। इस कारणवश उन्होंने आपको (अपने प्रचार-प्रसार से हट जाने हेतु) धन-दौलत का झांसा दिया कि आप इससे सर्वश्रेष्ठ धनी हो जाएंगे, विवाह के नाम पर बहकाया कि आपका विवाह क़ुरैश की सबसे सुंदर महिला से हो जाएगा, आपको यह प्रस्ताव दिया कि वे आपको अपना शासक स्वीकार कर लेंगे, आपको यह भी अधिकार दिया के आप उनके पूज्यों की एक वर्ष तक पूजा करेंगे एवं वे आपके पूज्य कि एक वर्ष तक पूजा करेंगे, परंतु आपने इन संपूर्ण प्रस्तावों को ठुकरा दिया।

﴿وَدُّواْ لَوۡ تُدۡهِنُ فَيُدۡهِنُونَ ۝٩﴾ [سورة القلم:٩]

अर्थात: "वे तो चाहते हैं कि आप ढीले पड़ जाएं तो वे भी ढीले पड़ जाएंगे।"

उन्होंने आपके ऐसे आज्ञाकारों को दु: ख दिया एवं दंडित किया जो समाज में ना प्रभावशाली थे और ना ही उन्हें परिवार एवं जनजाति की सहायता प्राप्त थी। उन्हें बहुत ही दुखद यातना से दो-चार किया, ताकि वे बहुदेववाद की ओर पलट जाएं एवं इनके अतिरिक्त वो लोग जो अपने हृदय में इस्लाम के स्वीकार करने की इच्छा रखते हैं वे इन के प्रकोप से भयभीत हो जाएं।जब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि उनके सहाबा गंभीर परीक्षणों से पीड़ित हैं, एवं आप उनकी सहायता करने में भी असमर्थ हैं तो आपने उन्हें हबशा देश की ओर प्रवास करने की अनुमति दे दी। इस कारणवश सहाबा ने दो बार हबशा की ओर प्रवासन किया। प्रथम बार सन् पांच नबवी रहस्योद्घाटन (बेअ़सत-ए-नबवी) एवं द्वितीय बार सन् दस नबवी रहस्योद्घाटन (बेअ़सत-ए-नबवी) में, इसके पश्चात सहाबा ने मदीना की ओर प्रवास किया, फिर स्वयं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना की ओर प्रवास कर के सहाबा से भेंट किया ताकि इस्लाम के प्रचार-प्रसार का एवं अल्लाह की पूजा करने का लक्ष्य सफ़लतापूर्वक पूरा हो सके।

ए मुसलमानो! नबवी प्रवासन की घटना में बुद्धि लगाने वालों को उसके भीतर बहुत सी बुद्धिमत्ता दिखाई देती है एवं वे इससे अधिक से अधिक सीख एवं लाभ प्राप्त करते हैं, निम्नलिखित में उनमें से कुछ का उल्लेख किया जा रहा है:

(१) अल्लाह के मार्ग में धन, निवास एवं परिवार का बलिदान: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब मक्का से निकलने लगे तो मक्का की ओर मुड़कर फ़रमाया: "अल्लाह की क़सम! निःसंदेह तू अल्लाह की धरती में सर्वश्रेष्ठ है एवं अल्लाह की पृथ्वी में सबसे अधिक प्रिय धरती है, यदि मुझे तुझसे ना निकाला जाता तो मैं ना निकलता।" (इसे तिरमिज़ी: ३९२५ ने रिवायत किया है एवं अल्बानी ने सहीह कहा है।)

(२) प्रवासन की घटना से एक सीख यह भी प्राप्त होती है कि जिस मनुष्य को इस्लाम का प्रचार-प्रसार करने से किसी स्थान पर रोक दिया जाए तो उसे द्वितीय स्थान की ओर प्रस्थान कर लेना चाहिए, जहां वह प्रचार-प्रसार का काम चालू रख सके। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब क़ुरैश के निर्देश प्राप्त करने से निराश हो गए तो आपने मदीना की ओर प्रस्थान कर लिया ताकि वहां लोगों को अल्लाह की ओर आमंत्रण देने का कार्य चालू रख सकें।

(३) प्रवासन की घटना से एक सीख यह भी प्राप्त होती है कि कष्ट एवं परीक्षण का अल्लाह का जो सिद्धांत रहा है वह यहां अस्पष्ट है, क्योंकि स्वर्ग बहुमूल्य चीज़ है, जो शारीरिक विश्राम से

प्राप्त नहीं हो सकती, बल्कि अल्लाह की आज्ञाकारीता हेतु परिश्रम करने एवं इस मार्ग में आने वाली कठिनाइयों पर धीरज रखने से प्राप्त होती है।

﴿أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تَدْخُلُوا۟ ٱلْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ جَٰهَدُوا۟ مِنكُمْ وَيَعْلَمَ ٱلصَّٰبِرِينَ ﴿١٤٢﴾﴾ [سورة آل عمران:١٤٢]

अर्थात: "क्या तुम्हें यह भ्रम है कि तुम स्वर्ग में प्रवेश कर जाओगे हालांकि अल्लाह ने अभी तक यह स्पष्ट नहीं किया है कि कौन युद्ध लड़ने वाले हैं एवं कौन धीरज रखने वाले हैं?"

सर्वोच्च एवं सर्वश्रेष्ठ अल्लाह के लिए यह बहुत ही सरल बात थी कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हर प्रकार की कठिनाइयों एवं दुखों को दूर कर देते एवं क्षण भर में आपको मक्का से मदीना की ओर प्रस्थान कर देते, जैसा कि इसरा व मेअ़राज की रात्रि क्षण भर में "बुराक़" नामक सवारी के माध्यम से मक्का से बैतूल-मक़दिस प्रस्थान कराया, परंतु अल्लाह ने आपको परीक्षण से दो-चार करना चाहा ताकि आप अपने लोग एवं पश्चात में आने वाले लोगों हेतु प्रतिरूप बन सकें, धर्म का पालन एवं सत्यता की पहचान हो सके, अल्लाह के निकट आप का सवाब दोगुना हो जाए, एवं अल्लाह की ओर बुलाने वालों को आप से सीख मिल सके कि इस्लाम के प्रचार-प्रसार में जिन कठिनाइयों का सामना करना होता है उन पर धीरज रखना है।

(४) प्रवासन की घटना से हमें यह शिक्षा भी प्राप्त होती है कि संवेदी एवं शारीरिक साधनों को भी अपनाना चाहिए, इससे स्पष्ट होता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने प्रवास के लिए संवेदी तैयारी की। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जब तक अल्लाह तआ़ला ने आपको अनुमति नहीं दी तब तक आपने प्रवास नहीं किया, इसके अतिरिक्त आपने धरोहर रखने वाले यात्रा संगी का चयन किया, जो कि अबू बक्र रज़ि अल्लाहू अ़नहु हैं। अ़ब्दुल्लाह बिन अबू बक्र रज़ि अल्लाहू अ़नहुमा की सहायता प्राप्त की ताकि वह आपको क़ुरैश की सूचना पहुंचाया करें, अबू बक्र रज़ि अल्लाहू अ़नहु के नौकर आ़मिर बिन फ़ुहैरा की भी सहायता प्राप्त की कि वह आप दोनों को दूध पहुंचाया करें, वह अबू बक्र रज़ि अल्लाहू अ़नहु की बकरियां चराया करते थे, इसी प्रकार आपने पथों के दिशा-निर्देश प्राप्त करने हेतु अब्दुल्लाह बिन अरीक़त अल्-लैसी का सहयोग प्राप्त किया हालांकि वह बहुदेव वादी था परंतु वह धरोहर रखने वाला एवं पथों का महा ज्ञानी था।

साधनों को अपनाने का एक उदाहरण यह भी है कि आपने ऐसे पथ का चयन किया जो अनजान था ताकि बहूदेव वादियों के आंखों में धूल झोंक सकें।

साधनों को अपनाने का एक उदाहरण यह भी है मक्का के दक्षिण में परिस्थित सौर नामक गुफ़ा के भीतर आप तीन यात्रियों तक छुपे रहे इसके अतिरिक्त आप गुफ़ा से निकलकर मदीना की ओर उस वक्त तक कूच नहीं किए जब तक की बहूदेव वादियों ने आपका पीछा करना छोड़ ना दिया।

साधनों को अपनाने का एक उदाहरण यह भी है कि आपने अपने प्रवासन की बात को गुप्त रखा और केवल उन लोगों को इसकी सूचना दी जिन को बताना अति आवश्यक था। (ये वे लोग हैं जिन से आपने सहायता प्राप्त की) और उनका उल्लेख ऊपर हो चुका है।

ये वे १० बातें हैं जिनसे योजना के महत्व एवं साधनों को अपनाने संबंध में नबवी स्वभाव के प्रतिरूप की अस्पष्टता होती है।(८) प्रवासन की घटना से हमें यह भी ज्ञात होता है कि जो व्यक्ति अल्लाह के लिए किसी चीज़ को त्याग देता है तो अल्लाह तआला उस से अच्छा पुरस्कार उसे प्रदान करता है। इस कारणवश जब प्रवासियों ने अपना गृह, परिवार, संतान और धन एवं संपत्ति को (अल्लाह के लिए) त्याग दिया जो मानव की आत्मा हेतु सबसे अधिक प्रिय होते हैं तो अल्लाह ने उन्हें अच्छे परिणाम प्रदान किए वह इस प्रकार की संपूर्ण संसार में उन्हें सर्वश्रेष्ठ सफ़लता दी, पूर्व से लेकर पश्चिम तक का उन्हें स्वामी बना दिया, शाम, पारस, मिस्र उनके अधीन हो गए, मुसलमानों ने सहाबा के युग के पश्चात दक्षिण अफ़्रीक़ा की ओर प्रस्थान किया एवं उनदुलुस पर सफ़लता प्राप्त की।

(५) प्रवासन की घटना से हमें यह शिक्षा भी प्राप्त होती है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऊपर सूचीबद्ध संवेदी एवं शारीरिक साधनों पर ही निर्भर नहीं हुए, बल्कि आपके हृदय में केवल अल्लाह पर विश्वास था इसका साक्ष्य बहूदेव वादी जब गुफ़ा के निकट पहुंचेतो अबू बक्र ने कहा: हे अल्लाह के दूत! यदि उनमें से किसी ने भी अपने पैरों की ओर दृष्टि की तो नीचे हमें देख लेंगा। तो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तुम्हारा उन दो लोगों के संबंध में क्या विचार है जिनका तीसरा अल्लाह हो?" उन्हें कोई कष्ट नहीं हो सकता। (इसे बुख़ारी: ३६५३ एवं मुस्लिम: २३८१ ने रिवायत किया है एवं उल्लेख किए गए शब्द मुस्लिम के हैं)
अल्लाह तआला का सत्य कथन है:

﴿إِلَّا تَنصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ ٱللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ثَانِىَ ٱثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِى ٱلْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَٰحِبِهِۦ لَا تَحْزَنْ إِنَّ ٱللَّهَ مَعَنَا ۖ فَأَنزَلَ ٱللَّهُ سَكِينَتَهُۥ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُۥ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ٱلسُّفْلَىٰ ۗ وَكَلِمَةُ ٱللَّهِ هِىَ ٱلْعُلْيَا ۗ وَٱللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٠﴾﴾ [سورة التوبة:٤٠]

"यदि तुमने उनकी सहायता नहीं की तो अल्लाह नहीं उनकी सहायता की उस समय जबकि उन्हें काफ़िरों ने निकाल दिया था, दो में से द्वितीय जबकि वे गुफ़ा में थे जब वह अपने संगी से कह रहे थे: निराश ना हो अल्लाह हमारे साथ है। पालनहार ने अपनी ओर से शांति को अवतरित करके ऐसी सेनाओं के माध्यम से उनकी सहायता की जिन्हें तुमने देखा ही नहीं। उसने काफ़िरों की बात को पराजित कर दिया, एवं सर्वोच्च व सर्वश्रेष्ठ बात तो अल्लाह ही की है जो शक्तिशाली एवं बुद्धिमत्ता वाला है।

प्रवासन के मार्ग में सुराक़ा बिन मालिक अपने घोड़े पर सवार होकर आपका पीछा करता हुआ आप के निकट पहुंचा, अबू बक्र रज़ि अल्लाहू अ़नहु ने कहा: हे अल्लाह के दूत: अंततः यह खोज हमें आ ही मिली, आपने फ़रमाया: "निराश ना हो अल्लाह हमारे साथ है।" (बुख़ारी: ३६५२)

(६) प्रवासन की घटना से हमें यह शिक्षा भी प्राप्त होती है इस्लाम के प्रचार-प्रसार के मार्ग में धीरज एवं दृढ़ता पर स्थित रहना अनिवार्य है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि सल्लम ने प्रवासन के माध्यम से हमें यह शिक्षा दी की असत्य वादियों के समक्ष दृढ़ता के साथ स्थित रहना चाहिए चाहे वे क्रोधित ही क्यों ना हों। कभी-कभार मोमिनो के परिक्षण एवं काफ़िरों को उत्पीड़ित करने हेतु असत्य को जीत एवं उसके आज्ञाकारों को प्रभुत्व प्राप्त होता है। परंतु अंततः अच्छा परिणाम उनको ही प्राप्त होता है जो विश्वास एवं धीरज पर स्थित रहते हैं।

﴿وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ ٱلْمُؤْمِنِينَ﴾ [سورة الروم:٤٧]

अर्थात: "हम पर मोमिनो की सहायता करना अति आवश्यक है।"

(७) नबवी प्रवासन से हमें यह शिक्षा भी प्राप्त होती है कि इस बात का विश्वास होना चाहिए कि अच्छा परिणाम पवित्र लोगों के लिए ही है, जो व्यक्ति नबवी प्रवासन में बुद्धि लगाएगा स्पष्ट रूप से उन्हें यह ज्ञात होगा कि प्रचार-प्रसार का परिणाम कार्य गिरावट एवं क्षय से पीड़ित हो जाएगा, क्योंकि असत्य वादियों की सामग्री शक्ति सत्य वादियों की विरुद्ध बहुत अधिक थी, परंतु सत्य

यह है कि जिसके संग अल्लाह हो वास्तव में वही शक्तिशाली है। प्रवासन के ८ वर्षों के पश्चात मक्का जब इस्लामी शासन के भीतर प्रवेश कर गया, मक्का के वासी इस्लाम की वृत्ति में आ गए, एवं समय के व्यतीत होने के साथ संपूर्ण पृथ्वी पर अल्लाह का धर्म प्रसारित हो गया, प्रवासन की इस परिणाम में बुद्धि लगाने वाले को इस बात का विश्वास हो जाता है कि जिस चीज़ ने इस संपूर्ण दृष्टि को प्रेरित किया है वह सामग्री शक्ति ना थी बल्कि अल्लाह की शक्ति थी जिसने इन संपूर्ण महा कार्यों पर पूर्ण विराम लगाया।

निःसंदेह अल्लाह का धर्म प्रबल होकर रहता है क्योंकि धर्म की शक्ति वास्तव में अल्लाह की शक्ति होती हैऔर अल्लाह को कोई भी पराजित नहीं कर सकता।

﴿إِن يَنصُرۡكُمُ ٱللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمۡۖ وَإِن يَخۡذُلۡكُمۡ فَمَن ذَا ٱلَّذِي يَنصُرُكُم مِّنۢ بَعۡدِهِۦۗ﴾ [سورة آل عمران:١٦٠]

अर्थात: "यदि अल्लाह तुम्हारी सहायता कर दे तो कोई भी तुम पर प्रबल नहीं हो सकता एवं यदि अल्लाह तुम्हें अनदेखी कर दे तो कौन है जो उसके पश्चात तुम्हारी सहायता करे?"

(८) प्रवासन की घटना से हमें यह भी ज्ञात होता है कि जो व्यक्ति अल्लाह के लिए किसी चीज़ को त्याग देता है तो अल्लाह तआ़ला उस से अच्छा पुरस्कार उसे प्रदान करता है। इस कारणवश जब प्रवासियों ने अपना गृह, परिवार, संतान और धन एवं संपत्ति को (अल्लाह के लिए) त्याग दिया जो मानव की आत्मा हेतु सबसे अधिक प्रिय होते हैं तो अल्लाह ने उन्हें अच्छे परिणाम प्रदान किए वह इस प्रकार की संपूर्ण संसार में उन्हें सर्वश्रेष्ठ सफ़लता दी, पूर्व से लेकर पश्चिम तक का उन्हें स्वामी बना दिया, शाम, पारस, मिस्र उनके अधीन हो गए, मुसलमानों ने सहाबा के युग के पश्चात दक्षिण अफ़्रीक़ा की ओर प्रस्थान किया एवं उनदुलुस पर सफ़लता प्राप्त की।

(९) प्रवासन की घटना से हमें यह भी ज्ञात होता है कि जो व्यक्ति अल्लाह के आदेशों का पालन करता है एवं उसकी सुरक्षा करता है तो अल्लाह भी उसकी सुरक्षा करता है, उसके लिए (प्रत्येक कठिनाई से) निकास का मार्ग प्रकट कर देता है, इस कारणवश क़ुरैश के मुख्य व्यक्तियों ने जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कारावास करना एवं हत्या करना चाहा अथवा आपको निर्वासन करने का षड्यंत्र रचने लगा तो अल्लाह ने आपकी रक्षा की, उनके षड्यंत्र से अल्लाह ने उन्हें सुरक्षित रखा, एवं आपको सम्मान पूर्वक बिना किसी दुख एवं कठिनाई के मक्का से मदीना पहुंचाया।

(१०) प्रवासन की घटना से अबू बक्र रज़ि अल्लाहु अंहु की श्रेष्ठता भी स्पष्ट होती है वह इस प्रकार की नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने प्रवासन के समय अपना संगी हेतु आपका चयन किया एवं उनको इस का अधिकार भी प्राप्त था क्योंकि आप से उन्होंने संगत की मांग की थी एवं वह आप की संगत से इतना प्रसन्न हुए कि नयन से अश्रु निकल पड़े। उन्होंने आपके लिए सवारी की व्यवस्था की, मार्ग में जब आपको याद आता कि शत्रु घात में है तो (आप की सुरक्षा हेतु) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आगे चलने लगते एवं जब याद आता कि आपका शत्रु आपके पीछे है तो (आप की सुरक्षा हेतु) आप के पीछे हो लेते, उन्होंने संपूर्ण परिवार को अल्लाह के मार्ग में लगा दिया, इस कारणवश उन्होंने अपने बेटे अब्दुल्लाह को सूचना पहुंचाने हेतु जिम्मेवारी सौंपी, अपने नौकर आमिर बिन फ़ुहैरा को इस कार्य पर स्थित किया कि वह अबू बक्र की बकरियां लेकर प्रातः के समय निकले एवं दिन भर उन्हें चराए एवं सांय के समय बकरियां लेकर उनके समक्ष पहुंचे ताकि आप एवं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन बकरियों का दुग्ध पी सकें, जब अब्दुल्लाह बिन अबू बक्र प्रातः के समय उन दोनों के पास से निकलते तो आमिर बिन फ़ुहैरा उनके पैरों के चिन्हों पर चलते हुए निकलते ताकि उनके पैरों के चिन्हों को मिटाते हुए जाएं ताकि शत्रु को आप के निकट पहुंचने का कोई चिन्ह ना मिल सके। सारांश यह है कि अबू बक्र रज़ि अल्लाहू अ़नहु ने अपने आपको, अपने संपूर्ण परिवार को और अपने धन एवं संपत्ति को इस्लाम की सफ़लता व उर्जा हेतु त्याग दिया था।

(११) नबवी प्रवासन से हमें महिलाओं के सर्वोच्च कार्यों का भी ज्ञात होता है, यह उस महाकर्म से स्पष्ट होता है जिसको आस्मा बिंते अबू बक्र रज़ि अल्लाहु अ़नहा ने किया था, वह इस प्रकार की उन्होंने अपने पेटिकोट के दो पाठ कर दिए एक पाठ से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एवं अबू बक्र रज़ि अल्लाहू अ़नहु हेतु मार्गव्यय को ऊंटनी पर बांधा, एवं द्वितीय पाठ से आपके चमड़े के बोतल (मशकीज़ा) को बांधा इस कारणवश आपको "ज़ातुन्निताक़ैन" की उपाधि प्राप्त हुई। (सहीह बुख़ारी:३९०५)

उनकी एक घटना यह भी है कि उनके पिता अबू बक्र रज़ि अल्लाहू अ़नहु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मदीने की ओर जा निकले तो उन्होंने अपने संग सारा धन ले लिया जिसकी मात्रा उस समय पांच अथवा छः दिरहम थी, वो कहती हैं: उनके पिता सारा धन लेकर चल दिए, उनका कहना है कि हमारे पास हमारे दादा अबू क़ुहाफ़ा का आगमन हुआ, जिन की

दृष्टि जा चुकी थी, उन्होंने कहा: अल्लाह की क़सम! वह स्वयं तो गया ही, साथी वह सारा धन भी तुम्हारे पास से लेकर चला गया, वह कहती हैं: मैंने कहा, बिल्कुल नहीं दादा जान! उन्होंने हमारे पास बहुत से लाभ एवं भलाइयां (ख़ैरात व बरकात) छोड़े हैं, वह कहती हैं: मैंने पत्थर के कुछ टुकड़े लिए, और उसे उस ताक़ में रखा जिसमें मेरे पिता अपना धन रखते थे एवं उस ताक़ पर एक वस्त्र लटका दिया फिर दादा जान का हाथ पकड़कर मैंने कहा: दादा! अपना हाथ इस धन पर रखिए, उनका कहना है; उन्होंने अपना हाथ उस स्थान पर रखा और कहा: कोई बात नहीं, अगर उन्होंने तुम्हारे हेतु इतना धन छोड़ा है तो बहुत अच्छा किया है। यह तुम्हारे जीवन की आवश्यकताएं हेतु पर्याप्त होगा। उनका कहना है: अल्लाह की क़सम उन्होंने हमारे लिए कुछ नहीं छोड़ा, परंतु मैंने इस बहाने के माध्यम से अपने वृद्ध दादा को संतुष्ट करना चाहती थी। (अहृमद ६/३५० ने रिवायत किया है, एवं अल्-मुस्नद: २६९७५ के शोधकर्ताओं ने इसे हृसन कहा है।)

(१२) नबवी प्रवासन से मदीने के वासी औस-व-ख़ज़रज के मनुष्यों की श्रेष्ठता भी स्पष्ट होती है, क्योंकि मदीना को इस्लाम से पूर्व अन्य प्रदेशों पर कोई श्रेष्ठा प्राप्त नहीं थी, परंतु जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीने की ओर प्रवास किया और मदीना के वासियों ने आपकी हर संभव सहायता की एवं सहयोग दिया। तो मदीने को (अन्य प्रदेशों पर) एक प्रकार की श्रेष्ठता प्राप्त हुई एवं इससे मदीने की विशेषताएं भी स्पष्ट हो गई।

(१३) नबवी प्रवासन से उन संपूर्ण नास्तिकों की नकारात्मकता सिद्ध होती है जो यह दावा करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हवस, धन संपत्ति एवं शासन वह शक्ति की इच्छा रखते थे, क्योंकि आपको धन-संपत्ति ،राजनीतिक एवं आर्थिक पदें दी गई परंतु आपने सभी को ठुकरा दिया, यदि आपको इन चीज़ों की इच्छा होती तो आप इस उपहार को अवश्य स्वीकार कर लेते एवं अपने स्थान पर राजा बने रहते, मक्का से मदीना की ओर प्रवासन की कठिनाईयां ना झेलते, अपनी आत्मा को संकट में ना डालते, गृह, देश, वतन, परिवार एवं संतान को ना त्यागते, परंतु (सत्य है कि) आपको केवल एवं केवल तौहीद की, एवं लोगों को (कुफ़्र के) अंधकार से निकालकर (इस्लाम के) प्रकाश की ओर लाने की चिंता सता रही थी।

(१४) प्रवासन से एक सर्वश्रेष्ठ शिक्षा यह भी प्राप्त होती है काफ़िर देश से मुस्लिम देश की ओर प्रवासन करना वैध है। जहां मुसलमान अपने धार्मिक रीति रिवाज पर चल सकें, जिस व्यक्ति के लिए किसी स्थान पर अपने धार्मिक परंपराओं को अपनाना असंभव लगे उस के लिए

धार्मिक स्तर पर यह अनिवार्य है ऐसे स्थान की ओर प्रवास करे जहां धर्म का पालन करना सरल हो, अन्यथा वह प्रवासन के छोड़ने पर दोषी होगा।

(१५) नबवी प्रवासन से यह शिक्षा भी प्राप्त हुई कि इसमें ऐसे प्रतीक प्रकट हुए हैं जो आपके दूत होने के साक्ष्य हैं, उदाहरण स्वरूप: जब सुराक़ा बिन मालिक ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पकड़ना चाहा ताकि वह उस पुरस्कार को प्राप्त कर सके जो क़ुरैश ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उपस्थित करने हेतु स्थित किया था, जब उनकी दृष्टि आप पर पड़ी तो उनके घोड़े के पैर धरती में भूग्रस्त होने लगे, फिर रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको यह शुभ संदेश दिया कि उनको किसरा के कंगन हाथ लगेंगे। आपने फ़रमाया: (मानो मैं देख रहा हूं कि तुम किसरा का कंगन पहन रहे हो।) (दलाएलुन्-नुबूव्वा: ६/३२५, प्रकाशक: दारुल्- कुतुब- अल्-इल्मिया) ऐसी घटना उमर रज़ि अल्लाहू अ़नहु के शासनकाल में घटी।

(१६) प्रवासन से हमें यह सीख भी प्राप्त होती है कि अल्लाह की और आमंत्रण देने हेतु प्रत्येक अवसर पर लाभार्थी होना चाहिए। प्रवासन के मार्ग में "कुराउ़ल्-ग़मीम" (कुराअ़ का अर्थ: किनारा है और ग़मीम: अ़सफ़ान के समक्ष एक घाटी का नाम है।) नामक घाटी के निकट रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुज़र बुरैदा बिन अल्-हसीब आल्-असलमी के पास से हुआ, वह अपने परिवार के ८० लोगों के संग थे, आपने उन्हें इस्लाम की और आमंत्रित किया और और संपूर्ण लोगों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया, उनके संग आपने ईशा की नमाज़ पढ़ी, और उस रात्रि सुरह-ए-मरयम के प्रारंभिक श्लोकों की शिक्षा दी। ("अल्-बिदाया वन्-निहाया" अहदासुस्-सुन्ना: ७२' ११/६११, प्रकाशक: दारु हिज्र)

मेरे भाइयो! नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने ऐसा इस भय की स्थिति में किया कि कहीं बहुदेव वादी आप को पकड़ ना लें, परंतु आपके भीतर सत्य के प्रचार-प्रसार का भाव, अल्लाह पर सत्य विश्वास की लहर इस प्रकार थी कि आपने प्रचार-प्रसार को अपने प्राण से भी अधिक महत्व दिया। सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम! ये नबवी प्रवासन से व्युत्पन्न १६ सीख एवं लाभ हैं, नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम एवं अन्य दूतों के चरित्र में इनके अतिरिक्त भी अनेक शिक्षा एवं लाभ प्रकट हुए हैं, अल्लाह हमें उनसे लाभार्थी होने एवं उनको अपने जीवन में लागू करने की शक्ति प्रदान करे,

अल्लाह तआला हमें एवं आपको सर्वश्रेष्ठ क़ुरआन के लाभों से लाभार्थी करे, मुझे एवं आपको क़ुरआन के श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाहों से लाभार्थी करे, मैं अपनी यह बात कहते हुए अपने लिए एवं आप संपूर्ण के लिए अल्लाह से क्षमा मांगता हूं, आप भी उस से क्षमा प्रार्थी हों। निःसंदेह वह अधिक क्षमा स्वीकार करने वाला एवं अधिकतम दया करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد!

प्रशंसाओं के पश्चात!

आप ज्ञात रखें -अल्लाह आप पर कृपा करे- प्रवासन की घटना का सम्मान यह नहीं है कि समारोहों का आयोजन किया जाए, भले ही उनके भीतर प्रवासन से व्युत्पन्न लाभों का ही उल्लेख हो, बल्कि विशेष रूप से नबवी प्रवासन एवं सार्वजनिक रूप से नबी के चरित्र का सत्य सम्मान यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञाकारीता की जाए, आपके चरित्र एवं प्रवासन की घटना में जो नवोन्मेष एवं विचलन आ गये हैं, उन से वंचित रहा जाए।

● इसके अतिरिक्त आप यह भी ज्ञात रखें कि -अल्लाह आप पर कृपा करे- कि अल्लाह ने आपको एक बहुत बड़े कार्य का आदेश दिया है। अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात: "अल्लाह तआला एवं उसके देवदूत अपने दूत पर रहमत भेजते हैं, ए मोमिनो! तुम भी उन पर दरूद भेजो और ख़ूब सलाम भेजते रहा करो।"

● हे अल्लाह! तू अपने दास एवं दूत पर अपनी रहमत एवं सलामती अवतरित कर, उनके पश्चात आने वाले शासकों, महान आज्ञाकारों एवं प्रलय के दिन तक शुद्धता के साथ उनकी आज्ञाकारीता करने वालों से प्रसन्न हो जा।

● हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं श्रेष्ठता प्रदान कर,बहुदेव वाद एवं बहूदेव वादियों को अपमानित कर दे एवं अपने धर्म की रक्षा कर।

● हे अल्लाह! हमें अपने देशों में अमन और शांति वाला जीवन प्रदान कर, हे अल्लाह! हमारे इमामों एवं शासकों को सुधार दे।

● हे अल्लाह! संपूर्ण मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने एवं अपने धर्म को सर्वोच्च रखने की शक्ति प्रदान कर।

● हे अल्लाह! हम तेरा शरण चाहते हैं तेरे प्रदान किए गए वरदानों के नष्ट होने से, तेरी स्वास्थ्य के हट जाने से, तेरी अचानक आने वाली यातना से एवं तेरे हर प्रकार के क्रोध

से।

● हे अल्लाह! हम फुलबहरी (बर्स), पागलपन, कोढ़ एवं संपूर्ण प्रकार के रोगों से तेरा शरण चाहते हैं।

● हे हमारे पालनहार! हमें संसार में पूण्य दे, प्रलय के दिन भी भलाई प्रदान कर एवं नरक की यातना से वंचित रख।

● ए अल्लाह के दासो! निःसंदेह अल्लाह तआ़ला न्याय करने का, भलाई करने का, परिवार के लोगों के संग शुभ व्यवहार करने का आदेश देता है, असभ्यता के कार्यों से, अशिष्ट व्यवहार करने से एवं अत्याचार करने से रोकता है, एवं स्वयं तुम्हें यह सलाह देता है कि तुम सलाह को अपनाओ। इस कारणवश तुम सर्वश्रेष्ठ अल्लाह को याद करो, वह तुम्हें याद करेगा। उसके वरदानों पर उसके आभारी बनो, वह तुम्हें अधिक वरदान प्रदान करेगा। अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज़ है, तुम जो कुछ भी करो वह उससे अवगत है।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين

शीर्षक: इस्लाम भंजक चीज़ें

प्रथम भंजक: (अल्लाह के साथ शिर्क करना)

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إلَه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात!

स्र्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोह़म्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ (धर्म) अविष्कार की गई बिदअ़तें (नवाचार) हैं,धर्म में अविष्कार की गई प्रत्येक चीज़ बिदअ़त (नवाचार) है,प्रत्येक बिदअ़त (नवाचार) गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाजी है।

समस्त प्रार्थनाओं को केवल अल्लाह ही के लिए करने पर समस्त शरीअ़तों की सहमति है

अल्लाह के बदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका आदर करो,उस की आज्ञा मानो,और उस के अवज्ञा से बचो,और जान लो कि जिन मामलों में समस्त आकाशीय पुस्तकों की सहमति है उन में यह भी है कि:समस्त प्रकार की प्रार्थनाएं केवल अल्लाह ही के लिए करना अनिवार्य है,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

﴿وَمَآ أَرۡسَلۡنَا مِن قَبۡلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِيٓ إِلَيۡهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعۡبُدُونِ ٢٥﴾ [سورة الأنبياء:٢٥]

अर्थात: और नहीं भेजा हम ने आप से पहले कोई भी रसूल परन्तु अउ की ओर यही वह्यी (प्रकाशना) करते रहे कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है,अत: मेरी ही इबादत करो।

तथा अल्लाह ने अधिक फरमाया:

﴿فَٱعۡبُدِ ٱللَّهَ مُخۡلِصٗا لَّهُ ٱلدِّينَ﴾ [سورة الزمر:٢]

अर्थात: अत: इबादत (वंदना) करो अल्लाह की शुद्ध करते हुए उस के लिये धर्म को।

शैख़ अ़ब्दुर रह़मान अलसादी रह़िमहुल्लाह[1] इस आयत की व्याख्या में लिखते हैं: अर्थात: अपने धर्म को पूरे रूप से अल्लाह के लिए शुद्ध रखो,चाहे बाह्य अह़काम हों अथवा आंतरिक अह़काम,इस्लाम,ईमान और एह़सान (प्रत्येक श्रेणी को अल्लाह ही के लिए शुद्ध रखो),वह इस प्रकार से कि अल्लाह के लिए समस्त प्रार्थनाओं को शुद्ध रखो,उन के द्वारा अल्लाह की प्रसन्नता मांगो,इस के अतिरिक्त कोई और उद्देश्य न रखो।

अल्लाह का कथन: (आप अल्लाह ही की प्रार्थना करें,उसी के लिए धर्म को शुद्ध करते हुए) यह एखलास (सत्यता) का आदेश और इस बात की स्पष्टता है कि जिस प्रकार से अल्लाह तआ़ला के लिए प्रत्येक प्रकार का कमाल है और प्रत्येक प्रकार से वह अपने बंदों पर कृपालु एवं उपकार करने वाला है,इसी प्रकार से उस के लिए शुद्ध धर्म है जो प्रत्येक प्रकार के मलिनता एवं मिलावट से पवित्र है,यही वह धर्म है जिसे उस ने अपने लिए पसंद फरमाया,इस धर्म को अपने चिन्हित बंदों के लिए पसंद फरमाया,उन को इस धर्म का आदेश दिया,क्योंकि यह धर्म इस बात पर आधारित है कि अल्लाह की प्रार्थना की जाए,उस के प्रेम,भय,आशा एवं विनम्रता व निकटता जैसी प्रार्थनाओं के द्वारा,बंदों को अपने उद्दश्यों की प्राप्ति के लिए उसी से मांगना चाहिए,यही वह प्रार्थना है जो दिलों के सुधार,शुद्धता एवं पवित्रता का कारण है,और किसी भी प्रार्थना में उस के साथ शिर्क (मिश्रणवाद) नहीं करने देती,क्योंकि अल्लाह तआ़ला शिर्क से मुक्त है,अल्लाह तआ़ला समस्त साझीदारों से तथा शिर्क (मिश्रणवाद) से विरक्त है, शिर्क (मिश्रणवाद)दिल और आत्मा में बिगाड़ पैदा करता है,दुनिया एवं आखिरत को नष्ट कर देता है और मनुष्य को अति दुर्दशा व दुराचार का शिकार बना देता है।समाप्त

जिन चीज़ों में समस्त शरीअ़तों की सहमति है उन में शिर्क भी है

- अल्लाह के बंदो!जिन मामलों में समस्त शरीअ़तें सहमत हैं उन में यह भी है:अल्लाह के प्रार्थना में शिर्क (मिश्रणवाद) करने का निवारण,अल्लाह तआ़ला का कथन है:

---

[1] आप अ़ल्लामा फक़ीह मोफस्सिर शैख अ़ब्दुर रह़मान बिन नासिर अलसादी हैं,आप ने अनेक पुस्तकें लिखी हैं,इस्लामी शिक्षाओं में आप को गहरी बसीरत (अंतर्दृष्टि) प्राप्त थी,आप का निधन १३७६ हिजरी में हुआ,आप की जीवनी आप के क्षात्र शैख अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर रह़मान अलबसाम के कलम से पढ़ने के लिए देखें:,आप की जीवनी अन्य पुस्तकों में भी उल्लेख की गई है।

﴿وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ ٱلْخَٰسِرِينَ ۝٦٥ بَلِ ٱللَّهَ فَٱعْبُدْ وَكُن مِّنَ ٱلشَّٰكِرِينَ ۝٦٦﴾ [سورة الزمر:٦٥-٦٦]

अर्थात: तथा वह्यी की गई है आप की आरे तथा उन (नबियों) की ओर जो आप से पूर्व (हुये) कि यदि आप ने शिर्क किया तो अवश्य व्यर्थ हो जायेगा आप का कर्म,तथा आप हो जायेंगे क्षति ग्रस्तों में से।बल्कि आप अल्लाह ही की इबादत (वंदना) करें तथा कृतज्ञों में रहें।

भाषा में शिर्क (मिश्रणवाद): شَرَّكَ الشيء المفرد بغيره से निकला है (अर्थात एक चीज़ को दूसरी चीज़ से मिलाना)। (यह उस समय कहा जात है) जब उस चीज़ को दो अथवा दो से अधिक लोगों में समान कर दिया जाए,ऐसे में आप कहते हैं:[1] قد اشترك الرجلان وتشاركا (अर्थात दो लोग एक साथ शरीक हुए)।इस आधार पर जब यह कहा जाए कि: (فلان أشرك بالله) (अमुक ने अल्लाह के साथ शिर्क (मिश्रणवाद) किया) तो उसका अर्थ होगा:उस ने अल्लाह के साथ उन के कुछ विशेषताओं एवं गुणों में साझा बनाया जिन में किसी को उस का साझा बनाना सही नहीं।चाहे उन गुणों का संबंध अल्लाह तआला के नामों से हो अथवा गुणों से हो अथवा उस के कार्यों से,अथवा इस बात से हो कि अल्लाह तआला ही समस्त प्रार्थनाओं का एकमात्र प्रात्र है,इस के अतिरिक्त कोई और नहीं,चाहे जिस को साझी बनाया जाए वह मनुष्य हो अथवा खनिज व धातु में से हो अथवा क़ब्र हो अथवा कोई और चीज़।

सारे लोग एकेश्वरवाद पर स्थिर थे,फिर क़ौमे नूह में सदाचार लोगों के सम्मान के कारण शिर्क आरंभ हो गया

अत: अल्लाह ने नूह को रसूल बना कर भेजा

अल्लाह के बंदो!आदम अलैहिस्सलाम के युग से ले कर दस शताब्दियों तक लोग एकेश्वरवाद पर स्थिर रहे,फिर शिर्क (मिश्रणवाद) हुआ,अल्लाह ने नूह को रसूल बना कर भेजा ताकि लोगों को एकेश्वरवाद की ओर बोलायें,अल्लाह का कथन है:

﴿كَانَ ٱلنَّاسُ أُمَّةً وَٰحِدَةً فَبَعَثَ ٱللَّهُ ٱلنَّبِيِّـۧنَ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ﴾ [سورة البقرة:٢١٣]

---

[1] देखें: लिसानुल अरब, माद्दह (شَـرَكَ श र क)।

अर्थात: (आरंभ में) सभी मानव एक ही (स्वाभाविक) सत्धर्म पर थे,(फिर विभेद हुआ) तो अल्लाह ने नबियों को शुभ समाचार सुनाने,और (अवैज्ञा) से सचेत करने के लिये भेजा।

इब्ने अ़ब्बास रज़ीअल्लाहु अंहुमा फरमाते हैं: नूह और आदम के बीच दस शताब्दियों का अंतर था,उस बीच सारे लोग सत्य शरीअ़त पर थे,फिर उन के बीच मतभेद हो गया,तो अल्लाह ने पैगंबरों को शुभसूचना देने वाला और डराने वाला बना कर भेजा।[1]

अल्लाह का कथन है:

﴿وَمَا كَانَ ٱلنَّاسُ إِلَّآ أُمَّةً وَٰحِدَةً فَٱخْتَلَفُوا۟ۚ﴾ [سورة يونس:١٩]

अर्थात: लोग एक ही धर्म (इस्लाम) पर थे,फिर उन्हों ने विभेद किया।

अर्थात: जिस दिन सत्य पर स्थिर थे उस से फिर गए और (मिश्रणवाद) करने लगे।

मोमिनों के समूह! शिक्र घटित होने के पश्चात एकेश्वरवार की दावत देने के लिए अल्लाह ने सर्वप्रथम जिस रसूल को भेजा वह नूह अलैहिस्सलाम हैं,जैसा कि अल्लाह का कथन है:

﴿۞ إِنَّآ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ كَمَآ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰ نُوحٍ وَٱلنَّبِيِّـۧنَ مِنۢ بَعْدِهِۦۚ﴾ [سورة النساء:١٦٣]

अर्थात: (हे बनी!) हम ने आप की ओर वैसे ही वह्यी भेजा है,जैसे नूह और उस के पश्चात के नबियों के पास भेजा।

इब्ने कसीर रहि़महुल्लाह फरमाते हैं:समस्त लोग आदम की मिल्लत (धर्म) पर थे,यहां तक कि वह वे मूर्ति पूजा करने लगे,उस के पश्चात अल्लाह ने नूह अलैहिस्सलाम को भेजा,वह सर्वप्रथम रसूल थे जिन को अल्लाह ने धरती पर रहने वालों की ओर भेजा।[2]

नूह अलैहिस्सलाम के युग में शिर्क (मिश्रणवाद) का कारण सदाचार लोगों का सम्मान था,जैसा कि सही बोखारी में इब्ने अ़ब्बास रज़ीअल्लाहु अंहुमा से इस आयत की व्याख्या में आया है: फरमाया:यह पांचों नूह अलैहिस्सलाम के समुदाय के सदाचार लोगों के नाम थे जब उन की

---

[1] इब्ने जरीर ने यह कथन सूरह البقرة की आयत:२१३ की व्याख्या में रिवायत किया है।

[2] तफसीर इब्ने कसीर:البقرة २१३,थोड़े हेरे फेर के साथ।

मृत्यु हो गई तो शैतान ने उन के दिल में डाला कि अपने सभाओं में जहां वे बैठे थे उन के बुत स्थापित कर लें और उन बुतों के नाम अपने सदाचारी लोगों के नाम पर रख लें अत: उन लोगों ने ऐसा ही किया।उस समय उन बुतों की पूजा नहीं होती थी किन्तु जब वे लोग भी मर गए जिन्होंने मूर्ति स्थापित किए थे और लोगों में ज्ञान न रहा तो उन की पूजा होने लगी।[1]

शिर्क एकेश्वरवाद के तीन प्रकारों में होता है

अल्लाह के बंदो! शिर्क (मिश्रणवाद) की अवैधता इस्लाम धर्म के स्पष्ट मामलों में से है,यह इस्लाम भंजको में से है,जो व्यक्ति शिर्क (मिश्रणवाद) करता है वह इस्लाम से बाहर हो जाता है,यद्यपि शिर्क (मिश्रणवाद) करने वाला नमाज़ व रोज़ा का पालन ही क्यों न करता हो और अपने आप को मुसलमान ही क्यों न मानता हो,यह समस्त इस्लाम भंजकों में सर्वाधिक होने वाला भंजक है,अल्लाह की पुस्तक में शिर्क (मिश्रणवाद) की निकृष्टता और मुशरिकों की यातना अनगिनत स्थानों बयान किया गया है,अल्लाह तआला हमें इस से सुरक्षित रखें।

ऐ मोमिनों के समूह!तौहीद-ए-रुबूबियत (अल्लाह का रब होना) तैहीद-ए-उलूहियत (अल्लाह का पूज्य होना) और तौहीद-ए-अस्मा व सिफात (अल्लाह का अपने नामों एवं गुणों में शुद्ध होना) (तीनों प्रकार) में शिर्क (मिश्रणवाद) होता है।

तौहीद-ए-रुबूबियत (अल्लाह का रब होना) में शिर्क (मिश्रणवाद) का उदाहरण यह है कि:यह आस्था रखा जाए कि अल्लाह के साथ कोई और भी मोदब्बिर(निर्वाहक),अथवा राजिक (जीविका दाता),अथवा रचनाकार,अथवा जीवन एवं मृत्यु प्रदान करने वाला है,जो व्यक्ति इस प्रकार का आस्था रखे तो वह मुशरिक है,यह अनिवार्य है कि अल्लाह तआला को उपरोक्त समस्त कार्यों में ऐकता माना जाए,और बंदा के लिए जाएज़ नहीं कि उन में से किसी कार्य को अल्लाह के अतिरिक्त की ओर जोड़े।

अल्लाह के नामों में शिर्क का उदाहरण:मोसैलमा कज़्ज़ाब का स्वयं को"رحمن اليمامة" [2] के नाम से पुकारना,यह वह व्यक्ति है जो नबी के युग में अस्तित्व में आया और पैगंबरी का दावा कर

[1] सही बोखारी: (४९२०)

[2] اليمامة अरब उप महाद्वीप के बीच में एक स्थान का नाम है।

बैठा और स्वयं को "الرحمن" से पुकारने लगा,जो कि अल्लाह तआ़ला के उन नामों में से है जो केवल उन के साथ विशेष हैं।

अल्लाह के गुणों एवं विशेषणों में शिर्क (मिश्रणवाद) करने का उदाहरण यह है कि: अल्लाह के अतिरिक्त के लिए गैब के ज्ञान का दावा किया जाए वह इस प्रकार से कि उस को अल्लाह का साझी माना जाए,उदाहरण स्वरूप वह व्यक्ति जो यह आस्था रखे कि जादूगर और काहिन (पुरोहित) आदि गैब का ज्ञान रखते हैं,अथवा नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को गैब का ज्ञानी माने,जो व्यक्ति अल्लाह के अतिरिक्त के लिए गैब के ज्ञान का दावा करे वह शिर्क है।यह अनिवार्य है कि गैब के ज्ञान में अल्लाह को अकेला माना जाए जैसा कि अल्लाह ने अपनी हस्ती को उस से चित्रित किया है:

﴿قُل لَّا يَعۡلَمُ مَن فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ ٱلۡغَيۡبَ إِلَّا ٱللَّهُۚ﴾ [سورة النمل:٦٥]

अर्थात: आप कह दें कि नहीं जानता है जो आकाशों तथा धरती में है परोक्ष को अल्लाह के सिवा।

तैह़ीद-ए-उलूहियत (अल्लाह का पूज्य होना)-जो कि बंदों के कार्य है-इस में शिर्क (मिश्रणवाद) करने का मतलब यह है कि किसी भी प्रार्थना में अल्लाह के साथ अल्लाह के अतिरिक्त को साझी माना जाए,यह प्रार्थना जैसा भी हो,दुआ़,सजदा,ज़ब्ह़,नज़र (शपथ) व नियाज (याचना),इच्छा एवं विस्मय और आशा आदि। जिस ने इन प्रार्थनाओं का कोई भाग अल्लाह के अतिरिक्त के लिए किया उस ने स्र्वश्रेष्ठ अल्लाह के साथ शिर्क (मिश्रणवाद) किया।अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी मोह़म्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाया:

﴿وَلَقَدۡ أُوحِيَ إِلَيۡكَ وَإِلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكَ لَئِنۡ أَشۡرَكۡتَ لَيَحۡبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ ٱلۡخَٰسِرِينَ ۝٦٥ بَلِ ٱللَّهَ فَٱعۡبُدۡ وَكُن مِّنَ ٱلشَّٰكِرِينَ ۝٦٦﴾ [سورة الزمر:٦٥-٦٦]

अर्थात: तथा वह्यी की गई है आप की आरे तथा उन (नबियों) की ओर जो आप से पूर्व (हुये) कि यदि आप ने शिर्क (मिश्रणवाद) किया तो अवश्य व्यर्थ हो जायेगा आप का कर्म,तथा आप हो जायेंगे क्षति ग्रस्तों में से।बल्कि आप अल्लाह ही की इबादत (वंदना) करें तथा कृतज्ञों में रहें।

अल्लाह तआला ने यह आदेश दिया है कि एखलास (निष्कपटता) के साथ अल्लाह से दुआ की जाए,अल्लाह का कथन है:

﴿فَٱدۡعُواْ ٱللَّهَ مُخۡلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ﴾ [سورة غافر:١٤]

अर्थात: अत: इबादत (वंदना) करो अल्लाह की शुद्ध करते हुए उस के लिये धर्म को।

और नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: (दुआ ही प्रार्थना है)।[1]

अल्लाह ने क़ुरान में तीन सौ स्थानों पर एखलास (निष्कपटता) के साथ अल्लाह से दुआ करने का आदेश दिया है,ज़ब्ह़ के विषय में अल्लाह ने आदेश दिया कि बंदा निकटता की नीयत से केवल अल्लाह के लिए जानवर ज़ब्ह़ करे,अपने नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से अल्लाह ने फरमाया:

﴿فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَٱنۡحَرۡ ۝٢﴾ [سورة الكوثر:٢]

अर्थात:तो तुम अपने पालनहार के लिये नमाज़ पढ़ो तथा बलि दो।

तथा आप से अल्लाह ने फरमाया:

﴿قُلۡ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحۡيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ ٱلۡعَٰلَمِينَ ۝١٦٢ لَا شَرِيكَ لَهُۥۖ وَبِذَٰلِكَ أُمِرۡتُ وَأَنَا۠ أَوَّلُ ٱلۡمُسۡلِمِينَ ۝١٦٣﴾ [سورة الأنعام: ١٦٢-١٦٣]

अर्थात:आप कह दें कि निश्चय मेरी नमाज़ और मरी क़ुर्बानी तथा मेरा जीवन-मरण संसार के पालनहार अल्लाह के लिये है।

इस आयत में نسک का आशय ज़ब्ह़ है।

आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: (उस व्यक्ति पर अल्लाह की अभिशाप है जो अल्लाह के अतिरिक्त के नाम पर जानवर ज़ब्ह़ करता है)।2

[1] इस ह़दीस को अबूदाऊद (१४७९) और तिरमिज़ी (२९६९) आदि ने नोमान बिन बशीर रज़ीअल्लाहु अंहु से रिवायत किया है और शैख अल्बानी ने इसे सही कहा है।

[2] सह़ी मुस्लिम (१९७८) वर्णन:अ़ली रज़ीअल्लाहु अंहु

निष्कर्ष यह कि जो व्यक्ति अल्लाह के अतिरिक्त के लिए किसी भी प्रकार की प्रार्थना करे उस ने शिर्क (मिश्रणवाद) किया,चाहे वह पूज्य क़ब्र हो,अथवा नबी हो,अथवा जादूगर हो,अथवा जिन्न हो अथवा कोई और,चाहे उस पूज्य के लिए प्रार्थना करने का कारण यह हो कि उस अल्लाह के निकट करने वाला माध्यम मानता हो,अथवा अनुशंसा मानता हो अथवा वसीला (माध्यम) अथवा कुछ और,यह सब शिर्क (मिश्रणवाद) है,और ये सब मुशरिकों के निराधार साक्ष्य हैं,अल्लाह तआला ने मुशरिकों के विषय में फरमाया:

﴿وَٱلَّذِينَ ٱتَّخَذُواْ مِن دُونِهِۦٓ أَوۡلِيَآءَ مَا نَعۡبُدُهُمۡ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَآ إِلَى ٱللَّهِ زُلۡفَىٰٓ﴾ [سورة الزمر:٣]

अर्थात: तथा जिन्होंने बना रखा है अल्लाह के सिवा संरक्षक वे कहते हैं कि हम तो उन की वंदना इस लिए करते हैं कि वह समीप कर देंगे हमें अल्लाह से।

तथा फरमाया:

﴿وَيَعۡبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمۡ وَلَا يَنفَعُهُمۡ وَيَقُولُونَ هَٰٓؤُلَآءِ شُفَعَٰٓؤُنَا عِندَ ٱللَّهِۚ﴾ [سورة يونس:١٨]

अर्थात: और वह अल्लाह के सिवा उस की इबातद (वंदना) करते हैं जो न तो उन्हें कोई हानि पहुँचा सकते हैं और न लाभ,और कहते हैं कि यह अल्लाह के यहाँ हमारे अभिस्तावक (सिफारशी) हैं।

तथा अधिक फरमाया:

﴿أَمِ ٱتَّخَذُواْ مِن دُونِ ٱللَّهِ شُفَعَآءَۚ قُلۡ أَوَلَوۡ كَانُواْ لَا يَمۡلِكُونَ شَيۡـٔٗا وَلَا يَعۡقِلُونَ ۝٤٣﴾ [سورة الزمر:٤٣]

अर्थात:क्या उन्होंने बना लिये हैं अल्लाह के अतिरिक्त बहुत से अभिस्तावक (सिफारशी)?आप कह दें:क्या (यह सिफारिश करेंगे)यदि वह अधिकार न रखते हों किसी चीज़ का और न ही समक्ष रखते हों?

ज्ञात हुआ कि वासता (माध्यम) और अनुशंसा को प्रमाण बना कर अल्लाह के अतिरिक्त की प्रार्थना करना क़ुरान की प्रमाणों के आलोक में व्यर्थ एवं निराधार है,जिन्हों ने ऐसा किया उन्हों ने अपने कार्य को अन्य के नाम से संबंधित किया,रचनाकार को मखलूक पर परिकल्पना किया, उन्होंने नहीं देखा कि दुनिया के राजाओं एवं सरदारों तक पहुंचने के लिए वासते

(मध्यम),समीपवर्तियों एवं अनुशंसाओं की आवश्यकता होती है,इस लिए कहा कि अल्लाह का मामला भी ऐसा ही है,उस तक पहुंचने के लिए वासतों (माध्यमों), समीपवर्तियों एवं अनुशंसाओं की आवश्यकता है,जैसे पैगंबर,सदाचारी लोगों की क़ब्रें और देवदूत आदि,यह अल्लाह के साथ स्पष्ट शिर्क है।

ज्ञात हुआ कि शिर्क तौह़ीद (एकेश्वरवाद) के तीनों प्रकारों में हो सकता है, तौह़ीद-ए-रुबूबियत (अल्लाह का रब होना) तैह़ीद-ए-उलूहियत (अल्लाह का पूज्य होना) और तौह़ीद-ए-अस्मा व सिफात (अल्लाह का अपने नामों एवं गुणों में शुद्ध होना)किन्तु अधिकतर तैह़ीद-ए-ईबादत/उलूहियत (अल्लाह का पूज्य होना) में शिर्क होता है।

अल्लाह के बंदो!एखलास (निष्कपटता) एवं शिर्क के अर्थ को समझने के लिए यह एक लाभदायक प्राक्कथन है,जो व्यक्ति इसे समझ ले उस के लिए लोगों की रचना के मूल उद्देश्य को समझना आसान हो जाएगा।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुरान की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को उस की आयतों और नीतियों पर आधारित परामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

द्वतीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!आप अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाएं और जान लें कि शिर्क (मिश्रणवाद) की निकृष्टता छे स्वरूपों से स्पष्ट होती है:
प्रर्थम स्वरूप:वह सबसे बड़ा पापी है जिस के द्वारा अल्लाह का अवज्ञा किया जाता है,क्योंकि इस से अल्लाह के अधिकारों का अवहेलना होता है,जैसे प्रार्थना,विनम्रता,विनम्रता एवं विनयशीलता,और अल्लाह तआ़ला के सम्मान में कमी करना उस के प्रति आशंका करने का प्रमाण है,जो कि बसबे बड़ा पाप है,अल्लाह का फरमान है:

﴿وَمَن يُشۡرِكۡ بِٱللَّهِ فَقَدِ ٱفۡتَرَىٰٓ إِثۡمًا عَظِيمًا﴾ [سورة النساء:٤٨]

अर्थात: और जो अल्लाह का साझी बनाता है तो उस ने महापाप गढ़ लिया।
अधिक फरमाया:

﴿إِنَّ ٱلشِّرۡكَ لَظُلۡمٌ عَظِيمٌ﴾ [سورة لقمان:١٣]

अर्थात: वास्तव में शिर्क (मिश्रणवाद) बड़ा घोर अत्याचार है।

इब्ने मस्ऊद से वर्णित है कि:मैं ने कहा:हे अल्लाह के रसूल!सबसे बड़ा पाप क्या है?आप ने फरमाया:तुम अल्लाह के साथ साझी बनाओ जब कि उसी ने तुम को पैदा किया।[1]
द्वतीय स्वरूप:शिर्क (मिश्रणवाद) समस्त अ़मलों को नष्ट कर देता है,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

﴿وَلَوۡ أَشۡرَكُواْ لَحَبِطَ عَنۡهُم مَّا كَانُواْ يَعۡمَلُونَ﴾ [سورة الأنعام:٨٨]

अर्थात: और यदि वह शिर्क (मिश्रणवाद) करते,तो उन का सब किया धरा व्यर्थ हो जाता।
और अल्लाह ने अपने नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाया:

﴿وَلَقَدۡ أُوحِيَ إِلَيۡكَ وَإِلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكَ لَئِنۡ أَشۡرَكۡتَ لَيَحۡبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ ٱلۡخَٰسِرِينَ ۝٦٥ بَلِ ٱللَّهَ فَٱعۡبُدۡ وَكُن مِّنَ ٱلشَّٰكِرِينَ ۝٦٦﴾ [سورة الزمر:٦٥-٦٦]

अर्थात: तथा वह्यी की गई है आप की आरे तथा उन (नबियों) की ओर जो आप से पूर्व (हुये) कि यदि आप ने शिर्क (मिश्रणवाद) किया तो अवश्य व्यर्थ हो जायेगा आप का कर्म,तथा आप हो जायेंगे क्षति ग्रस्तों में से।बल्कि आप अल्लाह ही की इबादत (वंदना) करें तथा कृतज्ञों में रहें।
तृतीय स्वरूप:जो व्यक्ति शिर्क की अवस्था में मरता है,अल्लाह उस को क्षमा नहीं करता,और शिर्क करने वाला स्वेद नरक में रहेगा,अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَغۡفِرُ أَن يُشۡرَكَ بِهِۦ وَيَغۡفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَآءُۚ وَمَن يُشۡرِكۡ بِٱللَّهِ فَقَدۡ ضَلَّ ضَلَٰلَۢا بَعِيدًا ۝١١٦﴾ [سورة النساء:١١٦]

अर्थात: नि:संदेह अल्लाह इसे क्षमा नहीं करेगा कि उस का साझी बनाया जाये,और इस के सिवा जिसे चाहेगा क्षमा कर देगा।तथा जो अल्लाह का साझी बनाता है वह कुपथ में बहुत दूर चला गया।

[1] सही बोखारी (६८११) और सही मुस्लिम (८६)

तथा अल्लाह ने अधिक फरमाया:

﴿إِنَّهُۥ مَن يُشۡرِكۡ بِٱللَّهِ فَقَدۡ حَرَّمَ ٱللَّهُ عَلَيۡهِ ٱلۡجَنَّةَ وَمَأۡوَىٰهُ ٱلنَّارُۖ وَمَا لِلظَّٰلِمِينَ مِنۡ أَنصَارٖ﴾ [سورة المائدة:٧٢]

अर्थात: वास्तव में जिस ने अल्लाह का साझी बना लिया उस पर अल्लाह ने स्वर्ग को हराम (वर्जित) कर दिया,और उस का निवास स्थान नरक है,तथा अत्याचारियों का काई सहायक न होगा।

चौथा स्वरूप:अल्लाह तआला ने क़ुरान पाक में शिर्क (मिश्रणवाद) की कड़ी निन्दा बयान की है,उस से रोका है,मुशरिकों की निकृष्टता का उल्लेख किया है,और आखिरत में उन का बुरा ठिकाना बताया है।क़ुरान में शिर्क और उस के यौगिकों का उल्लेख सौ (१००) से अधिक बार आया है,नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी अपनी अनेक ह़दीसों में शिक्र से सचेत किया है।[1]

पांचवा स्वरूप:पैगंबर और उन के अनुयायी शिर्क (मिश्रणवाद) से डरे हुए थे और इस में पड़ने से डरते थे,इस का उदाहरण इबराहीम अलैहिस्सलाम की यह दुआ है:

﴿وَٱجۡنُبۡنِي وَبَنِيَّ أَن نَّعۡبُدَ ٱلۡأَصۡنَامَ﴾ [سورة إبراهيم:٣٥]

अर्थात: और मुझे तथा मेरे पुत्रों को मूर्ति पूजा से बचा ले।

छटा स्वरूप:इस्लामी विद्वानों की एक बात पर सर्वसम्मति है कि अल्लाह के प्रार्थना में शिक्र करना ऐसा अ़मल है जो मनुष्य को इस्लाम से बाहर कर देता है।इब्ने तैमिया रह़िमहुल्लाह फरमाते हैं:जो व्यक्ति फरिशतों और पैगंबरों का माध्यम बना कर उन्हें पुकारे,उन पर तवक्कुल (विश्वास) करे और उन से लाभ की प्राप्ति एवं हानि की दूरी की दुआ करे,उदाहरण स्वरूप उन से क्षमा,दिलों की बात,कठिनाई को दूर करने एवं आवश्यकता को पूरी करने की दुआ करे तो वह सर्वसम्मति से काफिर है।[2]

उपदेश की समाप्ति:

अल्लाह के बंदो!तौह़ीद (एकेश्वरवाद) एवं इस के विपरीत (शिर्क) को समझने और शिर्क (मिश्रणवाद) और उसे में पड़ने से सचेत करने के लिए यह प्राक्कथन लाभदायक है,अल्लाह

---

[1] देखें:"المعجم المفهرس لألفاظ القرآن الكريم"مادة:شَرَك

[2] देखें:"مجموع فتاوى ابن تيمية"(१/१२४)

तआ़ला मुसलमानों को जीवन भर तौह़ीद (एकेश्वरवाद) पर स्थिर रहने की तौफीक़ प्रदान करे,क्यों कि जो व्यक्ति शरीअ़त पर स्थिर रहा और तौह़ीद (एकेश्वरवाद) की स्थिति में मरा तो वह बिना हिसाब के स्वर्ग में प्रवेश करेगा।

तथा आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात: अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे अल्लाह!हम तुझ से शांतिपूर्वक जीवन,विस्तृत जीविका और सदाचार की दुआ़ करते हैं।

हे हमारे रब!हमे दुनिया में नेकी दे और आखिरत में भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

शीर्षक: द्वितीय भंजक: (जो मुशरिकों को काफिर न माने,अथवा उन के कुफ्र में संदेह करे अथवा उन के धर्म को सही़ माने)

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात!

स्र्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोंहम्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ (धर्म में) अविष्कार की गई बिदअ़तें (नवाचार) हैं,धर्म में अविष्कार की गई प्रत्येक चीज़ बिदअ़त (नवाचार) है,प्रत्येक बिदअ़त (नवाचार) गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाजी है।

अल्लाह पर ईमान लाना और झूठे पूज्यों का इंकार करना अनिवार्य है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उन का आदर करो,उस का अनुसरन करो और उस के अवज्ञा से बचो,और जान लो कि जिन चीज़ों पर आकाशीय शरीअ़तों की सहमति है उन में यह भी है कि तौह़ीद (एकेश्वरवाद) दो स्तंभों पर आधारित है:प्रथम स्तंभ:ग़ैरुल्ला (अल्लाह के सिवा)की प्रार्थना से विरक्ति,जिसे अल्लाह ने ताग़ूत (अल्लाह के सिवा पूज्यों) की प्रार्थना कहा है।द्वतीय स्तंभ:केवल एक अल्लाह की प्रार्थना का इकरार,और यही तौह़ीद (एकेश्वरवाद) है,अत: जो व्यक्ति मुशरिकों के धर्म से बराअत न करे उस ने ताग़ूत (अल्लाह के सिवा) से विरक्ति एवं उस का इंकार नहीं किया,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

﴿فَمَن يَكۡفُرۡ بِٱلطَّٰغُوتِ وَيُؤۡمِنۢ بِٱللَّهِ فَقَدِ ٱسۡتَمۡسَكَ بِٱلۡعُرۡوَةِ ٱلۡوُثۡقَىٰ لَا ٱنفِصَامَ لَهَاۗ﴾ [سورة البقرة:٢٥٦]

अर्थात: अत: जो ताग़ूत (अल्लाह के सिवा पूज्यों) को नकार दे,तथा अल्लाह पर ईमान लाये तो उस ने दृढ़ कड़ा (सहारा) पकड़ लिया जो कभी खण्डित नहीं हो सकता।

इस आयत का एक अर्थ यह है कि जिस ने ताग़ूत (अल्लाह के सिवा) का इंकार नहीं किया उस ने मजबूत कड़े को नहीं थामा जो कि इस्लाम धर्म है।

इबराहीम अलैहिस्सलाम ने अपने समुदाय के धर्म से विरक्ति करते हुए फरमाया:

﴿ إِنَّنِي بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ﴿٢٦﴾ إِلَّا ٱلَّذِى فَطَرَنِى فَإِنَّهُۥ سَيَهْدِينِ ﴿٢٧﴾ وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِى عَقِبِهِۦ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾ ﴾ [سورة الزخرف: ٢٦-٢٨]

अर्थात: निश्चय मैं विरक्त हूँ उस से जिस की वंदना तुम करते हो।उस के अतिरिक्त जिस ने मुझे पैदा किया है,वही मुझे राह दिखायेगा।तथा छोड़ गया वह इस बात (एकेश्वरवाद) को।अपनी संतान में ताकि वह (शिर्क से) बचते रहें।

तारिक़ बिन अशयम अलई रज़ीअल्लाहु अंहु नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फरमाया:जिस ने "لا إله إلا الله" कहा और अल्लाह के सिवा जिन की पूजा की जाती है,उन (सब) का इंकार किया तो उसका धन एवं प्राण सुरक्षित हो गया और उस का हिसाब अल्लाह पर है।[1]

ह़दीस का अर्थ यह है कि:जिस ने उन पूज्यों का इंकार नहीं किया जिन की अल्लाह के सिवा पूजा की जाती है,तो उसका धन एवं प्राण सुरक्षित नहीं,और यह केवल काफिर के हित में होता है।

काफिर को काफिर न कहना इस्लाम भंजकों में से है-इसके कारणों की स्पष्टी

अल्लाह के बंदो!क़ुरान व ह़दीस के उपरोक्त स्पष्टिकरण के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि जो व्यक्ति मुशरिकों को काफिर न माने,अथवा उन के कुफ्र में संदेह करे,अथवा उन के धर्म को सह़ी माने,तो उस ने कुफ्र किया और इस्लाम भंजकों में से एक को किया।

अल्लाह के बंदो!जो व्यक्ति असत्य धर्मों के अनुयायियों को काफिर न माने तो वह भी वास्तव में काफिर ही है,मुसलमान नहीं,क्योंकि उस ने उस व्यक्ति को काफिर नहीं माना जिसे अल्लाह और उस के रसूल ने काफिर माना है,और उस ने न तो क़ुरान की सूचनी की पुष्टि की और न

[1] सह़ी मुस्लिम (२३)

पैगंबर के आदेश का पालन किया,और जो व्यक्ति अल्लाह और उस के रसूल की सूचना की पुष्टि न करे वह काफिर है,अल्लाह का शरण।

तथा जो व्यक्ति मुशरिकों को काफिर न कहे,उस के लिए ईमान एवं कुफ्र एक समान होते हैं,इन दोनों में अंतर बाकी नहीं रहता,इस लिए वह काफिर है।[1]

अल्लाह के बंदो!जो व्यक्ति काफिर को काफिर नहीं मानता वास्तव में वह इस्लाम एवं कुफ्र में अंतर नहीं जानता,जबकि धर्म का यह ऐसा आदेश है जो सब को मालूम है,क़ुरान पाक में अनेक स्थानों पर कुफ्र का इंकार किया गया है और दुनिया एवं आखिरत में काफिरों को मिलने वाली यातनाओं का उल्लेख किया गया है,और जो व्यक्ति काफिर को काफिर न माने वह मुसलमान कहलाने का पात्र नहीं,यहां तक कि इस्लाम एवं कुफ्र का अंतर जान जाए और अपने दिल एवं ज़बान से संपूर्ण रूप से कुफ्र से मुक्ति का प्रदर्शन करे।

- तथा यह कि जो मनुष्य उस व्यक्ति को काफिर न माने जिसे अल्लाह और उस के रसूल ने काफिर माना है तो उस ने अल्लाह के ह़राम किया हुआ शिर्क को ह़लाल कर दिया,वह इस प्रकार से कि जो व्यक्ति मुशरिक है,उसे काफिर नहीं माना,और यह अल्लाह के आदेश का उल्लंघन है,बल्कि इस में अल्लाह से युद्ध करना है,अल्लाह का फरमान है:

﴿قُلۡ تَعَالَوۡاْ أَتۡلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمۡ عَلَيۡكُمۡۖ أَلَّا تُشۡرِكُواْ بِهِۦ شَيۡـٔٗاۖ﴾ [سورة الأنعام:١٥١]

अर्थात: आप उन से कहें कि आओ मैं तुम्हें (आयतें) पढ़ कर सुना दूँ कि तुम पर तुम्हारे पालनहार ने क्या ह़राम (अवैध) किया है?वह यह है कि किसी चीज़ को उस का साझी न बनाओ।

इब्ने सादी रह़िमहुल्लाह लिखते हैं: (हर वह व्यक्ति जिस कि शरीअ़त ने जिसको काफिर कहा है,उस को काफिर कहना अनिवार्य है,और जो व्यक्ति उसे काफिर न माने जिसे अल्लाह और

---

[1] यह शैख सालिह़ अलफौज़ान का कथन है जो उन्होंने अपनी पुस्तक: "شرح نواقض الإسلام" पृष्ठ संख्या ७९ में उल्लेख किया है।

उस के रसूल ने काफिर माना है,तो वह अल्लाह और उस के रसूल को झुठलाने वाला है,यह उस समय जब उस के नजदीक शरई प्रमाण से उस का काफिर होना सिद्ध हो जाए)[1]।

शैख अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन बाज़ रहि़महुल्लाह फरमाते हैं: (जो व्यक्ति काफिर को काफिर न माने वह भी उसी के जैसा है,शर्त यह है कि उसके समक्ष प्रमाण प्रस्तुत किए जाएं,फिर भी वह उसे काफिर न मानने पर अटल रहे तो,उदाहरण स्वरूप जो यहूदी अथवा ईसाई अथवा साम्यवादियों को अथवा उन जैसे अन्य ऐसे काफिरों को काफिर न माने जिन का कुफ्र थेड़े ज्ञान एवं बसीरत (समझ बूझ) वाले के लिए भी संदेहजनक नहीं है)[2]

शैख सालिह़ बिन फौज़ान अलफौज़ान रहि़महुल्लाह फरमाते हैं: (जो व्यक्ति मुशरिकों को काफिर न माने वह उन के जैसा ही काफिर और मुरतद (स्वधर्मत्यागी) है,क्योंकि उसके लिए इस्लाम एवं कुफ्र एक समान हैं,वह इन दोनों में अंतर नहीं करता,इस लिए वह काफिर है)।[3]

ताग़ूत (असत्य पूज्यों) के इंकार करने का महत्व

अल्लाह के बंदो!जैसा कि ताग़ूत (अल्लाह के सिवा)के इंकार करने का बड़ा महत्व है,इस लिए अल्लाह पर ईमान लाने से पूर्व ताग़ूत (अल्लाह के सिवा)के इंकार का उल्लेख है,ताकि बंद के मज़बूत कड़े के थमने का कार्य पूरा हो सके,यह अल्लाह के इस फरमान में है:

﴿فَمَن يَكۡفُرۡ بِٱلطَّٰغُوتِ وَيُؤۡمِنۢ بِٱللَّهِ فَقَدِ ٱسۡتَمۡسَكَ بِٱلۡعُرۡوَةِ ٱلۡوُثۡقَىٰ لَا ٱنفِصَامَ لَهَاۗ﴾ [سورة البقرة:٢٥٦]

अर्थात: अत: जो ताग़ूत (अल्लाह के सिवा पूज्यों) को नकार दे,तथा अल्लाह पर ईमान लाये तो उस ने दृढ़ कड़ा (सहारा) पकड़ लिया जो कभी खण्डित नहीं हो सकता।

यह शुद्धिकरण को शिष्टाचार पर प्राथमिकता देने की श्रेणी से है,अर्थात पाप से पवित्र करना और अच्छाई से सुरूचिपूर्ण करना।

---

[1] الفتاوى السعدية:٩٨

[2] "مجموع فتاوى ومقالات متنوعة" (7/418) ,दारुल क़ासिम-रियाज

[3] "شرح نواقض الإسلام" पृष्ठ संख्या:७९

तग़ूत (**अल्लाह के सिवा**) का इंकार पांच चीज़ों से पूरा होता है

अल्लाह के बंदो!असत्य धर्मों का इंकार पांच चीज़ों के द्वारा किया जाता है,उन के असत्य होने का आस्था रखना,उन की पूजा को छोड़ देना,उन से घृणा रखना,उन के मानने वालों को काफिर मानन,और उन से शत्रुता रखना,ये समस्त शर्तें अल्लाह तआला के इस फरमान से मिलती हैं:

﴿قَدۡ كَانَتۡ لَكُمۡ أُسۡوَةٌ حَسَنَةٞ فِيٓ إِبۡرَٰهِيمَ وَٱلَّذِينَ مَعَهُۥٓ إِذۡ قَالُواْ لِقَوۡمِهِمۡ إِنَّا بُرَءَٰٓؤُاْ مِنكُمۡ وَمِمَّا تَعۡبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ كَفَرۡنَا بِكُمۡ وَبَدَا بَيۡنَنَا وَبَيۡنَكُمُ ٱلۡعَدَٰوَةُ وَٱلۡبَغۡضَآءُ أَبَدًا حَتَّىٰ تُؤۡمِنُواْ بِٱللَّهِ وَحۡدَهُۥٓ﴾ [سورة الممتحنة:٤]

अर्थात: तुम्हारे लिये इबराहीम तथा उस के साथियों में एक अच्छा आदर्श है,जब कि उन्होंने अपनी जाति से कहा:निश्चय हम विरक्त हैं तुम से तथा उन से जिन की तुम इबादत (वंदना) करते हो अल्लाह के अतिरिक्त,हम ने तुम से कुफ्र किया,खुल चुका है बैर हमारे तथा तुम्हारे बीच और क्रोध सदा के लिये जब तक तुम ईमान न लाओ अकेले अल्लाह पर।

यह आयत तीन चीज़ों पर साक्ष्य है:काफिरों से बराअत का प्रदर्शन करना,उनके कार्य-शिर्क करने-से बराअत का प्रदर्शन करना,और उन से घृणा एवं शत्रुता का प्रदर्शन करना।

रही बात उन के पूज्यों की पूजा के असत्य होने का आस्था रखना तो यह इस आयत से स्पष्ट है,क्यों कि यदि उस के असत्य होने का आस्था न हो तो यह तीनों चीज़ें पूरी नहीं हो सकती।

रही बात उन के पूज्यों की पूजा छोड़ने और उन से संबंध समाप्त करने की तो यह इस आयत से सिद्ध है जिस में इबराहीम अलैहिस्सलाम ने अपने समुदाय से कहा:

﴿وَأَعۡتَزِلُكُمۡ وَمَا تَدۡعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ وَأَدۡعُواْ رَبِّي عَسَىٰٓ أَلَّآ أَكُونَ بِدُعَآءِ رَبِّي شَقِيّٗا ٤٨﴾ [سورة مريم:٤٨]

अर्थात: तथा मैं तुम सभी को छोड़ता हूँ और जिसे तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा,और प्रार्थना करता रहूँगा अपने पालनहार से,मुझे विश्वास है कि मैं अपने पालनहार से प्रार्थना कर के असफल नहीं हूँगा।

कुफ्र से विरक्ति का प्रदर्शन समस्त अंगों से होता है

उपरोक्त आयतों में एक बारीक बिंदु छुपा है,वह यह कि कुफ्र से विरक्ति का प्रदर्शन दिल,जबान और शरीर के अंगों से होता है,दिल से विरक्ति का प्रदर्शन उन से घृणा एवं उनके प्रति कुफ्र का आस्था रख कर होता है,जैसा कि इस आयत में है: ﴿كَفَرْنَا بِكُمْ﴾

ज़बान से बराअत का प्रदर्शन इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इस विवरण में है जो उन्होंने अपने समुदाय के समक्ष की: ﴿كَفَرْنَا بِكُمْ﴾

और शरीर के अंगों से विरक्ति का प्रदर्शन उन के इस कथन में है कि:

﴿وَأَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ﴾

अर्थात: तथा मैं तुम सभी को छोड़ता हूँ और जिसे तुम पुकारते हो अल्लाह के सिवा।

विरक्ति का प्रदर्शन प्रत्येक प्रकार के कुफ्र से किया जाएगा,न कि केवल प्रार्थना में शिर्क से विरक्ति किया जाएगा

अल्लाह के बंदो! विरक्ति का प्रदर्शन केवल अल्लाह की प्रार्थना में शिर्क से विरक्ति करने में सीमित नहीं है,बल्कि शिर्क व कुफ्र के समस्त प्रकारों को शामिल है,जैसे अल्लाह को दोषों से चित्रित करना,अथवा धर्म का परिहास उड़ाना,अथवा सहाबा को आलोचना का निशाना बनाना,अथवा उम्महातुल मोमेनीन (आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों) पर कीचड़ उछालना,अथवा यह सोचना कि जिबरील ने रिसालत में विश्वासघात की,अथवा ईसाइयत,यहुदियत एवं बौद्ध धर्म को सही मानना,अथवा इस प्रकार के कुफ्र की चीज़ों को करना जिन के कर्ता के काफिर होने पर सर्वसम्मति है।

अल्लाह के बंदो!इस प्राक्कथन से तौहीद (एकेश्वरवाद) और उसके विपरीत के ज्ञान का महत्व स्पष्ट हो गई,तौहीद के अध्याय में आपसी प्रेम एवं संबंध का अर्थ स्पष्ट हो गया,उस के विपरीत से बराअत का अर्थ स्पष्ट हो यगा,इस के ज्ञान से दिल सत्य मार्ग पर स्थिर रहता है,क्योंकि विपरीत के द्वारा ही विपरीत का महत्व स्पष्ट होता है,जैसा कि कवि ने कहा:

وبضِدها تتبين الأشياء   فالضِّد يظهر حسنه الضد

अर्थात:विपरीत की सुंदरता उस के विपरीत से ही स्पष्ट होती है और चीज़ें अपने विपरीत से ही स्पष्ट होती हैं।

अत: जो व्यक्ति शिर्क से अनजान हो वह तौहीद (एकेश्वरवाद) से भी अनजान रहता है,और जिस ने शिर्क से विरक्ति का प्रदर्शन नहीं किया उस ने तौह़ीद को पूरा नहीं किया।

अल्लाह तआला मुझे और आप को क़ुरान की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को उस की आयतों और नीतियों पर आधारित परामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

द्वीतीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाओ और जान लो जो व्यक्ति मुशरिकों के काफिर होने में संदेह करता है,वह भी उन के ही जैसा है,अत: उदाहरण के लिए जो व्यक्ति यह कहे: (मुझे नहीं पता,यहूदी काफिर है अथवा नहीं),यह किया है: (मुझे नहीं पता,ईसाई काफिर हैं अथवा नहीं),अथवा यह कहे: (मुझे नहीं मालूम कि अल्लाह के सिवा को पुकारने वाला मुसलमान है अथवा नहीं) अथवा यह कहे: (मुझे नहीं मालूम कि फिरऔन काफिर है अथवा नहीं) तो ऐसा कहने वाला व्यक्ति भी काफिर है,इस का कारण यह है कि वह इस बात में संदेह में है कि कुफ्र स्वयं सत्य है अथवा असत्स है।अत: वह निश्चित रूप से कुफ्र असत्य नहीं कहता,और न तागूत (अल्लाह के सिवा पूज्यों) का इंकार करता है,जबकि अल्लाह ने इस विषय में क़ुरान में निर्णायक रूप से बयान कर दिया है,और यह स्पष्ट कर दिया है कि कुफ्र असत्य है,अब जो व्यक्ति इस स्पष्टिकरण के बावजूद संदेह करे तो इसकी वासतविकता यह है कि क़ुरान में अवतरित अल्लाह के आदेश पर उस का ईमान नहीं है।

तथा यह कि शिर्क करने वाला इस्लाम धर्म से वास्तविक रूप से अपरिचित है,यदि वह इस्लाम धर्म से अवगत होता तो उस के समक्ष इस्लाम का विपरीत अर्थात कुफ्र स्पष्ट

होता,और जो व्यक्ति इस्लाम धर्म से अवगत न हो उस पर मुसलमान होने का हुकुम कैसे लगाया जा सकता है? !

शैख सुलैमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मोहम्मद बिन अ़ब्दुल वहाब[1] रहिमहुमुल्लाह अपनी पुस्तक: "أوثق عرى الإيمان" में फरमाते हैं:

यदि वह उन के कुफ्र के प्रति संदेह करे अथवा उन के कुफ्र से अनजान हो,तो उस के समक्ष क़ुरान एवं ह़दीस के वे प्रमाण प्रस्तुत किये जाएंगे जिन से उन का कुफ्र स्पष्ट होता है,उस की पश्चात भी यदि संदेह करे अथवा संदेह करे तो वह काफिर है क्योंकि विद्धानों की सर्वसम्मति है कि जो व्यक्ति काफिर के कुफ्र में संदेह करे तो वह भी काफिर है।[2]

जो व्यक्ति काफिरों के धर्म एवं उन के दीन को सह़ी माने,उस के प्रति आदेश

अल्लाह के बंदो!जो व्यक्ति काफिरों के मज़हब एवं धर्म को सह़ी माने,तो वह उस व्यक्ति से भी अधिक गुमराह है जो उन के धर्म के असत्य होन पर संदेह करता है,उस का कुफ्र संदेह करने वाले के कुफ्र से अधिक बड़ा है,क्योंकि उसकी वास्तविकता यह है कि वह इस्लाम धर्म को गलत कहता है जिस ने काफिरों के धर्म को असत्य कहा है,वह कुफ्र की रक्षा करता है,उस की दावत देता और उस की सहायता करता है,बल्कि कुफ्र के प्रचार प्रसार के लिए मैदान तैयार करता है,अल्लाह का शरण,उदाहरण स्वरूप वह व्यक्ति जो इस्लाम धर्म के विरुद्ध आस्थाओं में से किसी आस्था को सह़ी समझे,जैसे यहूदियत, अथवा,

---

[1] शैख सुलैमान नजद के महान विद्धानों में गिने जाते हैं,उन का जन्म सन १२०० हिजरी में हुआ,उन्होंने अनेक शैखों से ज्ञान प्राप्त किया,उन को कुतुबे सित्तह (बोखारी,मुस्लिम,अबूदाऊद,तिरमिज़ी,निसई एवं इब्ने माजा) में इजाज़ह (वर्णन करने की अनुमति) प्राप्त थी,उन्होंने पठन-पाठन एवं निर्णय का कार्य किया,उन का दिहांत जवानी में १२३४ हिजरी को अल्लाह की अनुमति से शहादत के रूप में हुआ,उनके अनेक लेख हैं,सबसे प्रसिद्ध पुस्तक "تيسير العزيز الحميد" है,तीन शताब्दियों से विद्धान एवं छात्रगण इससे लाभान्वित हो रहे हैं,तौह़ीदे ईबादत के अध्याय में वह सनद माने जाते हैं,उन के पश्चात आने वाले समस्त लोग और छात्र उन से लाभान्वित होते आए हैं,अल्लाह उन पर अपनी विस्तृत कृपा करे।

[2] مجموع رسائل الشيخ पृष्ठ संख्या १३५,संपादक:डाक्टर वलीद बिन अ़ब्दुर रह़मान आल फरयान ह़फिज़हुल्लाह,प्रकाशक:دار عالم الفوائد

ईसाइयत,अथवा समाजवाद,अथवा धर्मनिरपेक्षता जैसे काफिरों के संप्रदायों को सही समझे,अथवा भ्रम में तीनों धर्मों के बीच एकता की दावत दे,अर्थात यहूदियत,ईसाइयत और इस्लाम के बीच,और उन के धर्मों को इबराहीमी धर्म का नाम दे,और असत्य कलाम के द्वारा लोगों को संदेह में डाले और कहे कि यहूदी एवं ईसाई मूसा एवं ईसा के अनुयायी है,यह सत्य को असत्य के साथ मिलाना है,क्योंकि अल्लाह ने इस्लाम धर्म के द्वारा समस्त धर्मों को निरस्त कर दिया,और यदि मूसा एवं ईसा भी जीवित होते तो वे भी इस्लाम धर्म का अनुगमन करते,यह उस समय की बात है जब वे सही धर्म पर स्थिर होते,किन्तु अब स्थिति यह है कि उन के लाए हुए धर्म में विरूपण हो चुकी है और वह अपने सत्य रूप से बिल्कुल बदल चुके हैं,अत: तौरात के नष्ट होने के पश्चात मूसा के धर्म में विरूपण आगई,और (यहुदियों ने) ओज़ैर की पूजा आरंभ कर दी,और कहने लगे:वह अल्लाह के बेटा हैं?मसीह़ को जब आकाश की ओर उठा लिया गया तो उन के धर्म में भी विरूपण आगई और उन के अनुयायी सलीब की पूजा करने लगे,और कहने लगे कि वह अल्लाह के बेटा हैं,और अल्लाह तीन पूज्यों में से एक है,क्या इस के पश्चात भी यह कहना सही होगा कि यहूदियत और ईसाइयत सही धर्म हैं,जिन के द्वारा अल्लाह की पूजा करना लोगों के लिए जाएज़ है? !कदापि नहीं,अल्लाह का फरमान है:

﴿يَٰٓأَهۡلَ ٱلۡكِتَٰبِ قَدۡ جَآءَكُمۡ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمۡ كَثِيرٗا مِّمَّا كُنتُمۡ تُخۡفُونَ مِنَ ٱلۡكِتَٰبِ وَيَعۡفُواْ عَن كَثِيرٖۚ قَدۡ جَآءَكُم مِّنَ ٱللَّهِ نُورٞ وَكِتَٰبٞ مُّبِينٞ ١٥﴾ [سورة المائدة:١٥]

अर्थात: हे अहले किताब!तुम्हारे पास हमारे रसूल आगये हैं,जो तुम्हारे लिये उन बहुत सी बातों को उजागर कर रहे हैं,जिन्हें तुम छुपा रहे थे,और बहुत सी बातों को छोड़ भी रहे हैं,अब तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकार तथा खुली पुस्तक (क़ुरान) आ गई है।

तथा फरमाया:

﴿يَٰٓأَهۡلَ ٱلۡكِتَٰبِ قَدۡ جَآءَكُمۡ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمۡ عَلَىٰ فَتۡرَةٖ مِّنَ ٱلرُّسُلِ أَن تَقُولُواْ مَا جَآءَنَا مِنۢ بَشِيرٖ وَلَا نَذِيرٖۖ فَقَدۡ جَآءَكُم بَشِيرٞ وَنَذِيرٞۗ وَٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيۡءٖ قَدِيرٞ ١٩﴾ [سورة المائدة:١٩]

अर्थात:हे अहले किताब!तुम्हारे पास रसूलों के आने का क्रम बंद होने के पश्चात हमारे रसूल आ गये हैं,वह तुम्हारे लिये (सत्य को) उजागर कर रहे हैं,ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई शुभ सूचना सुनाने वाला तथा सावधान करने वाला (नबी) नहीं आया,तो तुम्हारे पास शुभ सूचना सुनाने तथा सावधान करने वाला आ गया है।तथा अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

अल्लाह अधिक फरमाता है:

﴿وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ ٱلْإِسْلَٰمِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِى ٱلْءَاخِرَةِ مِنَ ٱلْخَٰسِرِينَ ﴿٨٥﴾﴾ [سورة آل عمران:٨٥]

अर्थात: और जो भी इस्लाम के सिवा (किसी और धर्म) को चाहेगा तो उसे उस से कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह परलोक में क्षतिग्रस्तों में होगा।

खुलासा यह कि जो व्यक्ति काफिरों के धर्म को सही माने जैसे यहूदियत अथवा ईसाइयत को,तो वह काफिर है,अल्लाह का शरण।1

राफ़िजियों से निकट होने की दावत मुशरिकों के धर्म को अच्छा समझने में शामिल है

अल्लाह का शरण,इसी का उदाहरण यह भी है कि राफ़िजियों से निकट होने की दावत दी जाए,वे राफ़ज़ी जिन के धर्म का आाधार ही क़ब्रपूजा,आले बैत की पूजा,नबी की सुन्नत का इंकार,सहाबा को काफिर मानना,दोनों अमीनों पर आलोचना,अर्थात देवदूतों के अमीन जिबरील और उम्मत के अमीन मोह़म्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम,क़ुरान पर आलोचना और अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्मान पर तान व तशनी करने पर है,अत: तो व्यक्ति उन से निकटता बढ़ाने की दावत दे,और उन के धर्म को सुंदर बना कर प्रस्तुत करे तो वह वास्तव में उन से मुक्त नही है,इस लिए वह भी उन के जैसा ही काफिर है,क्योंकि उस ने कुफ्र और निफाक़ (द्विधावाद) को सही समझा,यद्यपि उसे स्वीकार नहीं किया,अल्लाह तआला हमें इससे सुरक्षित रखे।

उपदेश की समाप्ति

---

[1]देखें:"الإبطال لنظرية الخلط بين دين الإسلام وغيره من الأديان" लेख:शैख अबू बकर ज़ैद,रह़िमहुल्लाह, "شرح نواقض الإسلام" पृष्ठ संख्या८१,लेख:शैख सालिह़ अलफौज़ान ह़फिज़हुल्लाह

अल्लाह के बंदो!तौहीद (एकेश्वरवाद) और इस के विपरीत को समझने और शिर्क और इस में पड़ने से सचेत करने के लिए और यह बयान करने के लिए यह एक लाभदायक प्राक्कथन है कि मुसलमान पर अनिवार्य है कि मुशरिकों का काफिर न मानने अथवा उन के कुफ्र में संदेह करने अथवा उनके धर्म को सही मानने से सचेत रहें,क्योंकि ये तीनों इस्लाम भंजकों में से हैं,मुसलमान पर अनिवार्य है कि जिस व्यक्ति को अल्लाह और उस के रसूल ने काफिर बताया है उसके कुफ्र पर विश्वास रखे और उस के दिल में इस विषय में किसी प्रकार का संदेह न हो।

अल्लाह समस्त लोगों को जीवन भर तौहीद पर स्थिर रहने की तौफीक़ प्रदान करे,क्योंकि जो व्यक्ति शरीअ़त पर स्थिर रहा और तौह़ीद की स्थिति में उस की मृत्यु हुई तो वह बिना हिसाब व किताब के स्वर्ग में प्रवेश करेगा।

तथा आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात:अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे अल्लाह!हम तुझ से शांतिपूर्वक जीवन,विस्तृत जीविका और सदाचार की दुआ़ करते हैं।

हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भालई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلّم تسليما كثيرا.

शीर्षक: तृतीय भंजक: (जो व्यक्ति यह आस्था रखे कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिवा किसी और का मार्ग आप के मार्ग से अच्छा है,तो उस ने कुफ्र किया,इसी प्रकार से वह व्यक्ति (भी काफिर है जो) यह आस्था रखे कि गैरुल्लाह (अल्लाह के सिवा) का आदेश (निर्णय) अल्लाह के आदेश (निर्णय) से अच्छा है,जैसे वे लोग जो तागूतों (असुस-धर्म विरोधी शक्तियों) के निर्णय को और स्वनिर्मित नियमों को अल्लाह के निर्णय पर प्राथमिकता देते हैं)

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰه إِلا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात!

नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ एवं सबसे पूर्ण मार्ग है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआला से डरो और उस का आदर करो,उस की आज्ञा मानो और उस के अवज्ञा से बचते रहो,और जान लो कि मोहम्मद रसूलुल्लाह की गवाही देने से इस बात पर ईमान लाना अनिवार्य हो जाता है कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सबसे सर्वश्रेष्ठ और सबसे पूर्ण है,इस का आशय वह वह मार्ग है जिसे नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आस्था,प्रार्थनाओं,मामलों,नैतिकता,निर्णयों एवं राजनीतिक आदि में अपनाया,जिस का उल्लेख क़ुरान एवं ह़दीस में आया है।

अल्लाह के बंदो!नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग ही सबसे सर्वश्रेष्ठ मार्ग है,क्योंकि आप ने यह मार्ग अल्लाह तआला से प्राप्त किया है,और यह मार्ग जीवन के समस्त शोबो को शामिल है,प्रार्थनाएं,नैतिकता,राजनीतियां,निर्णयों,सामाजिक,शैक्षिक व प्रशिक्षण आदि समस्त पहलू इस में आते हैं।

इस का प्रमाण कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सबसे अच्छा मार्ग है,अल्लाह का यह कथन है:

﴿لَقَدۡ كَانَ لَكُمۡ فِي رَسُولِ ٱللَّهِ أُسۡوَةٌ حَسَنَةٞ﴾ [سورة الأحزاب:٢١]

अर्थात: तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में उत्तम आदर्श है।

आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने उपदेश में फरमाया करते थे: (सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है और सर्वोत्तम मार्ग मोह़म्मद का मार्ग है)।

आस्था के अध्याय में सर्वोत्तम मार्ग मोह़म्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है

अल्लाह के बंदो!नबी की जीविका का अध्ययन करने वाले को पता चल जाता है कि आप का मार्ग ही सबसे अफजल मार्ग है,अत: आस्था के अध्याय में हम देखते हैं कि वह इस्लामी आस्था जिसे आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने प्रस्तुत किया और जिस की शिक्षा दी वह उन समस्त अध्यायों एवं मसले को शामिल है जिन की अल्लाह पर,उस के दुवदूतों,पुस्तकों,रसूलों,आखिरत के दिन और तकदीर के भला-बुरा पर ईमान लाने के बाब में मनुष्य को आवश्यकता पड़ती है,यह आस्था पूर्व के पैगंबरों के आस्था में स्वस्थ बुद्धि के अनुसार नवीनता लाता है और मुद्रास्फीति एवं अपस्फीति से रोकता है।

इ़बादत (वंदना) के अध्याय में नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है

इ़बादत (वंदना) के अध्याय में भी नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है,इस में न कोई मुद्रास्फीति है न कोई अपस्फीति , न संसार त्याग है और न आलसा,आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:नि:संदेह इस्लाम धर्म बहुत आसान है।और जो व्यक्ति धर्म में कठोरता करेगा तो धर्म उस पर गालिब आ जाएगा,इस लिए संयम अपनाओ और (एतेदाल के साथ) निकट रहो और प्रसन्न हो जाओ।[1]

[1] इस ह़दीस को बोखारी (३९) ने अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने एक सहाबी से फरमाया जो इ़बादत (वंदना) में अपने नफ्स को थका देना चाहते थे: (तुम्हारे नफ्स का भी तुम पर अधिकार है)।1 और जब किसी सहाबी ने कहा कि वह मीट नहीं खाएंगे,किसी ने कहा कि:मैं महिलाओं से दूर रहुंगा और कभी विवाह नहीं करुंगा,तीसरे ने कहा:मैं रोज़ा रखुंगा और इफतार नहीं करुंगा,चौथे ने कहा:मैं रात भर क़्याम करुंगा,तो आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन से कहा:किन्तु मैं रोज़े भी रखता हूं और इफतार भी करता हूं,नमाज़ भी पढ़ता हूं और सोता भी हूं,इस के अतिरिक्त महिलाओं से निकाह भी करता हूं,जिस ने मेरी सुन्नत से मुंह मोड़ा वह मुझ से नहीं है।2

नैतिकता के अध्याय में नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है

नैतिकता के अध्याय में हम देखते हैं कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का नैतिक सबसे पूर्ण है,इस में कोई आश्चर्य की बात नहीं,क्यों कि जिस ने आप को प्रशिक्षण व शिक्षा दी वह अल्लाह तआ़ला है,और अल्लाह ने ही आप का सुंदर व्यवहार की गवाही भी दी,अल्लाह ने आप से फरमाया:

﴿وَإِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقٍ عَظِيمٍ ۝٤﴾ [سورة القلم:٤]

अर्थात: तथा निश्चय ही आप बड़े सुशील हैं।

परिवार वालो,सहा़बा और पड़ोसियों के प्रति नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का जो नैतिक एवं व्यवहार था,उस पर विचार करने से मालूम होता है कि आप हमेशा मुस्कुराते चेहरे के साथ मिलते थे,क्षमा से काम लेते,यहां तक कि आप ने उस यहूदी महिला को भी क्षमा कर दिया जिस ने आप के खाने में जहर मिला दिया और उस का प्रभाव आप ने अपने मृत्यु के समय महसूस किया,आप लोगों के प्रति कृपालु एवं दयालु थे,यहां तक कि युद्ध में शत्रुओं के

---

[1]इस ह़दीस को अह़मद (६/२६८) आदि ने आयशा रज़ीअल्लाहु अंहा से वर्णित किया है और "المسند" (२६४०८) के शेधकर्ताओं ने इसे ह़सन कहा है,इस ह़दीस का मूल बोखारी व मुस्लिम में अबू ह़ोज़ैफा रज़ीअल्लाहु अंहु और अन्य सहा़बा से वर्णित है।

[2]इस ह़दीस को बोखारी (५०६३) और मुस्लिम (१४०१) ने तकरीबन उपरोक्त शब्दों में अनस बिन मालिक रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

साथ भी दया एवं कृपा का व्यवहार करते,अत: ऐसे व्यक्ति की हत्या करने से आप ने मना फरमाते जो युद्ध में भाग न लिया हो,जैसे बूढ़े,महिलाएं एवं बच्चे,धन लूटने से रोकते,विश्वासघात से रोकते,अर्थात ग़नीमत के धन के बंटवारे से पहले कुछ लेने से रोकते,और अल्लाह के आदेश के अनुसार आप गनीमत के धन को बांटते थे,मृत्यु का मुस्ला करने से रोकते, अर्थात मृत्यु की शकल बिगाड़ने और उस से प्रतिशोध लेने से मना फरमाते,वचन-भंग और गद्दारी से रोकते,और बिना किसी प्रतिकर के कैदियों को रिहा कर देते,उन में से कुछ को प्रतिशोध के लिए हत्या कर देते,कुछ को फिदया (प्रतिदान) ले के रिहा कर देते और और कुछ को मुसलमान क़ैदियों की रिहाई के बदले में रिहा कर देते,यह सब आप नीति के अनुरूप किया करते थे।

अल्लाह के बंदो!आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुंदर व्यवहार का उल्लेख तौरैत एवं इंजील में भी आया है,अत: अ़ता बिन यसार का बयान है:मैं ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स रज़ीअल्लाहु अंहुमा से मिला और कहा कि रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की जो विशेषता एवं गुण तौरैत में है,मुझे वह बता दी जिए। उन्होंने फरमाया:

"अल्लाह की क़सम!आप के कुछ गुण तौरैत में वही हैं जो क़ुरान में बयान हुए हैं। (ऐ नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम!हम ने आप को गवाही देने वाला,शुभ सूचना देने वाला,डराने वाला बना कर भेजा)और أُمِّيِّينَ [1]की निगहबानी करने वाला बना कर भेजा है।तू मेरा बंदा और मेरा रसूल है।मैं ने तेरा नाम متوكل रखा है,न तू दुश्चरित्र है और न कठोर ह्रदय वाला,न तू बाज़ारों में शोर करने वाला है और न बुराई का बदला बुराई से देता है बल्कि क्षमा एवं दया करता है,अल्लाह तआ़ला उसे उस समय तक बिल्कुल मृत्यु नहीं देगा जब तक कि उस के द्वारा एक टेढ़ी क़ौम को सीधा न कर दे वह इस प्रकार से कि वह कहने लगें और उस के द्वारा नेत्रहीन देखने वाले हो जाएं और बेहरे कान खोल दिए जाएं और अनभिज्ञ अवगत किए जाएं।[2]

मामलों के अध्याय में नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है

---

[1] अर्थात अ़रबों की संरक्षण करने वाला,अ़रबों को أُمِّيّ इस लिए कहते हैं कि उन के युग में लिखने पढ़ने का चलन बहुत कम था।देखें: इब्ने असीर की النهاية

[2] इस ह़दीस को बोखारी (२१२५) ने रिवायत किया है।

व्यापारिक मामलों में भी नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग प्रत्येक प्रकार के मामलों को शामिल है,जैसे बेचना खरीदना,किराया,वकालत एवं उधार लेने देन आदि।इसी प्रकार से आप की जीविका खरीदने बेचने के उन समस्त प्रकारों की स्पष्टता में भी पूर्ण है जो अर्थव्यवस्था के लिए हानिकारक हैं,जैसे सूद,धोखा एवं रिश्वत आदि,इब्नुल क़य्यिम रहिमहुल्लाह ने अपनी पुस्तक "زاد المعاد" में तकरीबन अस्सी (८०) पृष्ठों में अनेक अध्याय स्थापित किए हैं जिन में खरीदना व बेचना से संबंधित तरीके बयान किए गए हैं।

राजनीति से अध्याय में नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है

राजनीति के अध्याय में नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सबसे पूर्ण मार्ग है,विशेष एवं अमानतदार लोगों से आप दीनी मामलों में सलाह लिया करते थे,कभी कभी अपनी पत्नियों से भी परामर्श मांगते,जिस प्रकार से आप ने बदर,खंदक़ और ह़ोदैबिया आदि के अवसर से किया,इस से आप को सही राय जानने में सहायता मिलती और विजय प्राप्त होता,आप काफिरों के साथ अमन व शांति का अनुबंध करते,उन के राजदूतों के साथ सुंदर व्यवहार करते,जो काफिर आप के पास आता आप उसे शरण प्रदान करते यहां तक कि वह अपने शरण की ओर लोट जाता,उन के साथ जो ठोस अनुबंध करते उसे पूरा करते,आप वचन-भंग और विश्वासघात से संपूर्ण मुक्ति में प्रसिद्ध थे,यद्यपि काफिर विश्वासघात क्यों न करदें (फिर भी आप ऐसा नहीं करते),युद्ध में मैदानों में अत्याचार करने वालों को क्षमा कर देते,जब मक्का विजय हुआ और आप को वहां के निवासियों पर प्रभुत्व प्राप्त हुआ और शक्ति एवं सरदारी आप के हाथ में आगई,तो आप ने समस्त लोगों को क्षमा कर दिया,जब कि यही वे लोग थे जिन्होंने आप से युद्ध किया और आप को मक्का से निकाल बाहर किया,आप के साथ और आप के सह़ाबा के साथ क्या क्या नहीं किया,किन्तु आप ने उन सब को क्षमा कर दिया,जबकि आप उन से प्रतिशोध लेना चाहते तो आसानी से ले सकते थे,आप का न कोई निंदा होता और न कोई पकड़।

निर्णय एवं न्याय के अध्याय में नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है

निर्णय और न्याय के बाब में बनी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सबसे अधिक निष्पक्ष एवं पूर्ण मार्ग है,इब्नुल क़य्यिम रहिमहुल्लाह ने अपनी पुस्तक "زاد المعاد في هدي خير العباد" में

तकरीबन पांच सौ (५००) पृष्ठों में अध्याय स्थापित किये हैं जिन में न्याय से संबंधित आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग बयान किया है।

चिकित्सा एवं उपचार के अध्याय में नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग सर्वश्रेष्ठ है

चिकित्सा व उपचार के बाब में भी नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग अकमल है,इब्नुलक़य्यिम रहि़महुल्लाह ने अपनी पुस्तक "زاد المعاد" में तकरीबन चार सौ (४००) पृष्ठ के अंदर दिली एवं शारीरिक इलाज का पैगंबरी तरीका बयान किया है।

अल्लाह के बंदो!अनेक बुद्धिमान काफिरों ने नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीके के बारे में यह गवाही दी है कि वह सर्वोत्तम तरीका है,उन में से अनेक लोगों ने इस्लाम स्वीकार भी किया है,क्योंकि उन को विश्वास हो गया कि ऐसा व्यापक मार्ग कोई मनुष्य अपनी ओर से प्रस्तुत नहीं कर सकता,पर वही जो नबी हो जिसे अपने रब की सहायता प्राप्त हो।

अल्लाह के बंदो!यह स्पष्ट करने के लिए एक लाभदायक प्राकथ्थन है कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदर्श एवं मार्ग ही सबसे कामिल एवं उत्तम मार्ग है,जो व्यक्ति इसे समझ ले उस के समक्ष नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रेम एवं आप के मार्ग रक्षा का दरवाजा खुल जाएगा।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुरान की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को उस की आयतों और नीतियों पर आधारित परामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

द्वितीय उपदेश:

नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग एवं तरीका प्रत्येक स्थान एवं युग के लिए उपयुक्त एवं उचित है।

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!आप अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाएं और जान लें कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग हर युग एवं स्थान के लिए उपयुक्त एवं उचित है,वह एक ठोस प्रणाली है जिस में कोई परिवर्तन नहीं आती,क्योंकि वह अल्लाह तआ़ला की ओर से अवतरित वह्य (प्रकाशना) पर आधारित है,वह अल्लाह जो अपने ज्ञान व नीति एवं कृपा में पूर्ण है,जो लोगों के लिए भलाई की इच्छाओं में भी पूर्ण है,नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस वह्य को लोगों तक पहुंचा दिया,यही अल्लाह का सीधा मार्ग और उस का संतुलित धर्म है जिसे अल्लाह ने अपने बंदों के लिए पसंद फरमाया और उस के सिवा कोई धर्म अल्लाह को पसंद नहीं।

जो व्यक्ति यह आस्था रखे कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिवा किसी और का मार्ग अफजल है तो वह काफिर है,अथवा यह आस्था रखे कि अल्लाह के सिवा किसी और का निर्णय और आदेश अल्लाह के निर्णय एवं आदेश से अच्छा है तो वह भी काफिर है,जैसे वे लोग जो तागूतों (असुस-धर्म विरोधी शक्तियों) के आदेश और स्वनिर्मित नियमों को अल्लाह के आदेश पर पराथमिकता देते हैं

उपरोक्त विवरणों के अनुसार जो व्यक्ति यह आस्था रखे कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सिवा किसी और का मार्ग एवं तरीका नबी के मार्ग एवं तरीके से सर्वश्रेष्ठ है तो वह काफिर है,क्योंकि ऐसा व्यक्ति वास्तव में अल्लाह की नीति एवं शरीअ़त की निंदा करता है,उदाहरण स्वरूप जो धर्मनिरपेक्षता,उदारतावाद और लोकतंत्र जैसे मनुष्य के बनाए हुए जीवन प्रणाली को इस्लामी शरीअ़त पर प्राथमिकता देता है,अथवा यह आस्था रखे कि मनुष्य के बनाए हुए नियम एवं कानून इस्लामी शरीअ़त से श्रेष्ठ हैं,अथवा यह कि इस्लामी प्रणाली बीसवी शदाब्दी में लागू होने के योग्य नहीं,अथवा यह कि इस्लामल प्रणाली मुसलमानों की पिछड़ेपन का कारण है,अथवा इस प्रणाली को रब और बंदा के आपसी संबंध में सीमित करके जीवन के अन्य भागों से उसे बाहर करदे,अथवा यह राय रखे कि चोर का हाथ काटने अथवा विवाहित बलात्कारी को संगसार (पत्थर मार कर हत्या करना) करने जैसे अल्लाह के आदेश आधुनिक युग के लिए उचित एवं उपयुक्त नहीं हैं,अथवा यह आस्था रखे कि मामलों अथवा हुदूद

(इस्लामी सीमएं) आदि में इस्लामी शरीअ़त के अतिरिक्त अन्य प्रणाली के द्वारा निर्णय करना जाएज़ है,तो ऐसा व्यक्ति काफिर है,क्योंकि वह इस राय के द्वारा मखलूक के निर्णय को खालिक़ (रचनाकार) पर प्राथमिकता देता है और जाहिलियत (अंधकार युग) के निर्णय से प्रसन्न होता है और इस बात से प्रसन्न होता है कि तागूतों (असुस-धर्म विरोधी शक्तियों) और उस का निर्णय अल्लाह और उस के रसूल के निर्णय से श्रेष्ठ है,और अल्लाह ने जिस प्रकार से उस का खंडन और तकफीर (काफिर मानना) करने का आदेश दिया है,उस पर अ़मल नहीं करता:

﴿ فَمَن يَكۡفُرۡ بِٱلطَّٰغُوتِ وَيُؤۡمِنۢ بِٱللَّهِ فَقَدِ ٱسۡتَمۡسَكَ بِٱلۡعُرۡوَةِ ٱلۡوُثۡقَىٰ لَا ٱنفِصَامَ لَهَاۗ﴾ [سورة البقرة:٢٥٦]

अर्थात: अत: अब जो तागूत (अल्लाह के सिवा पूज्यों) को नकार दे,तथा अल्लाह पर ईमान लाये तो उस ने दृढ़ कड़ा (सहारा) पकड़ लिया जो कभी खण्डित नहीं हो सकता।

तथा उस ने उस चीज़ को मबाह़ (जिसका करना वैध हो) कर दिया है जिसे अल्लाह ने पूर्ण रूप से ह़राम (अवैध) कर दिया है और जो व्यक्ति अल्लाह के ह़राम चीज़ों को मबाह़ (जिसका करना वैध हो) बताए वह अल्लाह से शत्रुता रखने वाला है और सवर्सम्मति से वह काफिर है।[1]

अल्लाह के बंदो!जो व्यक्ति रसूल का आज्ञा मानने से मुंह फेरे और आप के निर्णय से मुंह मोड़े वह मोनाफिक (द्विधावादि)है मोमिन नहीं।अल्लाह का फरमान है:

﴿وَإِذَا قِيلَ لَهُمۡ تَعَالَوۡاْ إِلَىٰ مَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ وَإِلَى ٱلرَّسُولِ رَأَيۡتَ ٱلۡمُنَٰفِقِينَ يَصُدُّونَ عَنكَ صُدُودٗا ٦١﴾ [سورة النساء:٦١]

अर्थात: और जब बुलाये जाते हैं अल्लाह तथा उस के रसूल की ओर ताकि (रसूल) निर्णय कर दें उन के बीच (विवाद का) तो आप मोनाफिको (द्विधावादियों) को देखते हैं कि वह आप से मूँह फेर रहे हैं।

---

[1] देखें: शैख इब्ने बाज़ रहिमहुल्लाह की (مجموع فتاوى مقالات متنوعة) (१/१३२)

इब्ने तैमिया रह़िमहुल्लाह फरमाते हैं:अल्लाह तआ़ला ने यह स्पष्ट कर दिया कि जो व्यक्ति रसूल की आज्ञा मानने से मुंह फेरे और आप के निर्णय से मुंह चुराए तो वह मोनाफिक (द्विधावादि) है,मोमिन नहीं।और वह मोमिन है जो कहे: (हम ने सुना और आज्ञा माना),केवल रसूल के निर्णय से मुंह चुराने और किसी और का निर्णय मांगने से ईमान समाप्त हो जाता और मोनाफिकत (द्विधावाद) सिद्ध हो जाती है।[1]

तथा आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात: अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भालई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

---

[1] (مجموع فتاوى مقالات متنوعة) पृष्ठ:३७,शोध:मोहम्मद मोह़ीयुद्दिन अ़ब्दुलह़मीद

शीर्षक: चौथा भंजक: (रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाई हुई शरीअ़त की किसी चीज़ में घृणा रखना)

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात!

स्र्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोंहम्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ (धर्म में) अविष्कार की गई बिदअ़तें (नवाचार) हैं,धर्म में अविष्कार की गई प्रत्येक चीज़ बिदअ़त (नवाचार) है,प्रत्येक बिदअ़त (नवाचार) गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाजी है।

धर्म से प्रेम करना ईमान की अनिवार्यता में शामिल है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरें और उस का आदर करें,उस का आज्ञा मानें और उस के अवज्ञा से बचें,और जान लें कि لااله الا الله और محمد رسول الله की गवाही से अल्लाह और उस के नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रेम अनिवार्य हो जाता है।शहादतैन को सत्य दिल के साथ अ़मल में लाने की यह पहचान है,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

﴿قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ ٱللَّهَ فَٱتَّبِعُونِى يُحْبِبْكُمُ ٱللَّهُ﴾ [سورة آل عمران:٣١]

अर्थात: हे नबी!कह दो: यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो,अल्लाह तुम से प्रेम करेगा।

अल्लाह के बंदो!इस्लाम धर्म से सत्य प्रेम करने वाले मामिन उस के शिक्षाओं के अनुगमन से पीछे नहीं हटते,बल्कि अल्लाह और रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के समस्त आदेशों का पालन करते हैं,जैसा कि अल्लाह ने फरमाया:

﴿ إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ ٱلْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوٓاْ إِلَى ٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَن يَقُولُواْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَاۚ وَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ ﴿٥١﴾ وَمَن يُطِعِ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ وَيَخْشَ ٱللَّهَ وَيَتَّقْهِ فَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْفَآئِزُونَ ﴿٥٢﴾ ﴾ [سورة النور: ٥١- ٥٢]

अर्थात: ईमान वालों का कथन तो यह है कि जब अल्लाह और उस के रसूल की ओर बुलाये जोयें ताकि आप उन के बीच निर्णय कर दें,तो कहें कि हम ने सुन लिया तथा मान लिया,और वही सफल होने वाले हैं।तथा जो अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा का पालन करें और अल्लाह का भय रखें,और उस की (यातना) से डरें,तो वसी सफल होने वाले हैं।

अल्लाह तआला ने अपनी पुस्तक में जो निर्णय कर दिया और जिस चीज़ का आदेश दिया है उस से मोमिनों को अपने दिलों में कोई तंगी नहीं होती,अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُواْ فِيٓ أَنفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُواْ تَسْلِيمًا ﴿٦٥﴾﴾ [سورة النساء:٦٥]

अर्थात: तो आप के पालनहार की शपथ!वह कभी ईमान वाले नहीं हो सकते,जब तक कि अपने आपस के विवाद में आप को निर्णायक न बनायें,फिर आप जो निर्णय कर दें उस से अपने दिलों में तनिक भी संकीर्णता (तंगी) का अनुभव न करें,और पूर्णत: स्वीकार कर लें।

मोमिन वे हैं जो बाह्य रुप से अपने शरीर के अंगों से और आंतरिक रूप से अपने दिल से शरीअत की संरक्षण एवं अनुगमन करते हैं,वह इस प्रकार से कि अल्लाह और उस के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के निर्णय से अपनी प्रसन्नता दिखाते हैं।

अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना:उस व्यक्ति ने ईमान का स्वाद पा लिया जो अल्लाह के रब,इस्लाम के धर्म और मोह़म्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से रसूल होने पर (दिल से) प्रसन्न हो गया।[1]

मनुष्य के लिय यह अनिवार्य है कि इस्लाम धर्म के लिए अपने दिल में विस्तीर्णता एवं खुलापन रखे,उस से प्रसन्न हो और प्रेम करे,क्योंकि वह उस पालनहार की ओर से है जो अपनी

[1] इस ह़दीस को मुस्लिम (३४) ने रिवायत किया है।

शरीअ़त में ह़कीम (तत्वज्ञ) है,अपनी मखलूक़ के हितों से अवगत है,उन पर कृपालु एवं दयालु है,अल्लाह का फरमान है:

﴿أَلَا يَعۡلَمُ مَنۡ خَلَقَ وَهُوَ ٱللَّطِيفُ ٱلۡخَبِيرُ ۝١٤﴾ [سورة الملك:١٤]

अर्थात: क्या वह नहीं जानेगा जिस ने उत्पन्न किया?और वह सुक्ष्मदर्शक सर्व सूचित है?

धर्म का प्रेम प्राप्त करने के कारण एवं कारक

अल्लाह के बंदो!जिन मामलों से दिल में धर्म के प्रति प्रेम पैदा होता है,उन में यह जानना भी शामिल है कि अल्लाह ने इस धर्म को अनिवार्य कर दिया,वह अपने बंदो के हितों से अवगत है,जिन आदेशों का आदेश देता है,उन में वह ह़कीम (तत्वज्ञ) और अपने बंदों पर कृपालु है।

इस्लाम धर्म का प्रेम प्राप्त करने का एक कारण उस की उन विशेषताओं एवं गुणों से अवगत होना है जिन के द्वारा पूर्व के धर्मों से यह धर्म प्रमुख है,जिन की संख्या चालीस से अधिक है।[1]

धर्म का प्रेम प्राप्त करने का एक तरीका यह जानना भी है कि जो व्यक्ति इस धर्म से प्रेम रखता और इस पर अ़मल करता है,वह मुक्ति पाएगा और जो व्यक्ति इस से मुँह फेरता है,वह नष्ट होगा।

धर्म का प्रेम प्राप्त करने का एक कारण यह है कि इस धर्म को स्वीकारने वाले अनेक गैर मुस्लिमों की स्थियों पर विचार किया जाए जो अपने ज्ञान के मानक,रंग व वंश,देश एवं धर्म में एस दूसरे से भिन्न होते हैं,यहां तक कि-सोशल मेडिया के इस युग में-इस्लाम धर्म वही है जिस की ओर सर्वाधिक आकर्षित हो रहे हैं और अपना रहे हैं।

अल्लाह के बंदो!धर्म का प्रेम प्राप्त करने का एक कारण यह है कि इसके उत्तम शिक्षाओं से व्यक्ति अवगत हो जो पुण्य एवं भलाई की दावत देती हैं।यह शरीअ़त हर उस चीज़ की दावत देती है जिस की अच्छाई एवं उत्तमता पर स्वस्थ बुद्धि एवं उत्तम स्वभाव गवाही देती है,और

[1] अल्लाह तआ़ला की तौफीक़ से श्रृख्लाबद्ध "इस्लामी शरीअ़त की उतकृष्ट विशेषताएं"के विषय पर उपदेश प्रस्तुत करने का अवसर मिला,ये उपदेश इंटरनेट पर इसी विषय से प्रकाशित हैं।

हर उस चीज़ से रोकती है जिस की घृण्ता व निकृष्टता से स्वस्थ बुद्धि एवं उत्तम स्वभाव रोकती है,अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ ٱللَّهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴾ [سورة المائدة:٥٠]

अर्थात: और अल्लाह से अच्छा निर्णय किस का हो सकता है,उन के लिये जो विश्वास रखते हैं।

तथा अल्लाह का फरमान है:

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ يَأْمُرُ بِٱلْعَدْلِ وَٱلْإِحْسَـٰنِ وَإِيتَآيِٕ ذِى ٱلْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ ٱلْفَحْشَآءِ وَٱلْمُنكَرِ وَٱلْبَغْىِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝٩٠ ﴾ [سورة النحل:٩٠]

अर्थात: वस्तुत: अल्लाह तुम्हें न्याय तथा उपकार और समीपवर्तियों को देने का आदेश दे रहा है,और निर्लज्जा तथा बुराई और विद्रोह से रोक रहा है,और तुम्हें सिखा रहा है ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।

शैख अंब्दुर रह़मान बिन सादी रह़िमहुल्लाह लिखते हैं:शरीअ़त की शिक्षाएं अच्छे एवं उत्तम अ़मलों,सुंदर व्यवहार और बंदों के हित पर आधारित चीज़ों का आदेश देती हैं,न्याय,श्रेष्ठता व कृपा,दया और पुण्य एवं भालाई पर प्रोत्साहित करती हैं,अन्याय,अश्लीलता व नग्नता और दुश्चरित्रता से रोकती हैं,कमाल (पूर्ण) व जलाल (प्रतापी) की प्रत्येक वे विशेषताएं जिन्हें पैगंबरों ने सिद्ध किया,उस इस्लामी शरीअ़त ने भी सिद्ध किया,और दीनी व दुनयावी हितों पर आधारित जिन आदेशों की ओर अन्य शरीअ़तों ने बोलाई,उन के लिए इस्लाम ने भी प्रोत्साहित किया,और प्रत्येक उपद्रवी कार्य से इस्लाम ने रोका और उस से बचने का आदेश दिया।[1]

धर्म से घृणा रखना इस्लाम भंजकों में से है

अल्लाह के बंदो!ईमान के विरुद्ध चीज़ों में से यह भी है कि धर्म से अथवा उस के किसी भाग से घृणा रखा जाए,चाहे यह घृणा किसी आस्था से संबंधित हो अथवा ईबातद (वंदना) अथवा

---

[1] थोड़े हेर-फेर के साथ "الدرة المختصرة في محاسن الدين الإسلامي" पृष्ठ संख्या:१९,प्रकाशक:دار العاصمة ,रियाज़ से लिया गया है।

मामलों अथवा व्यवहारों एवं नैतिकता से संबंधित हो,क्योंकि उस से घृणा रखने से उस के उतारने वाले से घृणा माना जाएगा जो कि अल्लाह तआला है,अथवा उसे नकल करने वाले घृणा रखना माना जाता है जो कि मोहम्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं।अथवा यह आस्था रखे कि ये शिक्षाएं सत्य पर आधारित नहीं हैं,अथवा यह आस्था रखे कि धर्म में सौभाग्य व सफलता नहीं है,ये सब अल्लाह की नीति,उस के कथनों एवं कार्यों में आलोचना करने के दृश्य हैं।तथा यह कि धर्म से घृणा इस्लाम एवं ईमान की वास्तविकता के विरुद्ध है,जिस का मतलब होता है अल्लाह तआला के समक्ष एकेश्वरवाद के द्वारा आत्म समर्पण करना,आज्ञा के द्वारा उस का अनुगमन करना और उस के निर्धारित शरीअत से प्रसन्न होना।

धर्म से घृणा रखना काफिरों एवं मोनाफिक़ों (द्विधावादियों) की विशेषता है

अल्लाह के बंदो!सत्य से घृणा रखना काफिरों एवं मोनाफिक़ों (द्विधावादियों) की विशषता है,अल्लाह तआला फरमाता है:

﴿ وَٱلَّذِينَ كَفَرُواْ فَتَعۡسٗا لَّهُمۡ وَأَضَلَّ أَعۡمَٰلَهُمۡ ۝٨ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمۡ كَرِهُواْ مَآ أَنزَلَ ٱللَّهُ فَأَحۡبَطَ أَعۡمَٰلَهُمۡ ۝٩ ﴾ [سورة محمد: ٨ – ٩]

अर्थात: और जो काफिर हो गये तो विनाश है उन्हीं के लिये और उस ने व्यर्थ कर दिया उन के कर्मों को।

तथा अल्लाह तआला ने नरक वासियों के प्रति फरमाया:

﴿ وَنَادَوۡاْ يَٰمَٰلِكُ لِيَقۡضِ عَلَيۡنَا رَبُّكَۖ قَالَ إِنَّكُم مَّٰكِثُونَ ۝٧٧ لَقَدۡ جِئۡنَٰكُم بِٱلۡحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكۡثَرَكُمۡ لِلۡحَقِّ كَٰرِهُونَ ۝٧٨ ﴾

[سورة الزخرف: ٧٧ - ٧٨]

अर्थात: तथा वह पुकारेंगे कि हे मालिक!हमारा काम ही तमाम कर दे तेरा पालनहार।वह कहेगा:तुम्हें इसी दशा में रहना है।(अल्लाह कहेगा):हम तुम्हारे पास सत्य लाये किन्तु तुम में से अधिकतर को सत्य अप्रिय था।

अल्लाह के बंदो!शरीअत से घृणा उसी समय होती है जब पूरी शरीअत से,अथवा उस के अधिकतर भाग से,अथवा उस के किसी छोटे भाग से घृणा रखता है,ये सब निफाक़ (द्विधावाद) एवं कुफ्र है,क्योंकि शरीअत का पूर्ण भाग हो अथवा थोड़ा भाग,वे सब अल्लाह की ओर से है।

अल्लाह के बंदो!यह स्पष्ट करने के लिए यह एक लाभदायक प्राक्कथन है कि शरीअ़त से प्रेम रखना अनिवार्य है,इस का प्रेम इस के अवतरित करने वाले के प्रे से होता है,जो कि अल्लाह तआ़ला है,जो व्यक्ति इस प्रक्कथन को समझ ले,उस के लिए अ़मल एवं पैगंबर की जीवनी की सुरक्षा का द्वार खुल जाता है।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुरान की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को उस की आयतों और नीतियों पर आधारित परामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

द्वीतीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाएं और जान लें कि धर्म से घृणा रखने का एक प्रकार यह है कि पैगंबर की सुन्नत से घृणा रखी जाए,अथवा सह़ाबा से,अथवा उम्महातुल मोमेनीन (आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियां) से,अथवा हिजाब व परदा के आदेश से घृणा रखी जाए,अथवा इस बात की ओर बोलाया जाए कि धर्म को जीवन के समस्त भागों से अलग करके इसे केवल नमाज़ रोज़े एवं ह़ज़ जैसी प्रार्थनाओं तक सीमित कर दिया जाए,मामलों एवं राजनीति से धर्म को बाहर रखा जाए,ये सब धर्म से घृणा रखने के विभिन्न रूप हैं,जो कि कुफ्रे अकबर है।अल्लाह का शरण।

अल्लाह के बंदो!हमारे युग में जो लोग धर्म से घृणा रखते हैं उन में धर्मनिरपेक्षता और उदारतावाद और इन जैसे अन्य जीवन प्रणाली के अनुयायी भी शामिल हैं।ये इस बात की दावत देते हैं कि धर्म को जीवन के समस्त भागों से अलग करके नमाज़,रोज़ा और ह़ज़ जैसी प्रार्थनाओं में सीमित कर दिया जाए,नि:संदेह उन की यह दावत धर्म से उनकी घृणा और उस से असंतोष का प्रतीक है,क्योंकि यदि वे अल्लाह के धर्म से प्रेम करते तो इस अंतर की दावत न देते,उन में से कुछ लोग स्पष्ट रूप से इस की दावत देते हैं तो कुछ लोग अपने घृणा को छुपाए रखते हैं,वे अपने इस व्यवहार के कारण मोनाफिक (द्विधावादी) हैं,ईमान मो दिखाते

हैं,किन्तु अंदर से रह़मान की शरीअ़त से घृणा रखते हैं,अल्लाह तआ़ला हमें इस से सुरक्षित रखे।

उन के विचलन एवं गुमराही का एक दृश्य यह है कि वे हिजाब से अपनी शत्रुता प्रकट करते हैं,और जो लोग महिलाओं को न्यायालय एवं शासन का भार देने को ह़राम कहते हैं,उन से ये खुली शत्रुता का प्रदर्शन करते हैं,अपने देशों में एक से अधिक विवाह को रोकने के लिए नियम एवं कानून बनाते हैं,और उन मामलों में महिला एवं पुरुष के बीच समानता का गुहार लगाते हैं जिन में अल्लाह ने अपनी पुस्तक के अंदर दोनों को अलग बताया है।उदाहरण स्वरूप मीरास,पुण्य का आदेश देने और पाप से रोकने वाले से शत्रुता का प्रदर्शन करते हैं,इसका कारण यह है कि वह अश्लीलता व नग्नता से प्रेम करते और अच्छी आदतों एवं व्यवहारों से घृणा रखते हैं।

धर्म से घृणा एवं प्रेम एक ऐसा कार्य है जो दिल में छुपा रहता है

अल्लाह के बंदो!यह ऐसा भंजक (इस्लाम विरोधी कार्य) है जो दिलों में छुपा रहता है,हृदय जीवित मनुष्य को चाहिए कि अपने आप का अवलोकन करता रहे ताकि उस के दिल में शरीअ़त के प्रति तंगी,अथवा उस के किसी आदेश से घृणा न रहे,इस से पहले कि वह दिन आए जिस दिन क़ब्रों से शवों को जीवित उठाए जाएंगे,दिलों के रहस्य खोल दिए जाएंगे और वही सुरक्षित रहेगा जिसे अल्लाह तआ़ला सुरक्षित रखे।

उपदेश की समाप्ति:

आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात:अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे अल्लाह!हमारे दिलों को निफाक (पाखंड) से,हमारे अ़मलों को दिखावे से और हमारी निगाहों को कदाचार से पवित्र कर दे।

हे अल्लाह!हम तुझ से शांतिपूर्वक जीवन,विस्तृत जीविका और सदाचार की दुआ़ करते हैं।

हे अल्लाह!इस्लाम और मुसलमान को सम्मान दे,शिर्क और मुशिरकों को अपमानित करदे,और अपने धर्म की रक्षा फरमा,हे अल्लाह!इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान दे,शिर्क और मुशिरकों को अपमानित करदे,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नाश करदे,और अपने एकेश्वरवाद बंदों की सहायता फरमा।

हे अल्लाह! हमें अपने देशों शांति का जीवन प्रदान कर,हे अल्लाह!हमारे ईमामों और हमारे शासकों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का मार्ग दर्शन करने वाला और हिदायत पर चलने वाला बना।

हे अल्लाह समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक लागू करने,अपने धर्म की उच्चता की तौफीक़ प्रदान कर और उन्हें अपने अधीन लोगों के लिए रह़मत का कारण बना।

हे अल्लाह!हम तुझ से दुनिया व आखिरत की समस्त भलाई की दुआ़ मांगते हैं जो हम को ज्ञात है और जो ज्ञात नहीं,और तेरा शरण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत के समस्त पापों एवं कदाचारों से जो हम को ज्ञात हैं और ज्ञात नहीं हैं।

हे अल्लाह हम से मंहगाई,आपदा,बलात्कार,भूकंपों,आजमाइशों और समस्त आंतरिक एवं बाह्य बुरे फितनों को हम से दूर करदे,विशेष रूप से हमारे इस देश से और समान्य रूप से समस्त मुस्लिम देशों से,हे दोनों संसार के पालनहार!

हे अल्लाह!हम से आपदा को दूर कर दे,नि:संदेह हम मुसलमान हैं।

हे अल्लाह!हम तेरा शरण चाहते हैं तेरी उपकारों की समाप्ति से,तेरी सुख के हट जाने से,तेरी अचानक की यातना से और तेरी हर प्रकार की अप्रसन्नता से।

हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं,और वे कार्य एवं कथन भी जो स्वर्ग से निकट कर दे,औ हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कार्यों एवं कथनों से भी जो नरक से निकट करे।

हे अल्लाह!हमारे रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान कर,हमारे मुरदों पर कृपा फरमा और हम में से जो कठिनाई से जूझ रहे हैं,उन्हें सलामती प्रदान कर।

हे अल्लाह!हमारे धर्म को सही करदे,जो हमारे (दीन व दुनिया के) समस्त कार्य की रक्षा का कारण है और हमारी दुनिया को सही कर दे जिस में हमारी जीविका है और हमारे आखिरत को सही कर दे जिस में हमारा (अपनी मंज़िल की ओर) लौटना है और हमारे जीवन को हमारे लिए प्रत्येक पुण्य में वृद्धि का कारण बना दे और हमारे मृत्यु को हमारे लिए प्रत्येक दुष्टता से राहत बना दे।

हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भालई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

शीर्षक: इस्लाम भंजक चीज़ें

पांचवां भंजक: (धर्म के किसी आदेश का उपहास करना)

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात!

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोंहम्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ (धर्म में) अविष्कार की गई बिदअतें (नवाचार) हैं,धर्म में अविष्कार की गई प्रत्येक चीज़ बिदअत (नवाचार) है,प्रत्येक बिदअत (नवाचार) गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाजी है।

अल्लाह के बंदो!अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाएं और उस का सम्मान करें,उसकी आज्ञा मानें और उस के अवज्ञा से बचें,और जान लें कि لا اله الا الله اور محمد رسول الله की गवाही देने से यह अनिवार्य हो जाता है कि अल्लाह का सम्मान,बनी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम और इस्लाम धर्म का सम्मान किया जाए,चाहे आस्था का मामला हो अथवा पूजा व प्रार्थना का अथावा दुनयावी मामलों एवं व्यवहारों का।शहादतैन (لا اله الا الله और محمد رسول الله) को अपने व्यवहार में अपनाने एवं ईमान में सत्य होने का यह चिन्ह है,अल्लाह तआला ने अपने ऊपर और रसूल के ऊपर ईमान लाने को अपना सम्मान,अपने रसूल एवं अपने धर्म के आदर व सम्मान के साथ उल्लेख किया है,अल्लाह का फरमान है:

﴿إِنَّآ أَرۡسَلۡنَٰكَ شَٰهِدٗا وَمُبَشِّرٗا وَنَذِيرٗا ۝٨ لِّتُؤۡمِنُواْ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُۚ وَتُسَبِّحُوهُ بُكۡرَةٗ وَأَصِيلًا ۝٩﴾ [سورة الفتح: ٨ – ٩]

अर्थात: (हे नबी!) हम ने भेजा है आप को गवाह बनाकर तथा शुभ सूचना देने एवं सावधान करने वाला बना कर।ताकि ईमान लाओ अल्लाह एवं उस के रसूल पर।और सहयता करो आप की,तथा आदर करो आप का,और अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करते रहो प्रात: तथा संध्या।

अर्थात:ताकि तुम इस्लाम धर्म की सहायता के द्वारा अल्लाह की सहायता करो,उसका आदर व सम्मान करो और सुबह व शाम उस की प्रशंसा करो।

धर्म का उपहास करना इस्लाम भंजकों में से है

अल्लाह के बंदो!धर्म के आदर व सम्मान का विपरीत यह है कि अल्लाह के धर्म के किसी आदेश तथा चिन्ह का,अथवा अल्लाह के रसूल का,अथवा उस के पुण्य अथवा यातना का उपहास किया जाए,जिस ने ऐसा किया उस न कुफ्र किया,धर्म का उपहास करना इस लिय क़ुफ्र है कि इस स धर्म को लागू करने वाले का उपहास होता है,जो कि अल्लाह तआ़ला है,और यह सरीह़ (स्पष्ट) कुफ्र है,क्योंकि हमारे ऊपर अनिवार्य है कि अल्लाह का आदर करें,न कि उस का अनादर करें,और उपहास वह व्यक्ति नहीं करता जो अल्लाह का सम्पूर्ण आदर एवं सम्मान करता हो,अल्लाह के नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के लाए हुए धर्म का सम्मान करता हो,बल्कि उपहास वह व्यक्ति उड़ाता है जिस के हृदय में निफाक (द्विधावाद) होता है।अल्लाह का शरण।यह बात ज्ञात भी है कि मोनाफिकत (द्विधावाद) का एक सबसे प्रसिद्ध चिन्ह यह है कि धर्म का उपहास करे ?इब्ने सादी रह़िमहुल्लाह फरमाते हैं:अल्लाह और उस के रसूल का उपहास करना ऐसा कुफ्र है जो धर्म से बाहर कर देता है,क्योंकि इस्लाम धर्म का आधार अल्लाह,उस के धर्म और उस के रसूल के सम्मान पर आधारित है,और उन में से किसी एक भी उपहास करना इस आधार के विपरीत और इस के बिल्कुल विरुद्ध है।[1]

धर्म का उपहास करने वाला काफिर है, इसके शरई़ प्रामण

अल्लाह के बंदो!पवित्र क़ुरान ने यह स्पष्ट कर दिया है कि धर्म के किसी भी आदेश का उपहास करने वाला काफिर है,अल्लाह का कथन है:

[1] "تیسیر الکریم الرحمن فی تفسیر کلام المنان" व्याख्या सूरह:التوبة:٦٥

﴿ وَلَئِن سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ ۚ قُلْ أَبِاللَّهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ كُنتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ ۝٦٥ لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ ﴾ [سورة التوبة: ٦٥-٦٦]

अर्थात: और यदि आप उन से प्रश्न करें तो वे अवश्य कह देंगे कि हम तो यूँ ही बातें तथा उपहास कर रह थे आप कहिये कि क्या अल्लाह तथा उस की आयतों और उस के रसूल के ही साथ उपहास कर रहे थे?तुम बहाने न बनाओ,तुम ने अपने ईमान के पश्चात कुफ्र किया है।

यह आयत इस बात का प्रमाण है कि धर्म के किसी भी आदेश का उपहास करने वाला काफिर है,चाहे वह मज़ाक़ अल्लाह के संबंध में हो अथवा उस की आयतों अर्थात क़ुरान के संबंध में हो,अथवा उस के रसूल के संबंध में हो,और चाहे उपहास करने वाला गंभीर हो अथवा गंभीर न हो।

इब्ने अबी ह़ातिम ने इस आयत की व्याख्या में अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ीअल्लाहु अंहु से रिवायत किया है कि:एक व्यक्ति ने ग़ज़वा-ए-तबूक के अवसर पर किसी सभा में कहा: (मैं ने अपने इन क़ारियों के जैसा (अर्थात नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सह़ाबा के जैसा) पेट पालक,झूटा और शत्रु से मुठभेड़ के समय कायरता से काम लेने वाला नहीं देखा)।उस पर सभा में उपस्थित एव व्यक्ति ने कहा: (तुम ने झूट कहा,बल्कि तुम मोनाफिक (द्विधावादी) हो,मैं यह बात अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से अवश्य बताऊंगा),अत: यह सूचना आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिली और क़ुरान अवतरित हुआ,अ़ब्दुल्लाह कहते हैं:मैं ने उस व्यक्ति को देखा कि वह अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऊंटनी की रस्सी से लटका हुआ था,पत्थरों की ठोकरें खाए जा रहा था और कहे जा रहा था: (ऐ अल्लाह के रसूल! हम तो यूं ही आपस में हंस बोल रहे थे) और रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम यह उत्तर दिये जा रहे थे: (क्या अल्लाह,उस की आयतें और उस का रसूल ही तुम्हारे हंसी मज़ाक़ के लिए रह गए हैं?)।[1]

विद्वानों की इस बात पर सहमति है कि धर्म का उपहास करने वाला काफिर है

---

[1] इस ह़दीस को शैख मुक़्बिल वादेई रह़िमहुल्लाह ने "الصحيح المسند من أسباب النزول" पृष्ठ संख्या:१२६ में ह़सन कहा है।

ऐ मोमिनो!धर्म का उपहास करने वाला काफिर है,यह एक ऐसा मामला है जिस पर विद्वानों की सर्वसम्मति है,वह व्यक्ति जो किसी ऐसी चीज़ का उपहास करे जिस में अल्लाह का अथवा क़ुरान का अथवा रसूल का उल्लेख हो,उस के विषय में शैख सुलैमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मोह़म्मद बिन अ़ब्दुल वहाब रह़िमहुल्लाह ने कहा कि वह इस अ़मल क कारण काफिर हो जाता है,क्योंकि वह रुबूबियत (अल्लाह के रब होन) एवं रिसालत (मोह़म्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी होने) के सम्मान में धृष्टता करता है,जो कि एकेश्वरवाद के विरुद्ध है,इस लिए विद्वानों की र्स्वसम्मति है कि इस प्रकार का अ़मल करने वाला व्यक्ति काफिर है।

अत: जो व्यक्ति अल्लाह,अथवा उसकी पुस्तक,अथवा उस के रसूल,अथवा उस के धर्म का उपहास करे वह काफिर है,यद्यपि वह हंसी उपहास में ही ऐसा कर रहा हो,और उपहास के उद्दश्य से ऐसा न कहा हो,इस पर र्स्वसम्मति है।[1]

धर्म का उपहास करने की धमकी व मनाही

ऐ मोमिनों के समूह!हमारे ऊुपर अनिवार्य है कि हम ज़बान की गलतियों से सचेत रहें,क्योंकि ज़बान ही मनुष्य के नरक में जाने का सर्वाधिक कारण बनती है।जैसा कि मोआ़ज़ बिन जबल रज़ीअल्लाहु अंहु की ह़दीस में आया है कि उन्होंने नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा:क्या हम जो बोलते हैं,उस पर भी हमारी पकड़ होने वाली है?आप ने फरमाया:ऐ मोआ़ज़!तेरी मां तुझे गुम पाए,लोगों को नरक में उन के ज़बानों के कारण ही मुंह के बल-अथवा फरमाया:नथुनों के बल-फेंका जाएगा।[2]

दूसरी ह़दीस है कि:बंदा एक ऐसा कल्मा ज़बान से निकालता है जो अल्लाह की अप्रसन्नता का कारण होता है उस के पास उस का कोई महत्व भी नहीं होता किन्तु उस के कारण वह नरक में चला जाता है।[3]

---

[1] "تیسیر العزیز الحمید فی شرح کتاب التوحید" شرح باب: من هزل بشیء فیه ذکر الله أو القرآن أو الرسول

[2] इस ह़दीस को अह़मद (५/३३१) आदि ने रिवायत किया है और के "المسند" शोधकर्ताओं ने प्रमाणों के आधार पर इसे सह़ी कहा है,ह़दीस संख्या: (२२०१६)

[3] इस ह़दीस को बोखारी (६४७८) ने अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

क़ुरान में आया है:

﴿وَيۡلٞ لِّكُلِّ هُمَزَةٖ لُّمَزَةٍ ١﴾ [سورة الهمزة:١]

अर्थात: विनाश हो उस व्यक्ति का जो कचोके लगाता है और चौंटे करता रहता है।

तथा अल्लाह अधिक फरमाता है:

﴿مَّا يَلۡفِظُ مِن قَوۡلٍ إِلَّا لَدَيۡهِ رَقِيبٌ عَتِيدٞ ١٨﴾ [سورة ق:١٨]

अर्थात: वह नहीं बोलता कोई बात मगर उसे लिखने के लिये उस के पास एक निरीक्षक तय्यार होता है।

धर्म के उपहास करने के व्यावहारिक उदाहरण

अल्लाह के बंदो!इस्लामी विद्वानों व मुसलेहीऩ (सुधारकों) एवं दाइयों (अल्लाह की ओर बोलाने वालों) का भी धर्म के उपहास करने का एक प्रकार है,क्योंकि इस्लामी विद्वान ये पैगंबरों के वारिस (उत्तराधिकारी) हैं,वे धर्म के ज्ञानी हैं,अत: जो व्यक्ति किसी विद्वान का उपहास करे केवल इस लिए कि वह विद्वान है तो उस ने कुफ्र किया,अथवा जो व्यक्ति किसी दाई़ (अल्लाह की ओर बोलाने वाला) का उपहास करे इस लिए कि वह पुण्य का आदेश देता है अथवा पाप से रोकता है तो उस ने कुफ्र किया,हमारे लिए यह अनिवार्य है कि विद्वानों एवं दाइयों का सम्मान किया जाए,क्योंकि अल्लाह ने क़ुरान में उन के उच्च महत्व का उल्लेख किया है,इस लिए मोमिन के लिए अनिवार्य है कि अल्लाह और उस के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिसे सम्मानित एवं आदरणीय बताया है,वह भी उस का सम्मान करें,अल्लाह का कथन है:

﴿ يَرۡفَعِ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ مِنكُمۡ وَٱلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلۡعِلۡمَ دَرَجَٰتٖۚ﴾ [سورة المجادلة:١١]

अर्थात: ऊँचा कर देगा अल्लाह उन को जो ईमान लाये हैं तुम में से तथा जिन को ज्ञान प्रदान किया गया है कई श्रेणियाँ।

और नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस है:".....ज्ञान वालों के लिए आकाशों में बसने वाले,पृथ्वी पर रहने वाले और पानी के अंदर मछलियां भी क्षमा की दुआ़ करती हैं।नि:संदहे एक विद्वान एवं ज्ञानी की एक आ़बिद (पूजारी) पर ऐसी ही प्राथमिकता है जैसे कि चौदहवीं के

चाँद की प्रत्येक सतारों पे होती है,नि:संदेह ओलमा (इस्लामी विद्वान) पैगंबरों के वारिस (उत्तराधिकारी) है और पैगंबरों ने कोई दिरहम व दीनार विरासत में नहीं छोड़ा।उन्होंने ज्ञान की विरासत छोड़ी है।जिस ने उसे प्राप्त कर लिया उस ने बड़ा भाग्य (अति भाग) पाया"।[1]

ऐ मोमिनों के समूह! धर्म के उपहास करने में आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत का उपहास करना भी शामिल है,दाढ़ी रखने का उपहास करना,टखने तक एज़ार (लुंगी अथवा पाजामा) पहनने का उपहास करना,अथवा मिस्वाक करनें का उपहास करना,अथवा हिजाब एवं नकाब का उपहास करना आदि।

कुछ गैबी मामलों का उपहास करना और उन का अनादर करना भी उपहास करने में शामिल है,उदाहरण स्वरूप स्वर्ग अथवा नरक का उपहास करना,जैसे यह कहना:स्वर्ग क्या चीज़ है?नरक क्या चीज़ है?इत्यादि।

कुछ आस्था संबंधित मामलों एवं चीज़ों का उपहास करना भी इस में शामिल है,जैसे सहाबा के न्याय,आयशा रज़ीअल्लाहु अंहा की शुद्धता व शुचिता,यह कुफ्र है,क्योंकि यह क़ुरान को झुठलाना होता है,क्योंकि अल्लाह तआला ने आप के सहाबा की प्रशंसा की है और उन से अपनी प्रसन्नता जताई है,जैसा कि सूरह [2]التوبہ,सूहर الفتح,[3]सूरह [4]الحشر,में आया है।इसी प्रकार से आयशा रज़ीअल्लाहु अंहा की शुद्धता व शुचिता और मोनाफिक़ों (द्विधावादियों) की लांछन से उस की मुक्ति की गवाही भी दी है,क्या इस के पश्चात भी यह जाएज़ है कि कोई आए और सहाबा का उपहास करे और नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के मान-सम्मान पर कीचड़ उछाले,मानो अल्लाह ने अपने नबी के लिए ऐसे सहाबा और ऐसी पत्नी का चयन किया है जो सदाचारी एवं सालेह नहीं थे?कदपि नहीं!

---

[1] इस हदीस को अहमद(5/196)ने रिवायत किया है और के शोधकर्ताओं ने इसे हसन लेग़ैरेहि माना है।

[2] आयत:१००

[3] आयत:२९

[4] आयत:८-९

ऐ लोगो! उपहास करने में स्पष्ट कथन एवं कार्य अथवा किसी पत्रिका अथवा अन्य मीडिया में स्पष्ट लेख प्रकाशित करना भी शामिल है,तथा अस्पष्ट रूप से उपहास करना भी इस में शामिल है जैसे आंख और हाथ से इशारा करना और जबान निकालना आदि।1

ज्ञात हुआ कि उपहास का कोई मामूली रूप भी क्षमा किये जाने वाला नहीं है,बल्कि उस का मामूली रूप भी उस के बड़े रूप के जैसा ही है,अल्लाह का शरण,जिस प्रकार का भी उपहास हो सब एक समान है।

धर्म का उपहास करने वालों के प्रति शासकों एवं मुसलमानों का दायित्व

ऐ लोगो!अल्लाह तआला अथवा उस के नबी का उपहास करने वाले की हत्या शासक के लिए अनिवार्य हो जाता है।

अल्लाह के बंदो!जो व्यक्ति किसी को अल्लाह अथवा रसूल अथवा धर्म का उपहास करता हुआ देखे,उस के लिए अनिवार्य है कि उस का खंडन करे और चुप न रहे,कम से कम उस सभा से उठ कर चला जाए क्योंकि ऐसे लोगों के सभा में प्रसन्नता के साथ बैठने से वह काफिर हो जाता है और इस्लाम से निकल जाता है,जैसा कि अल्लाह का फरमान है:

﴿وَقَدۡ نَزَّلَ عَلَيۡكُمۡ فِي ٱلۡكِتَٰبِ أَنۡ إِذَا سَمِعۡتُمۡ ءَايَٰتِ ٱللَّهِ يُكۡفَرُ بِهَا وَيُسۡتَهۡزَأُ بِهَا فَلَا تَقۡعُدُواْ مَعَهُمۡ حَتَّىٰ يَخُوضُواْ فِي حَدِيثٍ غَيۡرِهِۦٓ إِنَّكُمۡ إِذٗا مِّثۡلُهُمۡۗ إِنَّ ٱللَّهَ جَامِعُ ٱلۡمُنَٰفِقِينَ وَٱلۡكَٰفِرِينَ فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا ١٤٠﴾ [سورة النساء:١٤٠]

अर्थात: और उस (अल्लाह) ने तुम्हारे लिए अपनी पस्तक (क़ुरान) में यह आदेश उतार दिया है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों को अस्वीकार किया जा रहा है,तथा उन का उपहास किया जा रहा है,तो उन के साथ न बैठो,यहाँ तक कि वह दूसरी बात में लग जायें।नि:संदेह तुम उस समय उन्हीं के समान हो जाओगे।निश्चय अल्लाह मोनाफिकों (द्विधावादियों) तथा काफिरों सब को नरक में एकत्र करने वाला है।

---

[1] शैख मोह़म्मद बिन अ़तीक़ रह़िमहुल्लाह ने अपनी पुस्तक:"سبيل النجاة والفكاك"में इस का उल्लेख किया है।

ऐ विश्वास वाले लोगो!इस आयत पर विचार करें!जिस प्रकार से वह दुनिया के सभा में धर्म का उपहास करने वालों के साथ बैठे रहे,उसी प्रकार से आखिरत में नरक के अंदर भी उन के साथ वह भी यातना पाएंगे,अल्लाह का शरण।

ऐ अल्लाह के बंदो!शरीअ़त के सम्मान,इसे अवतरित करने वाले अर्थात अल्लाह के सम्मान,इसे नकल करने वाले अर्थात पैगंबरों के सम्मान और इसका प्रचार प्रसार करने वाले अर्थात आ़लिमों एवं मुसलेहीन के सम्मान की अनिवार्यता को बयान करने के लिए यह एक लाभदायक प्राक्कथन है,जो व्यक्ति इस मार्ग का उल्लंघन करेगा वह बड़े खतरे का सामना करेगा।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुरान की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को उस की आयतों और नीतियों पर आधारित परामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

द्वीतीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!आप अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाएं और जान लें कि उपहास करना यहूदियों की विशेषता है,उन्होंने अल्लाह तआ़ला का उपहास करनते हुए कहा:

﴿ يَدُ ٱللَّهِ مَغْلُولَةٌ ﴾ [سورة المائدة:٦٤]

अर्थात: अल्लाह के हाथ बँधे हुए हैं।

अधिक कहा: ﴿إِنَّ ٱللَّهَ فَقِيرٌ وَنَحْنُ أَغْنِيَآءُ﴾ [سورة آل عمران:١٨١]

अर्थात: अल्लाह निर्धन और हम धनी हैं।

इसी प्रकार मोमिनों का उपहास करना काफिरों की पहचान है,अल्लाह तआ़ला ने उन के उपहास करने को अपराध कहा है,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

﴿ إِنَّ ٱلَّذِينَ أَجۡرَمُواْ كَانُواْ مِنَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ يَضۡحَكُونَ ۝٢٩ وَإِذَا مَرُّواْ بِهِمۡ يَتَغَامَزُونَ ۝٣٠ وَإِذَا ٱنقَلَبُوٓاْ إِلَىٰٓ أَهۡلِهِمُ ٱنقَلَبُواْ فَكِهِينَ ۝٣١ وَإِذَا رَأَوۡهُمۡ قَالُوٓاْ إِنَّ هَٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّونَ ۝٣٢ ﴾ [سورة المطففين: ٢٩-٣٢]

अर्थात: पापी (संसार में) ईमान लाने वालों पर हंसते थे।और जब उन के पास से गुजरते तो आँखें मिचकाते थे।और जब अपने परिवार में वापिस होते थे।और जब उन्हें (मुमिनों को) देखते तो कहते थे:यही भटके हुये लोग हैं।

इसी प्रकार मोमिनों का उपहास करना मोनाफिक़त (द्विधावाद) की पहचान और मोनाफिक़ों (द्विधावादियों) का गुण है,जो ईमान तो देखाते हैं,किन्तु अपने अंदर रह़मान के धर्म से घृणा छुपाए रखते हैं,इन में धर्मनिरपेक्ष और उदारवादियों और उन जैसे अन्य लोग भी शामिल हैं,वह भालाई का आदेश देने और पाप से रोकने वालों का उपहास करते हैं,हिजाब का उपहास करते हैं,आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस में आए कुछ उपचारों एवं इलाजों का उपहास करते हैं उदाहरण स्वरूप उूंट के पैशाब से इलाज करना। अलह़मदुलिल्लाह अल्लाह ने उन के षड्यंत्रों को विफल कर दिया और वे किसी भी चीज़ से लाभान्वित नहीं हुए,अत: यूरप में गैर मुस्लिमों के चिकित्सा केंद्रों से अनेक चिकित्सा शोध सामने आ चुके हैं जो यह प्रमाणित करते हैं कि उूंट के पैशाब से इलाज करना सही है,जैसा कि आप की ह़दीस में आया है।

उपदेश की समाप्ति:

आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ۝٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात:अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे अल्लाह!हमारे दिलों को निफाक (पाखंड) से,हमारे अ़मलों को दिखावे से और हमारी निगाहों को कदाचार से पवित्र कर दे।

हे अल्लाह!हम तुझ से शांतिपूर्वक जीवन,विस्तृत जीविका और सदाचार की दुआ करते हैं।

हे अल्लाह!हम तुझ से दुनिया व आखिरत की समस्त भलाई की दुआ मांगते हैं जो हम को ज्ञात है और जो ज्ञात नहीं,और तेरा शरण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत के समस्त पापों एवं कदाचारों से जो हम को ज्ञात हैं और ज्ञात नहीं हैं।

हे अल्लाह!हम तेरा शरण चाहते हैं तेरी उपकारों की समाप्ति से,तेरी सुख के हट जाने से,तेरी अचानक की यातना से और तेरी हर प्रकार की अप्रसन्नता से।

हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं,और वे कार्य एवं कथन भी जो स्वर्ग से निकट कर दे,औ हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कार्यों एवं कथनों से भी जो नरक से निकट करे।

हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भालई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

शीर्षक: छठवां विच्छेद:

जादूगरी

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰه إِلا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात!

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है, सबसे उच्च मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मार्ग है एवं धर्म में अविष्कार की गई हर नई चीज़ नवोन्मेष है, हर नवोन्मेष त्रुटि है और हर त्रुटि नरक में ले जाने वाली है।

अल्लाह के दासो! अल्लाह से भय करें एवं उसको सम्मानननीय जानें, उसकी आज्ञा करें एवं अवज्ञा से वंचित रहें, एवं ज्ञात रखें कि माननीय दूतों की आवाहन की वास्तविकता ही है अल्लाह की उपासना एवं उसके नकारात्मक आदेशों से वंचित रहना, एकेश्वरवाद के विरुद्ध जो भी चीज़ें हैं, तुम में सर्वश्रेष्ठ स्थापित होने वाली चीज़ अल्लाह की उपासना में बहुदेववाद, अर्थात विभिन्न प्रकार की उपासनाओं को अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के लिए स्थापित करना, उदाहरण स्वरूप अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को पुकारना, अल्लाह के अतिरिक्त हेतु पशुओं का बलिदान देना, अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के लिए मन्नतें मानना, काबा के अतिरिक्त किसी अन्य स्थान का चक्कर लगाना, उदाहरण स्वरूप: क़ब्रों एवं मज़ारों का चक्कर लगाना, एकेश्वरवाद के विरुद्ध जादू को अपनाना भी है एवं आज के उद्देश्य का शीर्षक भी यही है।

● जादू की परिभाषा, उसके प्रकार एवं उदाहरण:

अल्लाह के दासो! जादू उन तावीज़, गंडों, गांठों एवं झाड़-फूंक को कहा जाता है जो हृदय, शरीर अथवा दृश्य को प्रभावित करता है, एवं उन्हें रोगी बना देता है अथवा हत्या कर देता है, अथवा मानसिक शक्ति को प्रभावित करता है, अथवा पति पत्नी के बीच को दूरी उत्पन्न करता है, अथवा व्यापार आदि करने वाले दो व्यक्तियों के बीच घृणा को जन्म देता है।

(देखें: अल्-मुग़नी, किताबुल्-मुरतद, फ़स्ल फ़िस्सहर: ९/२९९)

अल्लाह के दासो! जादू दो प्रकार के होते हैं: एक वास्तविक द्वितीय काल्पनिक। वास्तविक जादूके तीन प्रकार हैं:

एक प्रकार वह है जो शरीर को प्रभावित करता है एवं उसे रोगी बना देता है अथवा हत्या कर देता, द्वितीय प्रकार जो हृदय को प्रेम एवं घृणा के आधार पर प्रभावित करता है। उदाहरण स्वरूप पति के हृदय में पत्नी का प्रेम डाल देता है, जिस से वह घृणा कर रहा होता है अथवा इसके विपरीत। इस कारणवश पति पत्नी को एवं पत्नी पति को सुंदर दिखने लगती है, इसे (अ़त्फ़) के नाम से जाना जाता है, अथवा पत्नी को पति की दृष्टि में घृणित बना देता है जिस से वह प्रेम कर रहा होता है अथवा इसके विपरीत, इस कारणवश पति पत्नी को एवं पत्नी पति को कुरूप दिखने लगतीहै, इसे (सर्फ़) के नाम से जाना जाता है, वास्तविक जादू का तीसरा प्रकार वह है जो मानसिक शक्ति को प्रभावित करता है, इस कारणवश जादू किया हुआ व्यक्ति यह भ्रम रखता है कि उसने कोई काम किया है हालांकि उसने कोई काम नहीं किया है इस जादू का उदाहरण वह है जो लबीद बिन अअ़सम नामक यहूदी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ किया, इस कारणवश आप को यह भ्रम होता कि आपने कोई काम किया है हालांकि आप वह नहीं किए होते, कई महीनों तक आप इस जादू से प्रभावित रहे।

(बुख़ारी:५७६६, मुस्लिम: २१८९) अल्लाह के दासो! जादूगर अपने जादू हेतु दुष्ट देव से सहायता लेता है वह इस प्रकार की जादूगर जब जादू करने की इच्छा करता है, तो उसके आत्मा पर वह अपवित्रता एवं दुष्टता प्रकट होती है जिसके भीतर वह जादू किए हुए व्यक्ति को डालना चाहता है, इस कारणवश वह दुष्ट देवों की आत्मा से सहायता प्राप्त करता है फिर कुछ गांठें लगाता है एवं उसमें थूक के साथ फूंक मारता है, जिसे (नफ़स) के नाम से जाना जाता है, जिसका उल्लेख अल्लाह के कथन में आया है:

﴿وَمِن شَرِّ ٱلنَّفَّٰثَٰتِ فِي ٱلۡعُقَدِ ۝٤﴾ [سورة الفلق:٤]

अर्थात: और गांठें लगा कर उनमें फूंक मारने वालियों की दुष्टता से भी मैं शरण चाहता हूं।

फूंक मारने वालियों का अर्थ वह आत्माएं हैं जो गांठों में फूंक मारते हैं, क्योंकि जादू का प्रभाव दुष्ट आत्माओं की ओर से ही होता है, एवं उनसे ही जादू का प्रभाव स्पष्ट होता है, इस कारणवश कि उन दुष्ट आत्माओं से ऐसी सांसें निकलती हैं जो दुष्टता एवं कठिनाई से मिलती जुलती है, एवं इसमें इसी से मिलता-जुलता थूक भी मिला होता है, इस कारणवश दुष्ट देवों के आपसी सहायते से जादू किए हुए व्यक्ति को कष्ट पहुंचाया जाता है, एवं अल्लाह के सांसारिक भाग्य की अनुमति से जादू स्थापित हो जाता है।

﴿وَمَا هُم بِضَآرِّينَ بِهِۦ مِنۡ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذۡنِ ٱللَّهِۚ﴾ [سورة البقرة:١٠٢]

अर्थात: वह उसके साथ कभी भी कोई हानि पहुंचाने वाले नहीं थे परन्तु अल्लाह की अनुमति के अतिरिक्त।

(देखें: बदाइउल्-फ़वाइद, पृष्ठ संख्या: ७३६-७३७)

अल्लाह के दासो! कुछ व्यक्ति गण जादूगर के पास जाते हैं ताकि वे उसे उसके बाल बच्चों से और पत्नी से दूर कर दे, इस कारणवश वो लंबे समय तक अपनी पत्नी एवं बाल बच्चों से लापरवाह हो जाता है, ताकि वह एक निश्चित समय तक अपनी पत्नी बाल बच्चों से अलग रहने में सक्षम हो सके एवं उनसे दूर क्रिया कर्म हेतु यात्रा कर सकें एवं जब लौटने का समय निकट आ जाए तो जादू समाप्त हो जाए।

अल्लाह के दासो! जादूगर लोगों को धोखे में रखते हैं इस कारणवश उनके पास जब कोई आता है तो उसके समक्ष वह कुरआन का सस्वर पाठ करते हैं ताकि उसे धोखे में डाल सके, और वह उनके संबंध में अच्छा भ्रम रखे, और यह समझे कि ये जादूगर अल्लाह के दोस्तों में से है, ऐसे व्यक्तिगण अपने जादू को चमत्कारिक क्रियाओं से विशेष स्वरुप प्रदर्शित करते हैं, जबकि वास्तव में वह जादू है, जिसे प्राप्त करना बल्कि उसके निकट जाना अवैध है, बल्कि उस से दूरी बनाए रखना एवं उसे नकारात्मक समझना अनिवार्य है।

अल्लाह के दासो! काल्पनिक जादू का एक ही द्वार है, वह है दृश्य को प्रभावित करना, शरीर, हृदय एवं मानसिक शक्ति को नहीं, इस कारणवश जादू किया हुआ व्यक्ति वस्तुओं को, अवास्तविक रूप में देखने लगता है, जबकि वास्तव में वह वस्तु कुछ भी परिवर्तित नहीं होती, यह वही जादू है जो फ़िरऔ़न के जादूगरों ने मूसा अलैहिस्सलाम के साथ किया, यह एक निकृष्ट कर्म है।

ए लोगो! इस प्रकार का जादू -अर्थात काल्पनिक जादू- वास्तव में स्थापित होता है, इस कारणवश यह देखने वाले के नेत्र में उसके वास्तविक एवं इंद्रिय-संबंधी प्रभाव स्थापित होता है परंतु यह प्रभाव उस वस्तु पर स्थापित नहीं होता जिसका वह दृश्य कर रहा होता है, बल्कि वह वस्तु अपनी वास्तविक स्थिति में स्थित रहता है, उसकी स्थिति अल्लाह की अनुमति के बिना परिवर्तित नहीं

होती, क्योंकि इसी एक वस्तु की वास्तविक स्थिति को दूसरी स्थिति में स्पष्ट करना यह अल्लाह की विशेषताओं में से है, जिसका कोई संगी एवं साझी नहीं।

आधुनिक काल में काल्पनिक जादू में वह जादू भी सम्मिलित है जिसे सर्कस या पहलवानी खेल के नाम से जाना जाता है, जिसके माध्यम से जादूगर लोगों की बुद्धि को प्रभावित करता है जिस कारणवश उन्हें वस्तुएं अपने वास्तविक स्थिति से कुछ विभिन्न दिखाई देती हैं, वे अपने काम को जादू नहीं कहते ताकि लोग घृणा ना करें, बल्कि पहलवानी खेल आदि का नाम देते हैं, किंतु इस से आदेश में कोई परिवर्तन नहीं होता, क्योंकि मान्यता वास्तविकता को ही प्राप्त होता है, नामों का नहीं। उनके काल्पनिक जादू का उदाहरण यह है कि कोई अपने बालों से कार को खींचता है, कोई अग्नि खाता हुआ दिखाई देता है, कोई धारदार हथियार से अपने ऊपर आक्रमण करता है, अथवा अपनी जीभ काट लेताहै, कोई पशुओं के नितंब से प्रवेश करता है एवं मुंह से बाहर आता है, अथवा अपने वस्त्र के भीतर से पक्षी निकालता है, किसी की छाती पर लोगों की दृश्य के समक्ष कार चल जाती है, ये एवं इन जैसे अन्य कर्तव्य जो मनुष्य की शक्ति से बाहर हैं ये या तो दुष्ट देवों की सहायता से स्थापित होते हैं जो इसकी बोझ का सहन करता है, अथवा देखने वालों के दृश्य में इसकी कल्पना को जन्म दिया जाता है, एवं यह दोनों ही चीज़ें दुष्ट देवों की सहायता से ही पूरे होते हैं। जादूगर के कुफ़्र और जादू करवाने की अवैधता के साक्ष्य:

अल्लाह के दासो! जादूगरों का खंडन क़ुरआन के एक अन्य श्लोक में भी आया है अल्लाह का फरमान है:

﴿وَلَا يُفۡلِحُ ٱلسَّاحِرُ حَيۡثُ أَتَىٰ﴾ [سورة طه:٦٩]

अर्थात: जादूगर कहीं से भी आए सफ़ल नहीं होता।

इसके अतिरिक्त यह श्लोक:

﴿وَلَا يُفۡلِحُ ٱلسَّٰحِرُونَ﴾ [سورة يونس:٧٧]

अर्थात: जादूगर सफ़ल नहीं हुआ करते।

यह दोनों श्लोक जादूगर के समान सफ़लता को नकारता है, जोकि केवल उस व्यक्ति के पक्ष में होता है जो कुफ़्र में लथपथ हो चुका हो।

(देखें: अल्लामा शनक़ीती रहिमहुल्लाह का कथन अल्लाह ताआ़ला के फ़रमान: ﴿وَلَا يُفۡلِحُ ٱلسَّاحِرُ حَيۡثُ أَتَىٰ﴾के उल्लेख में, उन्होंने इस श्लोक से जादूगर के कुफ़्र को स्थापित किया है।)

मूसा अलैहिस्सलाम की ज़ुबानी अल्लाह के इस कथन में भी जादूगरों का खंडन आया है:

﴿مَا جِئۡتُم بِهِ ٱلسِّحۡرُۖ إِنَّ ٱللَّهَ سَيُبۡطِلُهُۥٓۖ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُصۡلِحُ عَمَلَ ٱلۡمُفۡسِدِينَ﴾ [سورة يونس:٨١]

अर्थात: जो कुछ तुम लाए हो जादू है निश्चिंत बात है कि अल्लाह इस को तितर-बितर कर देता है अल्लाह ऐसे विद्रोहियों का काम नहीं बनने देता।

यह श्लोक इस बात का स्पष्ट साक्ष्य है कि जादूगर पृथ्वी में विद्रोही ही होते हैं।

उपरोक्त उल्लेख किए गए श्लोक इस बात के साक्ष्य हैं कि जादूगर काफ़िर है एवं जादू कराना अवैध है और सृष्टि पर इस का बहुत ही हानिकारक प्रभाव पड़ता है, इसी लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस की गणना बहुत ही घातक श्रेणी में की है। अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु अ़ंहु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: सात घातक पापों से वंचित रहो, सहाबा ने प्रश्न किया: अल्लाह के दूत! वे क्या हैं? आपने उत्तर दिया: अल्लाह के साथ किसी को साझी बनाना एवं जादू करना...हदीस।

(बुख़ारी:२७६६, मुस्लिम: ८९ ने रिवायत किया है।)

इमरान बिन हुसैन रज़िअल्लाहु अंहु से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जिसने अपशगुन लिया एवं जिसके लिए लिया गया, जिसने भविष्यवाणी की या जिसके लिए की गई, जिसने जादू किया या उसके लिए किया गया वह हम में से नहीं है, जो व्यक्ति भविष्यवाणी करने वाले व्यक्ति के पास गया एवं उसकी बात को सत्य स्वीकार किया तो उसने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अवतरित किए गए शरीयत (धर्म) को नकारा (कुफ़्र) किया।

{इस हदीस को बाज़्ज़ार ने रिवायत किया है, मुसनद अल्-बाज़्ज़ार: (९/५२), (३५७८) इसके अतिरिक्त तबरानी ने अल्-कबीर: (१८/१६२) में रिवायत किया है, इनके रिवायत किए हुए शब्द कुछ इस प्रकार हैं: इमरान बिन हुसैन रज़िअल्लाहु अंहु से मरवी है कि उन्होंने एक व्यक्ति की कलाई में एक पीतल का कड़ा देखा उस से प्रश्न किया: यह क्या है? तो उसने कहा: मुझे बताया गया है कि इस से हाथ का दर्द दूर हो जाता है, फ़रमाया: यदि तुम्हारी मृत्यु इसी स्थिति में हो गई तो तुम उसी की ओर सोंप दिए जाओगे, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जिसने अपशगुन लिया एवं जिसके लिए लिया गया वह हम में से नहीं है... अल्-हदीस। हैसमी कहते हैं: इस हदीस को बाज़्ज़ार ने रिवायत किया है, इसहाक़ बिन अबु रबीअ़ के अतिरिक्त इस हदीस के तमाम रावी सहीह हैं, वह भी विश्वसनीय हैं, देखें: मजमउ़ज़्ज़वाइद: (५/११७) इस हदीस को बाज़्ज़ार ने इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहु अंहुमा से रिवायत किया है, जैसाकि कश्फुल्-स्तार (३०४३) में है, इस हदीस को अल्-बानी ने सहीहुल्-जामे इ़स्सग़ीर: (५४३५) एवं अस्सिलसिलतुस्सह़ीह़ा: (२१९५) में सहीह स्थापित किया है।}

बैहक़ी ने क़तादह से रिवायत किया है कि कअ़ब ने कहा: सबश्रेष्ठ एवं सर्वसम्मानीय अल्लाह का कथन है: सत्य दास वह नहीं है जो जादू करे एवं जिसके लिए जादू किया जाए, अथवा जो भविष्यवाणी करे एवं जिसके हेतु भविष्यवाणी किया जाए, अथवा जो अपशगुन ले एवं जिसके हेतु अपशगुन लिया जाए, मेरा सत्यदास वह है जिसका मुझ में आस्था हो एवं मुझ पर विश्वास करे। (देखें: शअ़बुल्-ईमान: ११७६)

ए विश्वासियों का समूह! जादू कराने हेतु जादूगर के निकट जाना कुफ़्र है, -अल्लाह का शरण- उसके काफ़िर होने का कारण यह है कि जाने वाला उस जादू से प्रसन्न हुआ अथवा उसे अपने ऊपर एवं मनुष्यों पर लागू होने को सराहा।

इतना ही नहीं बल्कि जादू की सराहना करना भी कुफ़्र है, भले ही वह उसे ना अपनाए, क्योंकि कुफ़्र की सराहना करना भी कुफ़्र है, यह ऐसा ही है जैसे कि कोई बुत पूजा को सराहे अथवा चलिपा (सलीब) के समक्ष माथा टेकने को सराहे तो ऐसा व्यक्ति काफ़िर है, भले ही वह बुत पूजा ना करे अथवा चलिपा के समक्ष माथा ना टेके, इस कारणवश जो व्यक्ति यह कहे कि "मैं जादू करता हूं एवं ना ही इसकी ओर किसी को प्रोत्साहित करता हूं परंतु मैं जादू के कर्म को अपने गृह में एवं समाज में हृदय से स्वीकार करता हूं एवं इसे नहीं नकारता हूं"। तो ऐसा व्यक्ति भी काफ़िर है क्योंकि कुफ़्र की सराहना करना भी कुफ़्र है, एवं जो व्यक्ति अंततः अपने हृदय से कुफ़्र को ना नकारे उसके हृदय में विश्वास (ईमान) नाम की कोई चीज़ ही नहीं है। -अल्लाह का शरण- जादूगर एक साथ तौहीद-ए-उलूहिय्यत एवं तौहीद-ए-रुबूबिय्यत दोनों में अल्लाह के साथ बहुदेववाद को स्वीकार करता है।

अल्लाह के दासो! ये जादूगर जो काल्पनिक जादू करते हैं और यह दावा करते हैं कि उनके पास वास्तविकता को परिवर्तन करने की क्षमता है, तो ऐसे लोग अपने इस कर्म के माध्यम से ब्रह्मांड में उलटफेर करने का दावा एवं अल्लाह के अतिरिक्त किसी और से सहायता प्राप्त करने दोनों को एक साथ अपनाते हैं, प्रथम चीज़ रुबुबिय्यत में बहुदेववाद है एवं द्वितीय चीज़ उलूहिय्यत में बहुदेववाद है, एवं बहुदेववाद और भटकने हेतु यह दोनों कर्म बहुत हैं, रुबुबिय्यत में उनके बहुदेववाद का कारण यह है कि यह वास्तविकता को परिवर्तित करने का दावा करते हैं जबकि सत्य यह है कि वास्तविकता को परिवर्तित करना उस अल्लाह के हाथ में है जिसका कोई संगी नहीं, बल्कि अल्लाह ही केवल अकेला ब्रह्मांड का समाधान करता है वही सृष्टिकर्ता है जो किसी चीज़ को एक लिंग से द्वितीय लिंग में परिवर्तित करता है, बल्कि जादूगर दावा करते हैं कि वे इस विषय में अल्लाह का साझी है, इस संबंध में वे झूठे हैं, क्योंकि जिन वस्तुओं के परिवर्तित करने का ये दावा करते हैं वास्तव में वह चीज़ परिवर्ति नहीं होती, बल्कि जादू का प्रभाव समाप्त होते ही नेत्रों से उसकी योग्यता भी समाप्त हो जाती है, फिर लोगों के समक्ष स्पष्ट हो जाता है फिर वास्तविकता अपने असली रूप वापस आ जाती है।

उलूहिय्यत में उनके बहुदेववाद का कारण यह है कि वे दुष्ट देवों से सहायता लेते हैं उनके समक्ष माथा टेकते हैं एवं उनकी उपासना करते हैं उनके नाम पर पशुओं का बलिदान देते हैं कभी कभार उन्हें प्रसन्न करने हेतु क़ुरआन का भी अपमान कर बैठते हैं, क्योंकि दुष्ट देव इस बात के अतिरिक्त उनसे कोई बदला नहीं चाहता कि वे कुफ़्र करें, एवं धरती पर विद्रोह करें इस कारणवश वह जादूगर उस दुष्टदेव की उपासना करता है,

जो उसकी सेवा करता है यह उसके कुफ़्र का कारण है, एवं दुष्ट देव को यह लाभ प्राप्त होता है कि जादूगर उसकी उपासना करता है, क्योंकि आदम की संतान से दुष्ट देव इसी बात की इच्छा करते हैं, जैसा कि अल्लाह का कथन है:

﴿أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَٰبَنِىٓ ءَادَمَ أَن لَّا تَعْبُدُوا۟ ٱلشَّيْطَٰنَ ۖ إِنَّهُۥ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٦٠﴾ وَأَنِ ٱعْبُدُونِى ۚ هَٰذَا صِرَٰطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾﴾ [سورة يس: ٦٠-٦١]

अर्थात: ए आदम की संतान! क्या तुम से शपथ नहीं लिया था कि तुम दुष्ट देव की उपासना ना करना, वह तुम्हारा स्पष्ट स्वरूप शत्रु है, एवं मेरी ही उपासना करना, सीधा मार्ग यही है।

उपरोक्त उल्लेखों से यही ज्ञात हुआ कि किताब-व-सुन्नत एवं उम्मत की सहमति के प्रकाश में जादू एक अवैध कर्म है।

(देखें: मजमूउल्-फ़तावा: ३५/१७१)

● जादूगर को उस दुष्ट देव से क्या लाभ प्राप्त होता है जो उसकी जादूगरी में सहायक का कार्य करता है, एवं लोगों से उसे क्या लाभ मिलता है?

अल्लाह के दासो! जादूगर दुष्ट देवों से बहुत ही अधिक लाभार्थी होता है, उदाहरण स्वरूप यह कि दुष्ट देव उन्हें बहुत दूर स्थान तक बहुत ही शीघ्रतापूर्वक ले जाता है एवं इसी प्रकार अन्य लाभ हैं।

जादूगर मनुष्य की दुर्बलता का दुरुपयोग करता है ताकि इस जादू के बदले उस से बहुत सी संपत्ति प्राप्त कर ले। यह तीनों प्रकार के व्यक्ति दुष्ट देव जादूगर एवं जो जादू कराता है, वे अपने सांसारिक एवं परलोक के जीवन को नष्ट करता है। जादूगरों के संबंध में मुसलमानों एवं शासकों का दायित्व।

अल्लाह के दासो! जादू करने एवं जादूगरों के निकट जाने से वंचित रहना अनिवार्य है, इसके अतिरिक्त जांच पड़ताल से संबंधित जो विशेष विभाग हैं; जादूगरों के बारे में उन्हें सूचित करना आवश्यक है, इस शर्त के साथ कि वहां इस्लाम धर्म शासन हो, केवल इस से काम नहीं चलेगा कि मनुष्य जादूगर के निकट ना जाए, मुसलमान हेतु वैध नहीं कि वे जादूगरों के बैठक स्थलों में उपस्थित हो, उनकी संख्या बढ़ाए, उनका बाज़ार चमकाए, चाहे टेलीविज़न चैनल एवं एप्लीकेशन ही के माध्यम से उनको फॉलो करके ही क्यों ना हो, चाहे मनोविनोदज्ञान अथवा उनके कर्तव्य से अवगत होने की चाहत से एवं पर्यवेक्षण करने के लक्ष से अथवा अन्य कारणों के आधार पर ही क्यों ना हो।

अल्लाह के दासो! जादूगरों एवं इस प्रकार के अन्य कुफ़रिया दुष्कर्म करने वालों पर अल्लाह के पाप दंडों (हुदूद) का लागू करना सर्वश्रेष्ठ उपासनाओं में से है, क्योंकि यह लोग धरती पर विद्रोह फेलाते हैं। इसी कारणवश अबु हुरैरा रज़िअल्लाहु अंहु से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: धरती पर एक (अपराधी को) पाप दंड देना धरती वालों हेतु लगातार वर्षा होने से अधिक श्रेष्ठ है।

(इस हदीस को इब्नेमाजा: २५३८, ने रिवायत किया है, उल्लेख किए गए सब उन्हीं के हैं, इनके अतिरिक्त नसई: ४९१९, इब्ने ह़िब्बान: ४३९८ एवं अह़मद २/३६२ ने रिवायत किया है, एवं अल्-बानी ने अस्सिलसिलतुस्सह़ीह़ा: २३१ में सहीह स्थापित किया है।)

इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाह का कथन है: इसी प्रकार यह भी अनिवार्य है कि उनके कर्म (जादूगरी) पर जिन वस्तुओं से सहायता मिलती है पूर्णत: नष्ट कर दिया जाए, उन्हें समान मार्गों पर बैठने से रोका जाए, घर का मालिक उन्हें घर भाड़े पर ना दे, यह अल्लाह के मार्ग में जिहाद का एक सर्वश्रेष्ठ भाग है।

(देखें: मजमूउल्-फ़तावा: ३५/९४-९७, कुछ संक्षेप एवं उलटफेर के साथ)

अल्लाह तआला हमें एवं आपको कुरआन की बरकतों से मालामाल फ़रमाए, हमें एवं आपको इस के श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाह से लाभ पहुंचाए, मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह तआ़ला से अपने लिए एवं आप सभी के लिए क्षमा मांगता हूं आप भी उसे क्षमा चाहें, नि: संदेह वह अधिक पश्चाताप स्वीकार करने वाला एवं बहुत क्षमा करने वाला है|

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد !

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के दासो! अल्लाह से भय करें एवं यह ज्ञात रखें कि जादू से वंचित रहने की एक विधि यह भी है कि प्रातः एवं साईं का धार्मिक स्मरण व्यवस्था पूर्वक किया जाए, परंतु जादू के लग जाने के बाद उसके उपचार हेतु तीन विधियां हैं: प्रथम विधि: यह सबसे महत्वपूर्ण है: प्रातः एवं साईं का स्मरण व्यवस्थापूर्वक किया जाए, द्विती यविधि: यह एक बहुत ही लाभदायक उपचार है, वह यह कि जादू की स्थान के खोज का प्रयास किया जाए कि वह धरती के नीचे है अथवा पर्वत के ऊपर, अथवा कहां है? जब स्थान की खोज हो जाए एवं उसे वहां से निकाल कर नष्ट कर दिया जाए तो जादू का समापन हो जाता है, तीसरी विधि: यह उस व्यक्ति हेतु लाभदायक उपचार है जिसे अपनी पत्नी से संभोग करने में बाधा आती हो, हरे बेर की सात पत्तियां ले, उन्हें पत्थर आदि से पीस ले फिर उसे एक बर्तन में रख ले फिर उस पर इतना पानी डाले जो स्नान करने योग्य हो, उस पानी में आयतल्-कुर्सी सूरह काफ़िरून, सूरह इख़लास सूरह फ़लक़, सूरह नास एवं जादू के उन श्लोकों का सस्वर पाठ करे जो सुरह अअ़राफ़, सूरह यूनुस एवं सूरह ताहा में आए हैं, (अर्थात: सुरह अअ़राफ़, श्लोक संख्या: ११७-१२०, सूरह

यूनुस: श्लोक संख्या: ७९-८२, सूरह ताहा: श्लोक संख्या: ६५-६९) इसके पश्चात उस पानी में से तीन बार पी ले जिस में इन श्लोकों का सस्वर पाठ किया गया हो, फिर बचे हुए पानी से स्नान कर ले, इस प्रकार रोग दूर हो जाएगा इंशाल्लाह! यदि इसे दो या दो से अधिक बार भी प्रयोग करने की आवश्यकता पड़ जाए तो कोई बात नहीं जब तक कि रोग समाप्त न हो जाए।

आप यह भी ज्ञात रखें कि अल्लाह तआ़ला ने आपको एक बड़े कर्म का आदेश दिया है, अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात: "अल्लाह तआ़ला एवं उसके देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं और ए विश्वासियो! तुम भी उन पर दुरूद भेजो एवं अधिक सलाम भेजते रहा करो"।

हे अल्लाह! हमारे हृदय को पाखंडीपने से, हमारी उपासनाओं को दिखावे से एवं हमारे नेत्रों को विश्वासघात से पवित्र कर दे!

हे अल्लाह! हम तुझ से संसार एवं प्रलय के संपूर्ण भलाईयों की मांग करते हैं, जिनसे हम अवगत हैं या जिन से अज्ञात हैं, हम तेरा शरण चाहते हैं संसार एवं प्रलय के संपूर्ण बुराइयों से जिनसे हम अवगत हैं अथवा जिन से हम अज्ञात हैं!

हे अल्लाह! हम तेरा शरण चाहते हैं तेरे उपहारों के समापन होने से, तेरे स्वास्थ्य के हट जाने से, तेरे अचानक आने वाले प्रकोप से, एवं तेरे हर प्रकार के क्रोध से!

हे अल्लाह! हम तुझ से स्वर्ग की मांग करते हैं, एवं उस कथनी और करनी की भी मांग करते हैं जो हमें स्वर्ग के निकट कर दे, और तेरा शरण चाहते हैं नरक से एवं ऐसी कथनी और करनी से जो हमें नरक के निकट कर दे।

हे अल्लाह हमें संसार में लाभ दे एवं प्रलय में भी भलाइयां प्रदान करना, एवं नरक के प्रकोप से वंचित रख!

سبحان ربك رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين.

शीर्षक: सातवां विच्छेद:

भविष्यवाणी करना

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَٰه إلا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात!

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है, सबसे उच्च मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मार्ग है एवं धर्म में अविष्कार की गई हर नई चीज़ नवोन्मेष है, हर नवोन्मेष त्रुटि है और हर त्रुटि नरक में ले जाने वाली है।

अल्लाह तआ़ला से भय करो एवं उसका डर अपने हृदय में जीवित रखो, उसकी आज्ञा करो एवं अवज्ञा से वंचित रहो, एवं यह ज्ञात रखो के अल्लाह के एकेश्वरवाद में यह बात सम्मिलित है कि उसके नामों एवं विशेषताओं में केवल अल्लाह को जाना जाए, उन विशेषताओं में अल्लाह का परोक्ष ज्ञान भी है, परोक्ष ज्ञान विशेष कर अल्लाह के लिए होना किताब-व-सुन्नत एवं महा ज्ञानियों की सहमति से स्थापित है, क़ुरआन का साक्ष्य अल्लाह का यह कथन है:

﴿قُل لَّا يَعۡلَمُ مَن فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ ٱلۡغَيۡبَ إِلَّا ٱللَّهُۚ﴾ [سورة النمل: ٦٥]

अर्थात: कह दो कि जो लोग आकाशों में एवं धर्तियों में है अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी परोक्ष ज्ञानी नहीं है।

रही बात हदीस तो ख़ालिद बिन ज़कवान ने रबीअ़ बिन्त मुअ़व्विज़ से रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बालिका को यह कहते हुए सुना: हमारे बीच एक नबी है जो इस बात से अवगत है कि कल क्या होने वाला

है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: यह बात मत बोलो, कल की बातें अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता।

(इस हदीस को इब्ने माजा: १८९७ ने रिवायत किया है एवं अल्-बानी ने इसे सहीह कहा है, इस का यथार्थ सहीह बुख़ारी: ५१४७ में है।)

इब्ने उ़मर रज़िअल्लाहु अ़ंहुमा से मरवी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: गुप्त की कुंजियां पांच हैं, जिन्हें अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता, अल्लाह के अतिरिक्त इस बात से कोई अवगत नहीं कि कल क्या होने वाला है, एवं अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता की महिलाओं के गर्भ में क्या कटौती-बढ़ौती हुई, (इसका अर्थ यह है कि महिला के पेट में गर्भ नौ महीने से कितने ज़्यादा या कितना कम रहता है, इस बात की जानकारी केवल अल्लाह तआ़ला को है, अल्लाह का कथन है: स्त्रियां अपने गर्भ में जो कुछ रखती हैं उस से अल्लाह भली-भांति अवगत है एवं पेट का बढ़ना घटना भी, इ़मादुद्दीन इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह के लेख तफ़सीरूल्-कुरआनिल्-अज़ीम: में सूरह-रअ़द के उपरोक्त श्लोक के उल्लेख का अध्ययन करें!) अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता कि वर्षा कब होगी, एवं कोई व्यक्ति नहीं जानता कि उसकी मृत्यु कहां होगी, और अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता कि प्रलोक कब स्थापित होगा।

(इस हदीस को बुख़ारी: ४७९७ ने रिवायत किया है।)

ज्ञात हुआ कि परोक्ष ज्ञान विशेषकर अल्लाह हेतु होना उस अल्लाह के लिए स्थित विशेषता है जिसका कोई साझी व संगी नहीं, ना कोई निकट संबंधी देवदूत अथवा ना कोई अवतरित किए गए दूत, इस कारणवश जिसने अपने हेतु एवं किसी अन्य हेतु प्रोक्ष ज्ञान का दावा किया उसने अल्लाह एवं उसकी सृष्टि के

बीच एक ऐसी चीज़ में प्रतिभागी स्थित किया जो केवल अल्लाह ही की विशेषताओं में से है, उसे अल्लाह के जैसा स्थित किया, एवं महा बहूदेववाद (शिर्क-ए-अकबर) का पाप किया, अपने युग के इमाम अहले सुन्नत नुऐम बिन हम्माद अल्-ख़ुज़ाई का कथन है: जिसने अल्लाह को उसकी सृष्टि के जैसा स्थित किया उसने कुफ्र किया।

भविष्यवक्ताकीपारिभषिक

अल्लाह के दासो! कुछ लोगों ने परोक्ष ज्ञान की विशेषता में अल्लाह के साझी होने का दावा किया है, अल्लाह तआ़ला इस दावे से बरी एवं सर्वोच्च है, यह भविष्य वक्ता हैं यह भविष्यवाणी करने वाले व्यक्ति हैं जो भविष्य के गुप्त बातों की ज्ञान का दावा करते हैं, भविष्यवक्ता एक ऐसा नाम है जिसमें भविष्यवाणी करने वाले ज्योतिषी एवं नक्षत्र की विद्या रखने वाले सभी सम्मिलित हैं, जो परोक्ष ज्ञान का दावा करते हैं, भविष्यवक्ता को अरबी भाषा में "अ़र्राफ़" कहा जाता है, जोकि "अ़रफ़" से अतिशयोक्ति का शब्द है, शेख मोहम्मद बिन उ़सैमीन रहिमहुल्लाह का कथन है: फ़अ़्आ़ला वज़न पर है जो अल्-कोहन वांछित है जिसका अर्थ होता है अनुमान लगाना, निराधार वस्तुओं के माध्यम से वास्तव का पता लगाना, अशिक्षितता काल में यह उन लोगों का व्यवसाय था जिन से दुष्ट देव आ कर भेंट करते थे, एवं आकाश से चुराई हुई बातों को बताते थे, इन दुष्ट देवों के माध्यम से आकाश से चुराई हुई जो भी बातें इन तक पहुंचती, उनमें असत्य एवं मन घड़त बातें मिलाते थे एवं लोगों के समक्ष उल्लेख करते थे, यदि उनके बताए हुए बात के अनुसार कुछ होता तो लोग उनके धोखे में आ जाते एवं उन्हें अपने बीच न्याय करने और भविष्य की बातें जानने हेतु अपना ठिकाना बना लेते, इसीलिए हम कहते हैं: भविष्य वक्ता वह है जो भविष्य के गुप्त चीज़ों की सूचना दे।

शेख मोहम्मद बिन उ़सैमीन रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।

ए मोमिनो! भविष्यवक्ता परोक्ष ज्ञान का दावा करने हेतु दो में से एक विधि को अपनाता है،

प्रथम विधि: उन दुष्ट देवों से बातें लेना जो देवदूतों की कुछ बात आकाश से उचक लेते हैं, इसका साक्ष्य सहीह बुख़ारी की आ़इशा रज़िअल्लाहु अ़ंहा से मरवी यह एक मरफ़ूअ़ रिवायत है कि देवदूत बादलों में आते हैं, एवं उस कार्य का उल्लेख करते हैं जिसका निर्णय आकाशों में लिया जा चुका होता है, तो दुष्ट देव चुपके से देवदूतों की बातें उड़ा लेते हैं एवं भविष्यवक्ताओं को बता देते हैं, एवं वह सत्य बात में अपनी असत्य बात मिलाते हैं, (फिर उसे अपने भक्तों को बता देते हैं।) (सहीह बुख़ारी: २३१०)

अल्लाह के दासो! ज्ञात हुआ कि भविष्यवक्ता असत्य की सूचना लोगों को देता है, यदि इस बात में कोई सत्यता भी होती है तो वह दुष्ट देवों की चुराई हुई बात होती है, ना कि उसके परोक्ष ज्ञान का कोई हस्तक्षेप होता है, कभी-कभी कुछ लोग इसी सत्य बात के कारण उत्पात में पड़ जाते हैं, एवं इनमें जो असत्य बातें होती हैं उनकी ओर ध्यान नहीं देते, एवं यदि उसकी सारी बात असत्य रही तो कभी कभार भक्त गण संपूर्ण बातों को स्वीकार कर लेते हैं।

द्वितीय विधि: जिनों से सहायता प्राप्त करना, चाहे जिन मनुष्य का संगी हो अथवा कोई अन्य, इसी कारणवश प्रत्येक मनुष्य के साथ एक जिन लगा हुआ है, जो उसे दुष्टकर्म का आदेश देता है, आ़इशा रज़िअल्लाहु अ़ंहा से मरवी है कि कुछ व्यक्तियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से भविष्य वक्ता के संबंध में कुछ पूछा तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया: वह कोई चीज़ नहीं है, उन्होंने कहा हे अल्लाह के दूत! कभी कभार यह भविष्यवक्ता ऐसी

बातें बताते हैं जो सत्य स्थित हो जाती हैं, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "वह बात है जो सत्य स्थित होती हैं उन्हें कोई जिन देवदूतों से सुन कर उड़ा लेता है, फिर अपने मित्र के कान में मुर्ग़ी की स्वर के जैसे डाल देता है, फिर उस सत्य बात में भविष्यवक्ता १०० असत्य मिला देता है"।

(बुख़ारी: ६२१३, मुस्लिम: २२२८, उल्लेख किए गए शब्द बुख़ारी के हैं।)

यह इस बात का साक्ष्य है कि मनुष्य के साथ रहने वाले जिन से भविष्यवक्ता का संबंध होता है,तो जब कोई व्यक्ति भविष्यवक्ताका से मिलता है और उससे गुम हुए सामान के विष्य में पूछता है तो दुष्ट जिन्न भविष्यवक्ताका को उसके विष्य में सूचना देता है,फिर भविष्यवक्ताका उस व्यक्ति को उस स्थान की सूचना देता है और उसके साथ सौ झूट मिलाता है जब व्यक्ति को लगता है कि यह तो सच बोल रहा है तो वह उसकी पूष्टि करता है और यह समझता है कि उस भविष्यवक्ताका के पास पूर्वज्ञान है। *भविष्यवक्ताका से मिलने का एक तरीका यह भी है कि जिन्न साथी से सहायता प्राप्त करना, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य के साथ एक जिन्न लगा होता है जो उसे पूण्य एव पाप करने का आदेश देता है, जैसा कि सह़ीह़ ह़दीस में अ़ब्दुल्ला बिन मसूद रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि आप सलल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया:प्रत्येक व्यक्ति के साथ अल्लाह ने उसके एक जिन्न साथी को लगा रखा है जो उसे अधिकृत करता है।

दूसके शबदों में:प्रत्येक व्यक्ति के साथ एक जिन्न एवं एक दूत लगा हुआ है।

भविष्यवक्ताका उन जिन्नों से सहायता लेता है,क्योंकि वह उस व्यक्ति से संबंधित विशेष सूचना जिससे उसका जिन्न साथी अवगत होता है,जैसे

उसका कार्य स्थल उसकी पत्नि का नाम उसकी मां का नाम उसके शहर का नाम उसके घर का पता इसी प्रकार से जिससे वह अवगत होता है,वह सब भविष्यवक्ताका को बताता है।

यह जिन मनुष्य के संपूर्ण भेदों से अवगत होता है जिन से अन्य व्यक्तिगण अज्ञानी होते हैं, उदाहरणस्वरूप: यदि किसी मनुष्य की कोई वस्तु गुम हो जाए तो वह संगी जिन गुम हुई वस्तु से अवगत होता है, क्योंकि वह सदैव उसके साथ रहता है, यदि यह व्यक्ति भविष्यवक्ता से संपर्क करे एवं गुम हुए वस्तु के संबंध में उससे पूछताछ करे तो यह जिन उस भविष्यवक्ता को गुम हुए वस्तु के स्थान की सूचना दे देता है, फिर भविष्यवक्ता मनुष्य को उस स्थान की सूचना देता है, एवं उसके साथ १०० झूठ मिला कर बोलता है, इस कारणवश यदि इंसान हेतु इस सत्य बात में यह भविष्यवक्ता सत्य प्रदर्शित होता है तो वह उसके संपूर्ण बातों को सत्य मानने लगता है, एवं यह भ्रम रखने लगता है कि यह परोक्ष ज्ञान से अवगत है, जबकि वास्तव में उसके इस विशेष संबंध में केवल उस वस्तु की सूचना दी जिसके बारे में उसके संगी जिन ने उसे बताया, उदाहरणस्वरुप वह बात जो उस के एवं उसकी पत्नी के बीच होती है उसके कर्म स्थान के बारे में, उसकी माता का नाम उसके प्रदेश का नाम एवं उसके घर का पता आदि एवं इनके अतिरिक्त वह जानकारियां जो इस जिन को पता होती हैं।

अल्लाह के दासो! भविष्यवक्ता जिस दुष्ट देव से संबंध रखता है वह उससे जो से वा प्राप्त करता है उसके बदले वह उसकी उपासना करता है एवं दुष्ट देव का यही लक्ष्य है, आदम की वंश के पीछे केवल इसलिए पड़ा हुआ है कि उसे मार्ग-भ्रष्ट कर दे, यही उसका कर्म एवं यही उसका संदेश है, उसके धोके की जाल में भविष्यवक्ता जादूगर एवं ज्योतिषी सभी फंस जाते हैं, ये मनुष्य में से दुष्ट देव

हैं, जबकि वो जिनों में से दुष्ट देव हैं, इन संपूर्ण दुष्ट देवों से हम अल्लाह के शरण की मांग करते हैं।

अल्लाह के दासो! एक महत्वपूर्ण बात यह है कि जो लोग सही दिशा-निर्देश अनुसार झाड़-फूंक एवं उपचार करते हैं एवं जादूगरों और भविष्यवक्ताओं के कर्तव्य से अवगत हैं वे कहते हैं कि: यदि आप भविष्यवक्ता का भेद खोलना चाहते हैं तो उससे ऐसी वस्तु के संबंध में पूछताछ करें जिससे आप अवगत नहीं हैं, क्योंकि जिससे आप अवगत नहीं होंगे आपका संगी जिन भी उस चीज़ से अवगत नहीं होगा इस कारणवश भविष्यवक्ता कुछ पता नहीं कर पाएगा। उदाहरणस्वरूप आप धरती से कुछ कंकरियां उठा लीजिए एवं अपने मुट्ठी बंद कर लीजिए, फिर भविष्यवक्ता से पूछिए कि मेरे हाथ में कितनी कंकरियां हैं, वह उस समय अचंभे में पड़ जाएंगे और इसका उत्तर नहीं दे पाएगा, एवं भाग खड़े होने का प्रयास करेगा, क्योंकि आपका संगी जिन भी वह नहीं जानता तो भविष्यवक्ता कहां से बता पाएगा!!!

सारांश यह कि भविष्यवक्ता अपने संपूर्ण धंधों में जिनों से सहायता प्राप्त करता है, संपूर्ण घटनाओं की जानकारी हेतु उसकी ओर जाता है, फिर वह कुछ बातें अनुमान से उसके कान में डाल देते हैं, एवं इस आधार पर भविष्यवक्ता अनुमान लगा कर जो सूचना देता है यदि वह सूचना सत्य स्थित हुई तो मनुष्य भ्रम करने लगता है के भविष्यवक्ता को कुछ ना कुछ परोक्ष ज्ञान प्राप्त है, फिर वह उसके षड्यंत्र का शिकार हो जाता है, अज्ञानी उसे अभिव्यक्ति एवं चमत्कार पर निर्भर करता है, एवं यह समझता है कि भविष्यवक्ता अल्लाह के मित्रों में से है जबकि वह दुष्ट देव के मित्रों में से है, जैसाकि सूरह-ए-शुअ़रा में अल्लाह का कथन है:

﴿هَلۡ أُنَبِّئُكُمۡ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ ٱلشَّيَٰطِينُ ۝٢٢١ تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ۝٢٢٢ يُلۡقُونَ ٱلسَّمۡعَ وَأَكۡثَرُهُمۡ كَٰذِبُونَ ۝٢٢٣﴾ [سورة الشعراء: ٢٢١-٢٢٣]

अर्थात: क्या मैं तुम्हें सुचित करूं कि दुष्ट देव किस पर अवतरित होते, वह प्रत्येक असत्य एवं पापी पर अवतरित होते हैं, उचटती हुई सुनी सुनाई पहुंचा देते हैं एवं उनमें से अधिकतम झूठे है।

एकेश्वरवादों के समूह! ज्योतिषी भी परोक्ष ज्ञान का दावा करते हैं, ज्योतिषी वह है जो अपने व्यक्तिगत भ्रम से सितारों की गति की माध्यम से भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं, उदाहरणस्वरूप वायु बहने के समय, वर्षा होने के समय, सर्दी एवं गर्मी के ऋतु एवं मोलों के परिवर्तन इत्यादि की जानकारी, उनका दावा है कि सितारों का अपने आकाश में चक्कर लगाने एवं उनका आपस में एक दूसरे से मिलने को देख कर वो इन सब बातों का पता लगाते हैं, एवं यह कि निचले संसार में उसका प्रभाव पड़ता है, इसे प्रभावशाली ज्ञान के नाम से याद किया जाता है, इसका दावा करने वाले को हाज़ी (ज्योतिषी) भी कहा जाता है, ऐसे रूप में ज्योतिषी सितारों को संबोधित करता है एवं दुष्ट देव उसके समक्ष वह चित्र प्रकट करता है जिसके माध्यम से वह उपरोक्त उल्लेख किए गए बातों का पता चलाता है, यह सब अनर्गल प्रलाप है।

अल्लाह के दासो! ज्योतिषी विज्ञान में यह बात भी सम्मिलित है कि भविष्य की घटनाओं का पता चलाने हेतु सितारों के चक्कर के साथ-साथ "अबजद" अक्षरों का भी प्रयोग किया जाए, इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहु अ़ंहुमा के इस कथन का यही अर्थ है: एक समूह (अबूजाद) का प्रयोग करता है एवं सितारों पर नज़र रखता है, एवं जो व्यक्ति ऐसा करता है मेरे विचार से परलोक में उसके हेतु कोई भागीदारी ना होगी। (अर्थात अख़िरत में उनका कोई भाग नहीं होगा,इसका मतलब यह है कि ऐसा करने वाला कुर्फ में पड़ने के कारण बर्बाद होगया।

(इस कथन को अब्दुलरज़्ज़ाक़ ने अल्-मुसन्नफ़: १९८०५ में रिवायत किया है, एवं उल्लेख किए गए शब्द उन्हीं के हैं, इनके अतिरिक्त, बैहक़ी ने अल्-सुननुल्-कुबरा: ८/१३९ में रिवायत किया है।)

ज्योतिषी विज्ञान का एक दृश्य यह भी है जिस का दावा कुछ अंतरिक्ष विज्ञान करते हैं कि मनुष्य के भविष्य में जो कुछ प्रकट होने वाला है उससे वो अवगत हैं, एवं इस दावे का समाचार पत्र के माध्यम से प्रचार भी करते हैं, उसका दावा है कि जो व्यक्ति सितारों के उदय होते समय जन्म पाया उदाहरणस्वरूप बुर्ज-ए-अक़रब के समय जन्म पाया तो वह दुर्भाग्यवान होगा, एवं इसी प्रकार जो बुर्ज-ए-मीज़ान के समय जन्म पाया तो वह सौभाग्यशाली होगा। इत्यादि...

अल्लाह के दासो! जादू का जो आदेश है वही आदेश ज्योतिषी ज्ञान का भी है, इन दोनों के बीच समानता का कारण यह है कि यह दोनों दुष्ट देव से संबंधित हैं इसका साक्ष्य: इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहु अंहुमा से मरवी यह रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जिसने ज्योतिषी का कोई ज्ञान सीखा, तो उसने जादू का एक भाग सीखा, फिर जो इस में अपनी भागीदारी बढ़ाना चाहता है बढ़ा ले।

(सहीह मुस्लिम: २२३०)

ज्योतिष ज्ञान को प्रभावशाली ज्ञान के नाम से भी याद किया जाता है अर्थात धरती के घटनाओं पर सितारों के चक्कर का प्रभाव, उनके कथन: (उसने जादू का एक भाग सिखा) का अर्थ यह है कि वह जादू की एक प्रकार का शिकार हो गया, आपके कथन: (फिर जो इसमें अपनी भागीदारी बढ़ाना चाहता है बढ़ा ले।) का अर्थ है: ऐसा करने वाला -ज्योतिषी विज्ञान-जितना ज्योतिष ज्ञान सीखेगा मानो उतना ही उसने जादू का ज्ञान सीखने में बढ़ोतरी की।

विष्य वक्ताओं, ज्योतिषी विज्ञानों के निकट जाने की अवैधता के साक्ष्य:

अल्लाह के दासो! इस्लाम धर्म की विशेषताओं में से एक यह है कि वह सकारात्मक शगुन लेने का आदेश देता है, मनुष्य को ऐसे कर्मों की ओर दिशा-निर्देश देता है जिनमें उसकी सांसारिक एवं परलोक के जीवन की भलाइयां छुपी हुई हों, यह धर्म बहुदेववाद, अनर्गल प्रलाप एवं धोखाधड़ी से वंचित रहने का आदेश देता है, इसी कारणवश इस्लाम में दुष्ट देव के द्वारों के सामर्थ्य को बंद किया है, इसी कारणवश भविष्यवक्ता के निकट जाने को अवैध स्थित किया है, कि उनके पास जाने से बड़ा धार्मिक बिगाड़ उतपन्न होता है। एवं भविष्यवक्ता के निकट जाने वाले को कठोर दंड देने की बात की है, चाहे केवल प्रश्न करने हेतु ही क्यों ना हो, मुस्लिम ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नी सफ़ीया रज़िअल्लाहु अंहा से रिवायत किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जो व्यक्ति किसी गुप्त बातों की सूचना देने वाले (भविष्यवक्ता) के पास आए, एवं उस से किसी वस्तु के संबंध में प्रश्न करे, तो ४० रातों तक उस व्यक्ति की नमाज़ को स्वीकृति नहीं दी जाएगी। (सहीह मुस्लिम: २२३०)

इसमें जो धमकी आई है वह उस व्यक्ति पर लागू होती है, जो गुप्त बातों की सूचना देने वाले भविष्यवक्ता के निकट जाए, एवं उस से केवल प्रश्न करे, चाहे वह उसे सत्य ना माने, तो भी ऐसे व्यक्ति की नमाज़ ४० दिनों तक स्वीकार नहीं की जाएगी, परंतु काफ़िर नहीं होगा इस कारणवश वह इस्लाम के घेरे से बाहर नहीं होगा।

परंतु जो व्यक्ति भविष्यवाणी करने वाले एवं गुप्त की सूचना देने वालों से प्रश्न करे, एवं उसकी बात को सत्य माने, तो वह इस्लाम के घेरे से

बाहर आ जाता है, क्योंकि जब वह उसे सत्य मानता है तो इससे यह बात प्रकट होती है कि उसने परोक्ष ज्ञान की विशेषता में उन्हें अल्लाह का साझी स्थित किया, जबकि यह विशेषता अल्लाह ही की है, इस प्रकार वह क़ुरआन को असत्य भी मानता है एवं कुफ़्र भी कर बैठता है -अल्लाह का शरण- अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु अंहु से मरवी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जो व्यक्ति भविष्यवक्ता एवं परोक्ष ज्ञान का दावा करने वाले के निकट गया एवं उसकी बात को सत्य माना, तो उसने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अवतरित किए गए धर्म को नकारा।

(इस हदीस को अहमद: ४/४२९ इत्यादि ने रिवायत किया है, एवं अल्-मुसनद के शोधकर्ताओं ने इसे हसन स्थित किया है।)

इमरान बिन हुसैन रज़िअल्लाहु अंहु से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जिसने अपशगुन लिया या जिसके लिए अपशगुन लिया गया, जिसने भविष्यवाणी की या जिसके लिए भविष्यवाणी की गई, जिसने स्वयं जादू किया अथवा जिसके लिए जादू किया गया वह हम ऐसे नहीं है, एवं जो व्यक्ति भविष्यवक्ता के निकट गया एवं उसकी बात को सत्य माना, तो उसने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अवतरित किए गए धर्म को नकारा (कुफ़्र किया)।

{इस हदीस को बाज़्ज़ार ने रिवायत किया है, मुसनद अल्-बाज़्ज़ार: (९/५२), (३५७८) इसके अतिरिक्त तबरानी ने अल्-कबीर: (१८/१६२) में रिवायत किया है, इनके रिवायत किए हुए शब्द कुछ इस प्रकार हैं: इमरान बिन हुसैन रज़िअल्लाहु अंहु से मरवी है कि उन्होंने एक व्यक्ति की कलाई में एक पीतल का कड़ा देखा उस से प्रश्न किया: यह क्या है? तो उसने कहा: मुझे बताया गया है कि

इस से हाथ का दर्द दूर हो जाता है, फ़रमाया: यदि तुम्हारी मृत्यु इसी स्थिति में हो गई तो तुम उसी की ओर सौंप दिए जाओगे, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जिसने अपशगुन लिया एवं जिसके लिए लिया गया वह हम में से नहीं है... अल्-हदीस। हैसमी कहते हैं: इस हदीस को बाज़्ज़ार ने रिवायत किया है, इसहाक़ बिन अबु रबीअ़ के अतिरिक्त इस हदीस के तमाम रावी सहीह हैं, वह भी विश्वसनीय हैं, देखें: मजमउज़्ज़वाइद: (५/११७) इस हदीस को बाज़्ज़ार ने इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहु अंहुमा से रिवायत किया है, जैसाकि कश्फुल्-स्तार (३०४३) में है, इस हदीस को अल्-बानी ने सहीहुल्-जामे इ़स्सग़ीर: (५४३५) एवं अस्सिलसिलतुस्सह़ीह़ा: (२१९५)

(التطير अंधविश्वास वास्तव में आशावाद अथवा निराशावाद के अर्थ में था कि जब पंझी दोएं ओर को जाता तो आशावाद का चिंह मानते और यदि वह बांए ओर जाता तो उससे निराशावाद का चिंह मानते,फिर इसको निराशावाद के लिए जाना जाने लगा।)

में सहीह स्थापित किया है।}

अल्लाह के दासो! जिनके बीच भविष्यवाणी प्रचारित एवं प्रसारित है वह सूफिया हैं, उनके अधिकतम धार्मिक गुरु भविष्यवक्ता अथवा भविष्यवाणी करने वाले हैं, क्योंकि वे अपने धार्मिक गुरु हेतु ऋषि एवं चमत्कारी होने का दावा करते हैं, परोक्ष ज्ञान का दावा उनके निकट ऋषि एवं चमत्कारी होने की आवश्यकताओं में से हैं, जिसे वो "कश्फ़" का नाम देते हैं, इसे परोक्ष ज्ञान का नाम नहीं देते ताकि उनका अपमान ना हो।

अल्लाह के दासो! भविष्यवाणी की अवैधता के अनिवार्य होने के उल्लेख हेतु भविष्यवक्ताओं के निकट जाने वालों के कुफ़्र को स्पष्ट करने हेतु यह एक

लाभदायक प्रस्तावना है, चाहे वास्तव में हो अथवा उसे अपना कर हो, अथवा केवल हृदय से इस कर्म पर अपनी सहमति अस्पष्ट करने से हो, यह सारे कुफ़्रिया कर्म हैं।

अल्लाह तआ़ला हमें एवं आप को क़ुरआन की बरकतों से मालामाल फ़रमाए, हमें एवं आप को इस के श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाह से लाभ पहुंचाए, मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह तआ़ला से अपने लिए एवं आप सभी के लिए क्षमा मांगता हूं आप भी उसे क्षमा चाहें, नि: संदेह वह अधिक पश्चाताप स्वीकार करने वाला एवं बहुत क्षमा करने वाला है !

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبى بعده، أما بعد!

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के दासो! अल्लाह से भय करें एवं यह ज्ञात रखें कि भविष्यवाणी में "तर्क़" भी सम्मिलित है, जोकि एक प्रकार की भविष्यवाणी ही है, जिसके सहायते से अरब समुदाय के लोग अपने व्यक्तिगत भ्रम के माध्यम से गुप्त बातों का ज्ञान प्राप्त करते थे, "तर्क़" तरीक़ से लिया गया है, "तर्क़ुल्-अरज़ियतरुक़ुहा" उस समय कहा जाता है जब धरती पर चले, वो धरती पर कुछ लकीरें खींचते हैं, मानो वह उस पर चल रहे हों, फिर धरती पर खींची गई उन लकीरों से जो परोक्ष ज्ञान स्पष्ट होता है वो उस की सूचना देते हैं, ऐसा उनका मानना था।

"रम्माल" भी भविष्यवाणी का ही एक प्रकार है, इसकी विधि होती है कि, रम्माल अपने हाथ से रेत पर लकीर खींचता है, फिर उसके माध्यम से परोक्ष ज्ञान का दावा करता है, इसे (रम्माल) के नाम से जाना जाता है।

भविष्यवाणी में कंकरबाज़ी भी सम्मिलित है, जब प्रश्न करने वाला भविष्यवाणी करने वाले से किसी घटना के संबंध में प्रश्न करता है तो वह कुछ कंकरिया निकालता है, एवं विशेष विधि से उस पर मारता है, के पश्चात -अपने असत्य दावे के आधार पर- उस प्रश्न करने वाले का उत्तर पता चल जाता है।

भविष्यवाणी का एक प्रकार "फ़िनजान" पढ़ना भी है, अर्थात: कॉफी का कप अथवा प्याला, तो कप में जो कॉफी बच जाती है वही अधिक होती है, उस पर भविष्यवक्ता अपना ध्यान केंद्रित करता है, उसके माध्यम से पहले के आसपास लकीरें खींचता है, फिर उसके संबंध में सूचना देता है, एवं दावा करता है कि ऐसा होने वाला है।

भविष्यवाणी का एक प्रकार अग्नि को पढ़ना भी है, कभी कभार भविष्यवक्ता अग्निज्वाला के रूप एवं अग्निके लौ की सहायता से अपने व्यक्तिगत भ्रम के माध्यम से भविष्य का ज्ञान प्राप्त करता है।

भविष्यवाणी का एक प्रकार हथेली पढ़ना भी है, जिसमें भविष्यवक्ता हथेली पर पड़े लकीरों, उन लकीरों के टेढ़ेपन एवं आपसी संबंध पर विश्वास करता है, फिर यह दावा करता है कि ऐसा ऐसा होने वाला है।

भविष्यवाणी में "इ़याफ़ा" (विशेष रूप से पक्षियों को उड़ा कर अपशगुन लेने की विधि) भी सम्मिलित है,जब पंझी दोएं ओर को जाता तो आशावाद का चिंह मानते और यदि वह बांए ओर जाता तो उससे निराशावाद का चिंह मानते इसकी विधि है कि पक्षियों को उड़ाया जाता है, यदि वह दाहिनी ओर उड़े, मंगलकारी लो, एवं बाएं ओर उड़े तो कहते हैं अपशगुन लो, यह भविष्यवाणी है।

निःसंदेह "इ़याफ़ा" एक असत्यकर्म है, क्योंकि पक्षी अल्लाह की सृष्टियों में से एक है, उसके अंदर प्रभाव एवं उपाय की कोई योग्यता नहीं, बल्कि अल्लाह तआ़ला उसके संपूर्ण चीज़ों का उपाय करता है एवं उसके पालन-पोषण की व्यवस्था करता है, वह अल्लाह के नियंत्रण में है।

﴿أَلَمْ يَرَوْاْ إِلَى ٱلطَّيْرِ مُسَخَّرَٰتٍ فِى جَوِّ ٱلسَّمَآءِ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا ٱللَّهُ﴾ [سورة النحل:٧٩]

अर्थात: क्या उन लोगों ने पक्षियों को नहीं देखा जो आज्ञाकारी बन कर वातावरण में हैं, जिन्हें अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं थामे हुए है।

इसके अतिरिक्त अल्लाह सर्वश्रेष्ठ का कथन है :

﴿أَوَلَمْ يَرَوْاْ إِلَى ٱلطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَٰٓفَّٰتٍ وَيَقْبِضْنَ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا ٱلرَّحْمَٰنُ إِنَّهُۥ بِكُلِّ شَىْءٍۭ بَصِيرٌ ١٩﴾ [سورة الملك:١٩]

अर्थात: क्या यह अपने ऊपर खोले हुए एवं (कभी-कभी) समेटे हुए (उड़ने वाले) पक्षियों को नहीं देखते, उन्हें (अल्लाह) रहमान ही (वायु एवं वातावरण) में थामे हुए है, नि:संदेह प्रत्येक वस्तु उसकी दृश्य में है।

भविष्यवाणी में अपशगुन लेना भी है, इसमें समान अपशगुन सम्मिलित है, चाहे वह देखी हुई वस्तु से हो अथवा सुनी हुई बात से, इसका अर्थ है पक्षियों को उड़ा कर उसके उड़ने की दिशा से अपशगुन लेना, यदि दाएं ओर उड़े तो मंगलकारी लेना, एवं बाय ओर उड़े तो अपशगुन लेना, शब्दकोश के अनुसार अपशगुन (तियरह) एवं इ़याफ़ा दोनों का अर्थ एक ही है, परंतु इसमें विस्तार है, इसलिए कि इसमें अपशगुन के संपूर्ण प्रकार सम्मिलित हैं, यहां तक कि अनेक चीजों का अपशगुन लिया जाने लगा, पक्षियों,पशुओं,मनुष्यों एवं अंकों का, उदाहरणस्वरूप उल्लू एवं कौवा को देख कर अपशगुन लेना, १३ की संख्या से अपशगुन लेना, काना लंगड़ा एवं अपाहिज को देख कर अपशगुन लेना, जब कोई

काना मनुष्य को देखे तो कहे आज का दिन बुरा है, इस कारणवश अपना प्रतिष्ठान बंद कर दे एवं क्रय-विक्रय ना करे, मानो उसे विश्वास हो चला कि आज के दिन उस पर कोई दुख प्रकट होने वाला है, यदि मनुष्य को दाहिने हाथ में खुजलाहट हो तो कहे कि ऐसा होगा, यदि बाएं हाथ में खुजलाहट हो तो कहे वैसा होगा, यह एवं इन जैसी संपूर्ण चीज़ें जिनमें अल्लाह ने अपशगुन नहीं रखा है, परंतु लोगों ने अपशगुन बना लिया है, एवं उस दिन को अपने हेतु अशुभ मान लिया है, जबकि अल्लाह ने उसे अशुभ दिन नहीं बनाया, मानो उसने यह दावा किया कि उस दिन कुछ होने वाला है, इस ज्ञान में वो अल्लाह के साझी हैं, वह इस प्रकार की उन्होंने ऐसी चीज़ों पर विश्वास किया जिनको उन्होंने कारण स्थापित किया जोकि वास्तव में उस अरुचिकर चीज़ के कारण नहीं है, जिनके स्थापित होने की वो आशा करते हैं।

अपशगुन अवैध है बल्कि बहुदेववाद है, इसका साक्ष्य अब्दुल्लाह बिन ऊमर रज़िअल्लाहु अंहुमा की यह हदीस है रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जिस व्यक्ति को अपशगुन ने अपनी आवश्यकता पूरी करने से रोक दिया, उसने बहुदेववाद किया, सहाबा ने प्रश्न किया: हे अल्लाह के दूत: इसकी भरपाई (कफ़्फ़ारा) क्या है? आपने फ़रमाया: यह कहना कि :

اللهم لا خير إلا خيرك ولا طير ألا طيرك ولا إله غيرك.

अर्थात: तेरी प्रदान की गई भलाई के अतिरिक्त कोई भलाई नहीं, तेरे स्थापित किए गए अपशगुन के अतिरिक्त कोई अपशगुन नहीं, एवं तेरे अतिरिक्त कोई वास्तविक पूज्य नहीं।

(इस हदीस को अहमद: २/२२० ने रिवायत किया है एवं अल्-मुसनद के शोधकर्ताओं ने इसे हसन स्थापित किया है।)

अपशगुन के अवैध होने का एक साक्ष्य अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह हदीस है: छूत लग जाना, अपशगुन लेना, उल्लू, एवं सफ़र के महिने को अशुभ मानने की कोई वास्तविकता नहीं।

(इस हदीस को बुख़ारी: ५७०७, एवं मुस्लिम: २२२० ने अबू हुरैरा रज़िअल्लाहु अंहु से रिवायत किया है।)

आपका यह कथन: "अपशगुन लेने की कोई वास्तविकता नहीं" स्पष्ट रूप से अपशगुन को नकारता है।

सारांश यह कि भविष्यवाणी के कई प्रकार हैं, परंतु संपूर्ण भविष्यवक्ताओं में जो समानता है वह है परोक्ष ज्ञान का दावा करना, किंतु इनकी विधियां विभिन्न हैं, इनमें से कुछ का दुष्ट देवों से वास्तव में संबंध होता है, कुछ लोग केवल इस का दावा करते हैं ताकि लोगों को धोखे के जाल का शिकार बना सकें, अल्लाह हमें उनके बुराइयों से सुरक्षित रखे।

आप यह भी ज्ञात रखें कि अल्लाह तआ़ला ने आपको एक बड़े कर्म का आदेश दिया है, अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात: अल्लाह तआ़ला एवं उस के देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं और ए विश्वासियो! तुम भी उन पर दुरूद भेजो एवं अधिक सलाम भेजते रहा करो"।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء الأئمة الحنفاء وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे अल्लाह! हमारे हृदय को पाखंडीपने से, हमारी उपासनाओं को दिखावे से एवं हमारे नेत्रों को विश्वासघात से पवित्र कर दे!

हे अल्लाह हम तुझसे शांतिपूर्वक जीवन विस्तारपूर्वक रोज़ी-रोटी एवं पुण्य कर्म के लिए प्रार्थना करते हैं!

हे अल्लाह! हम तुझसे संसार एवं प्रलय के संपूर्ण भलाईयों की मांग करते हैं, जिनसे हम अवगत हैं या जिनसे अज्ञात हैं, हम तेरा शरण चाहते हैं संसार एवं प्रलय के संपूर्ण बुराइयों से जिन से हम अवगत हैं अथवा जिनसे हम अज्ञात हैं!

हे अल्लाह! हम तुझसे स्वर्ग की मांग करते हैं, एवं उस कथनी और करनी की भी मांग करते हैं जो हमें स्वर्ग के निकट कर दे, और तेरा शरण चाहते हैं नरक से एवं ऐसी कथनी और करनी से जो हमें नरक के निकट कर दे!

हे अल्लाह हमें संसार में लाभ दे एवं प्रलय में भी भलाइयां प्रदान करना, एवं नरक के प्रकोप से वंचित रख!

سبحان ربك رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين.

शीर्षक: आठवां भंजक:

(मुसलमानों के विरुद्ध काफिरों की सहायता करना)

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात!

र्स्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ (धर्म) अविष्कार की गई बिदअतें (नवाचार) हैं,धर्म में अविष्कार की गई प्रत्येक चीज़ बिदअत (नवाचार) है,प्रत्येक बिदअत (नवाचार) गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाजी है।

अल्लाह पर ईमान लाने से मोमिनों से मित्रता रखना अनिवार्य है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआला तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाओ और उसका भय स्वेद अपने हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा पालन करो और उसकी अवज्ञा से बचो,और जान लो कि अल्लाह पर ईमान लाने से मोमिनों से मित्रता रखना भी अनिवार्य हो जाता है,अर्थात उनसे प्रेम करना और उन की सहायता करना,अल्लाह का कथन है:

﴿وَٱلۡمُؤۡمِنُونَ وَٱلۡمُؤۡمِنَٰتُ بَعۡضُهُمۡ أَوۡلِيَآءُ بَعۡضٖۚ يَأۡمُرُونَ بِٱلۡمَعۡرُوفِ وَيَنۡهَوۡنَ عَنِ ٱلۡمُنكَرِ وَيُقِيمُونَ ٱلصَّلَوٰةَ وَيُؤۡتُونَ ٱلزَّكَوٰةَ وَيُطِيعُونَ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥٓۚ أُوْلَٰٓئِكَ سَيَرۡحَمُهُمُ ٱللَّهُۗ إِنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٞ ٧١﴾ [سورة التوبة:٧١]

अर्थात: तथा ईमान वाले पुरूष और स्त्रियाँ एक-दूसर के सहायक हैं वे भलाई का आदेश देते तथा बुराई से रोकते हैं,और नमाज़ की स्थापना करते तथा ज़कात देते हैं,और अल्लाह तथा उस के रसूल की आज्ञा का पालन करते हैं,इन्हीं पर अल्लाह दया करेगा,वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

अल्लाह पर ईमान लाने से कुफ्र और काफिरों से घृणा रखना अनिवार्य हो जाता है और यह स्पष्टता कि काफिरों से निष्ठा एवं मित्रता के क्या अर्थ हैं

मोमिनों के समूह!अल्लाह पर ईमान लाने से कुफ्र एवं काफिरों से घृणा एवं शत्रुता रखना और उन से स्वंय को मुक्त करना भी अनिवार्य होता है,क्योंकि सत्य मोमिन वह है जो अल्लाह और रसूल के प्रेमियों से प्रेम रखता है,और जिस से अल्लाह एवं रसूल घृणा रखते हैं,उस से वह भी घृणा रखता है,इसका विपरीत काफिरों से मित्रता रखना है,अर्थात दुनयावी हितों एवं उद्देश्यों के कारण उन से प्रेम रखी जाए,यह अवहेलना एवं अवज्ञा है,बल्कि बड़े पापों में से है,अल्लाह तआ़ला ने काफिरों से मित्रता रखने से क़ुर्आन पाक में अनेक आयतों में मना किया है,उदारण स्वरूप अल्लाह का फरमान है:

﴿لَّا يَتَّخِذِ ٱلْمُؤْمِنُونَ ٱلْكَـٰفِرِينَ أَوْلِيَآءَ مِن دُونِ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۖ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ ٱللَّهِ فِى شَىْءٍ﴾ [سورة آل عمران:٢٨]

अर्थात: मुमिनों को चाहिये कि वे ईमान वालों के विरुद्ध काफिरों को अपना सहायकमित्र न बनायें और जो ऐसा करेगा उस का अल्लाह से कोई संबंध नहीं।

तथा अल्लाह ने अधिक फरमाया:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَا تَتَّخِذُواْ عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمۡ أَوۡلِيَآءَ تُلۡقُونَ إِلَيۡهِم بِٱلۡمَوَدَّةِ وَقَدۡ كَفَرُواْ بِمَا جَآءَكُم مِّنَ ٱلۡحَقِّ﴾ [سورة الممتحنة:١]

अर्थात: हे लोगो जो ईमान लाये हो!मेरे शत्रुओं तथा अपने शत्रुओं को मित्र न बनाओ।तुम संदेश भेजते हो उन की ओर मैत्री का,जब कि उन्हों ने कुफ्र किया है उस का जो तुम्हारे पास सत्य आया है।

काफिरों से मित्रता रखने का अर्थ और उस का हुकुम

अल्लाह के बंदो!काफिरों से मित्रता रखना रखना उनसे संबंध रखने से कहीं बड़ा पाप है,काफिरों से मित्रता का मतलब है कि मुलिमानों के विरुद्ध उन की सहायता की जाए,वह इस प्रकार से कि यदि मुसलमानों एवं काफिरों के बीच युद्ध हो तो काफिरों की पंक्ति में खड़ा हो कर हथियार,धन-दौलत,राय व मशवरा और योजना के द्वारा उन की सहायता करे,उस के पीछे उद्देश्य यह हो कि काफिरों का धर्म इस्लाम पर प्रभुत्व हो जाए,ऐसा करना इस्लाम भंजक है,अल्लाह का शरण,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿ وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمۡ فَإِنَّهُۥ مِنۡهُمۡۗ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهۡدِي ٱلۡقَوۡمَ ٱلظَّٰلِمِينَ﴾ [سورة المائدة:٥١]

अर्थात: और जो कोई तुम में से उन को मित्र बनायेगा वह उन्हीं में होगा तथा अल्लाह अत्याचारों को सीधी राह नहीं दिखाता।

काफिरों से मित्रता इस लिए कुफ्र है कि इस से इस्लाम एवं मुसलमानों से घृणा एवं शत्रुता अनिवार्य हो जाता है,जो कि कुफ्र है,क्योंकि अल्लाह ने स्वयं से,अपने रसूल से,अपने धर्म से और मुसलमानों से प्रेम करने का

आदेश दिया है,रही बात मुसलमानों के विरुद्ध काफिरों की सहायता करने की तो इस से उपरोक्त समस्त मामलों (प्रेम के आदेशों) का विरुद्ध होता है,अल्लाह तआ़ला हमें इस से सुरक्षित रखे।

शनक़ीती रहि़महुल्लाह अल्लाह तआ़ला के इस ﴿وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَإِنَّهُۥ مِنْهُمْ﴾ कथन की व्याख्या में लिखते हैं: अल्ला तआ़ला ने इस आयत में यह उल्लेख किया है कि जो व्यक्ति यहूद एवं ईसाई से मित्रता रखता है वह उन से मित्रता रखने के कारण उन में से ही हो जाता है,एक अन्य स्थान पर बयान फरमाया कि उन से मित्रता रखने से अल्लाह का क्रोध और स्वेद की यातना अनिवार्य हो जाती है,और उन से मित्रता रखने वाला यदि मोमिन होता तो उन से मित्रत नहीं रखता।थोड़े हेर फेर के साथ कथन समाप्त हुआ।

ऐ मोमिनो!यह कल्पना से परे बात है कि कोई मुसलमान किसी मुसलमान के विरुद्ध काफिर की सहायता करे,यह केवल मोनाफिकों (द्विधावादियों) अथवा उन जैसा गुण रखने वाले लोग ही कर सकते हैं,जैसे रवाफिज़ और कुछ ऐसे लोग है जो काफिरों के देश में जा कर बस गए,उन के मध्य निवास कर गए और उन की सेना में कार्य करने लगे,ऐसे लोग मुसलमानों के विरुद्ध काफिरों के युध में भाग लेते है,क्योंकि उनके अनुसार यह उन की काम का तकाजा होता है,अल्लाह तआ़ला हमें इस से सुरक्षित रखे।[1]

अल्लाह के बंदो!मोमिनों से मित्रता रखने एवं कुफ्र एवं काफिरों से मुक्ति का इजहार करने की अनिवार्यता एवं इस्लामी आस्था में निष्ठा के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए यह एक लाभदायक प्राक्कथन है।

---

[1] इब्ने तैमिया रहि़महुल्लाह का कथन देखें:الفتاوى: (२८/५३०-५३१)।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुर्आन की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को इसकी आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

द्वतीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!आप अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाएं और जान लें कि काफिरों से घृणा रखने का अर्थ यह नहीं है कि मामलों में उन पर अत्याचार किया जाए,अथवा यह कि उन के साथ खरीद-बेच,किराया एवं सुलह व अनुबंध आदि करना ह़राम (अवैध) है,यह एक चीज़ है और निष्ठा अन्य चीज़ है।मामलों में न्याय करना है और नैतिकता एवं व्यवहार को सुंदर रखना है,आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम काफिरों के साथ मामले किया करते थे जब कि आप उन से और उन के धर्म से घृणा रखते थे,किन्तु आप उन के साथ सुंदर व्यवहार करते थे, यद्यपि वह युध में बंदी ही क्यों न बनाए गए हों,अल्लाह तआ़ला के इस आदश पर अ़मल करते हुए कि:

﴿وَيُطۡعِمُونَ ٱلطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِۦ مِسۡكِينٗا وَيَتِيمٗا وَأَسِيرًا ٨﴾ [سورة الإنسان:٨]

अर्थात: और भोजन कराते रहे उस (भोजन) को प्रेम करने के बावजूद , निर्धन तथा अनाथ और बंदी को।

आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात: अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे अल्लाह!हमारे दिलों को निफाक (पाखंड) से,हमारे अ़मलों को दिखावे से और हमारी निगाहों को कदाचार से पवित्र कर दे।

हे अल्लाह!हम तुझ से दुनिया व आखिरत की समस्त भलाई की दुआ़ मांगते हैं जो हम को ज्ञात है और जो ज्ञात नहीं,और तेरा शरण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत के समस्त पापों एवं कदाचारों से जो हम को ज्ञात हैं और ज्ञात नहीं हैं।

हे अल्लाह!हम तेरा शरण चाहते हैं तेरी उपकारों की समाप्ति से,तेरी सुख के हट जाने से,तेरी अचानक की यातना से और तेरी हर प्रकार की अप्रसन्नता से।

हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं,और वे कार्य एवं कथन भी जो स्वर्ग से निकट कर दे,औ हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कार्यों एवं कथनों से भी जो नरक से निकट करे।

हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भालई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

शीर्षक: नौवां भंजक:

(इस्लामी शरीअ़त से निकलने के जवाज़ का आस्था)

प्रथम उपदेश:

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात!

स्र्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोंह़म्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ (धर्म में) अविष्कार की गई बिदअ़तें (नवाचार) हैं,धर्म में अविष्कार की गई प्रत्येक चीज़ बिदअ़त (नवाचार) है,प्रत्येक बिदअ़त (नवाचार) गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाजी है।

इस्लामी शरीअ़त मनुष्य एवं जिन्न सब के लिए समान है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ल से डरो और उस का भय अपने ह्रदय में जीवित रखो,उस का आज्ञा मानो और उस के अवज्ञा से बचो,और जान लो कि इस्लामी शरीअ़त मनुष्य एवं जिन्न सब के लिए समान है,यहां तक कि क़यामत (प्रलय) स्थापित हो जाए,अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाया:

﴿قُلْ يَـٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنِّى رَسُولُ ٱللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا﴾ [سورة الأعراف:١٥٨]

अर्थात: (हे नबी!) आप लोगों से कह दें कि हे मानव जाति के लोगो!मैं तम सभी की ओर अल्लाह का रसूल हूँ।

लोगों में मनुष्य एवं जिन्न सब शामिल हैं।

और नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस है:मुझे पाँच चीज़ें ऐसी प्रदान की गई हैं जो मुझ से पूर्व किसी नबी को नहीं दी गईं,उन में आप ने यह भी बताया कि:पूर्व के नबी विशेष अपने समुदाय के लिए भेजे जाते थे,मगर मैं समस्त लोगों की ओर (नबी बना कर) भेजा गया हूँ।[1]

<u>अल्लाह तआ़ला ने सारे पैगंबरों से यह अनुबंध लिया कि यदि वह नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के युग को पाएंगे तो आप का अनुगमन करेंगे</u> और आप की शरीअ़त पर अ़मल करेंगे

ऐ मोमिनों के समूह!अल्लाह तआ़ला ने समस्त पैगंबरों से यह अनुबंध लिया है कि यह यदि वह नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का युग पाएंगे तो आप की शरीअ़त का अनुगमन करेंगे और आप की सहायता करेंगे,अल्लाह तआ़ला ने फरमाया:

﴿ وَإِذْ أَخَذَ ٱللَّهُ مِيثَٰقَ ٱلنَّبِيِّـۧنَ لَمَآ ءَاتَيْتُكُم مِّن كِتَٰبٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُولٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِۦ وَلَتَنصُرُنَّهُۥ ۚ قَالَ ءَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلَىٰ ذَٰلِكُمْ إِصْرِى ۖ قَالُوٓا۟ أَقْرَرْنَا ۚ قَالَ فَٱشْهَدُوا۟ وَأَنَا۠ مَعَكُم مِّنَ ٱلشَّٰهِدِينَ ﴿٨١﴾ فَمَن تَوَلَّىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْفَٰسِقُونَ ﴿٨٢﴾ أَفَغَيْرَ دِينِ ٱللَّهِ يَبْغُونَ وَلَهُۥٓ أَسْلَمَ مَن فِى ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾ ﴾ [سورة آل عمران: ٨١-٨٣]

[1] इस ह़दीस को बोखारी (३३५) और मुस्लिम (५२१) ने रिवायत किया है और इस अध्याय में अबूहोरैरह रज़ीअल्लाहु अंहु से भी ह़दीस वर्णित है जिसे मुस्लिम(५२३) ने वर्णन किया है।

अर्थात: तथा (याद करो) जब अल्लाह ने नबियों से वचन लिया कि जब भी मैं तुम्हें कोई पुस्तक और प्रबोध (तत्वदर्शिता) दूँ,फिर तुम्हारे पास कोई रसूल उसे प्रमाणित करते हूये आये,जो तुम्हारे पास है,तो तुम अवश्य उस पद ईमान लाना,और उस का समर्थन करना,(अल्लाह) ने कहा: क्या तुम ने स्वीकार किया,तथा इस पर मेरे वचन का भार उठाया?तो सब ने कहा:हम ने स्वीकार कर लिया,अल्लाह ने कह तुम साक्षी रहो,और मैं भी तुम्हारे साथ साक्षियों में हूँ।फिर जिस ने इस के पश्चात मूँह फेर लिया,तो वही अवैज्ञाकारी है।तो क्या वह अल्लाह के धर्म (इस्लाम) के सिवा (कोई दूसरा धर्म) खोज रहे हैं?जब कि जो आकाशों तथा धरती में है,स्वेच्छा तथा अनिच्छा उसी के आज्ञाकारी हैं,तथा सब उसी की ओर फेरे जायेंगे।

नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब ऊ़मर रज़ीअल्लाहु अंहु के हाथ में अहले किताब (यहूद व ईसाई) के सह़ीफों (आकाशीय ग्रंथ) के कुछ पृष्ठ देखे तो क्रोधित हो गए और फरमाया:क़सम है उस हस्ती की जिस के हाथ में मेरा प्राण है,यदि मूसा भी जीवित होते तो उन को भी मेरा ही अनुगमन करना पड़ता।[1]

सह़ी ह़दीस में सिद्ध है कि ईसा बिन मरयम जब अंतिम युग में अवतरित होंगे तो इस्लामी शरीअ़त का अनुगमन करेंगे और उसी के आलोक में निर्णय करेंगे।[2]

---

[1] इस ह़दीस को अह़मद (३/३८७) ने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी रज़ीअल्लाहु अंहुमा से वर्णित किया है और अल्बानी ने "إرواء الغليل" (६/३४) में इस ह़दीस को ह़सन कहा है।

[2] मसीह़ के अवतरित एवं उनका दज्जाल की हत्या की कहानी सह़ी मुस्लिम (२८९७) में अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है,इसी प्रकार से (१५६) जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी रज़ीअल्लाहु अंहुमा से भी वर्णित है,तथा (२९३७) नवास बिन समआ़न अलकिलाबी रज़ीअल्लाहु अंहु से भी वर्णित है।

इस्लामी शरीअ़त अपने पूर्व के समस्त शरीअ़तों को निरस्त करने वाली शरीअ़त है

अल्लाह के बंदो!इस्लामी शरीअ़त अपने पूर्व के समस्त शरीअ़तों को निरस्त करने वाली शरीअ़त है,अर्थात इस्लामी शरीअ़त से पूर्व की शरीअ़तों में जो भी अह़काम थे,उन सब को निरस्त करने वाली है,सिवाए उन हुकमों के जो क़ुरान में नाज़िल हुए,अल्लाह तआ़ला ने फरमाया:

﴿وَأَنزَلْنَآ إِلَيْكَ ٱلْكِتَٰبَ بِٱلْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ ٱلْكِتَٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ﴾ [سورة المائدة:٤٨]

अर्थात: और (हे नबी!) हम ने आप की ओर सत्य पर आधारित पुस्तक (क़ुरान) उतार दी, जो अपने पूर्व की पुस्तकों को सच बताने वाली संरक्षक है।

अर्थात:ऐ रसूल!हम ने आ की ओर क़ुरान अवतरित फरमाया,इस में जो कुछ भी है वह सत्य है,जो अपने पूर्व की पुस्तकों की पुष्टि पर साक्ष्य है,और इस बात पर भी साक्ष्य है कि वे समस्त पुस्तकें अल्लाह की ओर से अवतरित हैं,उन पुस्तकों में जो आदेश हैं,उन की पुष्टि करता है,उन में जो विकृति हुई है,उस को स्पष्ट करता है,और उन के कुछ आदेशों को निरस्त करता है।

इस्लामी शरीअ़त क़्यामत तक स्थापित रहेगी

अल्लाह के बंदो!इस्लामी शरीअ़त आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने से लेकर क़्यामत तक रहेगी,पूव की शरीअ़तों के विपरीत,क्योंकि वह अस्थायी हुआ करती थी और जब उस के पश्चात आने वाली शरीअ़त

प्रकट होती तो वह निरस्त हो जाती और इसी प्रकार से यह श्रृंखला चलता रहता।

निष्कर्ष यह कि इस्लाम के द्वारा समस्त शरीअ़तों का,मोह़म्म्द सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा समस्त पैगंबरों का और क़ुरान के द्वारा समस्म पुस्तकों का श्रृंखला समाप्त कर दिया गया

निष्कर्ष यह कि इस्लाम के द्वारा समस्त शरीअ़तों का,मोह़म्म्द सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा समस्त पैगंबरों का और क़ुरान के द्वारा समस्म पुस्तकों का श्रृंखला समाप्त कर दिया गया।

इस्लामी शरीअ़त से निकलने के जवाज़ (वैधता) का आस्था रखना इस्लाम भंजकों में से है

अल्लाह के बंदो!उपरोक्त प्रमाणों के आधार पर यह स्पष्ट हो गया कि इस्लाम में प्रवेश होना और उस का अनुसरण करना इस्लाम धर्म के स्पष्ट मामलों में से है,किसी मनुष्य के लिए इस से अनजान रहने की गुंजाइश नहीं,अत: जो व्यक्ति यह आस्था रखे कि इस्लामी शरीअ़त से निकलने के गुंजाइश है तो वह काफिर है,यद्यपि वह नमाज़ पढ़ता हो और रोज़ा रखता हो और मुसलमान होने का दावा ही क्यों न करता हो,अत: जो व्यक्ति यह कहे कि मनुष्य के लिए यहूदियत,अथवा ईसाइयत अथवा अन्य धर्म के अनुसार अल्लाह की पूजा करना जाएज़ (मान्य) है तो उस ने अल्लाह के साथ कुफ्र किया,अल्लाह का शरण।क्योंकि उस ने अल्लाह के आदेश का उल्लंघन किया और क़ुरानी सूचना को नकारा,इस भंजक का प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿وَمَن يَبۡتَغِ غَيۡرَ ٱلۡإِسۡلَٰمِ دِينٗا فَلَن يُقۡبَلَ مِنۡهُ وَهُوَ فِي ٱلۡأٓخِرَةِ مِنَ ٱلۡخَٰسِرِينَ ٨٥﴾ [سورة آل عمران:٨٥]

अर्थात: और जो भी इस्लाम के सिवा (किसी और धर्म) को चाहेगा तो उसे उस से कदापि स्वीकार नहीं किया जाएगा और वह परलोक में क्षतिग्रस्तों में होगा।

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया रह़िमहुल्लाह फरमाते हैं:मोह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब मसस्त मनुष्य एवं जिन्न,अ़रब व अ़जम,निकट एवं दूर,राजा व फकीर और ज़ाहिद (धर्मनिष्ठ) व गैर ज़ाहिद की केवल अल्लाह के भेजे हुए रसूल (सलल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैं,बल्कि आप सब से अंतिम नबी हैं,और जो पुस्तक आप पर अवतरित हुई वह समस्त पूर्व की पुस्तकों की पुष्टि करने वाली और उन की रक्षक है

अत: जो व्यक्ति यह आस्था रखे कि किसी भी जीव (मनुष्य एव जिन्न) के लिए आप का अनुसरण और आज्ञा और जिस पुस्तक व नीति के साथ आप भेजे गए,उस के अनुगमन से निकलने का अधिकार है तो वह काफिर है।[1]संक्षेप के साथ आप का कथन समाप्त हुआ।

आप रह़िमहुल्लाह अधिक लिखते हैं:यदि यह आस्था रखे कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के अतिरिक्त किसी और का मार्ग आप के मार्ग से अधिक पूर्ण है,और किसी वली (अल्लाह के मित्र) के लिए शरीअ़ते मोह़म्मदिया से निकलने की गुंजाइश है,तो वह काफिर है,तौबा कराने के पश्चात भी यदि वह अपने कथन पर जमा रहे तो उस की हत्या करना अनिवार्य है।संक्षेप के साथ मनकूल।[2]

---

[1] देखें:"مجموع الفتاوى" (२७/५९)।

[2] देखें:"مجموع الفتاوى" (२७/५८-५९) अधिक देखें:"مجموع الفتاوى" (११/४०१) और उसके पश्चात

कुछ ऐसे पंथों का उल्लेख जो विचलन का शिकार हुए और उस भंजक से ग्रस्त हुए

अल्लाह के बंदो!कुछ सूफी पंथों का यह आस्था है कि किसी के लिए इस्लामी शरीअ़त से निकलने की गुंजाइश है,ये वे पंथ हैं जिन्हें शैतान ने गुमराह कर दिया अत: वह अपने कुछ बड़ी हस्तियों के प्रति यह आस्था रखने लगे कि-बज़ामे खेश-यदि वह मारफत बिल्लाह के एक निश्चित स्तर तक पहुंच जाएं तो उन के लिए नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुगमन को छोड़ना जाएज़ (वैध) है।नि:संदेह उन का यह कथन असत्य एवं निराधार है,क्योंकि पैगंबरजन समस्त जीवों से अधिक अल्लाह से अवगत थे,उस के पश्चात सह़ाबा,किन्तु उस के बावजूद वे अपने रब की पूजा करते रहे यहां तक कि उन की मृत्यु हो गई,उन में से किसी ने कभी भी फर्ज़ों को नहीं छोड़ा,न अवैध को वैध किया,बल्कि उन में से कुछ की मृत्यु रुकू में हुई,अथवा सजदा करते हुए,अथवा रोज़ा रखते हुए,अथवा स्मरण एवं क़ुरान का सस्वप पाठ करते हुए,वे अल्लाह से शुभ समाप्ति की प्रार्थना किया करते थे,ये उसी दुआ़ का परिणाम है,हम भी अल्लाह से शुभ समाप्ति की दुआ़ करते हैं।

उन के कथन के असत्य होने का एक प्रमाण अल्लाह का यह फरमान है:

﴿وَٱعۡبُدۡ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأۡتِيَكَ ٱلۡيَقِينُ ۝٩٩﴾ [سورة الحجر:٩٩]

अर्थात: और अपने पालनहार की इबादत (वंदना) करते रहें,यहाँ तक कि आप के पास विश्वास आ जाये।

इस आयत में يقين का आशय मृत्यु है,मोफस्सेरीन (व्याख्याताओं) ने इस की यही तफसीर (व्याख्या) बयान की है।

रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के समस्त अगले पिछले पाप क्षमा कर दिए गए थे,उस के बावजूद आप ने अल्लाह के आदेशों पर अ़मल करना नहीं छोड़ा,बल्कि आप अधिक से अधिक प्रार्थनाओं एवं वंदनाओं में व्यस्त रहते,आप समस्त लोगों से अधिक मुत्तकी (धर्मनिष्ठ) और पुजारी थे,आप से कहा जाता तो आप फरमाते:क्या में अल्लाह का आभारी बंदा न बन जाऊं।[1]

अल्लाह के बंदो!यह बात भी ध्यान देने की है कि इस भंजक में वे लोग भी शामिल हैं जो कहते हैं कि: (शरीअ़त प्राचीन काल के लिये उपयुक्त है,आधुनिक युग के लिए शरीअ़त अनुचित नहीं है,क्योंकि ऐसे मामले और नई नई चीज़ें आचुकी हैं जिन पर शरीअ़त चर्चा नहीं करती)।इस का मतलब यह है कि उन के अनुसार शरीअ़त में कमी व अपूर्णता पाई जाती है,जो कि एक निराधार बात है,क्योंकि इस्लामी शरीअ़त प्रत्येक युग एवं स्थान के लिए उचित एवं उपयोगी है,यहां तक कि क़्यामत स्थापित हो जाए,इस में न कोई नुक्स है,न कमी और न गलती,इस लिए कि वह उस पालनहार की ओर से अवतरित है **जो तत्वज्ञ है,अपने जीवों के हितों से अवगत और उस पर कृपालु एवं दयालु है।अल्लाह तआ़ला ने इस्लामी शरीअ़त को पूर्णता प्रदान किया है,फरमाया:**

﴿ٱلۡيَوۡمَ أَكۡمَلۡتُ لَكُمۡ دِينَكُمۡ وَأَتۡمَمۡتُ عَلَيۡكُمۡ نِعۡمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ ٱلۡإِسۡلَٰمَ دِينٗاۚ﴾ [سورة المائدة:٣]

[1] देखें: सही बोखारी (११३०) और सही मुस्लिम (२८१९) वर्णनकर्ता मोग़ीरा बिन शोबा रज़ीअल्लाहु अंहु

अर्थात: आज मैं ने तुम्हारे धर्म तुम्हारे लिये परिपूर्ण कर दिया है तथा तुम पर अपना पुरस्कार पूरा कर दिया,और तुम्हारे लिये इस्लाम को धर्म स्वरूप स्वीकार कर लिया है।

इस्लाम के पूर्णता का एक दृश्य यह भी है कि वह प्रत्येक युग एवं स्थान के लिए उचित एवं उपयुक्त है,जो व्यक्ति इस्लाम पर अधूरा होने का आरोप लगाता है वह वास्तव में इस्लामी शरीअ़त को लागू करने वाले पालनहार (अल्लाह) पर नुक्स का आरोप लगाता है,अल्लाह तआ़ला इस से विरक्त व उच्च है,इसी प्रकार से जो व्यक्ति शरीअ़त पर नुक्स का तोहमत लगाता है वह उपरोक्त आयत के अर्थ पर ईमान नहीं रखता,क्योंकि आयत कहती है कि शरीअ़त पूर्ण है और वह कहता है कि शरीअ़त अपूर्ण है,इस लिए वह काफिर है,अल्लाह का शरण।[1]

अल्लाह के बंदो!इस्लामी शरीअ़त के अनिवार्य होने की अनिवार्यता और उस से निकलने की वैधता को स्पष्ट करने के लिए यह एक लाभदायक प्राक्कथन है।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुरान की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को उस की आयतों और नीतियों पर आधारित परामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

---

[1] यह शैख सालिह़ बिन फौज़ान अलफौज़ान का कथन है जिसका उन्होंने "شرح نواقض الإسلام" पृष्ठ संख्या १८३ में उल्लेख किया है,प्रकाशक:مكتبة الرشد रियाज़

द्वितीय उपदेश:

कुछ आदेशों पर ईमान लाना और कुछ का इंकार करना भी इस्लामी शरीअ़त से निकलने में शामिल है

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!आप अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाएं और जान लें कि कुरान के कुछ आदेशों पर ईमान लाना और कुछ का इंकार करना,अथवा कुछ रसूलों पर ईमान लाना और कुछ का इंकार करना,इस्लामी शरीअ़त से निकलने के जैसा है।यद्यपि ऐसा करने वाला इस भ्रम में रहे कि वह पूरी शरीअ़त से नहीं निकला है,क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने पुस्तकों को अवतरित किया है और रसूलों को भेजा है ताकि लोग अपने दिलों से इन समस्त पर ईमान लाएं,अत: जिस ने उन में से किसी भी पुस्तक अथवा रसूल का इंकार किया उस ने कुफ्र किया,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

﴿ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَكۡفُرُونَ بِٱللَّهِ وَرُسُلِهِۦ وَيُرِيدُونَ أَن يُفَرِّقُواْ بَيۡنَ ٱللَّهِ وَرُسُلِهِۦ وَيَقُولُونَ نُؤۡمِنُ بِبَعۡضٖ وَنَكۡفُرُ بِبَعۡضٖ وَيُرِيدُونَ أَن يَتَّخِذُواْ بَيۡنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا ١٥٠ أُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡكَٰفِرُونَ حَقّٗاۚ وَأَعۡتَدۡنَا لِلۡكَٰفِرِينَ عَذَابٗا مُّهِينٗا ١٥١ ﴾ [سورة النساء: ١٥٠-١٥١]

अर्थात: जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों के साथ कुफ्र (अविश्वास) करते हैं,और चाहते हैं कि अल्लाह तथा उस के रसलों के बीच अन्तर करें,तथा कहते हैं कि हम कुछ पर ईमान रखते हैं,तथा कुछ के साथ कुफ्र करते हैं,और इस के बीच राह बनाना चाहते हैं।वही शुद्ध काफिर हैं,और हम ने काफिरों के लिये अपमानकारी यातना तय्यार कर रखी है।

अल्लाह के बंदो!इस में वह व्यक्ति भी शामिल है जो यह कहता है कि मैं क़ुरान पर ईमान लाता हूं किन्तु ह़दीस पर नहीं,यह इस्लाम भंजकों में से है,क्योंकि दानों वह्य (प्रकाशन) का इंकार करे अथवा एक का,दोनों ही स्थिति में वह काफिर है,अथवा यह कहे कि वह क़ुरान पर ईमान लाता है किन्तु उस में जो सह़ाबा के न्याय एव आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नियों की विशुद्धता का उल्लेख किया गया है उस पर ईमान नहीं रखता,अथवा धर्मनिरपेक्षों की यह बोली बोले कि धर्म को जीवन के समस्त भागों से अलग करना अनिवार्य है,और यह कहे कि लोगों के लिए राजनीति एवं मामलों में धर्म से निकलने की गुंजाइश है,केवल पाँच सयम की नमाज़ ही प्रयाप्त हैं,तो यह भी कुछ आदेशों पर अ़मल करने और कुछ का इंकार करने का रूप है,अत: जो व्यक्ति ऐसा आस्था रखता है उस का ईमान समाप्त हो जाता है और इस्लाम से निकल जाता है,अल्लाह का शरण।यद्यपि वह नमाज़ व रोज़ा का पालन करता हो और मुसलमान होने का दावा ही क्यों न करता हो,क्योंकि उस का आस्था इस्लामी शरीअ़त के विरुद्ध और अल्लाह की शत्रुता पर आधारित है,यद्यपि वह अपनी ज़बान से इसको स्पष्ट न करता हो,क्योंकि उस आस्था को देखा जाता है जो हृदय में होता है।

अज्ञानता व अभिमान एवं अहंकार दो ऐसे रोग हैं जिन्होंने उन दोनों पंथों को इस आस्था में डाल दिया कि

इस्लामी शरीअ़त से निकलना जाएज़ है

अल्लाह के बंदो!उन सूफियों और धर्मनिरपेक्षों को इस भ्रामक आस्था में जिस चीज़ ने डाला है वह अथवा अज्ञानता व अनभिज्ञता है अथवा

अभिमान एवं अहंकार है, अज्ञानता का इलाज ज्ञान एवं शिक्षा है और अभिमान एवं अहंकार का ईलाज अल्लाह की महानता को याद करना और यह भाव पैदा करना है कि मनुष्य को एक दिन अल्लाह के समक्ष उपस्थित होना है और इस्लामी शरीअ़त से मूँह फेरने पर अल्लाह उस का हिसाब लेने वाला है।

आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात:अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे अल्लाह!हमारे दिलों को निफाक (पाखंड) से,हमारे अ़मलों को दिखावे से और हमारी निगाहों को कदाचार से पवित्र कर दे।

हे अल्लाह!हम तुझ से दुनिया व आखिरत की समस्त भलाई की दुआ़ मांगते हैं जो हम को ज्ञात है और जो ज्ञात नहीं,और तेरा शरण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत के समस्त पापों एवं कदाचारों से जो हम को ज्ञात हैं और ज्ञात नहीं हैं।

हे अल्लाह!हम तेरा शरण चाहते हैं तेरी उपकारों की समाप्ति से,तेरी सुख के हट जाने से,तेरी अचानक की यातना से और तेरी हर प्रकार की अप्रसन्नता से।

हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं,और वे कार्य एवं कथन भी जो स्वर्ग से निकट कर दे,औ हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कार्यों एवं कथनों से भी जो नरक से निकट करे।

हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भालई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

शीर्षक: दसवां भंजक:

(इस्लाम धर्म से मुँह फेरना,न उस का ज्ञाप प्राप्त करना और न उस पर अ़मल करना)

प्रथ्रम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात!

स्र्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोंहम्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ (धर्म में) अविष्कार की गई बिदअ़तें (नवाचार) हैं,धर्म में अविष्कार की गई प्रत्येक चीज़ बिदअ़त (नवाचार) है,प्रत्येक बिदअ़त (नवाचार) गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाजी है।

इस्लामी शरीअ़त का अनुगमन करना अनिवार्य है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाओ और उस का भय सवैद अपने हृदय मी जीवित रखो,उस का आज्ञा मानो और उस के अवज्ञा से बचो,और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुगमन का आदेश पवित्र क़ुरान में ३३ स्थानों पर दिया है,[1]उदाहरण स्वरूप अल्लाह का यह कथन:

---

[1] शैखुल इस्लाम रह़िमहुल्लाह फरमाते हैं:अल्लाह ने तीस से अधिक स्थानों पर क़ुरान में अपने रसूल के अनुगमन का आदेश दिया है,आप के अनुगमन को अपने अनुगमन के साथ बयान किया

﴿وَمَآ ءَاتَىٰكُمُ ٱلرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَىٰكُمْ عَنْهُ فَٱنتَهُوا۟ۚ﴾ [سورة الحشر:٧]

अर्थात: और जो प्रदान कर दें रसूल,तुम उसे ले लो और रोक दें तूम को जिस से तो तुम रुक जाओ।

तथा फरमाया:

﴿قُلْ أَطِيعُوا۟ ٱللَّهَ وَٱلرَّسُولَ ۖ فَإِن تَوَلَّوْا۟ فَإِنَّ ٱللَّهَ لَا يُحِبُّ ٱلْكَـٰفِرِينَ ﴿٣٢﴾﴾ [سورة آل عمران:٣٢]

अर्थात: हे नबी!कह दो: अल्लाह और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करो,फिर भी यदि वह विमुख हों तो निस्संदेह अल्लाह काफिरों से प्रेम नहीं करता।

अधिक फरमाया:

﴿يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ أَطِيعُوا۟ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥ وَلَا تَوَلَّوْا۟ عَنْهُ وَأَنتُمْ تَسْمَعُونَ ﴿٢٠﴾﴾ [سورة الأنفال:٢٠]

अर्थात: हे ईमान वालो!अल्लाह के आज्ञाकारी रहो तथा उस के रसूल के।और उस से मुँह न फेरो जब कि तुम सुन रहे हो।

अल्लाह ने अधिक फरमाया:

﴿يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ أَطِيعُوا۟ ٱللَّهَ وَأَطِيعُوا۟ ٱلرَّسُولَ وَأُو۟لِى ٱلْأَمْرِ مِنكُمْ ۖ﴾ [سورة النساء:٥٩]

अर्थात: हे ईमान वालो!अल्लाह की आज्ञा का अनुपालन करो,और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करो,तथा अपने शासकों की आज्ञापालन करो।

है,आप के विरोध को अपने अवज्ञा के साथ बयान किया है,इसी प्रकार आप के नाम को अपने नाम के साथ बयान किया है,अत: जहां अल्लाह का ज़िक्र होता है वहां आप का भी ज़िक्र होता है।"مجموع الفتاوى" (१९/१०३),इसी प्रकार से आजुरी ने "الشريعة" पृष्ठ संख्या:४९ में इस बात का उल्ल‍ोख किया है।

इसी प्रकार से अनेक ह़दीसें आई हैं जो आप की आज्ञा एवं अनुगमन करने,और आप के मार्ग पर चलने और आप के आदेश एवं निषेध का आदर करने पर प्रोत्साहित करती हैं,उदाहरण स्वरूप अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु की यह ह़दीस कि अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:मेरी उम्मत के सारे लोग स्वर्ग में प्रवेश करेंगे किन्तु जो इंकार करेगा।सह़ाबा ने पूछा:अल्लाह के रसूल!वह कौन है जो इंकार करेगा?आप ने फरमाया:जिस ने मेरी आज्ञा की वह स्वर्ग में प्रवेश करेगा और जिस ने मेरी अवज्ञा की तो उस ने नि:संदेह इंकार किया।[1]

आप रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:जिस ने मेरा अनुगमन किया उस ने अल्लाह का अनुसरण किया और जिस ने मेरा अवज्ञा किया उस ने अल्लाह का अवज्ञा किया।[2]

तथा आप रज़ीअल्लाहु अंहु अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से वर्णित करते हैं कि आप ने फरमाया:जब मैं तुम्हें किसी चीज़ के रोकूं तो रुक जाओ और जब मैं तुम्हें किसी चीज़ के करने का आज्ञा दूं तो अपनी शक्ति अनुसार उसका पालन करो।[3]

अबूसईद खुदरी रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:शपथ है उस हस्ती की जिस के हाथ में मेरा प्राण है,तुम सब के सब स्वर्ग में अवश्य प्रवेश करोगे सिवाए उस के जिस ने इंकार किया और अल्लाह के अनुसरण से उसी प्रकार मुँह फेरा जिस

[1] सह़ी बोखारी (७२८०)

[2] सह़ी बोखारी (७१३७) सह़ी मुस्लिम (१८३५)

[3] सह़ी बोखारी (७२८८) सह़ी मुस्लिम (१३३७)

प्रकार से ऊंट (अपने स्वामी से मुँह फेर कर) बिदक जाता है,सहाबा ने पूछा:ऐ अल्लाह के रसूल!स्वर्ग में प्रवेश होने से कौन इंकार कर सकता है? आप ने फरमाया:जिस ने मेरी अनुसरण किया वह स्वर्ग में प्रवेश होगा और जिस ने मेरी अवज्ञा की उस ने इंकार किया।[1]

अल्लाह के धर्म से मुँह फेरने का परिचय एवं यह स्पष्टीकरण कि वह इस्लाम भंजकों में से है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह और उस के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञा का विपरीत है इस्लाम धर्म से मुँह फेरना,न इसे सीखना और न उस पर अमल करना,और धर्म के उन सिद्धांत को सीखने और उस पर अमल करने से मोकल्लफ/बाध्य (धर्मिक रूप से उत्तरदायी) बंदा को रोकना जिन के बिना इस्लाम सही नहीं होता।अपने कान और दिल के द्वारा इस्लाम धर्म से मुँह मोड़ना,न उस की पुष्टि करना,न उसे झुठलाना,न उस से शत्रुता रखना और शत्रुता दिखाना,और न उस की शिक्षाओं पर कान धरना।[2]जैसे ईमान के स्तंभों और उस के संबंधित चीज़ों को सीखना,और उन वंदनाओं का तरीका जानना जो अल्लाह पर ईमान लाने से अनिवार्य हो जाते हैं,जैसे नमाज़,ज़कात,और अल्लाह व रसूल का प्रेम आदि,तो यह

---

[1] इस हदीस को इब्ने माजा (१/१९६-१९७) ने हदीस संख्या (१७) के अंतर्गत रिवायत किया है,इस के वर्णनकर्ता मुस्लिम के वर्णनकर्ता हैं,इस हदीस के कुछ शवाहिद भी हैं जो उसे सशक्त करते हैं जैसे अबूहोरैरा की उपरोक्त हदीस और अबूहोरैरा की वह हदीस जिसे अहमद (२/३६१) आदि ने रिवायत किया है,इसकी सनद शैखैन की शर्त पर है जैसा कि हफिज़ ने में हदीस संख्या (७२८०) के विवरण में उल्लेख किया है,उपरोक्त हदीस पर शैख शेऐब की टिप्पणी संक्षेप में वर्णित है।

[2] यह इब्नुल क़य्यिम का क़थन है जो "مدارج السالكين" (१/३३८) में वर्णित है।

इस्लाम भंजकों में से है।अल्लाह तआ़ला हमें इस से सुरक्षित रखे,इस का प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن ذُكِّرَ بِـَٔايَٰتِ رَبِّهِۦ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَآ ۚ إِنَّا مِنَ ٱلْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾﴾ [سورة السجدة:٢٢]

अर्थात: और उस से अधिक अत्याचारी कौन है जिसे शिक्षा दी जाये उस के पालनहार की आयतों द्वारा,फिर विमुख हो जाये उन से?वास्तव में हम अपराधियों से बदला लेने वाले हैं।

अर्थात उस व्यक्ति से बड़ा अत्याचारी कोई नहीं जो अल्लाह की आयतों से मुँह फेर ले,अल्लाह ने उसे अत्याचारी का नाम दिया है,अत: जो व्यक्ति अपने शरीर के अंगों से कोई अ़मल नहीं करता,केवल ज़बान से शहादतैन (لا إله إلا الله محمد رسول الله) को स्वीकारने पर बस करता है,तो वह काफिर है,उसे विद्धान (विशेष अ़मल को छोड़ने वाले) का नाम देते हैं,कुछ लोग उसे धर्म से अप्रसन्न कहते हैं,वास्तविकता यही है कि शरीअ़त से मुँह फेरने वाले का दिल दूषित होता है,क्योंकि यदि उस के दिल में ईमान की सौजन्य होती तो उस के शरीर के अंग अ़मल करते,इस लिए कि दिल राजा है और शरीर के अंग उस के सेना हैं,जो उसका अवज्ञा नहीं करते,किन्तु जब दिल ही दूषित हो जाए तो शरीर के अंग भी बेकार हो जाते हैं,हम अल्लाह से सुख की दुआ़ करते हैं।[1]

अल्लाह के धर्म से मुँह फेरने का अत्यधिक निवारण

[1] देखें: "مجموع الفتاوى" (७/२०४ और उस के पश्चात) उन्होंने इस अध्याय में पूर्व के ईमामों के वर्णनों का उल्लेख किया है।

अल्लाह के बंदो!अनेक आयतों में अल्लाह के धर्म से मुँह फेरने से रोका गया है,अल्लाह का फरमान है:

﴿وَمَنْ أَعْرَضَ عَن ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُۥ مَعِيشَةً ضَنكًا وَنَحْشُرُهُۥ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ أَعْمَىٰ ﴿١٢٤﴾﴾ [سورة طه:١٢٤]

अर्थात: तथा जो मुख फेर लेगा मेरे स्मरण से,तो उसी का संसारिक जीवन संकीर्ण (तंग) होगा,तथा हम उसे उठायेंगे प्रलय के दिन अन्धा कर के।

तथा अल्लाह ने अधिक फरमाया:

﴿وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن ذُكِّرَ بِـَٔايَٰتِ رَبِّهِۦ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَآ ۚ إِنَّا مِنَ ٱلْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾﴾ [سورة السجدة:٢٢]

अर्थात: और उस से अधिक अत्याचारी कौन है जिसे शिक्षा दी जाये उस के पालनहार की आयतों द्वारा,फिर विमुख हो जाये उन से?वास्तव में हम अपराधियों से बदला लेने वाले हैं।

अल्लाह अधिक फरमाता है:

﴿وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن ذُكِّرَ بِـَٔايَٰتِ رَبِّهِۦ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ ۚ﴾ [سورة الكهف:٥٧]

अर्थात: और उस से बड़ा अत्याचीरी कौन है जिसे उस के पालनहार की आयतें सुनाई जायें फिर (भी) उन से मुँह फेर ले और अपने पहले किये हुये कर्तूत भूल जाये?

अल्लाह ने फरमाया: (इस से बड़ा अत्याचारी कौन है) का अर्थ है:कोई व्यक्ति इससे बड़ा अत्याचारी नहीं है।

अल्लाह का फरमान है:

﴿فَإِنْ أَعْرَضُوا۟ فَقُلْ أَنذَرْتُكُمْ صَٰعِقَةً مِّثْلَ صَٰعِقَةِ عَادٍ وَثَمُودَ ﴿١٣﴾﴾ [سورة فصلت:١٣]

अर्थात: फिर भी यदि वह विमुख हों तो आप कह दें कि मैं ने तुम्हें सावधान कर दिया कड़ी यातना से जो आद तथा समूद की कड़ी यातना जैसी होगी।

अधिक फरमाया:

﴿وَمَن يُعۡرِضۡ عَن ذِكۡرِ رَبِّهِۦ يَسۡلُكۡهُ عَذَابٗا صَعَدٗا ﴾ [سورة الجن:١٧]

अर्थात: और जो विमुख होगा अपने पालनहार की स्मरण (याद) से,तो उसे उस का पालनहार ग्रस्त करेगा कड़ी यातना में।

अर्थात:सख्त दुष्कर,कष्टदायक और त्रासिक यातना देगा।

तथा अल्लाह अधिक फरमाता है:

﴿قُلۡ أَطِيعُواْ ٱللَّهَ وَٱلرَّسُولَۖ فَإِن تَوَلَّوۡاْ فَإِنَّ ٱللَّهَ لَا يُحِبُّ ٱلۡكَٰفِرِينَ ٣٢﴾ [سورة آل عمران:٣٢]

अर्थात: हे नबी!कह दो: अल्लाह और रसूल की आज्ञा का अनुपालन करो,फिर भी यदि वह विमुख हों तो निस्संदेह अल्लाह काफिरों से प्रेम नहीं करता।

अल्लाह के धर्म से मुँह फेरने वाले की बुद्धि और विचार पर शैतान प्रभावी होता है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह के धर्म से मुँह फेरने के कारण शैतान मुनुष्य का हृदय एवं विचार पर प्रभावी हो जाता है,अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿ وَمَن يَعۡشُ عَن ذِكۡرِ ٱلرَّحۡمَٰنِ نُقَيِّضۡ لَهُۥ شَيۡطَٰنٗا فَهُوَ لَهُۥ قَرِينٞ ٣٦ وَإِنَّهُمۡ لَيَصُدُّونَهُمۡ عَنِ ٱلسَّبِيلِ وَيَحۡسَبُونَ أَنَّهُم مُّهۡتَدُونَ ٣٧ ﴾ [سورة الزخرف: ٣٦-٣٧]

अर्थात: और जो व्यक्ति अत्यंत कृपाशील (अल्लाह) के स्मरण से अँधा हो जाता है तो हम उस पर एक शैतान नियुक्त कर देते हैं जो उस का साथी

हो जाता है।और वह (शैतान) उन को रोकते हैं सीधी राह से तथा वह समझते हैं कि वे सीधी राह पर हैं।

अल्लाह के धर्म से मुँह फेरना काफिरों एवं मोनाफिक़ों (द्विधावादियों) की विशेषता है

- अल्लाह के बंदो!नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाई हुई शरीअ़त से मुँह फेरना काफिरों एवं मोनाफिक़ों का गुण है,अल्लाह तआ़ला फरमाता है:

﴿وَٱلَّذِينَ كَفَرُواْ عَمَّآ أُنذِرُواْ مُعۡرِضُونَ﴾ [سورة الأحقاف:٣]

अर्थात: तथा जो काफिर हैं उन्हें जिस बात से सावधान किया जाता है वे उस से मुँह मोड़े हुए हैं।

प्रथम उपदेश की समाप्ति:

अल्लाह के बंदो!इस्लामी शरीअ़त के अनुसरण की अनिवार्यता और उससे मुँह फेरने की निवारण के विषय में एक लाभदायक प्रक्कथन है।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुरान की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को उस की आयतों और नीतियों पर आधारित परामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

द्वीतीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!आप अल्लाह का तक़्वा(धर्मनिष्ठा) अपनाएं और जान लें कि अल्लाह के धर्म का अनुसरण अनिवार्य है,उस का तरीका यह है कि उस का ज्ञान प्राप्त किया जाए और उस पर अ़मल किया जाए,मुसलमान को चाहिए कि इस्लाम धर्म के सिद्धांतों का ज्ञान प्राप्त करे और उन पर अ़मल करे,उन सिद्धांतों में इस्लाम के इस्लाम के पांच स्तंभ और ईमान के छे स्तंभ सूची के शीर्ष पर हैं,इस्लाम विरोधी गतिविधियों में पड़ने से सचेत रहे,जिन में इस्लाम के दस भंजक सूची के शीर्ष पर हैं,उस के पश्चात उन छोटे एवं बड़े पापों की श्रेणी आती है जिन से ईमान में कमी होती है,उन से भी सचेत रहे,क्योंकि यह पाप यद्यपि धर्म से बाहर नहीं करते किन्तु धर्म की संपूर्णता के विरुद्ध अवश्य हैं और मनुष्य को आखेरत की यातना का पात्र बना देते हैं।

इल्म एवं अ़मल का बदला व पुण्य

अल्लाह तआ़ला ने उस व्यकित से बड़ा बदला एवं पुण्य का वादा किया है जो शरीअ़त की ओर ध्यान मग्न होते,उसे सीखते और उस पर अ़मल करते हैं,ज्ञान की सदगूण नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस ह़दीस में आई है:जो व्यक्ति उस मार्ग पर चलता है जिस में ज्ञान प्राप्त करना चाहता है जो अल्लाह तआ़ला उस के द्वारा उस के लिए स्वर्ग का मार्ग आसान कर देता है,अल्लाह के घरों में से किसी घर में लोगों का कोई समूह प्रवेश नहीं करता,वे क़ुरान का सस्वर पाठ करते हैं और उसका पाठ करते हैं मगर उन पर सकीनत(संतुष्टि एवं हृदय की शांति)अवतरित होता

है और (अल्लाह का) कृपा उनको ढांप लेता है और देवदूत उन को अपने घेरे में ले लेते हैं और अल्लाह तआ़ला अपने समीपवर्तियों में जो उस के पास होते हैं उनका जिक्र करता है।[1]

रही बात अ़मल की सदगूण की तो अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:नि:संदेह अल्लाह तआ़ला का फरमान है:....मेरा बंदा जिन जिन इ़बादतों (वंदनाओं) के द्वारा मेरी निकटता प्राप्त करता है उन में से कोई इ़बादत मुझे इतनी पसंद नहीं जितनी वह इ़बादत पसंद है जो मैं ने उप पर फर्ज़ किया है।मेरा बंदा नफिल के द्वारा भी मुझ से एतना निकट हो जाता है कि मैं उससे प्रेम करने लग जाता हूं और जब मैं उससे प्रेम करने लगता हूं तो मैं उस का कान बन जाता हूं जिससे वह सुनता है,उस की आंख बन जाता हूं जिस से वह देखता है।उस का हाथ बन जाता हूं जिस से वह पकड़ता है और उस का पैर बन जाता हूं जिस से वह चलता है।यदि वह मुझ से मांगे तो मैं उस देता हूं।मैं किसी चीज़ में संदेह नहीं करता जिस को मैं करने वाला होता हूं,जो तरदुद मुझे का प्राण निकालते समय होता है,वह मृत्यु के कारण कष्ट पसंद नहीं करता मुझे भी उसे कष्ट देना अच्छा नहीं लगता है।[2]

द्वतीय उपेदश की समाप्ति

[1] इस ह़दीस को मुस्लिम (२६९९) ने अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

[2] सह़ी बोखारी (६५०२)

आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात: अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे अल्लाह!हमारे दिलों को निफाक (पाखंड) से,हमारे अ़मलों को दिखावे से और हमारी निगाहों को कदाचार से पवित्र कर दे।

हे अल्लाह!हम तुझ से शांतिपूर्वक जीवन,विस्तृत जीविका और सदाचार की दुआ़ करते हैं।

हे अल्लाह!हम तुझ से दुनिया व आखिरत की समस्त भलाई की दुआ़ मांगते हैं जो हम को ज्ञात है और जो ज्ञात नहीं,और तेरा शरण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत के समस्त पापों एवं कदाचारों से जो हम को ज्ञात हैं और ज्ञात नहीं हैं।

हे अल्लाह!हम तेरा शरण चाहते हैं तेरी उपकारों की समाप्ति से,तेरी सुख के हट जाने से,तेरी अचानक की यातना से और तेरी हर प्रकार की अप्रसन्नता से।

हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं,और वे कार्य एवं कथन भी जो स्वर्ग से निकट कर दे,औ हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कार्यों एवं कथनों से भी जो नरक से निकट करे।

हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भालई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

शीर्षक: इस्लामी शरीअत की उत्कृष्ट विशेषताएं – किस्त १

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्वोंत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार हैं,(धर्म में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है आर प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[1]

आदरणीय पाठक!अल्लाह तआ़ला ने एक महान उद्देश्य की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वयं ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शनकर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओं में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

धार्मिक दृष्टिकोण से यह बात निश्चित रूप से ज्ञात है कि आकाशीय शरीअ़तें अल्लाह की ओर से अवतरित हैं,अल्लाह तआ़ला ने प्रत्येक समुदाय में उनकी भाषा बोलने वाला एक रसूल भेजा,ताकि वह उन्हें शरीअ़त पहुंचाएं जो उनके लिए उचित हो,अल्लाह ने उन्हें बिना किसी शरीअ़त के यूं ही बेकार नहीं छोड़ा,अल्लाह का कथन है:

﴿وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ﴾ [سورة الرعد:٧]

---

[1]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

अर्थातःतथा प्रत्येक जाति को सीधी राह दिखाने वाले हैं।

और फरमायाः

﴿لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا﴾ [سورة المائدة:٤٨]

अर्थातःहम ने तुम में से प्रत्येक के लिये एक धर्म विधान तथा एक कार्य प्रणाली बना दिया था।

मनुष्यों से यह कहा गया है कि वे उन पैगंबरों का अनुगमन करें जिन्हें अल्लाह ने उनकी ओर भेजा,अल्लाह का कथन हैः

﴿وَمَا أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ ٱللَّهِ﴾ [سورة النساء:٦٤]

अर्थातः और हम ने जो भी रसूल भेजा वह इस लिये ताकि अल्लाह की अनुमति से उस की आज्ञा का पालन किया जाये।

अल्लाह तआ़ाला ने जो नियम एवं आदेश नाज़िल फरमाए,उनमें सबसे महान तौरैत,इन्जील और क़ुरान हैं,अतः बनी इसराईल से यह परामर्श लिया कि वे अपनी शरीअ़तों की रक्षा करें,किन्तु वे नहीं कर सके,बल्कि उनमें तह़रीफ(हेर फेर)की और उन्हें नष्ट कर दिया,किन्तु क़ुरान की रक्षा का दायित्व अल्लाह ने अपने ऊपर लिया,अल्लाह का फरमान हैः

﴿إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا ٱلذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُۥ لَحَٰفِظُونَ ۝٩﴾ [سورة الحجر:٩]

अर्थातःवास्तव में हम ने ही यह शिक्षा(क़ुर्आन)उतारी है,और हम ही उस के रक्षक हैं।

बंदो पर यह अल्लाह का कृपा ही है कि उस ने उनके लिए एक ऐसी शरीअ़त सुरक्षित रखी जिस के आलोक में वे क़यामत तक अल्लाह की पूजा करते रहेंगे।

समस्त शरीअतें एक अल्लाह की पूजा करने एवं शिर्क से दूर रहने की दावत देती हैं,अल्लाह का फरमान हैः

﴿وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِيٓ إِلَيْهِ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنَا۠ فَٱعْبُدُونِ ۝٢٥﴾ [سورة الأنبياء:٢٥]

अर्थातःऔर नहीं भेजा हम ने आप से पहले कोई भी रसूल परन्तु उस की ओर यही वहय(प्रकाशना)करते रहे कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है।अतः मेरी ही इबादत(वंदना)करो।

अल्लाह ने और फरमायाः

﴿وَلَقَدۡ بَعَثۡنَا فِي كُلِّ أُمَّةٖ رَّسُولًا أَنِ ٱعۡبُدُواْ ٱللَّهَ وَٱجۡتَنِبُواْ ٱلطَّٰغُوتَ﴾ [سورة النحل:٣٦]

अर्थातःऔर हम ने प्रत्येक समुदाय में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत(वंदना)करो,और तागूत(असुर–अल्लाह के सिवा पूज्यों)से बचो।

शरीअ़तें आंशिक विष्यों में एक दूसरे से भिन्न हैं,किन्तु मूल सिद्धांतों में एक दूसरे से सहमत हैं,और वे सिद्धांत ये हैंःअल्लाह,उसके देवदूत,उसकी पुस्तकें,उसके रसूलों,क़यामत का दिन और तक़दीर के अच्छे और बुरे होने पे ईमान लाना।

अल्लाह की शरीअ़तें जिन चीजों में एक दूसरे से सहमत हैं,उनमें ये भी हैंःधर्म,सम्मान,जान व माल और बुद्धि की रक्षा।

उपरोक्त मुखबंध के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों लक्षों एवं उद्देश्यों को समझने के लिए यह एक लाभदायक प्राक्कथन है,जो व्यक्ति इस प्राक्कथन को समझले,उसके लिए अल्लाह की उसकी नीतिको समझना आसान हो जाएगा जिस के लिए अल्लाह ने शरीअ़तों को नाजिल फरमाया है।

इस्लामी शरीअ़त की उत्कृष्ट विशेषताएं

अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा पैगंबरों का श्रृंखला,क़ुरान मजीद के द्वारा पुस्तकों का श्रृंखला और इस्लामी शरीअ़त के द्वारा शरीअ़तों का श्रृंखला समाप्त किया,अल्लाह तआ़ला ने इस्लामी शरीअ़त को अनेक विशेष गुणवक्ताओं से चित्रित फरमाया है,निम्न में अल्लाह की तौफीक़ से उन विशेषताओं पर प्रकाश डाला जा रहा हैः

1.प्रथम विशेषता यह है कि इस्लाम एक एलाही व रब्बानी शरीअ़त है,जबकि इसके अतिरिक्त जितनी भी शरीअ़तें और जीवन प्रणाली आज प्रचलित हैं,वे उन असली एवं अंतर्वेशित शरीअ़तों के विकृत रूप हैं,जो तौही़द की ओर बोलाती हैं,अतःइसाई धर्म में विकृति आगई जिस के कारण वे मसीह को अपना परमेश्वर मानने लगे और सलीब की पूजा करने लगे,यहूदी कुछ नबुवतों

का इंकार करने लगे और ओज़ेर की पूजा करने लगे,ये समस्त शरीअ़तें मनुष्य द्वारा निर्माणित हैं,जिन के अन्दर मूर्ति पूजा पाई जाती है,

रही बात हिन्दू धर्म एवं बुद्धधर्म की तो उनके अनुयायी पत्थरों की पूजा करते हैं,राफज़ी क़ब्रों की पूजा करते हैं,उनका इस्लाम से दूर का भी संबंध नहीं,यद्यपि वे स्वयं को मुसलमान कहते फिरते हैं,किन्तु गंभीर्ता तो सत्यों का दिया जाता है नामों को नहीं।

2.इस्लामी शरीअ़त की विशेषता यह है कि वह गलती से मुक्त है,अल्लाह का कथन है:

﴿لَّا يَأْتِيهِ ٱلْبَٰطِلُ مِنۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِۦ ۖ تَنزِيلٌ مِّنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ﴿٤٢﴾﴾ [سورة فصلت:٤٢]

अर्थातःनहीं आ सकता झू ठइस के आगे से और न इस के पीछे से।उतरा है तत्वज्ञ प्रशंसित(अल्लाह)की ओर से।

तथा अल्लाह ने और फरमायाः

﴿وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا ۚ﴾ [سورة الأنعام:١١٥]

अर्थातःआप के पालनहार की बात सत्य तथा न्याय की है।

अतः कुरान अपनी सूचनाओं में सत्य और अपने आदेशों में न्यायी है।नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस हैः(...सर्वोत्तम बात अल्लाह की पुस्तक है और सर्वोत्तम मार्ग मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है)।[1]

3.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह तह़रीफ(हैर फैर)एवं परिवर्तण से सुरक्षित है,पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दीन में बिदअ़तें अविष्कार करने से मना करते हुए फरमायाः(नई नई बिदअ़तों व नवाचारों से अपने आप को बचाए रखना,निसंदेह हर नई बात बिदअ़त है और हर बिदअ़त गुमराही है)[2]।इस्लाम के इमामों ने हर काल में ह़दीस की पुस्तकों को ज़ईफ(प्रमाणीकरण की दृष्टिकोण से निर्बल ह़दीस)एवं मोजू(वह ह़दीस जिस

[1]इसे मुस्लिम(867)ने वर्णन किया है।

[2]इसे मुस्लिम(867)ने जाबिर रजोअल्लाहु अन्हु से वर्नण किया है

के वर्णनकताओं की श्रृंख्ला में कोई छूट बोलने वाला वर्णनकर्ता हो)वणर्नों से पवित्र करने के लिए बहुमूल्य सेवाएं प्रदान की हैं।

4.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह नष्ट होने से सुरक्षित है,कुरान की रक्षा के प्रति अल्लाह का फरमान है:

﴿إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا ٱلذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُۥ لَحَٰفِظُونَ ۝٩﴾ [سورة الحجر:٩]

अर्थातः वास्तव में हम ने ही यह शिक्षा(कुरान)उतारी है,और हम ही उस के रक्षक हैं।

काफिरों की षडयंत्रों,अनेक युद्धों और साजिशों के बावजूद ह़दीसे नबवी अब तक सुरक्षित हैं,जो पीढ़ी दर पीढ़ी और सदी से सदी हम तक चले आ रहे हैं।?

शरीअ़त को नष्ट होने से सुरक्षित रखने का एक उपाय यह है कि अल्लाह ने इस मिशन की पूर्ति के लिए अपनी मख्लूक में से ऐसे लोगों को प्रयोग किया जो इसे नष्ट होने से सुरक्षित रख सकें,उनका तात्पर्य वे विद्वान हैं जो पैगंबरों के उत्तराधिकारी हैं,इसी प्रकार ऐसे नेक शासक और धन व रोसूख वाले भी हैं जिन्हों ने अपनी शक्ति और धन को इस्लाम की सहायता के लिए लगा दिया,वह इस प्रकार कि ज्ञान का प्रचार प्रसार किया और इस मार्ग में(बिना हिसाब के)खर्च किया,अतः मोआ़विया रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः(मेरी उम्मत का एक समूह हमेशा अल्लाह के आदेश पर स्थिर रहेगा,जो व्यक्ति उनकी सहायता से दूर होगा,अथवा उनका विरोध करेगा वह अल्लाह के आदेश आने तक उनको हानि पहुंचा सकेगा और हमेशा लोगों पर प्रभावी(अथवा उनके सामने प्रबल रहेगा)।[1]

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों उद्देश्यों को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके मद्देनजर अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

[1]इसे बोखारी(3641)और मुस्लिम(1037)ने रिवायत किया है और उपरोक्त शब्द मुस्लिम के हैं।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि इसका शिक्षा स्पष्ट,अपारदर्शिता,रहस्य और भूल भुलैयों से पवित्र हैं,जबकि मानवीय शिक्षा में अवश्य ही यह कमी पाई जाती है,यही कारण है कि शरअ़ी शिक्षाओं को छोटा बडा,छात्र और देहाती भी समझ सकता है।

- इस्लामी शरीअ़त की यह पांच उत्कृष्ट विशेंषतांऐं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छिपी अल्लाह की नीति से भी अवगत हो जाएगा और हमारे युग के मोनाफिको़(पाखंडीयों)अर्थात धर्मनिरपेक्षता के समर्थकों की गुमराही भी अस्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों पर दोष लगाते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

- आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ۝٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थातःअल्लाह तआ़ला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।

- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बड़ा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा बाह्य।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين.

शीर्षक: इस्लामी शरीअत की उत्कृष्ट विशेषताएं – किस्त २

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार हैं,(धर्म में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[1]

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका सम्मान करो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसकी अवज्ञा से बचो,पुण्य के कार्य करने और पाप के कार्यों से दूर रहने में धैर्य से काम लो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने एक महान उद्देश्य की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वयं ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओ में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

हे मोमिनो!पूर्व उपदेश में हम ने इस्लामी शरीअ़त के पांच विशेंषताओं पर चर्चा किया था और आज उसो श्रृंख्ला को आगे बढ़ाते हैं:

6.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह अंधविश्वासों और निराधार बातों का खंडन करती और उनकी दोषपूर्णता स्पष्ट करती है,इन्ही

---

[1]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

अंधविश्वासों में से जादू भी है,जिस के द्वारा जादूगर अपनी मुराद की पूर्ति के लिए शैतानो की सहायता लेता है,और शैतान उस समय उसकी सहायता नहीं करता जब तक कि वह उसकी पूजा न करे।

जिन अंधविश्वासों से इस्लाम ने मना किया है,उन में पुराहिताई भी है,इसका तातपर्य गैब के ज्ञान का दावा करना और(पूछने वाले के)दिल की बात बताना है,यह दोनों–जादू एवं पुराहिताई–सख्त ह़राम है,बल्कि इनको अंजाम देना इस्लाम रोधक है,क्योंकि गैब का ज्ञान केवल अल्लाह को है,इस लिए कि वह अल्लाह की विशेषताओं में से है,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

﴿قُل لَّا يَعۡلَمُ مَن فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ ٱلۡغَيۡبَ إِلَّا ٱللَّهُۚ﴾ [سورة النمل:٦٥]

अर्थातःआप कह दें कि नहीं जानता है जो आकाशों तथा धरती में है परोक्ष को अल्लाह के सिवा।

अतः जिसने अपने लिए गैब के ज्ञान का दावा किया,उसने गैब के ज्ञान की विशेषता में अल्लाह के साथ साझेदारी का दावा किया और क़ुरान को झुटलाया।

7.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह पूर्ण है और जीवन के समस्त मामले उसमे हैं,चाहे श्रद्धा का मामला हो अथवा पूजा पाठ का,मामलात हों अथवा राजनीति,न्याय हो अथवा चरित्र।

- अतः आस्था के विष्य में आस्था के मूल सिद्धांतों पर प्रकाश डालती है,जो कि ये हैंःअल्लाह,उसके देवदूत,उसकी पुस्तकें,उसके रसूल,क़्यामत का दिन और तक़दीर के अच्छे और बुरे होने पर ईमान लाना।
  तथा पैगन्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने के तकाज़ों को भी बयान करती है,उनमें सबसे महत्वपूर्ण तक़ाजा आपकी पुष्टि और अनुगमन करना है।
- पूजा पाठ के विषय में इस्लामी शिक्षाओं, हृदय और शरीर के अंगों की पूजाओं की विस्तार विवरण सम्मिलित है।

  हृदय की प्रार्थनाओं का तात्पर्यःधैर्य,भय,आशा,विश्वास,तौबा और प्रेम इत्यादि हैं।जबकि शरीर के अंगों की पूजाओं मेंःपवित्रता,नमाज़,ज़कात,रोजा़,ह़ज,ज़िक्र,जेहाद और दावत शामिल हैं।

- मामलों के विषय में इस्लामी शिक्षाओं में समस्त महत्वपूर्ण विवरणों को सम्मिलित हैं,जैसेःखरीदना और बेचना,किराए पे कोई सामान देना,किसी को अपना वकील और प्रतिनिधि बनाना,कर्ज की पुष्टि करना,निकाह व तलाक और खैती आदि के आदेश।
- राजनीति के विषय में इस्लामी शिक्षाएं,राजा परजा के आपसो संबंधों के विवरणों को शामिल हैं,जैसे बैअ़त,आज्ञाकारी,परामर्श,दुआ,एकता और आपसी भाईचारा व सहानुभूति,इसी प्रकार युद्ध व शांति की स्थिति में गैर मुस्लिमों के साथ संबंध के विवरण भी मौजूद हैं,इस्लाम,शासक को न्याय पर स्थिर रहने,अल्लाह के कल्मा को बोलंद करने के लिए जिहाद करने,इस्लामी देशों की रक्षा करने और पांच मूलभूत आवश्यक्ताओं की रक्षा करने का आदेश देता है,इनका तात्पर्यःदीन,बुद्धि,प्राण व धन एवं सम्मान हैं।
- न्याय के विषय में इस्लामी शिक्षाएं,दंड के आदेशों,हुदूद व क़िसास(बदला लेना)दियत व ताजीरात(दंड)को सम्मिलित हैं,ताकि अधिकारों की रक्षा हो सके,शांति बनी रहे और दंगाइयों को दंगे से रोका जा सके।
- शिष्टाचार एवं व्ययहार के विषय में इस्लामी शिक्षाएं,परिवारिक,वैवाहिक,सामाजिक और प्रशिक्षण संबंधों के समस्त छोटे बड़े विवरणों पर प्रकाश डालती हैं,और सुंदर चरित्र से अलंकृत होने पर उतसाहित करती हैं,जिनमें माता पिता का आज्ञा,संबंध निभाना,जीभ की पवित्रता,नजर का रक्षा,गुप्तांगों की रक्षा,पर्दा करना और ह़या को अपनाना शीर्ष हैं,तथा इस्लामी शरीअ़त,तुछ व्यवहार और बुरे गुणों से मना करती है,भाईचारे और एकता पर प्रोत्साहित करती है,विरोध और गुटबंदी से रोकता है और लोगों को एक उम्मत बन कर रहने पर जोर देती है।

इसी समावेशिता के कारण इस्लाम धर्म मोकम्मल हुआ,अल्लाह तआ़ला ने सत्य फरमायाः

﴿ٱلْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ ٱلْإِسْلَٰمَ دِينًاۚ﴾ [سورة المائدة:٣]

अर्थातःआज मैं ने तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिये परिपूर्ण कर दिया है।तथा तुम पर अपना पुरस्कार पूरा कर दिया,और तुम्हारे लिये इस्लाम को धर्म स्वरूप स्वीकार कर लिया।

और रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस है:(हर वह चीज़ जो स्वर्ग से निकट और नरक से दूर करती है,उसे तुम्हारे समक्ष स्पष्ट कर दिया गया)।[1]

अबूज़र रज़ीअल्लाहु अंहु फरमाते है:हमें रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस स्थिति में छोड़ा कि कोई पक्षी भी अपने पर मारता है तो हमारे पास इसका ज्ञान होता है।[2]

8.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि मानव स्वभाव से मिलता जुलता है जिस में कोई परिवर्तन नहीं आती,और साथ ही वह आत्मा एवं शरीर की आवश्यक्ताओं को भी पूरा करती है,अल्लाह का कथन है:

﴿فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا ۚ فِطْرَتَ ٱللَّهِ ٱلَّتِى فَطَرَ ٱلنَّاسَ عَلَيْهَا ۚ لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ ٱللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ ٱلدِّينُ ٱلْقَيِّمُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝٣٠﴾ [سورة الروم:٣٠]

अर्थातःतो (हे नबी!)आप सीधी रखें अपना मुख इस धर्म की दिशा में एक ओर हो कर उस स्वभाव पर पैदा किया है अल्लाह ने मनुष्यों को जिस पर बदलना नहीं है अल्लाह के धर्म को,यही स्वभाविक धर्म है किन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

9.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह स्वस्थ दिमाग से मेल खाता है,यह कोई आश्चर्य की बात भी नहीं,(क्योंकि इस्लाम का आधार सही़ व लाभदायक आस्था,आत्मा और बुद्धि को उज्जवल कर देने वाले सुन्दर व्यवहार,स्थिति को सुधारने वाले कार्य,बहुमूल्य एवं आंशिक मामलों में प्रमाणों पर आधारित,मूर्तियों से दूर रहने,मख्लूक़ चाहे पुरूष हों अथवा महिला,उनसे दूर रहने,धर्म को अल्लाह के लिए विशेष करने और उन अंधविश्वासों व निराधार बातों से दूर रहने पर है जो चेतना एवं बुद्धि के विरुद्ध और विचारधारा को आश्चर्य करने वाली हैं,इस्लाम धर्म का आधार पूर्णतया शुचिता,प्रत्येक प्रकार की बुराई को दूर करने,न्याय करने,और हर संभव रूप

---

[1]इसे तबरानी ने"المعجم الكبير"(1647)में अबूज़र रज़ीअल्लाहु अंहु से रिवायत किया है,अल्बानी ने " السلسلة الصحيحة "(1803)में कहाःइसकी सनद सही़ और इसके समस्त वर्नणकर्ता विश्वसनीय हैं।

[2] इसे इब्ने हि़ब्बान ने अपनी" صحيح "(267 / 1)में और तबरानी ने " المعجم الكبير " (1647)में वर्णित किया है और अल्बानी ने "المعجم الكبير "(118)में और शोऐब अलअरनाऊत ने इसे सही़ कहा है,रहिमहुमुल्लाह।

से कूरता को दूर करने और संपूर्णता के भिन्न प्रकारों तक पहुंचने पर प्रोत्साहित करने पर है)।[1]

(अल्लाह और उसके रसूलों की बातों में कोई ऐसी चीज़ नहीं जो चेतना,वास्तव स्थिति और सही बुद्धि के विरुद्ध हो,और न ही अल्लाह व रसूल के आदेश में कोई ऐसी चीज़ है जो नीति और बंदों के हित के विरुद्ध हो,बल्कि यही आदेश अपने अनुयायियों को पूर्णता के सर्वोच्च श्रेणी तक पहुचाते हैं और कमी एवं हानि का सामना इस स्थिति में करना पड़ता है कि जब उनकी या उनमें से कुछ के पालन में कमी की जाती है)।[2]

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों उद्देश्यों को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके मद्देनजर अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

---

[1] यह इब्ने सईद रहीमहुल्लाहु का कथन है जो उन्होंने(الدرة المختصرة في محاسن الدين الإسلامي)पृष्ठ44–45में उल्लेख किया है,थोड़े हेर फेर के साथ,प्रकाशकः دار العاصمة –रियाज़

[2] यह इब्ने सादी रहीमहुल्लाहु का कथन है जो उन्होंने (الدلائل القرآنية في أن العلوم والأعمال النافعة العصرية داخلة في الدين الإسلامي) में उल्लेख किया है,थोड़े हेर फेर के साथ।

10.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह ब्रम्हांड में बुद्धि व चेतना के प्रयोग पर उकसाती है,अविश्कार पर उभारती है और ब्रम्हांड व जीवों में मोजूद

चिन्हों पर विचार करने की ओर बोलाती है,अल्लाह का कथन है:

﴿سَنُرِيهِمْ ءَايَٰتِنَا فِى ٱلْءَافَاقِ وَفِىٓ أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ ٱلْحَقُّ﴾ [سورة فصلت:٥٣]

अर्थातःहम शीघ्र ही दिखा देंगे उन को अपनी निशानियाफॅ संसार के किनारों में तथा स्वयं उन के भीतर।यहाँ तक कि खुल जायेगी उन के लिये यह बात कि यही सच्च है।

अल्लाह ने अधिक फरमायाः

﴿وَفِىٓ أَنفُسِكُمْ ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٢١﴾﴾ [سورة الذاريات:٢١]

अर्थातः तथा स्वयं तुम्हारे भीतर(भी)।फिर क्या तुम देखते नहीं?

ज्ञात हुआ कि इस्लामी शरीअ़त बुद्धि से मैल खाती है,टकराती नहीं है,वह ऐसे तथ्यों को प्रस्तुत करती है जिनके सामने बुद्धि आश्चर्यचकित अवश्य होती है,किन्तु उन्हें असंभव नहीं समझती,इस्लामी दुनिया संघ के अंतर्गत संचालित संस्था هيئة الإعجاز العلمي (वैज्ञानिक चमत्कार प्राधिकरण)ने कुरान व सुन्नत से निकले एजाज़(<u>चमत्कार)के</u> अनेक प्रमाण जमा कर दिए,चाहे यह भ्रूणविज्ञान से संबंधित एजाज़ हो अथवा खगोल से,अथवा चिकित्सा विज्ञान से हो या समुद्रि विज्ञान आदि से।एजाज़(चमत्कार)के इन प्रमाणों के सामने गैर मुस्लिम प्राकृतिक वैज्ञानिक गण आश्चर्यचकित रह गए,क्योंकि आज से चौदह सो वर्ष पूर्व कुरान व सुन्नत में इन अविष्कारों एवं अनवेषणों का उल्लेख असंभव है,हां यह कि वह अल्लाह की ओर से भेजी गइ वह्‌य हो,इस लिए कि उस युग में इन अविष्कारों के स्रोत लुप्त थे।यह ऐसी चीज है जिसके कारण अनेक प्राकृतिक वैज्ञानिकों ने इस्लाम को स्वीकार किया।

इस्लामी शरीअ़त की ये कुछ उत्कृष्ट विशेंषतांऐं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छिपी अल्लाह को नीति से भी अवगत हो जाएगा और हमारे युग के मोनाफिक़ों(पाखंडीयों)अर्थात धर्मनिरपेक्षता के

समर्थकों की गुमराही भी अस्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों पर दोष लगाते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

- आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थातःअल्लाह तआ़ला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बड़ा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा बाह्य।
- हे हमारे रब!हमे दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه

शीर्षक: इस्लामी शरीअत की उत्कृष्ट विशेषताएं – किस्त ३

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह को पुस्तक है,स्र्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार हैं,(धर्म में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[1]

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका सम्मान करो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसकी अवज्ञा से बचो,पुण्य के कार्य करने और पाप के कार्यों से दूर रहने में धैर्य से काम लो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने एक महान उद्देश्य की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वयं ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओ में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

हे मोमिनो!पूर्व उपदेश में हम ने इस्लामी शरीअ़त के कुछ विशेंषताओं पर चर्चा किया था और आज उसी श्रृंख्ला को आगे बढ़ाते हैं:

11.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि न्यायप्रिय गैर मुस्लिम जब इससे अवज्ञत होता है तो आश्चर्यचकित रह जाता है और उसे यह विश्वास हो जाता है कि वह अल्लाह की ओर से नाज़िल की गई है और यह कि समस्त मानव मिल कर भी इस जैसी सुंदर व उत्तम शरीअ़त नहीं प्रस्तुत कर सकते,यह गैर मुस्लिम की ओर से सत्य की साक्ष्य है,अल्लाह तआ़ला ने कुरान पाक के प्रति सत्य फरमाया:

---

[1]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

﴿ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِندِ غَيْرِ ٱللَّهِ لَوَجَدُوا۟ فِيهِ ٱخْتِلَٰفًا كَثِيرًا﴾ [سورة النساء:٨٢]

अर्थातः यदि वह अल्लाह के सिवा दूसरे की ओर से होता तो उस में बहुत सी प्रतिकूल(बे मेल)बातें पाते!

12.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि जो व्यक्ति इससे अवज्ञत हो जाता है कि वह अल्लाह की ओर से है और यह असंभव है कि वह मनुष्य की ओर से हो,तो उसके कारण वह इस्लाम में प्रवेश कर जाता है,ऐसे लोगों की संख्या अनगिनत है,चाहे काफिर देशों के लोग हों अथवा इस्लामी देशों में रहने वाले गैर मुस्लिम,चाहे शिक्षित लोग हों अथवा अनपढ़ वर्ग।

13.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह मुद्रास्फीति एवं अपस्फीति के मध्य एक उदारवादी धर्म है,अल्लाह ने फरमायाः

﴿وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَٰكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِّتَكُونُوا۟ شُهَدَآءَ عَلَى ٱلنَّاسِ وَيَكُونَ ٱلرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا﴾ [سورة البقرة:١٤٣]

अर्थातः और इसी प्रकार हम ने तुम्हें मध्यवर्ती उम्मत(समुदाय)बना दिया,ताकि तुम सब पर साक्षी बनो,और रसूल तुम पर साक्षी हों।

अतः इस्लाम की शिक्षाएं आस्था,प्रार्थनाएं,मामलात एवं चरित्र व व्यवहार के विषय में उदारवादी व मध्यम हैं।

14.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह आत्मा एवं शरीर की आवश्यक्ताओं के मध्य संतुलन बनाए रखने की ओर बोलाती है,अतः आध्यात्मिक एवं संसारिक जीवन के बीच कोई टकराव नहीं पाया जाता,क्योंकि शरीअ़त भिन्न प्रकार की दिली,शारीरिक एवं आध्यात्मिक प्रार्थानाओं के द्वारा आत्मा को पवित्र करने का न्योता देती है,जैसे तवक्कुल(विश्वास)भय,आशा,नमाज़,रोज़ा,ह़ज,ज़िर्क,पुण्य के कार्यों में धन खर्च करना और उन जैसी अन्य प्रार्थनाएं जो ईमान की शाखाओं में आते है और जिन की संख्या सत्तर से अधिक है।मानव जीवन शैली के विपरीत,जैसे भातिकवादी धर्मनिरपेक्षता जो आध्यात्मिक आवशयकताओं को बिल्कुल भुला देती और मनुष्य को केवल भौतिकवादी मखलूक़ बन कर रहने का न्योता देती है,जो केवल अपने भौतिक आवश्यकताओं के प्रति सोचे,चाहे उसके चलते उसे अपने माता पिता और परिवार से ही क्यों न हाथ धोना पड़े,यही कारण है कि धर्मनिरपेक्षता के मानने वालों के बीच परिवार व्यवस्था उजड़ गया और पुरुष एवं महिला का आपसी संबंध मित्रता मात्र तक सीमित हो कर रह गया।

भौतिकवादी धर्मनिरपेक्षता के विपरीत रहबानियत(मठवाद)का तरीका यह है कि वह शारीरिक आवश्यकता से दूर रहती है,वह इस प्रकार कि अपने अनुयायियों को विवाह

से दूर रहने की दावत देती है,और अल्लाह ने जिन चीजों को ह़लाल(वैध)कर रखा है उन में से कुछ को ह़राम(अवैध)बना देती है,जैसा कि आराधनालयों के मठवासियों में ऐसा पाया जाता है।

जहां तक इस्लाम की बात है तो वह मनुष्य की आध्यात्मिक एवं शारीरिक आवश्यकताओं को स्वीकरता और उनके बीच संतुलन बनाए रखने की दावत देता है,अतः वह भौतिकवाद में पड़ने,मठवाद एवं उग्रवाद अपनाने से रोकता है और संसार में दौड़ भाग करने और पुनर्वास में भाग लेने का आदेश देता है,इसो प्रकार बन्दा और उसके रब के मध्य संबंध को उत्तम बनाने का भी आदेश देता है,आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक सह़ाबी(साथी)स्वयं को पूजा पाठ में झोंके रहना चाहते थे तो आप ने उन से फरमायाः(तुम्हारी <u>आत्मा/प्राण</u> का भी तुम पर अधिकार है)।[1] जब कुछ सहाबा ने कहाःवे मांस नहीं खाते,कुछ ने कहाःमैं महिलाओं से विवाह नहीं करुंगा।तीसरे ने कहाःमैं रोज़ा रखुंगा और इफतार नहीं करुंगा।चौथे ने कहाःमैं रातों को क़्याम करुंगा और आराम नहीं करुंगा,तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन सबसे फरमायाः(मैं मांस भी खाता हूं,महिलाओं से निकाह़ भी करता हूं,रोज़े भी रखता हूं और इफतार भी करता हूं,नमाज़ भी पढ़ता हूं और आराम भी करता हूं,जिसने मेरी सुन्नत से रूची हटाली वह मुझ से नहीं)।[2]

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों उद्देश्यों को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके मद्देनजर अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

---

[1] इसे अह़मद(268/6)आदि ने आयशा रज़ीअल्लाहु अंहा से वर्नण किया है और "المسند" (26308)के शोधकर्ताओं ने इसे ह़सन कहा है।इस ह़दीस का मूल बोखारी मुस्लिम में अबू ह़ौज़ैफा रज़ीअल्लाहु अन्हं और अन्य सह़ाबा से वर्णित है।

[2] इसे बोखारी(5063)और इसी प्रकार मुस्लिम(1401)ने अनस बिन मालिक रज़ीअल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

15.अल्लाह के बंदो!अल्लाह से डरें और जान लें कि इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता उसकी शिक्षाओं का सुंदर एवं उत्तम होना है,अतः वह हर उस कार्य की ओर बोलाती है जिसकी सुंदरता उत्तम बुद्धि एवं उच्च स्वभाव से ज्ञात होता है और हर उस कार्य से रोकती है जिसका घृणा उत्तम बुद्धि एवं उच्च स्वभाव से ज्ञात होती है,अल्लाह ने फरमायाः

﴿وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ ٱللَّهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ﴾ [سورة المائدة:٥٠]

अर्थातःऔर अल्लाह से अच्छा निर्णय किस का हो सकता है,उन के लिये जो विश्वास रखते हैं?

अल्लाह ने अधिक फरमायाः

﴿ إِنَّ ٱللَّهَ يَأْمُرُ بِٱلْعَدْلِ وَٱلْإِحْسَٰنِ وَإِيتَآيِ ذِى ٱلْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ ٱلْفَحْشَآءِ وَٱلْمُنكَرِ وَٱلْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٩٠﴾ ﴾ [سورة النحل:٩٠]

अर्थातःवीस्तुतः अल्लाह तुम्हें न्याय तथा उपकार और समदीपवर्तियों को देने का आदेश दे रहा है।और निर्लज्जा तथा बुराई और विद्रोह से रोक रहा है।और तुम्हें सिखा रहा है ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।

शैख अ़ब्दुर्रह़मान बिन सादी रह़िमहुल्लाहु फरमाते हैंःशरीअ़त की शिक्षाएं,सुन्दर व्यवहार और बन्दों की हितों(का ध्यान रखने)का आदेश देती हैं,न्याय,कृपा,दयालुता और भलाई पर उकसाती हैं,कुता चरित्र हीनता से रोकती हैं,अतः पूर्णता की प्रत्येक वे विशेषताएं जिसे नबियों एवं रसूलों ने सही माना,उसे इस्लामी शरोअ़त ने भी सही माना और प्रत्येक वे दीनी व दुनयावी नीति जिसकी ओर पूर्व की शरीअ़तों ने बोलाया,इस्लामी ने भी उससे सहमती जताई,और हर बुराई व दंगे से रोका और दूर रहने पर प्रोत्साहित किया।[1]

इस्लामी शरीअ़त की यह कुछ उत्कृष्ट विशेंषतांऐं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छिपी अल्लाह की नीति से भी अवगत हो जाएगा और हमारे युग के मोनाफिक़ों(पाखंडीयों)अर्थात धर्मनिरपेक्षता के समर्थकों की गुमराही

---

[1] थोड़े हेर फेर के साथ (الدرة المختصرة في محاسن الدين الإسلامي) से लिया गया है,पृष्ठः15,प्रकाशकः دار العاصمة –रियाज

भी अस्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों पर दोष लगाते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

- आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थातःअल्लाह तआ़ला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बड़ा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा बाह्य।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه

शीर्षक: इस्लामी शरीअत की उत्कृष्ट विशेषताएं – किस्त ४

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्वोंत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार हैं, (धर्म में) अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[1]

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका सम्मान करो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसकी अवज्ञा से बचो,पुण्य के कार्य करने और पाप के कार्यो से दूर रहने में धैर्य से काम लो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने एक महान उद्देश्य की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वयं ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशषताओं में से है जो अपनी विशेषताओं में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

हे मोमिनो!पूर्व उपदेश में हम ने इस्लामी शरीअ़त के कुछ विशेंषताओं पर चर्चा किया था और आज उसी श्रृंख्ला को आगे बढ़ाते हैं:

[1]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

16.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह सारे पवित्र चीजों को ह़लाल(वैध)और सारे अस्वस्थ और गुणहीन चीज को ह़राम(अवैध)बतलाया है,अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी के गुण का उल्लेख करते हुए फरमायाः

﴿وَيُحِلُّ لَهُمُ ٱلطَّيِّبَٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيۡهِمُ ٱلۡخَبَٰٓئِثَ﴾ [سورة الأعراف:١٥٧]

अर्थातःऔर उन के लिये स्वच्छ चीजों को हलाल(वैध)तथा मलीन चीजों को हराम(अवैध)करेंगे।

17.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह मानवी(आंतरिक)पवित्रता की ओर बोलाती है,अतः इसकी शिक्षाओं से आत्मा एवं प्रणों का शुद्धीकरण होता और ह्रदयों की पवित्रता प्राप्त होती है,अल्लाह का कथन हैः

﴿هُوَ ٱلَّذِي بَعَثَ فِي ٱلۡأُمِّيِّـۧنَ رَسُولٗا مِّنۡهُمۡ يَتۡلُواْ عَلَيۡهِمۡ ءَايَٰتِهِۦ وَيُزَكِّيهِمۡ وَيُعَلِّمُهُمُ ٱلۡكِتَٰبَ وَٱلۡحِكۡمَةَ﴾ [سورة الجمعة:٢]

अर्थातःवही है जिस ने निरक्षरों में एक रसूल भेजा उन्हीं में से।जो पढ़ कर सुनाते हैं उन्हें अल्लाह की आयतों और पवित्र करते हैं उन को तथा शिक्षा देते हैं उन्हें पुस्तक(कुर्आन)तथा तत्वदर्शिता(सुन्नत)की।

उदाहरण स्वरूप नमाज़ ही को लेलें,इससे आत्मा को पवित्रता एवं शांति प्राप्त होती है,जैसा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः(ए बेलाल!नमाज़ की इक़ामत कहो,हमें उससे शांति पहुंचाओ)[1] अर्थात नमाज़ के द्वारा शांति पहुंचाओ,आप उनको अज़ान व इक़ामत का आदेश देते ताकि आप को शांति मिले।

ज़कात(दान) के द्वारा धन पवित्र होता,आत्मा को कंजूसी से पवित्रता प्राप्त होती है,इसके द्वारा अल्लाह की ओर से दिए गए नेमतों(आशीर्वादों)का आभार व्यक्त किया जाता है,और आभार, ह्रदय की पवित्रता का माध्यम है,ज़कात से फकीर व मिस्कीन की आवश्यक्ता पूरी होती है,फक़ीरों एवं धनो लोगों के बीच ईर्ष्या समाप्त होता है,इस प्रकार पूरा समाज पवित्र हो जाता है।रोज़ा(उपवास)से यह भाव पैदा होता है कि समस्त कार्यों को केवल

[1] इसे अबू दाऊद(4985)और अह़मद(364/5)ने वर्नण किया है और अल्बानी ने सही़ कहा है

अल्लाह के लिए ही किया जाए,अतः हृदय दिखावा से पाक हो जाता है,अधिक खाने पीने से आत्मा के अंदर जो अहंकार,घमंड जन्म ललेता है,रोज़ा के द्वारा उससे भी वह पवित्र हो जाता है।

ह़ज(तीर्थयात्रा)में सारे ह़ाजी एह़राम(वह वस्त्र जो तीर्थयात्री तीर्थयात्रा के समय पहनता है)पहनते हैं,जिसके द्वारा उनके अंदर से विलासिता का भावना समाप्त हो जाता है,ह़ज के पवित्र स्थानों में एक जैसे खड़े होते हैं,एक दूसरे से परिचित होते और आपसी भाईचारा पैदा होता है,एक जैसी आज्ञाकारिता के द्वारा अल्लाह की प्रार्थाना करते हैं,अतः उनके आत्मा का शुद्धिकरण होता है।

अल्लाह का ज़िक्र तो आत्माओं की पवित्रता का सबसे बड़ा मैदान है,अतः क़ुरान का सस्वर पाठ,सुबह शाम की पार्थनाएं और नमाज़ के पश्चात के अज़कार का नियमित रूप से पालन,आत्मा की पवित्रता व शुद्धिकरण के सर्वश्रेष्ठ कारण हैं।

इस्लाम का नैतिक व्यवस्था आत्माओं की शुद्धिकरण का सर्वश्रेष्ठ कारण है,जैसे माता पिता का आज्ञापालन,संबंधों को जोड़ना,परिवार और पड़ोसियों के साथ सुन्दर व्यवहार और दुर्बल व गरीबों की सहायता।

इस्लामी शिक्षाओं में आत्माओं की पवित्रता एवं शुद्धिकरण की जो विशेषताएं पाई जाती हैं,उनके कुछ उदाहरण थे जो आपके समक्ष प्रस्तुत किए गए।

18.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह शारीरिक पवित्रता का भो न्योता देती है,अतः शुक्रवार के दिन और जनाबत(संभोग अथवा शीघ्रपतन के कारण अपवित्र हो जाना)के पश्चात स्नान करने,वज़ू के लिए पवित्रता प्राप्त करने,(मूत्र एवं मल के उत्सर्जन के पश्चात)जल एवं पत्थर से पवित्रता प्राप्त करने,और फितरी(स्वाभाविक)सुन्नतों पर अ़मल करने का आदेश देती है,जैसे मूंछ कतरना,दाढ़ी छोड़ना,नाखून काटना,कांख के बाल उखाड़ना और जघन के नीचे के बाल साफ करना।[1]

19.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह आसानी पैदा करती और कठिनाई को दूर करती है,अल्लाह तआ़ला का कथन है:

[1] देखें:बोखारी(5889)और मुस्लिम(257)ने अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से जो ह़दीस वर्नण की है।

﴿يُرِيدُ ٱللَّهُ بِكُمُ ٱلْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ ٱلْعُسْرَ﴾ [سورة البقرة:١٨٥]

अर्थातःअल्लाह तुम्हारे लिये सुविधा चाहता है,तुगी(असुविधा)नहीं चाहता। अल्लाह ने यह भी फरमायाः

﴿فَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ مَا ٱسْتَطَعْتُمْ﴾ [سورة التغابن:١٦]

अर्थातः तो अल्लाह से डरते रहो जितना तुम से हो सके।

और फरमायाः

﴿لَا يُكَلِّفُ ٱللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا﴾ [سورة البقرة:٢٨٦]

अर्थातःअल्लाह किसी प्राणी पर उस की सकत से अधिक(दायित्व का)भार नहीं रखता।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस हैः(...जब मैं तुम्हें किसी चीज के पालन करने का आदेश दूं तो अपनी शक्ति के अनुसार उसका पालन करो)।[1]

20.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह एक सत्य धर्म है,नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस हैः(अल्लाह को सर्वाधिक वह धर्म पसन्द है जो सीधा और सत्य हो)[2]।खरीदने और बेचने में इस्लाम ने सत्य का आदेश दिया है,नबी सल्लल्लाहु हलैहि वसल्लम की ह़दीस हैः(अल्लाह तआ़ला ऐसे व्यक्ति पर कृपा करे जो बेचते समय और खरीदते समय और तकाज़ा करते समय उदारता एवं दयालुता से काम लेता है)[3]।अर्थात वह अपने कर्जों का तक़ाज़ा करते समय फक़ीर व मुहताज पर सख्ती नहीं

---

[1] इसे बोखारी(7288)और मुस्लिम(1337)ने अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्नण किया है।

[2] इसे बोखारी ने كتاب الإيمان ,अध्यायःالدين يسरमें तालीक़न(टिप्पणी के रूप में)वर्णित किया है,अह़मद ने अपनी मुस्नद(266/5)में अबू ओमामा रज़ीअल्लाहु अंहु से इन शब्दों के साथ रिवायत किया हैः(मैं सीधे और सत्य धर्म के साथ भेजा गया हूं)।

[3] इसे बोखारी(2076)ने जाबिर रज़ीअल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।

करता,बल्कि नरमी व दयालुता के साथ तकाजा करता है,और ग़रीब को मोहलत देता है,अल्लाह का कथन है:

﴿وَإِن كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ ۚ وَأَن تَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٨٠﴾﴾ [سورة البقرة:٢٨٠]

अर्थातःऔर यदि कोई असुविधा में हो तो उसे सुविधा तक अवसर दो।और अगर क्षमा कर दो(अर्थात दान कर दो)तो यह तम्हारे लिये अधिक अच्छा है,यदि तुम समक्षो तो।

इस्लाम की दयालुता ही है कि उस ने बुराई का बदला अच्छाई से देने पर प्रोत्साहित किया,अल्लाह का कथन है:

﴿ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ السَّيِّئَةَ﴾ [سورة المؤمنون:٩٦]

अर्थातःआप दूर करें (बुराई को) उस के द्वारा जो सर्वोत्तम हो।

इसी प्रकार इस्लाम ने कोध पर नियंत्रण रखने और अत्याचारी को क्षमा कर देने का आदेश दिया है:

﴿وَالْكَاظِمِينَ الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ﴾ [سورة آل عمران:١٣٤]

अर्थातःतथा कोध पी जाते,और लोगों के दोष क्षमा कर दिया करते हैं।

इस्लाम की दयालुता का एक पक्ष यह भी है कि उसने मोमिनों के साथ विनम्रता और विनयशीलता अपनाने पर प्रोत्साहित किया,अल्लाह का कथन है:

﴿وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢١٥﴾﴾ [سورة الشعراء:٢١٥]

अर्थातःऔर झुका दें अपना बाहु उसके लिये जो आप का अनुयायी हो ईमान वालों में से।

अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों की विशेषता का उल्लेख करते हुए फरमायाः

﴿أَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ﴾ [سورة المائدة:٥٤]

अर्थातःवह ईमान वालों के लिये कोमल होंगे।

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों उद्देश्यों को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके मद्देनजर अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

21.अल्लाह के बंदो!अल्लाह से डरें और जान लें कि इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह अनुकंपा के लिए प्रोत्साहित करती है,अतः अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम के प्रत्येक आदेश में दयालुता एवं अनुकंपा को अनिवार्य कर दिया है,यहां तक ज़बह़(वध)में भी,यही कारण है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़बह़ करते हुए अनुकंपा का ध्यान रखने का आदेश देते हुए फरमायाः(अल्लाह तआ़ला ने हर चीज में इह़सान(सुंदर व्यवहार करना)अनिवार्य किया है,अतः जब तुम हत्या करो[1]और जब ज़बह़ करो तो अच्छे से करो और जब तुम ज़बह़ करो तो अपनी छुरी को तेज़ कर लिया करो और ज़बीह़ा(शव)को(ज़बह़ करते समय)आराम पहुंचाओ)।[2]

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया रह़िमहुल्लाह फरमाते हैं:यह इस बात का प्रमाण है कि हर स्थिति में अनुकंपा और दयालुता अनिवार्य है,यहां तक कि रक्त

[1] तो अच्छे प्रकार से करो अर्थात शरई रूप से जो हत्या के योग्य हो,उसकी हत्या करो,जैसे हत्यारा और विदरोही,और यह काम शासक की ओर से किया जाए।

[2] इसे मुस्लिम(745)ने शद्दाद बिन औस रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

बहाते हुए भी चाहे मनुष्य का रक्त हो अथवा पशु का,अतः मनुष्य को चाहिए कि(क़िसास(दंड)ताज़ीर(धिग्दंड के रूप)में जब मनुष्य की हत्या करे तो इच्छे प्रकार से करे और पशु का रक्त बहाए तो अच्छे से बहाए[1]

इस्लाम धर्म में इह़सान(सुंदर व्यवहार)का उदाहरण यह भी है कि इसने मवेशियों के साथ नरमी करने पर उभारा है,अतः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह सूचना दी कि एक महिला क़्यामत के दिन नरक में केवल इस लिए जाएगी कि उसने एक बिल्ली को बांध कर रखा,न तो उसे खाना खिलाया और न ही उसे आज़ाद छोड़ा कि वह पृथ्वी के कीड़े मकोड़ों से अपना पेट भर सके।

मखलूक़ के प्रति अनुकंपा का सर्वोत्तम श्रेणी यह है कि माता पिता के साथ सुंदर व्यवहार किया जाए,शरीअ़त ने क़ुरान में छ स्थानों पर इस का आदेश दिया है और इसके विपरीत(माता पिता के अवज्ञा से)रोका है,उदाहरण स्वरूप अल्लाह तआ़ला का कथन देखें:

﴿۞ وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعۡبُدُوٓاْ إِلَّآ إِيَّاهُ وَبِٱلۡوَٰلِدَيۡنِ إِحۡسَٰنًاۚ﴾ [سورة الإسراء:٢٣]

अर्थातःऔर (हे मनुष्य!)तेरे पालनहार ने आदेश दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो,तथा माता पिता के साथ उपकार करो।

अल्लाह ने सामानय लोगों के साथ भी वार्ता में नरम धुन अपनाने का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿وَقُولُواْ لِلنَّاسِ حُسۡنٗا وَأَقِيمُواْ ٱلصَّلَوٰةَ﴾ [سورة البقرة:٨٣]

अर्थातःतथा लोगों से भली बात बोलोगे,तथा नमाज़ की स्थापना करोगे।

बल्कि इस्लाम ने उस क़ैदी के साथ भी सुंदर व्यवहार का आदेश दिया है जो मुसलमानों के विरूद्ध युद्ध में था किन्तु उन्के हाथों क़ैद हो गया,अल्लाह का फरमान है:

﴿وَيُطۡعِمُونَ ٱلطَّعَامَ عَلَىٰ حُبِّهِۦ مِسۡكِينٗا وَيَتِيمٗا وَأَسِيرًا ٨﴾ [سورة الإنسان:٨]

---

[1] الفتاوى الكبرى (5 / 549)

अर्थातःऔर भोजन कराते रहे उस(भोजन)को प्रेम करने के बावजूद,निर्धन तथा अनाथ और बंदी को।

इस्लामी शरीअ़त की यह कुछ उत्कृष्ट विशेंषतांऐं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छिपी अल्लाह की नीति से भी अवगत हो जाएगा और हमारे युग के मोनाफिक़ों(पाखंडीयों)अर्थात धर्मनिरपेक्षता के समर्थकों की गुमराही भी अस्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों पर दोष लगाते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

- आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थातःअल्लाह तआ़ला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बड़ा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठान वालों में से हो जाएंगे।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा बाह्य।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه

शीर्षक: इस्लामी शरीअत की उत्कृष्ट विशेषताएं – किस्त 5

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्र्वोत्तम मार्ग मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार हैं,(धर्म में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[1]

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका सम्मान करो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसकी अवज्ञा से बचो,पुण्य के कार्य करने और पाप के कार्यों से दूर रहने में धैर्य से काम लो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने एक महान उद्देश्य की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वयं ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओ में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

हे मोमिनो!पूर्व उपदेश में हम ने इस्लामी शरीअ़त के एकीस विशेंषताओं पर चर्चा किया था और आज उसो श्रृंख्ला को आगे बढ़ाते हैं:

22.इस्लामी शरीअ़त के एक विशेषता यह है कि वह भिन्न प्रकार के शिष्टाचार,चरित्र और सदाचारों की ओर बोलाती है,अतः उसने खाने पीन,वस्त्र पहनने,विवाह,यात्रा व उपस्थिति,दयालुओं व तुच्छ व्यवहार करने वालों के साथ,परिजनों,अजनबियों,पडोसी और दूर के परिजनों,राजा व प्रजा,कार्यकर्ताओं,पद धारकों,पत्नि व संतान,जीवित एवं मृत्यों के प्रति व्यवहार के चरित्र सिखाए,(मृत्यों से व्यवहार का तात्पर्य)स्नान कराना,इत्र लगाना,कफन पहनाना,दफन करना और दुआ़ देना है।इसी प्रकार शत्रु और मित्र और युद्ध व शांति की स्थिति में शत्रुता रखने वालों के साथ व्यवहार करने के भी शिष्टाचार बतलाए,निष्कर्ष यह कि व्यवहार से संबंधित जो भी शिष्टाचार हो सकते हैं,इस्लाम ने

---

[1]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

उन के लिए हमें प्रोत्साहित किया,तथा उन पर पुण्य भी रखा,और प्रत्येक प्रकार के अशिष्टता व असभ्यता से मना फरमाया।

23.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह वैश्विक धर्म है,जो समस्त लोगों के लिए अनुकूल और हर प्रकार के मनुष्यों के लिए उचित है,अल्लाह तआ़ला ने अपने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमायाः

﴿قُلْ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنِّى رَسُولُ ٱللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا﴾ [سورة الأعراف:١٥٨]

अर्थातःआप लोगों से कह दें कि हे मानव जाति के लोगो!मैं तुम सभी की ओर अल्लाह का रसूल हूं।

तथा पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः(...नबी विशेष कौ़म(समुदाय)की ओर भेजा जाता था और मुझे समस्त मानव के लिये भेजा गया है)[1]।

24.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह समय और काल के लिए उपयुक्त है,अतः इसकी एक भी शिक्षा मनुष्य की सांस्कृतिक उन्नति के विरूद्ध नहीं है,आठ शताबदियों तक समस्त संसार पर इस्लामी संस्कृति का प्रभुत्व था,जबकि अन्य सभ्यताओं की अभी नींव भी नहीं पड़ी थी,अल्लाह तआ़ला ने सत्य फरमायाः

﴿أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ ٱللَّطِيفُ ٱلْخَبِيرُ ﴿١٤﴾﴾ [سورة الملك:١٤]

अर्थातःक्या वह नहीं जानेगा जिस ने उत्पन्न किया?और वह सूक्ष्मदर्शक सर्व सूचित है।

अर्थातःवह ईमान वालों के लिये कोमल होंगे।

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों उद्देश्यों को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके मद्देनजर अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

---

[1] इसे बोखारी(335)और मुस्लिम(521)ने जाबिर रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्नण किया है।

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

25. अल्लाह के बंदो!अल्लाह से डरें और जान लें कि इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह पूर्व के समस्त धर्मो के गुणों को सम्मिलित है,और इसमें वे बोझ और दंड नहीं हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने पूर्व की शरीअ़तों के अनुयायियों पर उनके अवज्ञा के दंड के रूप में निर्धारित किया था,अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी की विशेषता का उल्लेख करते हुये फरमायाः

﴿وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَٱلْأَغْلَٰلَ ٱلَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ﴾ [سورة الأعراف:١٥٧]

अर्थातःऔर उन से उन के बोझ उतार देंगे,तथा उन बंधनों को खोल देंगे जिन में वे जकड़े हुये होंगे।

इस्लामी शरीअ़त की यह कुछ उत्कृष्ट विशेंषतांऐं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छिपी अल्लाह की नीति से भी अवगत हो जाएगा और हमारे युग के मोनाफिको़(पाखंडीयों)अर्थात धर्मनिरपेक्षता के समर्थकों की गुमराही भी अस्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों पर दोष लगाते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

- आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيْهِ وَسَلِّمُواْ تَسْلِيمًا ۝٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थातःअल्लाह तआ़ला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बड़ा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा ता निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।

- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा बाह्य।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه.

शीर्षक: इस्लामी शरीअत की उत्कृष्ट विशेषताएं – किस्त ६

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार हैं,(धर्म में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[1]

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका सम्मान करो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसकी अवज्ञा से बचो,पुण्य के कार्य करने और पाप के कार्यों से दूर रहने में धैर्य से काम लो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने एक महान उद्देश्य की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वयं ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओं में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

हे मोमिनो!पूर्व उपदेश में हम ने इस्लामी शरीअ़त के पचीस विशेंषताओं पर चर्चा किया था और आज उसी श्रृंख्ला को आगे बढ़ाते हैं:

26.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह भलाई व अच्छाई एवं सुधार का आदेश देती है और बुराई एवं दंगा से रोकती है,अल्लाह का फरमान है:

﴿وَتَعَاوَنُواْ عَلَى ٱلۡبِرِّ وَٱلتَّقۡوَىٰۖ وَلَا تَعَاوَنُواْ عَلَى ٱلۡإِثۡمِ وَٱلۡعُدۡوَٰنِۚ﴾ [سورة المائدة:٢]

---

[1]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

अर्थातःसदाचार तथा संयम में एक दूसरे की सहायता करो,तथा पाप और अत्याचार में एक दूसरे की सहायता न करो।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः(न हानि पहुंचाना है और न हानि उठाना है)[1] ।और फरमायाः(तुम में से कोई जब बुरी बात देखे तो चाहिए कि उसे अपने हाथ के द्वारा दूर करे,यदि इसकी शक्ति न हो तो अपनी जबान से और यदि इसकी भी शक्ति न हो तो अपने हृदय के द्वारा दूर करदे,यह ईमान का न्यूनतम श्रेणी है)[2]

27.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह अपने अनुयायियों को अधिक से अधिक शरीअ़त का ज्ञान प्राप्त करने का आदेश देती है,जिससे आत्मा को जीवन मिलती है, हृदयों का सूधार होता है,उस पर दुनिया व आखिरत के सौभाग्य प्राप्त होते हैं और समाज वैचारिक विचलन व विनाशकारी विचारों से सुरक्षित रहता है,अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्लल्लाहु हलैहि वसल्लम को आदेश दियाः

﴿وَقُل رَّبِّ زِدۡنِي عِلۡمٗا ١١٤﴾ [سورة طه:١١٤]

अर्थातःतथा प्रार्थना करें कि हे मेरे पालनहार!मुझे अधिक ज्ञान प्रदान कर।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस हैः(जिस व्यक्ति के साथ अल्लाह भलाई करना चाहता है तो उसे दीन की समझ प्रदान करता है)[3]

28.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह धरती को आबाद करने का आदेश देती है,अल्लाह तआ़ला का फरमान हैः

﴿هُوَ ٱلَّذِي جَعَلَ لَكُمُ ٱلۡأَرۡضَ ذَلُولٗا فَٱمۡشُواْ فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُواْ مِن رِّزۡقِهِۦۖ وَإِلَيۡهِ ٱلنُّشُورُ ١٥﴾ [سورة الملك:١٥]

अर्थातःवही है जिस ने बनाया है तुम्हारे लिये धरती को वशवर्ती,तो चलो फिरो उस के क्षेत्रों में तथा खाओ उस की प्रदान की हुई जीविका।और उसी की ओर तुम्हें फिर जीवित हो कर जाना है।

---

[1] इसे अह़मद(313/1)आदि ने इब्ने अ़ब्बास रज़ीअल्लाहु अन्हुमा से वर्नण किया है और "المسند" के शोधकर्ताओं ने इसे ह़सन कहा है,ह़दीस संख्या(2865)।
माजिद बिन सुलेमान अर्रसी

[2] इसे मुस्लिम(49)ने वर्नण किया है।

[3] इसे बोखारी(71)और मुस्लिम(1037)ने मोआ़विया बिन(पुत्र)अबी सुफयान रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्नण किया है।

तथा अल्लाह ने अधिक फरमायाः

﴿هُوَ أَنشَأَكُم مِّنَ ٱلۡأَرۡضِ وَٱسۡتَعۡمَرَكُمۡ فِيهَا﴾ [سورة هود:٦١]

अर्थातःउसी ने तुम को धरती से उत्पन्न किया और तुम को उस में बसा दिया।

अर्थात उस ने तुम्हें धरती पे पैदा किया और उसमें अपना उत्तराधिकारी बनाया,तुम पर आंतरिक एवं बाह्य उपकार किये,तुम्हें धरती पर शक्ति एवं प्रभुत्व प्रदान किया,तुम घर बनाते,पौधा उगाते,खेती करते और जिस चीज़ की चाहते हो बीज बोते हो और धरती से लाभान्वित होते हो।

29.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह अपने पूर्व की शरीअ़तों को निरस्त करने वाली है,अल्लाह तआ़ला का फरमान हैः

﴿وَأَنزَلۡنَآ إِلَيۡكَ ٱلۡكِتَٰبَ بِٱلۡحَقِّ مُصَدِّقٗا لِّمَا بَيۡنَ يَدَيۡهِ مِنَ ٱلۡكِتَٰبِ وَمُهَيۡمِنًا عَلَيۡهِۖ﴾ [سورة المائدة:٤٨]

अर्थातःऔर(हे नबी)हम ने आप की ओर सत्य पर आधारित पुस्तक(क़ुर्आन)उतार दी,जो अपने पूर्व की पुस्तकों को सच बताने वाली तथा संरक्षक है।

30.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह महिलो के अधिकार,उसके मान सम्मान,उसकी भावनाओं और आवश्यकताओं का ख्याल रखती है,अतः इस्लाम ने स्त्री के लिए जिन अधिकारों की जमानत दी है,उनकी संख्या अस्सी(80)से अधिक है,यही कारण है कि(इस्लाम की दृष्टी में)मुसलमान महिला एक सम्मानित अस्तित्व है,अपने पति,संतान और समाज के लिए वरदान है,जबकि पूर्व एवं पश्चिम में महिला का सख्त अपमान हो रहा है,चाहे वह कनया हो,अथवा माता हो अथवा बूढ़ी हो,यदि वह युवती होती है तो केवल आनंद सामर्गी का एक माध्यम मानी जाती है,यदि बूढ़ि होती है तो वुद्धाश्रम की अतिथि बन कर रहती है,उन स्त्रियों के बीच मनोवैज्ञानिक दवाओं,नशीला पदार्थ,गर्भपात और आत्महत्या का जो सामान्य परंपरा है,उसकी तो बात ही न करें![1]

31.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि इसके आदेश रब्बानी नीतियों पर आधारित है,चाहे उन आदेशों का संबंध प्रार्थनाओं से हो अथवा मामलों से,अथवा हुदूद(इस्लाम की ओर से निर्धारित सीमाएं)एवं क़ेसास(दंड)से,और चाहे हम उन

---

[1] लाभ के लिये देखें: «ثمانون مظهرا من مظاهر تكريم الإسلام للمرأة، وحفظ حقوقها، واحترام مشاعرها» ,लेखकःमाजिद बिन सोलेमान अर्रसी,यह पुस्तक इंटरनेट पर उपलब्ध है।

नीतियों से अवगत हों अथवा न हों,वह अपने कार्या एव कथनों में ह़कीम व बुद्धिमान है,और शरीअ़त और तक़दीर में ह़कीम व अवगत है।[1]

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों उद्देश्यों को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके मद्देनजर अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

32. अल्लाह के बंदो!अल्लाह से डरें और जान लें कि इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि इसकी भविष्वाणियां सत्य साबित होती हैं,अतः भविष्य की हर वह बात जिस की सूचना शरीअ़त ने दी,वह या तो घटित हो चुकी है यह घटित हो कर रहेगी,इसका एक उदाहरण यह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नजाशी की मृत्यु की सूचना उसी दिन दी जिस दिन उनकी मृत्यु हुई थी जब कि नजाशी ह़ब्शा में थे और आप नदीना में,उसके बाद आप ने उनकी गाएबाना नमाज़े जनाज़ा पढ़ी।[2]

सह़ी बोखारी में अनस से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मौता के युद्ध के लिये सेना की एक इकाई भेजा,उनका सेनापति ज़ैद बिन ह़ारसा को बनाया और उन्हें यह वसीयत की कि यदि ज़ैद शहीद हो जाएं तो जाफर उनके सेनापति होंगे,यदि जाफर शहीद हो जाएं तो अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा उनके सेना प्रमुख होंगे,इसी बीच कि सह़ाबा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मदीना में थे आप ने ज़ैद

---

[1] लाभ के लिये देखेंःइब्नुल क़य्यिम की पुस्तक "أسرار الشريعة من إعلام الموقعين" ,संग्रह एवं प्रबन्धःमोसाइद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्सलमान,प्रकाशकःدار المسير

[2] देखेंःसह़ी बोखारी(1245)और सह़ी मुस्लिम(951)रिवायतःअबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु।

की मृत्यु की सूचना दी,फिर जाफर की और उसके बाद इब्ने रवाहा की मृत्यु की सूचना दी।जबकि आप मदीना ही में थे।[1]

जब पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बदर युद्ध से पहले बदर स्थान पर ठहरे तो आप ने मुश्रिकों के कुछ सरदारों की हत्या का स्थान सुनिश्चित रूप से बतलाई,अतः अनस बिन मालिक उ़मर बिन खत्ताब से वर्णन करते हैं किःरसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दिन पहले हमें बदर(में हत्या होन)वालों के गिरने का स्थान दिखा रहे थे,आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमा रहे थेःइन्शा अल्लाह! कल अमुक की हत्या का स्थान यह होगा।तो ह़ज़रत उ़मर रज़ीअल्लाहु अन्हु ने कहाःउस हस्ती की शपथ जिस ने आप सल्लल्लाहु अलैहि सवल्लम को सत्य के साथ भेजा!वे लोग उन स्थानों क किनारों से थोड़ा भी इधर उधर नहीं मरे थे जिन को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निर्धारित किया था।[2]

इस्लामी शरीअ़त की यह कुछ उत्कृष्ट विशेंषतांऐं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छिपी अल्लाह की नीति से भी अवगत हो जाएगा और हमारे युग के मोनाफिको़(पाखंडीयों)अर्थात धर्मनिरपेक्षता के समर्थकों की गुमराही भी अस्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों पर दोष लगाते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

- आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थातःअल्लाह तआ़ला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बड़ा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।

---

[1] इसे बोखारी(1246)ने वर्नण किया है।
[2] इसे मुस्लिम(2873)ने वर्नण किया है।

- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा बाह्य।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه.

शीर्षक: इस्लामी शरीअत की उत्कृष्ट विशेषताएं – किस्त ७

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्र्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार हैं,(धर्म में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[1]

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका सम्मान करो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसकी अवज्ञा से बचो,पुण्य के कार्य करने और पाप के कार्यों से दूर रहने में धैर्य से काम लो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने एक महान उद्देश्य की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वयं ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओ में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

हे मोमिनो!पूर्व उपदेश में हम ने इस्लामी शरीअ़त के बत्तीस विशेंषताओं पर चर्चा किया था और आज उसी श्रृंख्ला को आगे बढ़ाते हैं:

33.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि जो व्यक्ति इस्लाम में प्रवेश करता है,यदि उसके पास बुद्धि हो तो अपने धर्म से नाराज व ऊब कर उससे नहीं फिरता,इस्लामी इतिहास में ऐसा कभी नहीं हुआ,क्योंकि यह बात गुजर चुकी है कि इस्लामी शिक्षाएं बुद्धि एवं स्वभाव से मिलती जुलती हैं,वे मनुष्य की आध्यात्मिक एवं शारीरिक प्रत्येक प्रकार की आवशयक्ताओं की पूर्ति करती हैं,अल्ह़मदोलिल्लाह तर्क सिद्ध हो गया और मार्ग उज्जवल हो गया।

34.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि जो व्यक्ति इसे चुनैती दे,यह उस पर प्रभावी हो जाती है,यही कारण है कि कोई व्यक्ति क़ुरान की किसी एक आयत अथवा

---

[1]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की किसी एक ह़दीस को गलत सिद्ध नहीं कर सका,न ही कोई व्यक्ति कुरानी आयतों जैसी कोई एक आयत ही प्रस्तुत कर सका,कोई भी व्यक्ति ऐसी शिक्षाएं प्रस्तुत नहीं कर सकता जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं से निकटता एवं सादृश्य रखती हो,अल्लाह ने सत्य फरमायाः

﴿أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ ٱلْقُرْءَانَ ۚ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِندِ غَيْرِ ٱللَّهِ لَوَجَدُوا۟ فِيهِ ٱخْتِلَٰفًا كَثِيرًا ﴿٨٢﴾﴾ [سورة النساء:٨٢]

अर्थातःयदि वह अल्लाह के सिवा दूसरे की ओर से होता तो उस में बहुत सी प्रतिकूल(बे मेल)बातें पाते।

35.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह अपने अनुयायियों के बीच न्याय करता है,अतःइस्लामी शिक्षाएं इस बात को सिद्ध करती हैं कि समस्त मानव एक ही पुरूष एवं स्त्री(आदम व हव्वा)से पैदा हुए हैं।वह एक तराजू जो समस्त मानव के लिए मानक है वह तक़्वा(ईश्वर भक्ति)है,न कि रंग,अथवा समाजी अथवा भौतिकवादी स्थिति,अल्लाह तआ़ला ने फरमायाः

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَٰكُم مِّن ذَكَرٍ وَأُنثَىٰ وَجَعَلْنَٰكُمْ شُعُوبًا وَقَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوٓا۟ ۚ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ ٱللَّهِ أَتْقَىٰكُمْ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿١٣﴾﴾ [سورة الحجرات:١٣]

अर्थातःहे मनुष्यो!हम ने तुम्हें पैदा किया है एक नर–नारी से।तथा बना दी हैं तुम्हारी जातियाँ तथा प्रजातियाँ ताकि एक दूसरे को पहचानो।वास्तव में तुम में अल्लाह के समीप सब से अधिक आदरणीय वही है जो तुम में अल्लाह से सब से अधिक डरता हो।वास्तव में अल्लाह सब जानने वाला सब से सूचित है।

36.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि इसके मानने वालों को ही सहायता मिलती है,अल्लाह का कथन हैः

﴿إِنَّا لَنَنصُرُ رُسُلَنَا وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ فِى ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ ٱلْأَشْهَٰدُ ﴿٥١﴾﴾ [سورة غافر:٥١]

अर्थातःनिश्चय हम सहायता करेंगे अपने रसूलों की तथा उन की जो ईमान लोयें,संसारिक जीवन में,तथा जिस दिन साक्षी खड़े होंगे।

37.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि वह क़्यामत तक बाकी रहने वाली है,अतःमोआ़विया रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः(मेरी उम्मत(समुदाय)में स्वेद एक समूह ऐसा होगा जो अल्लाह की शरीअ़त को लागू रखेगा,उन्हें अपमान अथवा उनके विरोद्ध करने वाले उन्हें कोई हानि नहीं

पहुंचा सकेंगी यहां तक कि अल्लाह का आदेश आजाएगा और वे हमेशा लोगों पर प्रभावी रहेंगे)[1]।

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों उद्देश्यों को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके मद्देनजर अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

38. अल्लाह के बंदो!अल्लाह से डरें और जान लें कि इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि इसके अनुयायी समस्त क़ौमों से अच्छे हैं,अल्लाह का कथन हैः

﴿كُنتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ﴾ [سورة آل عمران: ١١٠]

अर्थातःतुम सबसे अच्छी उम्मत हो,जिसे सब लोगों के लिये उत्पन्न किया गया है कि तुम भलाई का आदेश देते हो,तथा बुराई से रोकते हो,और अल्लाह पर ईमान(विश्वास)रखते हो।

बहज़ बिन ह़कीम عن ابیہ عن جدہ की सनद से वर्णित है कि उन्हों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआ़ला के कथनः ﴿كُنتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ﴾ की व्याख्या

[1] इसका संदर्भ गुजर चुका है।

करते हुए सुनाः(तुम सत्तर उम्मतों का अनुपूरण हो,तुम अल्लाह के निकट उन सबसे अच्छा और सबसे अधिक सम्मानित हो)[1]।

इस्लामी शरीअ़त की यह कुछ उत्कृष्ट विशेंषतांऐं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छिपी अल्लाह की नीति से भी अवगत हो जाएगा और हमारे युग के मोनाफिक़ों(पाखंडीयों)अर्थात धर्मनिरपेक्षता के समर्थकों की गुमराही भी अस्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों पर दोष लगाते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।

- आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थातःअल्लाह तआ़ला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बड़ा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा बाह्य।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर आर आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين. اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه.

---

[1] इस ह़दीस को तिरमिज़ी(3001),इब्ने माजा(4288),अह़मद(3/5)और बैहक़ी(5/9)ने वर्नण किया है और"अलमुस्नद"के शोधकर्ताओं और अल्बानी ने इसे ह़सन कहा है।

शीर्षक: इस्लामी शरीअत की उत्कृष्ट विशेषताएं – किस्त ८

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंषाओं के पश्चात!

सबसे सत्य बात अल्लाह की पुस्तक है,स्र्वोत्तम मार्ग मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीच(धर्म में)अविश्कार किए हुए नवाचार हैं,(धर्म में)अविश्कार की गइ प्रत्येक नई चीज़ बिदअ़त(नवाचार)है,प्रत्येक नवाचार गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।[1]

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका सम्मान करो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसकी अवज्ञा से बचो,पुण्य के कार्य करने और पाप के कार्यों से दूर रहने में धैर्य से काम लो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला ने एक महान उद्देश्य की खातिर शरीअ़तों का निर्माण किया,वह यह कि लोगों को दीन व दुनिया के कलयाण का मार्गदर्शन किया जाए,क्योंकि मानव बुद्धि स्वयं ऐसे नियमों एवं विनियमों का निर्माण नहीं कर सकती जो लोगों को सीधे मार्ग के मार्गदर्शन कर सकें,बल्कि यह उस अल्लाह की विशेषताओं में से है जो अपनी विशेषताओ में पूर्ण,अपने कार्यों एवं कथनों और तक़दीर में हकीम,अपने मख़्लूक़ों की नीतियों से अवगत और उन पर दयालु व कृपालु है,जबकि मनुष्य का ज्ञान अति अधूरा है।

हे मोमिनो!पूर्व उपदेशों में हम ने इस्लामी शरीअ़त के लगभग चालीस विशेंषताओं पर चर्चा किया था और आज उसी श्रृंख्ला को आगे बढ़ाते हैं:

39.इस्लामी शिक्षाओं की एक विशेषता यह है कि हर वह कथन जो इसके विरुद्ध है,वह असत्य है,जो प्रतिस्पर्धा के समय सत्य के सामने टिक नहीं सकता,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

﴿وَقُلْ جَآءَ ٱلْحَقُّ وَزَهَقَ ٱلْبَٰطِلُ ۚ إِنَّ ٱلْبَٰطِلَ كَانَ زَهُوقًا ﴿٨١﴾﴾ [سورة الإسراء:٨١]

अर्थातःतथा कहिये कि सत्य आ गया,और असत्य ध्वस्त निरस्त हो गया,वास्तव में असत्य को ध्वस्व निरस्त होना ही है।

---

[1]मैंने इस निबन्ध में मूल रूप से शैख उ़मर बिन सोलेमान अलअशक़र की पुस्तक"مقاصد الشريعة الإسلامية"पर विश्वास किया है,फिर उस में अल्लाह की तौफीक़ और आसानी से कुछ वृद्धि भी किए हैं।

अल्लाह ने अधिक फरमाया: ﴿قُلْ جَآءَ ٱلْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ ٱلْبَٰطِلُ وَمَا يُعِيدُ ﴿٤٩﴾﴾ [سورة سبأ:٤٩]

अर्थातः आप कह दें कि सत्य आ गया।और असत्य न (कुछ का)आरंभ कर सकता है और न (उसे)पुनः ला सकता है।

अर्थात उसका मामला म्लान हो जाएगा और उसकी महिमा एवं गौरव जाती रहेगी,अतः वह न पहले कुछ कर सका और न कर सकेगा।[1]

40.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि वह समस्त चुनौतियों के समक्ष स्थिर,चल रहे और स्थायी है, यद्‌यपि उस पर स्वेद आकमण क्यों न हों,और हर काल में शत्रु इससे युद्ध करते ही क्यों ने रहें,इस्लामी शरीअ़त में न अपक्षय आया और न वह परिवर्तन आती रहती है और वह स्थायी विनाश की ओर बढ़ रहे हैं।

एतिहासिक रूप से इस्लामी शरीअ़त की स्थिरता का एक दृश्य यह है कि वह वैचारिक विचलनों के सामने दृढ़ रहा है,उदाहरण स्वरूप ईसाइयत का लहर,जिसका उद्‌देश्य पूरे संसार को ईसाई बनाना और उन्हें सलीब की प्रार्थाना पर उभारना है,इस प्रकार ईसाइयत को बढ़ावा देने वाले देशों के पास अधिक संभावनाएं हैं,किन्तु उनके यहां इस्लाम में प्रवेश होने वालों का अनुपात,ईसाइयत और अन्य विकृतिय धर्मों और मानव धर्मों को स्वीकार करने वालों से अति अधिक है।

इतिहास में इस्लामी शरीअ़त के स्थायित्व का एक दृश्य यह भी है कि वह धर्मनिरपेक्षता की लहर के समक्ष दृढ़ संकल्प रही,जिसका **उद्देश्य** जीवन के समस्त विभागों से धर्म को निकाल के केवल बंदा का अपने रब से संबंध तक उसे सीमित रखना है।

इतिहास में इस्लामी शरीअ़त के स्थिरता का एक दृश्य यह भी है कि हिंसा एवं अव्यवस्था जैसी लहरों के सामने पहाड़ बन कर खड़ी रही,जिन का **उद्देश्य** चंद इस्लामी देशों के शासकों को अपदस्थ करना था,ताकि उन लहरों के मानने वाले वहां के शासन पर कब्जा जमा सकें,और अपने अनुमान के अनुसार उन देशों को शांतिपूर्ण और खुशहाल देशों में बदल सकें,दुनिया ने यह देखा कि जिन देशों में उन्हों ने अपनी योजनाएं लागू किये,वहां उन निराधार लहरों के ये प्रभाव प्रकट हुए कि स्थिति बुरा से अति बुरा हो गया,अवैध चीजों को वैध कर दिया गया,रक्त का दरिया बहाया गया,सम्मान एवं गरिमा नीलाम हुई और काफिर मुसलमानों की इस स्थिति को देख कर प्रसन्न हए और उसको"वसंत"का नाम दिया।

41.इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि जो भी उससे शत्रुता मोल लेता है वह अंततः हार व रुसवाई से दोचार होता है,चाहे वह सक्ताधारी लोग हों,अथवा पद

[1] यह इब्ने सादी रह़ीमहुल्लाहु का कथन है जो उन्हों ने उपरोक्त आयत की व्याख्या में लिखा है।

धारक लोग,अथवा वैचारिक विचलनों एवं **कट्टरपंथी**, साम्यवाद का अंजाम किया हुआ?क़ौमियत व बेसत कहां गई?ये सारी लहरें हवा हो गईं,इसके विपरीत,14 शताब्दियों पर सम्मिलित चुनौतियों के बावजूद क्या इस्लाम मिट पाया?धर्मयुद्ध के प्रभाव से इस्लाम पर कोई आंच आया?और किया यूरोपीय साम्राज्यवाद के प्रभाव में इस्लाम बेनिशान होगया?क्या इराक़ पर तातारी आक्रमणों ने इस्लाम को मिटा दिया?अह़वाज़ और इराक़ पर राफ़ज़ी आक्रमण से इस्लाम खत्म हो गया?धर्मनिरपेक्षता के वैचारिक आकर्मण से प्रभावित हो कर इस्लाम का अस्तित्व समाप्त हो गया?नहीं,अल्लाह की क़सम!इसकी स्थिरता और बढ़ गई।अल्लाह ने सत्य फरमायाः

﴿وَقُلْ جَآءَ ٱلْحَقُّ وَزَهَقَ ٱلْبَٰطِلُ ۚ إِنَّ ٱلْبَٰطِلَ كَانَ زَهُوقًا ﴿٨١﴾﴾ [سورة الإسراء:٨١]

अर्थातःतथा कहिये कि सत्य आ गया,और असत्य ध्वस्त निरस्त हो गया,वास्तव में असत्य को ध्वस्त निरस्त होना ही है।

उपरोक्त प्रस्तावना के पश्चात आप जान लें कि शरीअ़तों उद्देश्यों को समझने के लिये एक उपयोगी प्रस्तावना है,जो व्यक्ति इस प्रस्तावना को समझले,उसके लिये अल्लाह की नीति को समझना आसान हो जाएगा जिसके **मद्देनजर** अल्लाह ने शरीअ़तें नाज़िल फरमाई।

- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से माला माल फरमाए,मुझे और आप को उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिये और आप सब के लिये क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला और बड़ कृपालु है।

द्धितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

प्रशंषाओं के पश्चात!

42. इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह भी है कि इस्लामी शरीअ़त की एक विशेषता यह है कि जो देश और समुदायें उसे लागू करें,उनसे अल्लाह ने दुनिया व आखिरत के सौभाग्य का वादा फरमाया है,ताकि वह दुनिया में शांति और सम्मान के साथ खुशहाल जीवन गुजारें और आखिरत में उनके लिये बड़े बदले व पुण्य का वादा है।किन्तु जो देश और क़ौमें अल्लाह की शरीअ़त से मुंह मोड़ेंगी वह कठिनाई व नष्ट से दो चार होंगी,चाहे सबसे शक्तिशाली एवं सबसे विदोही देशों में से ही क्यों न हों।वास्तविक्ता इस की गवाह भी है,जब पहले के लागों ने इस सत्य को समझा और शरीअ़त को लागू किया तो आठ शताब्दियों तक धर्ती पर इस्लामी संस्कृति का बोल बाला रहा और उन्हें अल्लाह तआ़ला की यह खुशखबरी मीलीः

﴿وَعَدَ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ مِنكُمْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى ٱلْأَرْضِ كَمَا ٱسْتَخْلَفَ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ ٱلَّذِى ٱرْتَضَىٰ لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُم مِّنۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۚ يَعْبُدُونَنِى لَا يُشْرِكُونَ بِى شَيْـًٔا ۚ﴾

[سورة النور:٥٥]

अर्थातः अल्लाह ने वचन दिया है उन्हें जो तुम में से ईमान लायें तथा सुकर्म करें कि उन्हें अवश्य धरती में अधिकार प्रदान करेगा जैसे उन्हें अधिकार प्रदान किया जो इन से पहले थे,तथा अवश्य सुदृढ़ कर देगा उन के उस धर्म को जिसे उन के लिये पसॅद किया है,तथा उन (की दशा)को उन के भय के पश्चात शान्ति में बदल देगा,वह मेरी इबादत(वंदना)करते रहें और किसी चीज़ को मेरा साझी न बनायें।

किन्तु जब उन्हों ने अल्लाह के दीन से मुंह मोड़ा तो अल्लाह ने उन से नेतृत्व छीन ली और उन पर शत्रुओं को अधिरोपित कर दिया,जैसा कि आज हम इस को देख रहें हैं।

- इस्लामी शरीअ़त की ये चालीस अद्भुत विशेषताएं हैं,जो व्यक्ति इन्हें जान ले और समझ ले वह इस्लामी शरीअ़त में छुपा अल्लाह की नीति से भी अवज्ञत हो जाए गा और हमारे जमाने के मोनाफिक़ों(पाखंडी)अर्थात नास्तिकों की गुमराही भी उस पर स्पष्ट हो जाएगी जो इस्लाम और उसके आदेशों को कोसते हैं और यह दावा करते हैं कि वह एक पिछड़ा और रूढ़िवादी धर्म है।
  अल्लाह तआ़ला हमें उनके संदेहों से सुरक्षित रखे।

- प्रिय पाठक!जो व्यक्ति इन विशेषताओं से अवगत हो,वह आसानी से यह समझ सकता है कि तेजी से लोगों के इस्लाम में प्रवेश करने के पीछे किया भेद छिपा है,विशेष रूप से उन देशों में जो भौतिक रूप से विकसित हैं और नये नये आविष्कारों एवं खोजों में प्रसिद्ध है,अल्लाह ने सत्य फरमायाः

﴿سَنُرِيهِمْ ءَايَٰتِنَا فِى ٱلْءَافَاقِ وَفِىٓ أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ ٱلْحَقُّ ۗ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُۥ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ شَهِيدٌ ﴿٥٣﴾﴾ [سورة فصلت: ٥٣]

अर्थातःहम शीघ्र ही दिखा देंगे उन को अपनी निशानियाँ संसार के किनारों में तथा स्वयं उन के भीतर।यहाँ तक कि खुल जायेगी उन के लिये यह बात कि यही सच्च है।और किया यह बात पर्याप्त नहीं कि आप का पालनहार ही प्रत्येक वस्तु का साक्षी है।
आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात:अल्लाह तआ़ला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

- हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं और वह कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान फरमा जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हम ने अपना बड़ा घाटा कर लिया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानि उठाने वालों में से हो जाएंगे।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों की क्षमा फरमा,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा बाह्य।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين. اللهم صل وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه.

शीर्षक: नमाज़ का महत्व

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रसंशा के पशचात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कार की गई बिदअ़तें(नवाचार)हैं,प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ बिदअ़त है,प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!अल्लाह का तक़्वा(धर्मनिष्ठा)अपनाओ और उसका भय सवेद अपने हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा मानो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जान लो कि नमाज़ तुम्हारा एक स्वोंत्त अ़मल है,शरीअ़त(इस्लाम धर्म)में उसके महत्व के दस स्वरूप हैं:

1.प्रथम:नमाज़ ही वह प्रार्थना है जिसे अल्लाह ने शहादतैन لا إله إلا الله محمد رسول الله **के पश्चात सर्वप्रथम फर्ज़ किया,इसी प्रकार वह इस्लाम का द्वितीय स्तंभ है,अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ीअल्लाहु अंहुमा ने बयान किया:मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना:"इस्लाम दो चीजों पर आधारित है:इस बात की गवाही दना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य परमेश्वर नहीं और यह कि ह़ज़रत मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं और नमाज़ पढ़ना,ज़कात देना,ह़ज करना और रमज़ान के रोज़े(उपवास)रखना" ।[1]**

2.नमाज़ की अहमियत का एक प्रमाण यह भी है कि वह मदीना की ओर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के हिजरत करने से पूर्व मक्की जीवन

---

[1] इसे बोखारी(8)और मुस्लिम(16)ने वर्णित किया है और उपरोक्त शब्द मुस्लिम के हैं।

के समय वर्ष 3 बेसते नबवी(आप के संदेशवाहक बनाए जाने के तीसरे वर्ष)इसरा व मेराज के अवसर पर आकाश पर फर्ज़ हुई,अतःअल्लाह तआ़ला ने सातवें आकाश पर पांचों समय की नमाज़ें किसी देवदूत के माध्यम के बिना अपने और पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के बीच बिना किसी स्त्रोत के संबोधन के माध्यम से फर्ज़ किया।

3.नमाज़ के महत्वपूर्ण होने का एक प्रमाण यह भी है कि इस्लाम धर्म में इसका एतना महत्ता है कि किसी अन्य प्रार्थण से इसकी तुलना नहीं की जा सकती,अतःवह धर्म का ऐसा स्तंभ है जिस के बिना उसका भवन खड़ा नहीं हो सकता,मोआ़ज़ बिन जबल रज़ीअल्लाहु अंहु की वर्णित ह़दीस में आया है कि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह ने उनसे फरमायाःक्या में तुम्हें दोन का, मूल सिद्धांत, इसका स्तंभ और इसकी चोटी न बता दूं?मैं ने कहाःक्यों नहीं?अल्लाह के रसूल!(अवश्य बताएय)आप ने फरमायाःदीन का नींव इस्लाम है और इसका स्तंभ नमाज़ है और इसकी चोटी जेहाद है।[1]

4.नमाज़ का एक महत्व यह भी है कि वह बंदा और उसके रब के बीच कानाफूसी का स्त्रोत है,क्योंकि वह(एक साथ) हृदय ,जीभ और शरीर से अल्लाह का जिक करने पर आधारित होती है,जैसा कि अल्लाह तआ़ला की प्रशंसा करना और उससे दुआ़ रकना,कुरान का सस्वर पाठ करना,तस्बीह(سبحان الله),तह़मीद(الحمدلله)और तक्बीर(الله أكبر)कहना,शरीर के अंगों से खुशू खोजू(विनम्रता एवं दीनता) का प्रदर्शन करना,जैसे रुकू व सज्दा करना,विनर्मतापूर्वक क़याम रकना,सर्वोत्तम एवं सर्वश्रेठ परमेश्वर के समक्ष पलकें झुकाए रखना,नमाज़ में शरीर के अंगों की इतनी प्रार्थानाएं इकट्ठा हो जाती हैं जो अन्य किसी प्रार्थाना में नहीं होतीं।

5.नमाज़ के महत्व का एक प्रमाण यह भी है कि अनेक से ऐसे कार्य इसके अंदर पाए जाते हैं जो अन्य पूजाओं में नहीं पाई जाते,जिन में से कुछ कार्य ये हैं:

- इसके लिए पुकारना,जो कि अज़ान कहला ता है।
- इसके लिए पवित्रता प्राप्त करना अनिवार्य है।
- इसके लिए शांति एवं पतिष्ठा के साथ जाना।

[1] इसे तिरमिजी(2616)ने वर्णित किया है और कहाःयह ह़दीस ह़सन है।

- इसमें समस्त अंगों की ऐसी प्रार्थानाएं पाई जाती हैं जो अन्य प्रार्थानाओं में नहीं पाई जातीं।

6.नमाज़ के महत्वपूर्ण होने का एक प्रमाण यह भी है कि यात्रा व उपस्थिति,भय व डर,शांति व अमन,स्वास्थ्य व रोग हर अवस्था में इसका पढ़ना अनिवार्य है,किंतु उस समय नहीं जब मनुष्य को ऐसा रोग हो जाए जिसके कारण बुद्धि व चेतना खतम हो जाए।

7.नमाज़ के महत्व का एक प्रमाण यह भी है कि पैगंबर सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने मृत्यु वाले रोग में इसकी वसीयत(परामर्श)की,अतःउम्मे सल्मा रजीअल्लाहु अंहा से वर्णित है कि जिस रोग में पैगंबर सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का देहांत हुआ,उस समय आप फरमाया करते थेः"नमाज़ (की रक्षा करो)और(उन दासियों एवं दासों की)जो तुम्हारे हाथों की संपत्ति हैं"।आप ने यह शब्द बार बार फरमाए यहां तक कि आपकी पवित्र जबान रुक गई।[1] अर्थात जब तक जबान चलती रही आप इसकी वसीयत(परामर्श)करते थे।

8.नमाज़ की महत्ता का एक प्रमाण यह कि नमाज़ ही वह कार्य है जिस के प्रति क़्यामत के दिन बंदा से स्र्वप्रथम प्रश्न किया जाएगा,अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूल सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःक़्यामत के दिन स्र्वप्रथम बन्दा से जिस कार्य का हिसाब व किताब लिया जाएगा वह नमाज़ है,आपने फरमायाःअल्लाह तआ़ला देवदूतों से फरमाएगा जबकि वह अति जानने वाला हैः(मेरे बंदे की नमाज़ देखो!क्या उसने इसको पूरा किया है अथवा इसमें कोई कमी है?)।अतःयदि वह पूरी हुई तो पूरो की पूरी लिख दी जाएगी और यदि उसमें कोई कमी हुई तो फरमाएगा कि देखो!क्या मेरे बंदे के कुछ नवाफिल भी हैं?यदि नफिल हुए तो वह फरमाएगा मेरे बंदे के फर्जों को उसके नफलों से पूरा करदो।फिर इसी प्रकार से अन्य आ़माल लिए जाएंगे।[2]

9.नमाज़ के महत्वपूर्ण होन का एक प्रमाण यह भी है कि अंत काल में नमाज़ धर्म का वह अंतिम भाग होगा जो लोगों के अंदर से खत्म हो जाएगा,इसका

---

[1] इसे इब्ने माजा(1625),अहमद(6/290)ने वर्णित किया है और अल्बानी ने"अलइरवा"(7/238)में इसे वर्णित किया है।

[2] इसे अबूदाऊद(846)और अहमद(2/425)ने वर्णित किया है और उपरोक्त शब्द अबूदाऊद के हैं,इसे अल्बानी रह़ीमहुल्लाहु ने अलमुस्नद के शोघ में सही कहा है,इसी प्रकार अलमुस्नद के शोधकर्ताओं ने भी इस को सही कहा है।

प्रमाण आप सल्ललाहु अलैहि वसल्लम की यह ह़दीस है:एक एक करके इस्लाम के सारे बंधन टूट जाएंगे,जब भी एक बंधन टूटेगा तो लोग उसके बाद वाले बंधन से जुड़ जाएंगे,स्र्वप्रथम टूटने वाला बंधन शासन एवं सब से अंत में टूटने वाला बंधन नमाज़ होगी।[1]

10.नमाज़ के महत्व का एक प्रमाण यह भी है कि वह इस्लाम एवं कुर्फ के बीच अंतर करने वाली है,अत:बरीदा बिन अलह़सीब रज़ीअल्लाहु अंहु फरमाते हैं कि:हमारे एवं काफिरों के बीच अंतर नमाज़ से है,जिस ने नमाज़ छोड़दी उसने कुर्फ किया।[2]

अनस बिन मालिक रज़ीअल्लाहु अंहु फरमाते हैं कि रसूल सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"जो व्यक्ति हमारी जैसी नमाज़ पढ़े,और हमारे क़िब्ले की ओर मुख करे और हमारा ज़बीहा(ह़लाल पशु)खाए तो वह मुसलमान है जिसे अल्लाह और उसके रसूल की रक्षा प्राप्त है,अत:तुम अल्लाह की रक्षे में ख्यानत न करो"।[3]

ए मुसलमानो!ये वे दस प्रमाण हैं जो नमाज़ के महत्वपूर्ण होने पर साक्ष्य हैं,अल्लाह तआ़ला समास्त लोगों को अपने आदेश के अनुसार नमाज़ पढ़ने की तौफीक़(शक्ति)प्रदान करे।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको क़ुरान की बरकतों से मालामाल फरमाए,अल्लाह मुझे और आपको कुरान की आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभान्वित फरमाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा की प्रार्थना करता हूं,अत:आप भी उससे क्षमा प्राप्त कीजिए,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला एवं अति कृपालु है।

---

[1] इसे अह़मद(5/251)ने अबू ओमामा बाहिली रजी़अल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है,अलमुस्नद के शोधकर्ताओं का कहना है:इसकी सनद जय्यिद है,आपका कथन है:(स्र्वप्रथम बंधन शासन होगी)का अर्थ यह है कि:स्र्वप्रथम इस्लाम का जो बंधन टूटेगा वह यह कि शासन एवं शासकों में बिगाड़ आजाएगी।में(लेखक)कहता हूं कि:यह बिगाड़ हमारे युग में बिल्कुल स्पष्ट है,अत:इस्लामी देशों में शासन की प्रणाली प्रचलित है वह(मनुष्य)के स्वयं निर्मित नियम हैं, الا ما شاء الله हम अल्लाह से ही इसकी शिकायत करते हैं।

[2] इसे तिरमिजी़(2621),निसाई(462),इब्ने माजा(1079),इब्ने ह़िब्बान(1454)और अह़मद(5/346)ने रिवायत किया है और अल्बानी ने इब्ने शैबा कि किताब"इलईमान"(46)पर अपनी समीक्षा में लिखा है कि:इसकी सनद मुस्लिम की शर्त पर है।

[3] इसे बोखारी(391)ने वर्णित किया है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده .

प्रशंसाओं के पश्चात!
आप जान लें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि नमाज़ बंदा और उसके रब के बीच कानाफूसी का एक माध्यम है,क्योंकि वह दुआ एवं अल्लाह की प्रशांसा,कुरान का सस्वर पाठ,तस्बीह(سبحان الله)व तह़मीद(الحمد لله)एवं तक्बीर(الله أكبر),शरीर के अंगों के खोशू व खोजू(विनम्रता एवं दीनता) से सम्मिलित है,जैसे रुकू व सज्दा करना,विनर्मता पूर्वक क़्याम करना,स्वोत्तम एवं सर्वश्रेष्ठ अल्लाह के समक्ष पलकें झुकाए रखना।शैख अ़ब्दुर्रह़मान बिन सादी रह़ीमहुल्लाहु अल्लाह के इस कथनः

﴿إِنَّ ٱلصَّلَوٰةَ تَنۡهَىٰ عَنِ ٱلۡفَحۡشَآءِ وَٱلۡمُنكَرِۗ وَلَذِكۡرُ ٱللَّهِ أَكۡبَرُۗ﴾ [سورة العنكبوت:٤٥]

की व्याख्या में लिखते हैंःतथा नमाज़ के अंदर इससे भी बड़ा उद्देश्य रखा है,वह यह कि नमाज़ एक साथ हृदय जीभ एवं शरीर हर एक के साथ अल्लाह का जिर्क करने पर आधारित है,अल्लाह तआ़ला ने बंदों को अपनी पूजा के लिए पैदा किया और सबसे श्रेष्ठतर प्रार्थना जिसे बंदा करता है वह नमाज़ है,इसके अंदर शरीर के समस्त अंग की एतनी प्रार्थनाएं इकट्ठा होती हैं कि अन्य किसी प्रार्थना में इकट्ठा नहीं होती,इसी लिए अल्लाह ने फरमायाः ﴿وَلَذِكۡرُ ٱللَّهِ أَكۡبَرُۗ﴾ [سورة العنكبوت:٤٥]

अर्थातःऔर अल्लाह का स्मरण ही सर्व महान है।
आप यह भी याद रखें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि अल्लाह ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन हैः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थातःअल्लाह तआ़ला तथा उसके फरिशते दरूद भेजते हैं नबी पर।उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।
नबी सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने भी अपनी उम्मत को शुकवार के दिन अपने ऊपर अधिक से अधिक दरूद भेजने पर उकसाते हुए फरमायाः"तुम्हारे अच्छे दिनों में से शुकवार का दिन भी एक बेहतर दिन है,इस लिए उस दिन मेरे ऊपर अधिक से अधिक दरूद भेजो,क्योंकि तुम्हारा दरूद व सलाम मेरे ऊपर प्रस्तुत किया जाता है"।ए अल्लाह तू अपने बंदे एवं संदेशवाहक मोह़म्मद

पर रह्मत भेज,उनके उत्तराधिकरियों,अनुयायियों और क़्यामत तक निष्ठा के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित करदे,तू अपने एवं इस्लाम के शत्रुओं को नाश करदे,अपने एकेश्वरवाद बंदों की सहायता फरमा,हे अल्लाह तू हमें अपने देशों में शांति प्रदान कर,हमारे इमामों एवं हमारे शासकों को सूधार दे,उन्हें हिदायत का निर्देशक और हिदायत पर चलने वाला बना।

हे अल्लाह!जो हमारे प्रति,इस्लाम एवं मुसलमानों के प्रति बुराई का भाव रखे तू उसे स्वयं ही में व्यस्त करदे,और उसके फरेब व चाल को उसके लिए वबाले जान बना दे।

हे अल्लाह!मुद्रास्फीति,महामारी,ब्याज,बलात्कार,भूकंप एवं आजमाइशों को हमसे दूर करदे और आंतरिक एवं बाह्य उत्पीड़नों की बुराइयों को हमारे ऊपर से उठाले,विशेष कर हमारे देश से और सामान्य रूप से समस्त मुसलमानों के देशों से,हे दोनों संसार के पालन्हार!हे अल्लाह हमसे महामारी एवं संकट को दूर फरमा,निसंदेह हम मुसलमान हैं।

हे अल्लाह!तू समस्त मुसलमानों के शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने और अपने धर्म की उत्थान की तौफीक़ प्रदान कर और उन्हें उनके प्रजा के लिए दया का कारण बना।

ए हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भलाई प्रदान फरमा,और नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

ए अल्लाह के बंदो!निसंदेह अल्लाह तआ़ला न्याय का,भलाई का और परिजनों के साथ सुन्दर व्यवहार का आदेश देता है और असभ्यता एवं अशिष्टता के कार्यों,अशिष्ट गतिविधियों एवं अन्याय से रोकता है।वह स्वयं तुम्हें परामर्श कर रहा है कि तुम परामर्श प्राप्त करो,इस लिए तुम अल्लाह तआ़ला का जिर्क करो वह तुम्हारा जिर्क करेगा,उसकी नेमतो(आशीर्वादों)पर उसका आभारी रहो वह तुम्हें अधिक नमतें(आशीर्वाद)प्रदान करेगा,अल्लाह का जिर्क बहुत बड़ी चीच है,तुम जो कुछ भी करते हो वह उससे अवज्ञत है।

शीर्षक: नमाज़ के लिए जल्दी करने का महत्व

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात!

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त(नवाचार)है और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय रखो,उसकी आज्ञाकारिता करो और उसके अवज्ञा से बचो,और यह ध्यान में बैठालो कि नमाज़ तुम्हारे महत्वपूर्ण कार्यों में से एक है,अल्लाह ने अन्य प्रार्थनाओं के तुलना में इसे अनेक सारी विशेषताओं से विशिष्ट बनाया है,उन्हीं विशेषताओं में से यह भी है कि अल्लाह ने आकाश में इसे फरज़ किया,वह कार्य में पांच है किंतु तराजू (पुण्य) में पचास नमाजो़ं के बराबर है,नमाज़ पापों को मिटाती है,नमाज़ के लिए मस्जिदें जाना और वहां से निकलना पूजा है,इसी प्रकार इसकी महान विशेषताओं में से यह भी है कि इसके लिए पवित्रता प्राप्त करना अनिवार्य है।

- ए मोमिनो!नमाज़ के इसी महत्व एवं सार्थकता को देखते हुए अल्लाह ने इसके लिए जलदी करने को मशरू कर दिया,इस पर बड़ा पुण्य रखा,अतः ह़ज़रत अबू होरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूल सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"पुरूषों की सर्वश्रेष्ठ पंक्ति प्रथम एवं दुष्टतम अंतिम है,जबकि महिलाओं की सर्वश्रेष्ठ पंक्ति अंतिम एवं दुष्टतम प्रथम पंक्ति है"।[1]

- अबू होरैरा रजी़अल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूल सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि:"यदि तुम लोग (अथवा वे लोग) प्रथम पंक्ति के महत्व जानते तो उसमें शामिल होने के लिए भग्य क्रीड़ा डालते"। [2]

---

[1] मुस्लिम:440
[2] मुस्लिम:439

- अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूल सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि:यदि लोगों को मालूम होता कि अज़ान कहने और नमाज़ प्रथम पंक्ति में पढ़ने से कितना पुण्य मिलता है।फिर उनके लिए भाग्य क्रीड़ा डालने के अतिरिक्त कोई और उपाय न बचता,तो वे भाग्य क्रीड़ा ही डालते और यदि लोगों को मालूम हो जाता कि नमाज़ के लिए जलदी आने में कितना पुण्य मिलता है तो इसके लिए दूसरे से आगे बढ़ने का प्रयास करते।और यदि लोगों को मालूम हो जाता कि एशा और प्रभात की नमाज़ का पुण्य कितना मिलता है,तो अवश्य चूत्तड़ों के बल घिसटते हुए इनके लिए आते"।[1]

रसूल सल्ललाहु अलैहि वसल्लम के कथ (ما في النداء) का अर्थ यह है कि अज़ान देने वाले का कया पुण्य है।आप सल्ललाहु अलैहि वसल्लम के कथन (يستهموا)का अर्थ है भाग्य क्रीड़ा डालना, التهجير का अर्थ है जलदी करना,और العتمة एशा की नमाज़ का कहा जाता है।

- बरा बिन आज़िब से वर्णित है कि रसूल सल्ललाहु अलैहि वसल्लम फरमाते थे:" अल्लाह तआ़ला प्रथम पंक्तियों पर अपनी कृपा भेजता है और उसके देवदूत उनके लिए प्रार्थनाएं करते हैं"।[2]

रसूल सल्ललाहु अलैहि वसल्लम के कथन:"देवदूत उनके लिए प्रार्थनाएं करते हैं" का सार यह है कि देवदूत प्रथम पंक्ति वालों के लिए कृपा एवं क्षमा की प्रार्थना करते हैं।क्योंकि अ़रबी में الصلاة का एक अर्थ प्रार्थना भी होता है।

- इरबाज़ बिन सारिया रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूल सल्ललाहु अलैहि वसल्लम प्रथम पंक्ति के लिए तीन बार और द्वितीय पंक्ति के लिए एक बार माफी की दुआ करते थे।[3]
- अबू सईद खुदरी रजीअल्लाहु अंहु का बयान है कि रसूल सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा रजीअल्लाहु अंहुम को पिछली पंक्ति में देख कर फरमाया:"मेरे निकट आओ और प्रथम पंक्ति पूरी करो,फिर द्वितीय पंक्ति वाले तुम्हारा अनुगमन करें और जो लोग पीछे रहेंगे तो अल्लाह तआ़ला अपने कृपा में भी उनको पीछे रखेगा"।[4] अर्थात अल्लाह उन्हें अति कृपा व आशीर्वाद एवं उच्च स्थान व प्रतिष्ठा से दूर करदेगा।

---

[1] बोखारी:615,मुस्लिम:437

[2] इसे अबूदाऊद:664 ने वर्णित किया है और अल्बानी रहीमहुल्लाह ने इसे सही़ह़ कहा है।

[3] इसे निसाई:816 और इब्ने माजा ने रिवायत किया है और अल्बानी रहीमहुल्लाहु ने इसे सही़ कहा है।

[4] मुस्लिम:438

- ह़ज़रत आयशा रजी़अल्लाहु अंहा कहती हैं कि रसूल सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"जो लोग प्रथम पंक्ति से पीछे रहेंगे तो अल्लाह तआ़ला अपने कृपा से उनको पीछे रखेगा"।[1]

अल्लाह तआ़ला हमें और को कु़रान की बरकतें प्रदान करे,मुझे और आप को इसकी आयतों और ह़िकमत(निती) पर आधारित प्रामर्शों से लाभ पहुचाए,में अल्लाह से अपने लिए और आप सबके लिए क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा करने वाला अति कृपा करने वाला है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد:

प्रशंसाओं के पश्चात!

आप जानलें-अल्लाह आप पर कृपा करे-कि इस्लाम में नमाज़ का इतना महत्व है जो किसी दूसरी प्रार्थना का नहीं,नमाज़ धर्म का एसा स्थंभ है जिसके बिना धर्म की इमारत खरी नहीं हो सकती,अतःह़ज़रत मोआ़ज़ रजी़अल्लाहु अंहु से वर्णित है वह कहते हैं कि रसूल सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"क्या में तुम्हें धर्म का नींव,इसका स्तंभ और इसका शिखर न बता दूं?"मेंने कहाःक्यों नहीं?अल्लाह के रसूल (अवश्य बताए) आपने फरमायाः"धर्म का मूल (आधार) इस्लाम है और इसका स्तंभ नमाज़ है और इसका शिखर जिहाद है"।[2]

- बंदा और उसके रब के मध्य वार्तालाप व कानाफूसी के लिए नमाज़ एक माध्यम है,क्योंकि नमाज़ के अंदर रब की प्रशंसा एवं चरित्रचित्रण की जाती है,नमाज़ कु़रान का सस्वर पाठ,तसबीह़ व प्रशंसा,तकबीर एवं शारीरिक अधीनता व विनम्रता पर आधारित होती है,जैसे सजदा करना,रुकू करना, अधीनता व विनम्रता और आज्ञानुकूलता के साथ महान एवं शक्तिशाली पालनहार के समक्ष नज़र झूका कर खड़ा होना।

शैख सादी रहीमहुल्लाह आयत ﴿إِنَّ ٱلصَّلَوٰةَ تَنۡهَىٰ عَنِ ٱلۡفَحۡشَآءِ وَٱلۡمُنكَرِۗ وَلَذِكۡرُ ٱللَّهِ أَكۡبَرُۗ﴾ की व्याख्या में लिखते हैंःतथा नमाज़ का एक **उद्देश्य** इससे भी महान है,अर्थात दिल,जीभ और शरीर से अल्लाह का ज़िक्र करना,क्योंकि अल्लाह ने अपने

[1] इसे अबूदाऊद ने रिवायत किया है और अल्बानी ने इसे सही़ कहा है।
नोटःह़दीस का अंतिम भाग इस प्रकार है(حتى يؤخرهم الله في النار)किंतु शैख अल्बानी ने इस वृद्धि को ज़ईफ कहा है,इस लिए में ने उल्लेख नहीं किया,देखें:(السلسلة الضعيفة) (6442)

[2] इसे तिरमिज़ी ने रिवायत किया और कहा कि यह ह़दीस ह़सन सही़ है।

बंदों को अपने पूजा के लिए पैदा किया है,बंदे की ओर से की जाने वाली प्रार्थनाओं में से सर्वश्रेष्ठ प्रार्थना नमाज़ है,नमाज़ में मनुष्य के शारीरिक अंग व भागयों की आज्ञाकारिता का दृश्य होता है,यह परिस्थिति किसी अन्य प्रार्थना में नहीं पाई जाती,इसी लिए अल्लाह ने फरमाया ﴿وَلَذِكْرُ ٱللَّهِ أَكْبَرُ﴾ (अल्लाह का जिक्र सबसे बड़ी चीज़ है।) समाप्त

- आप यह जानलें...अल्लाह आप पर कृपा कर...कि अल्लाह तआ़ला ने आपको यह आदेश दिया है कि जिस का प्रारंभ अपनी जात से किया,फिर अल्लाह की पवित्रता बयान करने वाले देवदूतों को इस का आदेश दिया और उसके पश्चात मनुष्य एवं जिनों के समस्त मुसलमानों को आदेश देते हुए फरमायाः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थातःअल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

- हे अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्माद पर रह़मत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़ेयामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।
- हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट करदे,और अपने एकेश्वरवादी बंदों की सहायता फरमा।
- हे अल्लाह तू हमें हमारे देशों में शांति प्रदान कर,हमारे इमामों और हमारे हाकिमों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक और हिदायत पर चलने वाला बना।
- हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के प्रति कृपा का कारण बना दे।
- हे अल्लाह!हम तुझसे दुनिया एवं आखिरत की समस्त भलाई की दूआ मांगते हैं,जो हमको मालूम है और जा हमको मालूम नहीं,और हम तेरी शरण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत की समस्त पापों से जा हमको मालूम है और जा हमको मालूम नहीं।

- हे अल्लाह! हम तुझसे स्वर्ग के स्वाली हैं और उस कथन एवं कार्य के भी जो स्वर्ग से निकट करदे,अैर तेरी शरण चाहते हैं नरक से और उस कथन एवं कार्य से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह! हमारे रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान कर,हमारे मृत्युों पर कृपा कर और आज़माइशों से जूझ रहे हमारे भाइयों से आज़माइश को दूर करद।
- हे अल्लाह!हमारे धर्म को सूधार दे जो हमारे मामलों का रक्षक है,हमारी दुनिया को सूधार दे जहां हमारा जीवन गुज़रता है,हमारे आखिरत को दुरुस्त करदे,जो हमारा अंतिम ठेकाना है,प्रत्येक पुण्य के कार्य में हमारे लिए जीवन को बढ़ादे,और मोत को हमारे लिए शांति का वस्तू बना।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भलाई प्रदान कर,और नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।
- ए अल्लाह के बंदो!निसंदेह अल्लाह तआ़ला न्याय का,कलयाण का एवं परिजनों के साथ सुंदर व्यवहार का आदेश देता है और अश्लीलता के कार्यों,अशिष्ट गतिविधियों और क्रूरता व निर्दयता से रोकता है वह स्वयं तुम्हें प्रामर्श कर रहा है कि प्रामर्श प्राप्त करो।इस लिए तुम अल्लाह शक्तिशाली का जिक्र करो वह तुम्हारा जिक्र करेगा,उसके आशीर्वादों पर उसका आभारी रहो वह तुम्हें और अधिक आशीर्वाद प्रदान करेगा,अल्लाह का जिक्र बहुत बड़ी चीज है,तुम जो कुछ भी करते हो वह उससे अवज्ञत है।

शीर्षक: सामूहिक रूप में नमाज़ के अनिवार्य होने एवं व्यापार व अन्य चीज़ों में व्यस्त रहने के कारण इससे लापरवाह होने की अवैधता के १० साक्ष्य।

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वश्रेष्ठ मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है एवं सबसे दुष्ट चीज़ धर्म में अविष्कार किए गए नवोन्मेष हैं प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ नवाचार है,हर नवाचार गुमराही है एवं हर गुमराही नरक की ओर ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो! अल्लाह से भयभीत रहो एवं उसका डर अपनी बुद्धि एवं हृदय में जीवित रखो,उसके आज्ञाकार बने रहो एवं अवज्ञा से वंचित रहो, याद रखो कि नमाज़ तुम्हारे सर्वश्रेष्ठ पुण्य कर्मों में से एक है,स्वच्छ एवं सर्वोच्च अल्लाह ने मुसलमानों को सामूहिक रूप में मस्जिद में नमाज़ अदा करने का आदेश दिया है एवं बिना किसी धार्मिक बाध्यता के इससे वंचित रहने से रोका है,मस्जिद में नमाज़ अदा करने का आदेश विभिन्न हदीसों के माध्यम से आया है :

१. अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "मनुष्य का सामूहिक रूप में नमाज़ अदा करना उसके गृह में नमाज़ अदा करने की तुलना में २५ गुना स्थान श्रेष्ठ है, इसका कारण यह है कि एक व्यक्ति जब वुज़ू करता है और उसके संपूर्ण मर्यादाओं का पालन करते हुए अच्छी तरह वुज़ू करता है फिर मस्जिद का

मार्ग पकड़ता है और उसका नमाज़ के अतिरिक्त कोई अन्य इच्छा नहीं होती है,तो उसके हर पग के बदले एक स्थान प्राप्त होता है एवं एक पाप क्षमा किया जाता है,एवं जब वह नमाज़ अदा कर लेता है तो देवदूत लगातार उसके हित में उस समय तक प्रार्थना करते रहते हैं जब तक कि वह अपनी नमाज़ के स्थान पर स्थित रहे,देवदूत कहते हैं :

[اللهم صل عليه، اللهم ارحمه]

अर्थात: "हे अल्लाह! इस पर अपनी रहमतों को अवतरित कर,हे अल्लाह! तो इस पर कृपा कर"!

एवं जब तक तुम नमाज़ की प्रतीक्षा करते रहो मान लो कि तुम नमाज़ ही में व्यस्त हो।"

(इसे बुख़ारी:६४७ ने रिवायत किया है एवं मुस्लिम: ६४९ ने इसके कुछ पाठ को रिवायत किया है।)

२. अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु अन्हू ने रिवायत किया है कि जिसकी यह इच्छा हो कि वह अल्लाह से (प्रलेय दिन) मुसलमान के रूप में भेंट करे तो उसे इन नमाज़ों के लिए जिस स्थान से बुलाया जाए वह उन नमाज़ो की सुरक्षा करे (वहां मस्जिदों में जाकर अच्छे ढंग से उन्हें अदा करे) क्योंकि अल्लाह ने तुम्हारे दूत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुछ दिशा-निर्देश दिए हैं और यह (मस्जिदों में सामूहिक रूप में नमाज़ अदा करना) उन्हीं दिशा-निर्देशों में से एक है,क्योंकि यदि तुम नमाज़ अपने गृहों में पढ़ोगे जैसे समूह से वंचित रहने वाला अपने गृह में पढ़ता है तो तुम अपने नबी के मार्ग को त्याग दोगे एवं यदि तुम अपने नबी के मार्ग को त्याग दोगे तो तुम गुमराह हो जाओगे। कोई व्यक्ति जो स्वच्छता प्राप्त करता है (वुज़ू करता है) एवं पूर्ण रूप से वुज़ू करता है इसके पश्चात इन मस्जिदों में से किसी मस्जिद की ओर निकलता है तो अल्लाह तआला

उसके हर पग के बदले जिसको वह उठाता है एक पुण्य लिखता है एवं इस कारणवश उसका एक स्थान सर्वोच्च कर देता है एवं एक पाप क्षमा कर देता है,हम (सहाबा गण रज़ि अल्लाहु अन्हुम) में से कोई भी समूह से पीछे नहीं रहता था,ऐसे पाखंडियों के अतिरिक्त जिनके पाखंड से सभी अवगत थे,(बल्कि कभी कभार ऐसा होता कि एक आदमी इस प्रकार लाया जाता कि उसे दो व्यक्तियों के बीच सहारा दिया गया होता (अर्थात: दुर्बलता के कारण वह दो व्यक्तियों के सहारे चल कर आता,देखें: मुअ़जमुल्-वसीत) यहां तक की पंक्ति में लाकर खड़ा कर दिया जाता।

(इसे मुस्लिम: ६५४ ने रिवायत किया है।)

३. ऐ अल्लाह के दासो! जो लोग सामूहिक रूप में मस्जिद में पूरे संयम के साथ पांचों समय नमाज़ अदा करते हैं,उनको अल्लाह तआ़ला प्रलय के दिन अपने छांव तले स्थान देगा,जब के सूर्य सृष्टि से एक मील की दूरी पर होगा,अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "सात व्यक्ति ऐसे हैं जिनको अल्लाह तआ़ला प्रलय के दिन छांव तले छांव देगा (इस हदीस को बैहक़ी ने अल्-असमाउ-व-स्सिफ़ात: ७९३ में अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हू से इन शब्दों के साथ रिवायत किया है: "सात व्यक्ति ऐसे हैं जिनको अल्लाह तआ़ला प्रलय के दिन अपने सिंहासन तले छांव देगा जिस दिन उसके सिंहासन के छांव के अतिरिक्त कोई छांव नहीं होगा..." हदीस। इस रिवायत को पुस्तक के शोधकर्ता अब्दुल्लाह अल्-हाशिदी ने सहीह कहा है,दोनों हदीसों के बीच कोई टकराव नहीं है,क्योंकि उल्लेख किए गए छांव का संबंध सिंहासन से भी जोड़ना सहीह है एवं अल्लाह की ओर भी,परंतु जब अल्लाह की ओर इसे संबंधित किया जाएगा तो ऐसी स्थिति में सम्मान एवं संपत्ति का संबंध होगा।) जबकि उसके छांव के अतिरिक्त कोई और छांव नहीं होगा:

न्याय करने वाला शासक, वह युवा जिसने अल्लाह की उपासना में अपने यौवन को पाला, ऐसा व्यक्ति जिसने एकांत में अल्लाह का स्मरण किया एवं उसके अश्रु निकल पड़े, वह व्यक्ति जिसका हृदय मस्जिद की ओर लटका रहता है...।"

मुस्लिम की रिवायत में ये शब्द आए हैं: "वह व्यक्ति जिसका हृदय मस्जिद से लगा रहता है जब वह मस्जिद से निकलता है तो (उसका हृदय) मस्जिद से ही लटका रहता है, यहां तक कि वह उसमें वापस आ जाए...।"

(बुख़ारी:६८०६, मुस्लिम: ६६९, उल्लेख किए गए शब्द मुस्लिम के हैं।)

४. अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति मस्जिद में प्रातः व सायं बार-बार उपस्थित होता है, अल्लाह तआ़ला स्वर्ग में उसके लिए सत्कार का सामग्री करता है, वह प्रात: व सायं जब भी मस्जिद जाता है।

(इसे बुख़ारी: ६६२, मुस्लिम: ६६९ ने रिवायत किया है एवं उल्लेख किए गए शब्द मुस्लिम के हैं।)

इसका अर्थ वह स्थान है जो अतिथि के सत्कार हेतु तैयार किया जाता है। (देखें: अन्निहायह, इसके अतिरिक्त देखें: इब्ने ह़जर रहिमहुल्लाह के लेख फ़तहुल्-बारी, ऊपर उल्लेख किए गए हदीस के अंतर्गत।)

५. मस्जिद में सामूहिक रूप में नमाज़ अदा करने के अनिवार्य होने का एक साक्ष्य यह भी है कि अल्लाह तआ़ला ने युद्ध की परिस्थिति में भी सामूहिक रूप में नमाज़ अदा करने को अनिवार्य स्थित किया जोकि बहुत ही कठिन परिस्थिति होती है, यह नमाज़ सलातुल्-ख़ौफ़ के नाम से जानी जाती है, अल्लाह का कथन है:

﴿وَإِذَا كُنتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ ٱلصَّلَوٰةَ فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ مِّنْهُم مَّعَكَ﴾ [سورة النساء:١٠٢]

अर्थात: "जब तुम उन में हो एवं उनके लिए नमाज़ खड़ी करो तो उनका एक समूह तुम्हारे साथ खड़े होना चाहिए।"

६. अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿وَأَقِيمُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُوا۟ ٱلزَّكَوٰةَ وَٱرْكَعُوا۟ مَعَ ٱلرَّٰكِعِينَ ﴿٤٣﴾﴾ [سورة البقرة:٤٣]

अर्थात: "नमाज़ अदा करो, दान-पुण्य दो, एवं रुकू करने वालों के संग रुकू करो।"

रुकू करने वालों का अर्थ मस्जिद में नमाज़ अदा करने वालों की मण्डली है।

७. ए मोमिनो का गिरोह! मस्जिद में नमाज़ अदा करने में आलस्य को अपनाने एवं लापरवाही बरतने से भयभीत किया गया है, अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हू फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "उस जीव की क़सम जिसके हस्त में मेरा प्राण है, मेरी इच्छा हुई थी कि मैं लकड़ियों को इकट्ठा करने का आदेश दूं, फिर नमाज़ के लिए अज़ान देने का, फिर किसी से कहूं कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाए, इसके अतिरिक्त मैं उन लोगों के निकट जाऊं (जो मण्डली में उपस्थित नहीं होते हैं) और मैं उन्हें उनके गृहों समेत अग्नि लगा दूं। क़सम है उस जीव की जिसके हस्त में मेरा प्राण है कि तुम में से यदि किसी को यह आशा हो कि वहां मोटी हड्डी (अर्थात वह हड्डी जिसमें अधिक से अधिक मोटा मांस लगा हो। देखें: अल्-मोअ़जमुल्-वसीत) अथवा बकरी के दो खुरों (इसका अर्थ बकरी के दो खुरों के बीच का मांस है जिसका उद्देश्य उसकी अवमानना का उल्लेख करना है। देखें: अल्-मोअ़जमुल्-वसीत) के बीच का मांस मिलेगा

तो वह आवश्यक रूप से (नमाज़) ईशा में उपस्थित हो। मुस्लिम की रिवायत में भी यह शब्द आए हैं: "... फिर कुछ व्यक्तियों को संग लेकर जिनके पास लकड़ियों के ढेर हों, उन लोगों की ओर जाऊं जो नमाज़ में उपस्थित नहीं होते, फिर उनके गृहों को उन पर अग्नि से जला दूं।"

(इसे बुख़ारी:७२२४, मुस्लिम: ६५१ ने रिवायत किया है।)

८. अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "जिस व्यक्ति ने अज़ान सुनी एवं वह बिना किसी बाध्यता के मस्जिद को नहीं आया तो उसकी नमाज़ अमान्य है।" (इसे इब्ने माजा:७९३ आदि ने रिवायत किया है एवं अल्-बानी ने अल्- इरवा: २/३३७ में सहीह कहा है।) अर्थात: उसकी नमाज़ का पूर्ण रूप से लाभ नहीं मिलेगा।

अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत है उन्होंने कहा कि ९. "नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक नेत्रहीन व्यक्ति उपस्थित हुआ और कहा: हे अल्लाह के दूत! मेरे पास कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जो मुझे (हाथ पकड़कर) मस्जिद लाए, उसने अल्लाह के रसूल से यह निवेदन किया कि उसे यह अनुमति दी जाए कि वह अपने गृह में नमाज़ अदा कर ले, आपने उसे अनुमति दे दी, जब वह वापस जाने लगा तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसे बुलाया और कहा: क्या तुम नमाज़ का बुलावा (अज़ान) सुनते हो? उसने कहा: जी हां! आप ने फ़रमाया: उस पर लब्बैक कहो।"

(मुस्लिम:६५३)

१०. जाबिर रज़ि अल्लाहु अन्हू फ़रमाते हैं: "जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जुमा के दिन खड़े होकर उपदेश दे रहे थे इसी बीच मदीना के

व्यापारियों का एक गिरोह आ गया, (यह सुनकर) सहाबा भी (उपदेश को त्याग कर) उस गिरोह की ओर लपके, केवल १२ लोग शेष रह गए, जिनमें अबू बक्र व उ़मर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा भी थे, इसी अवसर पर यह श्लोक अवतरित हुआ :

﴿وَإِذَا رَأَوۡاْ تِجَٰرَةً أَوۡ لَهۡوًا ٱنفَضُّوٓاْ إِلَيۡهَا﴾ [سورة الجمعة:١١]

अर्थात: "जब कोई व्यापार होता देखें अथवा कोई तमाशा दिख जाए तो उसकी ओर दौड़ जाते हैं। "

(इसे बुख़ारी: ४८९९, मुस्लिम: ८६३ ने रिवायत किया है।)

ए अल्लाह के दासो! इस श्लोक में अल्लाह तआ़ला की ओर से सहाबा किराम रज़ि अल्लाहु अन्हुम को फटकार लगाई गई है की वो उपासना को त्याग कर सांसारिकता की ओर लपक गए, इसके पश्चात अल्लाह तआ़ला ने प्रलय के व्यापार की ओर प्रेरित किया एवं इस बात पर विश्वास करने का निर्देश दिया कि अल्लाह तआ़ला के अतिरिक्त कोई भी रोज़ी रोटी पहुंचाने वाला नहीं है, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया:

﴿قُلۡ مَا عِندَ ٱللَّهِ خَيۡرٌ مِّنَ ٱللَّهۡوِ وَمِنَ ٱلتِّجَٰرَةِۚ وَٱللَّهُ خَيۡرُ ٱلرَّٰزِقِينَ ۝١١﴾ [سورة الجمعة:١١]

अर्थात: "आप कह दीजिए कि अल्लाह के निकट जो कुछ है वो खेल-कूद एवं व्यापार से श्रेष्ठ है और अल्लाह सर्वश्रेष्ठ रोज़ी रोटी पहुंचाने वाला है।"

अर्थात: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संग नमाज़ अदा करने एवं (उपासना पर) जमे रहने का लाभ और सवाब खेल एवं व्यापार से अधिक बढ़कर और श्रेष्ठ है, इस कारणवश सहाबा किराम रज़ि अल्लाहु अन्हुम ने अल्लाह के इस कथन को स्वीकार किया जिसका परिणाम था सहाबा किराम रज़ि अल्लाहु अन्हुम क्रय-विक्रय करते एवं व्यापार में व्यस्त रहते, परंतु इस बीच जब अल्लाह का कोई अधिकार आ जाता तो उनका व्यापार

अल्लाह का स्मरण करने से नहीं रोकता, बल्कि वे समय रहते अल्लाह के अधिकार को पूरा करते, इस कारणवश वे अपने आक़ा व मौला के आज्ञाकारी, उसकी इच्छा एवं प्रेम को अपनी इच्छा एवं प्रेम पर प्राथमिकता देते थे। उनकी इसी विशेषता एवं गुणवत्ता का उल्लेख करते हुए अल्लाह ने फ़रमाया:

﴿رِجَالٌ لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَٰرَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَن ذِكْرِ ٱللَّهِ وَإِقَامِ ٱلصَّلَوٰةِ وَإِيتَآءِ ٱلزَّكَوٰةِ﴾ [سورة النور:٣٧]

अर्थात: "ऐसे व्यक्ति गण जिन्हें व्यापार एवं क्रय-विक्रय अल्लाह का स्मरण करने नमाज़ अदा करने दान-पुण्य देने से लापरवाह नहीं करतीं।"

(इस हदीस का यह उल्लेख मैंने अद्दुरर-अस्सुन्नीयह वेबसाइट से प्रतिलिपि की है।)

ए मुसलमानो! सामूहिक रूप में मस्जिद में नमाज़ के अनिवार्य होने के ये १० साक्ष्य हैं अल्लाह तआ़ला हम सबको उसी प्रकार नमाज़ अदा करने की शक्ति दे जिस प्रकार उसने आदेश दिया है।

अल्लाह तआ़ला हमें एवं आपको सर्वश्रेष्ठ क़ुरआन के लाभों से लाभार्थी करे, मुझे एवं आपको क़ुरआन के श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाहों से लाभार्थी करे, मैं अपनी यह बात कहते हुए अपने लिए एवं आप संपूर्ण के लिए अल्लाह से क्षमा मांगता हूं, आप भी उस से क्षमा प्रार्थी हों। निः संदेह वह अधिक क्षमा स्वीकार करने वाला एवं अधिकतम दया करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد!

प्रशंसाओं के पश्चात!

आप यह भी ज्ञात रखें -अल्लाह आप पर अपनी कृपा दृष्टि करे- की मस्जिद में सामूहिक रूप में नमाज़ अदा करना ईमान की शाखा एवं धार्मिकता का एक चिन्ह है, इस कारणवश संपूर्ण दुकानदारों एवं व्यापारियों पर अनिवार्य है कि जब नमाज़ के लिए बुलावा आ जाए तो मस्जिद की ओर प्रस्थान करने में शीघ्रता को अपनाएं, इसी प्रकार जो व्यक्ति गण प्रबंधन की बैठक में हों उन पर भी यह अनिवार्य है, इसी प्रकार जो व्यक्ति गण इन समारोहों का आयोजन करते हैं उन पर भी अनिवार्य है कि अज़ान सुनते ही अपने समारोहों को स्थगित कर दें, सर्वप्रथम नमाज़ अदा करें इसके अदा करने के पश्चात अपने समारोह को जारी रखें, क्योंकि सामूहिक रूप में नमाज़ अदा करना कोई माध्यमिक अथवा ऐच्छिक चीज़ नहीं है, बल्कि अल्लाह तआ़ला का आदेश है कि बिना किसी आवश्यकता के सामूहिक रूप में नमाज़ को त्याग देना वैध नहीं है, (जिन आवश्यकताओं के कारण सामूहिक रूप में नमाज़ अदा करने को स्थगित किया जा सकता है वो निम्नलिखित हैं:)

अभिरक्षा, यात्रा के लिए निकलना (रेलगाड़िया एवं वायुयान पकड़ना), रोगी अथवा कठिनाई में फंसे व्यक्तियों के प्राण को बचाना, भय, वर्षा अथवा कठोर आंधी तूफ़ान।

अल्लाह के दासो! मण्डली का अर्थ प्रथम मण्डली है, जिसके हेतु अज़ान दी जाती है एवं इक़ामत कही जाती है, कुछ व्यक्ति गण - अल्लाह उन्हें दिशा-निर्देश दे - प्रथम मण्डली से वंचित रहने के आ़दी नज़र आते हैं, यही कारण है कि मस्जिद में द्वितीय एवं तीसरी... मण्डलियों का तांता लगा रहता है, जिसका परिणाम यह होता है कि लोग एक मण्डली को त्याग

कर विभिन्न अनेक मंण्डलियों में नमाज़ अदा करते हैं, हम अल्लाह से इसकी शिकायत करते हैं।

(इस विषय पर अधिक जानकारी हेतु देखें: अहमीय्यतु-सलातिल्-जमाअ़ति-फ़ी-ज़ोइन्नुसूसि-व-सियरिस्सालिहीन, फ़ज़्ल-ए-इलाही ज़हीर, प्रकाशक: मुअस्सिसतुल्-जरीसी, रियाज़)

ऐ मुसलमानो! जो मुसलमान अपने विश्वास (ईमान) में सत्य हो उस पर यह अनिवार्य होता है कि वह नमाज़ का उसी प्रकार सम्मान करे जितना कि उसका अधिकार है, उसे उसका स्थान दे, एवं यह ज्ञात रखे के अल्लाह तआ़ला उसे धन-संपत्ति, व्यापार एवं आर्थिक परिस्थितियों के माध्यम से प्रशिक्षण लेता है, अल्लाह का कथन है:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَا تُلۡهِكُمۡ أَمۡوَٰلُكُمۡ وَلَآ أَوۡلَٰدُكُمۡ عَن ذِكۡرِ ٱللَّهِۚ وَمَن يَفۡعَلۡ ذَٰلِكَ فَأُوْلَٰٓئِكَ هُمُ ٱلۡخَٰسِرُونَ ۝٩﴾ [سورة المنافقون:٩]

अर्थात: "ए विश्वासियो! तुम्हारे धन एवं तुम्हारी संतान अल्लाह के स्मरण से तुम्हें लापरवाह न कर दे, एवं जो ऐसा करें वो बहुत घाटा उठाने वाले हैं।"

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

﴿فِي بُيُوتٍ أَذِنَ ٱللَّهُ أَن تُرۡفَعَ وَيُذۡكَرَ فِيهَا ٱسۡمُهُۥ يُسَبِّحُ لَهُۥ فِيهَا بِٱلۡغُدُوِّ وَٱلۡأٓصَالِ ۝٣٦ رِجَالٞ لَّا تُلۡهِيهِمۡ تِجَٰرَةٞ وَلَا بَيۡعٌ عَن ذِكۡرِ ٱللَّهِ وَإِقَامِ ٱلصَّلَوٰةِ وَإِيتَآءِ ٱلزَّكَوٰةِ يَخَافُونَ يَوۡمٗا تَتَقَلَّبُ فِيهِ ٱلۡقُلُوبُ وَٱلۡأَبۡصَٰرُ ۝٣٧ لِيَجۡزِيَهُمُ ٱللَّهُ أَحۡسَنَ مَا عَمِلُواْ وَيَزِيدَهُم مِّن فَضۡلِهِۦۗ وَٱللَّهُ يَرۡزُقُ مَن يَشَآءُ بِغَيۡرِ حِسَابٖ ۝٣٨﴾ [سورة النور: ٣٦-٣٨]

अर्थात: "उन गृहों में जिनके सर्वोच्च करने का एवं जिनमें अपने नाम के स्मरण करने का अल्लाह ने आदेश दिया है वहां वे प्रातः एवं सायं के समय अल्लाह की स्वच्छता (तस्बीह) का सस्वर पाठ करते हैं, [३६] ऐसे व्यक्ति गण जिन्हें क्रय-विक्रय एवं व्यापार अल्लाह का स्मरण करने,

नमाज़ अदा करने एवं दान-पुण्य देने से लापरवाह नहीं करते, उस दिन से भयभीत हैं जिस दिन बहुत से हृदय एवं बहुत से नेत्र उलट-पुलट हो जाएंगे, [३७] इस इच्छा से कि अल्लाह उन्हें उनके पुण्य-कर्मों का श्रेष्ठ लाभ देगा बल्कि अपनी कृपा से उससे भी कुछ अधिक प्रदान करेगा, अल्लाह जिसे चाहे अनगिनत रोज़ियां प्रदान कर देता है। [३८]

इन श्लोकों में अल्लाह ने क्रय-विक्रय के कारण नमाज़ से लापरवाही बरतने पर चेतावनी दी है, इसके अतिरिक्त यह भी चितया है कि रोज़ी-रोटी अल्लाह ही के हाथ में है, ना इससे रोज़ी रोटी का मार्ग बंद होता है बल्कि इससे रोज़ी-रोटी का द्वार खुलता है, रोज़ी-रोटी में उन्नति, प्रगति एवं बढ़ोतरी होती है, जो व्यक्ति इसके विरुद्ध सोचे वह अल्लाह के संबंध में संदिग्धचित्त है।

ए मोमिनो का समूह! हम आज का उपदेश प्रख्यात शैख़ इब्ने बाज़ रहिमहुल्लाह के फ़त्वा के माध्यम से समापन करना चाहते हैं जिसमें आपका कथन है: ... जहां कहीं भी अज़ान दी जाए वहां तुम संपूर्ण पुरुषों पर सामूहिक रूप में अल्लाह के गृह में नमाज़ अदा करना अनिवार्य है, शासकों, धार्मिक ज्ञानियों एवं धर्म के प्रचारकों के लिए यह वैध नहीं कि वो किसी भी दुकानदार एवं व्यापारी आदि को मण्डली से वंचित रहने की अनुमति दें। धार्मिक साक्ष्यों के (पालन करने की यही मांग है) इसके अतिरिक्त अल्लाह ने विश्ववासियों पर सामूहिक रूप में नमाज़ अदा करने को अनिवार्य स्थित किया है, इस अनिवार्य को पूरा करने में उसकी सहायता (की भी यही मांग है) एवं अल्लाह ने अपने इस कथन में मोमिनो की जिस गुणवत्ता का उल्लेख किया है उसके पालन करने की भी यही मांग है :

﴿وَٱلۡمُؤۡمِنُونَ وَٱلۡمُؤۡمِنَٰتُ بَعۡضُهُمۡ أَوۡلِيَآءُ بَعۡضٖۚ يَأۡمُرُونَ بِٱلۡمَعۡرُوفِ وَيَنۡهَوۡنَ عَنِ ٱلۡمُنكَرِ﴾ [سورة التوبة:٧١]

अर्थात: "मोमिन पुरुष एवं मोमिन महिलाएं आपस में एक दूसरे के (सहायक) एवं मित्र हैं, वो भलाईयों का आदेश देते हैं एवं बुराइयों से वंचित रखते हैं।"

आप रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।

عباد الله، إن الله يأمر بالعدل والإحسان وإيتاء ذي القربى، وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغي، يعظكم لعلكم تذكرون، فاذكروا الله العظيم يذكركم، واشكروه على نعمه يزدكم، ولذكر الله أكبر، والله يعلم ما تصنعون.

शीर्षक: जुमा की नमाज़ की विशेषताएं एवं महत्व

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

प्रशंसाओं के पश्चात!
सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त(नवाचार)है और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ऐ मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भ्य अपने दिलों में पैदा करो।जानलो कि अल्लाह तआ़ला अपने जीवों का पालनहार है,उसका एक दृश्य यह है कि वह जिस जीव को चाहता है सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान करता है,चाहे वे व्यक्तियां हों,स्थानें हों,समय हों अथवा प्रार्थनाएं हों।इसके पीछे अल्लाह की निती होती है जिसे वही जानता है,अल्लाह का कथन है:

﴿وَرَبُّكَ يَخۡلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخۡتَارُۗ﴾ [سورة القصص:٦٨]

अर्थातःऔर आपका रब जो चाहता है पैदा करता है और जिसे चाहता है उसका चयन करलेता है।और निसंदेह अल्लाह तआ़ला नमाज़ों में जुमा की नमाज़ का चयन किया और उसे कुछ विशेषताएं प्रदान की हैं,उसके लिए कुछ सुन्नतों और मुसतह़ब्बों को अनीवार्य कर दिया है,जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण सुन्नतों और मुसतह़ब्बों का उल्लेख निम्नलिखित में किया जा रहा है:

1.जुमा की नमाज़ इस्लाम के महत्वपूर्ण फरजो़ं और मुसलमानों के महत्वपूर्ण सभाओं में से एक है।

2.जुमा की नमाज़ की सुन्नतों में से उसके लिए स्नान करना है और यह अत्यंत बलपूर्वक आदेश है।इसी प्रकार इत्र लगाना,दातुन करना और सुंदर वस्त्र पहन्न भी जुमा की सन्नतों में से हैं।अबू दरदा रजीअल्लाहु अंहु की ह़दीस में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"जिस व्यक्ति ने जुमा के दिन स्नान किया,फिर सुंदर वस्त्र पहना,और यदि प्राप्त हुआ तो इत्र भी लगाया,फिर संतुष्टि के साथ जुमा के लिए निकल पड़ा और किसी के साथ छेड़छाड़ नहीं किया और न ही किसी को कष्ट

पहुंचाया,फिर जितना नसीब में था उसने सुन्नत पढ़ी,फिर इमाम के आने का प्रतिक्षा किया तो दो जुमा के मध्य उसके किए हुए पाप क्षमा कर दिए जाते हैं"।[1]

स्लमान फारसी रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है वह फरमाते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"जो व्यक्ति जुमा के दिन स्नान करे और जितना संभ्व हो स्वछता का पालन करके तेल लगाए अथवा अपने घर की इत्र लगाकर जुमा के लिए निकले और दो व्यक्तियों के मध्य भेद न करे(जो मस्जिद में बैठे हों) फिर जितनी नमाज़ें उसके भाग्य में हो उतनो पढ़े और इमाम उपदेश देने लगे तो वह खामोश रहे,ऐसे व्यक्ति के वे पाप जो इस जुमा से दूसरे जुमा के मध्य हों,सब क्षमा कर दिए जाएंगे"[2]

अबू सईद खुदरी रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गवाही देता हूं कि उन्होंने फरमायाः"प्रत्येक वयस्क व्यक्ति पर जुमा के दिन स्नान करना अनिवार्य है और यह कि दातुन करे और यदि इत्र लगाना संभ्व हो तो उसे भी लगाए "[3]

3.जुमा की नमाज़ की एक सुन्नत यह भी है कि उसके लिए कुछ विशेष वस्त्र रखा जाए,इसका प्रमाण आयशा रज़ीअल्लाहु अंहा की एक ह़दीस हैः पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जुमा के दिन लोगों को संबोधित किया तो आपने देखा कि उन्होंने (दैनिक उपयोग की) चादरें ओढ़ रखी हैं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"किया ह़रज है कि तुम में से किसी व्यक्ति के पास संभव हो तो वह दैनिक उपयोग के काम काज के वस्त्र के अतिरिक्त जुमा के लिए विशेष रूप से वस्त्र त्यार करले"[4] उपरोक्त ह़दीसों से ज्ञात होता है कि जुमा की नमाज़ के लिए सबसे सुंदर वस्त्र पहन्ने पर प्रोत्साहित किया गया है।

4.जुमा की नमाज़ की मुसतहब्बों में से यह भी है कि मस्जिद को इत्र से सुगंधित किया जाए,उ़मर बिन खत्ताब रज़ीअल्लाहु अंहु ने आदेश दिया कि दोपहर के समय प्रत्येक जुमा को मस्जिदे नबवी के अंदर ऊूर से सुगंधित किया जाए।[5]

---

[1] इसे अह़मद 5/420 ने रिवायत किया है और ज़ादुलमआ़द के शोधकर्ताओं ने इसे ह़सन कहा है।

[2] इस ह़दीस को इमाम बोखारी ने कितबुलजुमा के अंदर"जुमा के लिए तेल लगाना के अध्याय में"और "जुमा के दिन दो लोगों के मध्य भैद न करने के अध्याय में"वर्णित किया है।

[3] बोख़ारीः880,मुस्लिमः846।

[4] अबूदाउ़दः1078,इब्ने माजाः1095।

5 अबू याला ने अलमुसनदः190 में इसको रिवायत किया है और इसकी सनद को इब्ने कसीर रह़ीमहुल्लाहु ने ह़सन कहा है जैसा कि अल्बानी रहीमहुल्लाहु की पुस्तक"अलसमर अलमुसाबः"2/586 में है।

5.जुमा की नमाज़ की एक सन्नत यह भी है कि उसके लिए जलदी की जाए और पैदल चल कर जाया जाए और यह श्रेष्ठतर सवारी है और पुण्य के मामले में इन दानों के मध्य कोई प्रतियोगिता ही नहीं है।औस बिन और रज़ीअल्लाहु अंहु फरमाते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"जिसने जुमा के दिन स्नान किया और स्नान कराया,सवेरे पहुंचा,शुरू से उपदेश में शामिल रहा,इमाम के निकट बैठा और पूरे ध्यान से उपदेश सुना और खामोश रहा तो उसके प्रत्येक क़दम के बदले उसे एक वर्ष के रोज़े और एक वर्ष के क़्याम का पुण्य मिलेगा" ।[1]

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन(غَسَّلَ) "स्नान कराया"का अर्थ हैः"अपनी पत्नी से संभोग किया"जैसा कि इसके व्याखया इमाम अह़मद ने की है।और इसकी निती भी स्पष्ठ है,वह यह कि संभोग से मनुष्य की आतमा को संतुष्टि प्राप्त होती है जो कि नमाज़ में मोसल्ला के लिए संतुष्ठि का कारण है।एक कथन यह भी है किः" غَسَلَ واغْتَسَلَ"अर्थात अपने सर को धोया और स्नान किया,क्यिोंकि लोग सरों में तेल लगाते हैं इसी लिए स्नान करने से पूर्व सर को धोने पर प्रोतसाहन किया गया है।जुमा की नमाज़ के लिए जलदी पहुंचने के महत्व के विष्य में एक और ह़दीस है जिसको अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु ने रिवायत किया है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"जो व्यक्ति जुमा के दिन जनाबत के स्नान की जैसा(पूर्णरूप से) स्नान करे,और नमाज़ के लिए जाए,गोया उसने एक ऊंट का बली दिया,और जो व्यक्ति दूसरी घड़ी में जाए तो गोया उसने गाय का बली दिया,और जो व्यक्ति तीसरी घड़ी में जाए तो गोया उसने सींग वाले मेंढ़ा का बली दिया,और चौथी घड़ी में जाए तो गोया उसने एक मुर्गी का दान दिया और जो पांचवीं घड़ी में जाए तो गोया उसने एक अंडा अल्लाह के मार्ग में दान किया फिर जब इमाम उपदेश के लिए आजाता है तो देवदूत उपदेश सुनने के लिए मस्जिद में उपस्थित हो जाते हैं"[2]

6.जुमा की नमाज़ की एक विशेषता यह है कि जो इसको करने के लिए (मस्जिद आए) उसके लिए इमाम के मिंबर पर आने से पूर्व(नफली) नमाज़ पढ़ना मुसतह़ब है,और ज़वाल के समय भी नमाज़ पढ़ना मकरूह है इसका प्रमाण अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वह ह़दीस है जिसके अभी अभी उल्लेख हुआः"फिर उसके भाग में जितनी नमाज़ें हों उनको अदा करे" ।यह इमाम शाफेई रह़ीमहुल्लाह का कथन है जिसको इमाम इब्ने तैमिया रह़ीमहुल्लाहु ने भी अपनाया है।

---

[1] तिरमीज़ीः456 ने इसको रिवायत किया है और अल्बानी रह़ीमहुल्लाहु ने इसे सह़ीह़ कहा है।

[2] बोखारीः832,मुस्लिमः1403 ।

7.जुमा की नमाज़ की सुन्नतों में यह भी है कि उपदेश के मध्य खामोश रहा जाए,पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है:"इमाम के उपदेश के मध्य यदि आपने अपने किसी साथी से खामोश रहने के लिए कहा तो आपने लग़व काम किया" ।[1]

8.जुमा की नमाज़ की एक विशेषता यह है कि उसको बजा लाने से इस जुमा और इससे पूर्व के जुमा के मध्य होने वाले पापों का कफ्फारा है जबतक कि बड़े पापों को न किया हो,इसका प्रमाण अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु की ह़दीस है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"पांचों नमाज़ें और प्रत्येक जुमा दूसरे जुमा तक के मध्य के पापों का कफ्फारा (उनको मिटाने वाले) हैं जब तक बड़े पापों को न किया जाए "2

अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"जिस व्यक्ति ने वज़ू किया और अच्छी तरह वज़ू किया,फिर जुमा के लिए आया और खामोशी के साथ गौर से उपदेश सुना,उसके लिए पूर्व जुमा से लेकर इस जुमा तक के पापों को क्षमा करदिया जाते हैं और तीन दिन दिन अधिक भी और जो(बिना किसी कारण) कंकरियों को हाथ लगाता रहा(उनसे खेलता रहा) उसने लग़व और फज़ूल काम किया" ।[3]

9.जुमा की नमाज़ की एक विशेषता दोनों रकअ़तों में सूरह अलजुमअ़ा और सूरह अलमोनाफेक़ून अथवा सूरह अलआला और सूरह अलग़ाशिया का पढ़ना है।क्योंकि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन सूरतों को जुमा की नमाज़ में पढ़ते थे।[4] इब्नुलकय्यिम रहिमहुल्लाह ने जुमा के दिन दोनों सूरतों(जुमा व मोनाफेक़ून)के पढ़ने की निती ब्यान करते हुए फरमाया:"यह सूरह इस नमाज़(जुमा की नमाज़)को पढ़ने और के लिए जलदी करने,जुमा की नमाज़ में बाधा डालने वाले कार्यों को छोड़ने और अल्लाह का अधिक रूप से ज़िकर करने का आदेश पर निर्मित है,ताकि लोगों को दोनों संसार में सफलता प्राप्त हो क्योंकि अल्लाह के जिकर को भुला देना दुनिया एवं आखिरत में तबाही का कारण है,और दूसरी रकअ़त में सूरह"इज़ाजाअक अलमोनाफिक़ून"पढ़ी जाती है,ताकि मुस्लिम समुदाय को खतरनाक निफाक़ से डराया जाए,इस बात से अवज्ञत किया जाए कि लोगों के धन एवं संतान उन्हें जुमा की नमाज़ को पढ़ने और अल्लाह की जिकर से दूर न करदें,और यदि लोगों ने ऐसा किया तो निसंदेह उन्होंने हानी का सौदा किया।इसी प्रकार इस सूरह के सस्वरपाठ

[1] बोखारी:934 और मुस्लिम:851 ने इस ह़दीस को अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से रिवायत किया है।

[2] मुस्लिम:233।

[3] मुस्लिम:857।

[4] मुस्लिम:877 ने इसको अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

इस लिए की जाती है ताकि लोगों को अल्लाह के मार्ग में खर्च करने पर प्रोत्साहित किया जाए जो बड़े सौभाग्य की बात है।और लोगों को अचानक आकर्मण होने वाली मौत से अवज्ञत किया जाए इस स्थिती में कि लोग इससे मोहलत मांग रहे हों और वापसी की इच्छा कर रहे हों और उनकी मांग पर थोड़ा भी ध्यान न दी जाए।समाप्त।[1]
10.जुमा की नमाज़ की विशेषता यह भी है कि इसे छोड़ने पर ऐसी यातना आई है जो अ़सर की नमाज़ के अतिरिक्त किसी अन्य नमाज़ के प्रति नहीं आई है।अबू जाद ज़मीरी रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम ने फरमायाः"जो व्यक्ति बिना किसी धार्मिक बहाने के मामूली समझते हुए तीन जुमा लगातार छोड़दे तो अल्लाह तआ़ला उसके दिल पर मोहर लगादेता है"।[2]

11.जुमा की नमाज़ की एक विशेषता यह भी है कि लोगों की गर्दनें छलांगने और जुमा की नमाज के बीच लग़व कामों में व्यस्त रहने के विष्य में कठोर (यातना) आई है क्योंकि इन गतिविधियों के कारण लोगों की खामोशी टूट जाती है और उपदेश के बीच लोग उपदेश सनने के बजाए बात करने में व्यस्त होजाते हैं।अब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन अलआ़स रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम ने फरमायाः"जिसने लग़व कार्य किया और लोगों की गर्दनों को छलांगा तो ऐसा करने कारण उसको (जुमा के बजाए) ज़ोहर की नमाज़ का पुण्य मिलेगा"[3] अर्थात वह व्यक्ति जुमा के पुण्य से वंचित होगा।

जुमा की नमाज़ के लिए आने वाले लोगों पर खुशू व खुज़ू के साथ उसका सम्मान करना अनिवार्य है।क्योंकि यह अल्लाह तआ़ला के महान शआ़एर में से है,इमाम के उपदेश के बीच शरीर के अंगों को बिना किसी कारण के हरकतों से रोके रखना,इसके सम्मान का भाग है,जैसे कंकर आदि छूना,भूमी पर लकीर खींचना और दातुन आदि।इसी प्रकार खामोशी अपनाना भी इसक सम्मान में शामिल है,अन्यथा वह पापी होगा,जुमा के पुण्य से वंचित होगा और उसकी जुमा की नमाज़ ज़ोहर में परिवर्तित होजाएगी।अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम ने फरमायाः"इमाम के उपदेश के बीच यदि तुमने अपने किसी साथी को खामोश रहने के लिए कहा तो तुमने लग़व कार्य किया"।[4]

12.जुमा की नमाज़ की विशेषता यह भी है कि उसके पढ़ने के पश्चात चार रकआ़त नफल नमाज़ पढ़ना मुसतह़ब है।अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित यह ह़दीस इस

---

[1] ज़ादुलमआ़दः425/3 आदि ने इसको वर्णित किया है और मुस्नद के शोधकर्ताओं ने इसको ह़सन कहा हैः15498।

[2] इह़मदः425/3 आदि ने इसको वर्णित किया है और मुस्नद के शोधकर्ताओं ने इसको ह़सन कहा हैः15498।

[3] अबूदाऊदः347 ने इसको वर्णित किया है और सह़ी अबूदाऊद में अल्लामा अल्बानी रहिमहुल्लाहु ने इसका ह़सन कहा है।

[4] इसे बाखारीः934 और मुस्लिमः851 ने अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

बात का प्रमाण है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम ने फरमायाः"जिस व्यक्ति ने जुमा की नमाज़ पढ़ी,उसे चाहिए कि उसके पश्चात चार रकअ़त नफल पढ़ले।"[1]

13.जुमा की नमाज़ की विशषताओं में वह भी शामिल है जिसे इमाम इब्नुलकय्यिम रहीमहुल्लाहु ने बयान किया हैः"जुमा की नमाज़ अन्य फरज़ नमाजो़ं के मध्य ऐसी विशेषताओं से सशस्त्र है जो अन्य नमाजो़ं में नहीं पाईजातीं जैसा कि सभा,विशेष संख्या,इक़ामत व शांति,देश में रहने और उच्च स्वर में सस्वरपाठ करने की शर्तें"।[2]समाप्त।

ए अल्लाह के बंदो!यह दस एसी विशेषताएं हैं जिनके कारण जुमा की नमाज़ अन्य नमाजो़ं से अति उत्कृष्ट होती है और अल्लाह के निकट उच्च स्थान एवं प्रतिष्ठा से सम्मानित होती है।अतःहमें इन विशेषताओं को अपनाने के लिए अल्लाह से सहायता प्राप्त करनी चाहिए और इन कार्यों पर अल्लाह से पुण्य की आशा रखनी चाहिए।

अल्लाह तआ़ला हमें और को क़ुरान की बरकतें प्रदान करे,मुझे और आप को इसकी आयतों और हिकमत(निती) पर आधारित प्रामर्शों से लाभ पहुचाए,में अल्लाह से अपने लिए और आप सबके लिए क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा करने वाला अति कृपा करने वाला है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد:

- आप यह जानलें...अल्लाह आप पर कृपा कर...कि अल्लाह तआ़ला ने आपको यह आदेश दिया है कि जिस का प्रारंभ अपनी जात से किया,फिर अल्लाह की पवित्रता बयान करने वाले देवदूतों को इस का आदेश दिया और उसके पश्चात मनुष्य एवं जिनों के समस्त मुसलमानों को आदेश देते हुए फरमायाः

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थातःअल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

[1] मुस्लिमः881।

[2] ज़ादुलमआ़दः397 / 1।

ए अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्माद पर रह़मत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़ेयामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट करदे,और अपने एकेश्वरवादी बंदों की सहायता फरमा।

हे अल्लाह तू हमें हमारे देशों में शांति प्रदान कर,हमारे इमामों और हमारे हाकिमों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक और हिदायत पर चलने वाला बना।

हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के प्रति कृपा का कारण बना दे।

हे अल्लाह!मुसलमानों को आपदा किस कठोरता से घेरे हुआ है उसको तेरे अतिरिक्त कोई नहीं जानता,हे अल्लाह!हमसे इस महामारी को दूर करदे,निसंदेह हम मुसलमान हैं,हे अल्लाह!इस महामारी के कारण जिन मुसलमानों की मृत्यु होगई है,उनपर कृपा फरमा,और हम में से जो रोगी हैं,उन्हें स्वास्थ्य प्रदान कर,हे अल्लाह हम तेरी शर्ण चाहते हैं तेरी नेमत के समाप्ति से,तरे कृपा के हट जाने से,तेरे अचानक यातना से और तेरी प्रत्येक प्रकार की नाराजगी से। हे अल्लाह हम तेरी पनाह चाहते हैं कुष्ठ रोग से,पागलपन से,कोढ़ से और बूरे रोग से। हे हमारे पालनहार!हमें नेकी दे और आखेरत में अच्छाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

عباد الله! إن الله يأمر بالعدل والإحسان وإيتاء ذي القربى، وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغي، يعظكم لعلكم تذكرون، فاذكروا الله العظيم يذكركم، واشكروه على نعمه يزدكم، ولذكر الله أكبر، والله يعلم ما تصنعون.

शीर्षक: मोहर्रम के महीने का सम्मान एवं आशूरा के उपवास की श्रेष्ठता

إنَّ الْحَمْدَ لِلّٰهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰه إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चातः

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वश्रेष्ठ मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है। सबसे दुष्ट चीज़ इस्लाम में अविष्कार की गई नवोन्मेष हैं, प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ नवाचार है हर नवाचार गुमराही है एवं हर गुमराही नरक की ओर ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो! अल्लाह से डरो एवं उसका भय अपने हृदय में जीवित रखो। उसके आज्ञाकारी बनो एवं अवज्ञा से वंचित रहो। ज्ञात रखो कि अल्लाह तआ़ला के अपने सृष्टि का पालनहार होने का एक साक्ष्य यह भी है कि उसने कुछ समयों का चयन कर लिया है एवं उन्हें अन्य समय की तुलना में सम्मान एवं श्रेष्ठता प्रदान की है, उन समयों में से मोहर्रम का महीना भी है। यह एक महान एवं बरकत वाला महीना है। हिजरी वर्ष का यह प्रथम महीना है। यह उन निषिद्ध महीनों में से एक है जिनके संबंध में अल्लाह ताआ़ला का कथन है:

﴿إِنَّ عِدَّةَ ٱلشُّهُورِ عِندَ ٱللَّهِ ٱثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِى كِتَٰبِ ٱللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ مِنْهَآ أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ذَٰلِكَ ٱلدِّينُ ٱلْقَيِّمُ فَلَا تَظْلِمُوا۟ فِيهِنَّ أَنفُسَكُمْ﴾ [سورة التوبة:٣٦]

अर्थात: "महीनों की गणना अल्लाह के निकट अल्लाह की पुस्तक में १२ की है, उसी दिन से जब से आकाश एवं पृथ्वी को उस ने पैदा किया, उनमें

से चार निषिद्ध एवं विनम्र हैं, यही सत्य धर्म है, तुम इन महीनों में अपनी प्राणों पर अत्याचार मत करो।"

(तुम इन महीनों में अपनी प्राणों पर अत्याचार मत करो।) अर्थात: इन निषिद्ध महीनों में, क्योंकि अन्य महीनों की तुलना में इनमें पाप की गंभीरता अधिक बढ़ जाती है।

अल्लाह का कथन: (तुम इन महीनों में अपनी प्राणों पर अत्याचार मत करो।) का उल्लेख करते हुए इब्ने अ़ब्बास रज़ि अल्लाहू अ़न्हुमा फ़रमाते हैं: "संपूर्ण महीनों में अपनी प्राणों पर अत्याचार ना करो, फिर अल्लाह ने उनमें से ४ महीनों को चिन्हित किया एवं उन्हें निषिद्ध स्थित किया। उनकी निषिद्धता को महानता प्रदान की, उनमें किए जाने वाले पापों को अधिक गंभीर बताया एवं उनमें पुण्य-कर्म करने का सवाब एवं बदला कई गुना बढ़ा दिया।"

इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहू अ़न्हुमा का कथन समाप्त हुआ।

अल्लाह का कथन: (तुम इन महीनों में अपनी प्राणों पर अत्याचार मत करो।) का उल्लेख करते हुए क़तादा फ़रमाते हैं: "निषिद्ध महीनों में अत्याचार करने का पाप अन्य महीनों की तुलना में कहीं बड़ा एवं गंभीर होता है, यह और बात है कि अत्याचार प्रत्येक स्थिति में एक गंभीर अपराध है, परंतु अल्लाह तआ़ला जिस चीज़ को चाहता है श्रेष्ठ बना देता है।"

इसके अतिरिक्त आप फ़रमाते हैं: अल्लाह ने अपनी सृष्टि में ऐसे कुछ दासों का चयन किया है, देवदूतों में से कुछ को राजदूत के रूप में एवं मनुष्य में से कुछ को दूत के रूप में चयन किया है। पृथ्वी में मस्जिदों का चुनाव किया है, महीनों में से रमज़ान एवं निषिद्ध महीनों को चुना है।

दिनों में से शुक्रवार के दिन का चयन किया है, रात्रियों में से शुभरात्रि (शब-ए-क़द्र) को चुना है, इस कारणवश आप लोग भी उनका आदर कीजिए जिनको अल्लाह ने महान बनाया है, क्योंकि बुद्धिमान लोगों के निकट संपूर्ण चीज़ों की महानता की गुणवत्ता वही है जिसके माध्यम से अल्लाह ने उसको सम्मानित किया है। यह कथन इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह के उल्लेखनीय से संक्षेप के साथ प्रतिलिपि की गई है।

अबू बकरा रज़ि अल्लाहू अ़नहु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फ़रमाया: "वर्ष १२ महीनों का होता है इनमें से चार महीने निषिद्ध हैं, तीन तो लगातार, अर्थात: ज़िल्-क़ादा,ज़िल्-हिज्जा एवं मुहर्रम और चौथा रजब-ए-मुज़र जो जुमादल्-उख़रा एवं शाबान के बीच में पड़ता है।

(इसे बुख़ारी:३१९७, एवं मुस्लिम: १६७९ ने रिवायत किया है।)

मोहर्रम के महीने को यह नाम इसलिए दिया गया है कि वह निषिद्ध महीना है उसकी निषिद्धता एवं श्रेष्ठता की कठोरता के रूप में।

रजब-ए-मुज़र को यह नाम इस कारणवश दिया जाता है क्योंकि मुज़र समाज इस महीने को अपने स्थान से नहीं फेरता था बल्कि उसके समय पर ही उसको स्थित मानता था, अ़रब के अन्य समाज के विरुद्ध, वे युद्ध की परिस्थिति में निषिद्ध महीनों को उनके वास्तविक समय से फिर देते थे। उनका यह कार्य अन्-निस्ई के नाम से जाना जाता है।अल्लाह तआ़ला ने इन महीनों को जो उच्च स्थान एवं सम्मान प्रदान किया है उनका ध्यान रखा जाना चाहिए, उदाहरण स्वरूप: इन महीनों में युद्ध लड़ना अवैध ठहराया है एवं पापों को करने से कठोरता के साथ रोका है।

◍ ए मोमिनो! सृष्टि पर अल्लाह के पालनहार होने का एक साक्ष्य यह भी है कि उसने कुछ दिनों का चयन कर लिया है, एवं उन दिनों में की जाने वाली उपासनाओं को अन्य दिनों की उपासना पर महानता एवं श्रेष्ठता प्रदान की है, उन्हीं दिनों में से आशूरा (१०वीं मुहर्रम) का दिन भी है,

इस्लामी कैलेंडर के अनुसार हिजरी वर्ष के मोहर्रम का यह १०वां दिन है, इस दिन की महानता की एक सुखद पृष्ठभूमि है, वह इस प्रकार की जब अल्लाह तआ़ाला ने अपने दूत मूसा अलैहिस्सलाम को पानी में डूबने से बचा लिया एवं फ़िरऔ़न को उसके संगियों सहित पानी में डूबा दिया तो मूसा अलैहिस्सलाम ने इस वरदान पर अल्लाह को आभार व्यक्त करते हुए १०वीं मुहर्रम का उपवास रखा, इसके पश्चात अहल-ए-किताब -यहूद एवं नसारा- ने भी इस उपवास को रखना प्रारंभ कर दिया, फिर अज्ञानता युग के अ़रब लोग भी यह उपवास रखने लगे जो मूर्ति पूजा करते थे अहल-ए-किताब नहीं। इस कारणवश क़ुरैश समाज भी अपने अज्ञानता युग में इस दिन का उपवास रखा करता था। फिर जब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्रवास करके मदीना पहुंचे तो आपने यहूदियों को इस दिन का उपवास रखते हुए देखा, तो आपने इसका कारण जानने हेतु प्रश्न किया: तुम इस दिन उपवास क्यों रखते हो? उन्होंने उत्तर देते हुए कहा: यह बहुत ही महान दिन है, इसी दिन अल्लाह तआ़ाला ने मूसा अलैहिस्सलाम को बचाया था, एवं फ़िरौन और उसके संगियों को डुबो दिया था, उसका आभार व्यक्त करते हुए मूसा अलैहिस्सलाम ने इस दिन का उपवास रखा था, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: तुम्हारी तुलना में मैं मूसा अलैहिस्सलाम से अधिक निकट हूं, इस कारणवश आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वयं इस दिन का उपवास रखना प्रारंभ कर दिया एवं अपने

साथियों (सहाबा) रज़ि अल्लाहू अ़न्हुम को भी इस उपवास के रखने का आदेश दिया।

(इसे बुख़ारी: २००४, मुस्लिम: ११३० ने रिवायत किया है और उल्लेख किए गए शब्द मुस्लिम के हैं।)

बल्कि इस दिन यहूदी त्यौहार मनाते थे, अपनी महिलाओं को आभूषण पहनाते थे एवं (सुंदर वस्त्रों को पहना कर) उन्हें सजाते और श्रृंगार करते थे।

(इसे मुस्लिम:११३१ ने रिवायत किया है, इस अध्याय में अबू मूसा अशअ़री रज़ि अल्लाहू अ़नहु से भी हदीस मरवी है जिसे बुख़ारी: २००५ ने रिवायत किया।)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु अ़न्हुमा का कथन है कि यहूद एवं नसारा भी आशूरा के दिवस का सम्मान करते थे।

(मुस्लिम:११३४)

आइशा रज़ि अल्लाहू अ़नहा का कथन है कि "अज्ञानता युग में क़ुरैश के लोग भी आशूरा का उपवास रखते थे एवं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी इसे स्थित रखा था। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मदीना आगमन हुआ तो स्वयं आपने भी इस दिवस का उपवास रखा एवं अपने साथियों (सहाबा) रज़ि अल्लाहू अ़न्हुम को भी इस उपवास के रखने का आदेश दिया। परंतु जब रमज़ान का उपवास रखना अनिवार्य किया गया तो इसके पश्चात आप ने आदेश दिया कि जो चाहे आशूरा का उपवास रखे और जो चाहे ना रखे।"

इसे बुख़ारी:२००२, मुस्लिम: ११२५ ने रिवायत किया है, इस अध्याय में इब्ने ड़मर रज़ि अल्लाहू ड़न्हुमा से भी हदीस मरवी है जिसे बुख़ारी:१८९२, मुस्लिम: ११२६ ने रिवायत किया है।)

आइशा रज़ि अल्लाहू ड़नहा का कथन है: इसी दिन क़ुरैश काबा का आवरण किया करते थे। (बुख़ारी: १५९२)

अर्थात: उस पर वस्त्र आदि डालकर उसके सम्मान का प्रदर्शन किया करते थे।

जब अल्लाह तआ़ला ने रमज़ान के उपवास को अनिवार्य किया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को यह सूचना दी कि जो चाहे आशूरा का उपवास रखे और जो चाहे ना रखे, अर्थात आशूरा का उपवास रमज़ान के उपवास की तरह अनिवार्य नहीं है, बल्कि यह उपवास मुस्तहब है, इस कारणवश जो व्यक्ति यह उपवास रखेगा वह इंशाल्लाह बड़े लाभ से सम्मानित किया जाएगा। एक व्यक्ति ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रश्न किया: आप कैसे उपवास रखते हैं? तो आप ने उत्तर दिया: "हर महीने में तीन उपवास एवं रमज़ान के उपवास सदैव उपवास रखने के समान हैं, अ़रफ़ा दिवस के उपवास के संबंध में मैं अल्लाह से आशा करता हूं कि वह १ वर्ष पूर्व एवं १ वर्ष पश्चात के पापों का कफ़्फ़ारा होगा एवं अल्लाह से यही आशा करता हूं कि आशूरा (१०वीं मुहर्रमुल्-हराम) का उपवास १ वर्ष पूर्व के पापों का कफ़्फ़ारा होगा।"

(इसे मुस्लिम: ११६२ ने अबू क़तादह रज़ि अल्लाहू ड़नहु से रिवायत किया है।)

वो संपूर्ण छोटे-छोटे पाप जो मनुष्य से पूर्व के १ वर्ष में हुआ करते हैं, उन संपूर्ण पापों को इस दिन के उपवास के माध्यम से क्षमा कर देता, रही बात बड़े पापों की तो यह सत्य पश्चाताप से ही क्षमा होते हैं, अल्लाह तआ़ला बड़ा ही कृपालु एवं दयालु है।

◍ ए सलमानो! आशूरा के उपवास के इसी उच्च स्थान के आधार पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहुत ही व्यवस्था पूर्वक इस उपवास को रखते थे, उदाहरण स्वरूप अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु अ़न्हुमा का कथन है कि "मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आशूरा दिवस एवं रमज़ान के उपवास के अतिरिक्त अन्य दिनों में श्रेष्ठता का ज्ञात रखते हुए विशेष रुप से उपवास रखते नहीं देखा।

(इसे बुख़ारी: २००६, मुस्लिम: ११३२ ने रिवायत किया है।)

पूर्व के महान व्यक्तियों (सलफ़-ए-सालिहीन) का एक समूह यात्रा के दौरान भी आशूरा दिवस का उपवास रखता था, ताकि वे इस श्रेष्ठता से वंचित न रहें, इब्ने रजब रहिमहुल्लाह का कथन है:

पूर्व के महान व्यक्तियों (सलफ़-ए-सालिहीन) का एक समूह यात्रा के दौरान भी आशूरा दिवस का उपवास रखता था, उदाहरण स्वरूप: इब्ने अब्बास, अबू इस्हाक़ अस्-सबीई एवं ज़ोहरी, ज़ोहरी कहते थे: रमज़ान के (छूटे हुए उपवासों) को अन्य दिनों में पूरा किया जा सकता है परंतु आशूरा की श्रेष्ठता से वंचित रह गए (तो उसे पूरा नहीं किया जा सकता।) (इसे बैहक़ी ने शअ़बुल्-ईमान: ३/३६७ में रिवायत किया है, प्रकाशक: दारुल्-कुतुब अल्-इल्मिया।)

इमाम अहमद ने इसका उल्लेख किया है कि आशूरा का उपवास यात्रा के दौरान भी रखा जा सकता है। इब्ने रजब रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ। (लताइफ़ुल्-मआ़रिफ़ फ़ीमा लिमवासिमिल्-आ़मि मिनल्-वज़ाइफ़: पृष्ठ संख्या: ११०, शोधकर्ता: यासीन मुहम्मद अस्-सव्वास, प्रकाशन: ५, प्रकाशक: दारु-इब्ने कसीर, दिमश्क़।)

सहाबा रज़ि अल्लाहू अ़न्हुम अपनी संतानों को उपवास की आदत डालने हेतु आशूरा का उपवास रखाते थे, रबीआ़ बिनते मुअ़व्विज़ रज़ि अल्लाहू अ़न्हा का कथन है कि आशूरा दिवस के प्रातः नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अंसार के महल्लों में यह सूचना फैला दी जिसने प्रातः के समय कुछ खा-पी लिया हो वह दिन के बचे हुए समयों को (उपवास रखने वालों की समान) व्यतीत करे एवं जिसने कुछ ना खाया-पिया हो वह उपवास से रहे। फिर बाद में भी (रमज़ान के उपवास के अनिवार्य होने के पश्चात) हम लोग भी उपवास रखते थे और अपनी संतानों से भी रखवाते थे, उन्हें हम ऊन का खिलौना दे कर बहलाए रखते थे, जब कोई खाने के लिए रोता तो हम वही दे देते, यहां तक कि उपवास तोड़ने का समय आ जाता।

(इसे बुख़ारी: १९६०, मुस्लिम: ११३६ ने अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु अ़न्हुमा रिवायत किया है।)

◎ अल्लाह के दासो! आशूरा दिवस के उपवास का वैध ढंग (मसनून तरीक़ा) यह है कि उसके संग नवीं मोहर्रम का उपवास भी रखा जाए,

इसका साक्ष्य नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह कथन है: "यदि मैं आगामी वर्ष जीवित रहा तो मोहर्रम की नवीं तिथि का भी उपवास रखूंगा।"

(इसे मुस्लिम: ११३४ ने अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु अ़न्हुमा रिवायत किया है।)

अर्थात: यदि मैं आगामी वर्ष तक जीवित रहा एवं मेरी मृत्यु नहीं हुई तो मैं दसवीं तिथि के संग नवीं तिथि का भी उपवास रखूंगा। परंतु आगामी वर्ष के आशूरा दिवस से पूर्व ही नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु हो गई।

◍ ए लोगो! दसवीं तिथि के संग नवीं तिथि के उपवास रखने का मूल कारण यह है कि मुसलमान यहूदियों के सादृश्य से वंचित रह सकें, क्योंकि यहूद दसवीं मोहर्रम का उपवास रखा करते थे, इस कारणवश नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह बात नहीं भाई कि आप उनके सादृश्य को अपनाएं। इस कारणवश आपने सादृश्य से वंचित रहने हेतु दसवीं तिथि के संग नवीं तिथि के उपवास रखने का भी निर्देश दिया। इस्लाम धर्म की विशेषता है कि उसके आज्ञाकार अपनी उपासनाओं में अन्य समुदाय एवं धर्म के आज्ञाकारों से भिन्न रहते हैं।

यदि कोई यह प्रश्न करे कि क्या केवल दसवीं मोहर्रम का उपवास रखना वैध है? तो इसका उत्तर है: हां! परंतु श्रेष्ठ यह है कि उस से १ दिन पूर्व भी उपवास रखा जाए। यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत से सिद्ध है: "यदि मैं आगामी वर्ष जीवित रहा तो मोहर्रम की नवीं तिथि का भी उपवास रखूंगा।"

अल्लाह तआ़ला हमें एवं आपको सर्वश्रेष्ठ क़ुरआन के लाभों से लाभार्थी करे, मुझे एवं आपको क़ुरआन के श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाहों से लाभार्थी करे, मैं अपनी यह बात कहते हुए अपने लिए एवं आप संपूर्ण के लिए अल्लाह से क्षमा मांगता हूं, आप भी उस से क्षमा प्रार्थी हों। निः संदेह वह अधिक क्षमा स्वीकार करने वाला एवं अधिकतम दया करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

ए मुसलमानो! अल्लाह तआ़ला ने दिन एवं रात्रि को एक महान बुद्धिमत्ता के अंतर्गत पैदा किया है और वह है कर्म। ज्ञात हुआ कि अल्लाह ने दिन एवं रात्रि को यूं ही पैदा नहीं किया, अल्लाह का कथन है:

﴿وَهُوَ ٱلَّذِى جَعَلَ ٱلَّيۡلَ وَٱلنَّهَارَ خِلۡفَةً لِّمَنۡ أَرَادَ أَن يَذَّكَّرَ أَوۡ أَرَادَ شُكُورًا ۝٦٢﴾ [سورة الفرقان:٦٢]

अर्थात: "उसी ने रात्रि एवं दिन को एक दूसरे के पश्चात आने-जाने वाला बनाया, उस व्यक्ति हेतु जो सलाह प्राप्त करने एवं आभार व्यक्त करने की इच्छा रखता हो।"

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

﴿ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلۡمَوۡتَ وَٱلۡحَيَوٰةَ لِيَبۡلُوَكُمۡ أَيُّكُمۡ أَحۡسَنُ عَمَلًاۚ﴾ [سورة الملك:٢]

अर्थात: "जिसने मृत्यु एवं जीवन को इसलिए पैदा किया कि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुम में से कर्म को सुंदरता के साथ कौन करता है?"

तिर्मीज़ी ने रिवायत किया है: अबू बरज़ा असलमी रज़ि अल्लाहू अ़नहु कहते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है: प्रलय के दिन किसी भी दास के दोनों पांव नहीं हटेंगे यहां तक कि उस से यह प्रश्न ना कर लिया जाए, उसकी आयु के संबंध में कि उसने किन कार्यों में समापन किया, उसके ज्ञान के बारे में कि उस पर उसने कितना कर्म किया, उसकी संपत्ति के संबंध में कि उसने उसे कहां से कमाया और कहां व्यतीत किया, एवं उसके शरीर के संबंध में कि उसने उसे कहां खपाया।"

(इसे तिर्मीज़ी: २४१७ ने रिवायत किया है एवं कहा है कि हसन है।)

◍ ए मोमिनो! इन दिनों हम पूर्व वर्ष को अलविदा कह रहे हैं जिसका हम ने दर्शन किया एवं एक नए वर्ष का स्वागत कर रहे हैं, कोई मुझे बताए कि हमने पूर्व वर्ष (के कर्मों की पुस्तक) में अपने किन कर्मों को जोड़ा? एवं नव वर्ष के अंदर हम किन कर्मों का स्वागत कर रहे हैं? वर्ष बहुत ही गति के साथ गुज़र रहे हैं, इसी वर्ष को देख लीजिए! ऐसे गुज़रा जैसे कोई दिन या घड़ी गुज़री हो, इस कारणवश हमें अपना हिसाब स्वयं करना चाहिए, हमने इस वर्ष को स्वर्ग से निकट और नरक से दूरी को प्राप्त करने में कहां तक प्रयोग किया? हमने अल्लाह की आज्ञाकारी में कितनी चपलता का प्रदर्शन किया? हमने पूरे वर्ष में कितनी प्रसवोत्तर (नफ़्ली) नमाज़ें पढ़ीं एवं उपवास रखे? हमने कितना दान-पुण्य किया? कितना समय अल्लाह के स्मरण में व्यतीत किया? कितनी बार (नमाज़ के) प्रथम समय में मस्जिद पहुंचे? क्या हम पापों एवं अवज्ञाओं से वंचित रहे?क्या हम ने अवैध चीज़ों को देखने से अपने नयनों को नीचे रखा? क्या हमने लोगों की बुराई करने एवं असत्य बातों को बोलने से अपनी जीभ को रोके रखा? क्या हमने अपने हृदय को द्वेष, नफ़रत एवं ईर्ष्या से स्वच्छ

रखा? क्या हमने अपने पड़ोस के लोगों, परिवार के लोगों एवं अपने नौकरों के साथ सभ्य व्यवहार किया? अपनी महिलाओं को कितनी बार पर्दा, हिजाब एवं लज्जा का आदेश दिया एवं उन्हें नग्नता व मेल-मिलाप से कितनी बार रोका?

● ए लोगो! १ वर्ष के पूरा होने एवं द्वितीय वर्ष के प्रारंभ होने से तीन बातें अनिवार्य होती हैं:

(१) इस बात पर अल्लाह को आभार व्यक्त करना कि उसने जीवन को व्यतीत करने का एक और अवसर प्रदान किया।

(२) पूर्व के महीनों एवं वर्षों के प्रकाश में आत्म उत्तरदाई।

(३) बचे हुए दिनों में स्वयं को सुधारना।

ऊ़मर रज़ि अल्लाहू अ़नहु का कथन है: "पूर्व इसके की तुम्हारा हिसाब लिया जाए, अपना हिसाब स्वयं कर लो, पूर्व इसके कि तुम्हें पलड़े में डाला जाए स्वयं को नाप-तोल लो, क्योंकि (प्रलय के दिन) तुम्हारे हिसाब-किताब में इससे सरलता प्राप्त होगी कि तुम आज अपना हिसाब स्वयं कर लो एवं बड़े हिसाब-किताब हेतु स्वयं को सजा लो एवं तैयार कर लो।

(मुस्नद अल्-फ़ारूक़: २/६१८, इब्ने कसीर, शोधकर्ता: अब्दुल्-मोअ़ती क़लअ़जी, प्रकाशक: दारुल्-वफ़ा-मिस्र, प्रकाशन सन: १४११ हिज०)

ऐ मुसलमानो! अपने दिनों एवं यात्रियों को पूण्य-कर्मों से भर लो, इससे पूर्व की मृत्यु तुम्हारे जीवन के द्वार पर दस्तक दे।

आप यह भी ज्ञात रखें कि -अल्लाह आप पर कृपा करे- कि अल्लाह ने आपको एक बहुत बड़े कर्म का आदेश दिया है। अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ۝٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात: "अल्लाह तआ़ला एवं उसके देवदूत अपने दूत पर रहमत भेजते हैं, ए मोमिनो! तुम भी उन पर दरूद भेजो और ख़ूब सलाम भेजते रहा करो।"

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तुम्हारे सर्वश्रेष्ठ दिनों में से शुक्रवार का दिन भी है, इस कारणवश उस दिन मुझ पर अधिक से अधिक दरूद भेजो इसलिए कि तुम्हारा दरूद मुझ पर प्रस्तुत किया जाता है।"

● हे अल्लाह! तू अपने दास एवं दूत पर अपनी रहमत एवं सलामती अवतरित कर, उनके पश्चात आने वाले शासकों, महान आज्ञाकारों एवं प्रलय के दिन तक शुद्धता के साथ उनकी आज्ञाकारीता करने वालों से प्रसन्न हो जा।

● हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं श्रेष्ठता प्रदान कर, बहुदेव वाद एवं बहूदेव वादियों को अपमानित कर दे एवं अपने धर्म की रक्षा कर।

● हे अल्लाह! संपूर्ण मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक लागू करनेअपने दिन को सर्वोच्च करने की शक्ति प्रदान कर एवं उन्हें अपने प्रजाओं हेतु कृपालु बना।

● हे अल्लाह! हम तेरे वरदानों के नष्ट होने से, तेरे दिए हुए स्वास्थ्य के पलट जाने से, अचानक आने वाली यातनाओं से एवं तेरे प्रत्येक प्रकार के क्रोध से तेरा शरण मांगते हैं।

● हे अल्लाह! हम तुझसे तेरा शरण मांगते हैं पागलपन से, दस्त से एवं प्रत्येक प्रकार के बुरे रोगों से।

● हे अल्लाह! हमें इस संसार में एवं आख़िरत में भलाई प्रदान कर एवं नरक की यातना से वंचित रख।

● ए अल्लाह के दासो! अल्लाह तआ़ाला न्याय का, भलाई का एवं परिवार वालों के संग शुभ व्यवहार करने का आदेश देता है, निर्लज्जता के कर्मों, अभद्र गतिविधियों, एवं अत्याचार व अन्याय से रोकता है, वह स्वयं तुम्हें सलाह दे रहा है कि तुम सलाह को प्राप्त करो, इस कारणवश तुम महान अल्लाह का स्मरण करो, वह तुम्हें याद रखेगा, उसके वरदानों पर आभार व्यक्त करो वह तुम्हें अधिक वरदान प्रदान करेगा, अल्लाह का स्मरण बहुत बड़ी चीज़ है, तुम जो कुछ करते हो वह उस से अवगत है।

سبحان ربنا رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين.

اللهم صل وسلم على نبينا محمد وآله وصحبه.

शीर्षक: शुक्रवार के दिन की विशेषताएँ

إن الحمد لله نحمده، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रशंसा ओं के पश्चात !

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है, सबसे उच्च मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है एवं धर्म में अविष्कार की गई हर नई चीज़ नवोन्मेष है, हर नवोन्मेष त्रुटि है और हर त्रुटि नरक में ले जाने वाली है।

मुसलमानो! अल्लाह तआला से भय करो एवं उसका डर अपने हृदय में उत्पन्न करो, याद रखो कि अल्लाह तआला अपनी संपूर्ण जीव-जंतुओं का पालनहार एवं रब है उसका एक दृश्य यह है कि वह जिस जीव को चाहता है सर्वोत्तम एवं उच्च स्थान वाला बना देता है; चाहे वह मनुष्य हों, स्थानें हों अथवा समय हो। इसके पीछे अल्लाह तआला की बुद्धिमत्ता होती है जिस से वही अवगत है, अल्लाह का कथन है:

﴿وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ﴾ [سورة القصص:٦٨]

अर्थात: "आपका पालनहार जो चाहता है अविष्कार करता है और जिसे चाहता है चुन लेता है।"

अल्लाह तआला ने मनुष्यों में से दूतों को चुना, दूतों में उच्च साहस वाले रसूलों का चयन किया जोकि नूह, इब्राहिम, मूसा, ईसा एवं मुहम्मद अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम हैं। इसके अतिरिक्त इन पांचों में से वे मित्र स्वरूप (ख़लील) चयन किए गए जो इब्राहिम और मोहम्मद अलैहिमस्सलाम

हैं। इन दो मित्रों में भी मुहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का चयन किया गया जो संपूर्ण दूतों में सर्वोत्तम एवं सर्वश्रेष्ठ हैं। -सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम-।

अल्लाह तआला ने विशेष रुप से जिन स्थानों को सर्वोच्च बनाया उनमें से मक्का भी है जिसे अल्लाह तआला ने समस्त धरती में से चयन किया इसके पश्चात मदीना का स्थान है मस्जिद-ए-ह़राम एवं मस्जिद-ए-नबवी में पढ़ी जाने वाली नमाज़ का लाभ एवं सवाब कई गुना बढ़ा दिया।

जिन समयों का अल्लाह ने चयन किया है उनमें शुक्रवार का दिवस भी है, जो सारे दिवसों का प्रमुख है। अल्लाह ने इसे अधिकतम विशेषताओं से वर्णित किया है एवं कुछ कारणों के आधार पर इसे उच्च स्थान प्रदान किया है, उन में से कुछ मूल कारण निम्नलिखित हैं:

(१) इस दिन उच्च स्तरीय घटनाएँ हुईं, ओस बिन ओस रज़ि अल्लाहू अन्हू रिवायत करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: " तुम्हारे दिवसों में सबसे सर्वोत्तम शुक्रवार का दिवस है, इसी दिन आदम अलैहिस्सलाम को बनाया गया एवं इसी दिन उनका निधन हुआ, इसी दिन सूर फुंका जाएगा एवं इसी दिन सब पर बेहोशी प्रकट होगी।

(इसे अबू दाऊद: १०४३ ने रिवायत किया है एवं अल-बानी रहिमहुल्लाह ने सहीहु-अबी दाऊद:१०४७ में सहीह कहा है।)

अबहुरैरा रज़ि अल्लाहू अन्हू का कथन है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: " सर्वश्रेष्ठ दिवस जिसमें सूर्य निकलता है शुक्रवार का दिन है, इसी दिन आदम को बनाया गया था एवं इसी दिन उन्हें स्वर्ग में प्रवेश कराया गया, और उसी दिन उन्हें उस से निकाला गया (धरती का

शासन उन्हें थमाया गया।), एवं प्रलय भी शुक्रवार ही को होगा।" (सहीह मुस्लिम:८५४)

(२) शुक्रवार के दिन की एक विशेषता यह है कि यह लोगों के इकट्ठा होने एवं एक दूसरे के जन्म व मृत्यु के अनुस्मारक का दिन है, सर्वोच्च अल्लाह ने प्रत्येक समूह (उम्मत) में सप्ताह में एक विशेष दिवस का चयन किया, जिसमें उपासना के लिए वे अपने आप को मुक्ति रखते, एवं एक दूसरे को जन्म व मृत्यु, लाभ एवं यातना का अनुस्मारक कराने हेतु इकट्ठा होते थे। इस सभा के माध्यम से वह उस महासभा को याद करते थे जो अल्लाह रब्बुल आलमीन के समक्ष आयोजित होगा। इस उद्देश्य को पूरा करने हेतु सबसे उपयुक्त दिन शुक्रवार था। इस कारणवश अल्लाह तआला ने इस समूह (मुहम्मडन) के सर्वोच्च एवं सर्वश्रेष्ठ होने को ध्यान में रखते हुए इस दिवस को भंडारण रखा, इस दिन इनके इकट्ठा होने को निर्धारित किया, ताकि वे आज्ञाकारीता एवं उपासना करें और सृष्टि की बुद्धिमत्ता एवं जीवन के उद्देश का अनुस्मारक करें। इस कुछ दिनों के सांसारिक जीवन को समझें एवं उस दिन का याद करें जिस दिन आकाश एवं पृथ्वी लपेट दिए जाएंगे, एवं संपूर्ण वस्तुएं उसी परिस्थिति में आ जाएंगी जिसमें अल्लाह ने उनका आविष्कार किया था, यह अल्लाह का सत्यता पर आधारित वचन है, यही मूल कारण है कि नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम फज्र की उपासना में (अलिफ़-लाम-मीम तंज़ील)) एवं (हल अता अलल-इंसान) का सस्वर पाठ किया करते थे। क्योंकि यही वह तो अध्याय हैं जिनमें संसार के प्रारंभिक एवं अंतिम स्थितियों, जीव जंतुओं के प्रलय के मैदान में इकट्ठा होने एवं उन्हें स्वर्ग व नरक में ले जाने का उल्लेख है।

(यह इब्न-ए-क़ैय्यिम का कथन है, देखें: ज़ाद-उल-मआ़द ०१/४२१-४२२ संक्षेप एवं न्यूनतम रद्दो बदल के साथ।)

(३) शुक्रवार की एक विशेषता यह भी है यह एक ऐसा त्यौहार है जो हर सप्ताह लौटकर आता है। जैसा की हदीस में आया है इब्न-ए-अब्बास रज़ि अल्लाहू अन्हूमा रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: " नि: संदेह यह त्यौहार का दिन है, अल्लाह तआला ने इसे मुसलमानों के लिए त्योहार का दिन घोषित किया है, इसलिए जो कोई जुमा के लिए आए वह स्नान करके आए, एवं यदि हो सके तो सुगंधित होकर आए, एवं तुम लोग दातुन को आवश्यक रूप से अपने ऊपर प्रयोग करो।"

(इसे इब्न-ए-माजा:१०९८ ने रिवायत किया है एवं शैख़ अल-बानी रहिमहुल्लाह न सहीह इब्न-ए-माजा में हसन कहा है।)

(४) शुक्रवार की एक विशेषता यह भी है की अल्लाह तआला ने सर्वोच्च समूह (मुहम्मडन समाज) को यह दिवस प्रदान किया एवं उनके लिए ही भंडारण करके रखा, जोकि मोहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का समूह है। इनके अतिरिक्त अन्य समूहों से छुपा कर रखा। अबू हुरैरा एवं हुज़ैफ़ा रज़ि अल्लाहू अन्हूमा कहते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: " जो मनुष्य हमसे पूर्व थे उन्हें शुक्रवार के पथ से हटा दिया, इस कारणवश यहूदियों के लिए शनिवार का दिन हो गया एवं नसारा के लिए रविवार का दिन। फिर अल्लाह तआला ने इस संसार में हमें लाया और शुक्रवार के दिन की ओर हमें दिशा-निर्देश दिया।"

(मुस्लिम: ८५६)

(५) शुक्रवार की एक विशेषता एवं गुणवत्ता यह भी है कि इस दिन फज्र की उपासना सामूहिक रूप में करना पूरे सप्ताह उपासना करने से अधिक अच्छा है, इब्न-ए-उमर रज़ि अल्लाहू अन्हूमा कहते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: " अल्लाह के निकट संपूर्ण उपासनाओं की तुलना में शुक्रवार के दिन सामूहिक रूप में फज्र की उपासना करना अधिक अच्छा है। "

(इसे बैहक़ी ने शअ़बुल-ईमान:२७८३ में रिवायत किया है एवं शैख़ अल-बानी रहिमहुल्लाह ने सहीहुल-जामे १११८, एवं अस्सहीहह:१५६६ में सहीह कहा है)

(६) शुक्रवार के दिन की एक विशेषता यह भी है कि इस दिन फज्र की उपासना की प्रथम रकअ़त में सूरह-ए-सजदा एवं द्वितीय रकअ़त में सूरह-ए-इंसान का सस्वर पाठ करना सुन्नत है, अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहू अन्हू से मरवी है कि "रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शुक्रवार के दिन फज्र की उपासना की प्रथम रकअ़त में (अलिफ़-लाम्म-मीम तनज़ील) एवं द्वितीय रकअ़त में ﴿هَلۡ أَتَىٰ عَلَى ٱلۡإِنسَٰنِ حِينٞ مِّنَ ٱلدَّهۡرِ لَمۡ يَكُن شَيۡـٔٗا مَّذۡكُورًا ١﴾ [سورة الإنسان:١] (हल अता अलल-इंसान-ए-हीनुम्मिनद्दहरि लम यकुन शैअम्मज़कूरा।) का सस्वर पाठ किया करते थे।"

(बुख़ारी:८९१, मुस्लिम:८८०, उल्लेख किए गए शब्द मुस्लिम के हैं)

शैख़ुल-इस्लाम इब्न-ए-तैमिया रहिमहुल्लाह लिखते हैं: " रसूल सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम शुक्रवार के दिन फज्र की उपासना में इन दिनों सूरतों का सस्वर पाठ इस कारणवश किया करते थे क्योंकि इस दिन जो कुछ हुआ एवं जो कुछ होगा उसकी सूचना इन दोनों सूरतों में दी गई है, आदम के

संतान की सृष्टि, प्रलय के दिन एवं दासों के उठाए जाने का उल्लेख है, और यह सारी शुक्रवार के दिन होने वाली घटनाएँ हैं। इसलिए शुक्रवार के दिन इन सूरतों के सस्वर पाठ के माध्यम से मनुष्यों को इन घटनाओं का अनुस्मारक कराया जाता है, जो इसी दिन घटने वाले हैं। इब्न-ए-तैमिया का कथन समाप्त हुआ।

(ज़ाद-उल-मआ़द: ०१/३७५)

(७) शुक्रवार के दिन की एक विशेषता यह भी है कि इस दिन विशेष रूप से सूरह-ए-कहफ़ का सस्वर पाठ किया जाता है, अबू सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहू अन्हू की मरफ़ू रिवायत है: "जो व्यक्ति शुक्रवार के दिन सूरह-ए-कहफ़ का सस्वर पाठ करता है, उसके लिए दो शुक्रवार के बीच का समय उज्जवल हो जाता है।"

(इसे हाकिम ने 'अल-मुस्तदरक": ०२/३६८ में एवं बैह़क़ी: ०३/२४९ ने उन के पथों से रिवायत किया है, एवं अल-बानी ने अल-इरवा: ०३/९३ सहीह कहा है एवं प्राथमिकता इस बात को दी है कि यह अबू सईद ख़दरी रज़ि अल्लाहू अन्हू पर मौक़ूफ़ है।)

(८) शुक्रवार के दिन की एक विशेषता यह भी है इसमें एक समय पाया जाता है जिसमें प्रार्थना स्वीकार की जाती है, उस समय में अगर कोई मुस्लिम दास अल्लाह से कुछ मांगता है तो अल्लाह उसकी मांग आवश्यक रूप से पूरी करता है, सहीहैन में अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहू अन्हू से मरवी है रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "शुक्रवार के दिन एक ऐसा समय आता है कि मुस्लिम दास यदि उस समय को प्राप्त कर लेता है एवं उसमें कोई अच्छाई व भलाई की मांग कर लेता है तो अल्लाह तआला

उसकी मांग आवश्यक रूप से पूरी करता है।" फ़रमाया: "वह समय न्यूनतम रहता है।" अर्थात: बहुत तेजी से निकल जाता है।

(इसे बुख़ारी:९५३, एवं मुस्लिम: ८५२ ने रिवायत किया और उल्लेख किए गए शब्द मुस्लिम के हैं)

(९) शुक्रवार की एक विशेषता यह भी है कि जिस व्यक्ति की मृत्यु शुक्रवार की रात्रि अथवा दिन में होती है तो अल्लाह उसे क़ब्र के उत्पीड़न से सुरक्षित रखता है, अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि अल्लाहू अन्हूमा कहते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: " जिस मुसलमान का शुक्रवार के दिन अथवा रात्रि में देहांत होता है अल्लाह उसे क़ब्र के उत्पीड़न से सुरक्षित रखता है।"

(इसे तिर्मीज़ी:१०८० ने रिवायत किया है, एवं अल-बानी रहिमहुल्लाह ने अहकामुल-जनाएज़: पृष्ठ: ४९-५०, लिखा है कि यह हदिस संपूर्ण स्वरूप सहीह अथवा हसन है।)

(१०) शुक्रवार के दिन की एक विशेषता यह भी है कि इस दिन शुक्रवार की उपासना की जाती है, जो कि एक सर्वश्रेष्ठ एवं महिमा वाली उपासना है, अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में विशेष स्वरुप इस उपासना हेतु पुकारने का उल्लेख किया है, अल्लाह का कथन है" :

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِذَا نُودِىَ لِلصَّلَوٰةِ مِن يَوْمِ ٱلْجُمُعَةِ فَٱسْعَوْاْ إِلَىٰ ذِكْرِ ٱللَّهِ وَذَرُواْ ٱلْبَيْعَ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝٩﴾ [سورة الجمعة:٩]

अर्थात: "ए वो लोगो जो ईमान लाए हो! जब शुक्रवार के दिन उपासना के लिए अज़ान दी जाए तो तुम लोग अल्लाह की याद की ओर दौड़ पड़ो, एवं

की क्रिय-विक्रिय को त्याग दो, यह तुम्हारे हित में अधिक अच्छा है यदि तुम्हें ज्ञात है।"

*(११) शुक्रवार के दिन की एक विशेषता यह भी है कि इसमें दान-पुण्य करने का लाभ कई गुना बढ़ा कर दिया जाता है, अब्दुल रज़्ज़ाक ने अपनी पुस्तक "अल-मुसन्नफ़" में कअ़ब रज़ि अल्लाहू अन्हू से रिवायत किया है, वह कहते हैं: "शुक्रवार के दिन दान-पुण्य करना अन्य दिनों की तुलना में अधिक लाभदायक है।" इब्न-ए-अबी शैबा ने अपनी पुस्तक "अल-मुसन्नफ़" में इन्ही से रिवायत किया है: शुक्रवार के दिन दान-पूण्य करने का लाभ कई गुना बढ़ा कर दिया जाता है।"

इब्न-ए-क़ैय्यिम रहिमहुल्लाह लिखते हैं: शुक्रवार के दिन दान-पुण्य करना अन्य दिनों की तुलना में कुछ अलग है, सप्ताह के अन्य दिनों की तुलना में शुक्रवार के दिन दान-पुण्य करना ऐसे ही है जैसे वर्ष के समस्त महीनों की तुलना में रमज़ान में दान-पुण्य करना। मैंने शैख़ुल-इस्लाम इब्न-ए-तैमिया -क़द्दसल्लाहु रूहहु- को देखा जब वह शुक्रवार के दिन उपासना के लिए निकलते तो गृह में जो कुछ रोटि आदि होती उन्हें अपने साथ रख लेते एवं रास्ते में छुपा कर उनको दान कर देते। मैंने उनको कहते हुए सुना: "यदि अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रार्थना (सरगोशी व मुनाजात) से पूर्व दान-पुण्य करने का आदेश दिया है, तो अल्लाह तआला की सरगोशी व मुनाजात से पूर्व दान-पुण्य करना अधिक अच्छा है।" इब्न-ए-क़ैय्यिम रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ। (ज़ाद-उल-मआ़द:४०७)

(१२) शुक्रवार के दिन की एक विशेषता यह भी है कि इसमें मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर प्रचुरता के साथ दुरूद भेजना मुस्तहब है, क्योंकि इस दिन आप पर दुरूद भेजने का जो लाभ है वह अन्य कार्यों पर नहीं है, वह इस कारणवश कि मुहम्मडन समूह को इस संसार में जो भी सांसारिक एवं प्रलयिक अच्छाइयाँ व भलाईयां प्राप्त हुई हैं वो आप ही के माध्यम से प्राप्त हुई हैं, इसलिए आपका आभार एवं आपके अधिकारों का न्यूनतम पाठ यह है कि आप पर प्रचुरता के साथ दुरूद भेजा जाए, इसके अतिरिक्त आप पर दुरूद भेजने का जो अर्थ है उसे भी बुद्धि में रखा जाए, वह यह है कि आपके लिए सुंदरता पूर्वक प्रशंसा, सर्वोच्च स्थान और आकाश एवं पृथ्वी में सबसे भली चर्चा हेतु प्रार्थना करना।

शुक्रवार की ये कुछ विशेषताएं हैं जिनके कारण शुक्रवार का दिन अल्लाह एवं जीव-जंतुओं के निकट उच्च स्थान वाला एवं समस्त दिनों का प्रमुख है।

अल्लाह तआला हमें एवं आपको क़ुरआन की बरकतों से मालामाल फ़रमाए, हमें एवं आपको इसके श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाह से लाभ पहुंचाए, मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह तआला से अपने लिए एवं आप सभी के लिए क्षमा मांगता हूं आप भी उसे क्षमा चाहें, नि: संदेह वह अधिक पश्चाताप स्वीकार करने वाला एवं बहुत क्षमा करने वाला है!

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد!

आप यह भी ज्ञात रखें -अल्लाह आप पर अपनी कृपा करे- कि अल्लाह तआला ने शुक्रवार के दिन प्रचुरता के साथ रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजने का आदेश दिया है, अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात: " अल्लाह तआला एवं उसके देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं और ए विश्वासियो! तुम भी उन पर दुरूद भेजो एवं अधिक सलाम भेजते रहा करो।"

हे अल्लाह! तू अपने दास एवं रसूल पर रहमत व सलामती भेज, तू उनके पश्चात आने वाले महान शासकों (ख़ुलफ़ा), समर्थकों एवं प्रलय तक शुद्धता के साथ उनकी आज्ञाकारिता करने वालों से प्रसन्न हो जा। हे अल्लाह इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं समृद्धि प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहुदेववादीयों को अपमानित कर दे, तू अपने इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट कर दे एवं अपने एकेश्वरवाद की सहायता कर! हे अल्लाह! हमें अपने देशों में शांतिपूर्ण जीवन प्रदान कर, हमारे धर्म गुरुओं एवं शासकों को सुधार दे, उन्हें दिशा निर्देश का पालन करने वाला बना, उन्हें अच्छा परामर्शदाता प्रदान कर।

हे अल्लाह! मुसलमानों के साथ यह महामारी ऐसी लगी हुई है जिस से तेरे अतिरिक्त कोई भी अवगत नहीं, हे अल्लाह! तू हमसे इस महामारी को दूर कर दे, नि: संदेह हम मुसलमान हैं, हे अल्लाह! इस महामारी के कारण जिन मुसलमानों की मृत्यु हो गई है, उन पर अपनी कृपा कर एवं जो अस्वस्थ हैं उन्हें स्वस्थ कर दे।

हे हमारे पालनहार! हमें इस संसार में भलाई एवं प्रलय में लाभ दे, एवं नरक की यातना से सुरक्षा प्रदान कर!!!

عباد الله، إن الله يأمر بالعدل والإحسان وإيتاء ذي القربى وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغي، يعظكم لعلكم تذكرون، فاذكروا الله العظيم يذكركم، واشكروه على نعمه يزدكم، ولذكر الله أكبر، والله يعلم ما تصنعون.

शीर्षक: रमज़ान की दस हि़कमतें

प्रथम उपदेश

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रशंसाओं के पश्चात!

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त(नवाचार)है और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।
1-ए मुसलमानो!में आपको और स्वयं को अल्लाह के तक़वा व उससे डरने का प्रामर्श करता हूं,यही वह प्रामर्श है जो पूर्व और पश्चात के समस्त लोगों को कया गया है,अल्लाह का कथन है:

﴿وَلَقَدۡ وَصَّيۡنَا ٱلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلۡكِتَٰبَ مِن قَبۡلِكُمۡ وَإِيَّاكُمۡ أَنِ ٱتَّقُواْ ٱللَّهَۚ﴾ [سورة النساء:١٣١]

अर्थातः निसंदेह हमने उन लोगों को जो तुमसे पश्चात पुस्तक दिए गए थे और तुमको भी यही आदेश किया है कि अल्लाह से डरते रहो।

- इसलिऐ अल्लाह तआ़ला से डरें और उसका भय रखें,उसकी आज्ञाकारी करें और उसके अवज्ञा से बचें,जान लें कि अल्लाह तआ़ला का अपनें बंदों पर यह कृपा ही है कि उनके लिऐ अच्छाई एवं कलयाण के अवसर प्रदान किये,जिनमें पुण्य कार्य पर कई गुना पुण्य मिलता है,बूरे कार्य पर क्षमा प्रदान किया जाता है,और स्वर्ग में मोंमिनों (विश्वासियों) के स्थान उच्च किये जाते हैं।
- ऐ अल्लाह के बंदो(दासों)! अल्लाह तआ़ला ने अपनी हि़कमत(नीति) से बंदों के लिए रमज़ान को मशरू (अनिवार्य) किया है,जिसमें फजर के समय से लेकर सूर्य अस्त होने तक मनुष्य भोजन-जल और संभोग से रुका रहता है।

1-अल्लाह तआ़ला ने बड़े दूरदृष्टिता से रोज़े को फरज़ किया है(यह अध्याय "अलइस्लाम,सवाल व जवाब" वेबसाइट(http://islamqa.info/ar/26862) और शैख मोहम्मद बिन सालेह बिन ओसैमीन रहिमहुल्लाह की पुस्तक''मजालिसो शहरे

रमज़ान''के बाबुल मज्लिस अलतासे से संक्षेप एवं हेरफेर के साथ लिया गया है।)उनमें सबसे बड़ी हिकमत(नीति) तक़्वा (धर्मनिष्ठा) की प्राप्ति है:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ كُتِبَ عَلَيۡكُمُ ٱلصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ١٨٣﴾

[سورة البقرة:١٨٣]

अर्थातः ऐ ईमान वालो!तुम पर रोज़े रखना फरज़(अनिवार्य)किया गया है,जिस प्रकार तुमसे पूर्व के लोगों पर फरज़(अनिवार्य) किये गऐ थें,ताकि तुम तक़्वा(ईश्वर भक्ति) अपनाओ।

आयत से ज्ञात हुआ कि रोज़े के अनिवार्य होने की हिकमत(नीति)यह है कि तक़्वा(धर्मनिष्ठा) अपनाया जाऐ,तक़्वा(पुण्यशीलता) यह है कि बंदा अपने और अल्लाह की यातना के मध्य बचाव की दीवार बनाए,वह इस प्रकार कि अल्लाह के आदेशों को पूरा करे और अल्लाह ने जिन चीजों से रोका है उससे रुक जाए।

2-रोजा़ की एक हिकमत(नीति) यह है कि वह नेमतों (आशार्वदों)के आभारी होने का माध्यम है,क्योंकि रोजा़ नाम है खाने,पीने और संभोग से अपने आपको बचाने का,जो कि बहुत बड़ी नेमत(इश्वरकृपा) है,किंतू रोज़े की स्थिति में इनसे रुके रहने से मनुष्य को उनकी महत्ता का एहसास होता है,जब मनुष्य इन नेमतों(प्रदानों) से वंचित होता है तो उनका महत्व समझ में आता है,इस प्रकार रोज़े की स्थिति में इनसे दूर रहना उन नेमतों(आशीर्वादों)पर अल्लाह का आभार व्यक्त करने पर उकसाता है।

3-रोज़े की एक हिकमत(नीति)यह है कि वह अल्लाह की ह़राम(निषिद्ध) की हुई चीजों को छोड़ने का माध्यम है,क्योंकि रोजा़ व्यक्तिगत इच्छाओं को मात देने और एकता की कठोरता और अहंकार से नफस(आत्मा) को दूर रखने का कारण है, जिससे मनुष्य के अंदर सत्य को स्वीकारने और लोगों के साथ विनीत भाव से सुंदर व्यवहार करने का गुण जन्म लेता है,जब्कि हमेशा पेट भरा रखने और महिलाऔं से संभोग करने से अहंकार और नेमत(प्रदान) की नाशुकरी का तत्व जन्म लेता है।

4-रोज़ा की एक हिकमत(नीति) यह भी है कि वह काम-वासना पर प्रभुत्व प्राप्त करने में सहायता करता है,क्योंकि नफस(आत्मा)जब पेट भरे स्थिति में हो तो उसमें काम-वासना उत्पन्न होता है,और जब वह भूका हो तो काम-वासना से दूर रहता है,इसी लिऐ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"ऐ युवाओं का समूह! तुम में से जो भी विवाह की शक्ति रखता हो तो उसे निकाह करलेना चाहिऐ और जो निकाह की

शक्ति न रखता हो वह रोज़े रखले क्योंकि इनसे नफसानी(आंतरिक) इच्छाऐं टूट जाती हैं"(इसे बोखारी:5065 ने इब्नेमसऊद रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।)

5-रोज़े की एक हिकमत(नीति)यह भी है कि वह मिसकीनों/गरीबों के लिऐ अनूराग एवं कृपा का स्त्रोत है,क्योंकि रोज़ा रखने वाला जब कुछ समय के लिऐ भूख का कष्ट महसूस करता है तो उसके अंदर उन फकीरों और गरीबों की याद ताजा हो जाती है जो हर समय भूखे प्यासे होते हैं,जिसके फलस्वरूप उसके अंदर फकीर व गरीब के प्रति कृपा व नर्मी पैदा होती है,उसके साथ सुंदर व्यवहार करने और उनको दान करने का भाव जन्म लेता है,इस प्रकार रोज़ा गरीबों के लिऐ अनूराग व कृपा और समाज में आपसी प्रेम को बढ़ावा देने का माध्यम बन जाता है।

6-रोज़े की एक हिकमत (नीति) यह है कि उससे शैतान पराजित व निर्बल होता है,मनुष्य के प्रति उसका वसवसा निर्बल होजाता है,इस प्रकार मनुष्य बुरे कार्यों को करना कम करदेता है,क्योंकि शैतान मनु के संतानों की रगों में रक्त के जैसा दौड़ता है,जैसा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसकी सूचना दी है(इसे बोखारी:2039 और मुस्लिम:2175 ने सफिया रजीअल्लाहु अंहा से वर्णित किया है।)रोज़े से शैतान का मार्ग तंग होजाता है जिससे वह निर्बल हो जाता है और उसका प्रभुत्व कम हो जाता है,अतः ह्रदय में अच्छाई व पुण्य के कार्य करने और पापों से दूर रहने का तत्व उमंडने लगता है।

7-रोज़े की एक हिकमत (नीति) यह है कि रोज़ादार व्यक्ति अपने नफस को हर घड़ी अल्लाह तआ़ला को याद रखने का आदी बनाता है,इस प्रकार से वह क्षमता होने के होते हूऐ भी आत्मा के इच्छाओं को छोड़ देता है,केवल इस ज्ञान के आधार पर कि अल्लाह तआ़ला उसे देख रहा है।

8–रोज़े की एकहिकमत (नीति) यह है कि वह मोमिन(विश्वासी) को अधिक से अधिक आज्ञा के कार्यों की आदत डाल देता है,इसलिऐ कि अधिकतर रोज़े की स्थिति में मनुष्य अधिक से अधिक आज्ञा के कार्य करता है,जैसे अल्लाह का ज़िक्र और कुरान की तेलावत,इसके फलस्वरूप वह अन्य दिनों में भी इन इबादतों(प्रार्थनाओं)को करने का आदी हो जाता है।

9-रोज़े की एक हिकमत(नीति) यह भी है कि इसके माध्यम से दुनिया और उसकी इच्छाओं से रूची समाप्त हो जाती है और अल्लाह तआ़ला के पास जो पुण्य का परिणाम है उसके प्रति रूची उत्पन्न होता है।

10-रोज़ा की एक नीति यह भी है कि इसके माध्यम से समस्त संसार में अल्लाह की पूजा का प्रदर्शन होता है,आप देखते हैं कि समस्त संसार के समस्त मुसलमान इस महीने में सामूहिक रूप से रोज़े रखते हैं,यहां तक कि वे लोग भी रोज़े रखते है जो समान्य दिनों में इस्लाम विरोधी कार्य करते हैं,जब रमज़ान आता है तो वे भी अपने मुसलमान भाइयों के साथ रोज़े रखते कोई उनमें बेरोज़ा नहीं रहता,यहां तक कि बेराज़ा पापी-अल्लाह की पनाह-भी खुलेआम खाने पीने की हिम्मत नहीं करता,बल्कि काफिर भी मुसलमानों के सामने खाने पीने से बचता है,निसंदेह यह एक महत्वपुर्ण प्रार्थना बल्कि इस्लाम के एक स्तंभ का व्यावहारिक प्रदर्शन है।

11-रोज़ा की एक हिकमत(नीति) यह भी है कि इसके माध्यम से मानवीय शरीर को अनेक चिकित्सा लाभ प्राप्त होते हैं,रोजा़ ह्रदय के धड़कन को सही करता है,पाचन तंत्र को राहत का अव्सर देता है, रक्त को हानीकारक चरबी,कोलसर्टोल और खट्टे डकार से साफ करता है,पेट को आराम पहुंचाता है,मनुष्य को मोटापे से बचाता है,शरीर में जो जहरीली सामग्री जमा हो जाते हैं,उनको बाहर करने में सहायता करता है,रक्तचाप और शुगर (sugar) का संतुलन बनाऐ रखता है।

- यह वे दस हिकमतें(नीतियां) हैं जो रोज़े के फरज़(अनीवार्य) होने में छूपी हूई हैं,यह इस्लाम धर्म के लिऐ कोई आश्चर्य का विषय नहीं,क्योंकि अल्लाह तआ़ला के अच्छे नामों में एक नाम"الحكيم" भी है,उस पवित्र अल्लाह के समस्त आदेश अत्यंत हिकमत(नीति),संपुर्णता और महारत पर आधारित होते हैं,हम कभी कभी उन हिकमतों(नीतियों) से अवगत भी होते हैं और कभी कभी हमें इनका ज्ञान नहीं होता,अथवा हम कुछ हिकमतों(नीतियों) को जान रहे होते हैं और अनेक नीतियॉ हमसे छुपी रह जाती हैं।
  - अल्लाह तआ़ला से प्रार्थना है कि हमें रमज़ान के रोज़े उसी प्रकार रखने की तौफीक दे जिस प्रकार उसे पसंद है,अपने ज़िक्र और आभार और सुंदर प्रार्थना पर हमारी सहायता फरमाए।
  - अल्लाह तआ़ला हमें और आप को कुरान की बरकतों से लाभ पहुंचाए हमें और आपको उसकी आयतों और हि़कमतों पर आधारित प्रामर्शों से लाभ पहुंचाए में अपनी यह बात कहते हूए अल्लाह तआ़ला से अपने लिऐ और आप सबके लिए प्रत्येक पापों से क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे तौबा करें,निसंदेह वह अति तौबा स्वीकारने वाला और अति क्षमा प्रदान करने वाला है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد:

आप जान लें-अल्लाह आप पर कृपा करे-कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह तरीक़ा था कि जब नया चांद देखते तो फरमातेः

"اللهم أهِلَّه علينا باليُمن والإيمان والسلامة والإسلام، ربي وربك الله"

(इसे अह़मद (1/162) ने तलह़ा बिन ओबैदुल्लाह रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है,और अलमुसनद के शोधकर्ताओं ने हदीस संख्याः1397 के अंतर्गत इसे शवाहिद के आलोक में ह़सन कहा है।)

(अर्थातःहे अल्लाह!तू उसे हम पर शांति,ईमान,सलामती और इस्लाम के साथ निकाल, (ऐ चॉद!)मेरा और तेरा रब अल्लाह है।)

आप जब भी नया चांद देखते तो यह दुआ(प्रार्थना) पढ़ते,चाहे रमज़ान का चांद हो अथवा किसी और महीने का,हमें भी आप का अनुगमन करनी चाहिऐ,विशेष रूप से इस लिए कि इस प्रार्थना में अच्छे कार्यों पर अल्लाह की सहायता मांगी गई है।

- हे अल्लाह के बंदो!जब अल्लाह तआला दासों पर यह इनाम करता है कि उसे यह महीना मिल जाए तो उसे यह जानना चाहिए कि यूंही बेकार अल्लाह ने उसे नहीं प्रदान किया है,बल्कि आज़माने के लिए प्रदान किया है ताकि जान सके कि वह रमज़ान के तक़ाजों को पूरा करता है अथवा नही,जैसे रोज़े रखना,रात को क़याम करना और अपने नफस को सत्य मार्ग पर स्थिर रखना।
- अतःप्रार्थना में खूब परिश्रम व लगन से काम लीजिए,नेकियों में अपनी गतिविधि देखाइए,और लुटेरों से सतर्क रहए जो इच्छा का अनुगमन करते हैं,जो रमज़ान में भी लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं,इस प्रकार कि गफलत में डालने वाले कार्यक्रमों का प्रसारण करते और नैतिक विरौधि सिरियल चलाते हैं।

- सलफे सालेहीन(धार्मिक पूर्वजों)का यह अंदाज़ था कि वे रमज़ान में पठन-पाठन को भी छोड़ दिया करते थे ताकि रोज़ा व क़ेयाम,ज़िक्र व अज़कार और कुरान की तेलावत के लिऐ स्वयं को खाली रख सकें,भला

उस व्यक्ति का अ़मल कैसे सही हो सकता है जो इन चारों मौलिक कार्यों से बचते हुऐ खेल-कूद में व्यस्त हो जाऐ?!

- आप यह भी जानलें-अल्लाह आप पर अपनी कृपा नाज़िल करे-कि अल्लाह तआ़ला ने आपको ऐक बड़ी चीज का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थातःअल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

हे अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्माद पर रह़मत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़ेयामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट करदे,और अपने एकेश्वरवादी बंदों की सहायता फरमा।

हे अल्लाह तू हमें हमारे देशों में शांति प्रदान कर,हमारे इमामों और हमारे हाकिमों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक और हिदायत पर चलने वाला बना। हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक लागू करने और अपने धर्म के उत्थान की तौफीक़ प्रदान कर, उन्हें उनके प्रजाओं के लिऐ रह़मत बना दे।

- हे अल्लाह हमें रमजान नसीब फरमा और उसमें रोज़े रखने और रात को क़याम करने में हमारी सहायता फरमा,हे हमारे पालनहार!हमें दुनिया में नेकी दे और आखिरत में भलाई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربنا رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين.

اللهم صل وسلم على نبينا محمد وآله وصحبه.

शीर्षक: रमज़ान के महीने की २० विशेषताएँ!

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रशंसाओं के पश्चात!

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है, सबसे उच्च मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मार्ग है एवं सबसे नकारात्मक चीज़ धर्म में अविष्कार किए गए नवोन्मेष हैं, हर नवोन्मेष त्रुटि है और हर त्रुटि नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो! मैं आपको एवं स्वयं अपने को अल्लाह के भय की आज्ञा देता हूं यही वह आज्ञा है जो पूर्व एवं पश्चात के संपूर्ण मनुष्यों को दी गई। अल्लाह का कथन है:

﴿وَلِلَّهِ مَا فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَمَا فِي ٱلْأَرْضِۗ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَٰبَ مِن قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنِ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَۚ﴾ [سورة النساء:١٣١]

अर्थात: "नि:संदेह हम ने उन मनुष्यों को जो तुम से भूतपूर्व पुस्तक दिए गए एवं तुम को भी यही आज्ञा दी है कि अल्लाह से डरते रहो।"

- इस कारणवश अल्लाह तआला से भेय करें एवं उस से डरते रहें उसकी आज्ञाकारीता करें एवं अवज्ञा से बचें। ज्ञात रखें कि अल्लाह तआला जो चाहता है अपनी इच्छा से अविष्कार करता है जैसा उस उच्च एवं सर्वश्रेष्ठ की बुद्धिमत्ता को आवश्यकता होती है। इसी कारणवश उसने कुछ देवदूतों को कुछ देवदूतों पर वरियता दी, कुछ पुस्तकों को कुछ पुस्तकों पर

अग्रमानता दी, कुछ दूतों को कुछ दूतों पर प्रधानता दी, कुछ स्थानों को दूसरे स्थानों एवं समय पर वरीयता दी, इसी प्रकार रमज़ान के महीने को भी अन्य महीनों पर अग्रमान्यता दी। यह दासों के हित में अल्लाह की कृपा है कि उसने उनके लिए पुण्य एवं लाभ के अवसर प्रदान किए जिनमें सत्य कर्मों के लाभ कई गुना बढ़ा दिए जाते हैं, पापों को मिटा दिया जाता है एवं स्वर्ग में स्थान उच्च किए जाते हैं।

जान लें कि अल्लाह तआ़ला अपनी निती से जो चाहाता है पैदा करता है और जिसे चाहता है उसका चयन करता है,अत: कुछ फरिश्तों को कुछ पर फज़ीलत (प्रधानता) दी है,कुछ पुस्तकों को कुछ पर विशिष्टता प्रदान की है,कुछ पैगंबरों को कुछ पर वरिष्ठता प्रदान किया है,कुछ समयों एवं स्थानों को कुछ पर वरिष्ठता प्रदान की है,इसका एक उदाहरण यह है कि अल्लाह ने रमज़ान के महीने को अन्य समस्त महीनों पर प्रधानता दी है,यह बंदों पर अल्लाह के विशेष रह़मत (कृपा) का दृश्य है कि उसने उनके लिए पुण्य एवं भलाई के अवसर प्रदान किये,जिनमें पुण्यों का बदला बढ़ जाता है,पाप मिटाए जाते हैं और स्वर्ग में मोमिनों के स्थान उच्च किये जाते हैं।

ए अल्लाह के दासो! पिछले उद्देश्य यह बताया गया था कि अल्लाह ताला ने व्रुको १० महान बुद्धिमत्ता के आधार पर घोषित किया है। (यह द्वार अल-इस्लाम सवाल-जवाब वेबसाइट: http://islamqa।info/ar/26862, एवं शैख़ मोहम्मद बिन सालेह अल-उसैमीन रहिमहुल्लाह खेल एक मजालिसु-शहरी-रमज़ान नामक पुस्तक के नौवें अध्याय से संक्षेप एवं रद्द-व-बदल के साथ स्थानांतरित है।)

बल्कि व्रत की बुद्धिमत्ता तो इससे भी अधिक है उनमें सबसे महान बुद्धिमत्ता वह है जिसका उल्लेख अल्लाह तआला ने अपने इस कथन में किया है:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ كُتِبَ عَلَيۡكُمُ ٱلصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ١٨٣﴾
[سورة البقرة:١٨٣]

अर्थात: "ए विश्वासयो! तुम पर व्रत रखना अनिवार्य किया गया जिस जिस प्रकार तुम से भूतपूर्व मनुष्यों पर अनिवार्य किया गया था, ताकि तुम भय को अपनाओ।"

जब यह सिद्ध हो गया तब यह भी ज्ञात रखें -अल्लाह आप पर अपनी कृपा की बरखा बरसाए- कि रमज़ान के व्रत की तीस विशेषताएं हैं, उन में से कुछ विशेषताएं निम्नलिखितहैं:

1- **व्रत इस्लाम का चौथा स्तंभ है**, अब्दुल्लाह बिन उमर रज़िअल्लाहू अन्हूमा का वर्णन है: मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कहते हुए सुना: इस्लाम ५ स्तंभों पर आधारित है, यह कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई वास्तविक पूज्य नहीं, एवं नमाज़ पढ़ना, दान-पुण्य देना, हज्ज करना एवं **रमज़ान के व्रत रखना**।

(इसे बज़ार: ०८ एवं मुस्लिम: १६ ने प्रतिलिपि की एवं उल्लेख किए गए शब्द मुस्लिम के हैं)

2- व्रत की एक विशेषता यह भी है कि यह इस्लाम से **पूर्व धर्मों में भी प्रचलित था** जो इसके सरफेस होने का प्रमाण है अल्लाह का कथन है:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ كُتِبَ عَلَيۡكُمُ ٱلصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ١٨٣﴾
[سورة البقرة:١٨٣]

अर्थात: "ए विश्वासयो! तुम पर व्रत रखना अनिवार्य किया गया जिस प्रकार तुम से भूतपूर्व मनुष्यों पर अनिवार्य किया गया था, ताकि तुम भय को अपनाओ।"

3- व्रत की एक विशेषता यह भी है कि अल्लाह ने इसका संबंध अपनी ओर किया है जोकि संपूर्ण उपासनाओं में इसकी अलग पहचान एवं सर्वश्रेष्ठ होने को प्रमाणित करता है। अबू हुरैरा रज़िअल्लाहू अन्हू रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम का कथन है: "आदम की संतान का व्रत के अतिरिक्त प्रत्येक कार्य उसका है **यह मेरा है** एवं मैं स्वयं उसका बदला दूंगा।"

अल्लाह के दासो! अल्लाह तआला का संपूर्ण इबादतों के अतिरिक्त व्रत को विशेष रूप से अपनी और संबंधित करना इस बात पर साक्ष्य है कि अल्लाह तआला के निकट यह माननीय एवं प्रिय उपासना है। इसका कारण यह है कि इस इबादत के भीतर अल्लाह के हित में दांसों का भाव खुले रूप में शुद्ध हुआ करता है क्योंकि व्रत दांसों एवं पालनहार के बीच एक गुप्त वस्तु है जिससे अल्लाह के अतिरिक्त कोई भी अवगत नहीं हो सकता। व्रत रखने वाला एकांत में उन वस्तुओं के प्रयोग करने की क्षमता रखता है जिन्हें अल्लाह तआला ने अवैध कर दिया है, परंतु वह उसका प्रयोग नहीं करता है क्योंकि उसे ज्ञात है कि उसका एक रब है जो अकेले में भी उसे देख रहा है और उसने उन वस्तुओं को उस पर अवैध कर दिया है, इसलिए वह अल्लाह की यातना से भय करते हुए उन वस्तुओं को त्याग देता है। यही वह मूल कारण है कि अल्लाह ने अपने दासों के इस शुद्धता की प्रशंसा की है और संपूर्ण उपासनाओं को छोड़ कर व्रत को विशेष रूप से अपने लिए चुन लिया है।

4- रमज़ान के व्रत की एक विशेषता यह भी है कि अल्लाह ताला ने इसके संबंध में कहा है: "**मैं स्वयं इसका परीणाम दूंगा।**" इस कारणवश अपनी ओर बदले को संबंधित किया है क्योंकि पूण्य-कार्यों बदला गणना के साथ बढ़ा-चढ़ाकर प्रदान किया जाता है। प्रत्येक पुण्य का लाभ १० गुना से लेकर ७०० गुना एवं उससे अधिक दिया जाता है। परंतु व्रत के सवाब को अल्लाह तआला ने बिना किसी गणना के अपनी और संबंधित किया है जो इस बात का साक्ष्य है कि इसका सवाब अधिक बड़ा है। वह स्वच्छ एवं विशाल अल्लाह संपूर्ण दयालु से बड़ा दयालु एवं सारे कृपालुओं से बड़ा कृपालु है। दया दयालु के स्तर के अनुसार मिलती है इस कारणवश व्रत रखने वाले का सवाब अताह एवं अनगिनत है।

5- व्रत की एक विशेषता यह है **इस में धीरज के तीनों भाग इकट्ठा हो जाते हैं:** अल्लाह की आज्ञाकारीता पर धीरज, अल्लाह ने जिन चीज़ों को अवैध कर दिया है उनसे दूरी बनाए रखने पर धीरज, एवं अल्लाह ने हमारे भाग्य में जो कठिन परिस्थितियां लिख दिए हैं उन पर धीरज। जैसे भूख प्यास गंभीरता तन एवं प्राण की दुर्बलता इस प्रकार व्रत रखने वालों की गणना उन कृपाणों में होता है जिनके संबंध में अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّمَا يُوَفَّى ٱلصَّـٰبِرُونَ أَجۡرَهُم بِغَيۡرِ حِسَابٖ﴾ [سورة الزمر:١٠]

अर्थात: "कृपाणों को पूर्णरूप से अनगिनत सवाब दिया जाएगा।"

(शैख़ मोहम्मद बिन सालेह अल-उसैमीन रहिमहुल्लाह खेल एक मजालिसु-शहरी-रमज़ान नामक पुस्तक के नौवें अध्याय से संक्षेप एवं रद्द-व-बदल के साथ स्थानांतरित है।)

6- व्रत की एक विशेषता यह भी है कि **अल्लाह तआला ने उपवास करने वालों के लिए स्वर्ग में एक ऐसा द्वार तैयार कर रखा है जिस से उनके अतिरिक्त कोई और प्रवेश नहीं करेगा**, सहल बिन सअ़द रज़िअल्लाहू अन्हू रिवायत करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है:

"स्वर्ग का एक द्वार है जिसे रैय्यान कहते हैं, प्रलय के दिन इस द्वार से केवल उपवास करने वाले ही प्रवेश करेंगे, **उनके अतिरिक्त और कोई उस से प्रवेश नहीं करेगा।** पुकारा जाएगा कि उपवास करने वाले कहां हैं? वे खड़े हो जाएंगे उनके अतिरिक्त और कोई नहीं भीतर प्रवेश कर पाएगा और जब यह लोग भीतर प्रवेश कर जाएंगे तो यह द्वार बंद कर दिया जाएगा फिर उस से कोई अंदर प्रवेश नहीं कर सकेगा।"

(इसे बुख़ारी: १८९६ एवं मुस्लिम: ११५२ ने रिवायत किया है एवं उल्लेख किए गए शब्द बुख़ारी के हैं।)

7- व्रत की एक विशेषता यह भी है कि वह **नरक से सुरक्षा देने वाला ढाल है,** उस्मान बिन अबुल-आस रज़िअल्लाहू अन्हू रिवायत करते हैं कि मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "उपवास नरक से सुरक्षा देने वाली ढाल है, जिस प्रकार तुम में से कोई युद्ध के मैदान में ढाल से अपनी सुरक्षा करता है।"

(इसे इमाम अहमद: ४/२२ ने रेवायाद किया है एवं अल-मुसनद के शोधकर्ताओं ने कहा है कि इसकी सनद मुस्लिम के शर्त पर सही है।)

8- व्रत की एक विशेषता यह भी है कि जो व्यक्ति ईमान एवं इह़तिसाब के साथ रमज़ान के महीने के रोज़े रखता है **उसके पूर्व के सारे**

पापक्षमाहोतेहैं,अबूहोरैरह रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:जो व्यक्ति ईमान रखते हुए पुण्य की नीयत से रमज़ान के रोज़े रखे उसके समस्त पिछ्ले पाप क्षमा हो जाते हैं।(इसे बोख़ारी (३८) और मुस्लिम (७६०) ने रिवायत किया है।)

अबूहोरैरह रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम मिंबर पर चढ़े और फरमाया: आमीन, आमीन, आमीन।

आप से पूछा गया कि:हे अल्लाह के रसूल!आप मिंबर पर चढ़े तो आप ने तीन बार (आमीन) कहा।

आप ने फरमाया:जिब्रील अलैहिस्सलाम मेरे पास आए और फरमाया: (जिस व्यक्ति को रमज़ान का महीना मिला और उस को क्षमा न मिल सका,वह नरक में प्रवेश करे और अल्लाह उसे (अपने कृपा से) दूर करदे,आप आमीन कहिये,तो मैं ने कहा:आमीन। (इस ह़दीस को अह़मद (२/२४६-२५४) इब्ने ख़ोज़ैमा (३/१९२) ने वर्णित किया है,इस का मूल्य मुस्लिम में (२५५१) में है,अल्बानी ने صحیح الترغیب والترہیب (९९७) में कहा है कि:यह ह़दीस ह़सन सहीह है।)

अबूहोरैरह रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाया करते थे:पांच समय की नमाज़ें,एक जुमा से दूसरा जूमा और एक रमज़ान से दूसरा रमज़ान,उनके मध्य होने वाले पापों के लिए कफ्फारा (प्रायश्चित) हैं,शर्त यह है कि बड़े पापों से बचा जाए। (सह़ीह मुस्लिम:२३३)

9- रमज़ान के महीनों के व्रत की एक विशेषता यह है कि **मुसलमानों पर यह उपवास सरल कर दिए गए हैं**, वह इस प्रकार की उपवास करने वाला जब इस से अवगत हो जाता है कि आसपास के संपूर्ण मनुष्य उपवास किए हुए हैं तो यह लगता है कि उसके लिए व्रत रखना आसान है और उसके भीतर उपासना की संदर्भ में चपलता उत्पन्न होती है।

10- व्रत की एक विशेषता यह भी है कि **अल्लाह तआला ने उपवास करने को प्रार्थना के स्वीकार करने का एक विशेष कारण घोषित किया है**, इसका साक्ष्य नबी सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम का यह कथन है: "तीन प्रकार की प्रार्थनाएं आवश्यक रूप से स्वीकार की जाती हैं: पिता की प्रार्थना, **उपवास करने वालों की प्रार्थना**, यात्री की प्रार्थना।"

(इसे बैहक़ी: ३/३५४ ने अनस बिन मालिक से रिवायत किया है, एवं अल-बानी ने अल-सहीहा: १७९७ में इसका उल्लेख किया है।)

इसके अतिरिक्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है: "अल्लाह ताला तीन प्रकार के मनुष्य की प्रार्थना वापस नहीं लौटाता: न्याय करने वाले शासक, **उपवास करने वाले यहां तक की वह उपवास तोड़ लें**, एवं उत्पीड़ित व्यक्ति।"

(इसे अहमद: ९७४३ आदि ने रिवायत किया है एवं अल-मुसनद के शोधकर्ताओं ने कहा है कि यह हदीस अधिकतम मार्ग एवं गवाहों के आधार पर सहीह है।)

11- रमजान के महीने की एक विशेषता यह भी है कि जो व्यक्ति ईमान के साथ सवाब की आशा करते हुए रमज़ान के महीने में रात्रि में जाग कर उपासना (तरावीह की नमाज़) करता है उसके पीछले पाप क्षमा कर दिए जाते हैं। अबू हुरैरा रज़िअल्लाहू अन्हू से मरवी है कि आप

सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम का कथन है: "जिसने ईमान के साथ सवाब की आशा करते हुए रमज़ान के महीने में कयामुल-लेल की, अर्थात तरावीह की नमाज़ पढ़ी; उसके पिछले पाप क्षमा कर दिए जाते हैं।"

(इसे बुख़ारी: ३७ एवं मुस्लिम: ७६० ने रिवायत किया है।)

इसके अतिरिक्त आप सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम का कथन है: "जो व्यक्ति ईमान के साथ क़्याम करे यहां तक कि वह समापन कर ले तो अल्लाह तआला उस व्यक्ति के लिए पूरी रात्रि क़्याम करने का सवाब सुनिश्चित करेगा।"

(इसे अबू दाऊद आदि ने अबू ज़र रज़िअल्लाहू अन्हू से रिवायत किया है एवं शैख़ शुऐब रहिमहुल्लाह ने इसे सहीह कहा है।)

12- रमज़ान की एक विशेषता यह भी है कि **जो व्यक्ति ईमान के साथ सवाब की आशा करते हुए रमज़ान का व्रत रखता है उसके पिछले संपूर्ण पाप क्षमा कर दिए जाते हैं**, अबू हुरैरा रज़िअल्लाहू अन्हू से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो रमज़ान के व्रत ईमान की साथ सवाब की आशा करते हुए रखे उसके पिछले संपूर्ण पाप क्षमा कर दिए जाएंगे।"

(इसे बुख़ारी: ६८ एवं मुस्लिम: ७६० ने रिवायत किया है।)

अबू हुरैरा रज़िअल्लाहू अन्हू से मरवी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मंच पर पधारे और तीन बार आमीन कहा! आप से प्रश्न किया गया तो आपने फ़रमाया: "जिब्रील अलैहिस्सलाम मेरे पास आए, और फ़रमाया: **जिसने रमज़ान के महीने को पाया एवं उसकी क्षमा नहीं हो सकी और वह नरक में प्रवेश कर गया** अल्लाह उसे अपनी दया से वंचित कर दे! -आप आमीन कहिए- तो मैंने आमीन कहा।"

(इसे अहमद: २/२४६-२५४, एवं इब्न-ए-ख़ुज़ैमा: ३/१२९ ने रिवायत किया है, इसका मूल सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या: २५५१ के अंतर्गत आई है, अल-बानी ने सहीह-उत्तरग़ीबि वत्तरहीब:९७७ में कहां है कि यह हदीस हसन सहीह है।)

अबु हुरैरा रज़िअल्लाहू अन्हू फ़रमाते हैं: रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाया करते थे: "जब मनुष्य बड़े पापों से वंचित रहा हो ०५ नमाज़ें, एक जुमा द्वितीय जुमा तक, एक रमज़ान द्वितीय रमज़ान तक बीच के समय में होने वाले पापों को मिटाने का कारण है।"

(इसे मुस्लिम: २३३ ने रिवायत किया है।)

13- रमज़ानकी एक विशेषता यह भी है कि **इस महीने में दान-पुण्य करना मुस्तह़ब है**, इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहू अन्हूमा से मरवी है कि "नबी सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम भलाई करने में सर्वश्रेष्ठ उदार थे और रमजान में आपकी उदारता की तो कोई सीमा ही नहीं थी।"

(इसे बुख़ारी:०६ एवं मुस्लिम:२३०८ ने रिवायत किया है।)

14- रमज़ान की एक विशेषता यह भी है कि **इसके ़उमरे का पुण्य कई गुना बढ़ा दिया जाता है**। इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहू अन्हूमा फरमाते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक अंसारी महिला से कहा: "जब रमज़ान आए तो उसमें उमरा कर लो, क्योंकि (रमज़ान के महीने में एक उमरा ह़ज्ज के समान होता है।"

(इसे बुख़ारी: १७८२ एवं मुस्लिम: १२५६ ने रिवायत किया है।)

15- रमज़ान के महीने की एक विशेषता यह भी है कि **रमजान की प्रत्येक रात्रि में अल्लाह ताला अपने कुछ दासों को नरक से स्वतंत्रता का प्रमाण**

देता है, अबू हुरैरा रज़िअल्लाहू अन्हू फ़रमाते हैं के रसूल सल्लल्लाहो अलेही व सल्लम का कथन है: "जब मैं रमज़ान की प्रथम रात्रिआती है तो दुष्ट देवों एवं विद्रोह जिनों को जकड़ दिया जाता है, नरक के द्वार बंद कर दिए जाते हैं, उनमें से कोई भी द्वार खोला नहीं जाता। एवं स्वर्ग के द्वार खोल दिए जाते हैं, उनमें से कोई भी द्वार बंद नहीं किया जाता। पुकारने वाला पुकारता है: भलाई के चाहने वाले! आगे बढ़, एवं पापों के चाहने वाले! रुक जा। और अग्नि से अल्लाह के बहुत से स्वतंत्र किए गए दास हैं। (हो सकता है तू भी उन्हीं में से हो!) और ऐसा रमज़ान की प्रत्येक रात्रि को होता है।"

(इसे तिर्मीज़ी:६८२, एवं इब्न-ए-माजा: १६४२ ने रिवायत किया है, एवं शैख़ अल-बानी रहिमहुल्लाह ने सहीह-हुल-जामे: ७५९ में इसे हसन कहा है।)

जाबिर रज़िअल्लाहू अन्हू फ़रमाते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला प्रत्येक उपवास के तोड़ते समय कुछ लोगों को नरक से स्वतंत्र करता है, और **यह (रमज़ान की) प्रत्येक रात्रि को होता है**।"

(इसे अहमद:२२२०२, एवं इब्ने माजा:१६४३ ने रिवायत किया है, एवं उल्लेख किए गए शब्द इब्न-ए-माजा के हैं, इसके अतिरिक्त शैख़ अल-बानी ने सहीह इब्न-ए-माजा में इसे सहीह कहा है।)

१६-१७- रमज़ान की एक विशेषता यह भी है कि **इस महीने में स्वर्ग के द्वार खोल दिए जाते, हैं नरक के द्वार बंद कर दिए जाते हैं एवं दुष्ट देवों को हथकड़ियों से जकड़ दिया जाता है**। अबू हुरैरा रज़िअल्लाहू अन्हो से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जब रमज़ान के महीने का आगमन

होता है तो स्वर्ग के संपूर्ण द्वार खोल दिए जाते हैं, नरक के द्वार बंद कर दिए जाते हैं एवं दुष्ट देवों को ज़ंजीरों से जकड़ दिया जाता है।"

(इसे बुख़ारी:१८९९, एवं मुस्लिम: १०७९ ने रिवायत किया है।)

18 -रमज़ान के महीने की एक विशेषता यह है कि इस में शैतानों को ज़ंजीरों में जकड़ दिया जाता है,इसका प्रमाण उपरोक्त दोनों ह़दीसें हैं,शैतानों को जकड़ने का मतलब यह है कि ज़ंजीर में उन्हें जकड़ देना,वह इस प्रकार से कि रमज़ान के अलावा दिनों में जिन स्थानों तक उनकी पहुंच थी,वहां तक रमज़ान में न जा सकें,बल्कि उनकी दुष्टता सीमित हो जाए,एक कथन यह भी है कि केवल दुष्ट शैतानों को ही जकड़ा जाता है।

१९- रमज़ान के महीने की एक विशेषता यह है कि **इस में प्रचुरता के साथ क़ुरआन का सस्वर पाठ करना मुस्तह़ब है**, सलफ़-ए-सालेहीन रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन की आदतथी कि वे **नबी सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम के मार्ग का पालन करते हुए रमज़ान में पूरा क़ुरआन का सस्वर पाठ पूरी व्यवस्था के साथ किया करते थे, क्योंकि जिब्रील अलैहिस्सलाम प्रत्येक वर्ष रमज़ान के महीने में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ क़ुरआन सुनते-सुनाते थे।**

२०- रमज़ान की एक विशेषता यह भी है की उपवास प्रलय के दिन दासों के हित में संस्तुति करेगा कि उन्हें उच्च स्थान प्रदान किए जाएं एवं पाप क्षमा कर दिए जाएं, अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़िअल्लाहू अन्हूमा से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: उपवास एवं क़ुरआन प्रलय के दिन दास के हित में संस्तुति करेंगे, उपवास कहेगा: (हे पालनहार! मैंने इसे खान पान एवं हवस से दूर रखा, मेरी संस्तुति इसके हित में स्वीकार कर ले।) क़ुरआन कहेगा: (हे पालनहार! मैंने इसे रात्रि के समय विश्राम लेने से दूर रखा, मेरी संस्तुति इसके

हित में स्वीकार कर ले।) इस कारण दोनों की संस्तुति स्वीकार कर ली जाएगी। (इसे अहमद: २/१४७ ने रिवायत किया है, एवं अल-बानी रहिमहुल्लाह ने सहीहुत्तरग़ीबि: ९८४ एवं सहीहुल-जामे: ७३२९ में रिवायत किया है।)

२१-रमज़ान की एक विशेषता यह भी है कि उपवास करने वालों के मूंह की गंध अल्लाह के निकट कस्तूरी के सुगंध से भी अधिक प्रिय है, अबू हुरैरा रज़िअल्लाहू अन्हू से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का प्राण है, उपवास करने वालों के मुंह की गंध अल्लाह के निकट कस्तूरी के सुगंध से अधिक अच्छा है। (बुख़ारी:१९०४, मुस्लिम: ११५१)

२२-उपवास की एक विशेषता यह है कि अल्लाह तआला उपवास करने वालों को दो प्रसन्नताएं प्रदान करता है। एक प्रसन्नता जब वह उपवास तोड़ता है एवं दुसरी प्रसन्नता जब वह अपने रब से भेंट करेगा, अबू हुरैरा रज़िअल्लाहू अन्हू से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: उपवास करने वालों को दो प्रसन्नताएं प्राप्तहों गी, (एक तो) जब वह उपवास तोड़ता है तो प्रसन्न होता है, एवं दूसरी जब वह अपने रब से भेंट करेगा तो अपने उपवास का सवाब प्राप्त करके प्रसन्न होगा। (बुख़ारी:१९०४, मुस्लिम: ११५१)

- हम अल्लाह से प्रार्थना करते हैं कि हमें रमज़ान के व्रत उसी प्रकार रखने की क्षमता प्रदान करें जिस प्रकार उसकी इच्छा है इसके अतिरिक्त अपनी याद, आभार व्यक्त करने एवं सुंदर उपासना में हमें सहयोग करे!
- अल्लाह तआला हमें एवं आपको क़ुरआन की बरकतों से मालामाल फ़रमाए, हमें एवं आपको इसके श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित

सलाह से लाभ पहुंचाए, मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह तआला से अपने लिए एवं आप सभी के लिए क्षमा मांगता हूं आप भी उसे क्षमा चाहें, नि: संदेह वह अधिक क्षमा स्वीकार करने वाला एवं बहुत क्षमा करने वाला है!

द्वितीयउपदेश!

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد:

२३-रमज़ान के महीने की एक विशेषता यह भी है कि **इसी में कुरआन का अवतार हुआ**, अल्लाह का कथन है:

﴿شَهۡرُ رَمَضَانَ ٱلَّذِيٓ أُنزِلَ فِيهِ ٱلۡقُرۡءَانُ﴾ [سورة البقرة:١٨٥]

अर्थात: "रमज़ान का महीना वह है जिसमें कुरआन को अवतरित किया गया।"

रमज़ान में भी शुभ रात्रि में कुरआन अवतरित हुआ, अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّآ أَنزَلۡنَٰهُ فِي لَيۡلَةِ ٱلۡقَدۡرِ ۝١﴾ [سورة القدر:١]

अर्थात: "हमने इसे शुभ रात्रि में अवतरित किया।"

यह एक महत्वपूण रात है, इस में कुरान लौह़-ए-मह़फ़ूज़ से बैतुल इ़ज़्ज़त की ओर उतारा गया जो आकाशीय संसार में है,इसके पश्चात परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुसार थोड़ा-थोड़ा नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अवतरित होता रहा।

- इसे शुभ रात्रि इसलिए कहा जाता है **कि वह बहुत ही सर्वश्रेष्ठ स्थान वाली रात्रि है** जैसाकि कहा जाता है: (अमुक व्यक्ति बड़ा उच्च स्थान वाला है।) इसी प्रकार शुभ की ओर रात्रि का संबंध किसी वस्तु को उसकी गुणवत्ता

की ओर संबंधित करने जैसा है इसलिए इसका अर्थ यह होगा कि सर्वश्रेष्ठ, उच्च स्थान वाली रात्रि।

एक कथन के अनुसार इसे शिव की रात्रि इस कारणवश कहा जाता है कि इसमें पूर्ण वर्ष का न्याय किया जाता है, जैसा कि अल्लाह का कथन है:

﴿فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ ۝٤﴾ [سورة الدخان:٤]

अर्थात: " इसी रात्रि में प्रत्येक शक्तिशाली कार्यों का न्याय किया जाता है।"

इब्न-ए-क़ैय्यिम रहिमहुल्लाह कहते हैं: "यही कथन सत्य है।"

{(१) शिफ़ा-उल-अलील: १/१४०, प्रकाशित: मकतबतुल-बीकान, रियाज़, (२) इन कथाओं के देखने हेतु देखें: अहादीसुस्-सियाम:१४०, लेखक शैख़ अब्दुल्लाह फ़ौज़ान।}

- अल्लाह तआला ने शुभ रात्रि को लाभदायक रात्रि से वर्णित किया है, जैसाकि अल्लाह तआला ने क़ुरआन के अवतरित होने के संदर्भ में कहा:

﴿إِنَّآ أَنزَلْنَٰهُ فِى لَيْلَةٍ مُّبَٰرَكَةٍ﴾ [سورة الدخان:٣]

अर्थात: "हमनेइसकोलाभदायकरात्रिमेंअवतरितकिया।"

- शुभ रात्रि की एक विशेषता यह है कि इसमें देवदूतों का अवतार होता है, जैसाकि अल्लाह तआला का कथन है:

﴿تَنَزَّلُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَٱلرُّوحُ فِيهَا﴾ [سورة القدر:٤]

अर्थात: "इसमें रूहुल-अमीन एवं देवदूत अवतरित होते हैं।"

इस श्लोक में अल-रूह़ का अर्थ जिब्रील है, इब्न-ए-कसीर रहिमहुल्लाह इस श्लोक का उल्लेख करते हुए लिखते हैं: अर्थात: इस रात्रि प्रचुरता के साथ बरकत का अवतार होता है, इस कारणवश देवदूत भी भारी संख्या में अवतरित होते हैं, बरकत एवं रहमत के साथ देवदूतों का भी अवतार होता है। इसके अतिरिक्त यह देवदूत क़ुरआन के सस्वर पाठ करते समय भी अवतरित होते हैं एक दमिक परिषदों को अपने अंतर्गत ले लेते हैं, सत्यता के साथ शिक्षा प्राप्त करने वाले के सम्मान में उनके लिए अपने परों को बिछा देते हैं।"

इब्न-ए-कसीर रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।

२४- रमज़ान की एक विशेषता यह है कि जो व्यक्ति शुभरात्रि में ईमान व इह़तिसाब के बदले के साथ क़्याम करे उसके पूर्व के समत्स पाप क्षमा कद दिये जाते हैं,अर्थात:जो व्यक्ति शुभरात्रि को प्रार्थना से बसाए रखे,

अल्लाह ने इस रात्रि उपासना करने वालों के लिए जो लाभ एवं सवाब तैयार कर रखा है (उस पर विश्वास करते हुए) एवं लाभ-सवाब की आशा करते हुए; उसके पूर्व में किए गए संपूर्ण पाप क्षमा कर दिए जाते हैं। अबू हुरैरा रज़िअल्लाहू अन्हो से मरभी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है: "जो व्यक्ति रमज़ान के व्रत; विश्वास एवं लाभ-सवाब की आशा करते हुए रखे उसके पूर्व में किए गए संपूर्ण पाप क्षमा हो जाते हैं।

इसे बुख़ारी:१९०१, एवं मुस्लिम:७५९ ने रिवायत किया है।)

२५-रमज़ान की एक विशेषता यह है कि शुभरात्रि में नमाज़ पढ़ते रहना हज़ार महीनों की प्रार्थना से अच्छा है, अर्थात ८३ वर्ष से भी अधिक,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

﴿لَيۡلَةُ ٱلۡقَدۡرِ خَيۡرٞ مِّنۡ أَلۡفِ شَهۡرٖ ۝٣﴾ [سورة القدر:٣]

अर्थात: "शुभ रात्रि १००० महीनों से अधिक अच्छी है।"

- इसके अतिरिक्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है: रमज़ान का लाभ दायक महीना तुम्हारे निकट आ चुका है, अल्लाह ने तुम पर इसके व्रत अनिवार्य कर दिए हैं, इसमें आकाश के द्वार खोल दिए जाते हैं, नरक के द्वार बंद कर दिए जाते हैं, विद्रोही दुष्ट देवों को हथकड़ियां पहना दी जाती हैं एवं इसमें अल्लाह तआला के लिए एक रात्रि ऐसी है जो हज़ार महीनों से अधिक अच्छी है। जो इसके लाभ से वंचित रहा वह बस वंचित ही रहा।"

(इसे नसई: १९०१ ने अबू हुरैरा रज़िअल्लाहू अन्हू से रिवायत किया है, एवं अल-बानी रहिमहुल्लाह ने इसे सहीह कहा है।)

- इब्ने सादी रह़िमहुल्लाह का कथन है: इस बात से हमारी बुद्धि आश्चर्यचकित हैं कि अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत को एक ऐसी रात प्रदान किया है जिस में किया जाने वाला अ़मल हज़ार महिनों के अ़मल से भी बेहतर है जो कि एक बड़ी लंबी आयु पाने वाले व्यक्ति के जीवन के बराबर है अर्थात अस्सी वर्ष से भी अधिक।

थोड़े हेर-फेर के साथ आपका कथन समाप्त हुआ।

२६-रमज़ान की एक विशेषता यह भी है कि **इसके अंतिम चरण में एतेकाफ़ करना मुस्तहब है**, **एतेकाफ़ का अर्थ है: अल्लाह की आज्ञाकारीता एवं उपासना के हेतु मस्जिद से चिपक जाया जाए।** आयशा रज़िअल्लाहू अन्हा रिवायत करती हैं: "नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी मृत्यु तक लगातार रमज़ान के अंतिम चरण में एतेकाफ़ करते रहे एवं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मृत्यु के

पश्चात उनकी पवित्र पत्नियां एतेकाफ़ करती रहीं।" (बुख़ारी: २०२६, एवं मुस्लिम: ११७२)

एतेकाफ़ करने का कारण यह था कि आप शुभ रात्रि की खोज करते, अबू सईद खुदरी रज़िअल्लाहू अन्हो रिवायत करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "मैंने इस शुभ रात्रि की खोज करने हेतु प्रथम चरण का एतेकाफ़ किया, फिर मैंने बीच के चरण एतेकाफ़ किया, फिर मेरे पास जिब्रील का आगमन हुआ तो मुझसे कहा गया: वह अंतिम १० रात्रि में है अब तुम में से जो एतेकाफ़ करना चाहे वह एतेकाफ़ कर ले।" (मुस्लिम:११६७)

२७-रमज़ान के व्रत की एक विशेषता यह है कि अल्लाह ताला ने इसके अंत में **ज़कात-उल फ़ित्र के निकालने का आदेश दिया है** जो व्रत के बीच पाए गए **पापों एवं नकारात्मक बातों** से उपवास करने वाले को पवित्र करती है, इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहू अन्हुमा बयान करते हैं: "रसूल सल्लल्लाहो अलेही व सल्लम ने फ़ित्र के दान-पुण्य को उपवास करने वालों को पाप एवं नकारात्मक बातों से पवित्र करने एवं लाचार व्यक्तियों (मिसकीन) के खाने हेतु अनिवार्य किया है।"

(इसे अबू दाऊद:१६०९ ने रिवायत किया है, एवं अल-सुनन के अनुसंधान में अरनाउत ने इसे हसन कहा है।)

२८- रमज़ान की विशेषता यह भी है कि अल्लाह तआ़ला ने इसके पश्चात ईद के शईरा को अनिवार्य कर दिया है,दो महान शआ़इर को अदा करने के पश्चात अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों के लिए दो ईदें अनिवार्य कर दी हैं,रमज़ान के रोज़े और अल्लाह के घर का ह़ज,ईदुल फितर रमज़ान के रोज़े पूरे होने के पश्चात मनाई जाती है, अत: जब मुसलमान रोज़े पूरे कर लेते हैं तो अल्लाह तआ़ला उन्हें नरक से मुक्ति प्रदान फरमाता है,इस

कृपा एवं दया के आभार के रूप में सदका-ए-फितर एवं ईद की नमाज़ अदा की जाती है,इस ईद में मुसलमानों का जुमा से भी अधिक बड़ा जनसमूह होता है,उनकी महानता एवं महत्ता का प्रदर्शन होता है,इस शेआ़र पर उनका गर्व प्रकट होता है और उनकी प्रचुर्ता का ज्ञात होता है,इसी लिए इस दिल सारे लोगों के लिए ईदगाह जाना मुस्तह़ब है,यहां तक कि महिलाओं एवं बच्चों के लिए भी,बल्कि ह़ाइज़ा (माहवारी महिला) महिलाएं भी मुसलमानों की दुआ़ में भाग लेंगी किन्तु ईदगाह से हट कर रहेंगी,ईद में इस महीने की समाप्ति,ईद के आगमन और रह़मत की पूर्ति के अवसर पर प्रसन्नता का प्रदर्शन होता है।(देखें:इब्ने रजब की "فتح الباری" ,ह़दीस की व्याख्या:४५)

२९- रमजा़न की एक विशेषता यह भी है कि इसके समापन पर तकबीर पुकारना अनिवार्य है,जिस का आरंभ ईद की रात के आगमन से होता है और ईद की नमाज़ की समापन तक चलती रहती है,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

﴿وَلِتُكْمِلُواْ ٱلْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُواْ ٱللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَىٰكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ﴾ [سورة البقرة:١٨٥]

अर्थात: तुम गिनती पूरी करलो और अल्लाह तआ़ला की दी हुई हिदायत पर उसकी प्रशंसा करो और उसका आभार व्यक्त करो।

अर्थात:रमज़ान के तीस दिनों की गिनती पूरी करो,उसकी समाप्ति पर अल्लाह की तकबीर बयान करो,और अल्लाह ने इस प्रार्थना को करने की जो तौफीक़ प्रदान की,इसे आसान बनाया, इसमें सहायता कि और इसके समापन तक पहुंचाया इस पर उसका शुक्र अदा करें।

इसी प्रकार से अल्लाह तआ़ला ने ह़ज की समाप्ति पर मुसलमानों के लिए ईदुलअज़हा को अनिवार्य कर दिया वह इस प्रकार से कि ह़ाजीगण अ़फ्रा के मैदान में ठहरते हैं, जो कि नरक से मुक्ति का दिन है,इस दिन से अधिक किसी भी दिन न नरक से मुक्ति मिलती है और न पापों को क्षमा मिलती है,इस लिए अल्लाह ने इसके पश्चात ईद रखी जो कि सबसे बड़ी ईद है।

३०- रमज़ान की एक विशेषता यह है कि जो व्यक्ति रमज़ान के रोज़े रखता है और उसके पश्चात शौव्वाल के छे रोज़े रखता है वह उस व्यिक्त के जैसा है जो पूरे वर्ष रोज़े रखता है,क्योंकि सदाचार का पुण्य दस गुना बढ़ा कर दिया जाता है,जबकि उप व्यक्ति ने केवल ३६ दिनों के रोज़े रखे,अबू अय्यूब रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे,फिर उसके पश्चात शौव्वाल के छे रोज़े रखे तो यह (पूरा वर्ष) लगातार रोज़े रखने के जैसा है"। (सही़ मुस्लिम:११६४)

- यह रमज़ान के महीने की तीस विशेषताएं हैं मुसलमानों को चाहिए कि वे इनसे अवगत हों, एवं व्रत के दौरान इन्हें अपनी बुद्धि में सुरक्षित रखें ताकि ईमान एवं लाभ की आशा के साथ व्रत पूरा करने में यह विशेषताएं सहायक स्वरूप हों।
- आप यह भी ज्ञात रखें -अल्लाह तआला आप पर दया करे- कि अल्लाह ने आपको एक विशाल आदे शदिया है, अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात: "अल्लाह तआला एवं उसके देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं और ए विश्वासियो! तुम भी उन पर दुरूद भेजो एवं अधिक सलाम भेजते रहा करो।"

हे अल्लाह! तू अपने दास एवं रसूल पर रहमत व सलामती भेज, तू उनके पश्चात आने वाले महान शासकों (ख़ुलफ़ा), समर्थकों एवं प्रलय तक शुद्धता के साथ उनकी आज्ञाकारिता करने वालों से प्रसन्न हो जा। हे अल्लाह इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं समृद्धि प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहुदेववादीयों को अपमानित कर दे, तू अपने इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट कर दे एवं अपने एकेश्वरवाद की सहायता कर! हे अल्लाह! हमें अपने देशों में शांति वाला जीवन प्रदान कर, हमारे धर्म गुरुओं एवं शासकों को सुधार दे उन्हें दिशा निर्देश का पालन करने वाला बना हे अल्लाह संपूर्ण मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने एवं धर्म की समृद्धि की शक्ति प्रदान कर उन्हें उनके प्रजा के हेतु दयालु एवं कृपालु बना!!!

سبحان ربك رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين.

शीर्षक: रमज़ान में अधिक क़ुरान पढ़ने पर प्रोत्साहित करना

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रशंसाओं के पश्चात!

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त(नवाचार)है और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!में तुम्हें और स्वयं को अल्लाह के तक़वा (ईश्वर भक्ति) की वसीयत करता हूं,और आखिरत की ओर यात्रा करने वालों के लिए यह सर्वोत्तम भेंट है,अल्लाह का कथन है:

﴿وَتَزَوَّدُواْ فَإِنَّ خَيۡرَ ٱلزَّادِ ٱلتَّقۡوَىٰۖ﴾ [سورة البقرة:١٩٧]

अर्थातः अपने साथ यात्रा का सामान ले लिया करो, सर्वोत्तम भेंट अल्लाह का डर है। यह वह वसीयत है जो अल्लाह ने पूर्व एवं पश्चात के समस्त लोगों को की है:

﴿وَلَقَدۡ وَصَّيۡنَا ٱلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلۡكِتَٰبَ مِن قَبۡلِكُمۡ وَإِيَّاكُمۡ أَنِ ٱتَّقُواْ ٱللَّهَۚ﴾ [سورة النساء:١٣١]

अर्थातः निसंदेह हमने उन लोगों को जो तुम से पूर्व पुस्तक दिए गए थे और तुमको भी यही आदेश दिया है कि अल्लाह से डरते रहो।

जो लोग अल्लाह का तक़वा(धर्मनिष्ठा)अपनाते हैं,उनके लिए अल्लाह ने स्वर्ग तैयार कर रखा है:

﴿وَلَنِعۡمَ دَارُ ٱلۡمُتَّقِينَ﴾ [سورة النحل:٣٠]

अर्थातःकितना ही उत्तम ईश्वर भक्तों का घर है।

ए अल्लाह के बंदो!रमज़ान कुरान का महीना है,अल्लाह ने इस महीने में कुरान को बैतूलइज्ज़त से सांसारिक आकाश की ओर नाज़िल फरमाया,फिर घटनाओं के अनूसार नबी सल्ललाहु अलैहि वसल्लम पर धीरे धीरे उतारा,बल्कि अल्लाह तआला ने कुरान के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों को भी रमज़ान ही में नाज़िल किया,वासिला बिन असका रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है, नबी सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ग्रंथ रमजा़न की प्रथम रात को ,तौरात छठे रात को,इनजील रमज़ान

के तेरह दिन गुजरने के पश्चात(अर्थात चौधवीं तारीख) को और कुरान चौबीस दिन गुजरने के पश्चात (अर्थात पचीस) रमज़ान को नाज़िल हूआ।(इसे अह़मद(4/107) ने रिवायत किया है और अल्बानी ने"अलसह़ीहा"(1575) में इसे ह़सन कहा है।}

- ए मोमिनो!कुरान का सस्वर पाठ रमज़ान में की जाने वाली महत्वपूर्ण प्रार्थना है,क्योंकि रमज़ान ऐसा महीना है जिस में कुरान को अधिक पढ़ना मुस्तह़ब(वांछनीय)कार्य है,धार्मिक पूर्वजों का परंपरा एवं प्रथा था कि वे रमज़ान में कई बार कुरान खत्म किया करते थे,कोई तीन रातों में कुरान समाप्त करलेता,तो कोई चार दिनों में खत्म करता और कोई चार से अधिक दिनों में कुरान खत्म करलेता।

ए अल्लाह के बंदो!कुरान का सस्वर पाठ सबसे श्रेष्ठ प्रार्थना और अल्लाह की निकटता प्राप्ति का सबसे बड़ा माध्यम है,चाहे तहज्जुद एवं तरावीह़ में सस्वर पाठ की जाऐ अथवा नमाज़ के बाहर सस्वर पाठ की जाऐ,अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःजिसने अल्लाह की पुस्तक का एक शब्द पढ़ा उसे उसके बदले एक पुण्य मिलेगा,और एक पुण्य दस गुना बढ़ा दिया जाएगा,में यह नहीं कहता कि «الم»

एक शब्द है,बल्कि «الف»एक शब्द है, «لام»एक शब्द है और«ميم»एक शब्द है {इसे तिरमीजी (2910) ने रिवायत किया है और अल्बानी ने सह़ी कहा है।}

- अबू मूसा अशअ़री रजीअल्लाहु अंहु ने उल्लेख किया है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःउस मोमिन का उदाहरण जो कुरान पढ़ता हो,संतरे जैसी है जिस का सुगंध भी मधुर है और स्वाद भी सुस्वादु है और उस मोमिन का उदाहरण जो कुरान नहीं पढ़ता,खजूर जैसा है जिस में कोई सुगंध नहीं होता किंतु स्वाद मधुर होता है और पाखण्डी का उदाहरण जो कुरान पढ़ता हो,रैह़ाना(पुष्प) जैसा है जिसका सुगंध तो अच्छा होता है किंतु स्वाद कड़वा होता है और जो मुनाफिक(पाखण्डी) कुरान भी नहीं पढ़ता उसका उदाहरण अंदराइन जैसा है जिसका सुगंध नहीं होता और स्वाद भी कड़वा होता है {इसे बोखारी (5427) और मुस्लिम (797) ने वर्णन किया है।}
- अबू होरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःरशक(ईर्ष्या द्वेष) तो केवल दो ही व्यक्तियों पर होना चाहिएःएक उस व्यक्ति पर जिसे अल्लाह तआ़ला ने कुरान का ज्ञान दिया और वह रात-दिन उसकी सस्वर पाठ करता रहता है,उसका पड़ोसी सुन कर कह उठे कि काश

मुझे भी इसके जैसा कुरान का ज्ञान होता और में भी इसके जैसा कार्य करता और वह दूसरा जिसे अल्लाह ने धन दिया और उसे सत्य के लिऐ लुटा रहा है।(उसको देख कर)दूसरा व्यक्ति कह उठता है कि काश मेरे पास भी इसके जैसा धन होता और में भी उसके जैसा खर्च करता {इसे बोखारी(5026) ने वर्णित किया है।}

- आयशा रजीअल्लाहु अंहा वर्णन करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःउस व्यक्ति का उदाहरण जो कुरान पढ़ता है और वह उसका ह़ाफिज भी है,सम्मानित एवं लिखने वाले नेक देवदूतों जैसा है और जो व्यक्ति कुरान बारबार पढ़ता है।फिर भी वह उसके लिऐ कठिन है तो उसे दोगुना पुण्य मिलेगा {इसे बोखारी (4937) और मुस्लिम (798) ने वर्णित किया है उपरोक्त शब्द बोखारी के हैं।}

अबू होरैरा रजीअल्लाहु अंहु कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"क्या तुम में से कोई इस बात को पसंद करता है कि जब वे अपने घर लौट कर जाए तो उसे तीन बड़ी मोटी गर्भवती ऊंटनियां घर पर बंधी हुई मिलीं"?हमने कहाःजी हां(क्यों नहीं)।आपने सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"तुम में से जब कोई व्यक्ति नमाज़ में तीन आयतें पढ़ता है,तो यह उसके लिए तीन बड़ी मोटी गर्भवती ऊंटनियों से श्रेष्ठतर हैं" {मुस्लिम 208}

उक़बा बिन आ़मिर रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर से निकल कर बाहर आऐ।हम सफा(चबूतरे) पर थे,आपने फरमायाः"तुम में से कौन पसंद करता है कि रौजाना सुबह बत़्हान {मदीना की वादी है}अथवा अ़क़ीक़ {मदीना की एक वादी है} (की वादी) में जाए और वहां से बेगैर किसी पाप एवं संबंध तौड़ने के दो बड़े बड़े कोहानों वाली ऊंटनियां लाए? "हमने कहाःए अल्लाह के रसूल!हम सब को यह बात पसंद है,आपने फरमायाः"फिर तुम में से सुबह कोइ व्यक्ति मस्जिद में क्यों नहीं जाता कि वह अल्लाह की पुस्तक की दो आयतें सीखे अथवा उनकी सस्वर पाठ करे तो यह उसके लिऐ दो ऊंटनियों की प्राप्ति से अच्छा है और यह तीन आयतें तीन ऊंटनियों से अच्छा है और चार आयतें उसके लिए चार ऊंटनियों से बेहतर हैं और (आयतों की संख्या जो भी हो) ऊंटनियों की उतनी संख्या से बेहतर है"। {मुस्लिम 803}

- अबू अमामा बाहिली रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि में ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुनाः"कुरान पढ़ा करो,क्योंकि वह क़यामत के

दिन कुरान वालों (हि़फज़ व पाठन व अ़मल करने वालों) का सिफारशी बन कर आऐगा" {मुस्लिम 804}

- यह वे चंद ह़दीसें हैं जो रमज़ान में कुरान की तिलावत(सस्वर पाठ) के लिए प्रोतसाहित करने से संबंधित हैं,अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से लाभ पहुंचाए,मुझे और आपको इसकी आयतों और नितीयों पर आधारित प्रामर्शों से लाभ पहुंचाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से क्षमा प्राप्त करता हूं आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें निसंदेह वह अति माफ करने वाला अति कृपा करने करने वाला है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد:

आप जान लें-अल्लाह आप पर कृपा करे-कि मोमिन बंदा जब रोज़ा के साथ कुरान की तिलावत(सस्वर पाठ)करे तो वह इस का अधिक पात्र होता है कि क़यामत के दिन यह आ़माल उसके प्रति अनुशंसा करें कि उसके स्थान उच्च कर दिऐ जाऐं और पाप मिटा दिऐ जाऐं।अब्दुल्लाह बिन अ़मर रजीअल्लाहु अंहु रिवायत करतें हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"रोज़ा और कुरान क़यामत के दिन बंदे के प्रति अनुशंसा करेंगे,रोज़ा कहेगाः(हे पालनहार!मेंने इसे खाने पीने और आतमा की इच्छाओं से रोके रखा,इस़के प्रति मेरी अनुशंसा स्वीकार करले)और कुरान कहेगाः(मेंने इसे रात को सोने से रोके रखा,इसके प्रति मेरी अनुशंसा स्वीकार करले)इस प्रकार दोनों की अनुशंसा स्वीकार कर ली जाएगी।11{इसे अह़मद (2/174) ने रिवायत किया है और अल्बानी ने "सह़ी अलतरग़ीब"(984) और "सह़ी अलजामे"(7329) में उसे सह़ी कहा है।}

अल्लाह के बंदो!अल्लाह के लिए अधिक से अधिक पुण्य के कार्य करो,आधा महीना गुजर चूका है,मोमिन पर अल्लाह का यह कृपा है कि वह रमज़ान के महीने में एक साथ दो जिहाद करे,दिन में रोज़े रखे और रात में क़ियाम करके जिहाद करे,जिसने इन दोनों जिहाद को एक साथ किया उन (में आने वाली कठीनाइयों पर)धैर्य से काम लिया तो वह अल्लाह के इस कथन में शामिल होने का अधिक पात्र हैः

﴿إِنَّمَا يُوَفَّى ٱلصَّٰبِرُونَ أَجْرَهُم بِغَيْرِ حِسَابٍ﴾ [سورة الزمر:١٠]

अर्थातः धैर्य रखने वालों ही को उनका पूरा पूरा अनगिनत बदला दिया जाता है।

आप यह भी जानलें-अल्लाह आप पर अपनी कृपा नाज़िल करे-कि अल्लाह तआ़ला ने आपको ऐक बड़ी चीज का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थातःअल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है:"तुम्हारे सबसे अचछे दिनों में से शुक्रवार का दिन है,उसी दिन मनु पैदा किये गऐ,उसी दिन उनकी आत्मा निकाली गई,उसी दिन सूर फूंका जाएगा, {अर्थात सूर में दूसरी बार फूंक मारा जाएगा,इस्का मतलब वह सूर है जिसमें इसराफील फूंक मारेंगे,यह वह देवदूत हैं जिनको सूर में फूंक मारने पर नियुक्त किया गया है,जिसके पश्चात समस्त मुर्दो अपनी कबरों से उठ खड़े होंगे।} उसी दिन चीख होगी।{अर्थात जिससे सांसारिक जीवन के अंत में लोग बेहोश होकर गिर पड़ेंगे और सब के सब मर जाऐंगे,यह बेहोशी उस समय **उत्पन्न** होगी जब सूर में बहली बार फूंक मारा जाऐगा,दो फूंक के मध्य में चालीस साल का अंतर होगा।} इसलिऐ तुमलोग उस दिन मुझ पर अधिक से अधिक दरूद भेजा करो,क्योंकि तुम्हारा दरूद मुझ पर प्रस्तुत किया जाता है"। {इसे नेसाई (1373),अबूदाऊद (1047),इब्ने माजा (1085) और अह़मद (4/8) ने रिवायत किया है और अल्बानी ने सही अबूदाऊद में और मुस्नद के शोधकर्ताओं ने ह़दीसः(16162) के अंतर्गत इसे सह़ी कहा है।} ए अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्माद पर रह़मत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़यामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

- हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट करदे,और अपने एकेश्वरवादी बंदों की सहायता फरमा,हे अल्लाह! हमारे इमामों और हमारे हाकिमों को सुधार दे, उन्हें हिदायत का निदेशक और हिदायत पर चलने वाला बना।हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक लागू और पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर चलने की तौफीक़ प्रदान कर।
- हे अल्लाह हमसे इस महामारी को दूर करदे,निसंदेह हम मुसलमान हैं,हे अल्लाह! हमसे इस महामारी को दूर करदे,निसंदेह हम मुसलमान हैं, हे अल्लाह! हमसे इस महामारी को दूर करदे,निसंदेह हम मुसलमान हैं,हे अल्लाह!समस्त संसार के मुसलमान इस महामारी से पीड़ित हैं,हे दोनों संसार के पालनहार!उनसे इस

आपदा को दूर करदे।हे अल्लाह!प्रत्येिक कठिनाई पाप के कारण ही आती है,और तौबा से ही दूर होती है,हम तौबा के साथ अपने हाथ तेरे दरबार में उठाए हुए हैं और अपने माथे को तेरे चौकठ पे झुकाए हूए हैं(हमारी तौबा स्वीर करले)

- हे अल्लाह!हमें रमज़ान में पुण्य के कार्य करने की तौफीक़ प्रदान कर।
- हे अल्लाह हमारे आखेरत को सुधार दे जो हमारे (दीन व दुनिया के)प्रत्येक कार्य की रक्षा का माध्यम है और मेरी दुनिया को संवार दे जिसमें मेरा गुजारा है और मेरी आखेरत को संवार दे जिसमें मेरा(अपनी मंज़िल की ओर) लौटना है और मेरे जीवन को मेरे लिऐ प्रत्येक अच्छाई में वृद्धि का कारण बनादे और मेरी मृत्यु को मेरे लिए प्रत्येक बूराई से दूर करदे।
- हे अल्लाह!हम तेरा शरण चाहते हैं तेरे आशीर्वादों के छिन जाने से,तेरे कृपा के हट जाने से,तेरे अचानक की यातना से और तेरी प्रत्येक प्रकार की नाराजगी से।

हे हमारे प्रवर्दिगार!हमें क्षमा प्रदार कर और हमारे उन भाइयों को भी जो हमसे पश्चात ईमान लाचुके हैं और ईमानदारों की ओर से हमारे ह्रदय में कीना-कपट (और शत्रुता) न डाल।हे हमारे रब!निसंदेह तू अनूराग एवं कृपा करने वाला है।

- हे अल्लाह हम तुझ से स्वर्ग और उससे निकट करने वाले कथन व कार्य मांगते हैं,और तेरा शरण चाहते हैं नरक और उसके निकट लेजाने वाले कथन व कार्य से।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखेरत में भलाई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين.

शीर्षक: शबे क़दर की दस विशेषताएं

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है। दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त(नवाचार)है और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

- ए मुसलमानो!में तुम्हें और स्वयं को अल्लाह के तक़वा(धर्मनिष्ठा)की वसीयत करता हूं,यह वह वसीयत है जो अल्लाह ने पूर्व एवं पश्चात के समस्त लोगों को की है:

﴿ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَـٰبَ مِن قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنِ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ﴾ [سورة النساء:١٣١]

अर्थातःनिसंदेह हमने उन लोगों को जो तुम से पूर्व पुस्तक दिए गए थे और तुम को भी यही आदेश किया है कि अल्लाह से डरते रहो।

अल्लाह का तक़वा(धर्मनिष्ठा) अपनाएं और उससे डरते रहें,उसकी आज्ञाकारी करें और उसके अवज्ञा से बचें,जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने अपनी हि़कमत (नीति) से कुछ समय को कुछ पर प्राथमिकता एवं प्रधानता प्रदान किया है,अतः जिलहि़ज्ज के दस दिनों को वर्ष के अन्य दिनों पर प्राथमिकता दी है,अ़रफा के दिन को वर्ष के समस्त दिनों पर प्राथमिकता प्रदान किया है,रमज़ान को अन्य समस्त महीनों पर प्रधानता दी है और शबे क़दर को रमज़ान की समस्त रातों से श्रेष्ठतर बताया है, शबे क़दर की दस विशेषताएं हैं जो निम्नलिखित हैं:

- प्रथम विशेषताःयह वह रात है जिसको अल्लाह ने यह विशेषता प्रदान किया है कि उसमें कुरान के नाज़िल करना प्रारंभ किया,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّآ أَنزَلْنَـٰهُ فِى لَيْلَةِ ٱلْقَدْرِ ۝١﴾ [سورة القدر:١]

अर्थातःनिसंदेह हमने इसे शबे क़दर में नाज़िल किया।

इसी रात में कुरान लौहे महफ़ूज़ से बैतुलइज्ज़त में नाज़िल हुआ जो सांसारिक आकाश में है,फिर वहां से घटनाओं के अनुसार क्रमशः नाज़िल होता रहा।

- शबे क़दर को इस नाम से जानने का कारण यह है कि इस रात का बड़ा महत्व है,जैसा कि कहा जाता है(अमुक व्यक्ति का बड़ा महत्व है),इस प्रकार महत्व को रात से संबंध करना,किसी वस्तु को उसके विशेषण की ओर संबंध करने की जाति से है।
- एक कथन यह है कि चूंकि इस रात में पूरे साल के मामले मोक़ददर(निश्चय) किए जाते हैं,अर्थात वार्षिक तक़दीर निश्चय किए जाते हैं,जैसा कि अल्लाह का कथन हैः

﴿فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ ۝٤﴾ [سورة الدخان:٤]

अर्थातःइसी रात में प्रत्येक मज़बुत कार्य का निर्णय किया जाता है।

इब्नुलकय्यिम कहते हैं किःयही कथन सत्य है। { शफाउल अ़लीलः1 / 110,प्रकाशकःअलअबीकान पुस्तकालय.रियाज} {इन दोनों कथनों के लिए देखें":अह़दीसल सियाम"140,शैख अब्दुल्लाह अलफौज़ान की}

अतः इस रात में निर्णय लिया जाता है कि आगामी वर्ष में कोनसे कार्य होने हैं।अर्थात अल्लाह तआ़ला देवदूतों को पूरे वर्ष की गतिविधियों से अवगत करता है,उन्हें विस्तारपूर्वक आगामी वर्ष की शबे क़दर तक घटने वाले समस्त घटनाओं से संबंधित कर्तव्यों का आदेश देता है,उनके समक्ष मृत्यु,रिज़्क,फक़ीरी व अमीरी,हरयाली व अकाल,स्वास्थ्य एवं रोग,युद्ध एवं भूकंप और इस वर्ष घटित होने वाले समस्त घटनाएं स्पष्ट कर दिए जाते हैं। {अल्लाह तआ़ला के कथन ﴿فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ ۝٤﴾ का व्याख्या देखें: शंक़ीती रहिमहुल्लाह की तफसीर"अज़वाउल बयान"में सूरह अलदोखन में।}

इब्ने अब्बास रजीअल्लाहु अंहुमा फरमाते हैंःशबे क़दर में लौहे़ मह़फूज़ से,आने वाले वर्ष के मध्य घटने वाली मृत्यु एवं जीवन,रिज़्क एवं वर्षा उल्लेख किया जाती हैं,यहां तक कि हाजियों के विषय में भी लिख लिया जाता है कि अमुक अमुक व्यक्ति ह़ज करेंगे4{इस कथन को इब्ने जरीर आदी ने इब्ने अब्बास रजीअल्लाहु अंहुमा से निम्नलिखित आयत की व्याख्या में उल्लेख किया है,उपरोक्त शब्द इब्ने जरीर से वर्णित हैं।}

- शबे क़दर की द्वितीय विशेषता यह है किःइस में देवदूत पृथ्वी पर नाज़िल होते हैं,अल्लाह का कथन हैः

﴿تَنَزَّلُ ٱلْمَلَٰٓئِكَةُ وَٱلرُّوحُ فِيهَا﴾ [سورة القدر:٤]

अर्थातःइसमें देवदूत और रूह़(जिबरईल) उतरते हैं।

रूह़ का अर्थ जिबरईल है,इब्ने कसीर रहीमहुल्लाह इस आयत की व्याख्या में लिखते हैंःअर्थात यह रात जोकि बड़ी बरकतों वाली होती है,इस लिए अधिक संख्या में देवदूत नाजिल होते हैं,बरकत एवं रह़मत के साथ देवदूत भी नाजिल होते हैं,जिस प्रकार कुरान के सस्वर पाठ के समय देवदूत नाजिल होते हैं,शैक्षिक सभा को घेर लेते हैं और सत्य नियत के साथ ज्ञान प्राप्ति में व्यस्थ रहने वाले छात्रों के सम्मान में अपने पंख बिछा देते हैं।समाप्त

- शबे क़दर की तृतीय विशेषताःअल्लाह तआ़ला ने इस रात को सौभाग्यशाली बताया है,अल्लाह तआ़ला कुरान के नाज़िल होने के प्रति फरमाता हैः

﴿إِنَّآ أَنزَلْنَٰهُ فِى لَيْلَةٍ مُّبَٰرَكَةٍ﴾ [سورة الدخان:٣]

अर्थातःनिसंदेह हमने इसे सौभाग्यशाली रात में उतारा है।

- शबे क़दर की चौथी विशेषताःअल्लाह तआ़ला ने इसे शांति की रात कहा है यहां तक कि फजर हो जाए,अर्थात प्रत्येक प्रकार की बुराइयों व फितनों से सलामति़(सुरक्षा)की रात,क्योंकि इस में कलयाण एवं अच्छाई अधिक से अधिक होती है,यहां तक कि फजर निकल आए।
- शबे क़दर की पांचवी विशेषताःजो व्यक्ति इस रात को क़याम करे अर्थात इसे नमाज़ से आबाद करे,.(ईमान के साथ) अर्थात अल्लाह तआ़ला इस महान रात में क़याम करने वालों के लिए जो बदला व पुण्य तैयार कर रखा है,उस पर ईमान रखते हूए,.(एहतेसाब के साथ) अर्थातःबदला व पुण्य की आशा करते हुए,उसके पूर्व के समस्त पाप माफ हो जाते हैं,अबू होरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"जो लैलतुल क़दर में ईमान व एह़तेसाब के साथ नमाज़ में खड़ा रहे उस के पुर्व के समस्त पापों को क्षमा प्रदान किया जाता है" {इसे बोखारी़(1901)और मुस्लिम़(759)ने रिवायत किया है।}
- शबे क़दर की छटी विशेषताःइस रात को नमाज़ से आबाद करना हज़ार रातों की प्रार्थना से बेहतर है,अर्थात तेरासी़(83)वर्षों से भी अधिक,अल्लाह का कथन हैः

﴿لَيۡلَةُ ٱلۡقَدۡرِ خَيۡرٞ مِّنۡ أَلۡفِ شَهۡرٖ ۝٣﴾ [سورة القدر:٣]

अर्थातःशबे क़दर एक हज़ार महीनों से बेहतर है।

पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"रमज़ान का शुभ महीना तुम्हारे पास आ चुका है,अल्लाह तआ़ला ने तुम पर इसके रोज़े फरज़ कर दिए हैं,इस में आकाश के दरवाजे खोल दिए जाते हैं,नरक के दरवाजे बंद कर दिए जाते हैं,और सरकश शैतानों को जंजीरें लगा दी जाती हैं,और इस में अल्लाह तआ़ला के लिए एक रात ऐसी है जो हज़ार महीनों से बेहतर है,जो इस के अच्छाई से वंचित रहा तो वह बस वंचित ही रहा" {इसे निसाई(2106) ने अबू होरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है और अल्बानी रहिमहुल्लाह ने इसे सही़ कहा है।}

इब्ने सादी रहिमहुल्लाह फरमाते हैंःयह ऐसा (पुरस्कार) है जिस के सामने बुद्धि आश्चर्यचकित और चेतना परीशान होजाता है कि अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत को एक ऐसी रात प्रदान किया है जिस रात की प्रार्थना हज़ार रातों की प्रार्थना के समान है,जो कि एक लंबी आयू वाले मनुष्य के जीवन के बराबर है,अस्सी(80)वर्ष से भी अधिक।संक्षेप एवं हलके हैरफैर के साथ समाप्त हुआ।

- शबे क़दर की सातवीं विशेषताः पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान के अंतिम दस दिनों में शबे क़दर की खोज में जितना परिश्रम करते थे उतना परिश्रम अन्य दिनों में नहीं करते थे,आयशा रजीअल्लाहु अंहा रिवायत करती हैं कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अंतिम अ़शरे(अंतिम दस दिनों)में प्रार्थना में इतना परिश्रम करते थे जितना अन्य दिनों में नहीं करते थे। {मुस्लिम (1175) }
- आयशा रजीअल्लाहु अंहा से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की याह आदत थी कि जब रमज़ान का अंतिम अ़शरा आता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात भर जागते और घर वालों को भी जगाते,(प्रार्थना में) कठोर परिश्रम करते और कमर कस लेते और हिम्मत बांध लेते थे। {बोखारी(2034),मुस्लिम(1174) और निम्नलिखत शब्द मुस्लिम से वर्णित हैं।}

(कमर कस लेते और हिम्मत बांध लेते)इस का अर्थ यह है कि प्रार्थना के लिए तैयार रहते,उसमें परिश्रम एवं लगन से काम लेते,और आदत के कहीं अधिक प्रार्थना करते थे,एक कथन यह भी है कि पत्नियों से अलग रहते और संभोग से दूर रहते।

- शबे क़दर की आठवीं विशेषताः पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शबे क़दर की खोज में रमज़ान के अंतिम अ़शरे में मस्जिद के अंदर एतेकाफ किया करते थे,आयशा रजीअल्लाहु अंहा फरमाती हैं: पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने मृत्यु तक बराबर रमज़ान के अंतिम अ़शरे में एतेकाफ करते रहे और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पश्चात आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियां एतेकाफ करती रहीं।3{इसे बोखारी(2026)और मुस्लिम(1172)ने रिवायत किया है।}

अबू सईद खुदरी रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःमेंने शबे क़दर को खोजने के लिए प्रथम अ़शरे का एतेकाफ किया,फिर मेंने मध्य अ़शरे का एतेकाफ किया,फिर मेरे पास(जिबरईल आए) तो मुझसे कहा गयाःवह अंतिम दस रातों में है तो अब तुम में से जो एतेकाफ करना चाहे वह एतेकाफ करले। {मुस्लिम (1167)}

- ए अल्लाह के बंदो! पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इतना परिश्रम एवं लगन से प्रार्थना करना इस बात का प्रमाण है कि आप महत्वपूर्ण समयों में अल्लाह की अधिक से अधिक आज्ञाकारी किया करते थे,इस लिए मुसलमानों को भी पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुगमन करना चाहिए कि आप ही आदर्श हैं,हम मुसलमानों को अति परिश्रम के साथ अल्लाह की पूजा करनी चाहिए और रात व दिन के समय को नष्ट नहीं करना चाहिए,क्योंकि मनुष्य नहीं जानता कि कब स्वादों को तोड़ने और लोगों से जुदा करदेने वाली मौत उसे आ पकड़े,फिर उस समय उसे अफसोस हो जब अफसोस का कोई लाभ नहीं होगा। {शैख मोहम्मद बिन सालेह़ अलमुनजिद के लेख से हलके हैरफैर के साथ लिया गया है,मेंने यह कथन उनके वैबसाइट से लिया है।}

शबे क़दर की नौवीं विशेषताःइस रात में विशेष रूप से अल्लाह से क्षमा प्राप्त करने पर प्रोत्साहन आया है,आयशा रजीअल्लाहु अंहा ने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछाःए अल्लाह के नबी!यदी में शबे क़दर पालूं तो क्या दुआ मागूं?आपने फरमायाः"यह कहनाः

(اللهم إنک عفو تحب العفو فاعف عني)

अर्थातःहे अल्लाह!तू अधिक क्षमा प्रदान करने वाला है,तू क्षमा को पसंद करता है,अतःमुझे क्षमा प्रदान कर दे।

- शबे क़दर की दसवीं विशेषता:अल्लाह तआ़ला ने इस के महत्व में एक सूरह नाज़िल फरमाई जो क़यामत तक सस्वर पाठ की जाती रहेगी,इसके माध्यम से इस की महानता को स्पष्ट किया,इसकी महानता का कारण यह बताया कि इस रात कुरान नाज़िल किया गया,एवं यह भी उल्लेख किया कि इस रात देवदूत पृथ्वी पर उतरते हैं,एवं जो इस रात को नमाज़ एवं प्रार्थना में गुजारता है उसका क्या पुण्य है,इस रात के आरंभ और अंत को स्पष्ट किया,समस्त प्रशंसाऐं उस अल्लाह के लिए हैं जिसने बंदों पर कृपा करते हूए उन्हें पुण्य के वसंत का मौसम प्रदान किया।
- हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि उसी प्रकार रमज़ान के रोज़े रखने की तौफीक़ प्रदान करे जिस प्रकार उसे पसंद है,और अपने ज़िक्र व धन्यवाद और सुंदर प्रार्थना पर हमारी सहायता फरमाए।
- अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को कुरान की बरकतों से लाभ पहुंचाए,मुझे और आप को इस की आयतों और नितीयों पर आधारित प्रामर्शों से लाभ पहुंचाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा करने वाला अति कृपा करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد:

- आप जान लें-अल्लाह आप पर कृपा करे-कि अल्लाह तआ़ला ने शबे क़दर को अपनी नीति से गुप्त रखा है,वह ह़िकमत यह है कि मोमिन बंदा उसकी खोज में पूरी दस रातें प्रार्थना करे,ताकि बड़े पुण्य को प्राप्त कर सके,इसके विपरीत यदि मालूम होता कि शबे क़दर कोंसी तिथि को होती है तो वह केवल उसी रात में प्रार्थना करता।

यदि शबे क़दर के बारे में मालूम होता कि वह कोंसी रात है तो पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके खोज में पूरी दस रातें एतेकाफ न करते और न अपनी उम्मत को यह निर्देश देते कि उसकी खोज में दस रात एतेकाफ करें,बल्कि केवल शबे क़दर में ही आप एतेकाफ करते,जबकि वास्तव यह है कि आप ने संपूर्न दस रातों में उसको खोजने का आदेश दिया है,विशेष रूप से ताक़(विषम) रातों में,जो इस बात का प्रमाण है कि ताक़ रात में शबे क़दर होने का अधिक संभावना होता है,आयशा रजीअल्लाहु अंहा से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"शबे क़दर को रमज़ान के अंतिम अ़शरे की ताक(विषम) रातों में खोजो" {बोखारी 2017}

ज्ञात हूआ कि इस्लामी पाठ इस बात के साक्ष हैं कि शबे क़दर प्रत्येक वर्ष अलग अलग रातों में हुआ करती है,किंतु इन दस रातों के अंदर ही सीमित रहती है।

इस लिए मोमिन को चाहिए कि अंतिम अ़शरे की समस्त रातों के अंदर प्रार्थना में वयस्ता रहे,लोग सोशल नेटवर्क पर जो प्रसारित करते फिरते हैं कि शबे क़दर अमुक रात को होती है,इससे सतर्क रहें,यह ऐसी बात है जो समय की बरबादी और अ़मल से दूरी की ओर लेजाती है।

- ए अल्लाह के बंदो!मोमिन को चाहिए कि अंतिम अ़शरे में अन्य दिनों के तुलना में अधिक परिश्रम एवं लगन से प्रर्थाना करे,इसके दो कारण हैं,एक यह कि:इस अ़शरे का अधिक महत्व है और इसी में शबे क़दर भी होती है,दूसरा यह कि:यह महीना उससे विदा हो रहा है और वह नहीं जानता कि आगामी वर्ष उसे यह महीना नसीब होगा अथवा नहीं। {यह कथन इब्न अलजौज़ी का है जो उन्होंने अपनी पुस्तक"'अलतबसेरह"में उल्लेख किया है,हैरफैर के साथ वर्णित।}
- आप यह भी जान लें-अल्लाह आप पर कृपा करं-कि अल्लाह तआ़ला ने आपको एक बड़ी चीज का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ۝٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात:अल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट करदे,और अपने एकेश्वरवादी बंदों की सहायता फरमा।

- हे अल्लाह! तू हमें हमारे देशों में शांति प्रदान कर,हमारे इमामों और हमारे शासकों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक और हिदायत पर चलने वाला बना।
- हे अल्लाह! समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के लिए रह़मत का कारण बना।
- हे अल्लाह! हम तुझसे दुनिया एवं आखिरत की सारी भलाई की दुआ मांगते हैं जो हमको मालूम है और नहीं मालूम,और हम तेरा शरण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत की समस्त बुराइयों से जो हमको मालूम हैं और जो मालूम नहीं।

हे अल्लाह!में तुझसे स्वर्ग की भीक मांगता हूं और उस कथन एवं कार्य की भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और में तेरा शरण चाहता हूं नरक से और उस कथन एवं कार्य से जो नरक से निकट करदे।

- हे अल्लाह!हमारे धर्म को सही करदे,जो हमारे(दीन व दुनिया क) प्रत्येक काम की सुरक्षा का माध्यम है और हमारी दुनिया को सही करदे जिसमें हमारा गूजारा है और हमारी आखिरत को सही करदे जिसमें हमारा(अपनी मंजिल की ओर) लौटना है और हमारे जीवन को हमारे लिए प्रत्येक भलाई में वृद्धि का कारण बनादे और हमारी मृत्यु को हमारे लिए शर से राहत बनादे।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी प्रदान कर और आखिरत में भलाई अता फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين.

शीर्षकः ईदुलफ़ित्र से संबंधित दस महत्वपूर्ण बिन्दुऐं

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रशंसाओं के पश्चातः

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त(नवाचार)है और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

1. ए अल्लाह के बंदो! अल्लाह तआ़ला से पूरे तौर से डरो और उसका तक़वा अपनाओ,इस्लाम को बलपूर्वक थाम लो,और अल्लाह तआ़ला की प्रशंसा करो कि उसने रमज़ान महीने के अंत तक तुमको पहुंचाया,तुम्हारे रब का कथन हैः

﴿وَلِتُكۡمِلُواْ ٱلۡعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُواْ ٱللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَىٰكُمۡ وَلَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُونَ﴾ [سورة البقرة:١٨٥]

अर्थातःवह चाहता है कि तुम गिनती पूरी करलो और अल्लाह तआ़ला की दी हुई मार्गदर्शन पर उसकी प्रशंसा करो और उसका आभारी रहो।

2. ए मुसलमानो!निसंदेह अल्लाह तआ़ला ने सत्य फरमाया कि रमज़ान केवलः(गिनती के कुछ दिन हैं),यह दिन कितनी जलदी गुजर जाते हैं,यह दिन-रात गुज़र गए और हमसे जुदा हो गए,आपको महसूस हुआ कि कैसे यह दिन गुजर गए?क्या आपको एहसास हुआ कि कितनी जलदी यह दिन-रात बीत गए?
3. ए मोमिनो!आपको बधाई हो कि आपने इस महीने के रोज़े रखे,आपको बधाई हो कि आपने इस महीने की रातों में क़याम किया,आपको बधाई हो कि आप इस महीने के अंत तक को पहूंच गए,जबकि बहुत से लोगों का निधन हो गया और उन्हें रमज़ान का यह अंतिम क्षण नसीब न होसका,हममे से प्रत्येक पर अल्लाह के अनेक आशीर्वाद हैं।
4. ए मुसलमानो!आप सब को वह खुशी बधाई हो जो हमें इस्लाम के इस महान स्तंभ को पूरा करने के पश्चात रमज़ान महीने के अंत में प्राप्त होती है,हम अल्लाह की प्रशंसा करते हैं,उसके एकता और उसकी महानता की गीत गाते हैं,यदि अल्लाह ने चाहा तो हमारे पुण्यों में वृद्धि हुआ होगा,हमारे पापों को क्षमा मिला होगा और हमारे स्थान उच्च हुए होंगे।
5. ए अल्लाह के बंदो!आपको वह खुशी बधाई हो जो हमें दो महान अवसरों के पश्चात ईद के रूप में प्राप्त होती है,जिसमें हमारे पाप मिटाए जाते हैं,पुण्यों में

वृद्धि होता है,हमारे स्थान उच्च होजाते हैं,रोज़े पूरे करने के पश्चात हम ईदुलफ़ित़र मनोते हैं और ह़ज पूरा करने के पश्चात ईदुलअज़हा मनाते हैं,हमारी ईदें दीन व प्रार्थना,नमाज़ व तकबीर, (प्राण की बलि) और ज़काते फितर से निर्मित हैं,यह खुशी भी है और परिजनों के साथ सुंदर व्यवहार भी,आपसी मोलाक़ात,आपसी प्रेम,पूर्व के पापों को क्षमा और नए संबंध बनाने,छल-कपट और कीना को भूल जाने का उत्तम अवसर है,जिस व्यक्ति को किसी परिजन अथवा मित्र से छल-कपट हो अथवा संबंध टूट गया हो तो उस दिन को गनीमत जान कर संबंध को जोड़े और नए से संबंध बनाए और दिलों में खूशयों के रंग भरे,नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस है:(अल्लाह के निकट सबसे प्रिय कार्य यह है कि किसी मुसलमान को खुशी पहूंचाई जाए) (सह़ी अलतरगीब:955)

6. ए मोमिनो!आपको हमारी ईद की यह (पवित्र) खुशी की बधई हो जो बहुदेववादी और गुमराह समुदायों की ईदों में नहीं पाई जाती,बल्कि उनकी ईदें उनके पाप और अल्लाह से दूरी में वृद्धि कर देती हैं।

अल्लाह के बंदो!इन रह़मतों से प्रसन्न होजाऐं,अल्लाह का कथन है:

﴿قُلۡ بِفَضۡلِ ٱللَّهِ وَبِرَحۡمَتِهِۦ فَبِذَٰلِكَ فَلۡيَفۡرَحُواْ﴾ [سورة يونس:٥٨]

अर्थातःआप कह दीजिए कि बस लोगों को अल्लाह के इस आशीर्वाद और रह़मत से प्रसन्न होना चाहिए।

1. अल्लाह से और(रह़मत व बरकत) आशीर्वाद की दुआ करें,समस्त प्रशंसाऐं अल्लाह के लिए हैं कि उसने हमारे उपर यह कृपा किया कि हमें इस्लाम और सुन्नत का निर्देश एवं मार्गदर्शन प्रदान किया।

7.ए मुसलमानो! (ईद के दिन)सिंगार करें खुशबू लगाऐं,इमाम मालिक रहिमहुल्लाह फरमाते हैं:(मेंने विद्वानों से सुना कि वह अ़तर और सिंगार को हर ईद में मुस्तह़ब समझते थे) (इब्ने रजब की पुस्तक शरहुलबोखारी(6/68),प्रकाशक:इब्नुलजौज़ी-अलदमाम।)

8.ए मोमिनो!अपने घरों को और अपने दिलों को खोल कर रखें,एक दुसरे के लिए दुआ करें कि अल्लाह सब के अ़मल को स्वीकार करे,एक दुसरे को भदाई दें,सह़ाबा एक दुसरे को बधई देते हुए कहा करते थे: تقبل الله منا ومنكم (अल्लाह तआ़ला हमारे और आपके पुण्यों को स्वीकार फरमाए।)

9.ए मुसलमानो!पूर्व के कमयों को क्षमा करना एक अति महत्वपूर्ण प्रार्थना एवं आज्ञाकारी है,अल्लाह तआ़ला ने उस पर अनेक बदला व पुण्य रखा है,अल्लाह का कथन है:

﴿ فَمَنۡ عَفَا وَأَصۡلَحَ فَأَجۡرُهُۥ عَلَى ٱللَّهِۚ ﴾ [سورة الشورى:٤٠]

अर्थातःजो क्षमा करदे और सुधार करले उसका बदला अल्लाह के जिम्मे है।

अतः अल्लाह ने (इस कार्य पर)अनेक बदला व पुण्य का वादा किया है,जिससे पता चलता है कि यह अ़मल बड़ा महान है।

ए मोमिनो!आत्मा(दिलों) की सुधार और उनका शुद्धिकरण एक श्रेष्ठतर प्रार्थना है,उस पर अल्लाह ने सफलता रखी है,अल्लाह का कथन है:

﴿قَدۡ أَفۡلَحَ مَن زَكَّىٰهَا ۝٩ وَقَدۡ خَابَ مَن دَسَّىٰهَا ۝١٠﴾ [سورة الشمس:٩-١٠]

अर्थातः जिसने उसे पवित्र किया वह सफल हुआ और जिसने उसे भूमी में मिला दिया वह विफल हुआ।

अल्लाह के बंदो!जिन कार्यों से प्रसन्न्ता में वृद्धि होता है,उनमें यह भी है कि समाजी संबंध अच्छे बनाए जाऐं,उनका नवीनीकरण किया जाए,उनमें शक्ति लाई जाए,पूरे वर्ष के मध्य दिलों में छल कपट और नफरत के जो धूल जम गए हैं,उनसे दिलों को पवित्र किया जाए,बधाई है उस व्यक्ति के लिए जो ईद को गनीमत जान कर बिखरे हुए पति पत्नी के संबंध को बनादे,आपस में दूर दिलों को जोड़दे,जिसके कारण से उनके परिवार में खूशी पैदा हो जाए,अथवा कोई रक्त क्षमा करदे,अथवा परिजनों की आपसी रंजिश को दूर करदे।

ए अल्लाह तूने हमारे उपर रमज़ान के महीने का अंत और ईद को पहूंचाने का जो उपकार किया है,उसे हमारे लिए बरकत वाला बना दे और अपनी आज्ञाकारी के लिए इसे सहायक बनादे,ए अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान कर जो तुछसे निकट करदे,में अपनी यह बात कहते हूए अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह बड़ा क्षमा करने वाला और अति कृपा करने वाला है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد:

10.ए अल्लाह के बंदो!आप जान लें-अल्लाह आप पर कृपा करे-कि सबसे बड़ी खूशी उस समय प्राप्त होगी जब आप अल्लाह तआ़ला से पुण्य के कार्यों के साथ मोलाक़ात करेंगे,अल्लाह तआ़ला स्वर्ग वालों से फरमाएगाःए स्वर्ग वासियो!स्वर्ग वासी उत्तर देंगेःहम उपस्थित हैं ए हमारे परवरदिगार!तेरी शुभकामनाऐं प्राप्त करने के लिए।अल्लाह तआ़ला पूछेगाःक्या अब तुमलोग खुश हुए?वे कहेंगेःअब भी भला हम खुश न होंगे जबकि तूने हमें वह सब कुछ दे दिया जो अपनी मख़लूक़ में से किसी को नहीं दिया।अल्लाह तआ़ला फरमाएगाःमें तुम्हें उससे भी अच्छा बदला दूंगा।स्वर्ग वासी कहेंगेःए रब!इससे अच्छा और क्या चीज होगी?अल्लाह तआ़ला फरमाएगा किःअब में

तुम्हारे लिए अपनी प्रसन्नता को सवेद रहने वाला कर दूंगा अर्थात उसके पश्चात कभी तुम पर नाराज नहीं हूंगा। (बोखारी (6549) और मुस्लिम (2829) ने इसे अबू सईद खुदरी रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।)

11.ए मोमिनो!रमज़ान सुधार का और सवेद के लिए अल्लाह तआ़ला से संबंध बनाने का उत्तम अवसर है,इस लिए आप प्रार्थना में लगे रहें,रमज़ान के साथ प्रार्थना समाप्त नहीं होता,बल्कि मृत्यु के पश्चात अ़मल का दरवाजा बंद होता हैः

﴿وَٱعۡبُدۡ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأۡتِيَكَ ٱلۡيَقِينُ ﴿٩٩﴾﴾ [سورة الحجر:٩٩]

अर्थातःअपने रब की पूजा करते रहैं यहां तक कि आपको मृत्यु आजाए।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन हैः (अल्लाह के दरबार में सबसे अधिक पसंद वह कार्य है जिसे पाबंदी से सवेद किया जाए,चाहे वह कम ही हो) (बोखारी (5861) ने आयशा रजीअल्लाहु अंहा से वर्णित किया है।)

ए मुसलमानो!रमज़ान के पश्चात भी पुण्य के कार्य पर स्थिर रहना अल्लाह की तौफीक़ और अ़मल के स्वीकार होने की पहचान है,इसके विपरीत केवल मौसम ही मौसम अ़मल करना कम ज्ञान,अल्लाह की तौफीक़ से दूरी का प्रमाण है,क्योंकि जो रमज़ान का रब है वही समस्त महीनों का रब है,किसी सलफ से उस व्यक्ति के बारे में पूछा गया जो व्यक्ति रमज़ान में खूब प्रार्थना करता है और उसके अतिरिक्त महीनों में प्रार्थना छोड़ देता है,तो उन्हों ने उत्तर दियाःयह बहुत ही बुरी क़ोम है जो केवल रमज़ान में अल्लाह को जानती है।

ए मोमिनो!मुसलमानों का एक श्रेष्ठ गुन यह है कि वे आज्ञाकारी करते हैं,आज्ञाकारी यह है कि प्रार्थना पर स्थिर रहा जाए और उसको सवेद किया जाए,अल्लाह ने आज्ञाकारी करने वालों की प्रशंसा करते हुए फरमायाः

﴿إِنَّ ٱلۡمُسۡلِمِينَ وَٱلۡمُسۡلِمَٰتِ وَٱلۡمُؤۡمِنِينَ وَٱلۡمُؤۡمِنَٰتِ وَٱلۡقَٰنِتِينَ وَٱلۡقَٰنِتَٰتِ وَٱلصَّٰدِقِينَ وَٱلصَّٰدِقَٰتِ وَٱلصَّٰبِرِينَ وَٱلصَّٰبِرَٰتِ وَٱلۡخَٰشِعِينَ وَٱلۡخَٰشِعَٰتِ وَٱلۡمُتَصَدِّقِينَ وَٱلۡمُتَصَدِّقَٰتِ وَٱلصَّٰٓئِمِينَ وَٱلصَّٰٓئِمَٰتِ وَٱلۡحَٰفِظِينَ فُرُوجَهُمۡ وَٱلۡحَٰفِظَٰتِ وَٱلذَّٰكِرِينَ ٱللَّهَ كَثِيرٗا وَٱلذَّٰكِرَٰتِ أَعَدَّ ٱللَّهُ لَهُم مَّغۡفِرَةٗ وَأَجۡرًا عَظِيمٗا ﴿٣٥﴾﴾ [سورة الأحزاب:٣٥]

अर्थातः(जो लोग अल्लाह के आगे आज्ञाकारी के साथ अपने सर को झुकाने वाले हैं)मुसलमान पुरूष और मुसलमान महिलाऐं और मोमिन पुरूष और मोमिन महिलाऐं और आज्ञाकारी पुरूष और आज्ञाकारी महिलाऐं और सत्य बोलने वाले पुरूष और सत्य बोलने वाली महिलाऐं और सबर करने वाले पुरूष और सबर करने वाली महिलाऐं डरने वाले

पुरूष और डरने वाली महिलाऐं और दान करने वाले पुरूष और दान करने वाली महिलाऐं और रोज़े रखने वाले पुरूष और रोज़े रखने वाली महिलाऐं और अपनी शरमगाहों की सुरक्षा करने वाले पुरूष और शरमगाहों की सुरक्षा करने वाली महिलाऐं और अल्लाह को अधिक से अधिक याद करने वाले पुरूष और अधिक से अधिक याद करने वाली महिलाऐं-कुछ संदेह नहीं कि उसके लिए अल्लाह ने क्षमा और विशाल बदला तैयार कर रखा है।

12.ए अल्लाह के बंदो!रमज़ान के पश्चात शौवाल के छे रोज़े रखना सुन्नत और मुस्तहब है और अल्लाह तआ़ला ने इस पर बड़े बदले का वादा कर रखा है,जैसा कि अबू अय्यूब रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःजिसने रमज़ान के रोज़े रखे,फिर उसके पश्चात छे रोज़े रखे तो यह(पूरे वर्ष) लगातार रोज़े रखने के जैसा है। (मुस्लिम 1164)

शौवाल के छे रोज़े की एक बड़ी ह़िकमत (नीति) यह है कि रमज़ान के फरज़ रोज़ों में जो कमी रह जाती है,इन नफली रोज़ों से इसकी भरपाई हो जाती है,क्योंकि रोज़ेदार से कोई न कोई कोताही अथवा पाप हो जाता है जो फरज़ को प्रभावित करदेता है,अतःनफली रोज़े से फरज़ रोज़े की यह कमी दूर हो जाती है।

ईद से संबंधित यह दस(से अधिक) बिन्दु हैं,मुस्लिम बंदा को चाहिए कि ईदुलफ़ित्र के अवसर पर इन्हें जेहन में रखे,ताकि ईद प्रार्थना में बदल जाए,केवल रीति रिवाज न रहे।

हे अल्लाह!हमारे पापों को और हमसे हमारे कामों में जो बेकार की जेयादती हुई है,उसे भी क्षमा करदे,हे अल्लाह!हमें नरक से मुक्ति प्रदान कर,हे अल्लाह!स्वर्ग को हमारा ठेकाना बनादे,हमें फिरदौसे बरीं का निवासी बना,हमें बिना हिसाब और बेगैर किसी यातना के स्वर्ग में प्रवेश प्रदान फरमा,ए करीम व दाता प्रवर्दिगार!हे अल्लाह!हमें नरक से मुक्ति प्रदान कर,हमें हमारे पापों से इस प्रकार पवित्र करदे जिस प्रकार हमारी माताओं ने हमें जना था,हे अल्लाह!हमारे इस सभा को पापों से क्षमा,अ़मल की स्वीकृति और परिश्रम की स्वीकृति व धन्यवाद के साथ समाप्ति फरमा,हे अल्लाह हमारे देश को और मुसलमानों के समस्त देशों को शांति,सोकून और खुशहाली व हरयाली का स्थान बनादे,हे अल्लाह!हमारी ईद को खुशी का स्त्रोत,हमारे जीवन को खुशहाल करदे,हमें स्वास्थ्य और शांति के साथ बारबार आज्ञाकारी व बरकत का मोसम प्रदान कर।

اللهم صل على محمد وعلى آل محمد، سبحان ربنا رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، الحمد لله رب العالمين.

शीर्षक: ज़िलहिज्जा के १० दिनों की विशेषताएं एवं श्रेष्ठताऐं!

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

ए मुसलमानो! अल्लाह से डरो एवं उसका भय अपने हृदय में जीवित रखो। उसके आज्ञाकारी बनो एवं अवज्ञा से वंचित रहो। ज्ञात रखो कि अल्लाह तआ़ला के पालनहार होने के साक्ष्यों का एक पाठ यह भी है कि वह अपनी सृष्टि में से जिसे चाहता है सर्वश्रेष्ठ बना देता है, चाहे वे मनुष्य हों, स्थान हों, समय हों अथवा उपासनाएं हों। इसके पीछे अल्लाह की बुद्धिमत्ता ही कार्य करती है जिससे वही भली-भांति अवगत रहता है। अल्लाह का कथन है:

﴿وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ﴾ [سورة القصص:٦٨]

अर्थात: "और आपका पालनहार जो चाहता है पैदा करता है एवं जिसे चाहता है चयन कर लेता है।"

हम इस उपदेश में जितना भाग में होगा ज़िलहिज्जा के प्रारंभिक १० दिनों की उन विशेषताओं का उल्लेख करेंगे जिनसे अल्लाह ने इन १० दिनों को संबंधित किया है एवं ये वे विशेषताएं हैं जिन्होंने इन १० दिनों को वर्ष के अन्य दिनों से विशिष्ट एवं सर्वश्रेष्ठ बनाया है, जिन में सर्वप्रथम विशेषता यह है कि अल्लाह ने इन १० दिनों का उल्लेख क़ुरआन में विशेष रूप से किया है, अल्लाह का कथन है:

﴿لِّيَشْهَدُواْ مَنَٰفِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُواْ ٱسْمَ ٱللَّهِ فِىٓ أَيَّامٍ مَّعْلُومَٰتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم مِّنۢ بَهِيمَةِ ٱلْأَنْعَٰمِ﴾ [سورة الحج:٢٨]

अर्थात: "अपने लाभों को प्राप्त करने हेतु आ जाएं एवं उन नियत दिनों में अल्लाह का नाम लें और उन पशुओं पर जो पालतू हैं।"

यहां "अय्याम-ए-मअ़लूमात" का अर्थ ज़िलहिज्जा के १० दिन हैं, जिसका साक्ष्य इब्ने अ़ब्बास रज़ि अल्लाहू अ़न्हुमा से वर्णित एक रिवायत है कि "अय्याम-ए-मअ़लूमात" का अर्थ ज़िलहिज्जा के १० दिन हैं। (इसे बुख़ारी ने सेग़ह-ए-जज़्म के निलंबन के साथ अपनी सहीह में रिवायत क्या है, देखें: किताबुल्-ईदैन, बाबू-फ़ज़्लिल्-अ़मलि फ़ी अय्यामित्-तशरीक़।)

● ज़िलहिज्जा के १० दिनों की श्रेष्ठता का एक साक्ष्य यह भी है कि अल्लाह ने अपने कथन में इनके रात्रियों की क़सम खाई है,

﴿وَٱلۡفَجۡرِ ۝١ وَلَيَالٍ عَشۡرٖ ۝٢﴾ [سورة الفجر:١-٢]

अर्थात: "क़सम है प्रातः के समय की एवं १० रात्रियों की।"

इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह का कथन है:"१० रात्रि का अर्थ ज़िलहिज्जा के १० दिन हैं जैसा कि इब्नेने अ़ब्बास, इब्ने ज़ुबैर, मुजाहिद एवं उनके अतिरिक्त पूर्व व पश्चात में से कई एक व्याख्याकारों का कथन है। इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।

● ज़िलहिज्जा के १० दिनों की श्रेष्ठता का एक साक्ष्य यह भी है कि संपूर्ण वर्ष की तुलना में इन दिनों में किए जाने वाले पुण्य को श्रेष्ठाता प्राप्त है। उदाहरण स्वरुप इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अ़न्हुमा से मरवी है, वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमाया: "ज़िलहिज्जा के १० दिनों की तुलना में अन्य कोई दिन ऐसा नहीं है जिसमें पूण्य कार्य अल्लाह को इन दिनों से अधिक प्रिय हों।"

लोगों ने प्रश्न किया: ए अल्लाह के दूत! अल्लाह के मार्ग में युद्ध लड़ना भी नहीं? तो अल्लाह के दूत ने फ़रमाया: "अल्लाह के मार्ग में युद्ध लड़ना भी नहीं, उस व्यक्ति को छोड़कर जो अपने प्राण एवं धन दोनों लेकर अल्लाह के मार्ग में निकला फिर किसी वस्तु के साथ वापस नहीं आया।" (बुख़ारी: ९६९, अहमद: १/३३८-३३९, उल्लेख किए गए शब्द अहमद के हैं।)

इब्ने रजब रहिमहुल्लाह के कथन का सारांश: "यह हदीस बहुत ही सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोच्च है और यह इस बात का उल्लेख है कि छोटा पुण्य कार्य भी श्रेष्ठता के स्थान को प्राप्त कर लेता है, (परंतु इस शर्त के साथ कि) जब उस कार्य को श्रेष्ठ समय में क्या गया हो, यहां तक कि वह श्रेष्ठ समय में पूर्ण होने के कारण अन्य श्रेष्ठ कार्यों पर भी श्रेष्ठता प्राप्त कर लेता है और उन्हीं में से ज़िलहिज्जा के १० दिनों के भी पुण्य कार्य हैं जो अन्य श्रेष्ठता वाले कार्य से भी सर्वश्रेष्ठ हैं एवं इससे युद्ध के सर्वश्रेष्ठ प्रकार के अतिरिक्त कोई भी पुण्य कार्य अलग नहीं है और यह वह व्यक्ति है जो अपने प्राण एवं माल के साथ युद्ध में निकले और कुछ भी लेकर ना लौटे। एवं यह हदीस इस बात पर भी साक्ष्य है कि ज़िलहिज्जा के १० दिनों के नफ़्ली उपासना रमज़ान के १० दिनों के नफ़्ली उपासना की तुलना में श्रेष्ठ है, इसी प्रकार ज़िलहिज्जा के १० दिनों के अनिवार्य उपासना रमज़ान के १० दिनों के अनिवार्य उपासना की तुलना में श्रेष्ठ है। इब्ने रजब रहिमहुल्लाह के कथन का सारांश समाप्त हुआ। (फ़तहुल्-बारी:९/११-१६, प्रकाशक: मकतबतुल्-ग़ुरबा-आल्-असरिया मदीना)

● ज़िलहिज्जा के १० दिनों की श्रेष्ठता का एक साक्ष्य यह भी है कि इसमें अ़रफ़ा का दिन आता है, जिस दिन अल्लाह तआ़ला ने अपने धर्म को पूर्ण किया एवं इस श्लोक को अवतरित किया:

﴿ٱلۡيَوۡمَ أَكۡمَلۡتُ لَكُمۡ دِينَكُمۡ وَأَتۡمَمۡتُ عَلَيۡكُمۡ نِعۡمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ ٱلۡإِسۡلَٰمَ دِينٗاۚ﴾ [سورة المائدة:٣]

अर्थात: "आज हमने तुम्हारे हेतु तुम्हारे धर्म पर पूर्ण विराम लगा दिया, एवं अपनी वरदानें तुम पर पूरी कर दीं और तुम्हारे लिए धर्म के रूप में इस्लाम से प्रसन्न हो गया।"

● ज़िलहिज्जा के १० दिनों की श्रेष्ठता का एक साक्ष्य यह भी है कि इसमें बलिदान देने का दिन है जो सबसे बड़े हज का भी दिन है। और यही वह दिन है जिसमें बहुत सारे उपासना इकट्ठा हो जाते हैं, वो ये हैं: बलिदान देना, चक्कर लगाना, दौड़ना, बाल मुंडवाना अथवा कटवाना, कंकर मारना (रम्यि जमरात करना)' नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है: " अल्लाह तआ़ला के निकट सर्वश्रेष्ठ दिन बलिदान का दिन (१० वीं ज़िलहिज्जा का दिन) है, फिर विश्राम लेने का दिन (११वीं ज़िलहिज्जा का दिन) है।" (इसे अबू दाऊद: १७६५ ने अब्दुल्लाह बिन क़ुर्त रज़ि अल्लाहू अ़नहु की हदीस से प्रतिलिपि की है एवं अल्लामा अल्-बानी ने सहीह कहा है।)

◈ ए मुसलमानो! इन १० दिनों में निम्नलिखित ६ पुण्य कार्यों को करना बहुत ही बहुमूल्य, महत्त्वपूर्ण एवं श्रेष्ठ है:

(१) अधिक से अधिक अल्हमदुलिल्लाह, ला-इलाह-इल्लल्लाह एवं अल्लाहू-अकबर को पढ़ना, अब्दुल्लाह बिन ऊ़मर रज़ि अल्लाहू अ़न्हुमा से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह के निकट इन १० दिनों की तुलना में किसी भी दिन पुण्य कार्य करना अधिक प्रिय एवं बड़ा नहीं है,इस कारणवश इन दिनों में अल्हमदुलिल्लाह, ला-इलाह-इल्लल्लाह एवं अल्लाहू-अकबर अधिकतम् पढ़ा करो।" (इसे अहमद: २/१३१

ने रिवायत किया है, एवं अल्-मुस्नद: ६१५४ के शोधकर्ताओं ने कहा है कि यह हदीस सहीह है।)

बुख़ारी रहिमहुल्लाह का कथन है: "इब्ने ड़मर एवं अबू हुरैरा इन १० दिनों में मंडी की ओर निकलते तो उच्च स्वर के साथ तकबीर पढ़ते, इस कारणवश लोग भी उन्हें देखकर तकबीर कहने लगते।" (इसे बुख़ारी ने किताबुल्-ईदैन, बाबू-फ़ज़िलल्-अ़मलि फ़ी अय्यामित्-तशरीक़ में रिवायत किया है।)

तकबीर का रूप यह है: "अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर, ला-इलाह-इल्लल्लाह, वल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर, वालिल्लाहिल हम्द।"

ज्ञात हुआ के इन १० दिनों में अल्हमदुलिल्लाह, ला-इलाह-इल्लल्लाह एवं अल्लाहू-अकबर को पढ़ना वैध है। मस्जिदों, गृहों, पथों एवं हर उस स्थान पर इनको पढ़ा जा सकता है जहां अल्लाह का स्मरण करना वैध है, ताकि उपासना का प्रदर्शन एवं अल्लाह के सर्वोच्च होने का प्रचार-प्रसार हो सके। वह इस प्रकार की पुरुष इन मंत्रों का उच्च स्वर के साथ सस्वर पाठ करे एवं महिलाएं यदि पुरुषों के बीच हों तो धीमी स्वर में पढ़े।

आज के युग में तकबीर की सुन्नत को त्याग दिया गया है, आप बहुत कम लोगों को तकबीर का सस्वर पाठ करते हुए सुनेंगे, इस कारणवश इस सुन्नत को जीवित करने, एवं लापरवाहों को सावधान एवं सचेत करने हेतु उच्च स्वर के साथ तकबीर का सस्वर पाठ करना चाहिए, ताकि देखा देखी लोग तकबीर पढ़ने की ओर जागरूक हों, प्रत्येक व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से तकबीर पढ़े, एक स्वर में समग्र रूप से तकबीर पढ़ना अवैध है।

(२) इन १० दिनों में जो पुण्य कार्य वैध हैं उनमें एक उपवास रखना भी है, इस कारणवश मुस्लिम दास हेतु यह बहुत ही मुस्तहब कार्य है कि वह ज़िलहिज्जा के ९ दिनों में उपवास रखे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़िलहिज्जा के ९ दिनों में उपवास रखा करते थे। हुनैदा बिन ख़ालिद अपनी पत्नी से और वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियों से रिवायत करती हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़िलहिज्जा के ९ उपवास, आ़शूरा के दिन (१० वीं मुहर्रम को) एवं प्रत्येक महीने में तीन उपवास रखते एवं प्रत्येक महीने के प्रथम सोमवार को और उसके पश्चात वाले गुरुवार को फिर उसके पश्चात वाले गुरुवार को उपवास रखते थे। (इसे अबू दाऊद: २४३७ एवं नसई: २४१७ ने रिवायत किया है, उल्लेख किए गए शब्द नसई के हैं एवं अल्लामा अल्-बानी ने इसे सहीह कहा है।)

अबू उमामा अल्-बाहिली रज़ि अल्लाहू अ़नहु ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रश्न ने किया: (मुझे ऐसे कार्य का आदेश दीजिए जो मेरे हेतु लाभदायक हो)' आपने फ़रमाया: "तुम व्यवस्था पूर्वक उपवास रखो क्योंकि इसका कोई उदाहरण नहीं है।" (इसे नसई: २८४० एवं अहमद: ५/२४९ ने रिवायत किया है, उल्लेख किए गए शब्द नसई के हैं, अहमद के शब्द ये हैं: मैंने कहा: मुझे ऐसे कार्य का आदेश दीजिए जो मुझे स्वर्ग में प्रवेश करवा दे, आपने फ़रमाया: "तुम व्यवस्था पूर्वक उपवास रखो क्योंकि इसका कोई उदाहरण नहीं है।" फिर द्वितीय बार आप के निकट आया तो आपने मुझसे कहा: "व्यवस्था पूर्वक उपवास रखो।" इस हदीस को अल्लामा अल्-बानी ने सहीह कहा है एवं अल्-मुस्नद के शोधकर्ताओं ने कहा है: इसकी सनद मुस्लिम की शर्त पर सहीह है।)

(३) इन १० दिनों में जो पुण्य कार्य वैध हैं उनमें अ़रफ़ा के दिन का उपवास रखना भी है, इसका साक्ष्य नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है: "अ़रफ़ा के दिन का उपवास ऐसा है कि मैं अल्लाह पाक से आशा करता हूं कि एक वर्ष पूर्व एवं एक वर्ष पश्चात के पापों का कफ़्फ़ारा हो जाए।"

(४) इन १० दिनों में जो पुण्य कार्य वैध हैं उनमें एक ईद की नमाज़ पढ़ना भी है, जो कि एक प्रसिद्ध बात है।

(५) इन १० दिनों में जो पुण्य कार्य वैध हैं उनमें बलिदान के पशुओं को वध (ज़ब्ह) करना भी है, यह प्रत्येक धनी लोगों हेतु सुन्नते मुअक्कदा है, ईदुल्- अज़्हा के दिन बलिदान की पशुओं का वध करना अन्य तश्रीक़ के दिनों की तुलना में अधिक श्रेष्ठ है, क्योंकि ईदुल्-अज़्हा का दिन ज़िलहिज्जा के प्रारंभिक १० दिनों का सबसे अंतिम दिन है एवं ये १० दिन वर्ष के संपूर्ण दिनों की तुलना में सर्वश्रेष्ठ हैं। जबकि तश्रीक़ के दिन ज़िलहिज्जा के १० दिनों में सम्मिलित नहीं हैं। इसके अतिरिक्त ईद के दिन पशुओं का बलिदान देना पुण्य कार्य के संदर्भ में शीघ्रता को अपनाने का मौलिक पाठ है। (तसहीलुल्-फ़िक़्ह: ९/२२९, लेखक: शैख़ अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अज़ीज़ अल्-जबरीन रहिमहुल्लाह)

(६) ज़िलहज्जा के १० दिनों में जो पुण्य कार्य वैध हैं उनमें हज्ज एवं उमरा करना भी है। इन १० दिनों में क्या जाने वाला यह सर्वश्रेष्ठ पूण्य कार्य है। जिसको अल्लाह तआ़ला हज्ज करने की शक्ति दे, और वह वांछित विधि के अनुसार हज्ज के रस्म को पूर्ण करे एवं अल्लाह की अवैध की गई चीज़ों से वंचित रहे, अर्थात: शोर, अवज्ञा एवं अनैतिकता और लड़ाई-झगड़े से दूर रहे तो वह इसका योग्य है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के वचन के अनुसार उस बदले और सवाब को प्राप्त करे की स्वीकृति हज्ज का बदला स्वर्ग ही है। (इसे बुख़ारी: १७७३, मुस्लिम: १३४९ ने अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहू अ़नहु से रिवायत किया है।) ए अल्लाह के दासो! ये ६ उपासनाएं हैं, जो ज़िलहिज्जा के १० दिनों में किए जाने वाले मुस्तहब पुण्य कार्य की सूची के शीर्ष पर हैं। यह उपासनाएं संपूर्ण वर्ष के अन्य सर्वश्रेष्ठ दिनों की तुलना में ज़िलहिज्जा के १० दिनों के साथ आवंटित हैं। इन १० दिनों में चूंकि ये उपासनाएं इकट्ठा हो जाती हैं इस कारणवश इन दिनों को वर्ष के अन्य दिनों पर एक प्रकार की श्रेष्ठता प्राप्त है, वह इस प्रकार की संपूर्ण मौलिक उपासनाएं इन में इकट्ठा हो जाती हैं, उदाहरण स्वरूप: नमाज़, उपवास, दान-पुण्य एवं हज्ज। ये उपासनाएं अन्य दिनों में इकट्ठा नहीं होतीं। यह कथन इब्ने हजर रहिमहुल्लाह का है। (देखें: फ़तहुल्-बारी: २/५३४, हदीस व्याख्या: ९६९)

यह बहुत ही चिंताजनक बात है कि लोग रमज़ान के अंतिम चरण में बहुत ही जोश एवं गतिविधि का प्रदर्शन करते हैं, जबकि ज़िलहिज्जा के इन १० दिनों में वह जोश एवं गतिविधि नहीं दिखाते जबकि यह दिन अधिक श्रेष्ठ एवं सर्वोच्च हैं।

महान ताबेई़ सई़द बिन जुबेर रहिमहुल्लाह का अभ्यास था कि वह ज़िलहिज्जा के १० दिन आते तो बहुत ही परिश्रम एवं लगन के साथ उपासना में लग जाते यहां तक कि प्राण को भी ख़तरे में डाल देते। (इसे दारमी ने अपने सुनन: १८१५ में रिवायत किया है, प्रकाशक: दारुल्-मुग़नी, शोधकर्ता: हुसैन सलीम असद, इसके अतिरिक्त इसे बैहक़ी ने "अश्-शअ़ब" में हदीस संख्या: ३७५२ के अंतर्गत रिवायत किया है।)

उनका यह कथन भी रिवायत किया जाता है: "ज़िलहिज्जा के १० रात्रियों में दीप को मत बुझाया करो।" (सियरु-अअ़लामिन्-नुबलाअ:४/३२६)

अर्थात: उन रात्रियों को क़ुरआन के सस्वर पाठ एवं तहज्जुद के माध्यम से जीवित रखा करो।

आइए हम अल्लाह से सहायता की मांग करते हुए इन दिनों में अधिकतम पुण्य कार्य करते हैं एवं उन पुण्य कार्य को पूरा करने हेतु एक दूसरे से आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं और इन कार्यों पर बदले और सवाब की अल्लाह तआ़ला से आशा रखते हैं, क्योंकि आज पुण्य करने का अवसर है लेखांकन का नहीं, और प्रलय का दिन लेखांकन होगा पुण्य का अवसर नहीं।

﴿سَابِقُوٓاْ إِلَىٰ مَغۡفِرَةٖ مِّن رَّبِّكُمۡ وَجَنَّةٍ عَرۡضُهَا كَعَرۡضِ ٱلسَّمَآءِ وَٱلۡأَرۡضِ أُعِدَّتۡ لِلَّذِينَ ءَامَنُواْ بِٱللَّهِ وَرُسُلِهِۦۚ﴾ [سورة الحديد:٢١]

अर्थात: "आओ! लपको अल्लाह के क्षमा की ओर एवं उस स्वर्ग की ओर जिसकी चौड़ाई आकाश एवं पृथ्वी की चौड़ाई के समान है, यह उन लोगों हेतु बनाई गई है जो अल्लाह और उसके रसूल पर विश्वास रखते हैं।"

अल्लाह तआ़ला हमें एवं आपको सर्वश्रेष्ठ क़ुरआन के लाभों से लाभार्थी करे, मुझे एवं आपको क़ुरआन के श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाहों से लाभार्थी करे, मैं अपनी यह बात कहते हुए अपने लिए एवं आप संपूर्ण के लिए अल्लाह से क्षमा मांगता हूं, आप भी उस से क्षमा प्रार्थी हों। निःसंदेह वह अधिक क्षमा स्वीकार करने वाला एवं अधिकतम दया करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله على فضله وإحسانه، والشكر له على توفيقه وامتنانه، وأشهد أن لا اله الا الله وحده لا شريك له تعظيما لشأنه، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله، صلى الله عليه وعلى آله وأصحابه وسلم تسليما كثيرا، أما بعد!

ए मुसलमानो! आप यह ज्ञात रखें कि ज़िलहिज्जा के १० दिन रमज़ान के अंतिम १० दिनों से भी सर्वश्रेष्ठ हैं, इस कारणवश इन दिनों में बहुत ही परिश्रम एवं लगन के साथ उपासना करें, हाफ़िज़ इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह लिखते हैं: संपूर्ण बातों का सारांश यह है कि इन १० दिनों के संदर्भ में कहा गया है कि ये वर्ष के संपूर्ण दिनों में सर्वश्रेष्ठ हैं, उदाहरण स्वरूप हदीस में इसकी व्याख्या आई है, अनेक महा ज्ञानियों ने इन दिनों को रमज़ान के अंतिम १० दिनों की तुलना में उच्च स्थान दिया है, क्योंकि (रमज़ान के अंतिम १० दिनों में) जो उपासनाएं अवैध हैं, उन्हें इन दिनों में भी वैधता प्राप्त है, उदाहरण स्वरूप: नमाज़, उपवास, दान-पुण्य आदि, परंतु ज़िलहिज्जा के १० दिनों की विशिष्ट विशेषता यह है कि इसमें हज की दायित्व पूरी की जाती है।

एक कथन यह भी है कि रमज़ान के अंतिम १० रात्रि ज़्यादा श्रेष्ठ हैं, क्योंकि इसमें शबे क़द्र आती है जो हज़ार महीनों से भी श्रेष्ठ है।

एक समूह ऐसा भी है जिसने मध्यता को अपनाते हुए कहा है: ज़िलहिज्जा के १० दिन अधिक श्रेष्ठ हैं, जबकि रमज़ान की (अंतिम) १० रात्रियों को श्रेष्ठता प्राप्त है। इस प्रकार संपूर्ण साक्ष्यों के बीच मध्यता की परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है। वल्लाहु अअ़लमु! (अल्लाह तआ़ला ही सर्वोच्च ज्ञानी है!)

(तफ़सीर इब्ने कसीर: सूरतुल्- हज्ज श्लोक संख्या: २८, यह उनके गुरु इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाह का भी कथन है, जैसा कि मजमूउल-फ़तावा इब्ने

तैमिया: २५/२८७ के अंतर्गत उल्लेख किया गया है, इसके अतिरिक्त इब्ने क़ैय्यिम रह़िमहुल्लाह का भी कथन है जैसा कि बदाएउल्-फ़वाएद: ३/११०२, प्रकाशक: आ़लमुल्-फ़वाएद में है।)

आप यह भी ज्ञात रखें -अल्लाह आप पर अपनी कृपा-दया अवतरित करे- कि जो व्यक्ति बलिदान देने की इच्छा रखता हो उसके लिए वैध नहीं कि वह बाल, नाखून एवं चमड़े को काटे' उदाहरण स्वरूप: नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस है: "जब तुम ज़िलहिज्जा का चंद्रमा देखो, और तुम में से जो व्यक्ति बलिदान देने की इच्छा रखता हो, तो वह अपने बालों एवं नाखूनों को ना काटे।" (इसे मुस्लिम: १९७७ ने उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अ़नहा से रिवायत किया है।)

सहीह मुस्लिम की दूसरी रिवायत में ये शब्द आए हैं: "जब ज़िलहिज्जा के १० दिन प्रारंभ हो जाएं, और तुम में से कोई व्यक्ति बलिदान देने की इच्छा रखता हो तो वह अपने बाल एवं चमड़े को ना काटे।"

ए मुसलमानो! इस्लाम धर्म की विशेषताओं में से यह भी है कि वह कष्ट एवं रुकावट को दूर करता है, इस कारणवश जिस व्यक्ति के लिए बाल, नाखून एवं चमड़े काटना अति आवश्यक हों तो उसके लिए इसमें कोई रोक नहीं है, इब्ने उ़सैमीन रहिमहुल्लाह फ़रमाते हैं: जिस व्यक्ति को बाल, नाखून एवं चमड़ा काटने की आवश्यकता पड़ जाए एवं वह काट भी ले तो इसमें कोई चिंता की बात नहीं है। उदाहरण स्वरूप उसे कई घाव हो जिसके हेतु उसे बाल काटने की आवश्यकता पड़ जाए अथवा उसका नाखून उखड़ जाए और वह उसके लिए दुखद हो, तो वह नाखून के दुखद पाठ को काट दे, यदि चमड़ा कट कर लटकने लगे और उसे दर्द पहुंचाए तो वह उसे काट

दे, इन संपूर्ण परिस्थितियों में उसके लिए कोई रोक नहीं है। (मजमूउल-फ़तावा इब्ने उसैमीन: २५/१६१) इब्ने उसैमीन रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।

ए मुसलमानो! जब हाजी बलिदान का इच्छा करे तो वह भी इस प्रक्रिया के अंतर्गत आता है इस कारणवश वह भी अपने बाल और नाखून ना काटे यहां तक कि उमरा कर ले। यदि उमरा कर ले तो उसके लिए बाल कटवाना अनिवार्य है इस कारणवश वह बाल कटवा ले भले ही वह अपने देश में बलिदान देने की इच्छा रखता हो, क्योंकि उमरा में बाल कटवाना उमरा का महत्वपूर्ण पाठ है। यह इब्ने बाज़ एवं इब्ने उसैमीन रहिमहुमल्लाह का कथन है। (मजमूउल-फ़तावा इब्ने बाज़: १७/२३३, मजमूउल-फ़तावा इब्ने उसैमीन: २५/१४२)

आप यह भी ज्ञात रखें -अल्लाह आप पर कृपा दृष्टि करे- कि अल्लाह ने आपको एक ऐसे कार्य का आदेश दिया है जिसका प्रारंभ अपने आप से किया है फिर सर्वोच्च पालनहार की स्वच्छता बताने वाले देव दूतों को इसका आदेश दिया, फिर मुस्लिम समुदाय के तमाम मनुष्य एवं जिन्नातों को इसका आदेश देते हुए फ़रमाया:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात: "अल्लाह तआला एवं उसके देवदूत अपने दूत पर रहमत भेजते हैं, ए मोमिनो! तुम भी उन पर दरूद भेजो और ख़ूब सलाम भेजते रहा करो।"

◍ हे अल्लाह! तू अपने दास एवं दूत पर अपनी रहमत एवं सलामती अवतरित कर, उनके पश्चात आने वाले शासकों, महान आज्ञाकारों एवं प्रलय

के दिन तक शुद्‌धता के साथ उनकी आज्ञाकारीता करने वालों से प्रसन्न हो जा।

◍ हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं श्रेष्ठता प्रदान कर, बहुदेव वाद एवं बहूदेव वादियों को अपमानित कर दे एवं अपने धर्म की रक्षा कर।

◍ हे अल्लाह! हमें अपने देशों में अमन और शांति वाला जीवन प्रदान कर, हे अल्लाह! हमारे इमामों एवं शासकों को सुधार दे, एवं उनके प्रजाओं हेतु उन्हें कृपालु बना।

◍ हे अल्लाह हमें ज़िलहिज्जा के सर्वश्रेष्ठ दिनों तक पहुंचा एवं उन दिनों में उपवास रखने, व्यवस्था पूर्वक तहज्जुद पढ़ने एवं स्मरण करने हेतु व्यस्त रहने में हमें सहायता एवं सहयोग प्रदान कर।

◍ हे अल्लाह! हम तेरा शरण चाहते हैं तेरे प्रदान किए गए वरदानों के नष्ट होने से, तेरी स्वास्थ्य के हट जाने से, तेरी अचानक आने वाली यातना से एवं तेरे हर प्रकार के क्रोध

से।

◍ हे अल्लाह! हम फुलबहरी (बर्स), पागलपन, कोढ़ एवं संपूर्ण प्रकार के रोगों से तेरा शरण चाहते हैं।

◍ हे हमारे पालनहार! हमें संसार में पूण्य दे, प्रलय के दिन भी भलाई प्रदान कर एवं नरक की यातना से वंचित रख।

عباد الله! إِنَّ ٱللَّهَ يَأۡمُرُ بِٱلۡعَدۡلِ وَٱلۡإِحۡسَٰنِ وَإِيتَآيِٕ ذِی ٱلۡقُرۡبَیٰ وَيَنۡهَیٰ عَنِ ٱلۡفَحۡشَآءِ وَٱلۡمُنكَرِ وَٱلۡبَغۡیِۚ يَعِظُكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَذَكَّرُونَ، فاذكروا الله العظيم يذكركم، واشكروا الله على نعمه يزدكم، ولذكر الله أكبر، و الله يعلم ما تصنعون

.

शीर्षक: अरफा के दिन की विशेषताएं

प्रथम उपदेश:

إن الحمدلله، نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمداً عبده ورسوله.

ए मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला के डरो और उसका भय अपने हृदय में जीवित रखो,उसकी आज्ञाकारी करो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जान लो कि मख़लूक़ों(जीवों)पर अल्लाह की रोबूबियत का एक दृश्य यह भी है कि वह जिस मखलूक को चाहता है,महत्वपूर्ण बनादेता है,चाहे वह मखलूक़(जीव)कोई व्यक्ति हो,अथवा स्थान हो,अथवा समय हो,अथवा प्रार्थना हो,उसके पीछे कोई नीति होती है जिसे वही पवित्र व प्रतिष्ठा वाला अल्लाह जानता है, अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ مَا كَانَ لَهُمُ ٱلْخِيَرَةُ﴾ [سورة القصص:٦٨]

अर्थात:आपका रब जो चाहता है पैदा करता है और जिसका चाहता है चयन करलेता है।

हम इस उपदेश में इंशाअल्लाह बात करेंगे कि अल्लाह ने अ़रफा के दिल को किन महत्वों और किन दस विशेषताओं से सम्मानित किया है।

1.प्रथम विशेषता:अ़रफा का दिन,इस्लाम धर्म पूरा होने एवं आशीर्वाद के पूरे होने का दिन है,ता़रिक़ बिन शेहाब से वर्णित है कि एक यहूदी उ़मर बिन ख़त्ताब रजी़अल्लाहु अंहु के पास आया और उनसे कहा:ए मोमिनों के शासक!तुम्हारी पुस्तक(कुरान)में एक ऐसी आयत है जिसे तुम पढ़ते रहते हो,यदि वह आयत हम यहूदियों पर नाज़िल होती तो हम उस दिन ईद का दिन बना लेते।ह़ज़रत उ़मर रजी़अल्लाहु अंहु ने कहा:वह कौन सी आयत है?यहूदी बोला:यह आयत:

﴿ٱلْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ ٱلْإِسْلَـٰمَ دِينًا﴾ [سورة المائدة:٣]

अर्थात:आज मेंने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म पूरा कर दिया और तुम पर अपना आशीर्वाद पूरा कर दिया और इस्लाम धर्म को तुम्हारे लिए पसंद कर लिया।

हज़रत उ़मर ने कहाः"हम उस दिन और उस स्थान को जानते हैं जिसमें यह आयत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुई।यह आयत शुक्रवार के दिन उतरी जब आप अ़रफात में खड़े थे"।[1]

2.अ़रफा के दिन की एक विशेषता यह भी है कि अल्लाह तआ़ला ने क़ुरान में दो स्थानों पर इसकी क़सम खाई है,अल्लाह तआ़ला बड़ी चीज की ही क़सम खाता है,अल्लाह तआ़ला के इस कथन में مشهود का अर्थ यही दिन हैः ﴿وشاهد ومشهود﴾, अतःअबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः(شاهد का अर्थ शुकर्वार का दिन और مشهودका अर्थ अ़रफा का दिन और موعودका अर्थ क़्यामत का दिन है)इसे अह़मद (7973)ने वर्णित किया है और''अलमुस्नद''के शोधकर्ताओं ने उसे सह़ी कहा है।

अल्लाह के बंदो!अल्लाह के कथन ﴿والشفع والوَتر﴾، में الوترका अर्थ भी अ़रफा का दि नही है,जाबिर रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः आयत में العَشر का अर्थ जुलहिज्जा के दस दिन हैं،

الوتر का अर्थ अ़रफा का दिन और الشفع का अर्थ क़ुर्बानी का दिन है।[2]

3.अ़रफा के दिन की एक विशेषता यह भी है कि उस दिन का उपवास दो वर्ष के पापों का कफ्फारा (प्रायश्चित) है,अबू क़तादा से वर्णित है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"अ़रफा के दिन का उपवास,में अल्लाह से आशा रखता हूं कि पिछले वर्ष और अगामी वर्ष के पापों का कफ्फारा (प्रायश्चित)बन जाएगा"।[3]

---

[1] इसे बोखारी(45)और मुस्लिम(3016)ने त़ारिक़ बिन शेहाब से वर्णित किया है और उपरोक्त शब्द मुस्लिम ने वर्णित किया है,लाभ के लिए यह भी जान लें कि मोह़म्मद बिन जरीर त़बरी ने अपनी तफसीर(व्याख्या)में इस आयत का व्याख्या करते हुए कअ़ब अह़बार का यह कथन वर्णित किया हैःयदि इस उम्मत के अतिरिक्त और उम्मत पर यह आयत नाज़िल होती तो वह उस दिन का अति ख्याल करते और उसे अपनी ईद बना लेते और इकट्ठा होकर इसका त्योहार मनाते,हज़रत उ़मर ने कहाःए कअ़ब!यह कोनसी आयत है?उन्होंने कहा :(اليوم أكملت لكم دينكم)हज़रत उ़मर ने कहाःमुझे उस दिन का ज्ञान है जिस दिन यह आयत नाज़िल हुई,उस स्थान का भी ज्ञान है जहां यह नाज़िल हुई,शुक्रवार के दिन,अ़रफा के मैदान में यह आयत नाज़िल हुई,और यह दोनों ही हमारे लिए ईद हैं,अलह़मदोलिल्लाह।

[2] इसे अह़मद(14511)ने वर्णित किया है और"अलमुस्नद"के शोधकर्ताओं ने ह़सन कहा है

[3] इसे मुस्लिम(1162)ने वर्णित किया है।

4.अ़रफा के दिन की एक विशेषता यह भी है कि वह हुरमत के माहीनों में होता है,उससे पूर्व भी हुरमत(सम्मान) वाला महीना आता है और उसके पश्चात भी हुरमत(सम्मान)वाला महीना आता है।

5.अ़रफा के दिन की एक विशेषता यह भी है कि वह नरक से मुक्ति का दिन है,उस दिन अल्लाह(बंदों से)निकट होता है,और अल्लाह तआ़ला देवदूतों के सामने अ़रफा में वोकूफ़(ठहराउ)हुए हा़जियों पर फख़र(गर्व) करता है,यह तीन विशेषताऐंहैं जिनका उल्लेख एक ही ह़दीस में आया है,अतःह़ज़रत आयशा रज़ीअल्लाहु अंहा से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"अल्लाह तआ़ला अ़रफा के दिन से अधिक किसी और दिन बंदों को आग से स्वतंत्र नहीं करता।अल्लाह तआ़ला(बंदों से)निकट होता है,फिर और निकट होता है,फिर उनके कारण से देवदूतों के सामने फखर करता है और कहता हैःयह लोग क्या चाहते हैं?"।[1]

अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन अलआ़स रजी़अल्लाहु अंहुमा से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःअल्लाह तआ़ला अ़रफा के संध्या में वोकू़फ(ठहराउ)हुए हा़जियों पर देवदूतों के सामने गर्व प्रकट करता है और कहता हैःदेखो!मेरे बंदे बिखरे बाल एवं प्रदूषित(अर्थात यात्रा की कठिनाई झेल करके)मेरे दरबार में उपस्थित होगए।[2]

इब्ने रजब रही़महुल्लाहु फरमाते हैंःअ़रफा का दिन नरक से मुक्ति का दिन है,उस दिन अल्लाह तआ़ला अ़रफा में उपस्थित हा़जियों एवं अन्य देशों के अन्य मुसलमानों को नरक से मुक्ति प्रदान करता है,इसी लिए उसके बाद जो दिन आता है वह समस्त मुसलमानों के लिए ईद का दिन है,चाहे वे अ़रफा के मैदान में उपस्थित हों अथवा न हों,क्योंकि उस दिन नरक से मुक्ति एवं क्षमा की प्राप्ती में वे एक दूसरे के साथ होते हैं[3]समाप्त।

6.अ़रफा के दिन की एक विशेषता यह भी है कि उस दिन की जाने वाली दुआ की स्वीकृति का संभावना अधिक होता है,अ़ब्दुल्लाह बिन अंमर बिन अलआ़स रजीअल्लाहु अंहोमा कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"सबसे अच्छा प्रार्थना

[1] इसे मुस्लिम(1384)ने वर्णित किया है।

[2] इसे अह़मद(2/224)ने वर्णित किया है और अल्बानी ले"सही़हत्तरग़ीब वत्तरहीब"में हदीस संख्या(1153)के अंतर्गत सही़ कहा है।

[3] "लता़एफुल मआ़रिफ".अलमजलिस अस्सानी फी योमे अ़रफा मआ़ योमुन्नहर

अ़रफा वाले दिन का प्रार्थना है और में ने अबतक जो कुछ(ज़िकर के रूप में)कहा है और मुछसे पूर्व जो दूसरे संदेशवाहकों ने कहा है उनमें सबसे अच्छी दुआ यह है:

لا إله إلا الله وحده لا شريك له، له الملك، وله الحمد، وهو على كل شيء قدير[1]

7.अ़रफा के दिन की एक विशेषता यह भी है कि वह जुलहिज्जा के दस दिन के मध्य होता है,जो कि वर्ष के समस्त दिनों से सर्वश्रेष्ठ दिन हैं,जैसा कि इब्ने अ़ब्बास रजीअल्लाहु अंहुमा से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"जुलहिज्जा के दस दिनों के तुलना में अन्य कोई दिन ऐसे नहीं हैं जिनमें पुण्य के कार्य अल्लाह को इन दिनों से अधिक प्रिय हों"।लोगों ने पूछा:अल्लाह के रसूल!अल्लाह के मार्ग में जिहाद करना भी नहीं?आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:"अल्लाह के मार्ग में जिहाद करना भी नहीं,सिवाए उस मोजाहिद के जो अपना प्राण एवं धन दोनों ले कर अल्लाह के मार्ग में निकला फिर किसी चीज के साथ वापस नहीं आया"।[2]

8.अ़रफा के दिन की एक विशेषता यह भी है कि उस दिन ह़ज का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ पूरा किया जाता है,जो कि अ़रफा में वोकूफ(ठहराउ)है,जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस है:"ह़ज अ़रफात में ठहरना है"।[3]

9.अ़रफा के दिन की एक विशेषता यह भी है कि उस दिन मुसलमान संसार के विभिन्न छेत्रों से आकर एक ही स्थान पर इकट्ठा होते हैं,और एक ही फरीज़ा को करते हैं जो न किसी अन्य दिन में अदा किया जा सकता है,न किसी अन्य स्थान पर और न किसी में यह सामूहिक प्रदर्शन होता है,यह इस्लामी शआ़एर(प्रतीक)के प्रकट एवं उसकी उच्चता का दृश्य है,तथा यह शैतान के पराजित का कारण है,क्योंकि वह देखता है कि(बंदों पर)कृपा एवं आशीर्वाद उतर रहे हैं और(उनके)पापों को क्षमा प्रदान किया जा रहा है(जिस के कारण उसे पराजित होती है)।

..ए अल्लाह के बंदो!यह वह दस विशेषताएं हैं जिनसे अल्लाह ने अ़रफा के दिन को चित्रित किया है,इसकी महानता व पतिष्ठा एवं स्थान को देखते हुए,इस लिए हमें इन महत्वों को पुण्य के कार्य के माध्यम से प्राप्त करने के लिए अल्लाह की सहायता प्राप्त करनी चाहिए,इनकी शुभकामनाओं से अपने दामन को भरने के लिए एक दूसरे से

---

[1] इसे तिरमिज़ी(3585)ने वर्णित किया है और अल्बानी ने"अस्सही़हा" (1503)में इसे ह़सन हका है।

[2] इसे बोखारी(969)और अह़मद(1/338-339)ने वर्णित किया है और उपरोक्त शब्द बोखारी के हैं।

[3] इसे नेसाई(3016)आदि ने अ़ब्दुर्रह़मान बिन यईर रजी़अल्लाहु अंहु से वर्णित किया है और अल्बानी ने इसे सही़ कहा है।

आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए,क्योंकि आज कार्य का अव्सर है और हिसाब नहीं,और कल हिसाब होगा और कार्य का अव्सर नहीं:

﴿سَابِقُوٓاْ إِلَىٰ مَغۡفِرَةٖ مِّن رَّبِّكُمۡ وَجَنَّةٍ عَرۡضُهَا كَعَرۡضِ ٱلسَّمَآءِ وَٱلۡأَرۡضِ أُعِدَّتۡ لِلَّذِينَ ءَامَنُواْ بِٱللَّهِ وَرُسُلِهِۦۚ﴾ [سورة الحديد:٢١]

अर्थात: आओ दौड़ो अपने रब के क्षमा की ओर और उस स्वर्ग की ओर जिसकी विस्तीर्णता आकाश एवं धर्ती की विस्तीर्णता के बराबर है,यह उनके लिए बनाई गई है जो अल्लाह पर और उसके संदेशवाहकों पर ईमान रखते हैं।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप सबको कुरआन की बरकत से माला.माल फरमाए,मुझे और आप सबको उसकी आयतों एवं नीतियों पर आधारित प्रामर्शों से लाभ पहुंचाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह तआ़ला से क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा करने वाला अति कृपा करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

إن الحمدلله، نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمداً عبده ورسوله. أما بعد:

ए मोमिनो!आप यह जान लें कि अ़रफा के दिन दुआ करने का जो महत्व आया है,वह समस्त संसार के लिए समान है,यह महत्व केवल उन ह़ाजियों के लिए विशेष नहीं जो अ़रफात में वोकूफ(ठहराउ)करते हैं,क्योंकि यह समय का महत्व है,प्रनंतु इसमें कोई संदेह नहीं कि जो ह़ाजी अ़रफा के मैदान में होते हैं उन्हें स्थान एवं समय दोनों का महत्व प्राप्त होता है।

अल्लाह के बेंदो!अ़रफा के दिन जिकर व अज़कार और दुआ व प्राथना करने में जो चीज़े सहायक हो सकती हैं,उनमें यह भी है कि शक्ति के अनुसार ज़ोहर के बाद से मग़रिब तक मस्जिद में ठहरा जाए,अ़रफा के दिन यह भी धार्मिक कार्य है कि नमाज़ के पश्चात निश्चित तकबीरे का पालन किया जाए,ग़ैर ह़ाजियो के लिए यह तकबीर अ़रफा के दिन फजर की नमाज़ से लेकर तेरा जीलहि़ज्जा के दिन अ़सर की नमाज़ की समाप्ति तक है,रही बात ह़ाजियों की तो उनके लिए तकबीर अ़रफा के दिन ज़ोहर और अ़सर की नमाज़ पढ़ के प्रारंभ होता है,जब ह़ाजी नमाज़ पढ़ले तो तीन बार इस्तिग़फार करे और कहे

(اللهم أنت السلام ومنك السلام، تباركت يا ذا الجلال والإكرام)

फिर यह कहते हुए तकबीर शुरू करे:

(الله أكبر، الله أكبر، لا إله الا الله، الله أكبر الله أكبر ولله الحمد).

ए मोमिनो!यह एक बड़ा अव्सर और हमारे महान एवं सम्मानित परवरदिगार के आशीर्वाद का झोंका है जो साल में एक बार ही आता है,हमें अल्लाह के सामने खैर एवं भलाई का प्रदर्शन करना चाहिए,प्रार्थना,ज़िकर एवं दुआ का पालन करना चाहिए,क्योंकि बंदा जब अल्लाह से एक बित्ता निकट होता है तो अल्लाह तआ़ला उससे एक गज़ निकट होता है,और बंदा जब अल्लाह से एक गज़ निकट होता है तो अल्लाह तआ़ला उससे दो गज़ निकट होता है,जो इसकी ओर चल कर जाता है,अल्लाह तआ़ला उसके निकट दौड़ कर जाता है,यह ह़दीस अल्लाह तआ़ला के महान कृपा एवं दया पर साक्ष्य है और इस बात पर भी कि बंदे खैर व भलाई और पुण्य के कार्य के माध्यम से अल्लाह तआ़ला से निकट होने के लिए जेतना पहल करता है,उससे कहीं अधिक तेज़ी के साथ अल्लाह तआ़ला खैर व भलाई ,एवं दानशीलता के माध्यम से बंदों की ओर बढ़ता है।

-हे अल्लाह!तू अपने बंदे और रसूल मोह़म्मद पर कृपा एवं सलामती भेज,तू उनके उत्ताकिरियों,अनुयायियों एवं क़यामत तक निष्कपटता के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

-हे हमारे रब!हम ने अपना बड़ा हानी कर लिया और तेरे अतिरिक्त कोई पापों को क्षमा प्रदान करने वाला नहीं,तू हमें अपना क्षमा प्रदान कर और हम पर कृपा फरमा,निसंदेह तू अति अधिक क्षमा करने वाला और अति कृपा करने वाला है।

-हे अल्लह!हमें अ़रफा के दिन तक पहुंचा और उस दिन जिकर करने,तेरा शुक्र अदा करने और उत्तम तरीके से प्रार्थना करने में हमारी सहायत फरमा।

-हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भी भलाई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

سبحان ربنا رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين.

शीर्षक: ईद उल अज़्हा – बीस महत्वपूर्ण बिंदु

الله أكبر (नौ बार)، الله أكبر كبيرا، والحمد لله كثيرا، وسبحان الله بكرة وأصيلا.

الحمد لله جل جلاله، وعظم ثناؤه، وتقدست أسماؤه، سبحانه وبحمده لا تحصى نعماؤه، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله، بعثه الله بالهدى ودين الحق، اللهم صل وسلم وبارك عليه، وعلى آله وصحبه وسلم تسليما كثيرا.

स्तुतिगान के पश्चात:

सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह का तक़्वा एवं भय धारण करो, क्योंकि पवित्र अल्लाह का तक़्वा ही सबसे उत्तम पाथेय एं क़यामत के दिन मुक्ति का माध्यम है।

१- हे मुसलमानो! आप को अल्लाह का एक महान दिन अपनी छत्र छाया में लिये हुआ है, निस्संदेह यह कुर्बानी (बलि) एवं ईद उल अज़्हा का शुभ दिन है, यह दिन इस्लाम के एक महान फ़रीज़ा (अनिवार्य कार्य) को अंजाम देने के बाद आता है, अर्थात ह़ज्ज का फ़रीज़ा अंजाम देने के बाद, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है: सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह के निकट सबसे महान दिन यौमुन्नह़्र (दस ज़िलह़िज्जा) एवं उसके बाद यौमुल क़र्र (११ ज़िलह़िज्जा) है[1]। यौमुल क़र्र उस दिन को कहते हैं जिस दिन हाजी लोग मिना में ठहरते हैं।

कुर्बानी के दिन को अन्य दिनों पर वरीयता देने का राज़ यह है कि ह़ज्ज के अधकांश कार्य इसी दिन अंजाम दिये जाते हैं, जैसे हाजी लोग

[1] इस ह़दीस़ को अबू दावूद (१७६५) ने अब्दुल्लाह बिन क़ुर्त रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है।

उस दिन जमरा -ए- अक़बा को कंकरी मारते हैं, हद्य का जानवर ज़ब्ह करते हैं, बाल मुंडा कर अथवा कटवा कर ह़ज्ज से ह़लाल हो जाते हैं, त़वाफ़ -ए- इफ़ाज़ा करते हैं, स़फ़ा एवं मरवा के मध्य सई करते हैं एवं ह़ाजी के अतिरिक्त अन्य लोग उस दिन क़ुर्बानी का जानवर ज़ब्ह़ करते हैं, ये समस्त पुनीत कार्य इस दिन के सिवा किसी अन्य दिन में एकत्र नहीं होते हैं।

الله أكبر، الله أكبر، لا إله إلا الله، والله أكبر، الله أكبر، ولله الحمد.

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इलाहा इल्लल्लाहु, वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, व लिल्लाहिल ह़म्द

२- अल्लाह के दासो! इस्लामी त्योहारों को अन्य त्योहारों एवं उत्सवों से जो चीज़ अलग करती है वह यह कि ईद बहुमूल्य तत्वज्ञानों एवं महान उद्देश्यों हेतु मशरूअ (निर्धारित) की गई हैं, उनमें एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि अल्लाह के शआइर (प्रतीकों) का सम्मान किया जाए, मोमिनों को प्रसन्नता प्रदान की जाए, इस्लाम के अनुयायियों एवं पैरोकारों के सम्मुख इस धर्म की आसानी व सहजता को उजागर किया जाए, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः “यौम -ए- अरफ़ा (नौवीं ज़िलह़िज्जा) यौमुन्नह़्र (दसवीं ज़िलह़िज्जा) एवं अययाम -ए- तश्रीक़ हम मुसलमानों के ईद के दिन हैं, ये खाने एवं पीने के दिन हैं”[1]।

الله أكبر، الله أكبر، لا إله إلا الله، والله أكبر، الله أكبر، ولله الحمد.

[1] इस ह़दीस़ को अबू दावूद (२४१९) ने उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है।

३- हे मोमिनो! आज के दिन मोमिन के अल्लाह का नौकट्य प्राप्त करने का सर्वोत्तम माध्यम यह है कि जानवरों को क़ुर्बान करे, यह अल्लाह के दो ख़लील इब्राहीम व मुहम्मद अलैहमस्सलातु वस्सलाम की सुन्नत है।

४- क़ुर्बानी करने के कुछ आदाब एवं सुन्नतें हैं, जैसे जानवर का मुख क़िब्ला की ओर कर के ज़ब्ह़ करना, उस पर अल्लाह का नाम लेना और यह कहनाः

اللهم هذا منك ولك، اللهم هذا عني وعن أهل بيتي، اللهم تقبل مني

(अल्लाहुम्मा हाज़ा मिन्का व लका, अल्लाहुम्मा हाज़ा अन्नी व अन् अहले बैती, अल्लाहुम्मा तक़ब्बल मिन्नी) अर्थातः हे अल्लाह! यह तेरी ओर से है और तेरे लिये है, हे अल्लाह! इसे मेरी ओर से तथा मेरे घर वालों की ओर से स्वीकार कर ले, हे अल्लाह! इसे मेरी ओर से स्वीकार कर ले।

५- क़ुर्बानी देने वाले के लिये यह मुस्तहब है कि यदि क्षमता एवं सामर्थ्य हो तो स्वयं क़ुर्बानी के जानवर ज़ब्ह़ करे, इसका तरीका यह है कि दोनों शहे रग पर छुरी चलाए, जोकि गर्दन के दोनों किनारे की रगें हैं।

६- यदि दूसरे को अपना जानवर ज़ब्ह़ करने की ज़िम्मेवारी दे तो इसमें भी आपत्ति की कोई बात नहीं है, उसकी ओर से ज़ब्ह़ करने वाला यह दुआ पढ़ेः

اللهم هذا منك ولك، اللهم هذا عن فلان (उसका नाम ले) اللهم تقبل منه

(अल्लाहुम्मा हाज़ा मिन्का व लका, अल्लाहुम्मा हाज़ा अन् फ़ुलान् (उस व्यक्ति का नाम ले), अल्लाहुम्मा तक़ब्बल मिन्हु) अर्थातः हे अल्लाह! यह तेरी ओर से है और तेरे लिये है, हे अल्लाह! यह अमुक (उस व्यक्ति का नाम ले) की ओर से है, हे अल्लाह! इसे तू उसकी ओर से स्वीकार कर ले।

७- उसे चाहिये कि छुरी को जानवर से छिपा कर रखे तथा उसके समक्ष छुरी पर धार न लगाए एवं न ही दूसरे पशुओं के समक्ष उसे ज़ब्ह़ करे, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस कथन का अनुसरण करते हुएः “अल्लाह तआला ने प्रत्येक चीज़ के साथ सर्वोत्तम व्यवहार करने का आदेश दिया है, इसलिये जब तुम (क़िसास़ या ह़द्द में किसी को) क़त्ल करो तो अच्छे ढ़ंग से क़त्ल करो, तथा जब ज़ब्ह़ करो तो अच्छे ढ़ंग से ज़ब्ह़ करो, तुम में से एक व्यक्ति (जो ज़ब्ह़ करना चाहता है) वह अपनी (छुरी की) धार को तेज़ कर ले एवं ज़ब्ह़ किये जाने वाले जानवर की पीड़ी से बचाए”।[1]

८- ज़ब्ह़ करने का समय चार दिनों तक रहता है, क़ुर्बानी का दिन एवं तीन दिन (अय्यामे तश्रीक़ के), उत्तम यह है कि ईद के दिन ज़ब्ह़ करे ताकि ज़िलहिज्जा के दस दिनों के भीतर ही यह कार्य अंजाम पाए।

९- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सींग वाले दो उजले मेंढ़ों की क़ुर्बानी दी और जिन जानवरों की क़ुर्बानी नहीं करनी है उसको स्पष्ट किया, आप ने फ़रमायाः “चार प्रकार के जानवरों की क़ुर्बानी जायज़ नहीं

---

[1] इस ह़दीस़ को मुस्लिम (१९५५) ने शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।

हैः ऐसा काना जिसका कानापन स्पष्ट हो, ऐसा रोगी जिसका रोग स्पष्ट हो, ऐसा लंगड़ा जिसका लंगड़ापन स्पष्ट हो तथा ऐसा दुबला पतला जिसमें मांस न हो"।[1]

१०- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीका था कि ईद के दिन क़ुर्बानी के मांस से ही आप खाने का आरंभ करते।

११- अल्लाह के भक्तो! अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में लोग हद्य एवं क़ुर्बानी का विशेष ध्यान रखते थे, सुंदर से सुंदर एवं मोटा से मोटा जानवर ख़रीदते, क्योंकि जानवर जितना महंगा एवं उच्च गुणों से परिपूर्ण होगा उतना ही वह अल्लाह को प्रिय होगा तथा उसे क़ुर्बान करने वाले के पुण्य भी उतनी ही अधिक है, इब्ने तैमिय्या रह़िमहुल्लाह कहते हैं किः क़ुर्बानी का स़वाब व पुण्य सामान्यतः उसके मूल्य के अनुपात में होता है।[2]

१२- अल्लाह के बंदो! क़ुर्बानी के जानवर पर ख़र्च करने की कोई सीमा नहीं है, परंतु ह़दीस़ में वर्णित है कि उसका मांस खा सकते हैं, यात्रा के लिये पाथेय के रूप में ले सकते हैं तथा फ़क़ीरों को खिला भी सकते हैं, जैसाकि अल्लाह तआला का कथन हैः

﴿فَكُلُواْ مِنۡهَا وَأَطۡعِمُواْ ٱلۡقَانِعَ وَٱلۡمُعۡتَرَّۚ﴾ [سورة الحج:٣٦]

अनुवादः (इसे स्वयं भी खाओ एवं मिस्कीन सवाल से रुकने वालों एवं सवाल करने वालों को भी खिलाओ)।

---

[1] इस ह़दीस़ को अह़मद (३००/४) ने रिवायत किया है तथा (अल-मुस्नद) के शोधकर्ताओं ने इसे स़ह़ीह़ कहा है।

[2] अल-फ़तावा अल-कुब्रा (४/४६८)।

ह़दीस़ में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः “खाओ भी तथा तोशा भी बनाओ”(1)। एक रिवायत में हैः “खाओं और खिलाओ एवं संचय भी करो”(2)।

१३- यदि जानवर जानवर ज़ब्ह़ कर दिया जाए तो उसका कोई कोई भा भाग बेचना जायज़ नहीं है, न ही मांस एवं न चमड़ा इत्यादि।

१४- दिलजोई धार्मिक प्रतीकों को प्रकट करने हेतु काफ़िर को क़ुर्बानी का मांस देना जायज़ है।

१५- कसाई को पारिश्रमिक के रूप में क़ुर्बानी का गोश्त देना जायज़ नहीं है, क़ुर्बानी करने वाले के लिये जायज़ है कि कसाई को मज़दूरी के रूप में धन दे।

१६- हे अल्लाह के दासो! इस महान दिन के बाद अत्यंत शुभ दिन अर्थात अय्याम -ए- तश्रीक़ आते हैं, सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह ने इन दिनों में अधिकाधिक ज़िक्र करने का आदेश दिया हैः

﴿ ۞ وَٱذۡكُرُواْ ٱللَّهَ فِيٓ أَيَّامٖ مَّعۡدُودَٰتٖ ﴾ [سورة البقرة:٢٠٣]

अनुवादः (और अल्लाह तआला की याद इन गिनती के कुछ दिनों में करो)।

ईद के दिनों में किये जाने वाले महत्वपूर्ण कार्य ये हैं: तश्रीक़ के दिनों में मुत़लक़ तकबीर का हर समय एहतेमाम करना तथा इस कार्य को अय्याम -ए- तश्रीक़ के तीसरे दिन की मग़्रिब की अज़ान तक निरंतर जारी

(1) इस ह़दीस़ को बुख़ारी (१७१९) व मुस्लिम (१९७२) ने जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवात किया है।
(2) इस ह़दीस़ को मुस्लिम (१९७३) ने अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।

रखना, तथा अय्याम -ए- तश्रीक़ के तीसरे दिन की अस्र की नमाज़ तक पाँचों नमाज़ों के पश्चात तकबीर मुक़य्यद का एहतेमाम करना, यदि चाहे तो दो बार अल्लाहु अकबर कहे एवं यदि चाहे तो तीन बार कहेः

الله أكبر، الله أكبر، لا إله إلا الله، الله أكبر، الله أكبر، ولله الحمد.

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इलाहा इल्लल्लाहु, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, व लिल्लाहिल ह़म्द

الله أكبر، الله أكبر، الله أكبر، لا إله إلا الله، والله أكبر، الله أكبر، ولله الحمد.

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इलाहा इल्लल्लाहु, वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, व लिल्लाहिल ह़म्द

१७- अल्लाह के बंदो! अय्याम -ए- तश्रीक़ वास्तव में खाने-पीने एवं अल्लाह को याद करने के दिन हैं, अतः ईद के दिन एवं अय्याम -ए- तश्रीक़ में रोज़ा रखना जायज़ नहीं है क्योंकि ये ईद के दिन हैं, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अय्याम -ए- तश्रीक़ खाने पीने के दिन हैं"। एक रिवायत में हैः "अल्लाह को याद करने के दिन हैं"[1]।

१८- ईद की ह़िकमतों (तत्वदर्शिता) एवं महान लाभों में से यह है किः मुसलमानों के मध्य संबंध जोड़ा जाए, एक दूसरे से मिलने जुलने का रिवाज हो, दिलों में नैकट्य पनपे, अजनबियत एवं वहशत दूर हो, तथा द्वेष एवं ईर्ष्या की आग बुझ जाए, इस्लाम की यह क्षमता कि मुसलमानों को ईद की नमाज़ अदा करने के लिये एक स्थान पर एकत्र कर दे, इस बात की निशानी है कि वह उन्हें ह़क़ (सत्य) पर एकत्र करने एवं उनके

[1] इस ह़दीस़ को मुस्लिम (११४१) ने नबीशा अल-ख़ैर हुज़ली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।

दिलों को तक़्वा (अल्लाह का भय) के आधार पर जोड़ने में भी सक्षम है, नोअमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः “मुसलमानों का एक दूसरे से प्रेम, एक दूजे के संग दया भाव एवं एक दूसरे के साथ मदद एवं सहायता का उदाहरण एक शरीर के समान है, जब उसके एक अंग को कष्ट होता है तो शेष समस्त शरीर अनिद्रा एवं बुख़ार के द्वारा (उस कष्ट को सहन करके) उसका साथ देता है”[1]।

ईद के दिन किये जाने वाले मुस्तहब कार्यों में संबंध जोड़ना भी शामिल है, क्योंकि अल्लाह ने बंदों पर संबंध जोड़ने को अनिवार्य किया है, विशेष रूप से हर्षोल्लास के मौके पर, अतः जो व्यक्ति संबंध जोड़ता है अल्लाह तआला भी उसे अपने निकट कर लेता है तथा जो व्यक्ति संबंध तोड़ता है अल्लाह तआला भी उसे अपनी दया से दूर कर देता है, अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः “सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह का कथन हैः मैं रह़मान हूँ, मैंने रह़िम (रिश्ता व संबंध) को उत्पन्न किया, उसका नाम अपने नाम से व्युतपन्न किया, अतः जो व्यक्ति संबंध जोड़ेगा मैं भी उसे (अपनी दया से) जोड़ूंगा तथा जो व्यक्ति संबंध तोड़ेगा मैं भी उसे अपनी (दया से) दूर कर के संबंध व रिश्ता से वंचित कर दूंगा”।[2]

---

[1] इस ह़दीस़ को मुस्लिम (२५८६) ने नोअमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।

[2] इस ह़दीस़ को अह़मद (१/१९१) ने रिवायत किया है एवं उपरोक्त शब्द उनके द्वारा ही वर्णित हैं, तथा इसे अबू दावूद (१६९४) ने अब्दुर्रह़मान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है, और (अल-मुस्नद) के शोधकर्ताओं एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है।

अल्लाह के भक्तो! जिस व्यक्ति का अपने किसी संबंधी से, या मित्र से, अथवा पड़ोसी से किसी प्रकार को झगड़ा हो तो उसे चाहिये कि क्षमा कर दे, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿فَمَنۡ عَفَا وَأَصۡلَحَ فَأَجۡرُهُۥ عَلَى ٱللَّهِۚ﴾ [سورة الشورى:٤٠]

अनुवादः (जो क्षमा कर दे एवं सुलह कर ले तो उसका बदला अल्लाह के ज़िम्मे है)।

एक स्थान पर अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿إِنَّمَا ٱلۡمُؤۡمِنُونَ إِخۡوَةٞ فَأَصۡلِحُواْ بَيۡنَ أَخَوَيۡكُمۡۚ﴾ [سورة الحجرات:١٠]

अनुवादः (समस्त मुस्लिम भाई-भाई हैं, अतः अपने दो भाइयों में मिलाप करा दिया करो)।

१९- अल्लाह के दासो! ईद की मुबारकबाद देना उत्तम एवं जायज़ कार्य है, इब्ने तैमिय्या रहि़महुल्लाह कहते हैं: ईद की नमाज़ के बाद मुसलमानों का एक दूसरे को (تقبل الله منا ومنكم، وأحاله الله عليك तक़ब्बलल्लाहु मिन्ना व मिन्कुम, व अह़ालहु अल्लाहु अलैका) कह कर ईद की बधाई देने का प्रमाण कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से मिलता है, एवं कुछ इमामों ने भी इसकी अनुमति दी है जैसे इमाम अह़मद आदि।[1]

२०- अल्लाह के दासो! इस बात से सचेत रहो कि कहीं तुम अल्लाह की नियामतों का मुकाबला खेल-कूद, ह़राम एवं अवज्ञा व नाफ़रमानी के

[1] मज्मू उल फ़तावा (२४/२५३)।

कार्यों से न करने लगो, जिसके परिणामस्वरूप तुम्हारे ऊपर अल्लाह का क्रोध एवं अप्रसन्नता नाज़िल आ जाए।

الله أكبر، الله أكبر، لا إله إلا الله، والله أكبر، الله أكبر، ولله الحمد.

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इलाहा इल्लल्लाहु, वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, व लिल्लाहिल ह़म्द

الله أكبر كبيرا، والحمد لله كثيرا، وسبحان الله بكرة وأصيلا

अल्लाहु अकबर कबीरा, वलह़म्दुलिल्लाहि कस़ीरा, व सुब्ह़ानल्लाहि बुकरतन् व अस़ीला

द्वितीय उपदेश

الله أكبر (सात बार)، الله أكبر كبيرا، والحمد لله كثيرا، وسبحان الله بكرة وأصيلا.

الحمد لله وحده والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد:

२१- हे मोमिन महिलओ! अल्लाह तआला मोमिनों की माताओं (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नियों) को उपदेश देते हुए क़ुरआन में फ़रमाता हैः

﴿وَقَرۡنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجۡنَ تَبَرُّجَ ٱلۡجَٰهِلِيَّةِ ٱلۡأُولَىٰۖ وَأَقِمۡنَ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتِينَ ٱلزَّكَوٰةَ وَأَطِعۡنَ ٱللَّهَ وَرَسُولَهُۥٓۚ﴾ [سورة الأحزاب:٣٣]

अनुवादः (तुम अपने घरों में ठहरी रहो एवं जाहिलिय्यत युग की तरह अपने श्रृंगार का प्रदर्शन न करो एवं नमाज़ अदा करती रहो, ज़कात देती रहो तथा अल्लाह एवं उसके रसूल के आज्ञाओं का अनुपालन करो।

अल्लाह का यह उपदेश मोमिनों की माताओं एवं क़यामत (प्रलय) के दिन तक उनका अनुसरण करने वाली मोमिन महिलाओं के लिये आम है, हे इस्लाम की वो महिलाएं जो अल्लाह से रब (पालनहार) के तौर पर, इस्लाम से धर्म के तौर पर एवं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नबी के तौर पर प्रसन्न हो गईं, आप अल्लाह तआला एवं उसके रसूल के आज्ञापालन को अपना ध्येय बना लें, इन्सानों एवं जिन्नातों के शैतानी मार्गों से सावधान रहें, नग्नता एवं पुरुषों से मेल-जोल के फ़ित्ना में पड़ने से सचेत रहें, अल्लाह तआला का फ़रमान हैः

﴿وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ ٱلْجَٰهِلِيَّةِ ٱلْأُولَىٰ﴾

(एवं जाहिलिय्यत युग की तरह अपने श्रृंगार का प्रदर्शन न करो)।

जो महिलाएं शांति एवं कुशलता चाहती हों वो अपने आपको लाभप्रद कार्यों में व्यस्त रखें, पापियों एवं दुष्टों का अनुसरण न करें, क्योंकि उनके अनुसरण का दिल के बिगाड़ पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है, अल्लाह तआला का कथन हैः

﴿وَٱللَّهُ يُرِيدُ أَن يَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيدُ ٱلَّذِينَ يَتَّبِعُونَ ٱلشَّهَوَٰتِ أَن تَمِيلُوا۟ مَيْلًا عَظِيمًا ﴿٢٧﴾﴾ [سورة النساء:٢٧]

अनुवादः (और अल्लाह चाहता है कि तुम्हारी तौबा स्वीकार करे एवं जो लोग इच्छाओं के अनुयायी हैं वो चाहते हैं कि तुम उससे बहुत दूर हट जाओ)।

आप सब को ईद मुबारक हो, अल्लाह तआला सदा आपको कल्याण, सफलता एवं प्रसन्नता प्रदान करे, आप पर खुशी की बरखा बरसाए, आपके आज्ञापालन एवं उपासना को स्वीकार करे एवं आपको सदैव प्रसन्न रखे, आपके पापों को क्षमा करे, बरकत व कल्याण से आपके हृदयों को भर दे, आपकी इच्छाओं को पूर्ण करे एवं आपको सद्कार्य करने का अनुग्रह प्रदान करे।

अंत में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम भेजें, क्योंकि जो व्यक्ति एक बार आप पर दुरूद भेजता है, अल्लाह तआला उस पर दस बार दया अवतरित करता है।

اللهم صل وسلم وبارك على عبدك ورسولك نبينا محمد، وعلى آله وصحبه أجمعين.

शीर्षक: बैतुलमक़दिस की दस विशेषताएं

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रशंसाओं के पश्चात!
सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त(नवाचार)है और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

- ए मुसलमानो!में तुम्हें और स्वयं को अल्लाह के तक़्वा(ईश्वर भक्ति) की वसीयत करता हूं,यह वह वसीयत है जो अल्लाह ने पूर्व और पश्चात के समस्त लोगों को की है:

﴿وَلَقَدْ وَصَّيْنَا ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْكِتَٰبَ مِن قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنِ ٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ﴾ [سورة النساء:١٣١]

अर्थातः निसंदेह हमने उन लोगों को जो तुम से पूर्व पुस्तक दिए गए थे और तुम को भी यही आदेश दिया है कि अल्लाह से डरते रहो।
अल्लाह का तक़्वा(धर्मनिष्ठा)अपनाएं और उससे डरते रहें,उसकी आज्ञाकारिता करें और उसके अवज्ञा से बचते रहें,जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने अपनी हि़कमत(निती) से कुछ समय को कुछ पर प्राथमिकता दी है,जैसे कुछ देवदूतों को कुछ देवदूतों पर प्राथमिकता दी है,बाज पुस्तकों को बाज पर वरीयता प्रदान की,बाज पैगंबरों को बाज पर प्राथमिकता दी,बाज समयों और बाज स्थान को बाज पर वरीयता प्रदान की है,इसका एक उदाहरण यह है कि पवित्र भूमि जिसमें बैतुलमक़दिस और उसके इर्द गिर्द का छेत्र भी शामिल है,गोया अन्य स्थानों पर प्राथमिकता प्रदान की है,यह अल्लाह की हि़कमत(निती) और उसके सूक्ष्म चयन का परिनाम है,

﴿وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ۗ مَا كَانَ لَهُمُ ٱلْخِيَرَةُ﴾ [سورة القصص:٦٨]

अर्थातः आपका रब जो चाहता है पैदा करता है और जिसे चाहता है चुन लेता है,उनमें से किसी को कोई अधिकार नहीं।

बैतुलमक़दिस का अर्थ हैःवह घर जो बहुदेववाद के प्रत्येक अभिव्यक्तियों से पवित्र है।

- ए अल्लाह के बंदो!बैतुलमक़दिस की दस विशेषताएं हैं:

1.**प्रथम विशेषता:** अल्लाह तआ़ला ने क़ुरान मजीद में इसे बरकतवाला घोषित किया है,अल्लाह का कथन है:

﴿سُبۡحَٰنَ ٱلَّذِيٓ أَسۡرَىٰ بِعَبۡدِهِۦ لَيۡلٗا مِّنَ ٱلۡمَسۡجِدِ ٱلۡحَرَامِ إِلَى ٱلۡمَسۡجِدِ ٱلۡأَقۡصَا ٱلَّذِي بَٰرَكۡنَا حَوۡلَهُۥ﴾ [سورة الإسراء:١]

अर्थात: पवित्र है वह अल्लाह तआ़ला जो अपने बंदे को रात ही रात में मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़सा तक लेगया जिसके आस.पास हमने बरकत दे रखी है।

क़ुदस वह स्थान है जो मस्जिद के अंदर है।

2.बैतुलमक़दिस की एक विशेषता यह है कि अल्लाह तआ़ला ने मूसा अलैहिस्सलाम की जुबान से इसे मुक़द्दस (पवित्र) अर्थात मोतह्हिर (पवित्र भूमि)बतलाया है:

﴿يَٰقَوۡمِ ٱدۡخُلُواْ ٱلۡأَرۡضَ ٱلۡمُقَدَّسَةَ ٱلَّتِي كَتَبَ ٱللَّهُ لَكُمۡ﴾ [سورة المائدة:٢١]

अर्थात: ए मेरी क़ौम(समुदाय वाला)! इस मुक़द्दस (पवित्र) भूमि में प्रवेश कर जाओ जो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे नाम लिख दिया है।

मुक़द्दस का अर्थ है: पवित्र।

3.बैतुलमक़दिस की एक विशेषता यह है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने पैगंबर मूसा को आदेश दिया कि वहां के वासियों से युद्ध करें,जो कि लंबे शरीर वाले,कठोर स्वभाव,जालिम और बुत के पूजारी थे,और यह आदेश दिया कि बैतुलमक़दिस को उनके व्यवसा से मुक्त कराएं,इसमें एकेश्वरवाद का प्रचार.प्रसार करें और बहुदेववाद को वहां से दूर करें,मूसा ने अपनी क़ौम(समुदाय)से कहा:

﴿يَٰقَوۡمِ ٱدۡخُلُواْ ٱلۡأَرۡضَ ٱلۡمُقَدَّسَةَ ٱلَّتِي كَتَبَ ٱللَّهُ لَكُمۡ وَلَا تَرۡتَدُّواْ عَلَىٰٓ أَدۡبَارِكُمۡ فَتَنقَلِبُواْ خَٰسِرِينَ ٢١﴾

[سورة المائدة:٢١]

अर्थात: ए मेरी क़ौम(समुदाय वालो!)इस मुक़द्दस (पवित्र) भूमि में प्रवेश करजाओ जो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे नाम लिख दिया है और अपने पीठ की ओर न फिरो कि फिर हानी में पड़जाओ।

4.बैतलमक़दिस की एक विशेषता यह है कि नबी सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें सूचना दी कि मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआ़ला से प्रार्थना की कि जब उनकी मृत्यु का समय आए तो उनको बैतुलमक़दिस से एक पत्थर की मार की दूरी के बराबर निकट करदे ताकि उनकी मृत्यु उसी में हो,उसका कारण केवल यह था कि

आप बैतुलमक़्दिस से प्रेम करते थे,इसका प्रमाण अबूहोरैरा रजीअल्लहु अंहु से वर्णित यह ह़दीस है कि जब मूसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु का समय आया तो आपने अल्लाहतआ़ला से दुआ की कि उनको बैतुलमक़्दिस से एक पत्थर की मार की दूरी के बराबर निकट करदे,यह मालूम सी बात है कि उस समय पवित्र पृथ्वी मुर्ति पुजारी अत्याचारी शासक के अंतर्गत थी,मूसा के हाथ में न था कि उसमें प्रवेश होजाएं ता कि वहीं अपकी मृत्यु हो,फिर भी उन्होंने जहां तक संभव हो सका उस पृथ्वी के निकट होने की इकक्षा प्रकट की,आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःयदि में वहां होता तो तुम्हें उनकी क़ब्र दिखाता जो कि लाल टीले के पास रासते के निकट है।[1]

5.बैतुलमक़्दिस की एक विशेषता यह है कि जब यूषा बिन(पुत्र) नून ने बैतुलमक़्दिस के अत्याचारी क़ौम(समुदाय)से युद्ध करने का सोचा तो अल्लाह तआ़ला ने उनके लिए सूर्य को रोक दिया(अर्थात उसकी गतिविधि को रोक दिया),क्योंकि रात निकट होचुकी थी,आपके साथ आपकी सेना थी,तो आपने अल्लाह तआ़ला से प्रार्थना की कि सूर्य को(अस्त होने से)रोक दे ताकि अंधकार आने से पहले ही गांव में प्रवेश होकर अत्याचारी एवं तानाशाह क़ौम(समुदाय)से युद्ध कर सकें,तो अल्लाह ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की और बैतुलमक़्दिस विजय होगया,अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःनिसंदेह सूर्य किसी मनूष्य के लिए कभी नहीं रोका गया,केवल यूषा बिन नून के,यह उन दिनों की बात है जब वे बैतुलमक़्दिस की ओर जारहे थे।[2]

6.बैतुलमक़्दिस की एक विशेषता यह है कि उसका विजय क़्यामत की पहचान है,औ़फ बिन मालिक से वर्णित है,आपने फरमाया कि में ग़ज़वा तबूक के समय आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ,आप उस समय चमड़े के एक खीमें में थे।आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"क़्यामत की छे चिन्ह गिन लो,मेरी मृत्यु,फिर बैतुलमक़्दिस का विजय... "[3]

7.बैतलमक़्दिस की एक विशेषता यह भी है कि काना दज्जाल इसमें प्रवेश नहीं होगा,बल्कि इसके निकट ही उसकी हत्या कर दी जाएगी,मसीह़ बिन मरयम अलैहिस्सलाम जब उसको बाबे लुद के निकट देखेंगे तो उसकी हत्या करदेंगे।[4]

---

[1] (इसे बोखारीः1339 और मुस्लिमः2373 ने अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।)

[2] (इसे अह़मद 8315 ने अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है और"अलमुसनद"के शोधकर्ताओं ने इसे सही़ कहा है।)

[3] (बोखारी 3176)

[4] (लुद,बैतुलमक़्दिस के निकट एक स्थान है।)

8.बैतुलमक़दिस की एक विशेषता यह है कि काफिरों के सरदारों और उनके वरिष्ठ अगुआओं की हत्या फलसतीन के अंदर ही होगा,और दज्जाल को ईसा अलैहिस्सलाम के हाथों फलसतीन में एक युद्ध के दौरान हत्या किया जाएगा जो वास्तव में निर्णायक एवं जाति हत्या होगी,उसमें दज्जाल यहूदियों का नेता होगा,इस प्रकार ईसा अपनी सेना के साथ दज्जाल और उसकी सेना की हत्या करदेंगे,बल्कि उन समस्त ईसाइयों की हत्या करदेंगे जो उन पर वास्तव में ईमान नहीं लाऐंगे,अर्थात इस बात पर ईमान नहीं लाएंगे कि वह एक मनुष्य हैं जिनको(संदेशवाहक बना कर)भेजा गया है,वह ईसाइयों के सूअरों की भी हत्या करेंगे और उनकी उस सलीब को तोड़ डालेंगे जिस की वे पूजा करते हैं,यह सारी घटनाएं फलसतीन में घटींगी।[1]

9.बैतुलमक़दिस की एक विशेषता यह है कि अंत काल में ईसा मसीह़ बिन मरयम के नेतृत्व में जब मुसलमानों और यहूदियों के मध्य युद्ध होगी तो वृक्ष और पत्थर यहूदियों का हनन करेंगे,अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"क़्यामत नहीं आएगी यहां तक कि मुसलमान यहूदियों के विरुद्ध युद्ध लड़ेंगे और मुसलमान उनकी हत्या करेंगे यहां तक कि यहूदी वृक्ष अथवा पत्थर के पीछे छिपेगा और पत्थर अथवा वृक्ष कहेगाःए मुसलमान!ए अल्लाह के बंदे!मेरे पीछे एक यहूदी है,आगे बढ़ और इसकी हत्या करदे,सेवाए ग़दक़द वृक्ष के(वह नहीं कहेगा)क्योंकि वह यहूदी का वृक्ष है" ।[2]

10.बैतुलमक़दिस की एक विशेषता यह है कि इसके अंदर **मस्जिदे अक़सा** स्थित है,जो कि उन तीन मस्जिदों में से एक है जिनकी महानता क़ुरान एवं ह़दीस से प्रमाणित है,**इसकी महानता के अनेक कारण हैं**,**जिनमें दस महत्वपूर्ण कारण निम्नलिखित हैं**:

प्रथम कारणःसल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम को मस्जिदे ह़राम से रात के समय मस्जिदे अक़सा तक ल जाया गया,फिर आपको आकाश(अर्थात मेराज की यात्रा)पर लेजाया गया,अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿سُبۡحَٰنَ ٱلَّذِيٓ أَسۡرَىٰ بِعَبۡدِهِۦ لَيۡلٗا مِّنَ ٱلۡمَسۡجِدِ ٱلۡحَرَامِ إِلَى ٱلۡمَسۡجِدِ ٱلۡأَقۡصَا﴾ [سورة الإسراء:١]

अर्थातः पवित्र है वह अल्लाह तआ़ला जो अपने बंदे को रात ही रात में मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़सा तक लेगया।

[1] (देखें:सही मुस्लिम में ह़ज़रत अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित मसीह़ के नाज़िल होने और उनका दज्जाल की हत्या का घटना:2897,इसी प्रकार ह़जरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी रजीअल्लाहु अंहु की ह़दीस भी देखें:156,तथा ह़दीस संख्या2937 के अंतर्गत न्वास बिन समआ़न किलाबी रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित ह़दीस भी देखें।)

[2](इसे बोखारी 2936 और मुस्लिम 2922 ने वर्णित कया है और उपरोक्त शब्द मुस्लिम के हैं।)

फिर जब आप आकाश से लौटे तो मस्जिदे अक़्सा की ओर लोटे,फिर वहां से मक्का गए,इस प्रकार आप दो बार मस्जिदे अक़्सा से गुजरे जो कि उसकी महानता का प्रमाण है।

द्वितीय कारणः सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसरा की यात्रा के समय मेराज के बाद मस्जिदे अक़्सा के अंदर समस्त नबयों की इमामत फरमाई,आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"फिर नमाज़ का समय होगया तो मेंने उनकी इमामत की"।[1]

तृतीय कारणःमस्जिदे अक़्सा की एक विशेषता यह है कि अल्लाह ने अपने नबी सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने उसे स्पष्ट कर दिया यहां तक कि आप(मक्का से ही)उसे देखने लगे,यह उस समय हुआ जब आपने बहुदेववादियों के सामने मस्जिदे अक़्सा की यात्रा का उल्लेख किया तो उन्हों ने आपको झुटला दिया और आपको झुटलाने के लिए आपसे उसकी विशेषताएं पूछने लगे,क्योंकि उनको मालूम था कि आपने कभी मस्जिदे अक़्सा की यात्रा नहीं की है,तो (उस समय)अल्लाह ने मस्जिदे अक़्सा को आपके लिए उूंचा कर दिया और आप उन बहुदेववादियों के समक्ष उसकी इमारत और एक एक चिन्ह बतलाने लगे,ह़ज़रत जाबिर रजीअल्लाहु अंहुमा से वर्णित है कि सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"जब क़ोरैश ने मुझको मेराज की घटना को लेके झुटलाया तो में(काबा के)ह़जर स्थान में खड़ा होआ और अल्लाह ने पूरा बैतुलमक़्दिस मेरे सामने कर दिया।में उसे देख कर उसकी एक एक पहचान बतलाने लगा"।[2]

चौथा कारणःमस्जिदे अक़्सा की एक विशेषता यह है कि वह मुसलमानों का प्रथम क़िबला है,बरा बिन आ़ज़िब रजी़अल्लाहु अंहु फरमाते हैंःहमने सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सोलह महीने अथवा सतरह महीने तक बैतुलमक़्दिस की ओर नमाज़ पढ़ी फिर हमको काबे की ओर फैर दिया गया।[3]

पांचवा कारणःमस्जिदे अक़्सा की एक विशेषता यह भी है कि वह उन मस्जिदों में से है जिनकी ओर प्रार्थना की नियत से यात्रा करना जाइज है,इसका प्रमाण सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह ह़दीस हैः"कजावे केवल तीन ही मस्जिदों के लिए कसे जाएंःमस्जिदे ह़राम,मस्जिदे अक़्सा और मेरी इस मस्जिदे(अर्थात मस्जिदे नबवी)के लिए

[1] (इसे मुस्लिम172 ने अबूहोरैरा रजी़अल्लाहु अंहु से वर्णित कया है।)
[2] (बोखारी 3886,मुस्लिम 170)
[3] (बोखारी 4492,मुस्लिम 525)

"।[1]ज्ञात हुआ कि प्रार्थना करने की नियत से इन तीन मस्जिदों के एलावा संसार के किसी स्थान की यात्रा करना जाइज नहीं है।

छटा कारण:मस्जिदे अक़सा की एक विशेषता यह है कि उसमें पढ़ी जाने वाली नमाज़(अन्य मस्जिदों में पढ़ी जाने वाली)250नमाजो़ं से श्रेष्ठतर है,अबूज़र रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित है,वह फरमाते हैं:हम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास बैठे हुए थे कि उसी मध्य यह जिक्र छिड़ गया कि कोंसी मस्जिद अधिक श्रेष्ठतर है,मस्जिदे नबवी अथावा बैतुलमक़दिस, सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:मेरी इस मस्जिद(मस्जिदे नबवी)की एक नमाज़ मस्जिदे अक़सा की चार नमाजो़ं से श्रेष्ठतर है,वह बड़ी सूक्ष्म मस्जिद है,निकट है कि(ऐसा युग आएगा जब)मनुष्य के पास घोड़े की लगाम के बराबर भी यदि पृथ्वी होगी जहां से वह मस्जिदे अक़सा को देख सकेगा,तो वह उसके लिए पूरे संसार से बेहतर,अथवा फरमाया:संसार और उसकी समस्त नेमतों से बेहतर होगी।[2]

अल्लाह के बंदो!चूंकि मस्जिदे नबवी में पढ़ी जाने वाली नमाज़ हजार नमाजो़ं से बेहतर है,इस लिए मस्जिदे अक़सा में पढ़ी जाने वाली नमाज़ 250 नमाजो़ं से बेहतर है,क्योंकि वह मस्जिदे नबवी की नमाज़ की एक चौथाई के बराबर है।[3]

सातवां कारण:मस्जिदे अक़सा की एक विशेषता यह है कि वह पृथ्वी पर निर्माण होने वाली दूसरी मस्जिद है,अबूज़र रजी़अल्लाहु अंहु फरमाते हैं कि मेंने पूछा:"या रसूल्लाह!पृथ्वी पर सर्वप्रथम कोंसी मस्जिद निर्माण की गई है?आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:मस्जिदे ह़राम।उन्होंने पूछा:और उसके पश्चात?फरमाया कि मस्जिदे अक़सा(बैतुलमक़दिस)।मेंने पूछा:इन दोनों के निर्माण में कितने समय का अंतर रहा है?आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:चालीस वर्ष का....."[4]

आठवां कारण:मस्जिदे अक़सा की एक विशेषता यह है कि सोलेमान बिन दाऊद अलैहिमस्सलाम ने इसकी पुनःनिर्माण की,अल्लाह से प्रार्थना की कि जो व्यक्ति भी इसमें नमाज़ पढ़े,उसके पाप मिटादे,तो अल्लाह तअ़ाला ने उनकी प्रार्थना को स्वीकार किया,अब्दुल्लाह बिन अम्र रजी़अल्लाहु अंहु से वर्णित है कि:"सोलेमान बिन दाऊद अलैहिमस्सलाम ने जब बैतुलमक़दिस का निर्माण किया तो अल्लाह तअ़ाला से तीन

---

[1](इसे बोखारी 1995 और मुस्लिम 827 ने अबूसईद खुदरी रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित कया है,तथा बोखारी 1189 ने इसे अबूहोरैरा रजीअल्लाहु से वर्णित कया है।)

[2] (इसे तबरानी ने"अलऔसत"6983 में ह़ाकिम ने "अलमुसतदरक"4509 में वर्णन किया है और उपरोक्त शब्द ह़ाकिम के हैं,अल्बानी ने "तमामुलमिन्ना"पृष्ठ संख्या:294 में इसे सहीह कहा है।)

[3](रही वह ह़दीस जो प्रसिद्ध है कि मस्जिदे अक़सा की नमाज़ 500 नमाजो़ं से श्रेष्ठतर है,तो यह ह़दीस ज़ईफ है,देखें:"तमामुलमिन्ना"शैख अल्बानी रही़महुल्लाह की पृष्ठ संख्या292)

[4](इसे बोखारी 3425 और मुस्लिम 520 ने वर्णित किया है और उपराक्त शब्द मुस्लिम के हैं)

चीजें मांगी,अल्लाह से मांगा कि वह लोगों के मामलों के ऐसे निर्णय करें जो अल्लाह के निर्णय से मेल खाते हों,तो उन्हें यह चीज दी गई,तथा उन्होंने अल्लाह तआ़ाला से ऐसा साशन मांगा जो उनके पश्चात किसी को न मिले,तो उन्हें यह भी प्रदान किया गया,और जिस समय वह मस्जिदे अक़सा का निर्माण से फारिग हुए तो उन्होंने अल्लाह तआ़ाला से प्रार्थना की कि जो कोई इस मस्जिद में केवल नमाज़ के लिए आए तो उसे उसके पाप से ऐसे पवित्र करदे जैसे कि वह उस दिन था जिस दिन उसकी माता ने उसे जना"।[1]

नोवां कारण:सोलेमान से पूर्व भी अनेक पैगंबरों ने मस्जिदे अक़सा का पुनःनिर्माण किया,जैसे इब्राहीम और याकूब अलैहिमस्सलाम।

दसवां कारण: मस्जिदे अक़सा की एक विशेषता यह भी है कि जिस व्यक्ति ने उसे विजय किया वह ख़लीफा उ़मर बिन अलख़त्ताब रज़ीअल्लाहु अंहु हैं,आपके शासन काल में इस्लामी सेना ने सहाबी अबू ओ़बैदा बिन जर्राह़ के नेतृत्व में सन 636 इसवी में कुदस का घेराव कर लिया,घिराव के छे महीने बाद ईसाइयों के प्रमुख ने इस शर्त पर हथ्यार डाल दिया कि उ़मर बिन अलखत्ताब रजीअल्लाहु अंहु स्वयं यहां पधारें।

सन 16 हिजरी में ख़लीफा उ़मर ने कुदस की यात्रा किया ताकि शहर की चाभी प्राप्त कर सकें और शहर के इस्लामी देशों में शामिल होने की घोषणा करें,अतः ऐसा ही हुआ,आप उसी द्वार से मस्जिदे अक़सा में प्रवेश किए जिस द्वार से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेराज की रात प्रवेश किए थे,मेह़राबे दाऊद में तह़ियतुलमस्जिद पढ़ी,दूसरे दिन फजर की नमाज़ में मुसलमानों की इमामत की,प्रथम रकअ़त में सूरह(.....)का स्वसवरपाठ किया,द्वितीय रकअ़त में सूरह(बनी इसराईल)का स्वसवरपाठ किया,उसी अव्सर से उ़मर अनुबंध लिखा गया,जिसमें शाम के ईसाइयों से संबंधित उ़मर रजीअल्लाहु अंहु की शर्तें लिखे गए,उसमें उन अधिकारों का भी उल्लेख किए गए जो मुसलमानों की ओर से उन ईसाइयों को दिए जाएंगे जो इस्लामी शासन के अंतर्गत फलसतीन के अंदर निवास करेंगे,उनमें सर्वप्रथम अधिकार यह था कि मुसलमानों के देश में अमन व शांति एवं प्रतिष्ठा एवं सम्मान के साथ जीवन गूजारने के बदले वह मुसलमानों को जिज़या(कर)देंगे।[2]

- अल्लाह के बंदो!यह वे दस विशेषताएं हैं जिनसे अल्लाह ने बैतुलमक़दिस को सम्मानित किया है,इसके सम्मान एवं प्रतिष्ठा के लिए प्रत्येक मुस्लिम को चाहिए कि इन्हैं जानें और अपने संतान को उनकी शिक्षा दे,क्योंकि फलसतीन का

---

[1](इसे अह़मद172/2 ने और नेसाई 693 ने अबूहोरैरा रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है और उपरोक्त शब्द नेसाई के हैं,अथवा अल्बानी रह़ीमहुल्लाह ने इसे सह़ी कहा है।)

[2]देखें:अलबेदाया व अलनेहाया:वाक़ेआ़त सन 15 हिजरी

विषय कोई सामग्री विषय नहीं है,बल्कि ऐसा विषय है जिसका संबंध आस्था से है,इस विषय में कोताही एवं लापरवाही बरतने से हमारे धर्मनिष्ठा को ठेंस पहुंचती है,इस धरती श्रेष्ठतर एवं उच्चतर राजाओं ने फलसतीन से(यहूदियों के अवैध)व्यवसाय को ख्तम करने के लिए अंथक प्रयास कीं,क्रिंतू इस समय फलसतीन के संबंध से इस उम्मत के मजूसियों एवं ईरानी राफजीयों ने लालच का प्रदर्शन किया,जो कुदस की स्वतंत्रता के बैनर उठा कर मस्जिदे अक़सा तक पहुंचना चाहते हैं ताकि उसपर बहुदेववाद का ध्वज लहरा सकें,वहां अपने देश का कबज़ा जमा सके,काबा के रब की क़सम!यह अपमानित एवं परास्त हैं,क्योंकि फलसतीन को उमर और उनके पश्चात सलाहुद्दीन ने विजय किया था और इसको लाभ पहुंचाने का कार्य ऐसा व्यक्ति नहीं कर सकता जो उमर और सलाहुद्दीन को बुरा भला कहता हो!

- अल्लाह तआ़ाला मुझे और आपको कुरान मजीद की बरकतों से माला माल करें,मुझे और आपको उसकी आयतों और नीतियों पर आधारित प्रामर्शों से लाभ पहुंचाए,में अपनी यह बात कहते हुए अपने लिए और आप सबके लिए प्रत्येक प्रकार के पापों से क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा करने वाला बड़ा कृपा करने वाला है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد:

ए मोमिनों!ए अल्लाह के बंदो!यहूदियों का दावा है कि चूंकि अल्लाह के नबी सोलेमान अलैहिस्सलाम ने मस्जिदे अक़सा का निर्माण किया था और वे उनही की संतान हैं,इसलिए वही मस्जिदे अक़सा के सबसे अधिक हकदार हैं,जब्कि यह बात सात कारणों से पूर्णरूप से असत्य हैः

- **प्रथम कारणः**सोलेमान अलैहिस्सलाम ने मस्जिदे अक़सा की स्थापना नहीं की था,बल्कि उसका पुनर्निर्माण किया था,उसकी स्थापना सोलेमान से बहुत पहले होचूकी थी,एक कथन के अनुसार आदम हलैहिस्सलाम ने उसकी स्थापना की और इसके अतिरिक्त भी अन्य कथन हैं।

द्वितीय कारणःमस्जिदे अक़सा का पुनःनिर्माण भी सोलेमान से पूर्व अनेक पैगंबरों ने की,जैसे इब्राहीम और याकूब,उनके निर्माण का उद्देश्य था कि इसमें एकेशवरवादी बंदे अल्लाह की प्रार्थना करें,न कि वे यहूदियों का पूजा स्थल बन जाए।

- **तृतीय कारण:**सोलेमान अलैहिस्सलाम एकेशवरवादी थे,किंतु यहूदी अपने पैगंबरों के मार्ग पर न चल सके,बल्कि उनसे शत्रूता की,तौरैत और इंजील में हैरफैर करदिया,बनी इसरीईल के जमाने में ही यहूद अपने कुफर के कारण बनी इसराईल से अलग होगए,जैसे नूह़ अपने बेटे से अलग होगए,इब्राहीम अपने पिता आज़र से अलग होगए,और मोह़म्मद अपने चचा अबूलहब से अलग अलग होगए,कुफर मुसलमानों और काफिरों के बीच मित्रता और संबंध को खतम करदेता है,यही कारण है कि बनी इसराईल को जो श्रेष्ठताएं प्राप्त थीं,उनमें से कोई वरिष्ठता यहूदियों पर सत्य नहीं बैठता,उनके कुफर ने उन्हें इन श्रेष्ठताओं से वंचित करदिया है।
- **चौथा कारण:**यदि सोलेमान ने मस्जिद का निर्माण किया तो इसका यह मतलब नहीं कि वह अपने संतान एवं जाति के लिए उसके मालिक होगए,क्योंकि उन्होंने मस्जिद का पुनर्निर्माण इसलिए किया कि लोग उसमें नमाज़ पढ़ सकें,उन्हें इससे कोई मतलब नहीं था कि कोंसा वंश और जाती प्रजाति के लोग उसमें नमाज़ पढ़े,क्योंकि पैगंबरों की दावत वंश और जाती प्रजाति के लिए नहीं थी जैसा कि यहूदियों के हैरफैर किए हुए धर्म में है,बल्कि उनकी दावत एकेशवरवाद और धर्मनिष्ठा पर आधारित थी।
- **पांचवा कारण**ः उमर रजीअल्लाहु अंहु ने जब बैतुलमक़दिस को विजय किया तो एक अनुबंध पत्र तैयार किया था जो उस समय से अबतक बरकरार है और मुसलमान उस पर स्थिर हैं और आगे भी उस पर जमें रहेंगे,वह यह कि फलसतीन मुसलमानों की संपत्ति रहेगा और उसपर उनही का साशन रहेगा,यहूदियों को वहां रहने की अनुमति होगी,इसके अतिरिक्त उनका फलसतीन पर कोई अधिकार नहीं होगा,तथा उनसे मुसलमानों के साशन एवं प्रशासन से लाभार्थी होने के बदले जिज्य़ा(कर)वसूला जाएगा।
- **छटा कारण**ः अल्लाह तआ़ला ने अपनी पुस्तक में यह निर्णय कर दिया है कि समस्त भूमी उसकी है,वह अपने नेक बंदों को उसका वारिस बनाता हैः

﴿وَلَقَدۡ كَتَبۡنَا فِي ٱلزَّبُورِ مِنۢ بَعۡدِ ٱلذِّكۡرِ أَنَّ ٱلۡأَرۡضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ ٱلصَّٰلِحُونَ ١٠٥﴾ [سورة الأنبياء:١٠٥]

अर्थातः हम ज़बूर में प्रामर्श के बाद यह लिख चूके हैं कि पृथ्वी की विरासत मेरे नेक बंदे (ही) होंगे।

- यह बात भी ढकी छुपी नहीं है कि नेक वही है जो इस्लाम धर्म के अनुयायी हो,और यहूदी तो संदेशवाहकों के शत्रु और हत्यारे हैं,इब्ने ओसेमीन रह़ीमहुल्लाह का निष्कर्ष है किःबनी इसराईल पवित्र भूमि के स्र्वाधिक पात्र हैं,यह उस समय के

लिए था जब वे मोमिन थे,इसलिए नहीं कि वे बनी इसराईल(की जाती)से हैं,बल्कि इसलिए कि वे मोमिन हैं,इसमें कोई संदेह नहीं कि मूसा अलैहिस्सलाम के जमाने में वे पृथ्वी पर सर्वश्रेष्ठ लोग थे,अल्लाह का कथन है:

﴿وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي ٱلزَّبُورِ مِنۢ بَعْدِ ٱلذِّكْرِ أَنَّ ٱلْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ ٱلصَّٰلِحُونَ ﴿١٠٥﴾﴾ [سورة الأنبياء:١٠٥]

अर्थातः अर्थातःहम ज़बूर में प्रामर्श के बाद यह लिख चूके हैं कि पृथ्वी की विरासत मेरे नेक बंदे(ही)होंगे।

तो जिस प्रकार अल्लाह तआ़ला ने बनी इसराईल को फिरओ़न के राज्य और उसके साशन का वारिस बनाया,इसी प्रकार मुसलमानों और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने वालों को बनी इसराईल का उत्तराधिकारी बनाया।समाप्त[1]

- **सातवां कारण**ःसमान रूप से समस्त मस्जिदों और विशेष रूप से तीन मस्जिदों पर मोमिनों को संरक्षण प्राप्त होगी,न कि काफिरों को,अल्लाह का कथन है:

﴿مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَن يَعْمُرُوا۟ مَسَٰجِدَ ٱللَّهِ شَٰهِدِينَ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِم بِٱلْكُفْرِ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَٰلُهُمْ وَفِى ٱلنَّارِ هُمْ خَٰلِدُونَ ﴿١٧﴾ إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَٰجِدَ ٱللَّهِ مَنْ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ وَأَقَامَ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتَى ٱلزَّكَوٰةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا ٱللَّهَ﴾ [سورة التوبة:١٧-١٨]

अर्थातःबहुदेववादियों के लिए यह योग्य नहीं कि वे मस्जिदों को आबाद करें।इस स्थिती में कि वे स्वयं आपने कुफर के आप साक्षी हैं,उनके आ़माल नष्ट हैं,अल्लाह की मस्जिदों की रौनक व आबादी उनके हिस्से में है जो अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखते हों,नमाज़ो के पाबंद हों,जकात देते हों,अल्लाह के सेवा किसी से न डरते हों।

- ए अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला ने सजदा करने वाली पेशानियों,एकेशवरवादी दिलों,वजू किए हुए हाथों और सत्य बोलने वाली

[1](आप रहि़महुल्लाह का कथन देखेंःसूरह माइदा की तफसीर में इस आयत की तफसीरः يا قوم) (ادخلوا الأرض المقدسة التي كتب الله لكم)

जीभों से सहायता एवं विजय का वादा किया है,अल्लाह तआ़ला अपने वादे में सच्चा है,वह वादे का उल्लंघन नहीं करता,अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿وَعَدَ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مِنكُمْ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى ٱلْأَرْضِ كَمَا ٱسْتَخْلَفَ ٱلَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ ٱلَّذِى ٱرْتَضَىٰ لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُم مِّنۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ۚ يَعْبُدُونَنِى لَا يُشْرِكُونَ بِى شَيْـًٔا ۚ وَمَن كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْفَٰسِقُونَ ﴿٥٥﴾﴾ [سورة النور:٥٥]

अर्थातः तुम में से उन लोगों से जो ईमान लाए हैं और नेक कार्य किए हैं अल्लाह तआ़ला वादा फरमाचुका है कि उन्हें अवश्य पृथ्वी पर खलीफा बनाएगा जैसे कि उन लोगों को खलीफा बनाया था जो उनसे पूर्व थे और निसंदेह उनके लिए इस धर्म को शक्ती के साथ ठोस करके जमादेगा जिसे उनके लिए वह पसंद फरमा चूका है और उनके इस डर को वह शांति से बदल देगा,वे मेरी पूजा करेंगे।मेरे साथ किसी को भी साझी न बनाएंगे।उसके पश्चात भी जो लोग नाशुकरी और कुफर करें वे निसंदेह फासिक हैं।

- आप यह भी जान लें-अल्लाह आप पर कृपा करे-कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़ी चीज का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِىِّ ۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ صَلُّوا۟ عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا۟ تَسْلِيمًا ﴿٥٦﴾﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थातःअल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

हे अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्माद पर रह़मत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़ेयामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट करदे,और अपने एकेश्वरवादी बंदों की सहायता फरमा।

हे अल्लाह तू हमें हमारे देशों में शांति प्रदान कर,हमारे इमामों और हमारे हाकिमों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक और हिदायत पर चलने वाला बना।

हे अल्लाह! समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के लिए रह़मत का कारण बना।

- हे अल्लाह!निसंदेह यहूदी सरकशी एवं विदरोही कर रहे हैं,वे पृथ्वी अत्यंत बिगाड़ फैलारहे हैं,हे अल्लाह!उन्होंने पैगंबरों की भी हत्या की है,देशों पर कबजा जमाया है,धन दोलत को लूट खाया है,हे अल्लाह!तू उनपर यातना एवं महामारी भेजदे,हे अल्लाह!उनके दिलों में डर डालदे,हे अल्लाह!हम तुझसे शिकायत करते हैं,तुझ पर ही भरोसा करते हैं,तेरे बेगैर हमारी कोई शक्ति नहीं,हे अल्लाह!मस्जिदे अक़सा को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,उसे यहूदियों की गंदगी से पवित्र करदे।

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

उपदेश का विषय: धरती में फसाद व्याप्त करने की मनाही

प्रथम उपदेश:

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रशंसा तथा कृतज्ञता के पश्चात्, सबसे उत्तम शब्द अल्लाह के शब्द हैं और सबसे बड़ा मार्गदर्शन अल्लाह के रसूल का मार्गदर्शन है, सबसे बुरी बात धर्म में नई बात पैदा करनी है और हर नईं बात बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही आग में ले जाने वाली है ।हे मुसलमानो! अल्लाह तआला से डरो, और उस का भय हमेशा अपने हृदय में जीवित रखो, उसके आदेशों का पालन करो, और उस के उल्लंघन से बचो, और जान लो कि अल्लाह तआला ने सुधार का आदेश दिया है, और उपद्रव मचाने से मना किया है। शुऐब अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से कहा:

"मेरी इच्छा तो यथासंभव सुधार- कार्य करना है, और यह जो कुछ करना चाहता हूँ वह अल्लाह के योगदान पर निर्भर है, मैं उसी पर आश्रित हूँ और उसी की ओर ध्यानमग्न रहता हूँ "।

और अल्लाह तआला ने सुधारकों को महान उपहार प्रदान करने का वादा किया है। अतः अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿إِنۡ أُرِيدُ إِلَّا ٱلۡإِصۡلَٰحَ مَا ٱسۡتَطَعۡتُۚ وَمَا تَوۡفِيقِيٓ إِلَّا بِٱللَّهِۚ عَلَيۡهِ تَوَكَّلۡتُ وَإِلَيۡهِ أُنِيبُ﴾ [سورة هود:٨٨]

"और जो लोग पुस्तक को दृढ़ता के साथ पकड़ते हैं, और नमाज़ की स्थापना करते हैं, तो वास्तव में हम सत्कर्मियों का प्रतिफल अकारत नहीं करते"। और इसी प्रकार अल्लाह ने उन बस्तियों को नष्ट न करने की प्रतिज्ञा ली है जिस के वासी समाज सुधारक हैं तथा अल्लाह के नियमों का पालन करने वाले हैं। अल्लाह तआला का यह शुभ कथन है:

﴿وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ ٱلْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا مُصْلِحُونَ ۝١١٧﴾ [سورة هود:١١٧]

"और आप का रब ऐसा नहीं है कि बस्तियों को अत्याचार से ध्वस्त कर दे, जबकि उनके वासी सुधारक हों"।

हे मुसलमानो! सुधार का विलोम फसाद तथा उपद्रव है,और अल्लाह तआला फसाद तथा फसदियों से अति घृणा करता है।

अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿وَٱللَّهُ لَا يُحِبُّ ٱلْمُفْسِدِينَ﴾ [سورة المائدة:٦٤]

"और अल्लाह तआला फसदियों को पसंद नहीं करता है "।

और अल्लाह तआला ने उपद्रव करने से मना किया है। अतः कहता है :

﴿وَلَا تَعْثَوْا۟ فِى ٱلْأَرْضِ مُفْسِدِينَ﴾ [سورة البقرة:٦٠]

"धरती में उपद्रव मत करो"।

और फसदियों को धमकी भी दी है। अतः कहता है:

﴿ فَٱنظُرْ كَيْفَ كَانَ عَٰقِبَةُ ٱلْمُفْسِدِينَ ﴾ [سورة الأعراف:١٠٣]

"देखो! उन फसदियों का क्या परिणाम हुआ"।

और अल्लाह तआला ने बहुत सारी फसादी क़ौमों को कष्ट दे कर नष्ट कर डाला, अतः फिरऔन के विषय में अल्लाह ने फरमाया है:

﴿إِنَّ فِرۡعَوۡنَ عَلَا فِي ٱلۡأَرۡضِ وَجَعَلَ أَهۡلَهَا شِيَعٗا يَسۡتَضۡعِفُ طَآئِفَةٗ مِّنۡهُمۡ يُذَبِّحُ أَبۡنَآءَهُمۡ وَيَسۡتَحۡيِۦ نِسَآءَهُمۡۚ إِنَّهُۥ كَانَ مِنَ ٱلۡمُفۡسِدِينَ ٤﴾ [سورة القصص:٤]

"वास्तव में फिरऔन ने धरती में उपद्रव किया और उसके निवासियों को कई समूहों में विभाजित करदिया। उनमें से एक गिरोह को निर्बल बना रहा था, उनके पुत्रों का वध करता था, और उनकी स्त्रियों को जीवित छोड़ देता था। निश्चय ही वह उपद्रवियों में से था"।

अल्लाह सर्वशक्तिमान ने पाखंडियों (मुनाफिक़ों) की विशेषता फसदियों के साथ वयक्त की है ,और कहा है कि वह फसाद को सुधार का नाम देते थे। अतः अल्लाह तआला ने कहा:

﴿وَإِذَا قِيلَ لَهُمۡ لَا تُفۡسِدُواْ فِي ٱلۡأَرۡضِ قَالُوٓاْ إِنَّمَا نَحۡنُ مُصۡلِحُونَ ١١﴾ [سورة البقرة:١١]

"और जब उनसे कहा जाता है कि धरती में उपद्रव न करो, तो कहते हैं कि हम तो केवल सुधार करने वाले हैं। सावधान! वही लोग उपद्रवी हैं, परन्तु उनहें इसका ज्ञान नहीं है"।

और अल्लाह तआला ने फसदियों तथा सुधारकों के मध्य अंतर किया है जिस को व्यक्त करते हुए कहता है:

﴿أَمۡ نَجۡعَلُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ وَعَمِلُواْ ٱلصَّٰلِحَٰتِ كَٱلۡمُفۡسِدِينَ فِي ٱلۡأَرۡضِ أَمۡ نَجۡعَلُ ٱلۡمُتَّقِينَ كَٱلۡفُجَّارِ ٢٨﴾ [سورة ص:٢٨]

"क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए तथा सदाचार किये उन लोगों के समान कर देंगे जो धरती में उपद्रव करने वाले हैं?अथवा हम आज्ञाकारियों को उल्लंघनकारियों के समान कर देंगे?

हे मुसलमानो! आस्था, भक्ति, चरित्र और संबंधों में भी बिगाड़ पैदा होते हैं, आस्था में बिगाड़ पैदा होने का एक रूप यह भी है कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य से संबंध स्थापित किया जाय, उस की शपथ ली जाए, और अल्लाह की शरीअत को छोड़ कर किसी अन्य के नियमों को निर्णायक माना जाये। इबादत में बिगाड़ की शक्ल यह है कि फज्र की नमाज़ जान बूझ कर सूर्योदय के पश्चात् पढ़ी जाये, और बिदअत तथा धर्म में नये आविष्कार के साथ अल्लाह की निकटता प्राप्त करने की चेष्टा की जाए, जैसे जन्मदिन इत्यादि।

और आचरण में बिगाड़ की शक्ल यह है कि खूब मेकअप किया जाये, और कारोबार के मैदान में नर नारी का आपसी मिश्रण हो, और ज़बान की कष्टों से पीड़ित होया जाये ,और संगीत और गाना सुना जाए। नबी स॰ का फरमान है:" निश्चय मेरी उम्मत में कुछ ऐसे लोग जन्म लेंगे जो व्यभिचार करने , रेशम के वस्त्र धारण करने, शराब पीने और संगीत सुनने को उचित समझेंगे "।{इस हदीस को इमाम बुख़ारी रह॰ ने अबु मालिक अशअरी से वर्णित किया है, हदीस संख्या; ५५९०}

आपसी व्यवहार तथा व्यवसाय में फसाद का रूप यह है कि सुद के साथ व्यापार किया जाये, अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَا تَأۡكُلُواْ ٱلرِّبَوٰٓاْ أَضۡعَٰفٗا مُّضَٰعَفَةٗۖ وَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُونَ ١٣٠﴾ [سورة آل عمران: ١٣٠]

"हे ईमान वालो! कई-कई गुणा कर के व्याज न खाओ। तथा अल्लाह से डरो, ताकि सफ़ल हो जाओ"।

और सुदखुर पर अभिशाप भेजते हुए अल्लाह के रसूल ने फरमाया: "अल्लाह ने सुद खाने वाले, उस को जमा करने वाले, उसको लिखने वाले तथा उस पर गवाही देने वाले पर लानत फरमाई है, और आगे कहा: वह सब एक समान हैं, अर्थात अभिशाप में। कयोंकि वह पारस्परिक सहयोग करते हैं, और जमा करने वाला वह वास्तव में देने वाला है।

और मआमलात में फसाद का एक रूप जो अधिक प्रचलित भी है वह यह है कि व्यवसाय में घूसखोरी की जाये, और उसका व्यवहारिक रूप यह है कि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को इस उद्देश्य से कुछ माल दे ताकि वह ऐसी चीज़ प्राप्त कर ले जिस पर उसका अधिकार नहीं है,या अपने ऊपर से वह चीज़ (सज़ा इत्यादि) समाप्त करवा ले जो उस पर अनिवार्य है।हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ ॰ से वर्णित है, कहते हैं:" अल्लाह के रसूल ने रिश्वत लेने वाले और देने वाले दोनों पर लानत फरमाई है "।{इस हदीस को इमाम अहमद वग़ैरह ने रिवायत की है और इमाम अहमद के मुस्नद पर शोध करने वाले लोगों ने उसे क़वी बताया है:२९४२}घूसखोरी को विश्वासघात का भी नाम दिया गया है, अब्दुल्लाह बिन बुरैदह अपने पिता से तथा उनके पिता नबी स॰ से वर्णन करते हैं कि आप स॰ ने फरमाया:" जिसे हम किसी कार्य पर नियुक्त करें, तथा उस पर भत्ता भी दें, तो वह उस में से जो कुछ भी अतिरिक्त लेगा वह भ्रष्टाचार होगा "। {अबु दाऊद शरीफ़: २९४३, अल्लामा अल्बानी ने इस हदीस का सत्यापन किया है}

इस हदीस का अर्थ यह है कि जिसे हम किसी कार्य पर नियुक्त करें और उस दायित्व के निर्वहन पर उसे वेतन भी दें, तो उसके लिए उस वेतन के अतिरिक्त कुछ और लेना उचित नहीं है। फिर भी यदि वह लेता है तो

वह विश्वासघात है, और विश्वासघात वास्तव में मुसलमानों के कोषागार तथा उनके माल में ख़यानत है।

अतः इस हदीस में यह तर्क विद्यमान है कि किसी भी व्यक्ति के लिए जो सरकारी अथवा प्राइवेट सेक्टर में सेवारत हो उचित नहीं है कि अपनी नौकरी के कारण किसी से कोई माल अथवा उपहार स्वीकार करे, यदि उसने ऐसा किया तो उसकी गणना विश्वासघाती लोगों में होगी।

और इस बात की ओर संकेत करना भी आवश्यक है कि घुस का नाम परिवर्तित कर देने से उसकी वास्तविकता में कोई परिवर्तन नहीं होगा।अतः जिस ने भी घुस लिया और उसे उपहार अथवा सम्मान का नाम दिया ,तो वह वास्तव में घूसखोर होगा, क्योंकि ऐतबार तो वास्तविकता ही का होगा न कि संज्ञाओं तथा नामों का।

अल्लाह तआला मुझे तथा आप लोगों को क़ुरआन में बरकत दे, और क़ुरआन में उपस्थित आयतों तथा उत्तम संदेशों से मुझे तथा आप लोगों को लाभ प्रदान करे। मैं अपनी यह बात कहता हूँ तथा अपने एवं आप लोगों के लिए अल्लाह तआला से क्षमा की प्रार्थना करता हूँ, अतः आप लोग भी उस से क्षमा की प्रार्थना करें, निश्चित रूप से वह तौबा करने वालों को क्षमा प्रदान करने वाला है।

द्वितीय उपदेश

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى.

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, और वह पर्याप्त है,और सलाम हो उस के उन भक्तों पर जिनको उसने चयनित कर लिया,

अल्लाह की प्रशंसा के पश्चात्:

अल्लाह के रसूल ने बनी सुलैम में से किसी आदमी को जिसे लुत्बीया कहा जाता था ज़कात एकत्रित करने के लिए नियुक्त किया, जब वह अपने कार्य से फारिग़ हुआ तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और बोला: "हे अल्लाह के रसूल! यह आप के लिए है, और यह मुझे उपहार स्वरुप दिया गया है, अल्लाह के रसूल ने कहा: तुम अपने माता-पिता के घर में क्युं न बैठे रहे, फिर देखते कि तुम्हें उपहार दिया जा रहा है अथवा नहीं? फिर आप स॰ इशा की नमाज़ के पश्चात् खड़े हुए, शहादत का कलिमा पढ़ा, अल्लाह के व्यक्तित्व के अनुसार उसकी प्रशंसा की, तत्पश्चात कहा: अम्मा बा'अद, ऐसे श्रमिकों को क्या हो गया है कि हम उन्हें किसी कार्य पर नियुक्त करते हैं और वह आकर हम से कहते हैं : यह आप के कार्य से प्राप्त हुआ है और यह मुझे उपहार स्वरुप दिया गया है, वह अपने माता-पिता के घर में क्युं न बैठे रहे कि देखते उन्हें उपहार दिया जा रहा है अथवा नहीं? उस व्यक्तित्व की सौगंध जिस के आधिपत्य में मुहम्मद की आत्मा है, यदि तुम में से कोई भी उस माल में ख़यानत करेगा वह उसे क़यामत के दिन अपनी गर्दन पर लाद कर लायेगा, यदि उसने ऊंट में ख़यानत की होगी, तो उस को इस स्थिति में लायेगा कि उस से आवाज़ निकल रही होगी।

और यदि गाय में ख़यानत की होगी तो उसे इस स्थिति में लायेगा कि उस से आवाज़ निकल रही होगी,और अगर बकरी में ख़यानत की होगी तो उसे इस स्थिति में लायेगा कि उस से आवाज़ निकल रही होगी, बस मैंने अपना संदेश तुम तक पहुंचा दिया। अबु हुमैद रज़॰ कहते हैं: फिर अल्लाह

के रसूल ने अपना हाथ इतना उठाया कि हमें आप के बग़ल की सफेदी दिखाई देने लगी "। {बुख़ारी शरीफ़; ६६३६}

अच्छा तो आप लोग संसार के श्रेष्ठ व्यक्तित्व तथा मनुष्य में अति पवित्र हस्ती मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह पर दरुद भेजें जो हौज़े कौसर के स्वामी तथा अनुशंसा एवं शफाअत के मालिक हैं, अल्लाह तआला ने आप लोगों को दरुद भेजने का आदेश दिया है, अतः वह कहता है:" हे ईमान वालो! तुम भी उन पर दरुद एवं सलाम भेजते रहो"। हे अल्लाह तुम दरुद तथा सलाम भेज, उस दरुद में बढ़ोतरी पैदा फरमा, और अपने बंदे तथा रसूल मुहम्मद साहब पर सलाम नाज़िल फरमा, जिनका चेहरा रौशन तथा पेशानी सुन्दर है, और हे अल्लाह! उनके चारों ख़लिफों से प्रसन्न हो जा; अबु बकर सिद्दीक़, उमर फारूक़, उस्मान ग़नी और हज़रत अली से राज़ी हो जा। और साथ ही अपने नबी मुहम्मद साहब के समस्त साथियों से भी प्रसन्न हो जा, और उन पर सलाम नाज़िल फरमा, और अपने नबी के साथियों के साथी से भी राज़ी हो जा, और उन लोगों से भी जिन्होंने उचित ढंग से प्रलय के दिन उनका अनुकरण करते रहे, और उनके साथ साथ हम से भी राज़ी हो जा अपनी क्षमा, दया, कृपा तथा एहसान के साथ, हे सबसे अधिक रहम करने वाले।

हे अल्लाह! तु इसलाम एवं मुसलमानों को प्रतिष्ठा प्रदान कर, और मिश्रण (शिर्क) तथा मिश्रणकारीयों को अपमानित कर, हे अल्लाह! तु अपने दीन, अपनी पवित्र पुस्तक, अपने नबी की सुन्नत तथा अपने मुमिन बंदों की सहायता फरमा।

हे अल्लाह! मुसलमानों में पीड़ितों की पीड़ा दूर कर दे, और दुखियों का दुःख दुर फरमा, क़र्ज़दारों का क़र्ज़ अदा फरमा, और हमारे बिमारों तथा मुसलमानों के बिमारों को अपनी कृपा से ठीक कर दे, हे सबसे अधिक रहम करने वाले ।

हे अल्लाह हमारे हृदय को उस का तक़वा दे दे, और उसे परिमार्जित कर दे हे सबसे अच्छा परिमार्जन करने वाले! तु ही उस हृदय का रक्षक एवं स्वामी है।

हे अल्लाह! हमारे शहरों में हमें शांति दे और हमारे इमामों तथा शासकों में सुधार पैदा फरमा, और हमारे शासन की बागडोर ऐसे वयक्तिओं के हाथ में दे जो तुझ से डरता हो, तेरा तक़वा अपनाता हो तथा तेरी प्रसन्नता का तलबगार हो, हे समस्त संसार का पालनहार।

हे अल्लाह! मुसलमानों के समस्त शासकों को अपनी किताब की दृढ़ता और धर्म की मज़बूती की तौफ़ीक़ दे, और उनहें अपने शासितों पर दयावान बना।

﴿رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِى ٱلدُّنْيَا وَمَا لَهُۥ فِى ٱلْـَٔاخِرَةِ مِنْ خَلَـٰقٍ﴾ [سورة البقرة:٢٠٠]

हे अल्लाह हमें दुनिया में भी अच्छाई तथा मरणोपरांत भी भलाई से युक्त फरमा, और हमें नर्क की अग्नि से सुरक्षित रख।

अल्लाह तआला हमारे नबी मुहम्मद साहब पर, आप की संतान पर तथा आप के समस्त साथियों पर प्रचुर मात्रा में दरुद भेजे और ढेर सारा सलाम भी।

शीर्षक: कोरोना- रोग एवं उपचार

प्रथम उपदेश:

إن الحمد لله، نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، ومن سيئات أعمالنا من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدًا عبده ورسوله .

प्रशंसाओं के पश्चात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है। दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त (नवाचार) हैं और प्रत्येक बिदअ़त (नवोन्मेष) गुमराही है और हर गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

- ए मुसलमानो अल्लाह का तक़्वा अपनाओ और उस्से डरते रहो।उसकी आज्ञा कारी करो और उसके अवज्ञा से बचो और जानलो कि अल्लाह अपने दासों पर जो भी अच्छाई व बूराई,खुशहाली व तंगहाली करता है,वह प्रामर्श पर आधारित होता है,उन प्रामर्शों में से यह भी है कि आज्ञा करने और अवाज्ञा से बचने में वह कितना धैर्य से काम लेते हैं,उनकी आज़माईश,एवं अल्लाह तआ़ला उन पर जान व माल एवं फल और खाद्य की कमी दे कर के उनके धैर्य को आज़माता है,अल्लाह का कथन है:

﴿وَنَبۡلُوكُم بِٱلشَّرِّ وَٱلۡخَيۡرِ فِتۡنَةٗۖ وَإِلَيۡنَا تُرۡجَعُونَ ٣٥﴾ [سورة الأنبياء:٣٥]

अर्थातः हम तुम में से प्रत्येक को बुराइ व भलाई देकर आज़माते हैं और तुम सब हमारे ही ओर लौट के आओगे।

अर्थात: हम धनी एवं गरीबी, प्रतिष्ठा व अपमानिता, जीव एवं मृत्यु, स्वास्थ्य एवं रोग और महामारी व शांति के माध्यम से तुम्हारी परीक्षा लेते हैं, ताकि हमें यह ज्ञात हो सके कि तुम

में से कौन शुभ कार्य करता है और कौन पापों में लत-पत रहता है एवं इस भाग्य से अल्लाह का क्या उद्देश है उससे लापरवाह रहता है.

ए मोमिनो! यह आवरण नहीं कि वर्तमान काल में अल्लाह तआला ने संपूर्ण मनुष्यों पर जो महामारीयां अवतरित की हैं उनमें से एक महान रोग "करोना" की महामारी है. यह ऐसी महामारी है जिसके कारण लोगों के जीवन की दिनचर्या नष्ट हो गई उनकी मृत्यु हुई, मनुष्य के धन एवं जीवन को घाटा हुआ. इसलिए बुद्धिमान मुसलमानों को चाहिए कि वे.इससे कुछ सीख एवं पाठ प्राप्त करें क्योंकि यह महामारी ऐसे ही बिना किसी कारण के अवतरित नहीं हुई है अल्लाह इससे मुक्ति है. बल्कि अल्लाह ने महान बुद्धिमत्ता के कारण इसे अवतरित किया जिसे अल्लाह ने क़ुरआन में अनेक स्थानों पर वर्णन किया है, और वह यह है कि लोग पापों एवं अवज्ञाओं में समा चुके हैं, इस कारणवश अल्लाह ने उन्हें संसार में ही उदाहरण स्वरूप उनके कार्यों का बदला दिखा दिया ताकि वे उन कार्यों को छोड़ दें जिनके कारण उनके जीवन में उथल-पुथल हो रही है ताकि उनकी स्थिति अच्छी हो जाए और वे सीधे मार्ग पर आ जाएं. अल्लाह का कथन है:

﴿ظَهَرَ ٱلۡفَسَادُ فِي ٱلۡبَرِّ وَٱلۡبَحۡرِ بِمَا كَسَبَتۡ أَيۡدِي ٱلنَّاسِ لِيُذِيقَهُم بَعۡضَ ٱلَّذِي عَمِلُواْ لَعَلَّهُمۡ يَرۡجِعُونَ ٤١﴾ [سورة الروم:٤١]

अर्थात: " धरती एवं समुद्र में मनुष्य की एक रण आत्मक कार्यो के कारण भ्रष्टाचार फैल गया है इसलिए कि अल्लाह ताला उन्हें उनके दुष्ट कर्मों का फल चखा दे, हो सकता है वह सुधर जाएं."

﴿وَمَآ أَصَٰبَكُم مِّن مُّصِيبَةٖ فَبِمَا كَسَبَتۡ أَيۡدِيكُمۡ وَيَعۡفُواْ عَن كَثِيرٖ ٣٠﴾ [سورة الشورى:٣٠]

अर्थात: तुम्हें जो कुछ कठिनाइयां पहुंचती हैं वह तुम्हारे अपने ही कर्मों का फल है एवं वह तो बहुत सारी बातों को क्षमा कर देता है.

ज्ञात हुआ कि इस सामान्य महामारी का कारण यही अभद्रता एवं अवज्ञा है, जबकि अवज्ञाकारी मनुष्य बिना किसी भय के इन दृश्यों को प्रदर्शन कर रहा है, पत्रकारिता भ्रष्ट है, उसकी है इसके अंदर नाच-गाने, बुराई, दीन एवं दीन के आज्ञाकार्यों का मज़ाक़ उड़ाना

सामान्य बात हो चुकी है. यहां तक कि रमाज़ान में भी इससे बचा नहीं जाता है, ब्याजी व्यापार एक सामान्य बात हो चुकी है जिसे बुराई व भ्रष्ट तक नहीं समझा जाता है. व्यापारीक स्थानो एवं बाजारों में नग्नता, नंगापन पुरुषों एवं महिलाओं का मिलाप अपनी चोटी पर है. महिलाएं आवरण के प्रति लापरवाही कर रही हैं उत्तेजक नक़ाबों की तो चर्चा ही न करें, जो चमकीली एवं अनंत तंग होते हैं. नमाज़ के समय में सोए रहना, मस्जिदों से दूरी अपनाना नमाज़ों के समय में क्रिय-विक्रय करने में मगन रहना ऐसे कार्य हैं जिन पर जितनी भी निंदा की जाए कम है. तो क्या इन पापों के पश्चात भी हम हमारी का अवतरित होना कोई चौंका देने वाली बात है??

● अल्लाह के दासो! अल्लाह तआला जिन बुद्धिमत्ता ओं के कारण रोगों एवं महामारियों को अवतरित करता है उन में यह भी सम्मिलित है कि दास के हृदय का संबंध अल्लाह से हो जाए. वह याद रखें कि जिस आशीर्वाद एवं धन से लाभ उठा रहे हैं वह अल्लाह तआला का दिया हुआ निर्वाह है जिन्हें अल्लाह तआला किसी भी क्षण में पलट सकता है इस को याद करके दास अल्लाह की आज्ञा का पालन करता है एवं अवज्ञा से दूर रहता है ताकि उसका आशीर्वाद नष्ट ना हो. क्योंकि जब आशीर्वाद पर आभार व्यक्त किया जाता है तो वह सुरक्षित रहते हैं अन्यथा वह नष्ट एवं बर्बाद हो जाते हैं.

● रोबोट एवं महा मारियो को प्रकट करने में अल्लाह की एक बुद्धिमत्ता यह भी होती है कि इसके माध्यम से लापरवाह एवं अवज्ञाकार तो अनुस्मारक कराई जाती है ताकि वे अपने पालनहार की ओर पलटा अपने बनाने वाले से क्षमा चाहे और यह ज्ञात रखे कि उनका पालनहार जो उनकी देख-रेख कर रहा है, वह पापों के कारण दंडित करता है.अल्लाह का कथन है:

﴿وَبَلَوْنَٰهُم بِٱلْحَسَنَٰتِ وَٱلسَّيِّـَٔاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ﴾ [سورة الأعراف:١٦٨]

अर्थात: " हम उन्हें समृद्धियों एवं कठिनाइयों के माध्यम से परीक्षा लेते हैं हो सकता है वह दूरी अपना लें."

इसके अतिरिक्त अल्लाह तआला का कथन है:

﴿فَلَوۡلَآ إِذۡ جَآءَهُم بَأۡسُنَا تَضَرَّعُواْ﴾ [سورة الأنعام:٤٣]

अर्थात: " जब उनको हमारा दंड पहुंचा था तो वे नम्र क्यों नहीं हुए? "

● इस महामारी के पीछे अल्लाह तआला की एक बुद्धिमत्ता यह भी है कि कुछ अवज्ञाकार दासों के हृदय की कठोरता बेनक़ाब हो गई जो इस महामारी के युग में भी पापों में लत-पत रहे शैतान उनके लिए अवज्ञाओं को सुंदरता के साथ प्रस्तुत करता रहा यहां तक कि वह गुमान करने लगा कि वह पूर्ण का कार्य कर रहा है, एवं संसार के उथल-पुथल एवं कठिनाइयों में गिर जाने में उनके कर्मों का कोई योगदान नहीं है इन अवज्ञाओं एवं लापरवाहीयों के बावजूद अल्लाह तआला परीक्षा लेने के लिए उन्हें कुछ देता है एवं आशीर्वाद के द्वार खोल देता है ताकि वे अकस्मात पकड़ में आ जाएं. अल्लाह का कथन है:

﴿ سَنَسۡتَدۡرِجُهُم مِّنۡ حَيۡثُ لَا يَعۡلَمُونَ ۝٤٤ وَأُمۡلِي لَهُمۡۚ إِنَّ كَيۡدِي مَتِينٌ ۝٤٥ ﴾ [سورة القلم: ٤٤-٤٥]

अर्थात: " हम इस प्रकार उन्हें धीरे-धीरे खींहचेंगे कि उन्हें ज्ञात भी नहीं होगा मैं उन्हें ढील दूंगा नि: संदेह मेरा उपाय बहुत शक्तिशाली है."

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

﴿فَلَمَّا نَسُواْ مَا ذُكِّرُواْ بِهِۦ فَتَحۡنَا عَلَيۡهِمۡ أَبۡوَٰبَ كُلِّ شَيۡءٍ حَتَّىٰٓ إِذَا فَرِحُواْ بِمَآ أُوتُوٓاْ أَخَذۡنَٰهُم بَغۡتَةً فَإِذَا هُم مُّبۡلِسُونَ ۝٤٤﴾ [سورة الأنعام:٤٤]

अर्थात: " जब उन्होंने इस संदेश को ठुकरा दिया तो हमने उन पर हर प्रकार के द्वार खोल दिए यहां तक कि जब उन चीजों से जो उनको प्रदान की गई थी अधिक प्रसन्न हो गए तो हमने उनको अकस्मात दबोच लिया और वे उस समय निराश होकर रह गए. "

﴿وَلَقَدۡ أَخَذۡنَٰهُم بِٱلۡعَذَابِ فَمَا ٱسۡتَكَانُواْ لِرَبِّهِمۡ وَمَا يَتَضَرَّعُونَ ۝٧٦ حَتَّىٰٓ إِذَا فَتَحۡنَا عَلَيۡهِم بَابٗا ذَا عَذَابٖ شَدِيدٍ إِذَا هُمۡ فِيهِ مُبۡلِسُونَ ۝٧٧﴾ [سورة المؤمنون:٧٧-٧٨]

अर्थात: हमने उन्हें यातना में भी पकड़ लिया फिर भी यह लोग अपने पालनहार के समक्ष झुके और ना ही नम्रता को अपनाया यहां तक कि जब हमने उन पर कठिन यातना का द्वार खोल दिया तो उसी समय तुरंत ही वे निराश हो गए.

अर्थात: वे अल्लाह की कृपा से निराश हो गए.

- रोगों एवं महामारयों के अवतरित करने में अल्लाह की एक बुद्धिमत्ता यह भी है कि उन पर धीरज एवं परिणाम की गणना करने वालों एवं (अल्लाह के भाग्य) पर अपनी सहमति दिखाने एवं घबराहट से दूर रहने वालों के लिए पूण्य संकलन होते हैं. नबी सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम का वर्णन है:

" मोमिन की भी अजब परिस्थिति है! उसका पुण्य किसी भी स्थिति में नष्ट नहीं होता, यह उपहार मोमिन के अतिरिक्त किसी को भी प्राप्त नहीं. अगर उसे प्रसन्नता होती है तो वह आभारी होता है इसमें भी पूण्य है एवं जब उसको हानि पहुंचती है तो वह धीरज रखता है इसमें भी पूण्य है 1.(मुस्लिम :२९९)

अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहू अन्हू से मर्वी है कि रसूल सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम ने फ़रमाया: " मोमिन पुरुष एवं मोमिन महिला का जीवन, संतान, एवं संपत्ति की परीक्षा होती रहती है यहां तक की जब वे मृत्यु के पश्चात अल्लाह से भेंट करते हैं तो उन पर कोई पाप नहीं रहता."

(इसे तिर्मीज़ी:२३९९ ने रिवायत किया है, एवं उल्लेख किए हुए शब्द इन्हीं के हैं, तिर्मीज़ी ने कहा है यह हदीस हसन है. इनके अतिरिक्त इस हदीस को अहमद:७८५९ ने भी रिवायत किया है देखें: अल-सिलसिला अल-सहीहा:२२८०)

- इस महामारी में अल्लाह की एक बुद्धिमत्ता यह भी है कि इस छोटे से महामारी से मनुष्य की दुर्बलता एवं विनम्रता दिख चुकी है, इसलिए यह गिरोह जो प्रगति एवं उन्नति, सभ्यता, प्रौद्योगिकी, अविष्कार एवं नए-नए खोज में एक महान स्थान पर है वह इस छोटी सी महामारी के समक्ष आश्चर्य पूर्वक अपनी दुर्बलता को प्रदर्शित

करती है कितने ऐसे देश हैं जिनका दावा है कि (हमसे ज़्यादा शक्तिशाली कौन है?) लेकिन इस महामारी के समक्ष उनकी शक्ति दुर्बलता की ओर जाती दिखाई दी, दूसरों से लापरवाह होकर अपने में ही व्यस्त हो कर रह गए. अल्लाह तआला का सत्य वर्णन है:

﴿وَلَا يَزَالُ ٱلَّذِينَ كَفَرُواْ تُصِيبُهُم بِمَا صَنَعُواْ قَارِعَةٌ أَوۡ تَحُلُّ قَرِيبًا مِّن دَارِهِمۡ حَتَّىٰ يَأۡتِيَ وَعۡدُ ٱللَّهِۚ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُخۡلِفُ ٱلۡمِيعَادَ﴾ [سورة الرعد:٣١]

अर्थात: " कुफ़्फ़ार को उनके कुफ़्र के बदले सदैव कोई न कोई कठोर यातना पहुंचती रहेगी या उनके गृहों के निकट प्रकट होती रहेगी जब तक कि अल्लाह का वचन आ पहुंचे. नि: संदेह अल्लाह अपने वचन के विरुद्ध कोई कार्य नहीं करता."

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

﴿فَكُلًّا أَخَذۡنَا بِذَنۢبِهِۦۖ فَمِنۡهُم مَّنۡ أَرۡسَلۡنَا عَلَيۡهِ حَاصِبًا وَمِنۡهُم مَّنۡ أَخَذَتۡهُ ٱلصَّيۡحَةُ وَمِنۡهُم مَّنۡ خَسَفۡنَا بِهِ ٱلۡأَرۡضَ وَمِنۡهُم مَّنۡ أَغۡرَقۡنَاۚ وَمَا كَانَ ٱللَّهُ لِيَظۡلِمَهُمۡ وَلَٰكِن كَانُوٓاْ أَنفُسَهُمۡ يَظۡلِمُونَ ٤٠﴾ [سورة العنكبوت:٤٠]

अर्थात: " फिर तो प्रत्येक को हमने उसके पाप की कठिनाई में दबोच लिया. उनमें से कुछ पर हमने पत्थरों की वर्षा की, उनमें से कुछ को शक्तिशाली कठोर ध्वनि ने पकड़ लिया, उनमें से कुछ को हमने धरती के भीतर धंसा दिया, एवं उनमें से कुछ को हमने डुबो दिया. अल्लाह तआला ऐसा नहीं कि उन पर अत्याचार करे बल्कि यही लोग अपनी प्राणों पर अत्याचार करते हैं."

अधिक फ़रमाया:

﴿وَكَمۡ أَهۡلَكۡنَا مِن قَرۡيَةِۭ بَطِرَتۡ مَعِيشَتَهَاۖ﴾ [سورة القصص:٥٨]

अर्थात: " हमने बहुत सारी वह बस्तियां नष्ट कर दी जो अपने विलासिता में इतराने लगी थी."

- ऐ मुसलमानो! आश्चर्यजनक बात यह है कि कुछ मनुष्य उम्मत को पहुंचने वाली इस महामारी को को केवल भौतिक कारण की ओर फेरते हैं, जैसे बायोटिक्स लेने या इस महामारी को उसके उत्पन्न होने के स्थान में घेरे रखने में आलस्यात्मिक का परिचय देना. और इस प्रकार के कारण वे मनुष्य दोहराते रहते हैं जो भाग्य पर विश्वास नहीं रखते हैं. इसमें कोई संदेह नहीं कि यह एक अधूरी भौतिकवादी सिद्धांत है और ज्ञान एवं विश्वास की कमी को दर्शाता है क्योंकि अल्लाह तआला ने ही इस महामारी को प्रकट किया और सिर्फ उसी के हस्त ने इसका समाप्त करना भी है क्या उन्होंने अल्लाह ताला के इस वर्णन को नहीं सुना:

﴿أَفَأَمِنَ أَهۡلُ ٱلۡقُرَىٰٓ أَن يَأۡتِيَهُم بَأۡسُنَا بَيَٰتٗا وَهُمۡ نَآئِمُونَ ٩٧ أَوَأَمِنَ أَهۡلُ ٱلۡقُرَىٰٓ أَن يَأۡتِيَهُم بَأۡسُنَا ضُحٗى وَهُمۡ يَلۡعَبُونَ ٩٨ أَفَأَمِنُواْ مَكۡرَ ٱللَّهِۚ فَلَا يَأۡمَنُ مَكۡرَ ٱللَّهِ إِلَّا ٱلۡقَوۡمُ ٱلۡخَٰسِرُونَ ٩٩﴾ [سورة الأعراف:٩٧-٩٩]

अर्थात: " क्या फिर भी उन बच्चियों के बसने वाले इस बात से लापरवाह हो गए कि उन पर हमारी यातना रात्रि के समय आ पड़े जिस समय वे सोते हैं और क्या उन बस्तियों के बसने वाले इस बात से लापरवाह हो गए हैं कि उन पर हमारी यातना दिन चढ़ेया पड़े जिस समय कि वे अपने खेलों में व्यस्त हों. क्या वे अल्लाह की उस पकड़ से बेपरवाह हो गए? अल्लाह की पकड़ से उन मनुष्यों को छोड़कर जिन पर तबाही आ ही गई हो और कोई बेपरवाह नहीं होता."

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है:

﴿قُلۡ هُوَ ٱلۡقَادِرُ عَلَىٰٓ أَن يَبۡعَثَ عَلَيۡكُمۡ عَذَابٗا مِّن فَوۡقِكُمۡ أَوۡ مِن تَحۡتِ أَرۡجُلِكُمۡ أَوۡ يَلۡبِسَكُمۡ شِيَعٗا وَيُذِيقَ بَعۡضَكُم بَأۡسَ بَعۡضٍۗ ٱنظُرۡ كَيۡفَ نُصَرِّفُ ٱلۡأٓيَٰتِ لَعَلَّهُمۡ يَفۡقَهُونَ ٦٥﴾ [سورة الأنعام:٦٥]

अर्थात: " आप कहिए कि उस पर भी वही शक्ति रखता है कि तुम पर कोई यातना तुम्हारे ऊपर से भेज दे या तुम्हारे पैर के नीचे से या कि तुम को सामूहिक स्तर पर सब के बिच

भिड़ंत करा दे और तुम को एक को दूसरे का युद्ध चखा दे आप देखिए तो सही हम किस तरह सिद्धांतों के अलग-अलग दृष्टिकोण को बयान करते हैं हो सकता है वह समझ जाएं."

- इस महामारी में अल्लाह की एक बुद्धिमत्ता यह भी है कि जिन लोगों को अल्लाह तआला ने मुस्लिम शासकों की आज्ञाकारिता करने, एकजुटता बचाए रखने, पंक्तियों को एकजुट रखने एवं शासक और प्रजा के बीच प्रेम बचाए रखने के कारण (इस महामारी) से सुरक्षित रखा. जैसे गृहों में रहना, घूमने फिरने से दूर रहना, सावधानी कारणों एवं सुरक्षा पूर्वक उपायों और स्वास्थ संबंधी निर्देशों पर चलना, ताकि इस महामारी के शिकार ना हो. (इन कारणों से प्राप्त होने वाले) स्वास्थ्य एवं सुरक्षा में जो महान बुद्धिमत्ता थी वह सामने आ गई.

- अल्लाह के दासो! अल्लाह को याद रखो उसका भय अपनाओ एकांत एवं ग्रुप में उसकी निगरानी को बुद्धि जीवित रखो, किसी भी स्थिति में उससे लापरवाह मत हो उसकी अवज्ञा में लत-पत मत रहो, अल्लाह का कथन है:

﴿وَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ يَعۡلَمُ مَا فِيٓ أَنفُسِكُمۡ فَٱحۡذَرُوهُۚ﴾ [سورة البقرة:٢٣٥]

अर्थात: " ज्ञात रखो कि अल्लाह तआला को तुम्हारे हृदय की बातों का ज्ञात है. तुम उससे डरते रहो

जिस ज़ात ने हमारे आस-पास के मनुष्यों के लिए इस महामारी का शिकार होना सुनिश्चित किया वह इस बात की भी शक्ति रखता है कि हमें भी उसके अंतर्गत ले ले. इसलिए पूर्णत: पापों से सत्य हृदय के साथ क्षमा मांगें. क्षमा ही इस महामारी से छुटकारा पाने की चाबी है. जैसा कि रिमाद के वर्ष सन १८ हिजरी में जब मनुष्य सूखे पन के शिकार हुए तो उमर रज़ि अल्लाहू अन्हों ने किया. वह लोगों के संग इसतिसक़ा की नमाज़ (वह नमाज जिसके माध्यम से वर्षा की दुआ मांगी जाती है.) के लिए निकले और प्रार्थना की:

(اللَّهُمَّ ما نزل البلاء إلا بذنب، ولم يكشف إلا بتوبة، وهذه أيدينا إليك بالذنوب، ونواصينا إليك بالتوبة)

अर्थात: " हे अल्लाह पाप के कारण ही दु: ख प्रकट होते हैं, तौबा से ही वह दूर होते हैं हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तेरे द्वार में अपने हस्त उठाए हुए हैं और हमारे माथे तौबा के साथ तेरे द्वार पर झुके हुए हैं.

- अल्लाह ताला मुझे और आप को क़ुरआन की बरकत से मालामाल करें मुझे और आप सबको इसके श्लोकों और बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाह से लाभ पहुंचाए मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए एवं आप सभी के लिए प्रत्येक पाप से क्षमा मांगता हूं आप भी उस से क्षमा की प्रार्थना करें नि: संदेह क्षमा मांगने वालों को अधिक क्षमा देता है.

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد:

ए मुसलमानो!कोरोना आपदा व अन्य महामारियों व दुष्टताओं से बचने के सात महत्वपुर्न कारण एवं साधन हैं:

प्रथमःअल्लाह पर विश्वास,इस का मतलब ये है कि आपदाओं व दुष्टताओं से बचने के जो हिस्सी कारण हैं,उनको अपनाने के साथ अल्लाह पर विश्वास रखा जाए,अल्लाह का कथन है:

﴿وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى ٱللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُۥٓ﴾ [سورة الطلاق:٣]

अर्थातः जो व्यक्ति अल्लाह पर विश्वास करेगा अल्लाह उसके प्रति प्रयाप्त हो जाएगा।

द्वितीयः यह जान्ना और मान्ना कि इस आपदा व अन्य कठिनाइयों का घटना और उस्से संक्रमित होना और इस से सुरक्षित रहना सब अल्लाह की तक़दीर से होता है,यदि मनुष्य समस्त आंतरिक एवं बाह्य कारणों को अपनाले,और अल्लाह तआ़ला ने उसकी तक़दीर में यह लिखा हो कि वह इस से संक्रमित होके रहेगा तो वह अवश्य इस से संक्रमित होगा,अल्लाह का कथन हैः

﴿وَإِن يَمۡسَسۡكَ ٱللَّهُ بِضُرّٖ فَلَا كَاشِفَ لَهُۥٓ﴾ [سورة يونس:١٠٧]

अर्थातः यदि तुमको अल्लाह कष्ट पहुंचाए तो उसके अतिरिक्त और कोइ उसको दूर करने वाला नहीं।

तृतीयःअधिक प्रार्थना करना,अल्लाह का कथन हैः

﴿أَلَيۡسَ ٱللَّهُ بِكَافٍ عَبۡدَهُۥۖ﴾ [سورة الزمر:٣٦]

अर्थातः क्या अल्लाह अपने दास के लिए काफी नहीं?

इस आयत के अंदर अल्लाह ने दास के लिए समस्त आपदाओं एवं दुष्टताओं से अपनी प्रयापति को उसकी पूजीय विषेश्न से जोड़ा है, तो जो व्यक्ति अधिक प्रार्थना करेगा उसे आपदा व दुष्टता से उतना ही अल्लाह की प्रयाप्ति हासिल होगी।

चौथाः आपदा व दुष्टता से अल्लाह की प्रयाप्ति को हासिल करने का एक कारण यह है कि सच्चे दिल से अल्लाह पर विश्वास रखा जाए,इस का मतलब यह है कि आपदा व दुष्टता से बचने के लिए ज़ाहेरी कारणों को अपनाने के साथ दिल से अल्लाह पर विश्वास रखा जाए,अल्लाह का कथन हैः

﴿وَمَن يَتَوَكَّلۡ عَلَى ٱللَّهِ فَهُوَ حَسۡبُهُۥٓۚ﴾ [سورة الطلاق:٣]

अर्थातः जो व्यक्ति अल्लाह पर विश्वास रखेगा अल्लाह उसके लिए काफी होजाएगा।

पांचवाँःआपदा एवं दुष्टता से अल्लाह की प्रयाप्ति हासिल करने का एक कारण यह है कि पैगंबर सल्लाहु अलैहे वसल्लम पर अधिक से अधिक दरूद भेजा जाए,इसका प्रमाण यह है कि कअ़ब रजिअल्लाहु अनहु ने आप सल्लाहु अलैहे वसल्लम से कहा कि वह आप पर अधिक से अधिक दरूद भेजैंगे यहां तक कि उनकी अधिकतर प्राथना दरूद से ही भरी होगी तो आप ने फरमायाः''अब यह दरूद तुम्हारे सारे ग़मों के लिए प्रयाप्त होगा और इस्से तुम्हारे पाप मिटा दिए जाऐंगे'' 3 (इसे तिरमीज़ी ने2407 रिवायत किया है और अल्बानी ने हसन कहा है।)

छठाः आपदा व दुष्टता से अल्लाह की प्रयाप्ति व सुरक्षा प्राप्त करने का एक कारण यह भी है कि चाश्त के समय चार रकअ़त नमाज़ अदा की जाए,प्रत्येक दो रकअ़त पर सलाम फेरा जाए,इसका प्रमाण हदीसे क़ुदसी में अल्लाह का कथन हैः

''ए मनु के संतान!तुम दिन के प्रारंभ में मेरी प्रशंसा के लिए चार रकअ़तें पढ़ा कर,में पूरे दिन भर के लिए तुम्हारे लिए काफी हुंगा।''

(इसे तिरमीजी 2407 ने अबूदाऊद रजिअल्लाहु अनहु से वर्णन किया है और अल्बानी ने इसे सही कहा है।)

''पूरे दिन के लिए तुम्हारे लिए काफी हुंगा''का मतलब यह है कि पूरे दिन जो आपदाऐं एवं दुर्घटना घटते हैं,उनसे तुम्हें सुरक्षित रखुंगा।

सातवाँःआपदा व दुष्टता से अल्लाह की प्रयाप्ति हासिल करने का एक कारण यह भी है कि सुब्ह व शाम के अज़कार का पालन किया जाए,जिन में कुछ का उल्लेख निम्नलिखित में हैंः

- सूरह अख़लास व मउुज़तैन सुब्ह व शाम तीन तीन बार पढ़ना,इसका प्रमाण पैगंबर सल्लाहु अलैहे वसल्लम की यह ह़दीस है जो आप ने अबदूल्लाह बिन खोबैब बिन अ़दी रजिअल्लाहु अनहु से फरमाया कि:

सुब्ह व शाम तीन बार «قل هو الله أحد» «المعوذتين» :«قل أعوذ برب الفلق»«قل أعوذ برب الناس» पढ़ लिया करो,यह ''सूरतें'' तुम्हें हर दुष्टता से बचाऐंगीं और सुरक्षित रखेंगीं''

(इसे अबूदाऊद 5082 आदि ने वर्णन किया है और अल्बानी ने सही कहा है।)

- अबदूल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहु अनहुमा फरमाते हैं कि: रसूल सल्लाहु अलैहे वसल्लम सुब्ह व शाम इन प्रार्थनाओं को कभी नहीं छोड़ते थे:

«اللهم إني أسألك العفو والعافية في الدنيا والآخرة اللهم إني أسألك العفو والعافية في ديني ودنياي وأهلي ومالي اللهم استر عوراتي وآمن روعاتي واحفظني من بين يدي ومن خلفي وعن يميني وعن شمالي ومن فوقي وأعوذ بك أن أغتال من تحتي»

''ए अल्लाह में तुझसे दुनया व आखेरत में आफियत का सवाली हूं, ए अल्लाह में तुझसे अपने दीन व दुनया और अपने परिवार व संपत्ति में छमा एवं आफियत का सवाली हूं,मेरे ऐबों को छिपा दे,दाऐं बाऐं,और उपर से मेरी सुरक्षा फरमा,और में तेरा शरण चाहता हूं नीचे से नाश किये जाने से''

(इसे अबूदाऊद 5074 और इब्ने माजा 3871 ने रिवायत किया है और अल्बानी ने सही कहा है।)

- शाम के समय पढ़ी जाने वाली प्रार्थनाओं में यह भी है कि शाम ढ़लते ही सूरह बक़रा के अंत की दो आयतें पढ़ी जाऐं,क्योंकि आप सल्लाहु अलैहे वसल्लम की ह़दीस है:''सुरह बक़रा के अंत की दो आयतें जो रात में पढ़ेगा,तो वह दोनों आयतें उसके लिए काफि होंगी''

(इसे बोखारी 4008 और मुस्लिम 807 ने अबूदाऊद से वर्णन किया है।)

- जो प्रार्थनाऐं एक मुस्लिम व्यक्ति को घर से निकलने के पश्चात ''अल्लाह के आदेश से''सुरक्षित रखती हैं,उनमें घर से निकलने के पश्चात की प्रार्थना भी है,अनस रजिअल्लाहु अनहु से वर्णित है कि रसूल सल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फरमायाः जब मनुष्य घर से निकले फिर कहे:

«بسم الله توكلت على الله لا حول ولا قوة إلا بالله»

''अल्लाह के नाम से निकल रहा हूं,मेरा पूरा पूरा विश्वास अल्लाह ही पर है,समस्त शक्ति अल्लाह ही की ओर से है'' तो आप ने फरमायाः उस समय कहा जाता है''अर्थात देवदूत कहते हैं'':अब तुझे हिदायत दे दी गई,और तू बचा लिया गया,''यह सुन कर''शैतान उस्से अलग हो जाता है,तो उस्से दूसरा शैतान कहता है: तेरे हाथ से आदमी केसै निकल गया कि इसे हिदायत दे दी गई,उसकी ओर से काफी करदी गई और वह ''तेरी गिरफत और तेरे चंगुल से ''बचा लिया गया?''

(इसे अबूदाऊद 595 ने रिवायत किया है और शोऐब अरताऊत ने ''अलतालीक़ अला सोनने अबि दाऊद''में इसे ह़सन कहा है।)

इन अज़कार में यह भी है कि सवेद अल्लाह से आफियत व सलामति मांगी जाऐ,अबू बकर सिद्दीक़ रजिअल्लाहु अनहु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लाहु अलैहे वसल्लम ने फरमायाःअल्लाह से पापों की क्षमा और कठिनाइयों और

गुमराहियों से आफियत मांगो क्योंकि ईमान व विश्वास रखने के पश्चात किसी बंदे को आफियत अथवा शांति से अच्छा कोई चीज नहीं दी गई''
(इसे अबूदाऊद 3849 आदि ने रिवायत किया है और शैख शोऐब अरदाऊद ने ''अलतालीक़ अला सोनने अबि दाऊद''में इसे हसन कहा है।)

पैगंबर सल्लाहु अलैहे वसल्लम दोआए क़ोनूत में यह भी पढ़ा करते थेः

"وعافني فيمن عافيت"

अर्थातः आफियत प्रदान कर उन लोगों में शामिल फरमा कर जिन्हें तू ने आफियत दी है।

(इसे अह़मद 1/199 ने वर्णित किया है और अलमुस्नद के शोधकर्ताओं ने ह़दीस संख्या 1718 के अंतर्गत इसे सह़ी कहा है)

इसके अतिरिक्त यह भी प्रार्थना करते थे किः

«اللهم إني أعوذ بك من زوال نعمتك، وتحول عافيتك، وفجاءة نقمتك، وجميع سخطك»

अर्थातः ए अल्लाह! में तेरी नेमत की समाप्ति से,तेरे प्रदान की हूई आफियत की समाप्ति से,तेरी अचानक के यातना से और तेरे प्रत्येक प्रकार के क्रोध से तेरा शरण चाहता हूं।

(इसे मुल्सिम 2736 ने अबदूल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहु अनहु से रिवायत किया है।)

बीमारियों से पनाह मांगने के विश्य में जो अज़कार हैं,उन में अनस रजिअल्लाहु अनहु की हदीस भी है कि पैगंबर सल्लाहु अलैहे वसल्लम यह प्रार्थना किया करते थे:

«اللهم إني أعوذ بك من البرص، والجنون، والجذام، ومن سيئ الأسقام»

अर्थातः ए अल्लाह! में तेरा शरण चाहता हुं कुष्ठ ,पागलपन,कोढ़ और समस्त प्रकार के रोग से''

(इसे अह़मद 3/192 ने रिवायत किया है और अलमुसनद के शोधकर्ताओं ने कहा किःइस की सनद सही मुस्लिम की शर्त पर है।)

- आपदा व दुष्टता से प्राप्ति व रक्षा से संबंधित जो अज़कार ह़दीस में आए हैं,वे बहुत अधिक हैं,जो प्रार्थना की पुस्तकों में उल्लेखित हैं,जैसे इब्ने तैमिया की पुस्तक ''अलकलिम अलतय्यब'' नौवी की पुस्तक''अलअज़कार''और क़ह़तानी की पुस्तक''अलहिस्न अलमसलिम'' आदि।

سبحان خالق كورونا ومرسِله — على العباد يريهم كيف هم ضعفا
فيروس ليس يرى بالعين من صغر — لكن بأكثر سكان الدنا عصفا
كم اقتصاد هوى من بعد رفعته — وكم حراك على ذي الأرض قد وقفا
وعطل الناس عن سعي وعن سفر — رهن البيوت كفُص لازم الصدفا
(أن لا مساس) شعار الناس من قلق — كل يحاذر من لمس له تلفا
كم أمة أصبحت في عيشها شظفا — كانت تبختر في نعمائها ترفا
حتى الحبيبان عن بعد سلامهما — مثل الشحيح زوى الكفين والكتفا
سبحان خالق كورونا ومرسله — مخوِّفا خلقه من بأسه أسفا
لعلهم أن يفيقوا بعد غفلتهم — ويخلعوا الكبر والطغيان والأنفا
لعلهم أن يحسوا نعمة كفرت — كم من نعيم نُسِي من طول ما ألفا
لعلنا أن نرى حلم الكريم بنا — فلو يشاء بنا في لحظة خسفا
يا رب عجل بيسر بعد ما عسرت — وافرج علينا فشهر الصوم قد أزفا

(यह पंक्तियां डा0 अ़ली बिन यह़या अल ह़द्दादी के हैं,अल्लाह उन्हें अच्छा बदला दे।)

अर्थातःपवित्र है वह हसती जिस ने कोरोना को पैदा किया और बंदों के पास भेजा ताकि उन्हें देखा सके कि वह कितने निर्बल हैं।एक ऐसा विषाणु जो एतना छोटा है कि आंखों से देखा भी नहीं जा सकता,फिर भी उसने संसार के अधिकतर मनुष्यों को झनझोड़ कर रख दिया। कितने ही एसे अर्थव्यवस्था हैं जो बढ़ने के पश्चात घट गऐ,संसार ही की कितने ही एसी गतिविघियां हैं जो ठहर गईं। लोगों ने दौड़ भाग और यात्रा को निलंबित कर दिया,वे घरों में नजरबंद होकर रहगए जिस प्रकार मोती अपने सीप में रहता है। भय से लोगों का यह प्रचलन बन गया कि कोई किसी को न छूए,हर किसी को यह डर लगा हुआ है कि छूने से कहीं उसे हानी न पहूंच जाए। केतने ही एसे समुदाय हैं जिनका जीवन तंग और कठिन होगया,जबकि वह खुशहाली में घमंडी और ऐश का जीवन बसर कर रहे थे।यहां तक कि दो प्रेमी भी दूर से ही एक दूसरे को सलाम करते हैं,उस कंजूस के जैसा जो अपने हथलियों और बाहों को खरच करने के डर से समेट कर रखता है।पवित्र है वह हसति जिस ने कोरोना को पैदा किया और उसे बंदों के पास भेजा,ताकि वह जीव को अपनी पकड़ और करोध से डरा सके।शायद वह गफलत के पश्चात होश के नाखुन लें और घमंड,हटधरमी और अहंकार की चादर उतार फेकें। शायद कि वह इस नेमत को महसूस कर सकें जिस की नाशुकरी की जाती रही है,केतने ही एसी नेमते हैं जो लंबे अवधि तक प्राप्त रहने के कारण भूला दी गईं। आशा है कि हम अपने प्रति दयालू व दाता पालनहार के धैर्य रूप देखें,यदि वह चाहे तो पलक झपकते ही धरती में ध्ंसा दे। ए पालनहार! कठिनाई के पश्चात फौरन ही हमें आसानी प्रदान कर और हमारी कठिनाईयों को दूर करदे कि रमज़ान का महीना निकट आ चूका है।

- ए अल्लाह के दासो! यह महामारी हमारे प्राणों को के लिए खतरनाक है,वह अति तेजी़ से फैल रहा है,क्योंकि जीवन एक नेमत है,अल्लाह ने अपने दासों को उनके आतमाओं पर अमीन बनाया है,जैसा कि पैगंबर सल्लाहु अलैहे वसल्लम का कथन है: ''निसंदेह तुम्हारे प्राणों का तुम्हारे उपर अधिकार है''

(इसे अह़मद 6/268 आदि ने ह़ज़रत आइशा रज़िअल्लाहु अनहा से रिवायत किया है और अलमुस्नद के शोधकर्ताओं ने ह़दीस संख्या 26308 के अंतर्गत इसे ह़सन कहा है,इसका असल सहीहैन में अबू होज़ैफा रज़िअल्लाहु अनहु व अन्य सह़ाबा की रेवायत से उपलब्ध है।)

इसके अतिरिक्त यह भी जान लें–अल्लाह आप पर अपनी कृपा अवतरित करे–कि अल्लाह तआ़ला ने अपको एक बड़ी चीज़ का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थात: "अल्लाह तआ़ला एवं उसके देवदूत उस पैग़ंबर पर रह़मत (कृपा) भेजते हैं ए विशवासियो! तुम भी उन पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजते रहा करो।"

पैग़ंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है:

अर्थात: " तुम्हारे पवित्र दिनों में से शुक्रवार का दिन है उसी दिन आदम (मनु) का जन्म हुआ उसी दिन उनकी रूह़ (आत्मा) निकाली गई उसी दिन सूर (तुरही) फूंका जाएगा 15(अर्थात तुरही दूसरी बार फूंका जाएगा माने वह तुरही है जिसमें इसरफ़ील फूंक मारेंगे, यह वह देवदूत हैं जिनको तुरही में फूंक लगाने का आदेश दिया गया है जिसके पश्चात समस्त जीव क़बरों से उठ खड़े हो जाएंगे।) उसी दिन चीख़ होगी। (अर्थात: जिससे सांसारिक जीवन के अंत में लोग मदहोश होकर गिर पड़ेंगे और समस्त जीव की मृत्यु हो जाएगी। यह मदहोशी उस समय उत्पन्न होगी जब सूर (तुरही) में सर्वप्रथम फूंक लगाया

जाएगा ०२ फुंक के मध्य में ४० वर्षों का अंतर होगा।) इसीलिए उस दिन तुम लोग मुझ पर अधिक से अधिक दुरूद (अभिवादन) भेजा करो, क्योंकि तुम्हारा दुरूद मुझ पर प्रस्तुत किया जाता है।

(इसे नेसाई 1373,अबूदाऊद 1047,इब्ने माजा 1085, और अह़मद 4/8 ने रिवायत किया है और अल्बानी ने सह़ी अबी दाऊद में और अलमुसनद के शोधकर्ताओं ने ह़दीस संख्याः16162 के अंतर्गत इसे स़ही कहा ह)

हे अल्लाह तू अपने बंदे व रसूल (दास एवं संदेशवाहक) मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दया, कृपा एवं शांति भेज, तू उनके ख़ुलफ़ा (मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उत्तराधिकारीयों) ताबेईन (समर्थक) एवं क़यामत तक आने वाले समस्त आज्ञाकार्यों से प्रसन्न हो जा!

हे अल्लाह! कठिनाईयॉ पापों के कारण ही जन्म लेती हैं और तौबा के माध्यम से ही दूर होती हैं,हम अपने पापों को स्वीकारते हैं और हमारे हाथ तेरे द्वार में उठे हूए हैं,हमारे सर तेरे द्वार में झुके हूऐ हैं, हे अल्लाह! तू हम से इस महामारी को दूर करदे, निसंदेह हम मुस्लमान हैं।

हे अल्लाह जिसका भी इस महामारी के कारण निधन होगया है उन पर कृपा फरमा और जो लोग इस के कारण रोगाी हैं उनको स्वास्थ्य और पूण्य प्रदान कर! हे अल्लाह हमें रमज़ान नसीब फरमा! हे अल्लाह हमें रमज़ान नसीब फरमा! हे अल्लाह हमें रमज़ान नसीब फरमा!

हे हमारे पालनहार हमें दुनया व आखेरत की अच्छाई प्रदान कर और नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा!

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين